عليهم السلام
क़ससुल अंबिया
व
अस्हाबे सालिहीन
हिफ्ज़ुर्रहमान स्योहारवी (रह०)

क़ससुल अंबिया عليهم السلام
व
अस्हाबे सालिहीन

लेखक

मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी

अनुवादक

अहमद नदीम नदवी

Jawwad Book Depot

422, Matia Mahal,
Jama Masjid, Delhi-110006

क़ससुल अंबिया व अस्हाबे सालिहीन

लेखक: मौलाना मुहम्मद हिफ्ज़ुर्रहमान स्योहारवी

अनुवादक: अहमद नदीम नदवी

प्रथम संस्करण: 2010

QASASUL AMBIYA WA ASHAB-E-SALIHEEN

Author: Maulana Muhammad Hifzur Rehman Seoharvi

Translated by: Ahmad Nadeem Nadvi

1st Edition: 2010

प्रकाशक:

Jawwad Book Depot

422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006

विषय-सूची

بسم الله الرحمن الرحيم
٧٨٦

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तम्हीद

कुरआन पाक इन तारीख़ी वाक़ियों को सिर्फ़ इसलिए नहीं बयान करता कि ये वाक़िए हैं, जिनका एक तारीख़ में लिखा होना ज़रूरी है, बल्कि इसका एक ही मक़्सद है, वह यह कि वह इन वाक़ियों से पैदा होने वाले नतीजों से इंसान की हिदायत व रहनुमाई के लिए नसीहत और इबरत बनाए और इंसानी अक़्ल व जज़्बात से अपील करे कि वे फ़ितरत के क़ानूनों के सांचे में ढले हुए इन तारीख़ी नतीजों से सबक़ हासिल करें और ईमान लाएं कि अल्लाह की हस्ती एक इंकार न की जा सकने वाली हक़ीक़त है और कुदरत का यही हाथ इस कायनात पर कारफ़रमा है और इसी मज़हब के हुक्मों की पैरवी में फ़लाह व नजात और हर क़िस्म की तरक़्क़ी का राज़ छिपा हुआ है, जिसका नाम 'फ़ितरत का मज़हब' या इस्लाम है।

—'क़ससुल कुरआन' से लिया गया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

गरामी क़द्र हज़रत मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० की मुस्तनद और जामे तस्नीफ़ 'क़ससुल क़ुरआन' किसी तआरुफ़ की मुहताज नहीं, अलबत्ता हमारे मोहतरम दोस्त जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन साहब ने जिस मक़सद के तहत इस मोटी-भारी किताब को मुख़्तसर किया है, वह बेशक वक़्त की अहम ज़रूरत है। उन्होंने मुख़्तसर करने का ऐसा अन्दाज़ अपनाया है कि नबियों और दूसरी बुज़ुर्ग हस्तियों से मुताल्लिक़ न सिर्फ़ हर उस बात को लिया है जिसका ताल्लुक़ इबरत और नसीहत से है, बल्कि दूसरी अहम बातों को भी थोड़े में बयान कर दिया है। उम्मीद है कि अल्लाह की मेहरबानी से इस किताब के पढ़ने में लगे लोग पूरी तरह फ़ायदा उठा सकेंगे।

बुढ़ापे में जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन के सोचने का अन्दाज़ और उसके तहत उनकी यह कोशिश हर तरह तारीफ़ के क़ाबिल है। अल्लाह पाक उनकी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

—क़ारी सैयद रशीदुल हसन हसनी नदवी
इमाम व ख़तीब
जामा मस्जिद न्यूटाउन, अल्लामा बन्नोरी टाउन, कराची
5 मुहर्रमुल हराम 1408 हि०

अर्ज़ है कि...

गरामी क़द्र मौलाना मुहम्मद हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० पाक व हिंद उप महाद्वीप के नामी उलेमा में नुमायां हैसियत रखते हैं। उनकी मशहूर व मक़बूल किताब 'क़ससुल क़ुरआन' अपने मौज़ू (विषय) के एतबार से मुंफ़रिद (एक ही) समझी जाती है। इसकी जो ख़ूबी सबसे ज़्यादा नुमायां है, वह यह है कि हर क़िस्से के आख़िर में मौलाना ने गहरी नज़र और सूझ-बूझ से जो बातें पेश की हैं, वे हर ख़ास व आम के लिए क़दम-क़दम पर रहनुमाई करती हैं। दीनी मदरसों के असातज़ा, (टीचर्स), मस्जिदों के ख़ु त बा (ख़िताब करने वाले ख़तीब हज़रात) और दीनी तलबा के लिए इस किताब का पढ़ना बेहद फ़ायदेमंद समझा जा रहा है।

यह किताब चार हिस्सों में 1800 से ज़्यादा सफ़हों पर फैली हुई है। अंजुमन इशाअते क़ुरआन अज़ीम के शोबा तस्नीफ़ व तालीफ़ से वाबिस्ता जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन साहब ने इस मोटी किताब का ख़ुलासा सिर्फ़ 600 सफ़हों में पेश किया है, जिसे हर हलक़े में पसन्दीदा नज़रों से देखा गया, ख़ास तौर से इसलिए कि इस तरह उन्होंने वक़्त के तक़ाज़े को पूरा किया है और बेकार की बहसों से नज़रें हटा कर मश्ग़ूल व मसरूफ़ लोगों को भी इससे फ़ायदा उठाने का पूरा-पूरा मौक़ा जुटा दिया है। अल्लाह पाक उनको भला बदला दे।

ज़िया ब्रदर्स बुक सेन्टर इस खुलासे की अहमियत और फ़ायदों को देखते हुए अंजुमन इशाअते क़ुरआन अज़ीम के छपे आठ भागों को इकट्ठा करके एक जिल्द में बेहतरीन कम्प्यूटर कम्पोज़िंग करवा कर 'क़ससुल अंबिया व अस्हाबुस्सालिहीन' की तलख़ीस (खुलासा) 'क़ससुल क़ुरआन अज़ मौलाना मुहम्मद हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० के उन्वान से छाप कर इस नेक काम में हिस्सा ले रहा है।

अल्लाह पाक इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू करते वक़्त

अल्लाह पाक ने जो क़िस्से और वाक़िए क़ुरआन अज़ीज़ में बयान फ़रमाए हैं, उनके बारे में उर्दू ज़ुबान में गरामी क़द्र मौलाना मुहम्मद हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी साहब रह० की किताब 'क़ससुल क़ुरआन' इस दौर में लिखी जाने वाली कुछ फ़ायदेमन्द किताबों में से एक है। इस किताब के बारे में मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी मद्द ज़िल्लहुल आली ने इस तरह अपने ख़्याल ज़ाहिर किए हैं—

'हज़रत मौलाना मुहम्मद हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी दो किताबें—एक तो 'क़ससुल क़ुरआन' दूसरी, 'इस्लाम का इक़्तिसादी निज़ाम' ख़ास तौर से ज़िक्र के क़ाबिल है। उर्दू में हमारे इल्म में 'क़ससुल क़ुरआन' अंबिया ﷺ की ह्यात और उनकी दावते हक़ की मुस्नद तारीख़ व तफ़्सीर जो क़ुरआन मजीद के गहरे मुताले, नई-पुरानी मज़हबी किताबों की तह्क़ीक़ की मदद से तर्तीब दी गई हो, इससे पहले नहीं थी। मौलाना ने यह किताब लिख कर एक बड़ी ज़रूरत पूरी की और इस्लामियात और इल्मे क़ुरआन के तालिब इल्मों के लिए एक क़ीमती ज़ख़ीरा मुहय्या कर दिया।'

—कारवाने ज़िंदगी, भाग 4, पृ. 263

यह किताब चार भागों में लगभग दो हज़ार सफ़्हों (पृष्ठों) पर शामिल हैं। मौजूदा मस्रूफ़ियात के दौर में बहुत से लोगों की यह ख़्वाहिश होती है कि किताब मुख़्तसर और जामेअ़ हो। लिखने वाले ने इस ख़्याल को ज़ेहन में रखकर इंग्लिश लिट्रेचर के Abridged Edition के अन्दाज़ पर 'क़ससुल क़ुरआन' का इख़्तिसार (संक्षिप्तीकरण) सिर्फ़ 600 सफ़्हों की एक जिल्द (भाग) में पेश कर दिया है। इस इख़्तिसार में उन इल्मी, फ़लसफ़ियाना (दार्शनिक) और तारीख़ी बहसों को नज़रअंदाज़ कर दिया है जिनका ताल्लुक़

वाज़ व नसीहत से नहीं है।

इस नेक काम के अज्र व सवाब के सच्चे हक़दार मोहतरम मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब स्योहारवी रह० ही हैं। इस नाचीज़ बन्दे के लिए तो बस इतना ही काफ़ी है—

बहुस्ने एहतमामत कारे जामी
तुफ़ैले दीगरां यावद तमामी

अल्लाह पाक इस कोशिश को कुबूल फ़रमाए।

कमतरीन
सैयद तंज़ीम हुसैन (1416 हि.)
शोबा तस्नीफ़ व तालीफ़

अंजुमन इशाअते कुरआन अज़ीम, कराची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना बिल किताबिल मुबीन व अन-ज़-ल अलैनल क़ुरआ-न बिलिसानिन अ-रबीयिम मुबीन व क़स-स फ़ीहि अहसनल क़-स सि मौइज़तन व ज़िकरा लिल मोमिनीन वस्सलातु वस्सलामु अलन्नबीयिस्सादिक़िल अमीन मुहम्मदिन रसूलिल्लाहि व ख़ातमिन्नबीयीन व अला आलिही व अस्हाबिहिल्लज़ी-न हुम हुदातुल लिल मुत्तक़ीन० अम्मा बाद

क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने इंसानी दुनिया की हिदायत के लिए अलग-अलग मोजज़ों वाले तरीक़े अपनाए हैं, उनमें एक यह भी है कि पिछली क़ौमों के वाक़ियों और क़िस्सों के ज़रिए उनके नेक व बद-आमाल और उन आमाल के फलों और नतीजों को याद दिलाए और सबक़ हासिल करने का सामान जुटाए, इसीलिए वह बयान करने के तारीख़ी उस्लूब के पीछे नहीं पड़ता, बल्कि हक़ पहुंचाने और अल्लाह की ओर बुलाने के अहम मक़्सद को सामने रख कर सिर्फ़ उन्हीं वाक़ियों को सामने लाता है, जो इस ग़रज़ व ग़ायत को पूरा करते हों और इसीलिए क़ुरआन अज़ीज़ में उनकी तकरार (बार-बार) पाई जाती है, ताकि सुनने वालों के दिल में वे घर कर सकें और फ़ितरी और तबई रुझानों को इन हक़ीक़तों की ओर मुतवज्जह किया जा सके और यह तभी मुम्किन है कि एक बात को बयान करके अलग-अलग तरीक़ों से और जैसे हालात हों, उसी हिसाब से उस्लूब निगारिश से बार-बार दोहराया जाए और सोच की सोई हुई ताक़तों को बार-बार बेदार किया जाए।

क़ुरआन मजीद के क़िस्सों और वाक़ियों का सिलसिला ज़्यादातर पिछली क़ौमों और उनकी ओर भेजे गए पैग़म्बरों से वाबस्ता है और थोड़ा-थोड़ा करके कुछ और वाक़िए भी इस सिलसिले में आ गए हैं और यह तमामतर हक़ व

बातिल के संघर्षों और औलिया-उल्लाह और औलिया-उश्शैतान (शैतान के साथियों) के मारकों का एक सबक़ भरा हुआ और नसीहत हासिल करने वाला बेमिसाल ज़ख़ीरा है।

लेकिन दूसरों का क्या ज़िक्र, हम मुसलमानों में भी बहुत कम ऐसे हैं जो अल्लाह के इस सबसे मुकम्मल और आख़िरी क़ानून (क़ुरआन पाक) से फ़ायदा उठाते और अपने मुरदा दिलों में ईमान और यक़ीन की ज़िंदगी पैदा करते हों, इसलिए कि यह अल्लाह का क़ानून है और हम इसे जारी करने पर लगाए गए हैं इसलिए हमें चाहिए कि मानी व मतलब पर ग़ौर करते रहें यह समझ कर कि यह रहती दुनिया तब अबदी और हमेशा की ज़िंदगी और दोनों दुनिया की फ़लाह व सआदत का मुकम्मल दस्तूर है।

क़ुरआन उतरते वक़्त पैग़म्बरे ख़ुदा ﷺ ने मुश्रिकों के दुश्मनी भरे रवैए से तंग आकर यह शिकायत की थी।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: *'ऐ मेरे परवरदिगार! बेशुबहा मेरी क़ौम ने क़ुरआन को महजूर (झक-झक) बना लिया है।'*

(अल-फ़ुरक़ान 25/30)

लेकिन इस चौदहवीं सदी में अगर हम अपने दिलों को टटोलें, तो इस्लाम के दावे और क़ुरआन को ख़ुदा का कलाम यक़ीन करने के बाजवूद कितने हैं जो इस कलामे इलाही को अपनी ज़िंदगी के लिए बेहतरीन निज़ामे अमल बनाते और इस नज़र से उसकी तिलावत करते हैं।

अपनी और अपनी क़ौम की इस हालत को देखते हुए जी चाहा कि इबरत और बसीरत के इस सरमाए को उर्दू में (अब हिन्दी में भी) लाया जाए ताकि नक़्ल से बचे रहने के बाद ख़ुद-ब-ख़ुद असल की जानिब रग़बत पैदा हो और इस तरह दोनों दुनिया की सआदत का पता मिले।

अपने लिखने के सादा तरीक़े के बावजूद इस मज्मूए में कुछ ख़ुसूसियतों का ख़ास तौर पर लिहाज़ किया गया है—

1. किताब में तमाम वाक़ियों की बुनियाद क़ुरआन को बनाया गया है और मुस्तनद हदीसों और तारीख़ी वाक़ियों से उनकी वज़ाहत और तशरीह की गई है।

2. तारीख़ और पुराने ज़माने की किताबों के दर्मियान और क़ुरआन अज़ीज़ के मुह्कम यक़ीन के दर्मियान अगर कहीं टकराव आ गया है तो उसको रोशन दलीलों के ज़रिए या मेल दिखाने की कोशिश की गई है और या फिर क़ुरआन की सदाक़त को वज़ाहत से साबित किया गया है।

3. इसराईली ख़ुराफ़ात और मुख़ालिफ़ों के एतराज़ों की बकवास की हक़ीक़त को रोशनी में ज़ाहिर किया गया है।

4. ख़ास-ख़ास जगहों पर तफ़्सीरी, हदीसी और तारीख़ी उलझनों पर बहस व तम्हीस के बाद पिछले बुज़ुर्गों के मस्लक के मुताबिक़ उनका हल पेश किया गया है।

5. हर पैग़म्बर के हालात क़ुरआन अज़ीज़ की किन-किन सूरतों में बयान हुए हैं, उनको नक़्शे की शक्ल में एक जगह दिखाया गया है।

6. इन तमाम बातों के साथ-साथ 'नतीजों और इबरतों' या 'इबरतों और बसीरतों' के उन्वान से असल मक़्सद और हक़ीक़ी ग़रज़ व ग़ायत यानी इबरत व बसीरत के पहलू को ख़ास तौर पर नुमायां किया गया है।

—ख़ादिमे मिल्लत

मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी

लेख : 22 रज्जबुल मुरज्जब सन् 1360 हि०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कायनात की पैदाइश और पहला इंसान

पहला इंसान

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बारे में क़ुरआन मजीद ने जो हक़ीक़तें बयान की हैं, उनके तफ़सीली तज़्किरे से पहले यह साफ़ हो जाना ज़रूरी है कि इंसान के आलमे वुजूद में आने का मसूअला आज इल्मी निगाह से बहस का एक नया दरवाज़ा खोलता है, यानी Evolution (विकास) का यह दावा है कि मौजूदा इंसान अपनी शुरूआती पैदाइश ही से इंसान पैदा नहीं हुआ, बल्कि मौजूद कायनात में उसने बहुत से दर्जे तय करके मौजूदा इंसानी शक्ल हासिल की इसलिए कि ज़िंदगी की शुरूआत ने कंकड़-पत्थर, पेड़-पौधों की अलग-अलग शक्लें अख़्तियार करके हज़ारों-लाखों वर्ष बाद एक-एक दर्जा तरक़्क़ी करते-करते पहले लबूना (पानी की जोंक) का जामा पहना और फिर ऐसी ही लम्बी मुद्दत के बाद जानदारों के अलग-अलग छोटे-बड़े तबक़ों से गुज़र कर मौजूदा इंसान की शक्ल अपनाई। और मज़हब यह कहता है कि कायनात के पैदा करने वाले ने पहला इंसान हज़रत आदम की शक्ल ही में पैदा किया और फिर उसकी तरह एक हमजिंस मख़्लूक़ हव्वा को वजूद देकर दुनिया में इंसानी नस्ल का सिलसिला क़ायम किया और यही वह इंसान है जिसको कायनात के पैदा करने वाले ने तमाम पैदा की हुई चीज़ों पर बरतरी और बुज़ुर्गी अता फ़रमाई और अल्लाह की अमानत का भारी बोझ उसके सुपुर्द फ़रमाया और कुल कायनात को उसके हाथ में सधा कर अल्लाह के ख़लीफ़ा और नायब होने का शरफ़ उसी को बख़्शा।

'बेशक, हमने इंसानों को बेहतरीन अन्दाज़ से बनाया है।'

(तीन 95/4)

'बेशक हमने आदम की नस्ल को तमाम कायनात पर बुज़ुर्गी और बरतरी बख़्शी।'

(अल-इसरा 14/7)

'मैं ज़मीन पर आदम को अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं।'

(अल-बक़र: 2/30)

'हमने अमानत के बोझ को आसमानों और ज़मीन पर पेश किया, तो उन्होंने (यानी कुल कायनात ने) अल्लाह की अमानत के बोझ को उठाने से इंकार कर दिया, और इससे डर गए और इंसान ने उस भारी बोझ को उठा लिया।'

(अल-अहज़ाब 33/72)

अब सोचने की बात यह है कि Evolution और धर्म के बीच इस ख़ास मस्अले में इल्मी तज़ाद (विरोधाभास) है या ततबीक़ (मेल) की गुंजाइश निकल सकती है, ख़ास तौर से जबकि इल्म और तजुर्बे ने यह सच्चाई खोल कर रख दी है कि दीनी और मज़हबी हक़ीक़तों और इल्म के दर्मियान किसी भी मामले में टकराव नहीं है। अगर ज़ाहिरी सतह पर कहीं ऐसा नज़र भी आता है तो वह इल्म की हक़ीक़तों के छुपे होने की वजह से नज़र आता है, क्योंकि बार-बार यह देखा गया है कि जब भी इल्म की छुपी हक़ीक़तों पर से परदा उठा, तो उसी वक़्त तज़ाद भी जाता रहा और वही हक़ीक़त निखर कर सामने आ गई जो अल्लाह की वह्य के ज़रिए ज़ाहिर हो चुकी थी। दूसरे लफ़्ज़ों में कह दीजिए कि इल्म और मज़हब के दर्मियान अगर किसी वक़्त भी तज़ाद नज़र आया, तो नतीजे के तौर पर इल्म को अपनी जगह छोड़नी पड़ी और अल्लाह की वह्य का फ़ैसला अपनी जगह अटल रहा।

इस बुनियाद पर इस जगह भी कुदरती तौर पर यह सवाल सामने आ जाता है कि इस ख़ास मस्अले में हक़ीक़ते हाल क्या है और किस तरह है? जवाब यह है कि इस मामले में भी इल्म और मज़हब के दर्मियान कोई टकराव नहीं है, अलबत्ता यह मस्अला चूंकि बारीक और गूढ़ बातें अपने भीतर समोए हुए है, फिर भी यह हक़ीक़त इस जगह हमेशा नज़रों में रहनी चाहिए कि पहला इंसान, (जो कि मौजूदा इंसान की नस्ल का बाबा आदम है, भले ही

तरक़्क़ी (Evolution) के नज़रिए के मुताबिक़ दर्जा-ब-दर्जा इंसानी शक्ल तक पहुंचा हो या पैदाइश की शुरूआत ही में इंसानी शक्ल में वुजूद में आया हो इल्म और मज़हब दोनों का इस पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि मौजूदा इंसान ही इस कायनात की सबसे बेहतर मख़्लूक़ है और अक़्ल और सूझ-बूझ का ढांचा ही अपने अमल और किरदार के लिए जवाबदेह है और दस्तूर व क़ानून का मुकल्लफ़ है या इस तरह समझ लीजिए कि इंसानी किरदार और उसके इल्मी और अमली, साथ ही अख़्लाक़ी किरदार को देखते हुए इस बात की कोई अहमियत नहीं है कि इसके पैदा होने, ढलने और वजूद की दुनिया में आने की तफ़सील क्या है, बल्कि अहमियत की बात यह है कि इस पैदा हुई दुनिया में उसका वुजूद यों ही बे-मतलब और बेमक़्सद है या उसकी हस्ती अपने भीतर बहुत बड़ा मक़्सद लेकर वजूद में आई है? क्या उसके अफ़आल व अक़वाल और किरदार व गुफ़्तार (कर्म-कथन, चरित्र-आचरण) के असरात (प्रभाव) बहुत अधिक हैं? क्या उसकी माद्दी और रूहानी क़ुदरतें सब की सब बेकार और बे-नतीजा हैं या क़ीमती फलों से लदी हुई और हिक्मत से भरी हुई हैं? और क्या उसकी ज़िंदगी अपने भीतर कोई रौशन व ताबनाक हक़ीक़त रखती है और घोर अंधेरे वाले भविष्य (मुस्तक़्बिल) का पता देती है और उसका माज़ी व हाल अपने मुस्तक़्बिल को नहीं जानता?

पस अगर इन हक़ीक़तों का जवाब 'नहीं' में नहीं, बल्कि 'हां' में है तो फिर क़ुदरती तौर पर यह मानना ही होगा कि उसकी पैदाइश की कैफ़ियत (दशा) पर बहस की जाए, उसके वुजूद के मक़्सद पर पूरी निगाह रखी जाए और यह मान लिया जाए कि पैदा की हुई चीज़ों में सबसे बेहतर हस्ती का वुजूद बेशक बड़े मक़्सद का पता देता है और इसलिए उसकी अख़्लाक़ी क़द्रों का ज़रूर कोई 'मसले आला' (बड़ी नज़ीर) और उसकी पैदा करने का कोई मक़्सद है।

क़ुरआन पाक ने इसीलिए हज़रत इंसान से मुताल्लिक़ पॉज़िटिव और निगेटिव हर दो पहलू को वाज़ेह करके इंसानी हस्ती के बड़प्पन का एलान किया है और बतलाया है कि कायनात के पैदा करने वाले और बनाने-संवारने वाले की क़ुदरत में इंसान की पैदाइश 'सबसे बेहतर' का दर्जा रखती है और

इसी वजह से वह तमाम कायनात के मुक़ाबले में 'बड़े होने और अज़ीम होने' का हक़दार है और अपने कामों और तरीक़ों की वजह से बेहतर। वही अल्लाह की अमानत का अलमबरदार होकर 'अल्लाह का ख़लीफ़ा' के मंसब पर बने रहने का हक़ रखता है और जब यह सब कुछ उसमें मौजूद है तो फिर यह कैसे मुम्किन था कि उसकी हस्ती को यों ही बेमक़्सद और बेनतीजा छोड़ दिया जाता।

'क्या लोगों (इंसानों) ने यह गुमान कर लिया है कि वे बेमक़्सद छोड़ दिए जाएंगे?' (अल-क़ियाम : 75/36)

और ज़रूरी है कि अक़्ल व शऊर के इस पैकर को तमाम कायनात में नुमायां बनाकर नेकी व बुराई की तमीज़ अता की जाए और बुराई से परहेज़ और भलाई के अख़्तियार का मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार) बनाया जाए।

'(अल्लाह तआला ने) इंसान को पैदा किया और फिर (नेकी और बदी की) राह दिखाई।' (ताहा 20/50)

'फिर हमने इंसान को दोनों रास्ते (नेकी और बुराई) दिखाए।' (अल-बलद 90/10)

ग़रज़ क़ुरआन मजीद की याददेहानी और दावत, भलाइयों को करने और बुराइयों को रोकने और रुश्द व हिदायत का मुख़ातब और शुरू और आख़िर का मेह्वर व मर्कज़ सिर्फ़ यही हस्ती तो है, जिसको 'इंसान' कहते हैं और यही वजह है कि क़ुरआन ने पहले इंसान की पैदाइश की कैफ़ियतों और तफ़्सीलों को नज़रअंदाज़ करके उसके शुरू और आख़िर को ही यह अहमियत दी है—

ख़िरदमंदों से क्या पूछूं कि मेरी इब्तिदा क्या है
कि मैं इस फ़िक्र में रहता हूं मेरी इंतिहा क्या है

—इक़बाल

इल्मी बहसों से मुताल्लिक़ इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र (दृष्टिकोण)

असल में इसकी इल्मी बहसों के लिए इस्लाम की तालीम यह है कि जो मस्अले यक़ीन और मुशाहदे के इल्म की हद तक पहुंच चुके हैं और क़ुरआनी इल्म और अल्लाह की वह्य इन हक़ीक़तों का इंकार नहीं करती, क्योंकि 'क़ुरआन मुशाहदे और हिदायत का कभी भी इंकार नहीं करता' तो उन को बिना किसी शक के मान लिया जाए, इसलिए कि ऐसी हक़ीक़तों का इंकार बेजा तअस्सुब और तंगनज़री के सिवा और कुछ नहीं और जो पहले अभी तक यक़ीन की इन मंज़िलों तक नहीं पहुंचे जिनको मुशाहदा और हिदायत कहा जा सके जैसा कि बहस में आया मस्अला है, तो इनके बारे में क़ुरआन के मतलबों में तावील नहीं करनी चाहिए और ख़ामख़ाही उनको नई तह्क़ीक़ के सांचे में ढालने की कोशिश हरगिज़ जायज़ नहीं, बल्कि वक़्त का इंतिज़ार करना चाहिए कि वे मस्अले अपनी हक़ीक़त को इस तरह ज़ाहिर कर दें कि उनके इंकार से मुशाहदा और हक़ीक़त का इंकार लाज़िम आ जाए, इसलिए कि यह हक़ीक़त है कि इल्मी बहसों को तो बार-बार अपनी जगह से हटना पड़ा है। मगर क़ुरआनी इल्मों को कभी एक बार भी अपनी जगह से हटने की ज़रूरत पेश नहीं आयी और जब कभी इल्मी मस्अले बहस व नज़र के बाद यक़ीन और मुशाहदे की हद तक पहुंचे हैं, वे एक नुक़्ता भी इससे आगे नहीं गए जिसको क़ुरआन ने पहले वाज़ेह कर दिया है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत आदम عليه السلام

आदम عليه السلام की पैदाइश, फ़रिश्तों को सज्दे का हुक्म, शैतान का इंकार

अल्लाह तआला ने आदम को मिट्टी से पैदा किया और उनका ख़मीर तैयार होने से पहले ही उसने फ़रिश्तों को यह ख़बर दी कि वह बहुत जल्द मिट्टी से एक मख़्लूक़ पैदा करने वाला है जो 'बशर' कहलाएगी और ज़मीन में हमारी ख़िलाफ़त का शरफ़ हासिल करेगी।

आदम का ख़मीर मिट्टी से गूंधा गया और ऐसी मिट्टी से गूंधा गया जो नित नई तब्दीली क़ुबूल कर लेने वाली थी। जब यह मिट्टी पक्की ठीकरी की तरह आवाज़ देने और खनखनाने लगी तो अल्लाह तआला ने उस मिट्टी के पुतले में रूह फूंकी और वह एक ही वक़्त में गोश्त-पोस्त, हड्डी-पुट्ठे का ज़िंदा इंसान बन गया और इरादा, शऊर, हिस्स, अक़्ल और विज्दानी जज़्बात व कैफ़ियात का हामिल नज़र आने लगा। तब फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि तुम उसके सामने सज्दे में गिर जाओ, फ़ौरन तमाम फ़रिश्तों ने इर्शाद की तामील की, मगर इब्लीस (शैतान) ने घमंड और सरकशी के साथ साफ़ इंकार कर दिया।

सज्दे से इन्कार करने पर इब्लीस का मुनाज़रा

अल्लाह तआला अगरचे ग़ैब का इल्म रखने वाला और दिलों के भेदों तक को जानने वाला है और माज़ी, हाल और मुस्तक़्बिल (भूत, वर्तमान, भविष्य) सब उसके लिए बराबर हैं, मगर उसने इम्तिहान व आज़माइश के

लिए इब्लीस (शैतान) से सवाल किया—

'किस बात ने झुकने से रोका, जबकि मैंने हुक्म दिया था?'

(आराफ़ 7/1?

इब्लीस ने जवाब दिया—

'इस बात ने कि मैं आदम से बेहतर हूं, तूने मुझे आग से पैदा किया इसे मिट्टी से।'

(आराफ़ 7/1?

शैतान का मक़सद यह था कि मैं आदम से अफ़ज़ल हूं, इसलिए कि तू मुझको आग से बनाया है और आग बुलन्दी और बरतरी चाहती है, औ आदम 'ख़ाकी मख़्लूक़' भला ख़ाक को आग से क्या निस्बत? ऐ अल्लाह फिर यह तेरा हुक्म कि नारी (नार यानी आग से बना हुआ) ख़ाकी (ख़ाक यानी मिट्टी से बना हुआ) को सज्दा करे, क्या इंसाफ़ के मुताबिक़ है? मैं तमा हालतों में आदम से बेहतर हूं इसलिए वह मुझे सज्दा करे, न कि मैं उसके सामने सज्दा करूं? मगर बदबख़्त शैतान अपने घमंड में चूर होने की वज से भूल गया कि जब तुम और आदम दोनों अल्लाह की मख़्लूक़ हो तो मख़्लूक़ की हक़ीक़त ख़ालिक़ से बेहतर, ख़ुद वह मख़्लूक़ भी नहीं जान सकती, व अपने घमंड और ग़ुरूर में यह न समझ सका कि मर्तबा की बुलन्दी और पस्त उस माद्दे की बुनियाद पर नहीं है, जिससे किसी मख़्लूक़ का ख़मीर तैया किया गया है, बल्कि उसकी उन सिफ़तों पर है जो कायनात के पैदा करने वा ने उसके अन्दर रख दिए हैं।

बहरहाल शैतान का जवाब, चूंकि घमंड और ग़ुरूर की जहालत प क़ायम था, इसलिए अल्लाह तआला ने उस पर वाज़ेह कर दिया कि जहाल से पैदा होने वाले घमंड व ग़ुरूर ने तुझको इतना अंधा कर दिया है कि तू अप पैदा करने वाले के हक़ और पैदा करने वाला होने की वजह से उसके एहतरा से भी मुन्किर हो गया इसलिए मुझको ज़ालिम क़रार दिया और यह न समझ कि तुझको तेरी जहालत ने हक़ीक़त के समझने से आजिज़ बना दिया है, प तू अब इस सरकशी की वजह से अबदी हलाकत का हक़दार है और यही ते अमल का कुदरती बदला है।

इब्लीस ने मोहलत तलब की

इब्लीस ने जब देखा कि कायनात के पैदा करने वाले के हुक्म के ख़िलाफ़ करने, तकब्बुर और रऊनत और अल्लाह पर ज़ुल्म के इलज़ाम ने हमेशा के लिए मुझको रब्बुलआलमीन की आग़ोशे रहमत से मरदूद और जन्नत से महरूम कर दिया, तो तौबा और नदामत की जगह अल्लाह से यह दरख़्वास्त की कि क़ियामत आने तक मुझको मोहलत दे और इस लम्बी मुद्दत के लिए ज़िंदगी की रस्सी लम्बी कर दे।

अल्लाह की हिक्मत का तक़ाज़ा भी यही था, इसलिए उसकी दरख़्वास्त मंज़ूर कर ली गयी। यह सुनकर अब उसने फिर एक बार अपनी शैतानी का मुज़ाहरा किया, कहने लगा : जब तूने मुझको रांदा-ए-दरगाह कर ही दिया, तो जिस आदम की बदौलत मुझे यह रुस्वाई नसीब हुई, मैं भी आदम की औलाद की राह मारूंगा और उनके सामने-पीछे, आस-पास और चारों ओर से होकर उनको गुमराह करूंगा और उनकी अक्सरीयत को तेरा नासपास और नाशुक्रगुज़ार यना छोड़ूंगा अलबत्ता तेरे 'मुख़्लिस बन्दे' मेरे इग़्वा के तीर के घायल न हो सकेंगे और हर तरह महफ़ूज़ रहेंगे।

अल्लाह ने फ़रमाया, हम को इसकी क्या परवाह हमारी फ़ितरत का क़ानून, मुकाफ़ाते अमल और पादाशे अमल अटल क़ानून है। पस जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा और जो बनी आदम मुझसे रूगरदानी करके तेरी पैरवी करेगा, वह तेरे ही साथ अल्लाह के अज़ाब का हक़दार होगा। जा, अपनी ज़िल्लत और रुस्वाई और ख़राब क़िस्मत के साथ यहां से दूर हो और अपनी और अपने पैरोकारों की अबदी लानत (जहन्नम) का इंतिज़ार कर।

आदम ﷺ और दूसरे फ़रिश्ते

आदम ﷺ की ख़िलाफ़त—जैसा कि पहले बयान किया गया है, जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम ﷺ को पैदा करना चाहा तो फ़रिश्तों को ख़बर दी कि मैं ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाना चाहता हूं जो एख़्तियार और इरादे का मालिक होगा और मेरी ज़मीन पर, जिस क़िस्म का तसर्रुफ़

(इस्तेमाल का हक़ हासिल) करना चाहेगा, कर सकेगा और अपनी ज़रूरतों के लिए अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम ले सकेगा, गोया वह मेरी क़ुदरत और मेरे तसर्रुफ़ (इस्तेमाल) व अख़्तियार का 'मज़्हर' होगा।

फ़रिश्तों ने यह सुना तो हैरत में रह गए और अल्लाह के दरबार में अर्ज़ किया कि अगर इस हस्ती की पैदाइश की हिक्मत यह है कि वह दिन-रात तेरी तस्बीह व तहलील में लगा रहे और तेरी तक़्दीस और बुज़ुर्गी के गुन गाए तो इसके लिए हम हाज़िर हैं, जो हर लम्हा तेरी हम्द व सना करते और बे-चून व चरा तेरा हुक्म बजा लाते हैं। हम को तो इस 'ख़ाकी' से फ़ित्ना व फ़साद की बू आती है। ऐसा न हो कि यह तेरी ज़मीन में ख़राबी और ख़ूंरेज़ी पैदा कर दे? ऐ अल्लाह! तेरा यह फ़ैसला आख़िर किस हिक्मत पर मब्नी है?

बारगाहे इलाही से एक तो उनको यह अदब सिखाया गया कि मख़्लूक़ को ख़ालिक़ के मामलों में जल्दबाज़ी से काम न लेना चाहिए और उसकी जानिब से हक़ीक़ते हाल के ज़ाहिर होने से पहले ही शक व शुब्हा को सामने न लाना चाहिए और वह भी इस तरह कि इसमें अपनी बरतरी और बड़ाई का पहलू निकलता हो, कायनात का पैदा करने वाला इन हक़ीक़तों को जानता है, जिनको तुम नहीं जानते और उसके इल्म में वह सब कुछ है, जो तुम नहीं जानते।

आदम ﷺ की तालीम (इल्म का सिखाना) और फ़रिश्तों का इज्ज़ का इक़रार

इस जगह फ़रिश्तों का सवाल इसलिए न था कि वे अल्लाह तआला से मुनाज़रा या उसके फ़ैसले के मुताल्लिक़ मूशगाफ़ी करें, बल्कि वे आदम की पैदाइश का सबब मालूम करना चाहते थे और यह कि उसको ख़लीफ़ा बनाने में क्या हिक्मत है? उनकी ख़्वाहिश थी कि इस हिक्मत का राज़ उन पर भी खुल जाए, इसलिए उनके तर्ज़े अदा और मक़्सद की ताबीर में कोताही पर तंबीह के बाद अल्लाह तआला ने यह पसन्द फ़रमाया कि उनके इस सवाल का जवाब जो ज़ाहिर में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तह्क़ीर पर मब्नी है, अमल व फ़ेल के ज़रिए इस तरह दिया जाए कि उनको अपने आप आदमी

की बरतरी और अल्लाह की हिक्मत की बुलन्दी और ऊंचाई को न सिर्फ़ मानना पड़े, बल्कि अपनी दरमांदगी और इज्ज़ का भी बदीही तौर पर मुशाहदा हो जाए, इसलिए हज़रत आदम को अपनी सबसे बड़ी मर्तबे वाली सिफ़त 'इल्म' से नवाज़ा और उनको चीज़ों का इल्म अता फ़रमाया और फिर फ़रिश्तों के सामने पेश करके इर्शाद फ़रमाया कि तुम इन चीज़ों के बारे में क्या इल्म रखते हो? उनके पास इल्म न था, क्या जवाब देते? मगर अल्लाह की दरगाह से कुर्ब रखते थे, समझ गए कि हमारा इम्तिहान मक़्सूद नहीं है, क्योंकि इससे पहले हमको इसका इल्म ही कब दिया गया है कि आज़माइश की जाती, बल्कि यह तंबीह मक़्सूद है कि 'ख़िलाफ़ते इलाहिया का मदार तस्बीह व तहलील की कसरत और तक़्दीस व तम्जीद पर नहीं बल्कि 'इल्म' नामी सिफ़त पर है, इसलिए कि इरादा, अख़्तियार, क़ुदरत व तसर्रुफ़ और क़ुदरत का अख़्तियार या दूसरे लफ़्ज़ों में यों कहिए कि हुकूमत इल्म की ज़मीनी सिफ़त के बग़ैर नामुम्किन है। पस जबकि आदम को अल्लाह तआला ने अपने इल्म की सिफ़त का मुकम्मल मज़्हर बनाया है तो बेशक वही अरज़ी ख़िलाफ़त का हक़दार है, न कि हम और हक़ीक़त भी यह कि अल्लाह के फ़रिश्ते अपनी ज़िम्मेदारियों के अलावा हर क़िस्म की दुन्यवी ख़्वाहिशों और ज़रूरतों से बे-नियाज़ हैं। इसलिए वे उनके इल्म को भी नहीं जानते थे और आदम को चूंकि इन सबसे वास्ता पड़ता था, इसलिए उनका हाल इसके लिए एक फ़ितरी बात थी जो रब्बुल-आलमीन की कामिल रबूबियत की बख़्शिश से अता हो और उसको वह सब कुछ बता दिया गया हो जो उसके लिए ज़रूरी था।

गोया हज़रत आदम को इल्म की सिफ़त से इस तरह नवाज़ा गया कि फ़रिश्तों के लिए भी उनकी बरतरी और ख़िलाफ़त के हक़ के इक़रार के अलावा कोई रास्ता न रहा और यह मानना पड़ा कि अगर हम फ़रिश्ते ज़मीन पर अल्लाह के ख़लीफ़ा बनाए जाते तो कायनात के तमाम भेदों को जानते होते और क़ुदरत ने जो ख़वास और उलूम दिए हैं, उनसे एक साथ वाक़िफ़ होते, इसलिए कि हम न खाने-पीने के मुहताज हैं कि ज़मीन में दी गई रोज़ी और ख़ज़ानों की खोज करते, न मरज़ का ख़ौफ़ कि क़िस्म-क़िस्म की दवाओं, चीज़ों की ख़ासियतों, कीमियाई मिलावटों, तबई चीज़ों और आसमानी बातों

के फ़ायदे, डाक्टरी ईजादों, नफ़सानी और वज्दानी मालूमात और इसी तरह के बहुत से और क़ीमती उलूम व फ़ुनून के भेद और उसकी हिक्मतों को जान सकते। बेशक यह सिर्फ़ हज़रत इंसान के लिए मौज़ूं था कि वह ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा बने और उन तमाम हक़ाइक़, मआरिफ़ और उलूम व फ़ुनून से वाक़िफ़ होकर नियाबतो इलाही का सही हक़ अदा करे।

हज़रत आदम का जन्नत में ठहरना और हव्वा का ज़ौजा बनना

हज़रत आदम عليه السلام एक मुद्दत तक अकेले ज़िंदगी बसर करते रहे मगर अपनी ज़िंदगी और राहत व सुकून में एक वहशत और ख़ला महसूस करते रहे थे और उनकी तबियत और फ़ितरत में किसी मूनिस व ग़मख़्वार की याद नज़र आती थी। चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत हव्वा को पैदा किया और हज़रत आदम 'अपना हमदम और साथी' पा कर बहुत ख़ुश हुए और दिल में इत्मीनान महसूस किया। हज़रत आदम व हव्वा को इजाज़त थी कि वे जन्नत में रहें-सहें और उसकी हर चीज़ से फ़ायदा उठाएं, मगर एक पेड़ को निशान-ज़द करके बता दिया गया कि उसको न खाएं, बल्कि उसके पास तक न जाएं।

आदम عليه السلام का जन्नत से निकलना

अब इब्लीस को एक मौक़ा हाथ आया और उसने हज़रत आदम व हव्वा के दिल में यह वस्वसा डाला कि यह पेड़ जन्नत का पेड़ है। इसका फल खाना जन्नत में हमेशा आराम व सुकून और अल्लाह का क़ुर्ब पाने की ज़मानत देता है और क़स्में खाकर उनको बताया कि मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूं, दुश्मन नहीं हूं। यह सुनकर हज़रत आदम के इंसानी और बशरी ख़्वास में सबसे पहले निस्यान (भूल-चूक) ने ज़ुहूर किया और यह भुला बैठे कि अल्लाह का यह हुक्म ज़रूरी था, न कि रब की ओर से कोई मश्विरा। आख़िरकार जन्नत के हमेशा के क़ियाम और अल्लाह के क़ुर्ब के अज़्म में लग़्ज़िश पैदा कर दी और उन्होंने उस पेड़ का फल खा लिया। उसका खाना था कि बशरी लवाज़िम (इंसानी ज़रूरतें) उभरने लगीं। देखा तो नंगे हैं और लिबास से महरूम। जल्द-जल्द आदम

हव्वा दोनों पत्तों से सतर ढांकने लगे—गोया इंसानी तमद्दुन की यह शुरूआत थी कि उसने ढांकने के लिए सबसे पहले पत्तों का इस्तेमाल किया।

इधर यह हो रहा था कि अल्लाह तआला का इताब (ग़ज़ब) उतरा और आदम से पूछ-ताछ हुई कि मना करने के बावजूद यह हुक्म का न मानना क्यों? आदम आख़िर आदम थे, अल्लाह के दरबार के मक़्बूल थे, इसलिए शैतान की तरह मुनाज़रा नहीं किया और अपनी ग़लतियों को तावीलों के परदे में छुपाने की बेमतलब की कोशिश से बाज़ रहें। नदामत व शर्मसारी के साथ इक़रार किया कि ग़लती ज़रूर हुई लेकिन इसकी वजह तमर्रुद व सरकशी नहीं, बल्कि इंसान होने के नाते भूल-चूक इसकी वजह है, फिर भी ग़लती है, इसलिए तौबा व इस्तग़्फ़ार करते हुए माफ़ कर दिए जाने की दर्ख़्वास्त करता हूं।

अल्लाह तआला ने उनके इस उज़्र को क़ुबूल फ़रमाया और माफ़ कर दिया, मगर वक़्त आ गया था कि हज़रत आदम عليه السلام अल्लाह की ज़मीन पर 'ख़िलाफ़त का हक़' अदा करें, इसलिए हिक्मत के तक़ाज़े के तौर पर साथ ही यह फ़ैसला सुनाया कि तुमको और तुम्हारी औलाद को एक तय वक़्त तक ज़मीन पर क़ियाम करना होगा और तुम्हारा दुश्मन इब्लीस अदावत के अपने तमाम सामान के साथ वहां मौजूद रहेगा और तुमको इस तरह मलकूती और ताग़ूती दो टकराने वाली ताक़तों के दर्मियान ज़िंदगी बसर करनी होगी। इसके बावजूद अगर तुम और तुम्हारी औलाद मुख़्लिस और सच्चे बन्दे और सच्चे नायब साबित हुए तो तुम्हारा असल वतन 'जन्नत' हमेशा की तरह तुम्हारी मिल्कियत में दे दिया जाएगा, इसलिए तुम और हव्वा यहां से जाओ और मेरी ज़मीन पर बसो और अपनी मुक़र्रर की हुई ज़िंदगी तक उबूदियत का हक़ अदा करते रहो और इस तरह इंसानों के बाप और अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा आदम अलैहि० ने जीवन-साथी हज़रत हव्वा के साथ अल्लाह की ज़मीन पर क़दम रखा।

आदम عليه السلام के ज़िक्र से मुताल्लिक़ क़ुरआनी आयतें

क़ुरआन मजीद में हज़रत आदम عليه السلام का नाम 25 बार पचीस आयतों में आया है। और अंबिया عليهم السلام के तज़्किरों में सबसे पहला तज़्किरा अबुल

बशर हज़रत आदम ﷺ का है जो नीचे लिखी सूरतों में बयान किया गय
है–

सूरः बक़रः, आराफ़, इसरा, कह्फ़ और ताहा में नाम और सिफ़तों दोनं
के साथ और सूरः हजर व साद में से सिर्फ़ सिफ़तों के ज़िक्र के साथ औ
आले इमरान मायदा और मरयम और यासीन में सिर्फ़ ज़िम्नी तौर पर नाम
लिया गया है।

आदम के क़िस्से में कुछ अहम इबरतें (नसीहतें)

यों तो आदम ﷺ के वाक़िए में अनगिनत पंद और नसीहतों औ
मस्अलों का ज़ख़ीरा मौजूद है और उनका एहाता इस मक़ाम पर नामुम्किन
है फिर भी कुछ अहम इबरतों की तरफ़ इशारा कर देना मुनासिब मालूम होता
है।

1. अल्लाह तआला की हिक्मतों के भेद अनगिनत और बेशुमार हैं औ
यह नामुम्किन है क कोई हस्ती, चाहे वह जितनी ही अल्लाह की बारगाह मे
मुक़र्रब हो, इन तमाम भेदों को जान जाए। इसीलिए अल्लाह के फ़रिश्ते
इंतिहाई मुक़र्रब होने के बावजूद आदम ﷺ की ख़िलाफ़त की हिक्मत के
जानकार न हो सके और जब तक मामले की सारी हक़ीक़त सामने न आ गई,
वे हैरान व परेशान ही रहे।

2. अल्लाह तआला की इनायत व तवज्जोह अगर किसी मामूली चीज़
की ओर भी हो जाए तो यह बड़े से बड़े मर्तबा और जलीलुलक़द्र मंसब पर
पहुंच सकती है और शरफ़ व बुज़ुर्गी के ओहदे से नवाज़ी जा सकती है। ख़ाक
की एक मुट्ठी को देखिए और फिर 'अल्लाह के ख़लीफ़ा' होने के मंसब पर
नज़र डालिए और फिर उसके नुबुव्वत व रिसालत के मंसब पर नज़र डालिए,
मगर उसकी तवज्जोह का फ़ैज़ान बख़्त व इत्तिफ़ाक़ की बदौलत या हिक्मत
के बग़ैर नहीं होता, बल्कि उस चीज़ की इस्तेदाद के मुनासिब बेनज़ीर हिक्मतों
और मस्लहतों के निज़ाम से जुड़ा होता है।

3. इंसान को अगरचे हर क़िस्म का शरफ़ मिला और हर तरह की बुज़ुर्गी
और बड़प्पन नसीब हुआ, फिर भी उसकी पैदाइशी और तबई कमज़ोरियां

अपनी जगह उसी तरह क़ायम रहीं और बशर और इंसान होने की वह कमज़ोरी अपनी जगह बाक़ी रही। असल में यही वह चीज़ थी जिसने हज़रत आदम ﷺ पर इस बुज़ुर्गी और बड़े दर्जे के होते हुए ऐसी भूल लगा दी और वह इब्लीस के वस्वसे में आ गए।

4. ख़ताकार होने के बावजूद अगर इंसान का दिल शर्म और तौबा की तरफ़ माइल हो तो उसके लिए रहमत का दरवाज़ा बन्द नहीं है और उस बारगाह तक पहुंचने में नाउम्मीदी की अंधी घाटी नहीं पड़ती। अलबत्ता ख़ुलूस व सदाक़त शर्त है और जिस तरह हज़रत आदम ﷺ की भूल-चूक की माफ़ी उसी दामन से वाबस्ता है, उसी तरह उनकी तमाम नस्ल के लिए भी अफ़्व और दुनिया की रहमत का भारी-भरकम दामन फैला हुआ है। किसी आरिफ़ ने क्या ख़ूब कहा है—

बाज़ आ, बाज़ आ हर आंचे हस्ती बाज़ आ
गर काफ़िर व गब्र व बुतपरस्ती बाज़ आ।
ईं दर गहे मादर गहे नाउम्मीदी नीस्त
सद बार अगर तौबा शिकस्ती बाज़ आ।

अल्लाह के दरबार में गुस्ताख़ी या बग़ावत बड़ी-से-बड़ी नेकी और भलाई को भी तबाह कर देती है और हमेशा की ज़िल्लत व घाटे की वजह बन जाती है। इब्लीस का वाक़िया इबरतनाक वाक़िया है और उसकी हज़ारों साल की इबादतगुज़ारी का जो हश्र अल्लाह के दरबार में गुस्ताख़ी और बग़ावत की वजह से हुआ, वह सैंकड़ों बार इबरत हासिल करने की चीज़ है—

गया शैतान मारा एक सज्दे के न करने से
अगर लाखों बरस सज्दे में सर मारा तो क्या मारा।

पस इबरत हासिल करो, ऐ इबरत की आंख रखने वालो! कि किस तरह—

तकब्बुर अज़ाज़ील रा ख़्वार कर्द। बज़िंदाने लानत गिरफ़्तार कर्द।

हज़रत आदम ﷺ के क़िस्से से मुताल्लिक़ मसअले

मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्युहारवी रह० ने हज़रत आदम के क़िस्से

के तअल्लुक़ से बारह मसअलों का ज़िक्र किया है, इनमें से ज़्यादातर की शक्ल सिर्फ़ इल्मी (Academic) है, यानी इनका ताल्लुक़ वाज़ व नसीहतों से नहीं है। इनमें से तीन मसअलों को बयान किया जाता है, क्योंकि इनका जानना पढ़ने वालों के लिए ज़रूरी है।

हज़रत हव्वा की पैदाइश किस तरह हुई?

(क) क़ुरआन मजीद में इसके बारे में सिर्फ़ इतना ही ज़िक्र है—

'और उस (नफ़्स) से इस जोड़े को पैदा किया।' (अन-निसा 4 : 1)

यह क़ुरआनी नज़्म हव्वा की पैदाइश की तफ़्सील नहीं बताती, इसलिए दोनों बातें हो सकती हैं—

एक यह कि हव्वा हज़रत आदम अलै॰ की पसली से पैदा हुई हैं, जैसा कि मशहूर है और बाइबिल में भी इसी तरह ज़िक्र किया गया है।

दूसरे यह कि अल्लाह ने इंसानी नस्ल को इस तरह पैदा किया कि मर्द के साथ उसी की जिंस से एक दूसरी मख़्लूक़ भी बनाई, जिसको औरत कहा जाता है और जो मर्द की जीवन-साथी बनती है।

जहां तक पहली बात का ताल्लुक़ है तो बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायतों में भी ज़रूर आता है कि औरत पसली से पैदा हुई है। इसका मतलब मशहूर तहक़ीक़ करने वाले और पारखी अल्लामा क़ुरतबी रह० ने यह बयान किया है कि असल में औरत की पैदाइश को पसली से तश्बीह (उपमा) दी गई है, यानी उसका हाल पसली ही की तरह है। अगर इसकी टेढ़ को सीधा करना चाहोगे तो वह टूट जाएगी, तो जिस तरह पसली के तिरछेपन के बावजूद उससे काम लिया जाता है और उसकी टेढ़ को दूर करने की कोशिश नहीं की जाती। उसी तरह औरतों के साथ नर्मी और मुलायमत का मामला करना चाहिए, वरना सख़्ती के बरताव से ख़ुशगवारी की जगह ताल्लुक़ के बिखरने-टूटने की शक्ल पैदा होगी।

मुख़्तसर यह कि ऊपर की आयत की तफ़्सीर में तहक़ीक़ करने वालों की राय उस दूसरी तफ़्सीर की ओर माइल है, जिसका हासिल यह है कि

कुरआन अज़ीज़ सिर्फ़ हव्वा की तख़्लीक़ का ज़िक्र नहीं कर रहा है, बल्कि 'औरत की पैदाइश' के बारे में यह हक़ीक़त भी बताता है कि वह भी मर्द ही की जिंस से है और इसी तरह मख़्लूक़ हुई है।

(ख) हज़रत आदम ﷺ जबकि नबी हैं, तो उनसे अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी का क्या मतलब? नबी तो मासूम होता है और 'इस्मत' नाफ़रमानी और गुनाह की ज़िद (उलट) है?

इस मस्अले के वाज़ेह करने से पहले थोड़े से लफ़्ज़ों में 'इस्मत' (बे-गुनाह) के मानी और उसका मतलब बयान किया जाता है।

नबियों की इस्मत का मतलब

कायनात के पैदा करने वाले ने इंसान की तख़्लीक़ एक दूसरे की ज़िद्द ताक़तों के साथ फ़रमाई है, यानी उसको नेक व बद दोनों क़िस्म की ताक़तें दी गई हैं। वह गुनाह भी कर सकता है और नेकी भी; वह बुराई का इरादा भी रखता है और ख़ैर का इरादा भी; और यही उसके इंसानी शरफ़ की ख़ास बात है। इन टकराने वाली ताक़तों के रखने वाले 'इंसान' में से अल्लाह तआला इंसानी रुश्द व हिदायत और अल्लाह से मिलने के लिए कभी-कभी किसी आदमी को चुन लेते और उसको अपना रसूल, नबी और पैग़म्बर बना लेते हैं। इस सिलसिले की आख़िरी कड़ी ज़ाते अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। जब यह हस्ती 'नुबूवत' के लिए चुन ली जाती है तो उसके लिए यह ज़रूरी है कि वह अमल और इरादे की ज़िंदगी में हर क़िस्म के गुनाह से पाक और हर तरह की नाफ़रमानियों से दूर हो, ताकि पैग़ामे इलाही के मंसब में अल्लाह की सही नियाबत कर सके। इस तरह वह एक इंसान और बशर भी है। खाता है, पीता है, सोता है, बाल-बच्चों की ज़िंदगी से भी जुड़ा हुआ है और वह हर क़िस्म के अमली और इरादी गुनाहों से पाक भी है। क्योंकि वह हर क़िस्म की नेकी के लिए हादी व मुर्शिद और अल्लाह का नायब है और अगरचे वह दूसरे इंसान की तरह एक दूसरे की ज़िद ताक़तों का रखने वाला ज़रूर है, लेकिल अमल और इरादे में उससे हर क़िस्म के बदी के ज़ाहिर होने को नामुम्किन और मुहाल कर गया दिया है, ताकि उसका हर

एक इरादा, हर एक अ़मल और एक-एक क़ौल व ग़रज़, हर एक हरकत व सुकून, कायनात के लिए उस्वा और नमूना बन सके।

अलबत्ता बशर और इंसान होने की वजह से भूल-चूक और लग़्ज़िश का इम्कान बाक़ी रहता है और कभी-कभी अ़मली शक्ल भी अख़्तियार कर लेता है, मगर फ़ौरन उस पर चेतावनी दे दी जाती है और वह उससे किनारापन अख़्तियार कर लेता है। भूल-चूक तो अपने मफ़हूम में ज़ाहिर है, लेकिन लग़्ज़िश एक ऐसी हक़ीक़त को कहते हैं जहां न अ़मल और किरदार में तमर्रुद और सरकशी का दख़ल हो और न क़स्द व इरादे के साथ हुक्म के ख़िलाफ़ चलने का और साथ ही वह अ़मल अपनी हक़ीक़त और माहियत के एतबार से बहुत बुरा और बेशर्मी न हो, बल्कि इन तमामों को सामने रखकर वह अपनी ज़ात में अगरचे इबाहत और जवाज़ का दर्जा रखता हो, मगर करने वाले की हस्ती की शान के मुताबिक़ न हो, बल्कि उसके भारी दर्जे के सामने सुबुक और हल्का नज़र आता हो। यह सब कुछ होते हुए इसलिए अ़मल में आ गया कि अ़मल करने वालों की निगाह में उसका इस तरह करना अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न था, लेकिन नबी पर चूंकि अल्लाह की मुस्तक़िल हिफ़ाज़त व निगरानी रहती है, इसलिए फ़ौरन उसको चेतावनी दे दी जाती है कि यह तुम्हारी जलालते क़द्र और रुत्बे की बुलन्दी की शान के ख़िलाफ़ है और क़तई ग़ैर-मुनासिब है। हक़ीक़त के इस मज्मूए का नाम नबियों की इस्मत है।

हज़रत आदम عليه السلام की इस्मत

इस हक़ीक़त के वाज़ेह कर देने के बाद अब हज़रत आदम عليه السلام के वाक़िए पर ग़ौर किया जाता है, तो पता चलता है कि सूरः बक़रः में यह साफ़ कह दिया गया कि हज़रत आदम عليه السلام की यह ग़लती न गुनाह थी और न नाफ़रमानी, बल्कि मामूली क़िस्म की लग़्ज़िश थी—

'शैतान ने इन दोनों से लग़्ज़िश करा दी।' (बक़रः 2 : 36)

और इसके बाद सूरः आराफ़ में फ़रमाया, *'शैतान ने इनको फुसला दिया।'* (आराफ़ 7 : 20) बल्कि सूरः ताहा में इस लग़्ज़िश और वस्वसे की

वजह ख़ुद ही बयान करके हज़रत आदम ﷺ को हर क़िस्म के इरादी और अ़मली गुनाह से पाक ज़ाहिर कर दिया—

'और बेशक हमने आदम से एक इक़रार लिया था, पस वह उसको भूल गया और हमने पक्के इरादे वाला नहीं पाया।' (ताहा 20 :116)

यह फ़रमाकर अल्लाह तआला ने हज़रत आदम ﷺ की अस्मत के मस्अले को ज़्यादा-से-ज़्यादा मुह्कम और मज़बूत बना दिया।

3. हज़रत आदम ﷺ के वाक़िए में 'मलिक' (फ़रिश्ता) और 'जिन्न' का ज़िक्र भी आया है। ये दोनों अल्लाह की मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं या सिर्फ़ दो क़ूवतों (ताक़तों) का नाम है जो 'मलूकूती क़ूवत' और 'शैतानी क़ूवत' के नाम से जाने जाते हैं।

फ़रिश्ता

क़ुरआन पाक और रसूल ﷺ की हदीसों ने जो कुछ हमको बताया है, उसका हासिल यह है कि हमको न 'फ़रिश्ता' की तख़्लीक़ी हक़ीक़त बताई गई है और न वे हमको नज़र आते हैं। अलबत्ता हमारे लिए यह यक़ीन व एतक़ाद ज़रूरी क़रार दिया गया है कि हम उनके वजूद को मान लें और उनको मुस्तक़िल मख़्लूक़ जानें।

जिन्न

इसी तरह 'जिन्न' भी अल्लाह तआला की मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं जिनकी पैदाइश की हक़ीक़त को हम पूरी तरह नहीं जानते और न आम इंसानी आबादी की तरह वे हमको नज़र नहीं आते हैं। लेकिन क़ुरआन हकीम ने जो तफ़्सील इस मख़्लूक़ के बारे में बताई है, वह हमारे लिए ज़रूरी क़रार देती है कि हम यह एतक़ाद और यक़ीन रखें कि वे भी इंसान की तरह मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं और उसी की तरह शरीअ़त पर चलने को मजबूर भी। इनमें पैदा करने और बढ़ने का भी सिलसिला है और इनमें नेक और बद भी हैं।

इब्लीस या शैतान

क़ुरआन मजीद की आयतों से मालूम होता है कि शैतान भी 'जिन्न' ही की नस्ल से है और इब्लीस (शैतान) ने अल्लाह के सामने ख़ुद यह माना कि इसकी तख़्लीक़ (आग) से हुई है।

लेखक का इज़ाफ़ा

वाज़ व नसीहत के अलावा हज़रत आदम ﷺ का क़िस्सा इसलिए अहम है कि इससे इंसान की तख़्लीक़ के मक़्सद, धरती पर उसकी हैसियत और इस हैसियत की रोशनी में उनके अ़मल और कोशिशों के फैलाव पर रोशनी पड़ती है, जिसका ख़ुलासा यह है—

1. अल्लाह तआ़ला ने धरती पर इंसान को अपना ख़लीफ़ा बनाकर भेजा है जो उसकी क़ुदरत और तसर्रुफ़ और अख़्तियार को ज़ाहिर करता है और इस हैसियत से उसकी कोशिश और अ़मल उसके पैदा किए जाने का मक़्सद है।

2. अल्लाह की ख़िलाफ़त का मदार तस्बीह व तह्लील के ज़्यादा होने और तक़्दीस व तम्जीद पर नहीं, बल्कि 'इल्म' की सिफ़त पर है, जिसके बग़ैर दुन्यावी हुकूमत नामुम्किन है—

3. अल्लाह तआ़ला ने इंसान को 'चीज़ों का इल्म' अता फ़रमाया है और अपनी सबसे भारी-भरकम सिफ़त 'इल्म' से नवाज़ा है, जिसका वह पूरी तरह मज़्हर है।

4. इंसान की फ़रिश्ते पर बरतरी की वजह 'इल्म' की सिफ़त है, तस्बीह व तह्लील नहीं। किसी ने कहा और क्या ख़ूब कहा है—

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे कर्र व बयां।

अल्लामा इक़बाल के हज़रत आदम के जन्नत से रुख़्सत होने और ज़मीन पर तश्रीफ़ लाने के मनाज़िर को विचार-आंख से देखते हुए नज़्म (कविता) में पेश किया है। इन नज़्मों को ज़ौक़ वालों की दिलचस्पी के लिए नीचे लिखा जाता है—

फ़रिश्ते आदम ﷺ को जन्नत से रुख़्सत करते हैं

अता हुई है तुझे रोज़ व शब की बेताबी
ख़बर नहीं कि तू ख़ाकी है या कि सीमाबी
सुना है ख़ाक से तेरी नुमूद है लेकिन
तेरी सरिश्त में है कौकबी व महताबी
जमाल अपना अगर ख़्वाब में भी तू देखे
हज़ार होश से ख़ुश्तर तेरी शकर ख़्वाबी
गरांबहा है तेरा गिरया-ए-सहरगाही,
इसी से है तेरे नख़्ले कुहन की शादाबी
तेरी नवा से है बे-परदा ज़िंदगी का ज़मीर
कि तेरे साज़ की फ़ितरत ने की है मिज़राबी

रूहे अरज़ी आदम ﷺ का इस्तक़्बाल करती है

खोल आंख, ज़मीं देख, फ़लक देख, फ़ज़ा देख
मश्रिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख!
इस जलवा-ए-बेपरदा को परदों में छुपा देख,
अय्यामे जुदाई के सितम देख, जफ़ा देख!
बेताब न हो, मा रका-ए-बीम व रजा देख।
हैं तेरे तसर्रुफ़ में ये बादल,ये घटाएं
यह गुंबदे अफ़लाक, ये ख़ामोश फ़ज़ाएं
यह कोह, यह सहरा, यह समुन्दर, ये हवाएं,
थीं पेशे नज़र कल तो फ़रिश्तों की अदाएं!
आईना-ए-अय्याम में आज अपनी अदा देख
समझेगा ज़माना तेरी आंखों के इशारे,
न देखेंगे तुझे दूर से गरदूं के सितारे
नापैद तेरे बहरे तख़य्युल के किनारे,
पहुंचेंगे फ़लक तक तेरी आंखों के शरारे
तामीरे ख़ुदी कर असरे आहे रसा देख

क़ाबील व हाबील

कुरआन मजीद ने हज़रत आदम ﷺ के इन दोनों बेटों का नाम ज़िक्र नहीं किया सिर्फ़ 'आदम के दो बेटे' कहकर मुज्मल छोड़ दिया है, अलबत्ता तौरात में उनके नाम बयान किए गए हैं। कुछ रिवायतों में इन दोनों भाइयों में अपनी शादियों से मुताल्लिक़ ज़बरदस्त इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र किया गया है। इस मामले को ख़त्म करने के लिए हज़रत आदम ने यह फ़ैसला फ़रमाया कि दोनों अपनी-अपनी कुरबानी अल्लाह के हुज़ूर में पेश करें। जिसकी कुर्बानी मंज़ूर हो जाए, वही अपने इरादे के पूरा कर लेने का हक़दार है।

जैसा कि तौरात से मालूम होता है, उस ज़माने में क़ुर्बानी के क़ुबूल होने का यह इलहामी तरीक़ा था कि नज़्र व क़ुर्बानी की चीज़ किसी बुलन्द जगह पर रख दी जाती और आसमान से आग ज़ाहिर होकर उसको जला देती थी। इस क़ानून के मुताबिक़ हाबील ने अपने रेवड़ में से एक बेहतरीन दुंबा अल्लाह को नज़्र किया और क़ाबील ने अपनी खेती के ग़ल्ले में से रद्दी क़िस्म का ग़ल्ला कुरबानी के लिए पेश किया। दोनों की अच्छी और बुरी नीयतों का अन्दाज़ा इसी अमल से हो गया। इसीलिए दस्तूर के मुताबिक़ आग ने आकर हाबील की नज़्र को जला दिया और इस तरह कुरबानी क़ुबूल होने का शरफ़ उसके हिस्से में आया। क़ाबील अपनी इस तौहीन को किसी तरह बर्दाश्त न कर सका और उसने ग़ैज़ व ग़ज़ब में आकर हबील से कहा कि मैं तुझको क़त्ल किए बग़ैर न छोड़ूंगा, ताकि तू अपनी मुराद को न पहुंच सके।

हाबील ने जवाब दियाः मैं तो किसी तरह तुझ पर हाथ न उठाऊंगा, बाक़ी तेरी जो मर्ज़ी आए, वह कर। रहा कुरबानी का मामला, सो अल्लाह के यहां नेक नीयत ही की नज़्र क़ुबूल हो सकती है। वहां बद-नीयत की न धमकी काम आ सकती है और न बेवजह ग़म व ग़ुस्सा और इस पर क़ाबील ने ग़ुस्से से बहुत ज़्यादा भड़क कर अपने भाई हाबील को मार डाला। कुरआन पाक में न शादी से मुताल्लिक़ इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र है और न इन दोनों के नामों का ज़िक्र है, सिर्फ़ कुरबानी (नज़्र) का ज़िक्र है और इस रिवायत से ज़्यादा हाबील की लाश के दफ़न से मुताल्लिक़ यह इज़ाफ़ा है।

क़त्ल के बाद क़ाबील हैरान था कि इस लाश का क्या करे? अभी तक आदम की नस्ल मौत से दोचार नहीं हुई थी और इसीलिए हज़रत आदम ﷺ ने मुर्दे के बारे में अल्लाह का कोई हुक्म नहीं सुनाया था। यकायक उसने देखा कि एक कौवे ने ज़मीन कुरेद-कुरेद कर गढ़ा खोदा। क़ाबील इसे देखकर चेता कि मुझे भी अपने भाई के लिए इसी तरह गढ़ा खोदना चाहिए और कुछ रिवायतों में है कि कौवे ने दूसरे मुर्दे कौवे को उस गढ़े में छुपा दिया।

क़ाबील ने यह देखा तो अपनी नाकारा ज़िंदगी पर बेहद अफ़सोस किया और कहने लगा कि मैं इस जानवर से भी गया गुज़रा हो गया कि अपने इस जुर्म को छुपाने की भी अह्लियत नहीं रखता। शर्मिंदगी और अफ़सोस से सर झुका लिया और फिर उसी तरह अपने भाई की लाश को मिट्टी के हवाले कर दिया। इस वाक़िए के बयान के बाद कुरआन पाक में आता है कि–

'इसी वजह से लिखा हमने बनी इसराईल पर कि जो कोई क़त्ल करे एक जान को बिला एवज़ जान के, या फ़साद करने की ग़रज़ से तो गोया क़त्ल कर डाला उन सब लोगों को और जिसने ज़िंदा रखा एक जान को तो गोया ज़िंदा कर दिया सब लोगों को। (सूरा माइदा 5 : 32)

इमाम अहमद ने अपनी मुस्नद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से एक रिवायत की है–

'अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में जब भी कोई ज़ुल्म से क़त्ल होता है तो उसका गुनाह हज़रत आदम ﷺ के पहले बेटे (क़ाबील) की गरदन पर ज़रूर होता है, इसलिए कि वह पहला आदमी है, जिसने ज़ालिमाना क़त्ल की शुरूआत की और यह नापाक सुन्नत जारी की।'

इबरत की जगह

सूरः माइदा की ज़िक्र की गई आयत और ऊपर लिखी हदीस हम पर यह हक़ीक़त ज़ाहिर करती है कि इंसान को अपनी ज़िंदगी में हरगिज़ किसी गुनाह की ईजाद न करनी चाहिए, क्योंकि कायनात में जो आदमी भी आगे

इस 'बिदअत' (नए काम) का इक़दाम करेगा, तो बिदअत की बुनियाद रखने वाला भी बराबर उस गुनाह का हिस्सेदार बनता रहेगा और ईजाद करने वाला होने की वजह से हमेशा वाली ज़िल्लत और घाटे का हक़दार ठहरेगा। *(नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक)*

(हज़रत आदम के इन दो बेटों का ज़िक्र सूरः माइदा में किया गया है।)

नोट : मुसन्निफ़ (लेखक) की तर्तीब के मुताबिक़ हज़रत आदम के तज़्किरे के बाद हज़रत नूह का ज़िक्र किया जाता है।

हज़रत नूह عليه السلام

हज़रत नूह عليه السلام पहले रसूल हैं

हज़रत आदम عليه السلام के बाद यह पहले नबी हैं जिनको रिसालत अ़ता की गई। सहीह मुस्लिम बाबे शफ़ाअत में हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से एक रिवायत में यह आया है कि—

'ऐ नूह! तू जमीन पर सबसे पहला रसूल बनाया गया।'

नूह عليه السلام की क़ौम, दावत व तब्लीग़ और क़ौम की नाफ़रमानी

हज़रत नूह عليه السلام के नबी बनाए जाने से पहले तमाम क़ौम अल्लाह की तौहीद और सही मज़हबी रोशनी से पूरी तरह अनजान बन चुकी थी और हक़ीक़ी माबूद की जगह ख़ुद के गढ़े हुए बुतों ने ले ली थी। ग़ैरुल्लाह और बुतों की पूजा उनका शिआर था। आखिर अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ उनके रुश्द व हिदायत के लिए भी उन ही में से एक हादी और अल्लाह के सच्चे रसूल नूह عليه السلام को मबऊस किया गया। हज़रत नूह عليه السلام ने अपनी क़ौम को राहे हक़ की तरफ़ पुकारा और सच्चे मज़हब की दावत दी लेकिन क़ौम ने न माना और नफ़रत व हक़ारत के साथ इंकार पर इसरार किया। क़ौम के अमीरों और सरदारों ने उनके झुठलाने और उन्हें ज़लील करने का कोई पहलू न छोड़ा और उनके (अमीरों और सरदारों के मानने वालों ने उन्हीं की तक़लीद और पैरवी के सबूत में हर क़िस्म के तज़लील व तौहीन के तरीक़ों को हज़रत नूह عليه السلام पर आज़माया। उन्होंने इस बात पर ताज्जुब ज़ाहिर किया कि जिसको न हम पर धन-दौलत में बरतरी हासिल है और न वह इंसानियत के रुत्बे से बुलन्द 'फ़रिश्ता हैकल' है, उसको क्या हक़ है कि वह हमारा पेशवा बने और हम उसके हुक्मों को मानें?

वे क़ौम के ग़रीब और कमज़ोर लागों को जब हज़रत नूह عليه السلام के पीछे

चलने वाले और पैरवी करने वाले देखते तो घमंड भरे अन्दाज़ में ज़लील समझ कर कहते, 'हम इनकी तरह हैं कि तेरे फ़रमान पर चलने लगें और तुझको अपना सरदार मान लें कि जिसकी पैरवी की जाए।' वे समझते थे कि कमज़ोर और पस्त लोग नूह عليه السلام के अंधे मुक़ल्लिद हैं, न इनके पास कोई समझ है कि हमारी तरह अपनी जांची, परखी राय से काम लेते और न इतना शऊर है कि हक़ीक़ते हाल को समझ लेते और अगर वे हज़रत नूह عليه السلام की बात की तरफ़ कभी तवज्जोह भी देते, तो उनसे इसरार करते कि पहले इन क़ौम के पस्त और ग़रीब लोगों को अपने पास से निकाल दे, तब हम तेरी बात सुनेंगे, क्योंकि हमको इनसे घिन आती है और हम और ये एक जगह नहीं बैठ सकते।

हज़रत नूह عليه السلام इसका एक ही जवाब देते कि ऐसा कभी न होगा, क्योंकि ये अल्लाह के मुख़्लिस बन्दे हैं अगर मैं इनके साथ ऐसा मामला करूं जिसकी तुम ख़्वाहिश रखते हो, तो अल्लाह के अज़ाब से मेरे लिए कोई पनागाह नहीं है। मै उसके दर्दनाक अज़ाब से डरता हूं। उसके यहां इख़्लास की क़द्र है। अमीर व ग़रीब का वहां कोई सवाल नहीं है। साथ ही इर्शाद फ़रमाते कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह की हिदायत का पैग़ाम लेकर आया हूं, न मैं ने ग़ैबदानी का दावा किया है और न फ़रिश्ता होने का। अल्लाह का बरगज़ीदा पैग़म्बर और रसूल हूं और दावत व इर्शाद मेरा मक़्सद और नस्बुलऐन है। उसको सरमायादाराना बुलन्दी, ग़ैबदानी या फ़रिश्ता हैकल होने से क्या वास्ता? क़ौम के ये कमज़ोर और ग़रीब लोग, जो अल्लाह पर सच्चे दिल से ईमान लाए हैं, तुम्हारी निगाह में इसलिए हक़ीर व ज़लील हैं कि वे तुम्हारी तरह धन-दौलत वाले नहीं हैं और इसीलिए तुम्हारे ख़्याल में ये न ख़ैर हासिल कर सकते हैं और न सआदत, क्योंकि ये दोनों चीज़ें दौलत व हश्मत के साथ हैं, न कि ग़रीबी और इफ़्लास के साथ।

सो वाज़ेह रहे कि अल्लाह की सआदत व ख़ैर का क़ानून ज़ाहिरी दौलत व हश्मत के ताबे नहीं है और न उसके यहां सआदत और हिदायत का हासिल करना और पाना सरमाए की रौनक़ के असर में है, बल्कि इसके ख़िलाफ़ नफ़्स का इत्मीनान, अल्लाह की रिज़ा, क़ल्ब का ग़िना और नीयत व अमल के इख़्लास पर मौक़ूफ़ है।

हज़रत नूह عليه السلام ने यह भी बार-बार तंबीह की कि मुझे अपनी दावत पहुंचाने में और हिदायत के रास्ते पर लगाने में न तुम्हारे माल की ख़्वाहिश है, न जाह व मंसब की, मैं उजरत का तलबगार भी नहीं हूं। इस ख़िलाफ़त का हक़ीक़ी अज्र व सवाब अल्लाह तआला के हाथ में है और वही बेहतरीन क़द्र करने वाला है।

बहरहाल हज़रत नूह عليه السلام ने इंतिहाई कोशिश की कि बदबख़्त क़ौम समझ जाए और अल्लाह की रहमतों की पनाह में आ जाए, मगर क़ौम ने न माना और जितना इस ओर से हक़ की तब्लीग़ में जद्दोजेहद हुई, उसी क़दर क़ौम की ओर से बुग़ज़ और दुश्मनी में सरगर्मी ज़ाहिर की गई और तक्लीफ़ पहुंचाने और चोट देने के तमाम तरीक़ों का इस्तेमाल किया गया और उनके बड़ों ने आम लोगों से साफ़-साफ़ कह दिया कि तुम किसी तरह वुद्द, सुवाअ्, यग़ूस और नस्र जैसे बुतों की पूजा को न छोड़ो और आख़िर में तंग आकर कहने लगे—

'ऐ नूह! तूने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा किया, अब उसको ख़त्म कर और जो तूने हमसे (अल्लाह के अज़ाब) का वायदा किया है, वह ले आ।'

(हूद 11 : 32)

हज़रत नूह عليه السلام ने यह सुनकर जवाब दिया—

'नूह ने कहा, ज़रूर, अगर अल्लाह चाहेगा तो उस अज़ाब को भी ले आएगा और तुम उसको थका देने वाले नहीं हो।' (हूद 11 : 33)

इस तरह जब क़ौम की हिदायत से पहले हज़रत नूह عليه السلام बिल्कुल मायूस हो गए और उसकी बातिलपरस्ती, ज़िद्द और हठधर्मी उन पर वाज़ेह हो गई और क़ुरआन के मुताबिक़ साढ़े नौ सौ साल तक बराबर की जा रही दावत व तब्लीग़ का उन पर कोई असर नहीं देखा गया तो बहुत ज़्यादा मलूल और परेशान-ख़ातिर हुए, तब अल्लाह तआला ने उनको तसल्ली के लिए फ़रमाया—

'और नूह पर वह्य की गई कि जो ईमान ले आए, वह ले आए, अब इनमें से कोई ईमान लाने वाला नहीं है, पस उनकी हरकतों पर ग़म न कर।'

(हूद 11 : 36)

तब हज़रत नूह عليه السلام को यह मालूम हो गया कि उनके हक़ पहुंचाने में

कोताही नहीं है, बल्कि ख़ुद न मानने वालों की इस्तेदाद का क़सूर है और उनकी सरकशी का नतीजा। तब उन के आमाल और हरकतों का असर कुबूल करके अल्लाह तआला की दरगाह में यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ परवरदिगार! तू काफ़िरों में से किसी को भी ज़मीन में बाक़ी न छोड़। अगर तू उनको यों ही छोड़ देगा तो ये तेरे बन्दों को भी गुमराह करेंगे और उनकी नस्ल भी उन्हीं की तरह नाफ़रमान पैदा होगी।' (नूह 71 : 27)

नाव की बुनियाद

अल्लाह ने हज़रत नूह की दुआ कुबूल फ़रमाई और बदले के क़ानून और आमाल के मुताबिक़ सरकशों की सरकशी और मुतमर्रिदों के तमर्रुद का एलान कर दिया और पेशगी ही कोई मस्अला न बने, पहले हज़रत नूह को हिदायत फ़रमाई कि वह एक नाव तैयार करें, ताकि ज़ाहिरी अस्बाब के एतबार से वह और पक्के मोमिन उस अज़ाब से बचे रहें, जो अल्लाह के नाफ़रमानों पर नाज़िल होने वाला है।

हज़रत नूह ने जब नाव बनानी शुरू की, तो कुफ़्फ़ार ने हँसी उड़ाना और मज़ाक़ बनाना शुरू कर दिया और जब कभी उधर से उनका गुज़र होता तो कहते कि 'ख़ूब! जब हम डूबने लगें तो तुम और तुम्हारे पीछे चलने वाले इस नाव में महफ़ूज़ रहकर नजात पा जाएंगे। कैसा मूर्खता वाला ख़्याल है?'

हज़रत नूह भी उनको अंजामेकार से ग़फ़लत और अल्लाह की नाफ़रमानी पर जुरात देखकर उन ही के ढंग से जवाब देते और अपने काम में लगे रहते, क्योंकि अल्लाह तआला ने पहले ही उनकी हक़ीक़ते हाल को बता दिया था।

'ऐ नूह! तू हमारी हिफ़ाज़त में हमारी वह्य के मुताबिक़ नाव तैयार किए जा और अब मुझसे उनसे मुताल्लिक़ कुछ सवाल न हो। ये बेशक डूबने वाले हैं।' (हूद 11 : 37)

आख़िर नूह की नाव बनकर तैयार हो गई अब अल्लाह के वायदे (अज़ाब) का वक़्त क़रीब आया; और हज़रत नूह ने उनकी पहली निशानी को देखा, जिसका ज़िक्र उनसे किया गया था, यानी धरती के नीचे से पानी

का चश्मा उबलना शुरू हुआ, तब अल्लाह की वह्य ने उनको हुक्म सुनाया कि नाव में अपने खानदान वालों को बैठने का हुक्म दो और तमाम जानदारों में से हर एक का एक जोड़ा नाव में पनाह ले और छोटी जमाअत (लगभग चालीस लोग) भी, जो तुम पर ईमान ला चुकी है, नाव में सवार हो जाए। जब अल्लाह की वह्य की तामील की गई तो अब आसमान को हुक्म हुआ कि पानी बरसना शुरू हो और धरती के सोतों को हुक्म दिया गया कि वे पूरी तरह उबल पड़ें। अल्लाह के हुक्म से जब यह सब कुछ होता रहा, तो नाव भी उसकी हिफ़ाज़त में पानी पर एक मुद्दत तक तैरती रही, यहां तक कि तमाम इंकार करने वाले और दुश्मन डूब गए और अल्लाह तआला के क़ानून 'जज़ा व आमाल' के मुताबिक़ अपने किए को पहुंच गए।

जूदी पहाड़ (अज़ाब का ख़त्म होना)

ग़रज़ जब अल्लाह के हुक्म से अज़ाब ख़त्म हुआ तो नूह ﷺ की नाव जूदी पर ठहर गई—

तर्जुमा— *'और हुक्म पूरा हुआ आर नाव जूदी पर जा ठहरी और एलान कर दिया गया कि ज़ुल्म करने वाली क़ौम के लिए हलाकत है।'* (हूद 44)

पानी धीरे-धीरे सूखना शुरू हो गया और नाव में पनाह लेने वालों ने दूसरी बार अम्न व सलामती के साथ अल्लाह की धरती पर क़दम रखा। इसी वजह से हज़रत नूह ﷺ का लक़ब 'अबुल बशर सानी' या 'आदमे सानी' (यानी इंसानों का दूसरा बाप) और शायद इसी एतबार से हदीस में उनको 'अव्वलुर्रुसुल' कहा गया। (जिस इंसान पर अल्लाह की वह्य नाज़िल होती है, वह 'नबी' और जिसको नई शरीअत भी अता की गई हो, वह 'रसूल' है। रसूल नबी भी होता है, मगर नबी का रसूल होना ज़रूरी नहीं।) जहां तक जूदी पहाड़ की जगह का ताल्लुक़ है, तो क़ुरआन ने सिर्फ़ उस जगह का तज़्किरा किया है, जहां नाव जाकर ठहरी थी अलबत्ता तौरात की शरह लिखने वालों का ख़्याल है कि जूदी पहाड़ के उस सिलसिले का नाम है जो अरारात और जॉर्जिया के पहाड़ी सिलसिले को आपस में मिलाता है।

अहम नतीजे

1. हर इंसान अपने किरदार व अमल का ख़ुद ही जवाबदेह है, इसलिए बाप की बुज़ुर्गी बेटे की नाफ़रमानी का इलाज नहीं बन सकती और न बेटे की सआदत बाप की सरकशी का बदल हो सकती है। *'कुल्लुंय-यअ्मलु अला शाकिलतिही'* 'हर आदमी अपने-अपने ढंग पर काम करता है।'

2. बुरी सोहबत भयानक ज़हर से भी ज़्यादा बड़ी क़ातिल है और उसका फल व नतीजा ज़िल्लत व घाटा और तबाही के अलावा और कुछ नहीं है। इंसान के लिए जिस तरह नेकी ज़रूरी चीज़ है, उससे ज़्यादा नेक सोहबत ज़रूरी है और जिस तरह बदी से बचना उसकी ज़िंदगी की नुमायां ख़ास बात है, उससे कहीं ज़्यादा बुरों की सोहबत से ख़ुद को बचाना ज़रूरी है—

सोहबते सालेह तुरा सालेह कुनद, सोहबते तालेह तुरा तालेकुनद

(सादी)

सगे अस्हाबे कह्फ़ रोज़े चंद प-ए-नेकां गिरफ़्त मर्दुम शुद (सादी)

3. अल्लाह पर सही एतमाद और भरोसे के साथ ज़ाहिर अस्बाब का इस्तेमाल तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं है, बल्कि तवक्कुल अलल्लाहि के लिए सही तरीक़ा-ए-कार है, तभी तो नूह عليه السلام के तूफ़ान से बचने के लिए कश्ती ज़रूरी ठहरी—

कोशिश में शर्ते इब्तिदा इंसान से,
फिर चाहिए दुआ यज़दान से,
जब तक कि न काम दस्त व बाज़ू से लिया
पाई न नजात नूह ने तूफ़ान से।

4. अंबिया عليهم السلام से 'पैग़म्बरे ख़ुदा और मासूम होने के बावजूद', बशर होने के तक़ाज़े की शक्ल में लग़्ज़िश हो सकती है, मगर वे उस पर क़ायम नहीं रह सकते, बल्कि अल्लाह की तरफ़ से उनको तंबीह कर दी जाती है और उससे हटा लिया जाता है साथ ही वे आलिमुल ग़ैब (ग़ैब को जानने वाले) भी नहीं होते, जैसा कि हज़रत नूह عليه السلام के वाक़िए से अच्छी तरह ज़ाहिर है।

5. अगरचे अ़मल के बदले का ख़ुदाई क़ानून कायनात के हर हिस्से में अपना काम कर रहा है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि हर जुर्म और हर ताअत

की सज़ा या जज़ा इसी दुनिया में मिल जाए, क्योंकि यह कायनात अमल की खेती है, किरदार के बदले के लिए मआद और आख़िरत की दुनिया को ख़ास किया गया है, फिर भी ज़ुल्म और घमंड इन दो बदआमालियों की सज़ा किसी न किसी अन्दाज़ से यहां दुनिया में भी ज़रूर मिलती है।

क़ौल

इमाम अबू हनीफ़ा रह० फ़रमाया करते थे कि ज़ालिम और घमंडी अपनी मौत से पहले ही अपने ज़ुल्म और किब्र की कुछ न कुछ सज़ा ज़रूर पाता है और ज़िल्लत और नामुरादी का मुंह देखता है। चुनांचे अल्लाह के सच्चे पैग़म्बरों से उलझने वाली क़ौमों और तारीख़ की ज़ालिम और घमंडी हस्तियों की इबरतनाक हलाकत और बरबादी की दास्तानें इस दावे की बेहतरीन दलील हैं।

नूह ؑ के तूफ़ान से मुताल्लिक़ कुछ अहम बातें

नूह ؑ का बेटा

तारीख़ के माहिरों ने हज़रत नूह ؑ के इस बेटे का नाम कनआन बताया है, यह तौरात की रिवायत के मुताबिक़ है। कुरआन उसका नाम बताने से ख़ामोश है, जो नफ़्से वाक़िया के लिए ग़ैर ज़रूरी था अलबत्ता हज़रत नूह ؑ का उस बेटे से ख़िताब और उसके जवाब का ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा— *'कहा, मैं बहुत जल्द किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं कि वह मुझको डूबने से बचा लेगा।'* (हूद-43)

लेकिन कुछ उलेमा ने हज़रत नूह के इस बेटे के मुताल्लिक़ यह कहा है कि यह सगा बेटा न था और फिर इस बारे में दो अलग-अलग दावे किए हैं। एक जमाअत कहती है कि वह 'रबीब' था (यानी हज़रत नूह ؑ की बीवी के पहले शौहर का लड़का था) जो हज़रत नूह ؑ से निकाह के बाद उनकी गोद में पला था और दूसरी जमाअत हज़रत नूह ؑ की काफ़िर बीवी पर अस्मत व आबरू में ख़ियानत का इलज़ाम लगाती है। इन उलमा को इन ग़ैर

सनद याफ़्ता और दूर की कौड़ी लाने की जरूरत इसलिए पेश आई कि इनके ख़्याल में पैग़म्बर का बेटा काफ़िर हो, यह बहुत दूर की बात और अजीब मालूम होती है जबकि हक़ीक़त यह है कि नबी और पैग़म्बर का काम फ़क़त रुश्द व हिदायत का पैग़ाम पहुंचाना है। औलाद, बीवी, ख़ानदान, क़बीला और क़ौम पर उसको ज़बरदस्ती चस्पां करना और उनके दिलों को पलट देना नहीं है। अल्लाह तआला फ़रमाता है—

'तू उन (काफ़िरों पर) मुसल्लत नहीं किया गया।'

(अल-ग़ाशिया 28 : 32)

'और तू उनको हक़ के क़ुबूल करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।'

(क़ाफ़ 55 : 45)

बहरहाल सही यही है कि कनआन हज़रत नूह का बेटा था, मगर उस पर हज़रत नूह ﷺ की हिदायत व रुश्द की जगह अपनी काफ़िर वालिदा की तर्बियत की गोद ने और ख़ानदान और क़ौम के माहौल ने बुरा असर डाला और वह नबी का बेटा होने के बावजूद काफ़िर ही रहा। असल में—

पिसरे नूह बाबदां नशिस्त　　　　ख़ानदाने बनू तश गुम शद!

नूह ﷺ का तूफ़ान आम था या ख़ास

क्या नूह का तूफ़ान पूरी दुनिया में आया था या किसी ख़ास ख़ित्ते पर, इसके बारे में पुराने और नए उलेमा में हमेशा से दो राएं रही हैं। यही सूरत यहूदी और ईसाई उलेमा, फ़लकियात के इल्म के और तबक़ातुल-अर्ज़ के माहिरों की है। एक तबक़े का ख़्याल है कि यह सिर्फ़ उसी ख़ित्ते में महदूद था, जहां हज़रत नूह ﷺ की क़ौम आबाद थी और यह हलक़ा फैलाव के एतबार से एक लाख चालीस हज़ार मुरब्बा किलो मीटर होता है, लेकिन सही मस्लक यही है कि तूफ़ान ख़ास था, आम न था, अलबत्ता क़ुरआन मजीद ने अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ सिर्फ़ उन्हीं तफ़्सीलों पर तवज्जोह की है, जो नसीहत के लिए और सबक़ हासिल करने के लिए ज़रूरी थीं। वह तो सिर्फ़ यह बताना चाहता है कि तारीख़ का यह वाक़िया सोचने-समझने वालों को भुलाना न चाहिए कि हज़ारों साल पहले एक क़ौम ने अल्लाह की नाफ़रमानी

पर इसरार किया और उसके भेजे हुए हादी हज़रत नूह عليه السلام के सबक़ व हिदायत के पैग़ाम को झुठलाया, ठुकराया और मानने से इन्कार कर दिया, तो अल्लाह ने अपनी क़ुदरत का मुज़हारा किया और ऐसे सरकशों और मुतमर्रिदों को हवा-बारिश के तूफ़ान में ग़र्क़ कर दिया और इसी हालत में हज़रत नूह عليه السلام और थोड़े से लोगों की ईमानदार जमाअत को महफ़ूज़ रखकर कर नजात दी।

'इन-न फ़ी ज़ालि-क ल-इबरतल्लि उलिलअलबाब''

हज़रत नूह عليه السلام की उम्र

क़ुरआन मजीद ने साफ़ कहा है कि हज़रत नूह ने अपनी क़ौम में साढ़े नौ सौ साल तब्लीग़ व दावत का फ़र्ज़ अंजाम दिया।

तर्जुमा–*''और बिला शुबहा हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा, पस वह रहा उनमें पचास कम एक हज़ार साल।''*

(अंकबूत 27 : 14)

यह उम्र मौजूदा तबई उम्र के एतबार से अक़्ल से परे मालूम होती है, लेकिन मुहाल और नामुम्किन नहीं है, इसलिए कि कायनात के शुरू के दिनों में ग़मों, फ़िक्रों और मरज़ों की यह बहुतात नहीं थी, साथ ही पुरानी तारीख़ भी मानती है कि कुछ हज़ार साल पहले की तबई उम्र का तनासुब मौजूदा तनासुब से बहुत ज़्यादा था। हज़रत नूह عليه السلام की तबई उम्र का मामला भी इसी क़िस्म के इस्तिस्ना (अपवाद) में से समझना चाहिए जो अंबिया عليهم السلام की तारीख़ में अल्लाह की आयत और उसकी निशानी की फेहरिस्त में गिनी जाती है और जिनकी हिक्मत व ग़ायत का मामला ख़ुद अल्लाह तआला के सुपुर्द है। हक़ और सही मस्लक यही है और इस मुद्दत को घटाने के लिए दूर-दूर की तावीलें करने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं।

क़ुरआन मजीद में हज़रत नूह عليه السلام का ज़िक्र अठाईस सूरतों में तैंतालीस जगह आया है।

हज़रत इदरीस عليه السلام

हज़रत इदरीस का ज़िक्र क़ुरआन में सिर्फ़ दो जगह आया है— सूरः मरयम में और सूरः अंबिया में।

तर्जुमा—*'और याद करो क़ुरआन में इदरीस को, बिला शुब्हा वह सच्चे नबी थे और बुलन्द किया है हमने उनका मुक़ाम।'* (मरयम 19 : 56)

तर्जुमा—*और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल, इनमें से हर एक था सब्र करने वाला।* (अंबिया 21 : 85)

नाम-नसब और ज़माना

हज़रत इदरीस के नाम-नसब और ज़माने के बारे में तारीख़ लिखने वालों को सख़्त इख़्तिलाफ़ है और तमाम इख़्तिलाफ़ी वजहों को सामने रखने के बाद भी कोई आख़िरी या तरजीह देने वाली राय क़ायम नहीं की जा सकती। वजह यह है कि क़ुरआन करीम ने तो रुश्द व हिदायत के अपने मक़्सद के पेशे नज़र, तारीख़ी बहस से जुदा होकर सिर्फ़ उनकी नुबूवत के रुत्बे की बुलन्दी और उनकी ऊंची सिफ़तों का ज़िक्र किया है और इसी तरह हदीस की रिवायतें भी इससे आगे नहीं जातीं। इसलिए इस सिलसिले में जो कुछ भी है, वे इसराईली रिवायतें हैं और वे भी आपसी टकराव और इख़्तिलाफ़ से भरी हुई हैं। (इसीलिए थोड़े में लिखने के पेशेनज़र इन दूर-दराज़ से लाई गई बहसों से बचने की कोशिश की जा रही है)

एक जमाअत का यह ख़्याल है कि हज़रत इदरीस عليه السلام बाबिल में पैदा हुए और वहीं पले-बढ़े। उम्र के शुरूआती दिनों में उन्होंने हज़रत शीस बिन आदम عليه السلام से इल्म हासिल किया। बहरहाल जब इदरीस عليه السلام ख़ुद से सोचने-समझने की उम्र को पहुंचे तो अल्लाह ने उनको नुबूवत से सरफ़राज़ फ़रमाया तब उन्होंने शरीरों (बदमाशों) और फ़सादियों के राहे हिदायत की तबलीग़ शुरू की, पर फ़सादियों ने उनकी एक बात न सुनी और हज़रत आदम عليه السلام व शीस عليه السلام की शरीअत के मुख़ालिफ़ ही रहे, अलबत्ता एक छोटी-सी

जमाअत ज़रूर मुसलमान हो गई।

हज़रत इदरीस ؑ ने जब यह रंग देखा तो वहां से हिजरत का इरादा किया और अपने मानने वालों को हिजरत कर जाने के लिए कहा। इदरीस ؑ की पैरवी करने वालों ने जब यह सुना तो उनको वतन का छोड़ना बहुत गरां गुज़रा और कहने लगे कि बाबिल जैसा वतन हमको कहां नसीब हो सकता है? हज़रत इदरीस ؑ ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि अगर तुम यह तक्लीफ़ अल्लाह के रास्ते में उठाते हो, तो उसकी रहमत बहुत फैली हुई है, उसका अच्छा बदला ज़रूर देगा, पस हिम्मत न हारो और अल्लाह के हुक्म के आगे सरे नियाज़ झुका दो।

मुसलमानों की रज़ामंदी के बाद हज़रत इदरीस और उनकी जमाअत मिस्र की तरफ़ हिजरत कर गई और नील के किनारे एक अच्छी जगह चुनकर के सकूनत अपना ली। हज़रत इदरीस और उनकी पैरवी करने वाली जमाअत ने पैग़ामे इलाही और भलाई का हुक्म देने और बुराई रोकने वाले का फ़र्ज़ अंजाम देना शुरू कर दिया। कहा जाता है कि उनके ज़माने में बहत्तर ज़ुबानें बोली जाती थीं और अल्लाह की अता व बख़्शिश से वह वक़्त की तमाम ज़ुबानों को जानते थे और हर एक जमाअत को उसकी ज़बान में तब्लीग़ फ़रमाया करते थे। एक रिवायत के एतबार से हज़रत इदरीस ؑ पहले आदमी हैं जिन्होंने क़लम को इस्तेमाल किया।

हज़रत इदरीस की ख़ास बातें

हज़रत इदरीस ने दीने इलाही के पैग़ाम के अलावा तमद्दुनी रियासत और शहरी ज़िंदगी, तमद्दुनी तौर-तरीक़ों की तालीम व तलक़ीन की और उनके ट्रेंड तालिब इल्मों ने कम व बेश दो सौ बस्तियां आबाद कीं। हज़रत इदरीस ؑ ने इन तलबा को दूसरे इल्मों की भी तालीम की, जिसमें इल्मे हिक्मत और इल्मे नुजूम भी शामिल हैं। हज़रत इदरीस ؑ पहली हस्ती हैं जिन्होंने हिक्मत व नुजूम के इल्म की शुरूआत की, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उनको अफ़लाक और उनकी तर्कीब, कवाकिब और उनके जमा होने और अलग होने के नुक्तों और उनके आपसी कशिश के राज़ों की तालीम दी और

उनको अदद व हिसाब के इल्म का आलिम बनाया और अगर ख़ुदा के उस पैग़म्बर के ज़रिए से इल्म सामने न आते, तो इन्सानी तबीयतों की वहां तक पहुंच मुश्किल थी। उन्होंने अलग-अलग ज़ातों और गिरोहों के लिए उनके मुनासिबे हाल क़ायदे क़ानून मुक़र्रर किए और पूरी दुनिया को चार हिस्सों में बांट कर हर चौथाई के लिए एक हाकिम मुक़र्रर किया जो ज़मीन के उस हिस्से की सियासत और बादशाही का ज़िम्मेदार क़रार पाया और इन चारों के लिए ज़रूरी क़रार दिया कि तमाम क़ानूनों से बढ़-चढ़कर शरीयत का वह क़ानून रहेगा, जिसकी तालीम अल्लाह की वह्य के ज़रिए मैंने तुमको दी है।

हज़रत इदरीस عليه السلام की तालीम का ख़ुलासा

अल्लाह की हस्ती और उसकी तौहीद पर ईमान लाना सिर्फ़ कायनात पैदा करने वाले की परस्तिश करना, आख़िरत के अ़ज़ाब से बचाने के लिए भले अ़मलों को ढाल बनाना, दुनिया से बे-नियाज़ी, तमाम मामलों में अद्ल व इंसाफ़ को सामने रखना, मुक़र्रर किए हुए तरीक़ों पर अल्लाह की इबादत करना, अय्यामे बीज़ के रोज़े रखना, इस्लाम के दुश्मनों से जिहाद करना, ज़कात अदा करना, पाकी-सफ़ाई के साथ रहना, ख़ास तौर से जनाबत, कुत्ते और सूअर से बचना, हर नशीली चीज़ों से परहेज़ करना।

बाद में आने वाले नबियों के बारे में बशारत

हज़रत इदरीस ने अपनी उम्मत को यह भी बताया कि मेरी तरह इस दुनिया की दीनी व दुन्यवी इस्लाह के लिए बहुत-से नबी तशरीफ़ लाएंगे और उनकी नुमायां ख़ास बातें ये होंगी।

वे हर एक बुरी बात से दूर और पाक होंगे। तारीफ़ के क़ाबिल और फ़ज़ाइल में कामिल होंगे। ज़मीन व आसमान के हालात को और उन मामलों को कि जिनमें कायनात के लिए शिफ़ा है या मरज़, वह्य इलाही के ज़रिए इस तरह जानते होंगे कि कोई मांगने वाला भूखा-प्यासा न रहेगा। वे दुआओं को सुनने वाले होंगे। उनके मज़हब की दावत का ख़ुलासा कायनात की इस्लाह होगा।

हज़रत इदरीस अलै॰ की ज़मीनी ख़िलाफ़त

जब हज़रत इदरीस अल्लाह की ज़मीन के मालिक बना दिए गए, तो उन्होंने इल्म व अमल के एतबार से अल्लाह की मख़्लूक़ को तीन तबक़ों में बांट दिया— काहिन, बादशाह, रियाया (प्रजा) और तर्तीब के एतबार के उनके दर्जे तै किए। काहिन सबसे पहला और ऊंचा दर्जा क़रार पाया, इसलिए कि वह अल्लाह तआला के सामने अपने नफ़्स के अलावा बादशाह और रियाया के मामलों में भी जवाबदेह है। 'बादशाह' का दूसरा दर्जा रखा गया इसलिए कि वह नफ़्स और राज्य के मामलों के बारे में जवाबदेह है और रियाया सिर्फ़ अपने नफ़्स के लिए जवाबदेह है, इसलिए वह तीसरे तबके में शामिल है लेकिन ये तबके ज़िम्मेदारियों के एतबार से थे, नस्ल व ख़ानदान के आख़्तियारों के एतबार से नहीं। हज़रत इदरीस अलै॰ 'अल्लाह तक जाने' तक शरीयत और सियासत के इन्हीं क़ानूनों की तब्लीग़ फ़रमाते रहे।

हज़रत इदरीस से मुताल्लिक़ ख़ास बातें

उनकी अंगूठी पर यह इबारत खुदी हुई थी, *'अल्लाह पर ईमान के साथ-साथ सब्र फ़तहमंदी की वजह है।'* उनके कमर से बंधने वाले पटके पर यह लिखा हुआ था, 'सच्ची ईदें तो अल्लाह के फ़र्ज़ों के अदा करने में छिपी हुई हैं। दीन का कमाल शरीअत से जुड़ा हुआ है और मुरव्वत में दीन के कमाल की तकमील है।'

नमाज़े जनाज़ा के वक़्त जो पटका बांधते थे, उस पर नीचे लिखे जुमले खुदे हुए थे। 'सआदतमंद वह है जो अपने नफ़्स की निगरानी करे और परवरदिगार के सामने इंसान की शफ़ाअत करने वाले उसके नेक अमाल हैं।'

हज़रत इदरीस अलै॰ की नसीहतें

हज़रत इदरीस अलै॰ की बहुत-सी नसीहतें और आदाब व अख़्लाक़ के जुम्ले मशहूर हैं, जो अलग-अलग ज़ुबानों में ज़र्बुल मसल (कहावत) और रुमूज़ व अमार (गूढ़ रहस्य) की तरह इस्तेमाल में आते हैं और उनमें से कुछ नीचे

दिए जाते हैं—

1. अल्लाह की बेपनाह नेमतों का शुक्रिया इंसानी ताक़त से बाहर है।

2. जो इल्म में कमाल और अमले सालेह का ख़्वाहिशमंद हो, उसको जिहालत के अस्बाब और बद-किरदारी के क़रीब भी न जाना चाहिए। क्या तुम नहीं देखते कि हरफ़न मौला कारीगर अगर सीने का इरादा करता है तो सूई हाथ में लेता है, न कि बर्मा। पस हर वक़्त यह उसूल नज़रों में रहना चाहिए।

3. दुनिया की भलाई 'हसरत' है और बुराई 'नदामत'।

4. अल्लाह की याद और अमले सालेह के लिए ख़ुलूसे नीयत शर्त है।

5. न झूठी क़स्में खाओ, न अल्लाह तआला के नाम को क़स्मों के लिए तख़्ता-ए-मश्क़ बनाओ और न झूठों को क़समें खाने पर आमादा करो, क्योंकि ऐसा करने से तुम भी गुनाह में शरीक हो जाओगे।

6. ज़लील पेशों को अख़्तियार न करो (जैसे सींगी लगाना, जानवरों की जुफ़्ती पर उजरत लेना, वग़ैरह)

7. अपने बादशाहों की (जो कि पैग़म्बर की तरफ़ से शरीअत के हुक्मों के नाफ़िज़ करने के लिए मुक़र्रर किए जाते हैं) इताअत करो और अपने बड़ों के सामने पस्त रहो और हर वक़्त अल्लाह की तारीफ़ में अपनी ज़ुबान को तर रखो।

8. हिक्मत रूह की ज़िंदगी है।

9. दूसरों की ख़ुश ऐशी पर हसद न करो, इसलिए कि उनकी यह मस्रूर ज़िंदगी कुछ दिनों की है।

10. जो ज़िंदगी की ज़रूरतों की ज़्यादा तलब रखता हो वह कभी क़ानेअ़ नहीं रहा।

नोट : कुछ तहक़ीक़ करने वालों और तज़्किरा लिखने वालों ने हज़रत इदरीस (अलै॰) और यूनानी फ़र्ज़ी अफ़्सानवी (Greek Mythology) के (Hermes) हरमज़ में मुताबक़त पैदा करने की कोशिश की है, जो सही नहीं है। हरमज़ (Hermes) को उन फ़र्ज़ी अफ़्सानों में हिक्मत व फ़साहत का देवता कहा जाता है। रूमी उसको 'अ़तारद' कहते हैं।

हज़रत हूद عليه السلام

आद का ज़माना

आद का ज़माना लगभग दो हज़ार साल क़ब्ल मसीह माना जाता है और क़ुरआन मजीद में आद को *'मिम बादि नूह'* कहकर नूह क़ौम के ख़लीफ़ों में गिना गया है, साथ ही उनको *आदे ऊला* कहा है और आद के साथ इरम का लफ़्ज़ लगा हुआ है।

आद के रहने की जगह

आदे का मर्कज़ी मक़ाम अरज़े अहक़ाफ़ है। यह हज़र मौत के उत्तर में इस तरह वाक़े है कि इसके पूरब में ओमान और उत्तर में राबेअ़ अल-ख़ाली। मगर आज यहां रेत के टीलों के सिवा कुछ नहीं है।

आद का मज़हब

आद बुत-परस्त थे और अपने पेशे और नूह की क़ौम की तरह सनमपरस्ती और बुततराशी में माहिर थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنه से एक असर मंक़ूल है। इसमें है कि इनके एक सनम का नाम समूद और एक का नाम हतार था।

हज़रत हूद عليه السلام

आद अपनी ममलक्त की सतवत व जबरूत, जिस्मानी सूरत व ग़ुरूर में ऐसे चमके कि उन्होंने एक अल्लाह को बिल्कुल भुला दिया और अपने हाथों के बनाए हुए बुतों को अपना माबूद मानकर हर क़िस्म के शैतानी आमाल बे-ख़ौफ़ व ख़तर करने लगे, तब अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं में से एक पैग़म्बर हज़रत हूद को भेजा। हज़रत हूद عليه السلام आद की सबसे ज़्यादा इज़्ज़तदार शाख़ा 'ख़ुलूद' के एक फ़र्द (व्यक्ति) थे। सुर्ख़ व सफ़ेद रंग और बहुत ख़ुबसूरत थे। उनकी दाढ़ी बड़ी थी।

इस्लाम की तब्लीग़

उन्होंने अपनी क़ौम को अल्लाह की तौहीद और उसकी इबादत की तरफ़ दावत दी और लोगों पर ज़ुल्म व जौर करने से मना फ़रमाया। मगर आद ने एक न मानी। उनको सख़्ती के साथ झुठलाया और ग़ुरूर और घमंड के साथ कहने लगे, 'मन अशद्दु मिन्ना क़ुव्वः' (हम में से ज़्यादा कौन है क़ुव्वत में आगे) (हामीम सज्दा 41)

आज दुनिया में हम से ज़्यादा शौकत व जबरूत का कौन मालिक है? मगर हज़रत हूद ﷺ लगातार इस्लाम की तब्लीग़ में लगे रहे। वह अपनी क़ौम को अल्लाह के अज़ाब से डराते और ग़ुरूर व सरकशी के नतीजों को बताकर नूह की क़ौम के वाक़िए याद दिलाते और कभी इर्शाद फ़रमाते—

'ऐ क़ौम! अपनी जिस्मानी ताक़त और हुकूमत के ज़बरदस्त होने पर घमण्ड न कर, बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा कर कि उसने तुझको यह दौलत बख़्शी। नूह क़ौम की तबाही के बाद ज़मीन का तुझको मालिक बनाया, ख़ुशऐशी, फ़ारिग़ुलबाली और ख़ुशहाली अता की, इसलिए उसकी नेमतों को न भूल और ख़ुद के गढ़े हुए बुतों की परस्तिश से बाज़ आ, जो न नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न दुख दे सकते हैं। मौत व ज़िंदगी, नफ़ा-नुक़्सान सब एक अल्लाह ही के हाथ में है। ऐ क़ौम के लोगो! माना कि तुम सरकशी और उसकी नाफ़रमानी में मुब्तला रहे हो, मगर आज भी अगर तौबा कर लो और बाज़ आ जाओ तो उसकी रहमत फैली हुई है और तौबा का दरवाज़ा बंद नहीं हुआ है। उससे मग़्फ़िरत चाहो, वह बख़्श देगा। उसकी तरफ़ रुजू हो जाओ, वह माफ़ कर देगा और माल व इज़्ज़त में सरफ़राज़ी बख़्शेगा।

आद को हज़रत हूद ﷺ की ये नसीहतें बहुत गरां गुज़रती थीं और वे यह नहीं सह सकते थे कि उनके ख़्यालों, उनके अक़ीदों और उनके कामों, ग़रज़ यह कि उनके इरादों में कोई आदमी रुकावट पैदा करे, उनके लिए मेहरबान नसीहत करने वाला बने, इसलिए अब उन्होंने यह रवैया अपनाया कि हज़रत हूद ﷺ का मज़ाक़ उड़ाया, उनको बेवक़ूफ़ समझा और उनकी मासूमियत भरी हक़ वाली सच्चाइयों की तमाम यक़ीनी दलीलों और मिसालों को झुठलाना शुरू कर दिया और कहने लगे—

तर्जुमा— *'ऐ हूद! तू हमारे पास एक दलील भी न लाया और तेरे कहने से हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ने वाले नहीं और न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं।'* (हूद 11 : 35)

'और हम इस ढोंग में आने वाले नहीं कि तुझको ख़ुदा का रसूल मान लें और अपने ख़ुदाओं की इबादत छोड़कर यह यक़ीन कर लें कि वे 'बड़े ख़ुदा' के सामने हमारे सिफ़ारिशी नहीं होंगे।'

हज़रत हूद ﷺ ने उनसे कहा कि न मैं बेवक़ूफ़ हूं और न पागल, बिला शुब्हा अल्लाह का रसूल और पैग़म्बर हूं। अल्लाह अपने बन्दों की हिदायत के लिए बेवक़ूफ़ को मुंतख़ब नहीं किया करता कि उसका नुक़्सान उसके नफ़ा से बढ़ जाए और हिदायत की जगह गुमराही आ जाए। वह इस ज़ोरदार ख़िदमत के लिए अपने बन्दों में से ऐसे आदमी को चुनता है जो हर तरह से उसका अह्ल हो और हक़ की असल ख़िदमत को ख़ुशी के साथ अंजाम दे सके।

तर्जुमा— *'और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है कि रिसालत के अपने मंसब को किस जगह रखे।'* *(अल-अनआम 6 : 124)*

मगर क़ौम की सरकशी और मुख़ालफ़त बढ़ती रही और उनपर सूरज से ज़्यादा रोशन दलीलों और नसीहतों का ज़रा भी असर न पड़ा और हज़रत हूद ﷺ को ज़लील करने और झुठलाने पर और ज़्यादा उतर आए और (अल-अयाज़बिल्लाह) मजनून और ख़ब्ती कहकर और ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाने लगे और कहने लगे, ऐ हूद! जबसे तूने हमारे बुतों को बुरा कहना और हमको उनकी इबादत न करने पर उभारना शुरू किया है, हम देखते हैं कि उस वक़्त से तेरा हाल ख़राब हो गया है और हमारे ख़ुदाओं की बद-दुआ से तू पागल और मजनून हो गया है, तो अब हम इसके अलावा तुझको और क्या समझें? उनकी इस गुस्ताख़ी भरी जुर्रात और हिम्मत से यह ख़्याल हो चला था कि अब कोई आदमी हज़रत हूद ﷺ की तरफ़ ध्यान न देगा और उनकी बातों को तवज्जोह से न सुनेगा।

हज़रत हूद ﷺ ने यह सब कुछ निहायत सब्र व ज़ब्त से सुना, फिर उनसे यूं बोले—

'मैं अल्लाह को और तुम सबको गवाह बनाकर सबसे पहले यह एलान करता हूं कि मैं इस अक़ीदे से बिल्कुल अलग हूं कि इन बुतों में न यह क़ुदरत है कि मुझको या किसी को किसी क़िस्म की भी कोई बुराई पहुंचा सकते हैं, इसके बाद तुमको और तुम्हारे इन झूठे माबूदों को चैलेंज करता हूं कि अगर इनमें ऐसी क़ुदरत है तो वे मुझको नुक़्सान पहुंचाने में जल्दी से कोई क़दम उठाएं। मैं अपने अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से अक़्ल रखने वाला और सूझ-बूझ रखने वाला हूं। सोचने-समझने का मालिक हूं और हिक्मत और दानाई का हामिल, मैं तो सिर्फ़ अपने अल्लाह पर ही भरोसा करता हूं, और उसी पर पूरा यक़ीन रखता हूं जिसके क़ब्ज़े व क़ुदरत में कायनात के तमाम जानदारों की पेशानियां हैं, जो ज़िंदगी और मौत का मालिक है। वह ज़रूर मेरी मदद करेगा और हर नुक़्सान पहुंचाने वाले के नुक़्सान से बचाए रखेगा।

आख़िर हज़रत हूद ﷺ ने उसकी लगातार बग़ावत और सरकशी के ख़िलाफ़ यह ऐलान कर दिया कि अगर आ़द का यही रवैया रहा और हक़ से पलटने और मुंह फेरने की रविश में उन्होंने कोई तब्दीली न की और मेरी नसीहतों को पूरे दिल से न सुना, तो मैं अगरचे अपनी डाली ज़िम्मेदारियों के लिए हर वक़्त चुस्त और हिम्मत रखने वाला हूं, मगर उनके लिए हलाकत यक़ीनी है। अल्लाह बहुत जल्द उनको हलाक कर देगा और दूसरी क़ौम को ज़मीन का मालिक बनाकर उनकी जगह क़ायम कर देगा और बिला शुब्हा वे अल्लाह तआ़ला को ज़र्रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते वह तो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला और हर चीज़ की हिफ़ाज़त करने वाला और निगहबान है। और पूरी कायनात उसकी क़ुदरत की मुट्ठी में है।

ऐ क़ौम! अब भी समझ और अक़्ल व होश से काम ले नूह ﷺ की क़ौम के हालात से इबरत हासिल कर और अल्लाह के पैग़ाम के सामने सर नियाज़ झुका दे वरना क़ज़ा व क़द्र का हाथ ज़ाहिर हो चुका है और बहुत क़रीब है वह ज़माना कि तेरा यह सारा ग़ुरूर व घमंड ख़ाक में मिल जाएगा और उस वक़्त शर्मिंदगी से भी कोई फ़ायदा न होगा।

हज़रत हूद ﷺ ने बार-बार उनको भी यह बावर कराया कि मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं, दोस्त हूं। तुमसे सोना-चांदी और तख़्त व ताज की तलब नही

करता हूं, बल्कि तुम्हारी फ़लाह व नजात चाहता हूं। मैं अल्लाह तआला के पैग़ाम के बारे में ख़ियानत करने वाला नहीं बल्कि अमीन हूं। वही करता हूं जो मुझसे कहा जाता है। जो कुछ कहता हूँ क़ौम की सआदत और हाल व माल की भलाई के लिए कहता हूं, बल्कि दायमी व सरमदी नजात के लिए कहता हूं।

तुमको अपनी ही क़ौम के एक इंसान पर अल्लाह के पैग़ाम नाज़िल होने से अचम्भा नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह पुराने ज़माने से अल्लाह की जारी व सारी सुन्नत है कि इंसानों की हिदायत व सआदत के लिए उन्हीं में से एक आदमी को चुन लेता और अपना रसूल बना कर उसको ख़िताब करता है और अपनी मर्ज़ी और नामर्ज़ी से उसकी मारफ़त अपने बन्दों को मुत्तला करता रहता है और फ़ितरत का तक़ाज़ा भी तो यही है कि किसी क़ौम की रुश्द व हिदायत के लिए ऐसे आदमी ही को चुना जाए, जो बोल-चाल में उन्हीं की तरह हो, उनके अख़्लाक़ और आदतों का जानकार हो, उनकी ख़ुसूसी बातों से आश्ना और उन्हीं के साथ जिंदगी गुज़ारता रहा हो कि उसी से क़ौम मानूस हो सकती है और वही उसका सही हादी व मुश्फ़िक़ बन सकता है।

आद ने जब यह सुना तो वे अजीब हैरत में पड़ गए। उनकी समझ में न आया कि एक अल्लाह की इबादत का मतलब क्या है? वे ग़म व ग़ुस्सा में आ गए कि किस तरह हम बाप-दादा की 'अस्नाम परस्ती' (मूर्तिपूजा) को छोड़ दें? यह तो हमारी और हमारे बाप दाद की सख़्त तौहीन है। उनका ग़ैज़ व ग़ज़ब भड़क उठा कि उनको काफ़िर और मुश्रिक क्यों कहा जाता है? जबकि वे बुतों को अल्लाह के समान अपनी शफ़ाअत करने वाला मानते हैं? उनके नज़दीक हूद की बात मान लेने में उनके माबूदों और बुज़ुर्गों की तौहीन थी और उन्हें हक़ीर समझा जा रहा था, जिनको वह बड़े ख़ुदा के दरबार में अपना वसीला और शफ़ी मानते थे और इसी को इन तस्वीरों और मूर्तियों के लिए पूजते थे कि वे ख़ुश होकर हमारी सिफ़ारिश करेंगे और अल्लाह के अज़ाब से नजात दिलाएंगे। आख़िर वे शोले की तरह भड़क उठे और हज़रत हूद عليه السلام से बिगड़ कर कहने लगे, तूने हमको अपने ख़ुदा के अज़ाब की धमकी दी और हमको उससे यह कहकर डराया कि—

तर्जुमा—'मैं तुम्हारे ऊपर बड़े दिन के अज़ाब के आने से डरता हूं (कि कहीं) तुम उसके हक़दार न ठहर जाओ।' (अश-शोअ़रा 26 : 135)

तो ऐ हूद! अब हमसे तेरी रोज़-रोज़ की नसीहतें सुनी नहीं जातीं। हम ऐसी नसीहत करने वाले मेहरबान से बाज़ आए, अगर तू वाक़ई अपने क़ौल में सच्चा है तो वह अ़ज़ाब जल्द ले आ कि हमारा-तेरा क़िस्सा साफ़ हो।

तर्जुमा—'पस ला तू हमारे पास उस चीज़ को, जिसका तू हमसे वायदा करता है, अगर तू वाक़ई सच्चों में से है।' (अल-आराफ़ 7 : 70)

हज़रत हूद (अलै॰) ने जवाब दिया कि अगर मेरे ख़ुलूस और मेरी सच्चाई वाली नसीहतों का यही जवाब है तो 'बिस्मिल्लाह' और तुमको अ़ज़ाब का अगर इतना की शौक़ है, तो वह भी कुछ दूर नहीं।

तर्जुमा—'बिला शुबहा तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर अ़ज़ाब व ग़ज़ब आ पहुंचा। (अल-आराफ़ 7 : 71)

तुमको शर्म नहीं आती कि तुम ख़ुद अपने गढ़े हुए बुतों को उनके नाम गढ़ कर पुकारते हो और तुम्हारे बाप-दादा उनको अल्लाह की दी हुई दलील के बग़ैर मनगढ़त तरीक़े पर उनको अपना शफ़ीअ़ और सिफ़ारिशी मानते हैं और तुम मेरी रोशन दलीलों से मुंह फेर कर और सरकशी करके अ़ज़ाब के तलबगार होते हो, अगर ऐसा शौक़ है तो अब तुम भी इन्तिज़ार करो और मैं भी इंतिज़ार करता हूं कि वक़्त क़रीब आ पहुंचा।

तर्जुमा—'क्या तुम मुझसे उन मनगढ़त नामों (बुतों) के बारे में झगड़ते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादों ने गढ़ लिया है कि जिसके बारे में तुम्हारे पास ख़ुदा की कोई हुज्जत नहीं। पस अब तुम (अल्लाह के अ़ज़ाब का) इन्तिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (अल-आराफ़ 7 : 71)

हूद की क़ौम पर अ़ज़ाब

हासिल यह कि हूद की क़ौम (आद) इंतिहाई शरारत व बग़ावत और अपने पैग़म्बर की तालीम से बेपनाह बुग़्ज़ और दुश्मनी की वजह से अ़मल के बदले और जज़ा के क़ानून का वक़्त आ पहुंचा और ग़ैरते हक़ हरकत में आई और अल्लाह के अ़ज़ाब ने सबसे ख़ुश्कसाली की शक्ल अख़्तियार की। आद सख़्त घबराए हुए परेशान हुए और तंग दिखाई पड़ने लगे, तो हज़रत हूद (अलै॰)

को हमदर्दी के जोश ने उकसाया और मायूसी के बाद फिर उनको एक बार समझाया कि हक़ का रास्ता अख़्तियार कर लो, मेरी नसीहतों पर ईमान ले आओ, यही निजात की राह है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, वरना पछताओगे। लेकिन बदबख़्त व बदनसीब क़ौम पर कोई असर न हुआ बल्कि दुश्मनी कई गुना ज़्यादा बढ़ गई, तब हौलानाक अज़ाब ने उन को आ घेरा। आठ दिन और सात रातें बराबर तेज़ व तुंद हवा के तूफ़ान उठे और उनको और उनकी आबादी को तह व बाला करके रख दिया। तनोमंद और हैकल इंसान जो अपनी जिस्मानी ताक़तों के घमंड में सरमस्त और सरकश बने हुए थे, इस तरह बेहिस व हरकत पड़े नज़र आते थे, जिस तरह आंधी से भारी-भरकम पेड़ बेजान होकर गिरता है। ग़रज़ उनकी हस्ती को नेस्त व नाबूद कर दिया गया, ताकि आने वाली नस्लों के लिए इबरत बनें और दुनिया और आख़िरत की लानत और अज़ाब उन पर मुसल्लत कर दिया गया कि वे उसी के हक़दार थे। हज़रत हूद ﷺ और उनके मुख़्लिस इस्लाम को मानने वाले साथी अल्लाह की रहमत और नेमत में अल्लाह के अज़ाब से महफ़ूज़ रहे और सरकश क़ौम की सरकशी और बग़ावत से बचे रहे।

यह है आदे ऊला की वह दास्तान जो अपने अन्दर इबरत के सामान रखती है। इसमें अनगिनत नसीहतें पाई जाती हैं और अल्लाह तआला के हुक्मों की तामील और तक़्वा व तहारत की ज़िंदगी की तरफ़ दावत देती है। शरारत, सरकशी और अल्लाह के हुक्मों से बग़ावत के बुरे अंजाम से आगाह करती और वक़्ती ख़ुशऐशी पर घमंड करके नतीजे की बदबख़्ती पर मज़ाक़ उड़ाने से डराती और बाज़ रखती है।

हज़रत हूद ﷺ की वफ़ात

हज़रत अली रज़ि॰ से एक असर नक़ल किया जाता हैं कि उनकी क़ब्र हज़्र मौत में कसीफ़े अहमर (लाल टीला) पर है और उसके सरहाने झाऊ का पेड़ खड़ा है। दूसरी रिवायतों के मुक़ाबले में यही रिवायत सही और माक़ूल मालूम होती है कि आद की बस्तियां हज़र मौत के क़रीब थीं और उनकी (आद की) तबाही के बाद क़रीब ही की बस्तियों में हज़रत हूद ﷺ ने क़ियाम फ़रमाया होगा और वहीं वफ़ात हो गई होगी।

कुछ इबरतें

अल्लाह के नेक बन्दे जब किसी का भला चाहते और टेढ़ों की टेढ़ को सीधा करने के लिए नसीहत फ़रमाते, तो बुरों और ज़लीलों की कमीनगी, मज़ाक़ उड़ाने, फब्ती कसने, छोटा बनाए रखने की परवाह नहीं करते। दुखी और रंजीदा होकर या नाराज़ होकर भला चाहने और नसीहत करने को नहीं छोड़ते और इन तमाम ख़ुसूसियतों में नुमायां बात यह होती है कि वे अपनी इसी नसीहत और भला चाहने के लिए क़ौम से किसी नफ़ा की उम्मीद या ख़्वाहिश ज़रा-सी नहीं रखते। उनकी ज़िंदगी बदला और एवज़ से पूरी तरह बुलन्द और बरतर होती है।

अपने इस्लाह चाहने वालों और नबियों और सच्चों के ख़िलाफ़ क़ौमों की वैर और दुश्मनी इसी एक अक़ीदे पर टिक रही है कि हमारे बाप-दादा की रीति व रस्म और उनकी ख़ुद की गढ़ी हुई मूर्तियों के ख़िलाफ़ क्यों कुछ कहा जाता है? ये बातें क़ौमों की ज़िंदगी के लिए हमेशा तबाही मचाने वाली और उनकी फ़लाह व अबदी सआदत के लिए हलाक करने वाली हैं।

तब्लीग़ व हक़ के पैग़ाम के रास्ते में बदी का बदला नेकी से दिया जाए और कड़ुवाहट का जवाब मीठे बोल से पूरा किया जाए। (अलबत्ता तब्लीग़ करने वाले) अपनी बदकिरदारी और लगातार सरकशी पर अल्लाह तआला के बनाए हुए क़ानून 'जज़ा-ए-अ़मल' या 'पादाशे अ़मल' को ज़रूर याद दिलाएं और आने वाले बुरे अंजाम पर यक़ीनन तंबीह करें और यह सच्चाई बार-बार सामने लाएं कि जब कोई क़ौम इज्तिमाई सरकशी, ज़ुल्म और बग़ावत पर तैयार हो जाती है और उस पर बराबर इसरार करती रहती है, तो फिर अल्लाह तआला का क़ह्र व ग़ज़ब उसको सफ्हा-ए-आलम से मिटा देता है और उसकी जगह दूसरी क़ौम ले लेती है।

हज़रत हूद ؑ और आद क़ौम का ज़िक्र क़ुरआन में सूरः आराफ़, हूद और शुअ़रा में आया है जबकि आद क़ौम का ज़िक्र आराफ़, हूद, मोमिनून, शुअ़रा, फ़ुस्सिलत, अहक़ाफ़, अज़्ज़ारियात, अल-क़मर और अल-हाक़्क़ा में हुआ है।

हज़रत सालेह عليه السلام

समूद क़ौम

समूद, क़ौम के वही लोग हैं जो पहले आद की हलाकत के बाद हज़रत हूद عليه السلام के साथ बच गए थे और उनकी नस्ल आदे सानिया (द्वितीय आद) कहलाई। उनको 'समूदे इरम' भी कहा गया—

समूद की बस्तियां

समूद की आबादियां हिज्र में थी। हिजाज़ और शाम के दर्मियान वादी कुरा तक जो मैदान नज़र आता है, यह सब उनके रहने की जगह है। समूद की बस्तियों के खंडर और निशान आज तक मौजूद हैं। इनकी ख़ास बात यह है कि इन बस्तियों में मकान पहाड़ों को काट कर बनाए गए थे, गोया समूद तामीरात के मामले में बहुत ज़्यादा माहिर थे।

समूद का ज़माना

समूद के ज़माने के मसले के बारे में कोई तै शुदा बाक़ायदा वक़्त नहीं बताया जा सकता, अलबत्ता यक़ीनी तौर पर कहा जा सकता है कि इनका ज़माना हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम से पहले का ज़माना है।

समूदियों का मज़हब

समूद अपने बुतपरस्त पुरखों की तरह बुतपरस्त थे। वे ख़ुदा के अलावा बहुत से बातिल माबूदों के परस्तार थे और शिर्क में डूबे हुए थे। इसलिए उनकी इस्लाह के लिए भी और उन पर हक़ वाज़ेह करने के लिए भी उन्हीं के क़बीले में से हज़रत सालेह عليه السلام को नसीहत करने वाला पैग़म्बर और रसूल बनाकर भेजा, ताकि वह उनको सीधे रास्ते पर लाए, उन पर वाज़ेह करे कि कायनात की हर चीज़ अल्लाह के एक होने और अकेले होने पर गवाह है। उन्हें अल्लाह की नेमत याद दिलाए और बताए कि परस्तिश और इबादत के लायक़ एक ज़ात के अलावा दूसरा कोई नहीं है।

क़ुरआन मजीद में आए क़िस्सों का मतलब

क़ुरआन मजीद की यह सुन्नत है कि वह इंसानों की हिदायत के लिए पिछली क़ौमों के और उन्हें हिदायत के रास्ते पर लगाने के वाक़िए और हालात बयान करके नसीहतों और वाज़ों का सामान जुटाता है, ताकि यह मालूम हो सके कि जिन उम्मतों ने उनकी बातों का इंकार किया, और उनका मज़ाक़ उड़ाया और उन्हें झुठलाया, तो अल्लाह तआला ने अपने सच्चे रसूल की तस्दीक़ के लिए कभी अपने आप और कभी क़ौम के मांग करने पर ऐसी निशानियां नाज़िल फ़रमाईं जो नबियों और रसूलों की तस्दीक़ की वजह बनीं और 'मोजज़ा' कहलाईं, लेकिन अगर क़ौम ने इस निशानी और मोजज़ा के बाद भी झुठलाने को न छोड़ा और न दुश्मनी छोड़ी, बल्कि ज़िद पर अड़े रहे, तो फिर 'अल्लाह के अज़ाब' ने आकर उनको तबाह व हलाक कर दिया और उनके वाक़ियों को आने वाली क़ौम के लिए इबरत व नसीहत का सामान बना दिया।

अल्लाह की ऊंटनी

हज़रत सालेह ﷺ क़ौम को बार-बार समझाते और फ़रमाते रहे, पर क़ौम पर बिल्कुल असर न हुआ, बल्कि उसकी दुश्मनी तरक़्क़ी पाती रही और उसका विरोध बढ़ता ही रहा और वह किसी तरह बुतपरस्ती से बाज़ न आई। अगरचे एक छोटी और कमज़ोर जमाअत ने ईमान क़ुबूल कर लिया और वह मुसलमान हो गई, मगर क़ौम के सरदार और बड़े-बड़े सरमायादार उसी तरह बातिल-परस्ती पर क़ायम रहे और उन्होंने दी हुई हर क़िस्म की नेमतों का शुक्रिया अदा करने के बजाए नाशुक्री का तरीक़ा अपना लिया। वे हज़रत सालेह ﷺ का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा करते कि सालेह! अगर हम बातिल परस्त होते, अल्लाह के सही मज़हब के इंकारी होते और उसके पसंदीदा तरीक़े पर क़ायम न होते, तो आज हमको यह सोने-चांदी की बहुतात, हरे-भरे बाग़ और दूसरी नेमतें हासिल न होतीं। तुम ख़ुद को और अपने मानने वालों को देखो और फिर उनकी तंगहाली और ग़ुर्बत पर नज़र करो और बतलाओ कि

अल्लाह के प्यारे और मक़्बूल कौन हैं?

हज़रत सालेह ﷺ फ़रमाते कि तुम अपने इस ऐश और अमीरी पर शेख़ी न मारो और अल्लाह के सच्चे रसूल और उसके सच्चे दीन का मज़ाक़ न उड़ाओ, इसलिए अगर तुम्हारे घमंड और दुश्मनी का यही हाल रहा, तो पल में सब कुछ फ़ना हो जाएगा और फिर न तुम रहोगे और न यह तुम्हारा समाज, बेशक ये सब अल्लाह की नेमते हैं, बशर्ते कि इनके हासिल करने वाले उसका शुक्र अदा करें और उसके सामने सरे नियाज़ झुकाएं और बेशक यही अज़ाब व लानत के सामान हैं, अगर इनका इस्तिक़बाल शेख़ी व ग़ुरूर के साथ किया जाए। इसलिए यह समझना ग़लती है कि ऐश का हर सामान अल्लाह की ख़ुश्नूदी का नतीजा है।

समूद को यह हैरानी थी कि यह कैसे मुम्किन है कि हमीं में का एक इंसान अल्लाह का पैग़म्बर बन जाए और वह अल्लाह के हुक्म सुनाने लगे। वे बड़े ताज्जुब से कहते—

तर्जुमा— *'कि हमारी मौजूदगी में उस पर (ख़ुदा की) नसीहत उतरती है।'*

(साद 38 : 8)

यानी अगर ऐसा होना ही था तो इसके अह्ल हम थे, न कि सालेह और कभी अपनी क़ौम के कमज़ोर लोगों (जो कि मुसलमान हो गए थे) को ख़िताब करके कहते—

तर्जुमा— *'क्या तुमको यक़ीन है कि बिला शुबहा सालेह अपने परवरदिगार का रसूल है?'*

(अल-आराफ़ 7 : 59)

और मुसलमान जवाब देते—

तर्जुमा— *'बेशक हम तो इसके लाए हुए पैग़ाम पर ईमान रखते हैं।'*

(अल-आराफ़ 9 : 75)

तब ये क़ौम के इंकार करने वाले (समूद क़ौम) ग़ुस्से में कहते :

तर्जुमा— *'बेशक हम तो उस चीज़ का जिस पर तुम्हारा ईमान है, इंकार करते है।'*

(अल-आराफ़ 7 : 7)

बहरहाल हज़रत सालेह की मग़रूर व सरकश क़ौम ने उनकी पैग़म्बराना दावत व नसीहत को मानने से इंकार किया और अल्लाह के निशान (मोजज़े)

का मुतालबा किया, तब सालेह ने अल्लाह के दरबार में दुआ की और क़ुबूलियत के बाद अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम्हारा मत्लूब निशान ऊंटनी की शक्ल में यहां मौजूद है। देखो, अगर तुमने इसको तक्लीफ़ पहुंचायी तो फिर यही हलाकत का सामान साबित होगा और अल्लाह ने तुम्हारे और उसके दर्मियान पानी के बारी तै कर दी है। एक दिन तुम्हारा है और एक दिन इसका, इसलिए इसमें फ़र्क़ न आए।

क़ुरआन मजीद ने इसे *'नाक़तुल्लाह'* (अल्लाह की ऊंटनी) कहा है, ताकि यह बात नज़रों में रहे कि यूं तो तमाम मख़लूक़ अल्लाह ही की मिल्कियत है, मगर समूद ने चूंकि उनको ख़ुदा की एक निशानी की शक्ल में तलब किया था, इसलिए उसको मौजूदा ख़ुसूसियत ने उसको 'अल्लाह की निशानी' का लक़ब दिलाया, साथ ही उसको *'लकुम आयातिही'* (तुम्हारे लिए निशानी) कहकर यह भी बताया कि यह निशानी अपने भीतर ख़ास अहमियत रखती है, लेकिन बदक़िस्मत क़ौम समूद ज़्यादा देर तक इसको बरदाश्त न कर सकी और एक दिन साज़िश करके ऊंटनी को हलाक कर डाला। हज़रत सालेह अ़० को जब यह मालूम हुआ तो आंखों मे आंसू लाकर फ़रमाने लगे, बदबख़्त क़ौम! आख़िर तुझसे सब्र न हो सका। अब अल्लाह के अ़ज़ाब का इंतज़ार कर। तीन दिन के बाद न टलने वाला अ़ज़ाब आएगा और तुम सबको हमेशा के लिए तहस-नहस कर दिया जाएगा।

समूद पर अ़ज़ाब

समूद पर अ़ज़ाब आने की निशानियां अगली सुबह से ही शुरू हो गईं, यानी पहले दिन इन सबके चेहरे इस तरह पीले पड़ गए जैसा कि हर शुरूआती हालत में हो जाया करता है और दूसरे दिन सबके चेहरे लाल थे, गोया ख़ौफ़-दहशत का यह दूसरा दर्जा था और तीसरे दिन इन सबके चेहरे स्याह थे और अंधेरा छाया हुआ था। यह ख़ौफ़ व दहशत का वह तीसरा दर्जा है जिसके बाद मौत का दर्जा रह जाता है।

बहरहाल इन तीन दिनों के बाद वायदा किया गया वक़्त आ पहुंचा और रात के वक़्त एक हैबतनाक आवाज़ ने हर आदमी को उसी हालत में हलाक

कर दिया, जिस हालत में वह था। क़ुरआन मजीद ने हलाक कर देने वाली आवाज़ को किसी जगह साइक़ा (कड़कदार बिजली) और किसी जगह रजफ़ा (ज़लज़ला डाल देने वाली चीज़), किसी जगह ताग़िया (दहशतनाक) और कहीं सैहा (चीख़) फ़रमाया।

एक तरफ़ समूद पर यह अ़ज़ाब आया और उनकी बस्तियों को तबाह व बर्बाद करके सरकशों की सरकशी और घमंडियों का अंजाम ज़ाहिर हुआ, जबकि दूसरी ओर हज़रत सालेह ﷺ और उनकी पैरवी करने वाले मुसलमानों को अल्लाह ने अपनी हिफ़ाज़त में ले लिया और उनको इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखा।

कुछ इबरतें

अल्लाह की सुन्नत यही रही है (मगर अल्लाह की इस सुन्नत से नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहिस्सलाम की रिसालत का पैग़ाम अलग है। इसलिए कि आपने साफ़ कहा है कि मैंने अल्लाह से दुआ़ मांगी कि वह मेरी उम्मत (उम्मते दावत हो या उम्मते इजाबत) में अ़ज़ाब मुसल्लत न फ़रमाए और अल्लाह तआ़ला ने मेरी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली।) क़ुरआन मजीद ने इसकी तस्दीक़ इस तरह की है—

तर्जुमा—*'ऐ रसूल! इस हाल में कि तू उनमें मौजूद है अल्लाह तआ़ला (इन काफ़िरों) पर आम अ़ज़ाब मुसल्लत न करेगा।'* (अल-अंफ़ाल : 33)

लेकिन जो क़ौम अपने नबी से इस वायदे पर निशान तलब करे कि अगर उनका मतलूब निशान ज़ाहिर हो गया, तो वे ज़रूर ईमान लाएंगे, फिर वे ईमान न लाए तो उस क़ौम की हलाकत यक़ीनी हो जाती है। अल्लाह तआ़ला उसको माफ़ नहीं करता, जब तक कि वह तौबा न कर ले और अल्लाह के दीन को क़ुबूल न कर ले या अल्लाह के अ़ज़ाब से सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटकर दूसरों के लिए इबरत का सबब न बन जाए। यह मोहलिक ग़लती और नफ़्स का धोखा है कि इंसान ख़ुशऐशी, रफ़ाहियत और दुन्यावी जाह व जलाल देखकर यह समझ बैठे कि जिस क़ौम या फ़र्द के पास यह सब कुछ मौजूद हैं, वह ज़रूर अल्लाह तआ़ला के साए में है और उनकी ख़ुशऐशी अल्लाह की ख़ुशनूदी की निशानी है।

हज़रत इब्राहीम عليه السلام

हज़रत इब्राहीम عليه السلام का ज़िक्र क़ुरआन पाक में

क़ुरआन पाक के रुश्द व हिदायत का पैग़ाम चूं कि इब्राहीमी मिल्लत का पैग़ाम है, इसलिए क़ुरआन पाक में जगह-जगह हज़रत इब्राहीम عليه السلام का ज़िक्र किया गया है, जो मक्की-मदनी दोनों क़िस्म की सूरतों में मौजूद है, यानी 35 सूरतों की 63 आयतों में हज़रत इब्राहीम عليه السلام का ज़िक्र मिलता है।

हज़रत इब्राहीम عليه السلام के वालिद का नाम

तारीख़ और तौरात दोनों हज़रत इब्राहीम عليه السلام के वालिद का नाम 'तारिख़' बताते हैं और क़ुरआन पाक के एतबार से हज़रत इब्राहीम عليه السلام के वालिद का नाम 'आज़र' है। इस सिलसिले में उलेमा, तफ़्सीर लिखने वाले, मग़रिबी मुस्तशरिक़ों और तहक़ीक़ करने वालों ने बड़ी-बड़ी, लंबी-लंबी बहसें की हैं लेकिन इनमें अख़्तियार की गई ठंडी ठंडी बातें हैं इसलिए कि क़ुरआन मजीद ने जब खोल-खोल कर आज़र को अब (इब्राहीम का बाप) कहा है तो फिर अंसाब के उलेमा और बाइबिल की तख़्मीनी अटकलों से मुतास्सिर होकर क़ुरआन मजीद की यक़ीनी ताबीर को मजाज़ कहने या इससे भी आगे बढ़कर क़ुरआन मजीद में क़वाइद की बातें मानने पर कौन-सी शरई और हक़ीक़ी ज़रूरत मजबूर करती है। साफ़ और सीधा रास्ता यह है कि जो क़ुरआन मजीद में कहा गया उसको मान लिया जाए, चाहे वह नाम हो या लक़ब हो।

हज़रत इब्राहीम عليه السلام और दूसरे अंबिया अलैहिमुस्सलाम

हज़रत इब्राहीम के हालात के साथ उनके भतीजे हज़रत लूत और उनके बेटों हज़रत इसमाइल عليه السلام और हज़रत इस्हाक़ عليه السلام वाक़िआत भी वाबिस्ता हैं। इन तीनों पैग़म्बरों के तफ़्सीली हालात के इनके तज़्किरों में बयान किए गए हैं, यहां सिर्फ़ हज़रत इब्राहीम عليه السلام के हालात के तहत कहीं कहीं ज़िक्र आएगा।

हज़रत इब्राहीम ﷺ की अज़्मत

हज़रत इब्राहीम की शान की इस अज़्मत के पेशेनज़र जो नबियों और रसूलों के दर्मियान उनको हासिल है क़ुरआन मजीद में उनके वाक़िआत को अलग-अलग उस्लूब के साथ जगह-जगह बयान किया गया है। एक जगह पर अगर थोड़े में ज़िक्र है, तो दूसरी जगह तफ़्सील से तज़्किरा किया गया है और कुछ जगहों पर उनकी शान और ख़ूबी को सामने रखकर उनकी शख़्सियत को नुमायां किया गया है।

तौरात यह बताती है कि हज़रत इब्राहीम इराक़ के क़स्बा 'उर' के वाशिंदे थे और अह्ले फ़द्दान में से थे और उनकी क़ौम बुत-परस्त थी, जबकि इंजील में साफ़ लिखा है कि उनके वालिद नज्जारी का पेशा करते और अपनी क़ौम के अलग-अलग क़बीलों के लिए लकड़ी के बुत बनाते और बेचा करते थे, मगर हज़रत इब्राहीम को शुरू ही से हक़ की बसीरत और रुश्द व हिदायत अ़ता फ़रमाई और वे यह यक़ीन रखते थे कि बुत न देख सकते हैं न सुन सकते हैं और न किसी की पुकार का जवाब दे सकते हैं और न नफ़ा व नुक़्सान का उनसे कोई वास्ता है और न लकड़ी के खिलौनों और दूसरी बनी हुई चीज़ों के और उनके बीच कोई फ़र्क़ और इम्तियाज़ है। वे सुबह व शाम आंख से देखते थे कि इन बेजान मूर्तियों को मेरा बाप अपने हाथों से बनाता और गढ़ता रहता है और जिस तरह उसका दिल चाहता है नाक-कान आंखें गढ़ लेता है और फिर ख़रीदने वालों के हाथ बेच देता है, तो क्या ये ख़ुदा हो सकते हैं या ख़ुदा-जैसे या ख़ुदा के बराबर हो सकते हैं?

हज़रत इब्राहीम ने जब यह देखा कि क़ौम बुतपरस्ती, सितारापरस्ती और मज़ाहिर-परस्ती में ऐसी लगी हुई है कि ख़ुदा-ए-बरतर की क़ुदरते मुतलक़ा और उसके एक होने और समद होने का तसव्वुर भी उनके दिलों में बाक़ी न रहा और अल्लाह के एक होने के अक़ीदे से ज़्यादा कोई ताज्जुब की बात नहीं रही, तब उसने अपनी हिम्मत चुस्त की और ज़ाते वाहिद के भरोसे पर उनके सामने दीने हक़ का पैग़ाम रखा और एलान किया—

'ऐ क़ौम! यह क्या है जो मैं देख रहा हूं कि तुम अपने हाथ से बनाए हुए बुतों की परस्तिश में लगे हुए हो। क्या तुम इस क़दर ग़फ़लत के ख़्वाब

में हो कि जिस बेजान लकड़ी को अपने हथियारों से गढ़ कर मूर्तियां तैयार करते हो, अगर वे मर्ज़ी के मुताबिक़ न बनें, तो उनको तोड़ कर दूसरे बना लेते हो, बना लेने के बाद फिर उन्हीं को पूजने और नफ़ा-नुक़सान का मालिक समझने लगते हो, तुम इस खुराफ़ात से बाज़ आ जाओ, अल्लाह की तौहीद के नग़मे गाओ और उस एक हक़ीक़ी मालिक के सामने सरे नियाज़ झुकाओ जो मेरा, तुम्हारा और कुल कायनात का ख़ालिक व मालिक है। मगर क़ौम ने उसकी आवाज़ पर बिल्कुल ध्यान न धरा और चूंकि हक़ सुनने वाले कान और हक़ देखने वाली निगाह से महरूम थी, इसलिए उसने जलीलुलक़द्र पैग़म्बर की दावते हक़ का मज़ाक़ उड़ाया और ज़्यादा-से-ज़्यादा तमर्रुद व सरकशी का मुज़ाहरा किया।

बाप को इस्लाम की दावत और बाप-बेटे का मुनाज़रा

हज़रत इब्राहीम ﷺ देख रहे थे कि शिर्क का सबसे बड़ा मर्कज़ ख़ुद उनके अपने घर में क़ायम है और आज़र की बुतपरस्ती और बुतसाज़ी पूरी क़ौम के लिए एक धुरी बनी हुई है इसलिए फ़ितरत का तक़ाज़ा है कि हक़ की दावत और सच्चाई के पैग़ाम के फ़र्ज़ की अदाएगी की शुरूआत घर से ही होनी चाहिए, इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷺ ने सब से पहले अपने वालिद 'आज़र' ही को मुख़ातब किया और फ़रमाया–

'ऐ बाप! ख़ुदापरस्ती और मारफ़ते इलाही के लिए जो रास्ता तूने अपनाया है और जिसे आप बाप-दादा का पुराना रास्ता बताते हैं, यह गुमराही और बातिलपरस्ती का रास्ता है और सीधा रास्ता (राहे हक़) सिर्फ़ वही है, जिसकी मैं दावत दे रहा हूं। ऐ बाप! तौहीद ही नजात का सरचश्मा है, न कि तेरे हाथ के बनाए गए बुतों की पूजा और इबादत। इस राह को छोड़कर हक़ और तौहीद के रास्ते को मज़बूती के साथ अख़्तियार कर, ताकि तुझको अल्लाह की रज़ा और दुनिया और आख़िरत की सआदत हासिल हो।

मगर अफ़सोस कि आज़र पर हज़रत इब्राहीम की नसीहतों का बिल्कुल कोई असर नहीं हुआ, बल्कि हक़ क़ुबूल करने के बजाए आज़र ने बेटे को धमकाना शुरू किया। कहने लगा कि इब्राहीम : अगर तू बुतों की बुराई से

बाज़ न आएगा, तो मैं तुझको पत्थर मार-मारकर हलाक कर दूंगा। हज़रत इब्राहीम ने जब यह देखा कि मामला हद से आगे बढ़ गया और एक तरफ़ अगर बाप के एहतराम का मसला है तो दूसरी तरफ़ फ़र्ज़ की अदायगी हक़ की हिमायत और अल्लाह के हुक्म की इताअत का सवाल, तो उन्होंने सोचा और आख़िर वही किया जो ऐसे ऊंचे इंसान और अल्लाह की जलीलुलक़द्र पैग़म्बर के शायाने शान था। उन्होंने बाप की सख़्ती का जवाब सख़्ती से नहीं दिया। हक़ीर समझने और ज़लील करने का रवैया नहीं बरता बल्कि नहीं, लुत्फ़ व करम और अच्छे अख़्लाक़ के साथ यह जवाब दिया ऐ बाप! अगर मेरी बात का यही जवाब है तो आज से मेरा-तेरा सलाम है। मैं अल्लाह के सच्चे दीन और उसके पैग़ामे हक़ को नहीं छोड़ सकता और किसी हाल में बुतों की परस्तिश नहीं कर सकता। मैं आज तुझसे जुदा होता हूं, मगर ग़ायबाना दरगाहे इलाही में बख़्शिश तलब करता रहूंगा, ताकि तुझको हिदायत नसीब हो और तू अल्लाह के अज़ाब से नजात पा जाए।

क़ौम को इस्लाम की दावत और उससे मुनाज़रा

बाप और बेटे के दर्मियान जब मेल की कोई शक्ल न बनी और आज़र ने किसी तरह इब्राहीम की रुश्द व हिदायत को क़ुबूल न किया, तो हज़रत इब्राहीम ने आज़र से जुदाई अख़्तियार कर ली और अपनी हक़ की दावत और रिसालत के पैग़ाम को फैला दिया और अब सिर्फ़ आज़र ही मुख़ातब न रहा बल्कि पूरी क़ौम को मुख़ातब बना लिया, मगर क़ौम अपने बाप-दादा के दीन को कब छोड़ने वाली थी, उसने इब्राहीम की एक न सुनी और हक़ की दावत के सामने अपने बातिल माबूदों की तरह गूंगे, अंधे और बहरे बन गए और जब इब्राहीम ने ज़्यादा ज़ोर देकर पूछा कि यह तो बतलाओ कि जिनकी तुम पूजा करते हो, ये तुम्हें किसी क़िस्म का भी नफ़ा या नुक़सान पहुंचाते हैं, कहने लगे कि इन बातों के झगड़े में हम पड़ना नहीं चाहते? हम तो यह जानते हैं कि हमारे बाप-दादा यही करते चले आए हैं, इसलिए हम भी वही कर रहे हैं। तब हज़रत इब्राहीम ने एक ख़ास अन्दाज़ से एक ख़ुदा की हस्ती की तरफ़ तवज्जोह दिलाई, फ़रमाने लगे, मैं तो तुम्हारे इन सब बुतों को अपना दुश्मन

जानता हूं, यानी मैं इनसे बे-ख़ौफ़ व ख़तर होकर इनसे जंग का एलान करता हूं कि अगर यह मेरा कुछ बिगाड़ सकते हैं तो अपनी हसरत निकाल लें।

अलबत्ता मैं उस हस्ती को अपना मालिक समझता हूं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है। जिसने मुझको पैदा किया और सीधा रास्ता दिखाया, जो मुझको खिलाता-पिलाता यानी रिज़्क़ देता है और जब मैं मरीज़ हो जाता हूं तो वह मुझको शिफ़ा बख़्शता है और मेरी ज़िंदगी और मौत दोनों का मालिक है और यानी ख़ताकारी के वक़्त जिससे यह लालच करता हूं कि वह क़ियामत के दिन मुझको बख़्श दे और मैं उसके हुज़ूर में यह दुआ करता रहता हूं, ऐ परवरदिगार! तू मुझको सही फ़ैसले की ताक़त अ़ता फ़रमा और मुझको नेकों की सूची में दाख़िल कर और मुझको ज़ुबान की सच्चाई अ़ता कर और जन्नते नईम के वारिसों में शामिल कर। मगर आज़र और आज़र की क़ौम के दिल किसी तरह हक़ क़ुबूल करने के लिए नर्म न हुए और उनका इंकार हद से गुज़रता ही गया।

सितारा परस्ती

हज़रत इब्राहीम ﷺ की क़ौम बुतपरस्ती के साथ-साथ सितारा-परस्ती भी करती थी और यह अ़क़ीदा था कि इंसानों की मौत और ह़यात, उनकी रोज़ी, उनका नफ़ा-नुक़्सान, ख़ुश्कसाली, क़हतसाली , जीत और कामियाबी और हार और पस्ती, ग़रज़ दुनिया के तमाम कारख़ाने का नज़्म व नस्क़ तारे और उनकी हरकतों की तासीर पर चल रहा है और यह तासीर उनकी ज़ाती सिफ़तों में से है, इसलिए इनकी ख़ुशनूदी ज़रूरी है और यह उनकी पूजा के बिना मुम्किन नहीं है।

इस तरह हज़रत इब्राहीम ﷺ जिस तरह उनको उनकी सिफ़ली, झूठे माबूदों की हक़ीक़त खोल करके हक़ के रास्ते की तरफ़ दावत दी, उसी तरह ज़रूरी समझा कि उनके झूठे बातिल माबूदों की बे-सबाती और फ़ना के मंज़र को पेश करके इस हक़ीक़त से भी आगाह कर दें कि तुम्हारा यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है कि इन चमकते हुए सितारों, चांद और सूरज को ख़ुदाई ताक़त हासिल है। हरगिज़ नहीं, यह बेकार का ख़्याल और बातिल अ़क़ीदा

है। मगर ये बातिल-परस्त जबकि अपने ख़ुद के गढ़े हुए बुतों से इतने डरे हुए थे कि उनको बुरा कहने वाले के लिए हर वक़्त यह सोचते थे कि उनके ग़ज़ब में आकर तबाह व बर्बाद हो जाएगा, तो ऐसे औहाम परस्तों के दिलों में बुलन्द सितारों की पूजा के ख़िलाफ़ जज़्बा पैदा करना कुछ आसान काम न था इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷷ ने उनके दिमाग़ के मुनासिब एक अजीब और दिलचस्प तरीक़ा बयान व अख़्तयार किया।

तारों भरी रात थी, एक सितारा ख़ूब रोशन था। हज़रत इब्राहीम ﷷ ने उसको देखकर फ़रमाया 'मेरा रब यह है।' इसलिए अगर सितारे को रब मान सकते हैं तो यह उनमें सबसे मुमताज़ और रोशन है। लेकिन जब वह अपने तैशुदा वक़्त पर नज़र से ओझल हो गया और उसको यह मजाल न हुई कि एक घड़ी और रहनुमाई करा सकता और कायनात के निज़ाम से हट कर अपने पूजने वालों के लिए ज़ियारतगाह बना रहता, तब हज़रत इब्राहीम ﷷ ने फ़रमाया, मैं छुप जाने वालों को पसंद नहीं करता। यानी जिस चीज़ पर मुझसे भी ज़्यादा तब्दीलियों का असर पड़ता हो और जो जल्द-जल्द इन असरात को क़ुबूल कर लेता हो, वह मेरा माबूद क्यों हो सकता है?

फिर निगाह उठाई तो देखा कि चांद आब व ताब के साथ सामने मौजूद है, उसको देखकर फ़रमाया, 'मेरा रब यह है।' इसलिए यह ख़ूब रोशन है और अपनी ठंडी रोशनी से सारी दुनिया को नूर का गढ़ बनाए हुए है। पस अगर तारों को रब बनाना ही है तो इसी को क्यों न बनाया जाए, क्योंकि यही इसका ज़्यादा हक़दार नज़र आता है।

फिर जब सुबह का वक़्त होने लगा तो चांद के भी हल्के पड़ जाने और छुप जाने का वक़्त आ पहुंचा और जितना ही सूरज के उगने का वक़्त होता गया, चांद का जिस्म देखने वाले की नज़रों से ओझल होने लगा, तो यह देखकर हज़रत इब्राहीम ﷷ ने एक ऐसा जुम्ला फ़रमाया, जिससे चांद के रब होने की मनाही के साथ-साथ एक अल्लाह की हस्ती की तरफ़ क़ौम की तवज्जोह इस ख़ामोशी से फेर दी कि क़ौम इसका एहसास न कर सके और इस बात-चीत का एक ही मक़्सद है यानी 'सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान', वह उनके दिलों में बग़ैर क़स्द व इरादे के बैठ जाए, फ़रमाया—

'अगर मेरा सच्चा पालनहार मेरी रहनुमाई न करता, तो मैं भी ज़रूर गुमराह क़ौम में से ही एक होता।'

पस इतना फ़रमाया और ख़ामोश हो गए, इसलिए कि इस सिलसिले की अभी एक कड़ी और बाक़ी है और क़ौम के पास अभी मुक़ाबले के लिए एक हथियार मौजूद है इसलिए इससे ज़्यादा कहना मुनासिब नहीं था।

तारों भरी रात ख़त्म हुई, चमकते सितारे और चांद सब नज़रों से ओझल हो गए, क्यों? इसलिए कि अब आफ़ताब आलमताब का रुख़े रोशन सामने आ रहा है। दिन निकल आया और वह पूरी आब व ताब से चमकने लगा।

हज़रत इब्राहीम ने उसको देखकर फ़रमायाः यह है मेरा रब क्योंकि यह तारों में सबसे बड़ा है और निज़ामे फ़लकी में इससे बडा सितारा हमारे सामने दूसरा नहीं है।' लेकिन दिन भर चमकने और रोशन रहने और पूरी दुनिया को रोशन करने बाद मुक़र्रर वक़्त पर उसने भी इराक़ की सरज़मीन से पहलू बचाना शुरू कर दिया और अंधेरी रात धीरे-धीरे सामने आने लगी। आख़िरकार वह नज़रों से ग़ायब हो गया तो अब वक़्त आ पहुंचा कि इब्राहीम असल हक़ीक़त का एलान कर दें और क़ौम को लाजवाब बना दें कि उनके अक़ीदे के मुताबिक़ अगर इन तारों को रब और माबूद होने का दर्जा हासिल है, तो इसकी क्या वजह कि हमसे भी ज़्यादा इनमें तब्दीलियां नुमायाँ हैं और ये जल्द-जल्द उनके असरों से मुतास्सिर होते हैं और अगर माबूद हैं तो इनमें (उफ़ोल) (चमक कर फिर डूब जाना) क्यों है? जिस तरह चमकते नज़र आते थे उसी तरह क्यों न चमकते रहे, छोटे सितारों की रोशनी को चांद ने क्यों मांद कर दिया और चांद के चमकते रुख़ को आफ़ताब के नूर ने किसलिए बेनूर बना दिया?

पस ऐ क़ौम! मैं इन शिर्क भरे अक़ीदों से बरी हूं और शिर्क की ज़िंदगी से बेज़ार, बेशक मैंने अपना रुख़ सिर्फ़ उसी एक अल्लाह की ओर कर लिया है जो आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है, मैं 'हनीफ़' (एक अल्लाह की इताअ़त के लिए यक्सू) हूं और मुश्रिक (शिर्क करने वाला) नहीं हूं।

अब क़ौम समझी कि यह क्या हुआ? इब्राहीम ने हमारे तमाम हथियार बेकार और हमारी तमाम दलीलें पामाल करके रख दीं। अब हम इब्राहीम की

इस मज़बूत और खुली दलील को किस तरह रद्द करें और उसकी रोशन दलील का क्या जवाब है? वे इसके लिए बिल्कुल बेबस और पस्त थे और जब कोई बस न चला तो क़ायल होने और हक़ की आवाज़ को क़ुबूल कर लेने के बजाए हज़रत इब्राहीम से झगड़ने लगे और अपने झूठे माबूदों से डराने लगे कि वे तेरी तौहीन का तुझसे ज़रूर बदला लेंगे और तुझको इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने फ़रमाया, क्या तुम मुझसे झगड़ते और अपने बुतों से मुझको डराते हो? हालांकि अल्लाह ने मुझ को सही रास्ता दिखा दिया है और तुम्हारे पास गुमराही के सिवा कुछ नहीं, मुझे तुम्हारे बुतों की क़तई कोई परवाह नहीं, जो कुछ मेरा रब चाहेगा, वही होगा। तुम्हारे बुत कुछ नहीं कर सकते, क्या तुमको इन बातों से कोई नसीहत हासिल नहीं होती? तुम को तो अल्लाह की नाफ़रानी करने और उसके साथ बुतों को शरीक ठहराने में भी कोई डर नहीं होता? जिसके लिए तुम्हारे पास एक दलील भी नहीं है और मुझसे यह उम्मीद रखते हो कि एक अल्लाह का मानने वाला और दुनिया के अमन का ज़िम्मेदार होकर मैं तुम्हारे बुतों से डर जाऊंगा, काश कि तुम समझते कि फ़सादी कौन है और कौन है सुलहपसन्द और अमनपसन्द?

सही अमन की ज़िंदगी उसी को हासिल है जो एक अल्लाह पर ईमान रखता और शिर्क से बेज़ार रहता है और वही रास्ते पर है।

बहरहाल अल्लाह की यह शानदार हुज्जत थी जो उसने हज़रत इब्राहीम عليه السلام की ज़ुबान से बुत-परस्ती के ख़िलाफ़ हिदायत व तब्लीग़ के बाद कवाकिब-परस्ती (तारा-परस्ती) के रद्द में ज़ाहिर फ़रमाई और उनकी क़ौम के मुक़ाबले में उनको रोशन और खुली दलीलों से सरबुलन्दी अता फ़रमाई।

ग़रज़ इन तमाम रोशन और खुली दलीलों के बाद भी जब क़ौम ने इस्लाम की दावत क़ुबूल न की और बुतपरस्ती और कवाकिबपरस्ती में उसी तरह पड़ी रही तो हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने एक दिन जम्हूर के सामने जंग का एलान कर दिया कि मैं तुम्हारे बुतों के बारे में एक ऐसी चाल चलूंगा जो तुम को ज़िच कर के ही छोड़ेगी।

तर्जुमा— *'और अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे न होने पर ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ ख़ुफ़िया चाल चलूंगा।'*

(अल-अंबिया 21 : 79)

इस मामले से मुताल्लिक़ असल सूरते हाल यह है कि जब इब्राहीम ने आज़र और क़ौम के लोगों को हर तरह बुत-परस्ती के ऐबों को ज़ाहिर कर के उससे बाज़ रहने की कोशिश कर ली और हर क़िस्म की नसीहतों के ज़रिए उनको यह बताने में ताक़त लगा ली कि ये बुत न नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न नुक़सान और यह कि तुम्हारे काहिनों और पेशवाओं ने उनके बारे में तुम्हारे दिलों पर ख़ौफ़ बिठा दिया है कि अगर उनके इंकारी हो जाओगे तो ये ग़ज़बनाक हो कर तुमको तबाह कर डालेंगे, ये तो अपनी आई हुई मुसीबत को भी नहीं टाल सकते, मगर आज़र और क़ौम के दिलों पर मुतलक़ असर न हुआ और वे अपने देवताओं की ख़ुदाई ताक़त के अक़ीदे से किसी तरह बाज़ न आए, बल्कि काहिनों और सरदारों ने उनको और ज़्यादा पक्का कर दिया और इब्राहीम की नसीहत पर कान धरने से सख़्ती के साथ रोक दिया, तब हज़रत इब्राहीम ने सोचा कि मुझको रुश्द व हिदायत का ऐसा पहलू अख़्तियार करना चाहिए जिससे लोग यह देख लें कि वाक़ई हमारे देवता सिर्फ़ लकड़ियों और पत्थरों की मूर्तियां हैं, जो गूंगी भी हैं, बहरी भी हैं, और अंधी भी और दिलों में यह यक़ीन बैठ जाए कि जब तक उनके बारे में हमारे काहिनों और सरदारों ने जो कुछ कहा था वह बिल्कुल ग़लत और बे सर-पैर की बात थी और इब्राहीम ही की बात सच्ची है। अगर ऐसी कोई शक्ल बन गई तो फिर मेरे लिए हक़ की तब्लीग़ के लिए आसान राह निकल आएगी। यह सोचकर उन्होंने अमल का एक निज़ाम तैयार किया, जिसको किसी पर ज़ाहिर नहीं होने दिया और उसकी शुरूआत इस तरह की कि बातों-बातों में अपनी क़ौम के लोगों से यह कह गुज़रे कि, *'मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक ख़ुफ़िया चाल चलूंगा।'*

गोया इस तरह उनको तंबीह करनी थी कि 'अगर तुम्हारे देवताओं में कुछ कुदरत है, जैसा कि तुम दावा करते हो तो वे मेरी चाल को बातिल और मुझको मजबूर कर दें कि मैं ऐसा न कर सकूं।

मगर चूंकि बात साफ़ न थी, इसलिए क़ौम ने इस ओर कुछ तवज्जोह न दी। इत्तिफ़ाक़ की बात कि क़रीब ही के ज़माने में क़ौम का एक मज़हबी मेला पेश आया। जब सब उसके लिए चलने लगे तो कुछ लोगों ने इब्राहीम

से इसरार किया कि वह भी साथ चलें। हज़रत इब्राहीम ने पहले तो इंकार किया और फिर जब इस तरफ़ से इसरार बढ़ने लगा तो सितारों की तरफ़ निगाह उठाई और फ़रमाने लगे, 'मैं आज कुछ बीमार-सा हूं।'

चूंकि इब्राहीम की क़ौम को कवाकिब-परस्ती की वजह से तारों में कमाल भी था और एतक़ाद भी इसलिए अपने अक़ीदे के लिहाज़ से वे यह समझे कि इब्राहीम किसी नहस सितारे के बुरे असर में फंसे हुए हैं और यह सोचकर और किसी तफ़्सील को जाने बग़ैर वे इब्राहीम को छोड़कर मेला चले गए।

अब जबकि सारी क़ौम, बादशाह, काहिन और मज़हबी पेशवा मेले में मसरूफ़ और शराब व कबाब में मशग़ूल थे, तो हज़रत इब्राहीम [अलैहि०] ने सोचा कि वक़्त आ गया है कि अपने अमल के निज़ाम को पूरा करूं और आंखों से दिखाकर सब पर वाज़ेह कर दूं कि उनके देवताओं की हक़ीक़त क्या है? वह उठे और सबसे बड़े देवता के हैकल (मन्दिर) में पहुंचे। देखा तो वहां देवताओं के सामने क़िस्म-क़िस्म के हलवों, फलों, मेवों और मिठाइयों के चढ़ावे रखे थे। इब्राहीम ने तंज़ भरे लहजे में चुपके-चुपके इन मूर्तियों से ख़िताब करके कहा कि यह सब कुछ मौजूद है, उनको खाते क्यों नहीं और फिर कहने लगे। मैं बात कर रहा हूं, क्या बात है कि तुम जवाब नहीं देते? और फिर इन सब को तोड़-फोड़ डाला और सबसे बड़े बुत के कांधे पर तीर रखकर वापस चले गए।

तर्जुमा– *'पस चुपके से जा घुसा उनके बुतों में और कहने लगा (इब्राहीम) उनके देवताओं से, क्यों नहीं खाते? तुमको क्या हो गया? क्यों नहीं बोलते? फिर अपने दाहिने हाथ से उन सबको तोड़ डालो?'* (अस्साफ़्फ़ात 37 : 91-93)

तर्जुमा -*'पस कर दिया उनको टुकड़े-टुकड़े, मगर उनमें से बड़े देवता को छोड़ दिया, ताकि (अपने अक़ीदे के मुताबिक़) वे उसकी ओर रुजू करें (कि यह क्या हो गया?')* (अल-अंबिया 21 : 58)

जब लोग मेले से वापस आए तो हैकल (मन्दिर) में बुतों का यह हाल पाया, बहुत बिगड़े, और एक दूसरे से पूछने लगे कि यह क्या हुआ और किसने किया? इनमें वे भी थे, जिनके सामने हज़रत इब्राहीम *'तल्लाहि ल त-'अकीदन-न*

असनामकुम' (अल-अंबिया 21-57) कह चुके थे, उन्होंने फ़ौरन कहा कि यह उस आदमी का काम है, जिसका नाम इब्राहीम है। वही हमारे देवताओं का दुश्मन है।

तर्जुमा–'वे कहने लगे, यह मामला हमारे ख़ुदाओं के साथ किसने किया है? बेशक वह ज़रूर ज़ालिम है। (इनमें से कुछ) कहने लगे, हमने एक जवान की ज़ुबान से इन बुतों का (बुराई के साथ) ज़िक्र सुना है, उसको इब्राहीम कहा जाता है। (यानी यह उसका काम है) (अल-अंबिया 21 : 59-60)

काहिनों और सरदारों ने यह सुना तो ग़म व गुस्से से लाल हो गए और कहने लगे, इसको मज्मे के सामने पकड़ कर लाओ, ताकि सब देखें कि मुजरिम कौन आदमी है?

इब्राहीम सामने लाए गए तो बड़े रौब व दाब से उन्होंने पूछाः क्यों इब्राहीम! तूने हमारे देवताओं के साथ यह सब कुछ किया है?

तर्जुमा–'उन्होंने कहाः इब्राहीम को लोगों के सामने लाओ ताकि वे देखें। वे कहने लगे, क्या इब्राहीम! तूने हमारे देवताओं के साथ यह किया है?'

(अल-अंबिया 21 : 61-62)

इब्राहीम ने देखा कि अब वह बेहतरीन मौक़ा आ गया है, जिसके लिए मैंने यह तदबीर अख़्तियार की। मज्मा मौजूद है। लोग देख रहे हैं कि उनके देवताओं का क्या हश्र हो गया इसलिए अब काहिनों, मज़हबी पेशवाओं को लोगों की मौजूदगी में उनके बातिल अक़ीदे पर शर्मिंदा कर देने का वक़्त है, तो आम लोगों को आंखों देखते मालूम हो जाए कि आज तक इन देवताओं से मुताल्लिक़ जो कुछ हमसे काहिनों और पुजारियों ने कहा था, यह सब उनका मकर व फ़रेब था। मुझे उनसे कहना चाहिए कि यह सब उस बड़े बुत की कार्रवाई है, उससे मालूम करो? ला महाला वे यही जवाब देंगे कि कहीं बुत भी बोलते और बात करते हैं, तब मेरा मतलब हासिल है और फिर मैं उनके अक़ीदे का पोल लोगों के सामने खोलकर सही अक़ीदे की तलक़ीन कर सकूंगा और बताऊंगा कि किस तरह वे बातिल और गुमराही में मुब्तला हैं। उस वक़्त उन काहिनों और पुजारियों के साथ शर्मिन्दगी के सिवा क्या होगा, इसलिए हज़रत इब्राहीम ने जवाब दिया–

तर्जुमा– *'इब्राहीम ने कहा, बल्कि इनमें से इस बड़े बुत ने यह किया है। पस अगर ये (तुम्हारे देवता) बोलते हों, तो इनसे मालूम कर लो।'*

(अल-अंबिया, 21 : 63)

इब्राहीम की इस यक़ीनी हुज्जत और दलील का काहिनों और पुजारियों के पास क्या जवाब हो सकता था? वह शर्म से डूबे हुए थे, दिलों में ज़लील व रुस्वा थे और सोचते थे कि क्या जवाब दें?

आम लोग भी आज सब कुछ समझ गए और उन्होंने अपनी आंखों से यह मंज़र देख लिया जिसके लिए वे तैयार न थे, यहां तक कि छोटे और बड़े सभी को दिल में इक़रार करना पड़ा कि इब्राहीम ज़ालिम नहीं है, बल्कि ज़ालिम हम ख़ुद हैं कि ऐसे बेदलील और बातिल अक़ीदे पर यक़ीन रखते हैं, तब शर्म से सिर झुकाकर कहने लगे, 'इब्राहीम! तू ख़ूब जानता है कि इन देवताओं में बोलने की ताक़त नहीं है, ये तो बेजान मूर्तियां हैं।'

तर्जुमा– *'पस उन्होंने अपने जी में सोचा, फिर कहने लगे, बेशक तुम ही ज़ालिम हो। इसके बाद अपने-अपने सरों को नीचे झुका कर कहने लगे, (ऐ इब्राहीम!) तू ख़ूब जानता है कि ये बोलने वाले नहीं हैं।*

(अल-अंबिया, 21 : 56)

इस तरह हज़रत इब्राहीम की हुज्जत व दलील कामयाब हुई और दुश्मनों ने मान लिया कि ज़ालिम हम ही हैं और उनको तमाम लोगों के सामने ज़ुबान से इक़रार करना पड़ा कि हमारे ये देवता जवाब देने और बोलने की ताक़त नहीं रखते, नफ़ा व नुक़सान का मालिक होना दूर की बात है, तो अब इब्राहीम ने थोड़े में, मगर जामे लफ़्ज़ों में उनको नसीहत भी की और मलामत भी और बताया कि जब ये देवता न नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न नुक़सान, तो फिर ये ख़ुदा और माबूद कैसे हो सकते हैं, अफ़सोस! तुम इतना भी नहीं समझते या अक़्ल से काम नहीं लेते? फ़रमाने लगे–

'क्या तुम अल्लाह तआला को छोड़कर उन चीज़ों की पूजा करते हो जो तुमको न कुछ नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न नुक़सान दे सकते हैं, तुम पर अफ़सोस है और तुम्हारे इन झूठे माबूदों पर भी, जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते।' (अल-अंबिया 21 : 66-67)

तर्जुमा—'पस वे सब हल्ला करके इब्राहीम के गिर्द जमा हो गए। इब्राहीम ने कहा कि जिन बुतों को हाथ से गढ़ते हो, उन्हीं को फिर पूजते हो और असल यह है कि अल्लाह तआला ही ने तुमको पैदा किया है और उनको भी जिन कामों को तुम करते हो।' (अस्साफ़्फ़ात, 37 : 95-96)

हज़रत इब्राहीम के इस वाज़ व नसीहत का असर यह होना चाहिए था कि तमाम क़ौम अपने बातिल अक़ीदे से तौबा करके मिल्लते हनीफ़ी को अख़्तियार कर लेती और टेढ़ा रास्ता छोड़कर सीधे रास्ते पर चल पड़ती, लेकिन दिलों का टेढ़, नफ़्स की सरकशी, घमंडी ज़ेहनियत और बातिनी ख़बासत व नीचपन ने इस ओर न आने दिया और इसके ख़िलाफ़ उन सबने इब्राहीम की अदावत व दुश्मनी का नारा बुलन्द कर दिया और एक दूसरे से कहने लगे कि अगर देवताओं की ख़ुश्नूदी चाहते हो तो उसको इस गुस्ताख़ी और मुज्रिमाना हरकत पर सख़्त सज़ा दो और धधकती आग में जला डालो, ताकि उसकी तब्लीग़ व दावत का क़िस्सा ही पाक हो जाए।

बादशाह को इस्लाम की दावत और उसका मुनाज़रा

अभी ये मश्विरे हो ही रहे थे कि थोड़ा-थोड़ा करके ये बातें वक़्त के बादशाह तक पहुंच गईं, उस ज़माने में इराक़ के बादशाह का लक़ब नमरूद होता था और ये पब्लिक के सिर्फ़ बादशाह ही नहीं होते थे, बल्कि ख़ुद को उनका रब और मालिक मानते थे और पब्लिक भी दूसरे देवताओं की तरह उसको अपना ख़ुदा और माबूद मानती और उसकी इस तरह पूजा करती थी, जिस तरह देवताओं की, बल्कि उनसे भी पास व अदब के साथ पेश आती थी, इसलिए कि वह अक़्ल व शऊर वाला भी होता था और ताज व तख़्त का मालिक भी।

नमरूद को जब यह मालूम हुआ तो आपे से बाहर हो गया और सोचने लगा कि उस आदमी की पैग़म्बराना दावत व तब्लीग़ की सरगर्मियां अगर इसी तरह जारी रहीं तो यह मेरे मालिक होने, रब होने, बादशाह होने और अल्लाह होने से भी सब पब्लिक को दूर कर देगा और इस तरह बाप-दादा के मज़हब के साथ-साथ मेरी यह हुकूमत भी गिर जाएगी, इसलिए इस क़िस्से का शुरू

ही में ख़त्म कर देना बेहतर है।

यह सोचकर उसने हुक्म दिया कि इब्राहीम को हमारे दरबार में हाज़िर करो। इब्राहीम से मालूम किया कि तू बाप-दादा के दीन की मुख़ालफ़त किस लिए करता है और मुझको रब मानने से तुझे क्यों इंकार है?

इब्राहीम ﷺ ने कहा कि मैं एक अल्लाह का मानने वाला हूं, उसके अलावा किसी को उसका शरीक नहीं मानता। सारी कायनात और तमाम आलम उसी की मख़्लूक़ हैं और वही इन सबका पैदा करने वाला और मालिक है। तू भी उसी तरह एक इंसान है, जिस तरह हम सब इंसान हैं, फिर तू किस तरह रब या ख़ुदा हो सकता है और किस तरह ये गूंगे-बहरे लकड़ी के बुत ख़ुदा हो सकते हैं? मैं सही राह पर हूं और तुम सब ग़लत राह पर हो, इसलिए मैं हक़ की तब्लीग़ को किस तरह छोड़ सकता हूं और तुम्हारे बाप-दादा के अपने गढ़े हुए दीन को कैसे अख़्तियार कर सकता हूं?

नमरूद ने इब्राहीम से मालूम किया कि अगर मेरे अलावा तेरा कोई रब है तो उसकी ऐसी ख़ूबी बयान कर कि जिसकी क़ुदरत मुझमें न हो?

तब इब्राहीम ने फ़रमाया, मेरा रब वह है जिसके क़ब्ज़े में मौत व हयात है, वही मौत देता है और वही ज़िंदगी बख़्शता है। टेढ़ी समझ वाला नमरूद, मौत व हयात की हक़ीक़त से ना आश्ना नमरूद कहने लगा, इस तरह मौत और ज़िंदगी तो मेरे क़ब्ज़े में भी है और यह कहकर उसी वक़्त एक बेक़सूर आदमी के बारे में जल्लाद को हुक्म दिया कि उसकी गरदन मार दो और मौत के घाट उतार दो। जल्लाद ने फ़ौरन हुक्म पूरा किया और क़त्ल की सज़ा पाये हुए मुजिरम को जेल से बुलाकर हुक्म दिया कि जाओ हमने तुम्हारी जान बख़्शी की और फिर इब्राहीम की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगा— देखा, मैं भी किस तरह ज़िंदगी बख़्शता और मौत देता हूं, फिर तेरे अल्लाह की ख़ास बात क्या रही?

इब्राहीम समझ गए कि नमरूद या तो मौत और ज़िंदगी की असल हक़ीक़त नहीं जानता और या लोगों और पब्लिक को ग़लतफ़हमी में डाल देना चाहता है, ताकि वे इस फ़र्क़ को समझ न सकें कि ज़िंदगी बख़्शना इसका नाम नहीं है बल्कि न से हां करने का नाम ज़िंदगी बख़्शना है। और इसी तरह किसी

को क़त्ल या फांसी से बचा लेना मौत का मालिक होना नहीं है। मौत का मालिक वही है जो इंसानी रूह को उसके जिस्म से निकाल कर अपने क़ब्ज़े में कर लेता है, इसलिए बहुत से फांसी की सज़ा पाए हुए और तलवार की ज़द में आए हुए लोग ज़िंदगी पा जाते हैं और बहुत से क़त्ल व फांसी से बचाए हुए इंसान मौत के घाट चढ़ जाते हैं और कोई ताक़त उनको रोक नहीं सकती और अगर ऐसा हो सकता तो इब्राहीम से बातें करने वाला नमरूद गद्दी पर न बैठा होता, बल्कि उसके ख़ानदान का पहला आदमी ही आज भी उस ताज व तख़्त का मालिक नज़र आता, मगर न मालूम कि इराक़ के इस राज्य के कितने दावेदार ज़मीन के अन्दर दफ़न हो चुके हैं और अभी कितनों की बारी है।

फिर भी इब्राहीम ने सोचा कि अगर मैंने इस मौक़े पर मौत और ज़िंदगी के बारीक फ़लसफ़े पर बहस शुरू कर दी, तो नमरूद का मक़्सद पूरा हो जाएगा और लोगों को ग़लत रुख़ पर डालकर असल मामले को उलझा देगा और इस तरह मेरा नेक मक़्सद पूरा न हो सकेगा और हक़ की तब्लीग़ के सिलसिले में भरी महफ़िल में नमरूद को लाजवाब करने का मौक़ा हाथ से जाता रहेगा, क्योंकि बहस व मुबाहसा और जद्ल व मुनाज़रा मेरा असल मक़्सद नहीं है, बल्कि लोगों के दिल व दिमाग़ में एक अल्लाह का यक़ीन पैदा करना मेरा एक ही मक़्सद है, इसलिए उन्होंने इस दलील को नज़रंदाज़ करके समझाने का एक दूसरा तरीक़ा अपनाया और ऐसी दलील पेश की, जिसे सुबह व शाम हर आदमी आंखों से देखता और बग़ैर किसी मंतक़ी दलील के दिन व रात की ज़िंदगी में उससे दोचार होता रहता है।

इब्राहीम ने फ़रमाया: मैं उस हस्ती को 'अल्लाह' कहता हूं जो हर दिन सूरज को पूरब से लाता और मग़रिब की तरफ़ ले जाता है, पस अगर तू भी इसी तरह ख़ुदाई का दावा करता है, तो इसके ख़िलाफ़ सूरज को मग़रिब से निकाल और मश्रिक़ में छिपा। यह सुनकर नमरूद घबरा गया और उससे कोई जवाब न बन पड़ा और इस तरह इब्राहीम عليه السلام की ज़ुबान से नमरूद पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हुई।

नमरूद इस दलील से घबराया क्यों और उसके पास इसके मुक़ाबले में

ग़लत समझने की गुंजाइश क्यों न रही? यह इसलिए कि इब्राहीम की दलील का हासिल यह था कि मैं एक ऐसी हस्ती को अल्लाह मानता हूं, जिसके बारे में मेरा अक़ीदा यह है कि यह सारी कायनात और इसका सारा निज़ाम उस ही ने बनाया है और उसने इस पूरे निज़ाम को अपनी हिक्मत के क़ानून से ऐसा कस दिया है कि उसकी कोई चीज़ मुक़र्रर जगह से पहले अपनी जगह से हट नहीं सकती है और न इधर-उधर हो सकती है। तुम इस पूरे निज़ाम में से सूरज ही को देखो कि दुनिया उससे कितने फ़ायदे हासिल करती है। साथ ही अल्लाह ने उसके निकलने और डूबने का भी एक निज़ाम मुक़र्रर कर दिया है, पस अगर सूरज लाख बार भी चाहे कि वह इस निज़ाम से बाहर हो जाए तो इस पर उसे कुदरत नहीं है, क्योंकि उसकी बागडोर एक अल्लाह की कुदरत के क़ब्ज़े में है और उसको बेशक यह कुदरत है कि जो चाहे कर गुज़रे, लेकिन वह करता वही है जो उसकी हिक्मत का तक़ाज़ा है।

इसलिए अब नमरूद के लिए तीन ही शक्लें जवाब देने की हो सकती थीं, या वह यह कहे कि मुझे सूरज पर पूरी कुदरत हासिल है और मैंने भी यह सारा निज़ाम बनाया है, मगर उसने यह जवाब इसलिए नहीं दिया कि वह खुद इसका क़ायल नहीं था कि यह सारी कायनात उसने बनाई है और सूरज की हरकत उसकी कुदरत के क़ब्ज़े में है, बल्कि वह तो ख़ुद को अपनी रियाया का रब और देवता कहलाता था और बस।

दूसरी शक्ल यह थी कि वह कहता, 'मैं इस दुनिया को किसी की पैदा की हुई नहीं मानता और सूरज तो मुस्तक़िल ख़ुद देवता है, उसके अख़्तियार में ख़ुद बहुत कुछ है, मगर उसने यह भी इसलिए न कहा कि अगर वह ऐसा कहता, तो इब्राहीम का वही एतराज़ सामने आ जाता जो उन्होंने सबके सामने सूरज के रब होने के ख़िलाफ़ उठाया था कि अगर वह 'रब' है तो इबादत करने वालों और पुजारियों से ज़्यादा इस माबूद और देवता में तब्दीलियां और फ़ना के असरात क्यों मौजूद हैं?' 'रब' को फना और तब्दीली से क्या वास्ता? और क्या उसकी कुदरत में यह है कि अगर वह चाहे तो मुक़र्रर वक़्त से पहले या बाद निकले या डूब जाए?

तीसरी शक्ल यह थी कि इब्राहीम के चैलेंज को कुबूल कर लेता और

मग़रिब से निकाल कर दिखा देता, मगर नमरूद चूंकि इन तीनों शक्लों में से किसी शक्ल में जवाब देने की कुदरत न रखता था, इसलिए परेशान और लाजवाब हो जाने के अलावा उसके पास कोई दूसरा रास्ता ही नहीं बचा।

ग़रज़ हज़रत इब्राहीम ﷺ ने सबसे पहले अपने वालिद आज़र से इस्लाम के सिलसिले की बात कही, हक़ का पैग़ाम सुनाया और सीधा रास्ता दिखलाया। इसके बाद आम लोग और सब लोगों के सामने हक़ को मान लेने के लिए फ़ितरत के बेहतरीन उसूल और दलील पेश किए, नर्मी से, मीठी बातों से मगर मज़बूत और रोशन हुज्जत व दलील के साथ उन पर हक़ को वाज़ेह किया और सबसे आख़िर में बादशाह नमरूद से मुनाज़रा किया और उस पर रोशन कर दिया कि रब होने और माबूद होने का हक़ सिर्फ़ एक अल्लाह ही के लिए सबसे मुनासिब है और बड़े-से-बड़े शहंशाह को भी यह हक़ नहीं है कि वह उसकी बराबरी का दावा करे, क्योंकि वह और कुल दुनिया उसी की मख़्लूक़ है और वजूद व अदम के क़ैद व बन्द में गिरफ़्तार, मगर इसके बावजूद कि बादशाह, आज़र और आम लोग, हज़रत इब्राहीम की दलीलों से लाजवाब होते और दिलों में क़ायल, बल्कि बुतों के वाक़िए में तो ज़ुबान से इक़रार करना पड़ा कि इब्राहीम जो कुछ कहता है, वही हक़ है और सही व दुरुस्त, फिर भी उनमें से किसी ने सीधे रास्ते को न अपनाया और हक़ क़ुबूल करने से बचते रहे और इतना ही नहीं, बल्कि इसके ख़िलाफ़ अपनी नदामत और ज़िल्लत से मुतास्सिर होकर बहुत ज़्यादा ग़ैज़ व ग़ज़ब में आ गए और बादशाह से रियाया तक सब ने एक होकर फ़ैसला कर लिया कि देवताओं की तौहीन और बाप-दादा के दीन की मुख़ालफ़त में इब्राहीम को धधकती आग में जला देना चाहिए, क्योंकि ऐसे सख़्त मुज्रिम की सज़ा यही हो सकती है और देवताओं को हक़ीर समझने का बदला इसी तरह लिया जा सकता है।

आग का ठंडा हो जाना

इस मरहले पर पहुंच कर इब्राहीम ﷺ की जद्दोजेहद का मामला ख़त्म हो गया और अब दलीलों की ताक़त के मुक़ाबले में माद्दी ताक़त व सतवत ने मुज़ाहरा शुरू कर दिया, बाप उसका दुश्मन, लोग उसके मुख़ालिफ़ और

वक़्त का बादशाह उसे परेशान करने को तैयार, एक हस्ती और चारों ओर से मुख़ालफ़त की आवाज़, दुश्मनी के नारे और नफ़रत व हक़ारत के साथ कड़ा बदला और ख़ौफ़नाक सज़ा के इरादे, ऐसे वक़्त में उसकी मदद कौन करे और उसकी हिमायत का सामान कैसे जुटे?

मगर इब्राहीम को न इसकी परवाह थी और न उसका डर। वह इसी तरह बे-ख़ौफ़ व ख़तर और मलामत करने वालों की मलामत से बेनियाज़, हक़ के एलान में मस्त और रुश्द व हिदायत की दावत में लगे हुए थे। अलबत्ता ऐसे नाज़ुक वक़्त में जब तमाम माद्दी सहारे ख़त्म, दुन्यवी अस्बाब नापैद और हिमायत व नुसरत के ज़ाहिरी अस्बाब मफ़्क़ूद हो चुके थे, इब्राहीम को उस वक़्त भी एक ऐसा बड़ा ज़बरदस्त सहारा मौजूद था, जिसको तमाम सहारों का सहारा और तमाम मददों का मदद करने वाला कहा ज़ाता है और वह एक अल्लाह का सहारा था। उसने अपने जलीलुल क़द्र पैग़म्बर, क़ौम के बड़े दर्जे के हादी और रहनुमा को बे-यार व मददगार न रहने दिया और दुश्मनों के तमाम मंसूबों को ख़ाक में मिला दिया।

हुआ यह कि नमरूद और क़ौम ने इब्राहीम की सज़ा के लिए एक मख़्सूस जगह पर कई दिन लगातार आग धधकाई यहां तक कि उसके शोलों से आस-पास की चीज़ें तक झुलसने लगीं। जब इस तरह बादशाह और क़ौम को पूरा इत्मीनान हो गया कि अब इब्राहीम के इससे बच निकलने की कोई शक्ल बाक़ी नहीं रही, तब एक गोफन में इब्राहीम को बिठा कर दधकती हुई आग में फेंक दिया गया।

उस वक़्त आग में जलाने की तासीर बख़्शने वाले ने आग को हुक्म दिया कि वह इब्राहीम पर अपने जलाने का असर न करे। नारी होते हुए और (आग के) अनासिर का मज्मूआ होते हुए भी उसके हक़ में सलामती के साथ सर्द पड़ जाए।

आग उसी वक़्त हज़रत इब्राहीम के हक़ में 'बरदंव-व सलामा' बन गई और दुश्मन उनको किसी क़िस्म का नुक़्सान न पहुंचा सके और इब्राहीम दहकती आग में सालिम व महफ़ूज़ दुश्मनों के नरग़े से निकल गए।

'दुश्मन अगर क़वीस्त, निगहबां क़वी तरअस्त'

(दुश्मन अगर ताक़तवर है, निगहबान उससे ज़्यादा ताक़त वाला है)

इस जगह एक मज़हबी इंसान के दिल में इत्मीनान और सुकूने ख़ातिर के लिए यह काफ़ी है कि वह आग के 'बर्दव-व सलामा' (ठंडी और सलामती वाली) हो जाने को इसलिए सही और हक़ीक़त पर मब्नी समझे कि उसने अपनी अक़्ल और शऊर का एक तो इस मामले में इम्तिहान कर लिया है कि क़ुरआन अज़ीज़ की तालीम वह्य इलाही की तालीम है और उसको लाने वाली हस्ती की ज़िंदगी का हर पहलू पैग़म्बराना मासूमियत के साथ जुड़ा हुआ है और यह कि वह जिन मोजज़ाना हक़ीक़तों की इत्तिला देता और अल्लाह की वह्य के ज़रिए हम को सुनाता है, वे अक़्ल के लिए अगरचे हैरान कर देने वाली हैं, लेकिन अक़्ल की निगाह में महाल और नामुम्किन नहीं, इसलिए इस मुख़्बिरे सादिक़ (की जिसकी ज़िंदगी की सदाक़त का हर पहलू से इम्तिहान कराया गया है) कि इस क़िस्म की ख़बरें बेशक सही और हक़ हैं और क़ैसरे रूम हिरक़्ल आज़म (हरक्यूवस) के क़ौल के मुताबिक़ कि 'जो आदमी इंसानों के साथ झूठ नहीं बोलता और उससे दग़ा न फ़रेब नहीं करता, वह एक लम्हे के लिए भी अल्लाह की जानिब किसी ग़लत बात को मंसूब नहीं कर सकता और कभी उस पर झूठ बोलने की जुर्रात नहीं कर सकता।' और मज़हबी ज़िंदगी में साफ़ और सीधी राह भी यही है कि जिस मज़हब की मुकम्मल तालीम को अक़्ल की कसौटी पर परख कर हर तरह इत्मीनान के क़ाबिल पा लिया जाए, उसकी बताई हुई कुछ ऐसी बातों पर, जो अक़्ल के लिए सिर्फ़ हैरानी में डालने वाली हों, मगर इसके नज़दीक मुहाले ज़ाती और नामुम्किन जैसी न हों, फ़लसफ़ियाना छेड़ख़ानियों के बग़ैर ईमान ले आया जाए और साहिबे वह्य ﷺ की इस यक़ीनी और ग़ैर-मश्कूक इत्तिला को सूरज की रोशनी से ज़्यादा रोशन समझा जाए और यक़ीन रखा जाए कि तमाम चीज़ों में ख़वास और तासीरात पैदा करने वाले अल्लाह में यह भी क़ुदरत है कि जब चाहे, उनकी दी हुई तासीर और ख़ास्से को सलब कर ले और जब चाहे दूसरी कैफ़ियतों के साथ बदल डाले। माद्दापरस्तों के लिए अगर यह राह इत्मीनान वाली न हो और फ़लसफ़े के शैदाई मज़हब के इस मसअले को भी फ़लसफ़ियाना मूशगाफ़ियों (बाल की खाल निकालने) से पाक न रहने देना

चाहते हों, तो उनके लिए भी इस मोजज़े से इंकार की कोई गुंजाइश नहीं है, इसलिए कि हम यह मान रहे हैं कि आग की तबई ख़ासियत जला देना है और जो चीज़ भी उसमें पड़ेगी, जल जाएगी, लेकिन इसकी क्या वजह कि कुछ कपड़े और वे चीज़ें जिनको 'फ़ायर प्रूफ़' कहा जाता है, आग की लपटों के अन्दर क्यों महफ़ूज़ रहती हैं और उनको आग जला कर क्यों नहीं ख़ाकस्तर (धूल में मिला देना) बना देती।

तुम कहोगे कि आग दस्तूर के मुताबिक़ जलाने की ख़ासियत रखती है, मगर कपड़े या चीज़ पर एक ऐसा मसाला लगा दिया गया है, जिस पर आग अपना असर नहीं कर सकती, यह नहीं कि आग ने अपने जलाने की ख़ासित ख़त्म कर दी है।

तो एक मज़हबी इंसान के लिए इसी तरह आपके फ़लसफ़ियाना रंग में यह जवाब देने का क्यों हक़ नहीं है कि नमरूद और उसकी क़ौम की धधकती आग में जलाने की ख़ासियत पहले की तरह वैसे ही बाक़ी थी, जैसे आग के अनासिर (तत्वों) में मौजूद है, मगर इब्राहीम के जिस्म के लिए बे-असर साबित हुई, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि तुम्हारे 'फ़ायर प्रूफ़' में इंसान की सोची हुई तदबीरों का दख़ल है और इसलिए हर सीखने वाले को एक फ़न की तरह सीख लेने का मौक़ा हासिल है और इब्राहीम के जिस्म का आग से महफ़ूज़ हो जाना बे-वास्ता अल्लाह की तदबीर के ज़ेरे असर था और इस क़िस्म का अमल पैग़म्बर की सच्चाई और दुश्मनों के मुक़ाबले में उसकी बरतरी के लिए कभी-कभी हिक्मत के तक़ाज़ों के तौर पर उसकी तरफ़ से सामने आ जाता और शरीअत की इस्तिलाह में 'मोजज़ा' गिना जाता है। बेशक वह न फ़न होता है और न वसाइल व अस्बाब से पैदा की हुई तदबीरों का मोहताज, पस अल्लाह की मख़्लूक़ 'इंसान' को अगर यह क़ुदरत हासिल है कि किसी चीज़ की तबई ख़ासियतों को कुछ चीज़ों पर असरअंदाज़ न होने दे, तो चीज़ों के ख़्वास के पैदा करने वाले को क्यों यह क़ुदरत हासिल नहीं कि वह किसी ख़ास मौक़े पर चीज़ की तासीर को अमल से रोक दे।

और अगर आज साइंस की खोज के मुताबिक़ फ़िज़ा में ऐसी गैसें मौजूद हैं, जिनके बदन पर असर करने से आग के जलन से महफ़ूज़ रहा जा सकता

हैं, तो गैसों के पैदा करने वाले ख़ालिक़ के लिए कौन-सी ऐसी रुकावट है कि नमरूद की धधकती आग में उनको इब्राहीम तक न पहुंचा दे और इस तरह आग को इब्राहीम के हक़ में 'बरदंव-व सलामा' (ठंडी व सलामती) न बना दे।

आज भी हो जो ब्राहीम का ईमां पैदा
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा।

मुख़्तसर यह कि बदबख़्त क़ौम ने कुछ न सुना और किसी भी तरह रुश्द व हिदायत को कुबूल न किया और इब्राहीम की बीवी हज़रत सारा और उनके बिरादरज़ादा हज़रत लूत के अलावा कोई एक भी ईमान नहीं लाया। तमाम क़ौम ने हज़रत इब्राहीम को जला देने का फ़ैसला कर लिया और दहकती आग में डाल दिया, लेकिन अल्लाह तआला ने दुश्मनों के इरादों को ज़लील व रुसवा करके हज़रत इब्राहीम के हक़ में आग को 'बरदंव-व सलामा' बना दिया, तो अब हज़रत इब्राहीम ने इरादा किया कि किसी दूसरी जगह जाकर पैग़ामे इलाही सुनाएं और हक़ की दावत पहुंचाएं और यह सोचकर 'फ़िदान' आराम से हिजरत का इरादा कर लिया।

तर्जुमा—*'और इब्राहीम ने कहा, मैं जाने वाला हूं अपने परवरदिगार की तरफ़, क़रीब ही वह मेरी रहनुमाई करेगा।'* (अस्साफ़्फ़ात 37 : 99)

यानी अब मुझे किसी ऐसी आबादी में हिजरत करके चला जाना चाहिए, जहां अल्लाह की आवाज़ हक़ पसन्द कान से सुनी जाए, अल्लाह की ज़मीन तंग नहीं है, यह नहीं और सही, मेरा काम पहुंचाना है,'अल्लाह अपने दीन की इशाअत का सामान ख़ुद पैदा कर देगा।

और किलदानीयीन की ओर हिजरत

बहरहाल हज़रत इब्राहीम अपने बाप आज़र और क़ौम से जुदा होकर फ़रात के पच्छिमी किनारे के क़रीब एक बस्ती में चले गए जो आज किलदानीयीन के नाम से मशहूर है। यहां कुछ दिनों क़ियाम किया और हज़रत लूत और हज़रत सारा दोनों सफ़र में साथ रहे। कुछ दिनों के बाद यहां से हरान या हारान की ओर चले गए और वहां 'दीने हनीफ़' की तब्लीग़ शुरू कर दी, मगर इस मुद्दत में बराबर अपने बाप आज़र के लिए बारगाहे इलाही में

इस्तग़फ़ार करते और उसकी हिदायत के लिए दुआ मांगते रहे और यह सब कुछ इसलिए किया कि वे निहायत दिल के नर्म, रहीम और बहुत ही नर्म दिल और बुर्दबार थे। इसलिए आज़र की ओर से हर क़िस्म की अदावत के मुज़ाहरों के बावजूद उन्होंने आज़र से यह वायदा किया था कि अगरचे मैं तुझसे जुदा हो रहा हूं और अफ़सोस कि तूने अल्लाह की रुश्द व हिदायत पर तवज्जोह न की, फिर भी मैं बराबर तेरे हक़ में अल्लाह की मग़्फ़िरत की दुआ करता रहूंगा। आख़िरकार हज़रत इब्राहीम को अल्लाह की वह्य ने मुत्तला किया कि आज़र ईमान लाने वाला नहीं है और यह उन्हीं लोगों में से है जिन्होंने अपनी नेक इस्तेदाद को फ़ना करके ख़ुद को उसका मिस्दाक़ बना लिया।

तर्जुमा– *'अल्लाह ने मोहर लगा दी उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर परदा है।'* (अल-बक़रः 2/7)

हज़रत इब्राहीम को जब यह मालूम हो गया तो आपने आज़र से अपने अलग होने का साफ़ एलान कर दिया।

फ़लस्तीन की ओर हिजरत

हज़रत इब्राहीम इस तरह तब्लीग़ करते-करते फ़लस्तीन पहुंचे। इस सफ़र में भी उनके साथ हज़रत सारा رضي الله عنها, हज़रत लूत عليه السلام और लूत की बीवी थीं। हज़रत इब्राहीम फ़लस्तीन के पच्छिमी हिस्से में ठहरे, उस ज़माने में यह इलाक़ा कन्आनियों के इक़्तिदार में था, फिर क़रीब ही शीकम (नाबलस) में चले गए और वहां कुछ दिनों ठहरे रहे, इसके बाद यहां भी ज़्यादा दिनों क़ियाम नहीं फ़रमाया और मग़रिब की तरफ़ ही बढ़ते चले गए, यहां तक कि मिस्र तक जा पहुंचे।

हज़रत इब्राहीम عليه السلام से मुताल्लिक़ दूसरे मस्अले

हदीस की किताबों में हज़रत इब्राहीम عليه السلام के ताल्लुक़ से इस तरह कहा गया है कि–

'नहीं झूठ बोला कभी हरगिज़ इब्राहीम عليه السلام, मगर तीन झूठ'

(बुख़ारी शरीफ़)

तफ़सील यह है—

1. हज़रत इब्राहीम (अलै॰) की तबियत की ख़राबी—इब्राहीम के वाक़ियों में क़ुरआन ने इस मौक़े पर, जबकि इब्राहीम और क़ौम के कुछ लोगों के दर्मियान मेले की शिर्कत के लिए बात-चीत हो रही थी, इब्राहीम (अलै॰) का क़ौल नक़ल किया है— *'क़ा-ल इन्नी सक़ीम'* (इब्राहीम ने फ़रमाया, मैं बीमार हूं) इस जुम्ले से एक ख़ाली जेहन इंसान एक लम्हे के लिए भी यह नहीं सोच सकता कि इसमें झूठ का भी हिस्सा हो सकता है, क्योंकि इसमें ज़िक्र 'तबियत की अ़लालत' का है, जिसको इब्राहीम ही ख़ूब जान सकते हैं। इसमें दूसरे को ख़ामख़ाही शक और तरद्दुद का कौन-सा मौक़ा है, यहां तक कि अगर एक आदमी ज़ाहिरी निगाहों में तन्दुरुस्त नज़र आता हो, तब भी ज़रूरी नहीं है कि वह वाक़ई तन्दुरुस्त है। हो सकता है, उसका मिज़ाज किसी वजह से एतदाल की हद पर न हो और ऐसी तक्लीफ़ में पड़ा हो जिसका इज़्हार किए बग़ैर दूसरा उसको न समझ सके।

2. बुतों की तोड़-फोड़—बुतों की तोड़-फोड़ के सिलसिले में जब इब्राहीम से मालूम किया गया तो हज़रत इब्राहीम का जवाब इस तरह नक़ल किया गया है—

तर्जुमा—'इब्राहीम ने कहा: *बल्कि इनमें से सबसे बड़े बुत ने किया है, पस इनसे पूछो, अगर ये बोल सकते हैं।'* (अंबिया 21 : 63)

इस जवाब में झूठ की मिलावट इसलिए नहीं हो सकती कि दो अलग-अलग ख़्याल वाले इंसानों में अगर मुनाज़रा और ख़्यालात के तबादले की नौबत आ जाती है तो मामूली हर्फ़ की आगाही रखने वाला भी इस हक़ीक़त को जानता है कि अपने दुश्मन को उसकी ग़लती पर मुतनब्बह करने और लाजवाब कर देने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उसकी मानी हुई बातों में से किसी माने हुए अक़ीदे को सही फ़र्ज़ करके इस तरह उसका इस्तेमाल करे कि उसका फल और नतीजा दुश्मन के ख़िलाफ़ और अपने मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो। इब्राहीम (अलै॰) ने यही किया। उनकी क़ौम का यह अक़ीदा था कि उनके देवता सब कुछ सुनते और हमारी मुरादों को पूरा करते हैं, वे अपने पुजारियों और अपने से अक़ीदत रखने वालों से ख़ुश और अपने दुश्मनों और

मुख़ालिफ़ों से ज़बरदस्त बदला लेते हैं। इब्राहीम ने जब इन देवताओं को तोड़-फोड़ डाला तो बड़े बुत को छोड़ दिया। आख़िर जब पूछ-गछ की नौबत आई तो उन्होंने मुनाज़रे का वही तरीक़ा अख़्तियार किया, जिसका ज़िक्र हो चुका है। नतीजा यह निकला कि काहिनों, पुजारियों और सारी क़ौम को यह मानना पड़ा कि हम ही ग़लती पर हैं और बुतों में बोलने की ताक़त नहीं है। इसलिए अपनी तबियत की ख़राबी और बुतों की तोड़-फोड़ से मुताल्लिक़ जुम्लों में एक बात भी ऐसी नहीं है जिसको हक़ीक़त में या सूरत-शक्ल के एतबार से झूठ कहा जा सके।

3. हज़रत सारा से मुताल्लिक़ हज़रत इब्राहीम का बयान—तीसरी बात हज़रत अबू हुरहैह ﵁ की हदीस से मुताल्लिक़ है, जिसमें ज़िक्र किया गया है कि इब्राहीम का जब मिस्र से गुज़र हुआ तो उन्होंने मिस्र पहुंचने से पहले अपनी पाक बीवी हज़रत सारा ﵂ से यह फ़रमाया कि यहां का बादशाह जाबिर व ज़ालिम है, अगर किसी हसीन औरत को देखता है तो उसको ज़बरदस्ती छीन लेता है और उसके साथी मर्द को, अगर वह औरत का शौहर है, तो क़त्ल कर डालता है और कोई दूसरा अज़ीज़ है, तो उससे कोई छेड़खानी नहीं करता, तुम चूंकि मेरी दीनी बहन हो और इस धरती पर मेरे और तुम्हारे अलावा दूसरा कोई मुसलमान नहीं है, इसलिए तुम उससे कह देना कि यह मेरा भाई है। चुनांचे ऐसा ही हुआ और जब रात में उसने बुरा इरादा किया तो उसका हाथ शल होकर रह गया और वह किसी तरह हज़रत सारा को हाथ न लगा सका। यह देखकर उसने हज़रत सारा से कहा: अपने अल्लाह से दुआ कर कि मेरा हाथ दुरुस्त हो जाए, तो मैं तुझको रिहा कर दूंगा।

सारा ﵂ ने दुआ की, मगर उसने फिर बुरा इरादा किया। दोबारा उसका हाथ शल हो गया। तीसरी बार फिर यही तमाम क़िस्सा पेश आया, तब उसने कहा कि मालूम होता है यह 'जिन्न' है, इंसान नहीं है। इसको मेरे पास से ले जाओ और साथ ही हाजरा को हवाला करके कहा कि इसको भी अपने साथ ले जा, मैंने तेरे हवाले किया। जब सारा ﵂ हाजरा ﵂ को साथ लेकर हज़रत इब्राहीम ﵇ के पास आईं, तो उन्होंने हाल मालूम किया और सारा ﵂ ने मुबारकबाद दी और कहा, 'शुक्र है अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का कि उसने

हमको उस फ़ासिक़ व फ़ाजिर से नजात दी और आपके लिए एक ख़ादिम (ख़िदमत करने वाला) और साथ कर दिया।'

इस मज़्मून की हदीसें अलग-अलग हदीस की किताबों में नक़ल की गई हैं। मुसन्निफ़े (लेखक) किताब मौलाना मुहंम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी ने तफ़सील से गुफ़्तगू करने के बाद पहले यह लिखा—

'सच बोलना अंबिया ﷺ की अकाट और नबी की अस्मत के लिए एक ज़रूरी सिफ़त है, फिर जबकि ख़ुसूसियत के साथ कुरआन मजीद ने इब्राहीम से मुताल्लिक़ नीचे लिखी ख़ास बातों का खुलकर ज़िक्र फ़रमा दिया है, तो उनके साथ देखने में भी झूठ की निस्बत कैसी?

'और याद करो किताब में इब्राहीम का ज़िक्र बेशक था, वह सिद्दीक़ नबी' (मरयम 19 : 41)

'सिद्दीक़' मुबालग़े का सेग़ा है और उसी हस्ती के लिए वह बोला जाता है 'सिद्दीक़' जिसकी ज़ाती और नफ़्सियाती सिफ़त हो। (इसके बाद मुसन्निफ़ मौसूफ़ (लेखक महोदय) अपनी राय लिखते हैं—

पैग़म्बर की इस्मत का मस्अला बेशक दीन के उसूल और अक़ीदा की मुहिम्मों में से है, बल्कि दीन व मज़हब की सच्चाई की बुनियाद सिर्फ़ इसी एक मस्अले पर क़ायम है, क्योंकि यह मान लेने के बाद कि कुछ हालतों में नबी और पैग़म्बर भी झूठ की कोई न कोई शक्ल व सूरत निकाल सकता है, भले ही वह हिमायत ही में क्यों न हो, उसकी लाई हुई तालीम से यह फ़र्क़ उठ जाएगा कि उसका कौन-सा हिस्सा अपनी हक़ीक़ी मुराद से जुड़ा हुआ है और कौन-सा झूठ के रंग में रंगा हुआ और अगर यह मान लिया जाए तो फिर दीन दीन नहीं रह सकता और न मज़हब, इसलिए कुरआन मजीद का यह मंसूस अक़ीदा 'इस्मते पैग़म्बर' अपनी जगह पर न डिगने वाला और न बदलने वाला मज़बूत अक़ीदा है और इसलिए बेशक जो इस अक़ीदे की सच्चाई पर हर्फ़ लाने की वजह बने, वह ख़ुद अपनी जगह या रद्द व इंकार के क़ाबिल है या अपनी ताबीर के बेहतर होने के लिए जवाबदेह।

हज़रत हाजरा रज़ि० की हैसियत

तमाम रिवायतों से इस क़दर यक़ीनी मालूम होता है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ अपनी बीवी सारा और अपने भतीजे हज़रत लूत ﷺ के साथ मिस्र तशरीफ़ ले गए। यह वह ज़माना है जबकि मिस्र की हुकूमत ऐसे ख़ानदान के हाथ में थी जो सामी क़ौम से ताल्लुक़ रखता था और इस तरह हज़रत इब्राहीम से नसबी सिलसिले में वाबस्ता था। यहां पहुंच कर इब्राहीम और मिस्र के फ़िरऔन के दर्मियान ज़रूर कोई ऐसा वाक़िया पेश आया जिससे उसको यक़ीन हो गया कि इब्राहीम और उसका ख़ानदान ख़ुदा का मक़्बूल और बरगज़ीदा ख़ानदान है। यह देखकर उसने हज़रत इब्राहीम और उनकी बीवी हज़रत सारा का बहुत एज़ाज़ किया और उनको हर क़िस्म के माल व मताअ् से नवाज़ा और सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि अपने क़दीम ख़ानदानी रिश्ते को मज़बूत और मुस्तहकम करने के लिए अपनी बेटी हाजरा को भी उनसे ब्याह दे दिया, जो उस ज़माने में रस्म व रिवाज के एतबार से पहली और बड़ी बीवी की ख़िदमतगुज़ार क़रार पाई। चुनांचे यहूदियों की एतबार वाली रिवायत के मुताबिक़ हज़रत हाजरा 'शाहे मिस्र' फ़िरऔन की बेटी थीं, लौंडी और बांदी नहीं थीं। तौरात का एक एतबार वाला मुफ़स्सिर बी सलूमलू इस्हाक़ किताबे पैदाइश बाब 16 आयत 1 की तफ़्सीर में लिखता है—

'जब उसने (रक़यून शाहे मिस्र ने) सारा की वजह से करामतों को देखा तो कहा: मेरी बेटी का इस घर में लौंडी होकर रहना दूसरे घर में मलका होकर रहने से बेहतर है।'

(अरज़ुल क़ुरआन, भाग 2, पृ० 41)

दूसरे अरबी भाषा में हाजरा के मानी के लिहाज़ से क़ियास के क़रीब ज़्यादा यही है कि चूंकि यह अपने वतन मिस्र से जुदा होकर या हिजरत करके हज़रत इब्राहीम की शरीके हयात और हज़रत सारा की ख़िदमत गुज़ार बनीं, इसलिए हाजरा कहलाईं और तौरात में हाजरा को सिर्फ़ इसीलिए लौंडी कहा गया कि शाहे मिस्र ने उनको सारा और हज़रत इब्राहीम ﷺ के सुपुर्द करते हुए यह कहा था कि वह सारा की ख़िदमत गुज़ार रहेगी, यह मतलब न था कि वह लौंडी ('जारिया' के मानी में) हैं।

सूरः मुम्तहिनः में हज़रत इब्राहीम की दुआ

सूरः मुम्तहिनः में हज़रत इब्राहीम ﷺ की एक ख़ास दुआ इस तरह है–

तर्जुमा–*ऐ हमारे परवरदिगार! हमको उन लोगों के लिए 'फ़ित्ना' न बना, जो काफ़िर हैं।'* (अल-मुम्तहिना 60 : 5)

इस दुआ में तवज्जोह के क़ाबिल बात यह है कि इस दुआ से मुराद क्या है और वह (हज़रत इब्राहीम ﷺ) काफ़िरों के लिए फ़ितना बनने से मुताल्लिक़ क्या ख़्वाहिश रखते थे?

इस्तिलाह (पारिभाषिक शब्द के रूप) में इम्तिहान, आज़माइश और परख को फ़ित्ना कहा जाता है और इसलिए हज़रते इंसान पर जो परेशानियां और मुसीबतें आती हैं, वे उसी मुनासबत से 'फ़ित्ना' कहलाती हैं। कुरआन हकीम ने भी आल-औलाद और मंसब व जाह को इसी मानी के पेशेनज़र 'फ़ित्ना' कहा है और साफ़-साफ़ एलान किया है कि सच्चे और झूठे की जांच के लिए 'मोमिन' को इस कसौटी पर ज़रूर परखा जाता है।

उलेमा-ए-हक़ ने हज़रत इब्राहीम ﷺ की ऊपर लिखी दुआ से मुताल्लिक़ सवालों को कई तरह हल किया है। इन सबमें सबसे ज़्यादा तवज्जोह के क़ाबिल जवाब यह है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ अपने इन जामे कलिमों में बारगाहे हक़ से इसकी तलब कर रहे हैं कि अल्लाह! तू हमको काफ़िरों के हाथों आज़माइश के लिए न छोड़ देना कि वे हमको ईमान से हटा दें और कुफ़्र के क़ुबूल करने के लिए तरह-तरह की मुसीबतों और तक्लीफ़ों का शिकार बनाएं और जब्र व ज़ुल्म के ज़रिए राह से बे-राह बनाने पर आमादा कर दिलेर हो जाएं, यानी यह एक बाख़ुदा इंसान, जलीलुल क़द्र पैग़म्बर, अज़ीमुलमरतबत हादी की दरगाहे इलाही में दुआ है, जो अपनी इंसानी कमज़ोरियों पर भी नज़र रखे हुए है और हक़ के सामने अपना हाथ फैला रहा है कि हम पर वह वक़्त कभी न आए कि कुफ़्र की शौकत व ताक़त इस तरह कुचल डाले कि तौहीद के परस्तार इस सख़्त और कड़ी आज़माइश में मुब्तला होकर हक़ व बातिल के दर्मियान इम्तियाज़ खो बैठें।

सूरः शुअ़रा में हज़रत इब्राहीम की दुआ़

सूरः शुअ़रा में हज़रत इब्राहीम की यह दुआ़ ज़िक्र की गई है–

तर्जुमा– *'(परवरदिगार!) और जिस दिन लोग दोबारा उठाए जाएं, तो उस दिन मुझको रुसवा न करना।'*

इस दुआ़ से मुताल्लिक़ एक हदीस का मज़्मून इस तरह से है कि–

'हज़रत इब्राहीम ﷺ क़ियामत के दिन अपने बाप (आज़र) को फटेहाल और रूस्याह देखेंगे, तो फ़रमाएंगे, परवरदिगार! दुनिया में तूने मेरी इस दुआ़ को कुबूल फ़रमा लिया था (यानी फिर यह रुसवाई कैसी कि हश्र के मैदान में अपने बाप को इस हाल में देख रहा हूं) अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा, इब्राहीम! मैंने काफ़िरों पर जन्नत को हराम कर दिया है।' (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

ऊपर लिखी हदीस और दूसरी मुताल्लिक़ रिवायतों के तफ़्सीली बयान के बाद हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० के जवाब का हासिल यह है कि कुरआन मजीद ने हज़रत इब्राहीम ﷺ की नुमायां ख़ुसूसियतों में से उस सिफ़त का भी एलान किया है, *'बेशक इब्राहीम अलबत्ता बड़े नर्मदिल और बुर्दबार थे।'* चुनांचे जब वह क़ियामत के दिन आज़र को परेशान देखेंगे तो उनकी मुरव्वत, रहमत जोश में आ जाएगी और उलुलअज़्म पैग़म्बर की तरह हक़ीक़ते हाल से बाख़बर रहते हुए भी उनकी सिफ़ाते करीमाना का इस दर्जा फ़ितरी ग़लबा बरसरेकार आ जाएगा कि वह आज़र के लिए मग़्फ़िरत की तलब पर तैयार हो जाएंगे और अपनी इस दुआ़ की पनाह लेंगे जो दुनिया ही में कुबूलियत का शरफ़े दवाम हासिल कर चुकी थी और बाप की रुसवाई को अपनी रुसवाई ज़ाहिर करके दरगाहे हक़ में उस वायदे का ज़िक्र करेंगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला उसके जवाब में यह कहकर कि 'काफ़िरों पर मैंने जन्नत को हराम कर दिया है' इब्राहीम की तवज्जोह इस ओर दिलाएगा कि अपनी इस फ़ितरी रहमत व राफ़्त के बावजूद तुमको यह न भूलना चाहिए कि यह अ़मल की दुनिया नहीं, बल्कि बदले का दिन है और आज मीज़ाने अ़द्ल क़ायम है, जिसके लिए हमारा यह न तब्दील होने वाला क़ानून हमेशगी का शरफ़ हासिल कर चुका है कि काफ़िर व मुश्रिक के लिए जन्नत में कोई जगह नहीं और यह कि 'मुश्रिक की रुसवाई हरगिज़ मोमिन की रुसवाई की वजह नहीं बन

सकती, चाहे इन दोनों के दर्मियान दुन्यवी ताल्लुक़ के मज़बूत रिश्ते ही क्यों न क़ायम रहे हों।

ग़रज़ हज़रत इब्राहीम ﷺ का यह सवाल इसलिए न था कि वह (अल अयाज़ बिल्लाह) इस सूरतेहाल को 'ख़लफ़ेवाद' समझ रहे थे, बल्कि एक फ़ितरी तक़ाज़े के पेशेनज़र था जो अगरचे नतीजों और फलों को तो नहीं बदल सकता, मगर उस शख़्सियत की भली बातों और करीमाना सिफ़तों के नुमायां करने की वजह ज़रूर बन जाता है।

हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़िंदगी का एक अहम वाक़िया

हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़िंदगी के कुछ वाक़िए उनके बेटों हज़रत इस्माईल ﷺ और हज़रत इसहाक़ ﷺ से जुड़े हुए हैं। मुनासिब समझा गया कि इन वाक़ियों को उन दोनों नबियों के हालात में ही बयान किया जाए। यही हाल उन वाक़ियों का है जिनका ताल्लुक़ उनके भतीजे हज़रत लूत ﷺ से है, अलबत्ता 'हयात बादल ममात' (मरने के बाद की ज़िंदगी) से मुताल्लिक़ वाक़िया यहां बयान किया जाता है।

हज़रत इब्राहीम ﷺ को चीज़ों की हक़ीक़त मालूम करने की तलाश और तलब का तबई ज़ौक़ था और वह हर चीज़ की हक़ीक़त तक पहुंचने की कोशिश को अपनी ज़िंदगी का ख़ास मक़सद समझते थे, ताकि उनके ज़रिए एक ही ज़ात (अल्लाह जल्ल जलालुहू) की हस्ती, उसके एक होने और उसकी मुकम्मल कुदरत के बारे में इल्मुलयक़ीन (यक़ीन की हद तक इल्म) के बाद हक़्क़ुल यक़ीन (यक़ीन ही हक़) हासिल कर लें, इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷺ ने 'हयात बादल ममात' यानी मर जाने के बाद जी उठने से मुताल्लिक़ अल्लाह तआला से यह सवाल किया कि वह किस तरह ऐसा करेगा? अल्लाह तआला ने इब्राहीम से फ़रमाया, ऐ इब्राहीम! क्या तुम इस मस्अले पर यक़ीन और ईमान नहीं रखते? इब्राहीम ने फ़ौरन जवाब दिया क्यों नहीं? मैं बिना किसी संकोच के इस पर ईमान रखता हूं, लेकिन मेरा यह सवाल ईमान व यक़ीन के ख़िलाफ़ इसलिए नहीं है कि मैं इल्मुल-यक़ीन के साथ-साथ ऐनुल-यक़ीन और हक़्क़ुल यक़ीन (अगर किसी मस्अले के बारे में दलील व बुरहान के ज़रिए

ऐसा इल्म हासिल हो जाए कि शक व शुबहा जाता रहे तो इस कैफ़ियत को इल्मुल यक़ीन कहा जाता है और इसका दूसरा दर्जा यह है कि इस इल्म के मुशाहदों और महसूसात से भी तौसीक़ हो जाए, तो उसको ऐनुल-यक़ीन कहा जाता है। इसके बाद तीसरा और आख़िरी दर्जा हक़्क़ुल-यक़ीन का है। यह वह कैफ़ियत है, जब इस मस्अले से मुताल्लिक़ तमाम हक़ीक़तें वाज़ेह हो जाती हैं और आगे जुस्तजू की ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रहती) का ख़्वास्तगार हूं। मेरी तमन्ना यह है कि तू मुझको आंखों से मुशाहदा करा दे कि 'मौत के बाद की ज़िंदगी' की क्या शक्ल होगी?

तब अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अच्छा, अगर तुमको उसके मुशाहद की तलब है तो कुछ परिंदे लो और उनके टुकड़े-टुकड़े करके सामने वाले पहाड़ पर डाल दो और फिर फ़ासले पर खड़े होकर उनको पुकारो। हज़रत इब्राहीम ने ऐसा ही किया। जब इब्राहीम ने उनको आवाज़ दी तो उन सबके टुकड़े अलग-अलग होकर फ़ौरन अपनी-अपनी शक्ल पर आ गए और ज़िंदा होकर हज़रत इब्राहीम के पास उड़ते हुए चले आए। यह वाक़िआ, सूरः बक़रः रुकूअ् 35, आयत 260 में बयान हुआ है। इस सिलसिले में तावील करना बेकार की बात है, इन पर तवज्जोह नहीं दी जानी चाहिए।

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की औलाद और उम्र

हज़रत इब्राहीम के बड़े बेटे हज़रत इस्माईल की विलादत के वक़्त उनकी उम्र सत्तासी (87) साल थी और दूसरे बेटे हज़रत इस्हाक़ की विलादत के वक़्त उनकी उम्र पूरे सौ साल थी। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने हज़रत सारा और हज़रत हाजरा के अलावा एक और शादी की, जिनसे उनके यहां छः बेटे हुए। उनकी नस्ल अपनी मां के नाम पर बनी क़तूरा कहलाई। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की कुल उम्र एक सौ पचहत्तर साल हुई। वह हबरून (यरूशलम के क़रीब एक जगह) में मदफ़ून (दफ़न किए गए) हैं।

हज़रत इस्माईल عليه السلام

पैदाइश

हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने मिस्र से वापसी पर फ़लस्तीन में रिहाइश अख़्तियार की। इस इलाक़े को कनआ़न भी कहा जाता है।

हज़रत इब्राहीम عليه السلام उस वक़्त तक औलाद से महरूम थे। तौरात के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह की बारगाह में बेटे के लिए दुआ की और अल्लाह ने उनकी दुआ़ को क़ुबूल फ़रमा लिया और उनको तसल्ली दी। यह दुआ़ इस तरह क़ुबूल हुई कि हज़रत की छोटी बीवी मोहतरमा हज़रत हाजरा हामिला हुईं। जब हज़रत सारा को यह पता चला तो उन्हें बशर के तक़ाज़े के तौर पर रश्क पैदा हो गया। इस सूरतेहाल से मजबूर होकर हज़रत हाजरा उनके पास से चली गईं। तौरात के मुताबिक़ उनका गुज़र एक ऐसी जगह पर हुआ, जहां एक कुंवां था। उस जगह वह फ़रिश्ते से हमकलाम हुईं और कुंवें का नाम 'ज़िंदा नज़र आने वाले का कुंवां' रखा। थोड़े दिनों बाद हज़रत हाजरा के बेटा पैदा हुआ और फ़रिश्ते की बशारत के मुताबिक़ उसका नाम इस्माईल रखा गया।

बंजर घाटी और हाजरा व इस्माईल

हज़रत इस्माईल عليه السلام की पैदाइश के बाद के हालात बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنه से नक़ल की गई रिवायत में इस तरह बयान हुए हैं—

'इब्राहीम عليه السلام हाजरा और दूध पीते बच्चे इस्माईल عليه السلام को लेकर चले और जहां आज काबा है, उस जगह एक बड़े पेड़ के नीचे ज़मज़म की मौजूदा जगह से ऊपरी हिस्से पर उनको छोड़ गए, वह जगह वीरान और ग़ैर-आबाद थी और पानी का नाम व निशान न था, इसलिए इब्राहीम عليه السلام ने एक मशक पानी और एक थैली खजूर भी उनके पास छोड़ दी और फिर मुंह फेर कर रवाना हो गए। हाजरा उनके पीछे-पीछे यह कहते हुए चलीं, ऐ इब्राहीम! तुम

हमको ऐसी घाटी में कहां छोड़कर चल दिए, जहां न आदमी है और न आदमी का बच्चा और न कोई मूनिस व ग़मख़्वार। हाजरा बराबर यह कहती जाती थीं, मगर इब्राहीम ख़ामोश चले जा रहे थे। आख़िर हाजरा ने मालूम किया क्या तेरे अल्लाह ने तुझको यह हुक्म दिया है? तब हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया: हां! अल्लाह के हुक्म से है।

हाजरा ने जब यह सुना तो कहने लगीं, अगर यह अल्लाह का हुक्म है तो बेशक वह हम को ज़ाया और बर्बाद नहीं करेगा और फिर वापस लौट आईं। इब्राहीम ﷺ चलते-चलते जब एक टीले पर ऐसी जगह पहुंचे कि उनके घर वाले निगाह से ओझल हो गए, तो उस ओर जहां काबा है, रुख़ किया और हाथ उठाकर यह दुआ मांगी—

तर्जुमा—'ऐ हम सबके परवरदिगार! (तू देख रहा है कि) एक ऐसे मैदान में जहां खेती का नाम व निशान नहीं, मैंने अपनी कुछ औलाद तेरे मोहतरम घर के पास लाकर बसाई है कि नमाज़ क़ायम रखें (ताकि यह मोहतरम घर एक ख़ुदा की इबादत करने वालों से ख़ाली न रहे) पस तू (अपने फ़ज़्ल व करम से) ऐसा कर कि लोगों के दिल उनकी तरफ़ मायल हो जाएं और उनके लिए ज़मीन की पैदावार से रिज़्क़ का सामान मुहैया कर दे, ताकि तेरे शुक्रगुज़ार हों।

(इब्राहीम 14 : 37)

'हाजरा कुछ दिनों तक मशक से पानी और खुरजी से खजूरें खातीं और इस्माईल को दूध पिलाती रहीं, लेकिन वह वक़्त भी आ गया कि पानी रहा न खजूरें, तब वह सख़्त परेशान हुईं। चूंकि वह भूखी-प्यासी थीं, इसलिए दूध भी न उतरता था और बच्चा भी भूखा-प्यासा रहने लगा, जब हालत बिगड़ने लगी और बच्चा बेताब होने लगा, तो हाजरा इस्माईल को छोड़कर दूर जा बैठीं, ताकि इस हालते ज़ार में उसको अपनी आंख से न देखें। कुछ सोचकर क़रीब की पहाड़ी सफ़ा पर चढ़ीं कि शायद कोई अल्लाह का बन्दा नज़र आ जाए या पानी नज़र आ जाए, मगर कुछ नज़र न आया। फिर बच्चे की मुहब्बत में दौड़कर घाटी में आ गईं, इसके बाद दूसरी ओर की पहाड़ी मर्वः पर चढ़ गईं और वहां भी जब कुछ नज़र न आया, तो फिर तेज़ी से लौट कर घाटी में बच्चे के पास आ गईं और इस तरह सात बार किया। नबी अकरम

ﷺ ने उस जगह पहुंच कर फ़रमाया कि यही वह 'सफ़ा और मर्वः के बीच की सई' है जो हज में लोग करते हैं। आख़िर में वह मरवः पर थीं तो कानों में एक आवाज़ आई, चौंकीं और दिल में कहने लगीं कि कोई पुकारता है, कान लगाया, तो फिर आवाज़ आई। हाजरा कहने लगीं, अगर तुम मदद कर सकते हो, तो सामने आओ, तुम्हारी आवाज़ सुनी गई, देखा तो अल्लाह का फ़रिश्ता (जिब्रील) है। फ़रिश्ते ने अपना पैर (या एड़) उस जगह मारा, जहां ज़मज़म है, उस जगह पानी उबलने लगा। हाजरा ने यह देखा तो पानी के चारों ओर बाड़ बनाने लगीं, मगर पानी बराबर उबलता रहा। उस जगह पहुंच कर नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया, अल्लाह तआला उम्मे इस्माईल पर रहम करे, अगर वह ज़मज़म को इस तरह न रोकतीं और उसके चारों तरफ़ बाड़ न लगातीं, तो आज वह ज़बरदस्त चश्मा होता। हाजरा ने पानी पिया और फिर इस्माईल को दूध पिलाया। फ़रिश्ते ने हाजरा से कहा, ख़ौफ़ और ग़म न कर, अल्लाह तआला तुझको और इस बच्चे को ज़ाया न करेगा। यह मुक़ाम 'बैतुल्लाह' है, जिसकी तामीर इस बच्चे (इस्माईल) और इसके बाप इब्राहीम की क़िस्मत में मुक़द्दर हो चुकी है। इसलिए अल्लाह तआला इस ख़ानदान को हलाक नहीं करेगा। बैतुल्लाह की यह जगह क़रीब की ज़मीन से नुमायां की, मगर पानी का सैलाब दाहिने-बाएं उस हिस्से को बराबर करता जा रहा था।

इसी दौरान बनी जुरहम का एक क़बीला इस घाटी के क़रीब आ ठहरा, देखा तो थोड़े से फ़ासले पर परिंदे उड़ रहे हैं। जुरहम ने कहा, यह पानी की निशानी है, जहां ज़रूर पानी मौजूद है। जुरहम ने भी क़ियाम की इजाज़त मांगी। हाजरा ने फ़रमाया, क़ियाम कर सकते हो, लेकिन पानी में मिल्कियत के हिस्सेदार नहीं हो सकते। जुरहम ने यह बात ख़ुशी से मंज़ूर कर ली। और वहीं मुक़ीम हो गए।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि हाजरा भी आपसी उन्स व मुहब्बत और साथ के लिए यह चाहती थीं कि कोई आकर यहां ठहरे, इसलिए उन्होंने ख़ुशी के साथ बनी जुरहम को क़ियाम की इजाज़त दे दी। जुरहम ने आदमी भेजकर अपने बाक़ी ख़ानदान वालों को भी बुला लिया और यहां मकान बनाकर रहने-सहने लगे। इन्हीं में इस्माईल भी रहते और खेलते और उनसे

उनकी ज़ुबान सीखते। जब इस्माईल बड़े हो गए तो उनका तरीक़ा और अन्दाज़ और उनकी ख़ूबसूरती बनी जुरहम को बहुत भाई और उन्होंने अपने ख़ानदान की लड़की से उनकी शादी कर दी। इसके कुछ दिनों बाद हाजरा का इंतिक़ाल हो गया।'

यह लम्बी रिवायत बुख़ारी 'किताबुर्रोया और किताबुल अंबिया' में दो जगह नक़ल की गई है और दोनों से यही साबित होता है कि इस्माईल बंगर घाटी और बिन खेती की धरती मक्का में दूध पीते बच्चे की हालत में पहुंचे थे, लेकिन इब्राहीम ﷺ अगरचे हाजरा और इस्माईल को मक्का के बयाबान और सेहरा में छोड़ आए थे, लेकिन बाप थे, नबी और पैग़म्बर थे, बीवी और बेटे को कैसे भूल सकते थे और उनकी देख-भाल से कैसे बे-परवा हो सकते थे, वे बराबर इस बिना पानी के और हरियाली के मैदानी इलाक़े में आते रहते और अपने ख़ानदान की निगरानी करते रहते थे, जैसा कि इसी हदीस के आख़िरी हिस्से से ज़ाहिर होता है, जिसका ज़िक्र आगे आता है—

बहरहाल अगरचे क़ुरआन की किसी आयत से यह साबित नहीं होता कि इस्माईल (मक्का की) धरती पर किस सन में पहुंचाए गए, मगर ऊपर की रिवायतें कहती हैं कि यह ज़माना हज़रत इस्माईल के दूध पीने का ज़माना था और यही सही है।

नेक बीवी का किरदार

ऊपर ज़िक्र की गई हदीस में हज़रत इस्माईल की बीवियों के बारे में इस तरह बयान हुआ है—

'इब्राहीम बराबर अपने बाल-बच्चों को देखने आते रहते थे। एक बार तशरीफ़ लाए, तो इस्माईल घर पर न थे, उनकी बीवी से मालूम किया तो उन्होंने जवाब दिया कि रोज़ी की खोज में बाहर गए हैं। इब्राहीम ने मालूम किया, गुज़रान की क्या हालत है? वह कहने लगी, सख़्त मुसीबत और परेशानी में हैं और बड़े दुख और तक्लीफ़ में। इब्राहीम ने यह सुनकर फ़रमाया, इस्माईल से मेरा सलाम कह देना और कहना कि अपने दरवाज़े की चौखट तब्दील कर दो।

इस्माईल ﷺ वापस आए तो इब्राहीम ﷺ के नूरे नुबूवत के असरात पाए, पूछा : कोई आदमी यहां आया था? बीवी ने सारा क़िस्सा सुनाया और पैग़ाम भी। इस्माईल ने फ़रमाया कि वह मेरे बाप इब्राहीम थे और उनका मश्विरा है कि तुझको तलाक़ दे दूं, इसलिए मैं तुझको जुदा करता हूं।

इस्माईल ने फिर दूसरी शादी कर ली। एक बार इब्राहीम फिर इस्माईल की ग़ैर-मौजूदगी में आए और उसी तरह उनकी बीवी से सवाल किए। बीवी ने कहा, अल्लाह का शुक्र व एहसान है, अच्छी तरह गुज़र रही है। मालूम हुआ, खाने को क्या मिलता है? इस्माईल की बीवी ने जवाब दिया, गोश्त। इब्राहीम ने पूछा और पीने को? उसने जवाब दिया, पानी। तब हज़रत इब्राहीम ने दुआ मांगी, अल्लाह! इनके गोश्त और पानी में बरकत अता फ़रमा। और चलते हुए यह पैग़ाम दे गए कि अपने दरवाज़े की चौखट को मज़बूत रखना।

हज़रत इस्माईल ﷺ आए तो उनकी बीवी ने तमाम वाक़िया दोहराया और पैग़ाम भी सुनाया, इस्माईल ने फ़रमाया कि यह मेरे बाप इब्राहीम ﷺ थे और उनका पैग़ाम यह है कि तू मेरी ज़िंदगी भर जीवन-साथी रहे।'

ख़त्ना

तौरात के बयान के मुताबिक़ जब इब्राहीम की उम्र निन्नान्वे साल हुई और हज़रत इस्माईल ﷺ की तेरह साल, तो अल्लाह तआला का हुक्म आया कि ख़त्ना करो। इब्राहीम ने हुक्म की तामील में पहले अपनी की और इसके बाद इस्माईल ﷺ और तमाम ख़ानाज़ादों (घरवालों) और ग़ुलामों की ख़त्ना कराई। यही ख़त्ने की रस्म आज भी इब्राहीमी मिल्लत का शिआर है और सुन्नते इब्राहीमी के नाम से मशहूर है।

ज़िब्हे अज़ीम

अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों को इम्तिहान व आज़माइश की सख़्त-से-सख़्त मंज़िलों से गुज़रना पड़ता है। पहली मंज़िल वह थी जब उनको आग में डाला गया, तो उस वक़्त उन्होंने जिस सब्र और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी होने का सबूत दिया, वह उन्हीं का हिस्सा था। इसके बाद जब इस्माईल को और

हाजरा को फ़ारान के बयाबान में छोड़ आने का हुक्म मिला, तो वह भी मामूली इम्तिहान न था। अब एक तीसरे इम्तिहान की तैयारी है जो पहले दोनों से भी ज़्यादा हिला देने वाला और जान लेने वाला इम्तिहान है, यही कि हज़रत इब्राहीम तीन रात बराबर ख़्वाब देखते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ इब्राहीम! तू हमारी राह में अपने इकलौते बेटे की कुरबानी दे।

नबियों का ख़्वाब 'सच्चा ख़्वाब' और वह्य इलाही होता है, इसलिए इब्राहीम रज़ा व तस्लीम बनकर तैयार हो गए कि अल्लाह के हुक्म की जल्द से जल्द तामील करें, चूंकि यह मामला अकेली अपनी ज़ात से मुतालिक़ न था, बल्कि इस आज़माइश का दूसरा हिस्सा वह 'बेटा' था, जिसकी कुरबानी का हुक्म दिया गया था, इसलिए बाप ने अपने बेटे को अपना ख़्वाब और अल्लाह का हुक्म सुनाया, बेटा इब्राहीम जैसे नबी और रसूल का बेटा था, तुरन्त हुक्म के आगे सर झुका दिया और कहने लगा, अगर अल्लाह की यही मर्ज़ी है, तो इन्शाअल्लाह आप मुझको सब्र करने वाला पाएंगे।

इस बात-चीत के बाद बाप-बेटे अपनी कुरबानी पेश करने के लिए जंगल रवाना हो गए। बाप ने बेटे की मर्ज़ी पाकर ज़िब्ह किए जाने वाले जानवर की तरह हाथ-पैर बांधे, छुरी को तेज़ किया और बेटे को पेशानी के बल पछाड़ कर ज़िब्ह करने को तैयार हो गए, फ़ौरन अल्लाह की वह्य इब्राहीम पर नाज़िल हुई, ऐ इब्राहीम! तूने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया। बेशक यह बहुत सख़्त और कठिन आज़माइश थी। अब लड़के को छोड़ और तेरे पास जो यह मेंढा खड़ा है, उसको बेटे के बदले में ज़िब्ह कर, हम नेकों को इसी तरह नवाज़ा करते हैं। इब्राहीम ने पीछे मुड़कर देखा तो झाड़ी के क़रीब एक मेंढा खड़ा है। हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए उस मेंढे को ज़िब्ह किया।

यह वह 'कुरबानी' है जो अल्लाह की बारगाह में ऐसी मक़्बूल हुई कि यादगार के तौर पर हमेशा के लिए मिल्लते इब्राहीमी का शिआर क़रार पाई और आज ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ को तमाम इस्लामी दुनिया में यह 'शिआर' उसी तरह मनाया जाता है मगर इस पूरे वाक़िए से यह नहीं साबित हुआ कि इब्राहीम की औलाद में से 'ज़बीह' कौन है—इस्माईल या इस्हाक़? कुरआन ने अगरचे 'ज़बीह' का नाम लिया, मगर जिस तरह इस वाक़िए का

तज़्किरा किया है, उससे बग़ैर किसी शक व शुबहे के यह ज़ाहिर होता है कि क़ुरआनी नस्स इस्माईल को ज़बीह बताती है और यही वाक़िया और हक़ीक़त है। सूरः अस-साफ़्फ़ात की आयतें 100 से 113 में इस वाक़िए को बयान किया गया है।

काबा की बुनियाद

हज़रत इब्राहीम ﷺ अगरचे फ़लस्तीन में ठहरे थे, मगर बराबर मक्का में हाजरा और इस्माईल को देखने आते रहते थे। इसी बीच इब्राहीम को अल्लाह का हुक्म हुआ कि 'अल्लाह के काबे' की तामीर करो। हज़रत ﷺ ने हज़रत इस्माईल ﷺ से ज़िक्र किया और दोनों बाब-बेटों ने अल्लाह के घर की तामीर शुरू कर दी।

एक रिवायत के मुताबिक़ बैतुल्लाह की सबसे पहली बुनियाद हज़रत आदम के हाथों रखी गई और अल्लाह के फ़रिश्तों ने उनको वह जगह बता दी थी, जहां काबे की तामीर होनी थी, मगर हज़ारों साल के हादसों ने अर्सा हुआ उसको बे-निशान कर दिया था, अलबत्ता अब भी वह एक टीला या उभरी हुई ज़मीन की शक्ल में मौजूद था। यही वह जगह है, जिसको अल्लाह की वह्य ने इब्राहीम ﷺ को बताया और उन्होंने इस्माईल की मदद से उसको खोदना शुरू किया तो पिछली तामीर की बुनियादें नज़र आने लगीं। इन्हीं बुनियादों पर बैतुल्लाह की तामीर की गई, अलबत्ता क़ुरआन पाक में पिछली हालत का कोई तज़्किरा नहीं है।

दूसरी तरफ़ यह हक़ीक़त है कि इस तामीर से पहले तमाम कायनात और दुनिया के कोने-कोने में बुतों और सितारों की पूजा के लिए हैकल और मन्दिर मौजूद थे, पर इन सबके उलट सिर्फ़ एक ख़ुदा की परस्तिश और उसकी यकताई के इक़रार में सरे नियाज़ झुकाने के लिए दुनिया के बुतकदों में पहला घर जो ख़ुदा का घर कहलाया, वह यही बैतुल्लाह है।

वह दुनिया में घर सबसे पहला ख़ुदा का
ख़लील एक मेमार था, जिस बिना का।

अज़ल से मशीयत ने था जिसको ताका,
कि उस घर से उगलेगा चश्मा हुदा का।

तर्जुमा—बेशक सबसे पहला वह घर जो लोगों के लिए (ख़ुदा की याद के लिए) बनाया गया, अलबत्ता वह है जो मक्का में है, वह है सर से पैर तक बरकत और दुनिया वालों के लिए हिदायतों (का सर चश्मा)।

(आले इमरान 3-97)

इसी तामीर को यह शरफ़ हासिल है कि इब्राहीम-जैसा जलीलुल क़द्र पैग़म्बर उसका मेमार है और इस्माईल जैसा नबी व ज़बीह उसका मज़दूर, बाप-बेटे बराबर उसकी तामीर में लगे हुए हैं और जब उसकी दीवारें ऊपर उठती हैं और बुज़ुर्ग बाप का हाथ ऊपर तामीर करने से माज़ूर हो जाता है, तो कुदरत की हिदायत के मुताबिक़ एक पत्थर को बाड़ बनाया जाता है, जिसको इस्माईल अपने हाथ से सहारा देते और इब्राहीम उस पर तामीर करते जाते हैं। यही वह यादगार है जो 'मक़ामे इब्राहीम' से जाना जाता है। जब तामीर इस हद पर पहुंची, जहां आज हजरे अस्वद नसब है तो जिब्रील अमीन ने उनकी रहनुमाई की और हजरे अस्वद को उनके सामने एक पहाड़ी से महफ़ूज़ निकाल कर दिया, जिसको जन्नत का लाया हुआ पत्थर कहा जाता है, ताकि वह नसब कर दिया जाए।

अल्लाह का घर तामीर हो गया तो अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम को बताया कि यह मिल्लते इब्राहीमी के लिए (क़िबला) और हमारे सामने झुकने का निशान है, इसलिए यह तौहीद का मर्कज़ क़रार दिया जाता है। तब इब्राहीम व इस्माईल ने दुआ मांगी कि अल्लाह तआ़ला उनको और उनकी ज़ुर्रियत (आल औलाद) को नमाज़ और ज़कात क़ायम करने की हिदायत दे और इस्तिक़ामत बख़्शे और उनके लिए फलों, मेवों और रिज़्क़ में बरकत दे और दुनिया के कोने-कोने में बसने वाले गिरोह में से हिदायत पाए हुए गिरोह को इस तरफ़ मुतवज्जह करे कि वे दूर-दूर से आएं और हज के मनासिक अदा करें और हिदायत व रुश्द के इस मर्कज़ में जमा होकर अपनी ज़िंदगी की सआ़दतों से दामन भरें।

कुरआन अज़ीज़ ने बैतुल्लाह की तामीर, तामीर के वक़्त इब्राहीम व

इस्माईल की मुनाजात, नमाज़ क़ायम करने और हज की रस्मों को अदा करने के लिए शौक़ व तमन्ना के इज़्हार और बैतुल्लाह के तौहीद का मर्कज़ होने के एलान का जगह-जगह ज़िक्र किया है और नए-नए उस्लूब और तर्ज़े अदा से उसकी अज़्मत और जलालत व जबरूत को सूरः आलेइमरान 3:79, अल-बक़रः 2 : 125'129 और अल-हज्ज 22 : 26-33, 36 : 37 में वाज़ेह फ़रमाया है।

हज़रत इस्माईल की औलाद

तौरात के मुताबिक़ हज़रत इस्माईल के बारह बेटे थे जो बारह सरदार कहलाए और अरब के मुस्तक़िल क़बीलों के जद्दे क़बीला बने और एक लड़की थी, जिसका नाम बश्शामा या महल्लात था। उनके बेटे नाबित की नस्ल अस्हाबुल-हिज्र कहलाई। (नाबितीन के आसार पट्टा (जॉर्डन) में मौजूद हैं) और क़ीदार की नस्ल अस्हाबुर्रस्स के नाम से मशहूर हुई।

क़ुरआन में हज़रत इस्माईल ﷺ का तज़्किरा

हज़रत इस्माईल का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में कई बार हुआ है। सूरः मरयम में उनके नाम के साथ उनके औसाफ़े जमीला का भी ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा—और याद कर किताब में इस्माईल ﷺ का ज़िक्र था, वह वायदे का सच्चा था और था नबी और हुक्म करता था अपने अह्ल को नमाज़ का और ज़कात का और था अपने परवरदिगार के नज़दीक पसन्दीदा।

(मरयम 19 : 54)

हज़रत इस्माईल ﷺ की वफ़ात

हज़रत इस्माईल ﷺ की उम्र जब एक सौ छत्तीस साल की हुई, तो उनका इंतिक़ाल हो गया, तौरात के मुताबिक़ हज़रत इस्माईल ﷺ की वफ़ात फ़लस्तीन में हुई और फ़लस्तीन ही में उनकी क़ब्र बनी। अरब तारीख़ के माहिरों के मुताबिक़ वह और उनकी वालिदा हाजरा बैतुल्लाह के क़रीब हरम के अन्दर दफ़न हैं।

हज़रत इस्हाक़ عليه السلام

पैदाइश

हज़रत इब्राहीम عليه السلام की उम्र सौ साल हुई तो अल्लाह तआला ने उनको बशारत सुनाई कि सारा के पेट से भी तेरे एक बेटा होगा, उसका नाम इस्हाक़ रखना और कुरआन में है—

तर्जुमा—'पस हमने उसको इस्हाक़ की और उसके बाद (उसके बेटे) याक़ूब की बशारत दी। सारा कहने लगी, क्या मैं निगोड़ी बुढ़िया जनूंगी और जबकि यह इब्राहीम मेरा शौहर भी बूढ़ा है, वाक़ई यह तो बहुत अजीब बात है। फ़रिश्तों ने कहा, क्या तू अल्लाह की हुक्म पर ताज्जुब करती है? ऐ अह्ले बैत! तुम पर अल्लाह की बरकत व रहमत हो। बेशक अल्लाह तआला हर तरह हम्द के क़ाबिल है और है बहुत बुज़ुर्ग।' (हूद 11 : 71-73)

तर्जुमा—'इब्राहीम ने कहा, क्या तुम मुझको इस बुढ़ापा आ जाने पर भी बशारत देते हो, यह कैसी बशारत दे रहे हो? फ़रिश्तों ने कहा, हम तुझको हक़ बात की बशारत दे रहे हैं, पस तू नाउम्मीद होने वालों में से न हो। इब्राहीम ने कहा और नहीं नाउम्मीद होते अपने परवरदिगार की रहमत से, मगर गुमराह।'

(अल-हिज्र 15 : 54 : 56)

ख़त्ना

हज़रत इस्हाक़ عليه السلام जब आठ दिन के हुए तो हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने उनकी ख़त्ना करा दी।

इस्हाक़ की शादी

तौरात के एतबार से हज़रत इस्हाक़ की शादी हज़रत इब्राहीम عليه السلام के भतीजे की बेटी से हुई और उससे उनके यहां दो बेटे ईसू और याक़ूब पैदा हुए। ईसू की शादी हज़रत इस्माईल की साहबज़ादी बश्शामा या महल्लात से हुई और हज़रत याक़ूब अपने मामूं के यहां ब्याहे गए।

इस्हाक़ का ज़िक्र क़ुरआन में

कुरआन पाक में हज़रत इस्हाक़ ﷺ का ज़िक्र सूरः अंबिया, सूरः मरयम, सूरः हूद और सूरः साफ़्फ़ात में आया है।

हज़रत लूत ﷺ

हज़रत लूत व इब्राहीम ﷺ

हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम के भतीजे हैं और उनका बचपन हज़रत इब्राहीम ही की निगरानी में गुज़रा और उनकी नश्वनुमा हज़रत इब्राहीम ही की तर्बियत में हुई।

मिस्र से वापसी

हज़रत लूत और उनकी बीवी हज़रत इब्राहीम ﷺ की हिजरतों में हमेशा उनके साथ रहे हैं और जब हज़रत इब्राहीम मिस्र में थे, तो उस वक़्त भी यह हम सफ़र थे। मिस्र से वापसी पर हज़रत इब्राहीम फ़लस्तीन में आबाद हुए और हज़रत लूत ने शर्क़े उर्दुन के इलाक़े में सुकूनत अख़्तियार की। इस इलाक़े में दो मशहूर बस्तियां सदूम और आमूरा थीं।

क़ौमे लूत

हज़रत लूत ﷺ ने जब शर्क़े उर्दुन (ट्रांस जॉर्डन) के इलाक़े में सदूम में आकर क़ियाम किया तो देखा कि यहां बाशिंदे फ़वाहिश और मासियतों में इतने पड़े हुए हैं कि दुनिया में कोई बुराई ऐसी न थी जो उनमें मौजूद न हो। दूसरे ऐबों और फ़हश कामों के अलावा यह क़ौम एक ख़बीस अमल में मुब्तला थी, यानी अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए वे औरतों के बजाए अमरद लड़कों से इख़्तिलात करते थे। दुनिया की क़ौमों में उस वक़्त तक इस अमल का क़तई रिवाज न था। यही बदबख़्त क़ौम है जिसने इस नापाक अमल की ईजाद की और इससे भी ज़्यादा शरारत, ख़बासत और

बेहयाई यह थी कि वे अपनी बदकिरदारी को ऐब नहीं समझते थे और ऐलानिया फ़ख़्र व मुबाहात के साथ उसको करते रहते थे।

तर्जुमा–'और (याद करो) लूत का वाक़िया जब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम ऐसे फ़हश काम में लगे हुए हो जिसको दुनिया में तुमसे पहले किसी ने नहीं किया, यह कि बेशक तुम औरतों के बजाए अपनी शहवत को मर्दों से पूरी करते हो, यक़ीनन तुम हद से गुज़रने वाले हो।'

(अल-आराफ़ 7 : 80-81)

हज़रत लूत और तब्लीग़े हक़

इन हालात में हज़रत लूत ने उनको उनकी बेहयाइयों और ख़बासतों पर मलामत की और शराफ़त और तहारत की ज़िंदगी की रग़बत दिलाई और नर्मी के साथ जो मुम्किन तरीक़े हो सकते थे, उनसे उनको समझाया और पिछली क़ौम की बदआमालियों के नतीजे बताकर इबरत दिलाई, मगर उन पर बिल्कुल असर न हुआ, बल्कि कहने लगे–

तर्जुमा– *'लूत की क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि कहने लगे इन (लूत और उसके ख़ानदान) को अपने शहर से निकाल दो। ये बेशक बहुत ही पाक लोग हैं।* (आराफ़ 7 : 72)

'बेशक ये पाक लोग हैं', क़ौमे लूत का यह मज़ाक़िया जुम्ला था, गोया हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और उनके ख़ानदान पर तंज़ करते और उनका ठठ्ठा उड़ाते थे कि बड़े पाकबाज़ हैं, इनका हमारी बस्ती में क्या काम या मेहरबान नसीहत करने वाले की मेहरबान नसीहत से ग़ैज़ व ग़ज़ब में आकर कहते थे कि अगर हम नापाक और बेहया हैं और वे बड़े पाकबाज़ हैं, तो इनका हमारी बस्ती से क्या वास्ता, इनको यहां से निकलो।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने फिर एक बार भरी महफ़िल में उनको नसीहत की और फ़रमाया, 'तुमको इतना भी एहसास नहीं रहा है कि यह समझ सको कि मर्दों के साथ बेहयाई का ताल्लुक़, लूट-मार और इसी क़िस्म की बद-अख़्लाक़ियां बहुत बुरे आमाल हैं, तुम यह सब कुछ करते हो और भरी महफ़िलों और मज्लिसों में करते हो और शर्मिंदा होने के बजाए बाद में उनका ज़िक्र इस तरह

करते हो कि गोया ये कारे नुमायां हैं जो तुमने अंजाम दिए हैं।

तर्जुमा– *'क्या तुम वही नहीं हो कि तुम मर्दों से बदअ़मली करते हो, लोगों की राह मारते हो और अपनी मज्लिसों में और घर वालों के सामने फ़हश काम करते हो।'*

(अल-अंकबूत 29/29)

क़ौम ने इस नसीहत को सुना तो ग़म व ग़ुस्से से तिलमिला उठी और कहने लगी, लूत! बस ये नसीहतें और इबरतें ख़त्म कर और अगर हमारे उन आमाल से तेरा ख़ुदा नाराज़ है तो वह अ़ज़ाब लाकर दिखा, जिसका ज़िक्र करके बार-बार हमको डराता है और अगर तू वाक़ई अपने क़ौल में सच्चा है तो हमारा और तेरा फ़ैसला अब हो जाना ही ज़रूरी है।

तर्जुमा–*'पस उस (लूत) की क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि वे कहने लगे, तू हमारे पास अल्लाह का अ़ज़ाब ले आ, अगर तू सच्चा है।'*

(अल-अंकबूत 29/29)

हज़रत इब्राहीम ﷺ और अल्लाह के फ़रिश्ते

इधर यह हो रहा था और दूसरी तरफ़ हज़रत इब्राहीम ﷺ के साथ यह वाक़िया पेश आया कि हज़रत इब्राहीम जंगल में सैर कर रहे थे। उन्होंने देखा कि तीन लोग खड़े हैं। हज़रत इब्राहीम बड़े मुतवाज़ेअ़ और मेहमान नवाज़ थे और हमेशा उनका दस्तरख़्वान मेहमानों के लिए फैला रहता था, इसलिए इन तीनों को देखकर वह बहुत ख़ुश हुए और उनको अपने घर ले गए और बछड़ा ज़िब्ह करके तिक्के बनाए और भून कर मेहमानों के सामने पेश किए, मगर उन्होंने खाने से इंकार किया। यह देखकर हज़रत इब्राहीम ने समझा कि ये कोई दुश्मन हैं जो दस्तूर के मुताबिक़ खाने से इंकार कर रहे हैं और कुछ डरे कि ये आख़िर कौन हैं?

मेहमानों ने जब हज़रत इब्राहीम ﷺ की बेचैनी देखी तो उनसे हँस कर कहा कि आप घबराएं नहीं! हम अल्लाह के फ़रिश्ते हैं और क़ौमे लूत की तबाही के लिए भेजे गए हैं, इसलिए सदूम जा रहे हैं।

जब हज़रत इब्राहीम ﷺ को इत्मीनान हो गया कि ये दुश्मन नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के फ़रिश्ते हैं, तो अब उनके दिल की रिक़्क़त, हमदर्दी का

जज़्बा और मुहब्बत व शफ़क़त की फ़रावानी ग़ालिब आई और उन्होंने क़ौमे लूत की ओर से झगड़ना शुरू कर दिया और फ़रमाने लगे कि तुम उस क़ौम को कैसे बर्बाद करने जा रहे हो, जिसमें लूत-जैसा अल्लाह का बरगज़ीदा नबी मौजूद है और वह मेरा भतीजा भी है और मिल्लते हनीफ़ का पैरो भी?

फ़रिश्ते ने कहा, हम यह सब कुछ जानते हैं, मगर अल्लाह का यह फ़ैसला है कि क़ौमे लूत अपनी सरकशी, बदअ़मली, बेहयाई और फ़हश बातों पर इसरार की वजह से ज़रूर हलाक की जाएगी और लूत और उसका ख़ानदान इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा, अलबत्ता लूत की बीवी क़ौम की हिदायत और उनकी बद-आ़मालियों और बदअ़क़ीदगियों में शिरकत की वजह से क़ौमे लूत ही के साथ अ़ज़ाब पाएगी।

ग़रज़ हज़रत लूत के हक़ पहुंचाने, भलाइयों का हुक्म देने और बुराइयों से मना करने का क़ौम पर मुतलक़ कुछ असर न हुआ और वह अपनी बद-अख़्लाक़ियों पर वैसे ही जमी रही। हज़रत लूत ने यहां तक ग़ैरत दिलाई कि तुम इस बात को नहीं सोचते कि मैं रात-दिन जो इस्लाम और सीधे रास्ते की दावत और पैग़ाम के लिए तुम्हारे साथ हैरान व परेशान हूं, क्या कभी मैंने इस कोशिश का कोई मुआवज़ा तलब किया, क्या कोई उजरत मांगी, किसी नज़्र व नियाज़ का तलबगार हुआ। मेरी नज़रों में तो तुम्हारी दीनी व दुन्यवी फ़लाह व सआ़दत इस के सिवा और कुछ भी नहीं है, मगर तुम हो कि ज़रा भी तवज्जोह नहीं करते।

मगर उनके अंधेरे दिलों पर इस कहने का तनिक भर भी असर न हुआ और वे हज़रत लूत को 'निकाल देने' और पत्थर मार-मार कर हलाक कर देने की धमकियां देते रहे। जब नौबत यहां तक पहुंची और उनकी बुरी क़िस्मत ने किसी तरह अख़्लाक़ी ज़िंदगी पर आ़मादा न होने दिया, तब उनको भी वही पेश आया जो अल्लाह के बनाए हुए क़ानूने जज़ा का यक़ीनी और हतमी फ़ैसला है, यानी बद किरदारियों और इसरार की सज़ा बर्बादी या हलाकत। ग़रज़ अल्लाह के फ़रिश्ते हज़रत इब्राहीम के पास से रवाना होकर सदूम पहुंचे और लूत के यहां मेहमान हुए। ये अपनी शक्ल व सूरत में हसीन व ख़ूबसूरत और उम्र में नवजवान लड़कों की शक्ल व सूरत के थे। हज़रत

लूत ने उन मेहमानों को देखा तो घबरा गए और डरे कि बदबख़्त क़ौम मेरे इन मेहमानों के साथ क्या मामला करेगी, क्योंकि अभी तक उनको यह नहीं बताया गया था कि ये अल्लाह के पाक फ़रिश्ते हैं।

अभी हज़रत लूत ﷺ इस हैस-बैस में थे कि क़ौम को ख़बर लग गई और लूत के मकान पर चढ़ आए और मुतालबा करने लगे कि तुम इसको हमारे हवाले करो। हज़रत लूत ﷺ ने बहुत समझाया और कहा, क्या तुम में कोई भी 'सलीमुल फ़ित्रत इंसान' (रजुलुर्रशीद) नहीं है कि वह इंसानियत को बरते और हक़ को समझे? तुम क्यों इस लानत में गिरफ़्तार हो और नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए फ़ितरी तरीक़ा छोड़कर और हलाल तरीक़ों से औरतों को जीवन-साथी बनाने की जगह इस मलऊन बेहयाई पर उतर आए हो? ऐ काश! मैं 'रुक्ने शदीद' की ज़बरदस्त हिमायत कर सकता!

हज़रत लूत की इस परेशानी को देखकर फ़रिश्तों ने कहा, आप हमारी ज़ाहिरी शक्लों को देखकर घबराइए नहीं, हम अज़ाब के फ़रिश्ते हैं और अल्लाह के क़ानून 'जज़ा-ए-आमाल' का फ़ैसला इनके हक़ में अटल है, वह अब इनके सर से टलने वाला नहीं। आप और आप का ख़ानदान अज़ाब से बचा रहेगा, मगर आपकी बीवी बेहयाओं के साथ रहेगी और तुम्हारा साथ न देगी।

आख़िर अज़ाबे इलाही का वक़्त आ पहुंचा, रात शुरू हुई तो फ़रिश्तों के इशारे पर हज़रत लूत ﷺ अपने ख़ानदान समेत दूसरी ओर से निकल कर सदूम से रुख़्सत हो गए और बीवी ने उनका साथ देने से इंकार कर दिया और रास्ते से ही लौट कर सदूम वापस आ गई, रात का आख़िर आया तो पहले तो एक हौलनाक चीख़ ने सदूम वालों को तह व बाला कर दिया और फिर आबादी का तख़्ता ऊपर उठाकर उलट दिया गया और ऊपर से पत्थरों की बारिश ने उनका नाम व निशान तक मिटा दिया और वही हुआ जो पिछली क़ौम की नाफ़रमानी और सरकशी का अंजाम हो चुका है।

हज़रत इब्राहीम मुजद्दिदे अंबिया (नबियों के मुजद्दिद)

इन लगातार वाक़िआत से बहुत-से सबक़ हासिल होने के अलावा एक

सबसे अहम बात यह ज़ाहिर होती है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ की शख़्सियत नुबूवत व रिसालत के मंसब में भी ख़ास इम्तियाज़ी शान रखती है। यों तो अल्लाह का हर एक पैग़म्बर तौहीद की दावत देने वाला और शिर्क का दुश्मन है और इसलिए तमाम अंबिया ﷺ की तालीमात में ये बातें मुश्तरक क़द्र की हैसियत रखती हैं, बल्कि रूहानी दावत व इर्शाद की बुनियाद सिर्फ़ इन्हीं दो मस्अलों पर क़ायम है मगर यह ख़ुसूसियत हज़रत इब्राहीम ही के हिस्से में आई थी कि इस दुनिया में वह पहली हस्ती हैं, जिन्हें अज़ीमत के रास्ते में सख़्त से सख़्त आज़माइशों और कड़ी से कड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा और वे इन मुसीबतों के मुक़ाबले में कामरान व कामयाब साबित हुए।

ग़ौर कीजिए बुढ़ापे और यास (मायूसी) की उम्र में हज़ारों दुआओं और लाखों आरज़ूओं के बाद एक बच्चा पैदा हुआ और अभी बच्चा दूध ही पी रहा है कि अल्लाह का हुक्म आता है—

'इसको और इसकी मां को अपने घर से जुदा करो और एक लक़ व दक़ बयाबान और बिन खेती की ज़मीन में 'जहां न पानी है, न सब्ज़ा' इन दोनों को छोड़ आओ।'

फिर क्या हुआ? क्या इब्राहीम ने एक लम्हा भी ताम्मुल किया? और इर्शाद की तामील में किसी क़िस्म का कोई उज़्र सामने आया? नहीं, हरगिज़ नहीं, बल्कि बे-चून व चूरा उन दोनों को मक्का की सरज़मीन पर छोड़ आए और इसके बाद जब वह बड़ा होता है और मां-बाप की आंखों का नूर और दिल का सुरूर बनता है, तो अब इब्राहीम को अल्लाह का हुक्म मिलता है कि उसको हमारे नाम पर कुरबान करो और अपनी फ़िदाकारी और इताअत शआरी का सबूत दो। इस नाज़ुक वक़्त में एक फ़रमांबरदार से फ़रमांबरदार हस्ती के ईमान व यक़ीन की कश्ती किस तरह भंवर में आ जाती है, इसका अन्दाज़ा ख़ुद करो और फिर इब्राहीम की ओर देखो कि न अल्लाह की वह्य की जो 'ख़्वाब और सपने की शक्ल में' दिखाई गई थी, उन्होंने कोई तावील की, न इसके लिए हीला-बहाना सोचा और उसको टालने के लिए कोई फ़िक्र व तरद्दुद किया, सुबह उठे और अपने बेटे को लिया और इर्शादे इलाही की तामील में वह कुछ किया जो उनके इंसानी हाथ कर सकते थे और इस तरह

अक़्ल को हैरान कर देने वाली अपनी वफ़ाकेशी का सबूत दिया।

और तीसरी बड़ी आज़माइश का वह वक़्त था कि जब बाप, क़ौम और वक़्त के बादशाह, सबने मुत्तफ़िक़ होकर यह फ़ैसला कर लिया कि इब्राहीम या अपने हक़ के पैग़ाम से बाज़ आ जाए, वरना तो उसको धधकती आग में डालकर ख़ाकस्तर कर दिया जाए, तब ज़ालिमों का यह फ़ैसला और इत्तिहाद क्या इब्राहीम के क़दम डगमगा सका? नहीं! बल्कि वह एक अ़ज़्म का पहाड़ बनकर उसी तरह अपनी जगह खड़ा रहा और हक़ का पैग़ाम और अल्लाह की रुश्द व हिदायत को उसी अ़ज़्म व सबात के साथ सुनाता रहा, जिस तरह शुरू से करता रहा, फिर दुश्मनों ने जो कुछ कहा था, आख़िर कर दिखाया और उसको धधकती आग में झोंक दिया, मगर इब्राहीम के सुकून व इत्मीनान में ज़रा भी कोई फ़र्क़ न आया, अलबत्ता दुश्मनों की दुश्मनी और उनके तमाम मक्र व फ़रेब को इब्राहीम के अल्लाह ने बेकार कर दिया और ख़ाक में मिला दिया और आग के शोले उसके लिए 'बरदंव-व सलामा' (ठंडक और सलामती) बन गए। इस तरह इब्राहीम अपने सबसे ताक़तवर निगहबान के साए में सआदत व हिदायत के फ़ैज़ान से ख़ुदा के बन्दों को बराबर मुनव्वर व रोशन करता रहा और हक़ की इशाअ़त और अल्लाह की दावत तेज़ तर हो गई।

इन तमाम सख़्त इम्तिहानों और आज़माइशों और फिर उनमें सबात क़दमी और इस्तिक़ामत के अलावा इब्राहीम की दूसरी इम्तियाज़ी ख़ुसूसियत यह थी कि उन्होंने शिर्क और तौहीद की मुतज़ाद ज़िंदगी के लिए एक ऐसा इम्तियाज़ क़ायम कर दिया जो उन्हीं जैसे जलीलुलक़द्र पैग़म्बर के शायाने शान था यानी उन्होंने अस्नाम-परस्ती (बुतपरस्ती) और कवाकिब-परस्ती (तारा परस्ती) की तर्दीद व तज़्लील और उनकी ख़राबियों का इज़्हार करते हुए तश्रीह फ़रमाई—

तर्जुमा—*'बिला शुबहा मैंने अपना रुख़ उसी ज़ात की तरफ़ झुका दिया है जो आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है, ख़ालिस होकर और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं।'* (अल-अनआम 6 : 79)

इब्राहीम ﷺ के इस इर्शाद का मतलब यह है कि अल्लाह के तसव्वुर की दो राहें हैं—एक सही और दूसरी ग़लत। ग़लत राह यह है कि यह अ़क़ीदा

क़ायम कर लिया जाए कि अल्लाह को राज़ी करने, उसको ख़ुश रखने और उसकी इबादत व परस्तिश के लिए ज़रूरी है कि बुतों और सितारों की पूजा की जाए, क्योंकि जब ये रूहें हमसे ख़ुश हो जाएंगी, तो अल्लाह को हमसे राज़ी कर देंगी। इस अक़ीदे का नाम 'शिर्क और साबईयत' है, क्योंकि इस अक़ीदे के मुताबिक़ माबूद और पूजा करने की वे तमाम इम्तियाज़ी बातें जो सिर्फ़ 'ज़ाते वाहिद' के लिए मख़्सूस रहनी चाहिए थी, दूसरों के लिए भी मुश्तरक हो जाती हैं और यही शिर्क की हक़ीक़त है।

इसके मुक़ाबले में सही राह यह है कि इस इल्म व यक़ीन को अक़ीदा बनाया जाए कि अल्लाह तआला की रज़ामंदी और ख़ुशनूदी का तरीक़ा इसके अलावा दूसरा नहीं कि ख़ुद उसी की परस्तिश की जाए, उसी को हाजतरवा और मुश्किल कुशा समझा जाए, नफ़ा व नुक़्सान, सेहत व मरज़, ग़रीबी व ख़ुशहाली, रोज़ी का देना-लेना और मौत और ज़िंदगी, ग़रज़ तमाम मामलों में उसी को और सिर्फ़ उसी को मालिक व मुख़्तारे मुतलक़ मान लिया जाए और उसकी रज़ा व अदमे रज़ा की मारफ़त के लिए उसके भेजे हुए सच्चे पैग़म्बरों और रसूलों की ही हिदायत व रुश्द पर अमल किया जाए, गोया दूसरे लफ़्ज़ों में यों कह दिया जाए कि अल्लाह को राज़ी रखने और उससे कुर्बत हासिल करने के लिए देवी-देवताओं को ज़रिया बनाने की ज़रूरत नहीं, बल्कि सिर्फ़ उस ज़ाते वाहिद की उबूदियत व बन्दगी और ज़िंदगी का सरमाया बनाया जाए, इसी अक़ीदे का नाम 'इस्लाम' और 'हनीफ़' है।

इसलिए यह पहला दिन था कि हज़रत इब्राहीम ﷺ ने पहली राह को 'शिर्क और साबइयत' और दूसरी राह को 'इस्लाम व हनीफ़' का नाम देकर दोनों राहों के दर्मियान मुस्तक़िल इम्तियाज़ क़ायम कर दिया और यह इम्तियाज़ ऐसा मक़्बूल हुआ कि आने वाली तमाम पैग़म्बराना तालीम व दावत की बुनियाद व असास इसी नाम से याद की गई, यहां तक कि ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के आख़िरी पैग़ाम का नाम भी 'मिल्लते हनीफ़' और उसके पैरू का नाम 'मुस्लिम' क़रार पाया।

तर्जुमा– *'और पैरवी करो मिल्लते इब्राहीम की जो हनीफ़ था।'*

(अन-निसा 125)

तर्जुमा– *'उस इब्राहीम ने तुम्हारा नाम पहले ही से मुसलमान रखा और उस क़ुरआन में भी (यही नाम पसन्द रहा)।* (अल-हज्ज 22/78)

यही वजह है कि सूरः 'इब्राहीम' की यह ख़ुसूसियत है कि उसमें नबियों के आने और उनके हालात और ख़ास-ख़ास बातें और नतीजों को मजमूई तौर पर पेश किया गया है और बताया गया है कि पैग़म्बरों की रुश्द व हिदायत की दावत के मानने वालों और न मानने वालों के दर्मियान क्या फ़र्क़ है? और यह कि ख़ैर व शर, इताअत व बग़ावत और तस्लीम व इंकार में क्या ग़ैर-अल्लाह की ख़ुश्नूदी को भी कोई मक़ाम हासिल है या सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा का न होना ही असल ईमान है?

पस इन मज्मूई इब्राहीमी ख़ुसूसियतों के पेशे नज़र बेशक यह कहना सही है कि नबियों और रसूलों की मुक़द्दस ज़िंदगी में इब्राहीम का मक़ाम 'नबियों और रसूलों के मुजद्दिद' का मक़ाम है।

इन वाक़ियात से मुताल्लिक़ कुछ नसीहतें

1. जब इंसान किसी अक़ीदे को इल्म व यक़ीन की रोशनी में क़ायम कर लेता है और वह उसके दिल में बैठ जाता है, उसकी रूह में पैवस्ता हो जाता है और उसके सीने में पत्थर की लकीर बन जाता है, तो उसका फ़िक्र व ख़्याल, उसका सोच-विचार और उसका इस्तिग़राक़ (लग जाना) इस बारे में इस दर्जा ज़बरदस्त और साबित व रासिख़ हो जाता है कि कायनात का कोई हादसा और दुनिया की कोई सख़्त-से-सख़्त मुसीबत भी उसको अपनी-अपनी जगह से नहीं हटा सकती। वह उसके लिए आग में बेख़तर कूद पड़ता, समुद्र में बे-झिझक छलांग मार देता और सूली के तख़्ते पर बे-ख़ौफ़ जान दे देता है। हज़रत इब्राहीम ﷺ के अज़्म व सबात की मिसाल उसके लिए रोशन और ज़िंदा मिसाल है।

2. हक़ की हिमायत के लिए ऐसी दलीलें और सबूत पेश करने चाहिएं, जो दुश्मन और बातिल परस्त के क़ल्ब की तह में उतर जाएं और वह ज़ुबान से चाहे इक़रारे हक़ न करे, लेकिन उसका ज़मीर और उसका क़ल्ब हक़ के

इक़रार पर मजबूर हो जाए, बल्कि कभी-कभी ज़ुबान बेअख़्तियार हक़ के एलान से बाज़ न रह सके। क़ुरआन की आयत *'वजादिल हुम बिल्लती हि-य अहसनु'* इसी हक़ीक़त का एलान करती है।

3. पैग़म्बरों और रसूलों की राह यही है। वे लड़ाई-झगड़े की मंतक़ियाना राहों पर नहीं चलते, उनकी दलीलों की बुनियाद महसूसात व मुशाहदात पर होती है, या सादा विज्दानियात या अक़लियात पर, हज़रत इब्राहीम ﷺ का अस्नाम-परस्ती व कवाकिब परस्ती के बारे में जमहूर से मुनाज़रा और नमरूद का मुनाज़रा इसकी वाज़ेह मिसाल है।

4. किसी सही बात को साबित करने के लिए दलील में मुख़ालफ़त के बातिल अक़ीदे को फ़र्ज़ी तौर पर तस्लीम कर लेना झूठ या उस बातिल अक़ीदे का इक़रार नहीं है, बल्कि उसको 'झगड़े को ख़त्म करने के लिए 'बातिल को मान लेना' या 'मआरीज़' कहा जाता है और इस्तदलाल का यह तरीक़ा मुख़ालिफ़ को अपनी ग़लती के एतराफ़ पर मजबूर कर देता है।

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने जम्हूर के साथ मुनाज़रे में दलील का यही पहलू अख़्तियार किया था, जिसने सनमपरस्तों को मजबूर कर दिया कि वे इक़रार कर लें कि बेशक बुत किसी हाल में भी न सुनते हैं और न जवाब दे सकते हैं।

5. अगर एक मुसलमान के मां-बाप मुश्रिक हों और किसी तरह शिर्क से बाज़ न आते हों तो उनकी मुश्रिकाना ज़िंदगी से बेज़ार और अलग रहते हुए भी उनके साथ दुन्यवी मामले और आख़िरत की नसीहतों में इज़्ज़त व हुर्मत का मामला करना चाहिए और सख़्ती और दुरुश्ती को काम में न लाना चाहिए। हज़रत इब्राहीम ﷺ का तर्ज़े अमल आज़र के साथ और नबी ﷺ का तर्ज़े अमल अबू तालिब के साथ इस मस्अले के लिए क़तई और यक़ीनी गवाही है।

6. अगर मोमिन का दिल सही अक़ीदों पर इत्मीनाने क़ल्ब और ज़ुबान व क़ल्ब की मुताबक़त के साथ ईमान रखता है, मगर ऐनी और हक़ीक़ी मुशाहदा व महसूस के लिए या उसको हक़्क़ुल यक़ीन के दर्जे तक हासिल

करने के लिए किसी ईमानी या एतक़ादी मस्अले में भी सवाल व जुस्तजू की राह अख़्तियार करता और तमानियते क़ल्ब का तालिब होता है, तो यह जुस्तजू रैब व कुफ़्र नहीं है, बल्कि ऐन ईमान है। हज़रत इब्राहीम ﷺ के जवाब *'व ला किल्लि यत-मइन-न क़ल्बी'* से इसी हक़ीक़त का इंकिशाफ़ होता है।

7. दस्तरख़्वान की वुसअत अगर रिया व नुमूद से पाक हो और फ़ितरी तक़ाज़े के पेशेनज़र मेहमान-नवाज़ी में वुस्अते क़ल्ब और बड़ी हौसलगी पाई जाती हो तो अख़्लाक़े करीमाना में बहुत फ़ज़ीलत शुमार होती है और 'सख़ा-ए-नफ़्स' और 'करम' के नाम से मौसूम है।

कुछ किताबों में हज़रत इब्राहीम ﷺ की मेहमान-नवाज़ी के सिलसिले में एक अजीब वाक़िया नक़ल किया जाता है। कहते हैं कि एक बार दस्तूर के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम ﷺ किसी मेहमान के इन्तिज़ार में जंगल में खड़े थे, क्योंकि बग़ैर मेहमान के उनका न दस्तरख़्वान बिछता था, न वह खाना खाते थे। सामने से एक बहुत बूढ़ा आदमी नज़र पड़ा, जिसकी कमर भी झुक गई थी और वह लकड़ी के सहारे मुश्किल से चल रहा था, इब्राहीम आगे बढ़े और मसर्रत के साथ उसको सहारा देते हुए घर लाए, दस्तरख़्वान बिछा और खाना चुना गया। जब सब फ़ारिग़ हो गए, तो हज़रत इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया, उस पाक ज़ात का शुक्र अदा करो, जिसने हम सबको ये नेमतें अता फ़रमाईं। बूढ़े ने ग़ुस्से में कहा, मैं नहीं जानता कि तेरा एक ख़ुदा कौन है, मैं तो अपने माबूद (बुत) का शुक्र अदा करता हूं जो मेरे घर में रखा है।

यह जवाब हज़रत इब्राहीम ﷺ को बहुत शाक़ गुज़रा और उसको फ़ौरन घर से रुख़्सत कर दिया, लेकिन कुछ देर न हुई थी कि इब्राहीम के दिल में अपने इस अंदाज़ से तक्लीफ़ हुई। उन्होंने सोचा कि जिस एक अल्लाह का शुक्र मैं उससे अदा कराना चाहता था, उसकी शान तो यह है कि उस बूढ़े की इस लम्बी उम्र में वह बराबर अपनी नेमतों से उसको नवाज़ता रहा और उसकी बुतपरस्ती, कुफ़्र और शिर्क से नाराज़ होकर एक वक़्त भी उस पर रिज़्क़ का दरवाज़ा बन्द न किया, फिर तुझको क्या हक़ था कि अगर उसने तेरी बात

न मानी और हक़ के कलिमे को क़ुबूल न किया, तो ख़फ़ा होकर उसको से निकाल दिया।

यह वाक़िया अपनी तारीख़ी हैसियत में क़ुबूल करने के क़ाबिल हो न हो, लेकिन इस हक़ीक़त का ज़रूर एलान करता है, कि हज़रत इब्राहीम अख़्लाक़े करीमाना की वह बुलन्दी, जो 'हक़ीक़ी मिस्ले आला' तक पहुंची थी एक कहावत थी और सबकी ज़ुबान पर थी बेशक उनका यह फ़िक्र, के पैग़ाम और इस्लाम की दावत के लिए बेहतरीन उस्वा है।

8. अल्लाह जिन हस्तियों को अपना हक़ पहुंचाने के लिए चुन लेता उनके दिल व दिमाग़ को अपने नूर से इस दर्जा रोशन कर देता है कि उ सामने हक़ और सच्चाई के इश्क़ के सिवा दूसरी कोई चीज़ बाक़ी ही न रहती और इसलिए उनमें शुरू ही से यह इस्तेदाद दी हुई होती है कि वे बच ही से अपने साथियों में मुम्ताज़ और नुमायां नज़र आने लगते हैं और हक़ रास्ते में आज़माइश और इम्तिहान को ख़ुशी से सहते और सब्र व रिज़ा बेहतरीन नमूना पेश करते रहते हैं। हज़रत इस्माईल ﷺ का वाक़िया इस गवाही के लिए इंसाफ़ का गवाह और हज़ारों सबक़ और बड़प्पन की व बनता है।

9. हज़रत लूत ﷺ अगरचे हज़रत इब्राहीम ﷺ के भतीजे और उन पैरू थे, मगर नबी भी बनाए जा चुके थे और अल्लाह के एलची बना लि गए थे, इसलिए सदूम और आमूरा में हर क़िस्म की मुसीबतों और वतन दूर दुश्मनों के घेरे रहने की तक्लीफ़ों के बावजूद उन्होंने सब्र व इस्तिक़ाम (जमाव) से काम लिया और अपने बुज़ुर्ग चाचा और ख़ानदान की मदद ले के बजाए सिर्फ़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ही पर भरोसा रखते हुए उसके हुक्म के सामने रज़ा व तस्लीम का सबूत दिया। यह मक़ाम 'अल्लाह से क़ुर्ब रख वालों और नबियों का मक़ाम' है।

हज़रत याक़ूब عليه السلام

नाम और ख़ानदान

हज़रत याक़ूब عليه السلام हज़रत इसहाक़ के दूसरे बेटे और हज़रत इब्राहीम عليه السلام के पोते हैं। इबरानी भाषा में हज़रत याक़ूब का नाम इसराईल है। यह 'इसरा' (अब्द, ग़ुलाम) और ईल (अल्लाह) दो शब्दों में बना है और अरबी में इसका तर्जुमा अ़ब्दुल्लाह किया जाता है। इसी वजह से हज़रत इब्राहीम के बेटे हज़रत इस्हाक़ से जुड़ा ख़ानदान जो हज़रत याक़ूब यानी इसराईल की नस्ल से है, बनी इसराईल कहलाता है।

हज़रत याक़ूब का ज़िक्र क़ुरआन में

क़ुरआन में हज़रत याक़ूब عليه السلام का नाम दस जगह आया है। सूरः यूसुफ़ में जगह-जगह ज़मीरों और औसाफ़ के लिहाज़ से, कुछ दूसरी सूरतों में औसाफ़ के एतबार से उनका तज़्किरा मौजूद है, असल में क़ुरआन पाक हज़रत याक़ूब عليه السلام के जलीलुल-क़द्र नबी, साहिबे सब्र व अ़ज़ीमत और हज़रत यूसुफ़ عليه السلام के बुज़ुर्ग बाप होने की तरफ़ तवज्जोह दिलाता है। हज़रत याक़ूब अल्लाह के बरगज़ीदा पैग़म्बर थे और कन्आ़नियों के लिए भेजे गए थे। उन्होंने वर्षों इस ख़िदमत को अंजाम दिया। उनके बारह लड़के थे। ख़ुद उनका और उनकी औलाद का ज़िक्र, हज़रत यूसुफ़ عليه السلام से जुड़ा हुआ है, इसलिए तफ़्सीलात हज़रत यूसुफ़ عليه السلام के ज़िक्र में मौजूद हैं, जो आगे आता है।

हज़रत यूसुफ़ عليه السلام

ख़ानदान

हज़रत यूसुफ़ عليه السلام हज़रत याक़ूब عليه السلام के बेटे और हज़रत इब्राहीम के पड़पोते हैं। उनको यह शरफ़ हासिल है कि वह ख़ुद नबी, उनके वालिद नबी, उनके दादा नबी और परदादा हज़रत इब्राहीम عليه السلام अबुल अंबिया (नबियों के बाप) हैं। क़ुरआन में इनका ज़िक्र छब्बीस बार आया है और इनको यह भी फ़ख़ हासिल है कि इनके नाम पर एक सूरः (सूरः यूसुफ़) क़ुरआन में मौजूद है जो सबक़ और नसीहत का बेनज़ीर ज़ख़ीरा है, इसीलिए क़ुरआन अज़ीज़ में हज़रत यूसुफ़ عليه السلام के वाक़िए को 'अहसनुल क़सस' कहा गया है।

हज़रत यूसुफ़ عليه السلام का ख़्वाब और यूसुफ़ के भाई

शुरू ज़िंदगी ही से हज़रत यूसुफ़ عليه السلام की दिमाग़ी और फ़ितरी इस्तेदाद दूसरे भाइयों के मुक़ाबले में बिल्कुल जुदा और नुमायां थी। साथ ही हज़रत याक़ूब عليه السلام यूसुफ़ عليه السلام की पेशानी का चमकता हुआ नूरे नुबूवत पहचानते और अल्लाह की वह्य के ज़रिए इसकी इत्तिला पा चुके थे। इन वजहों से वे अपनी तमाम औलाद में हज़रत यूसुफ़ عليه السلام से बेहद मुहब्बत रखते थे और यह मुहब्बत यूसुफ़ عليه السلام के भाइयों से बेहद शाक़ और नाक़ाबिले बरदाश्त थी और वे हर वक़्त इस फ़िक्र में लगे रहते थे कि या तो हज़रत याक़ूब عليه السلام के दिल से इस मुहब्बत को निकाल डालें और या फिर यूसुफ़ عليه السلام ही को अपने रास्ते से हटा दें, ताकि क़िस्सा पाक हो जाए। इन भाइयों के हसद भरे ख़्यालात को ज़बरदस्त ठेस उस वक़्त लगी, जब यूसुफ़ عليه السلام ने एक ख़्वाब देखा कि ग्यारह सितारे और सूरज व चांद उनके सामने सज्दा कर रहे हैं। हज़रत याक़ूब عليه السلام ने यह ख़्वाब सुना तो सख़्ती के साथ उनको मना कर दिया कि अपना यह ख़्वाब किसी के सामने न दोहराना, ऐसा न हो कि उनको सुनकर तेरे भाई बुरी तरह पेश आएं, क्योंकि शैतान इंसान के पीछे लगा है

और तेरा ख़्वाब अपनी ताबीर में बहुत साफ़ और वाज़ेह है, लेकिन हसद की भड़कती हुई आग ने एक दिन यूसुफ़ के भाइयों को उनके ख़िलाफ़ साज़िश करने मजबूर कर ही दिया–

तर्जुमा–*उनमें से एक ने कहा, यूसुफ़ को क़त्ल न करो और उसको गुमनाम कुएं में डाल दो कि उठा ले जाए उसको कोई मुसाफ़िर, अगर तुमको करना ही है।'* (यूसुफ़ 12 : 3)

इस मश्विरे के बाद सब जमा होकर हज़रत याक़ूब की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे–

तर्जुमा–*'(ऐ बाप!) क्या बात है कि तुझको यूसुफ़ के बारे में हम पर एतमाद नहीं है, हालांकि हम उसके ख़ैरख़्वाह हैं।'* (यूसुफ़ 12 : 12)

हज़रत याक़ूब समझ गए कि उनके दिलों में खोट है।

तर्जुमा–*'याक़ूब ने कहा, मुझे इससे रंज और दुख पहुंचता है कि तुम इसको (अपने साथ) ले जाओ और मुझे यह डर है कि उसको भेड़िया खा जाए और तुम ग़ाफ़िल रहो।'* (यूसुफ़ 12 : 13)

यूसुफ़ के भाई ने यह सुनकर एक ज़ुबान होकर कहा–

तर्जुमा–*'अगर खा गया इसको भेड़िया, जबकि हम सब ताक़तवर हैं, तो बेशक इस शक्ल में तो हमने सब कुछ गंवा दिया।'* (यूसुफ़ 12 : 14)

कनआन का कुंवां

ग़रज़ यूसुफ़ अलै॰ के भाई यूसुफ़ को सैर कराने के बहाने ले गए और मश्विरे के मुताबिक़ उसको एक ऐसे कुएं में डाल दिया, जिसमें पानी न था और मुद्दत से सूखा पड़ा था और वापसी में उसकी क़मीज़ को किसी जानवर के ख़ून में तर करके रोते हुए हज़रत याक़ूब के पास आए और कहने लगे, 'ऐ बाप! अगरचे हम अपनी सच्चाई का कितना ही यक़ीन दिलाएं, मगर तुमको हरगिज़ यक़ीन न आएगा कि हम दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने में लगे हुए थे कि अचानक यूसुफ़ को भेड़िया उठाकर ले गया। हज़रत याक़ूब ने यूसुफ़ के लिबास को देखा तो ख़ून से लथपथ था, मगर किसी एक जगह से भी फटा हुआ न था और न चाक दामां था, फ़ौरन हक़ीक़त भांप गए मगर

भड़कने, तान व तश्नीअ़ करने और नफ़रत व हक़ारत का तरीक़ा अपना बजाए पैग़म्बराना इल्म व फ़रासत के साथ यह बता दिया कि हक़ीक़त छि की कोशिश के बावजूद तुम उसे छिपा न सके।

तर्जुमा–*'(हज़रत याक़ूब अलै॰) ने कहा, यह हरगिज़ नहीं, बल्कि बना है तुम्हारे नफ़्सों ने तुम्हारे लिए एक बात, अब सब्र ही बेहतर है और जो तुम ज़ाहिर करते हो, उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूं।'*

(यूसुफ़ 12 :

यूसुफ़ और ग़ुलामी

इधर ये बातें हो रही थीं, उधर हिजाज़ी इस्माईलियों का एक क़ाफ़ि शाम से मिस्र को जा रहा था। कुंवां देखकर उन्होंने पानी के लिए डोल डाल यूसुफ़ को देखकर जोश से शोर मचाया–

तर्जुमा–*'बशारत हो एक ग़ुलाम हाथ आया।'* (यूसुफ़ 12-1

ग़रज़ इस तरह हज़रत यूसुफ़ अलै॰ को इस्माईली ताजिरों के क़ाफ़िले अपना ग़ुलाम बना लिया और तिजारत के माल के साथ उनको भी मिस्र गए और बाज़ार में रिवाज के मुताबिक़ बेचने के लिए पेश कर दिया। उ वक़्त शाही ख़ानदान का एक रईस और मिस्री फ़ौजों का अफ़सर फ़ोतीफ़ा बाज़ार से गुज़र रहा था। उसने उनको ख़रीद लिया और अपने घर लाकर बीवि से कहा–

तर्जुमा–*'(देखो) इसको इज़्ज़त से रखो, कुछ अजब नहीं कि यह हमको फ़ायदा बख़्शे या हम इसको अपना बेटा बना लें।* (यूसुफ़ 12-21)

फ़ोतीफ़ार ने हज़रत यूसुफ़ को औलाद की तरह इज़्ज़त व एहतराम से रखा और अपने तमाम मामले और दूसरी ज़िम्मेदारियां उनके सुपुर्द कर दीं। यह सब कुछ अल्लाह की मंशा के मुताबिक़ हो रहा था।

तर्जुमा–*'और इसी तरह जगह दी हमने यूसुफ़ को उस मुल्क में और इस वास्ते कि उसको सिखाएं बातों का नतीजा और मतलब निकालना और अल्लाह ताक़तवर रहता है अपने काम में, लेकिन अक्सर आदमी ऐसे हैं जो नहीं जानते।'*

(यूसुफ़ 12-21)

अज़ीज़े मिस्र की बीवी और यूसुफ़

कुएं में डाले जाने और गुलामी के बाद अब हज़रत यूसुफ़ की एक और आज़माइश शुरू हुई, वह यह कि हज़रत यूसुफ़ ﷺ की जवानी का आलम था। हुस्न और ख़ूबसूरती का कोई ऐसा पहलू न था जो उनके अन्दर मौजूद न हो। अज़ीज़े मिस्र की बीवी दिल पर क़ाबू न रख सकी और यूसुफ़ पर परवानावार निसार होने लगी, मगर नुबूवत के लिए मुंतख़ब आदमी से भला यह कैसे मुम्किन था कि अज़ीज़ की बीवी के नापाक इरादों को पूरा करे। क़ुरआन में पेश आने वाले वाक़िए का ज़िक्र इस तरह से है—

तर्जुमा—*'और फुसलाया यूसुफ़ को उस औरत ने, जिसके घर में वह रहते थे, उसके नफ़्स के मामले में और दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी, आ मेरे पास आ।' यूसुफ़ ने कहा, 'ख़ुदा की पनाह'।* (यूसुफ़ 12 : 23)

बहरहाल हज़रत यूसुफ़ दरवाज़े की तरफ़ भागे तो अज़ीज़ की बीवी ने पीछा किया और दरवाज़ा किसी तरह खुल गया। सामने अज़ीज़े मिस्र और औरत का चचेरा भाई खड़े थे। अज़ीज़े मिस्र की बीवी बोली—

तर्जुमा—'कहने लगी उस शख़्स की सज़ा क्या है जो तेरे अह्ल के साथ बुराई का इरादा रखता हो, मगर यह कि क़ैद कर दिया जाए या दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला किया जाए। यूसुफ़ ने कहा, इसी ने मुझको मेरे नफ़्स के बारे में फुसलाया था और फ़ैसला किया औरत के ही घराने के एक आदमी ने कि अगर यूसुफ़ का पैरहन सामने से चाक है तो औरत सच्ची है और यूसुफ़ झूठा है और अगर पीछे से चाक है तो औरत झूठी है और यूसुफ़ सच्चा है। पस जब उसकी क़मीज़ को देखा गया तो पीछे से चाक था, कहा, बेशक ऐ औरत! यह तेरे मक्र व फ़रेब से है। बेशक तुम्हारा मक्र बहुत बड़ा है। यूसुफ़! तू इस मामले से दरगुज़र कर और ऐ औरत! तू अपने गुनाह की माफ़ी मांग, तू बेशक ख़ताकार है। (यूसूफ़ 12 : 25-29)

अज़ीज़े मिस्र ने अगरचे फ़ज़ीहत और रुस्वाई से बचने के लिए इस मामले को यहीं पर ख़त्म कर दिया, मगर बात छिपी न रह सकी। क़ुरआन मजीद में आता है—

तर्जुमा—'और (जब इस मामले का चर्चा फैला) तो शहर की कुछ औरतें

कहने लगीं, देखो अज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम पर डोरे डालने लगी कि उ
रिझा ले, वह उसकी चाहत में दिल हार गई हमारे ख़्याल में तो वह खुल
बदचलनी में पड़ गई। पस जब अज़ीज़ की बीवी ने इन औरतों के मक्र व
सुना, तो उनको बुला भेजा और उनके लिए मस्नदें तैयार कीं और (दस्तूर
मुताबिक़) हर एक को एक-एक छुरी पेश कर दी, फिर यूसुफ़ से कहा, इ
सबके सामने निकल आओ। जब यूसुफ़ को इन औरतों ने देखा तो उसक
बड़ाई की क़ायल हो गईं, उन्होंने अपने हाथ काट लिए और (बे-अख़्तिया
पुकार उठीं, यह तो इंसान नहीं, ज़रूर एक फ़रिश्ता है, बड़े रुत्बे वा
फ़रिश्ता। (अज़ीज़ की बीवी) बोली : तुमने देखा, यह है वह आदमी जिस
बारे में तुमने मुझे ताने दिए।

(यूसुफ़ 12 : 30 से 33 त

अज़ीज़ की बीवी ने यह भी कहा कि बेशक मैंने उसका दिल अनपे क़ा
में लेना चाहा था, मगर वह बे-क़ाबू न हुआ, मगर मैं कहे देती हूं कि अ
इसने मेरा कहा न माना तो यह होकर रहेगा कि वह क़ैद किया जाए औ
बेइज़्ज़ती में पड़े।

हज़रत यूसुफ़ ने जब यह सुना और फिर अज़ीज़े मिस्र की बीवी
अलावा और सब औरतों के चरित्र अपने बारे में देखे तो अल्लाह के हुज़ूर
हाथ फैलाकर दुआ की और कहने लगे—

तर्जुमा—'यूसुफ़ ने कहा, ऐ मेरे पालनहार! जिस बात की तरफ़ य
मुझको बुलाती है, मुझे उसके मुक़ाबले में क़ैदख़ाने में रहना ज़्यादा पसन्द
और अगर तूने उनके मक्र को मुझसे न हटा दिया और मेरी मदद न की, त
मैं कहीं उनकी ओर झुक न जाऊं और नादानों में से हो जाऊं। पस उसके र
ने उसकी दुआ क़ुबूल की और उससे उनका मक्र हटा दिया। बेशक वह सुन
वाला, जानने वाला है।'

(यूसुफ़ 12 : 33-34

अब अज़ीज़े मिस्र ने यूसुफ़ की तमाम निशानियां देखने और समझने के
बाद अपनी बीवी की फ़ज़ीहत व रुसवाई होती देखकर यह तै कर ही लिय
कि यूसुफ़ को एक मुद्दत के लिए क़ैदख़ाने में बन्द कर दिया जाए, ताकि यह
मामला लोगों के दिलों से निकल जाए, ये चर्चे बन्द हो जाएं, इस तरह हज़रत
यूसुफ़ अलै॰ को जेल जाना पड़ा।

यूसुफ़ ﷺ जेल में

तौरात में है कि यूसुफ़ के इल्मी और अ़मली जौहर क़ैदख़ाने में भी न छिप सके और क़ैदख़ाने का दारोग़ा उनके हलक़ा-ए-इरादत में दाख़िल हो गया और जेल का तमाम इन्तिज़ाम व इन्सिराम उनके सुपुर्द कर दिया और वह क़ैदख़ाने के बिल्कुल मुख़्तार हो गए।

क़ैदख़ाने में दावत व तब्लीग़

एक अच्छा इत्तिफ़ाक़ देखिए कि हज़रत यूसुफ़ ﷺ के साथ दो नवजवान और क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए। उनमें से एक शाही साक़ी था और दूसरा था शाही बावर्चीख़ाने का दारोग़ा। एक दिन दोनों नवजवान हज़रत यूसुफ़ ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनमें से साक़ी ने कहा कि मैंने यह ख़्वाब देखा है कि मैं शराब बनाने के लिए अंगूर निचोड़ रहा हूं और दूसरे ने कहा, मैंने यह देखा है कि मेरे सर पर रोटियों का ख़्वान है और परिंदे उसे खा रहे हैं।

यह सुनकर हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने फ़रमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला ने जो बातें मुझे तालीम फ़रमाई हैं, उनमें से एक इल्म यह भी अ़ता फ़रमाया है। मैं इससे पहले कि तुम्हारा मुक़र्ररा खाना तुम तक पहुंचे, तुम्हारे ख़्वाबों की ताबीर बता दूंगा, मगर तुमसे एक बात कहता हूं, ज़रा इस पर भी ग़ौर करो और समझो-बूझो।

तर्जुमा–'ऐ मज्लिस के साथियो! (तुमने इस पर भी ग़ौर किया कि) जुदा-जुदा माबूदों का होना बेहतर है या एक अल्लाह का जो अकेला और सब पर ग़ालिब है। तुम इसके सिवा जिन हस्तियों की बन्दगी करते हो, उनकी हक़ीक़त इससे ज़्यादा क्या है कि सिर्फ़ कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। हुकूमत तो अल्लाह ही के लिए है। उसका फ़रमान यह है कि सिर्फ़ उसकी बन्दगी करो और किसी की न करो, यही सीधा दीन है, मगर अक्सर आदमी ऐसे हैं जो नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 39-40)

रुश्द व हिदायत के इस पैग़ाम के बाद हज़रत यूसुफ़ उनके ख़्वाबों की

ताबीर की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाने लगे—

'दोस्तो! जिसने देखा है कि वह अंगूर निचोड़ रहा है, वह फिर आज़ाद होकर बादशाह के साथी की ख़िदमत अंजाम देगा और जिसने रोटियों वाला ख़्वाब देखा है, उसको सूली दी जाएगी और परिंदे उसके सर को नोच-नोच कर खाएंगे।'

हज़रत यूसुफ़ जब ख़्वाब की ताबीर से फ़ारिग़ हो गए तो साक़ी से, यह समझकर कि वह नजात पा जाएगा, फ़रमाने लगे, 'अपने बादशाह से मेरा ज़िक्र करना।' साक़ी को जब रिहा किया गया तो उसको अपनी मश्ग़ूलियतों में कुछ भी याद न रहा और कुछ साल तक और यूसुफ़ को जेल में रहना पड़ा।

फ़िरऔन का ख़्वाब

हज़रत यूसुफ़ अभी जेल ही में थे कि वक़्त के फ़िरऔन ने एक ख़्वाब देखा कि सात मोटी गाएं हैं और सात दुबली गाएं, दुबली गाएं मोटी गायों को निगल गईं और सात सरसब्ज़ व शादाब बालियां हैं और सात सूखी बालियों ने हरी बालियों को खा लिया। बाशाह सुबह उठा और फ़ौरन दरबार के मुशीरों से अपना ख़्वाब कहा। दरबारी इस ख़्वाब को सुनकर तरद्दुद में पड़ गए। इस बीच साक़ी को अपना ख़्वाब और हज़रत यूसुफ़ की दी हुई ताबीर का वाक़िया याद आ गया। उसने बादशाह की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि अगर कुछ मोहलत दीजिए तो मैं उसकी ताबीर ला सकता हूं। बादशाह की इजाज़त से वह क़ैदख़ाना पहुंचा और हज़रत यूसुफ़ को बादशाह का ख़्वाब सुनाया और कहा कि आप इसको हल कीजिए। हज़रत यूसुफ़ ने उसी वक़्त ख़्वाब की ताबीर दी और सही तदबीर भी बतला दी जैसा कि क़ुरआन में ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—'कहा, तुम खेती करोगे सात बरस जम कर, सो जो काटो उसको छोड़ दो उसकी बाली में, मगर थोड़ा-सा जो तुम खाओ, फिर आएंगे इसके बाद सात वर्ष सख़्ती के, खा जाएंगे जो रखा तुमने उसके वास्ते मगर थोड़ा तो रोक रखोगे बीज के वास्ते, फिर आएगा, एक वर्ष उसके पीछे उसमें वर्षा होगी लोगों पर और उसमें रस निचोड़ेंगे।'

(यूसुफ़ 12 : 47-49)

साक़ी ने यह सब मामला बादशाह के सामने जा सुनाया। बादशाह ने ख़्वाब की ताबीर का मामला देखकर कहा कि ऐसे आदमी को मेरे पास लाओ। जब बादशाह का दूत हज़रत यूसुफ़ के पास पहुंचा तो हज़रत यूसुफ़ ने क़ैदख़ाने से बाहर आने से इंकार कर दिया और फ़रमाया कि इस तरह तो मैं जाने को तैयार नहीं हूं, तुम अपने आक़ा के पास जाओ और उससे कहो कि वह यह जांच करे कि इन औरतों का मामला क्या था, जिन्होंने हाथ काट लिए थे? पहले यह बात साफ़ हो जाए कि उन्होंने कैसी कुछ मक्कारियां की थीं और मेरा परवरदिगार तो उनकी मक्कारियों को ख़ूब जानता है।

ग़रज़ बादशाह ने जब यह सुना तो उन औरतों को बुलवाया और उनसे कहा कि साफ़-साफ़ और सही-सही बताओ कि इस मामले की सही हक़ीक़त क्या है, जबकि तुमने यूसुफ़ पर डोरे डाले थे, ताकि तुम उसको अपनी तरफ़ मायल कर लो? वह एक ज़ुबान होकर बोलीं—

तर्जुमा—'बोलीं : माशाअल्लाह! हमने इसमें बुराई की कोई बात नहीं पाई? (यूसुफ़ 12-51)

मज्मा में अज़ीज़ की बीवी भी थी और अब वह इश्क़ व मुहब्बत की भट्टी में ख़ाम न थी, कुन्दन थी और ज़िल्लत व रुस्वाई के डर से आगे निकल चुकी थी। उसने जब यह देखा कि यूसुफ़ की ख़्वाहिश है कि हक़ीक़ते हाल सामने आ जाए तो बे-अख़्तियार बोल उठी—

तर्जुमा—*'जो हक़ीक़त थी, वह अब ज़ाहिर हो गई, हां! वह मैं ही थी, जिसने यूसुफ़ पर डोरे डाले कि अपना दिल हार बैठे। बेशक वह (अपने बयान में) बिल्कुल सच्चा है।'* (यूसुफ़ 12 : 51)

इस तरह अब वह वक़्त आ गया कि तोहमत लगाने वालों की ज़ुबान से ही साफ़ हो जाए, चुनांचे वाज़ेह और ज़ाहिर हो गया यानी शाही दरबार में मुजिरमों ने जुर्म का एतराफ़ करके यह बता दिया कि यूसुफ़ का दामन हर क़िस्म की आलूदगियों से पाक है। फ़िरऔन पर जब हक़ीक़त वाज़ेह हो गई तो उसके दिल में हज़रत यूसुफ़ की अज़्मत व जलालत का सिक्का बैठ गया, वह कहने लगा—

तर्जुमा—'उसको (जल्द) मेरे पास लाओ कि मैं उसको ख़ास अपने कामों

के लिए मुक़र्रर करूं।'

(यूसुफ़ 12 - 53)

फ़िरऔन के इस हुक्म की तामील में हज़रत यूसुफ़ ﷺ बादशाह के दरबार में तशरीफ़ लाए, तो फ़िरऔन ने कहा—

तर्जुमा—'बेशक आज के दिन तू हमारी निगाहों में बड़े इक्तिदार वाला और अमानतदार है।'

(यूसुफ़ 12 : 54)

और उनसे मालूम किया कि मेरे ख़्वाब में अकाल का ज़िक्र है, उसके बारे में मुझको क्या-क्या उपाय करने चाहिए। हज़रत यूसुफ़ ने जवाब दिया—

तर्जुमा—'अपने राज्य के ख़ज़ानों पर आप मुझे मुख़्तार (अख़्तियार वाला) कर दीजिए, मैं हिफ़ाज़त कर सकता हूं और मैं इस काम का जानने वाला हूं।'

(यूसुफ़ 12 : 55)

चुनांचे बादशाह ने ऐसा ही किया और हज़रत यूसुफ़ को अपने पूरे राज्य का मुकम्मल ज़िम्मेदार बना दिया और शाही ख़ज़ाने की कुंजियां उनके हवाले करके मुख़्तारे आम कर दिया। इसीलिए अल्लाह तआला ने अज़ीज़ के कारोबार का मुख़्तार बनाकर यूसुफ़ के लिए यह फ़रमाया था कि हमने उसको *'तम्कीन फ़िल अर्ज़ि'* (ज़मीन का पूरा मालिक व मुख़्तार) अता कर दी। सूरः यूसुफ़ में 'तम्कीन फ़िल अर्ज़ि' की ख़ुशख़बरी दो बार सुनाई गई है। ग़रज़ हज़रत यूसुफ़ ने मिस्र राज्य के मुख़्तारे कुल होने के बाद ख़्वाब से मुताल्लिक़ वे तमाम तदबीरें शुरू कर दीं जो चौदह साल के अन्दर फ़ायदेमंद हो सकें और पब्लिक अकाल के दिनों में भी भूख और परेशानहाली से बची रह सके।

अकाल और याक़ूब ﷺ का ख़ानदान

ग़रज़ जब अकाल का ज़माना शुरू हुआ तो मिस्र और उसके आस-पास के इलाक़े में सख़्त अकाल पड़ा और कनआन में हज़रत याक़ूब ने साहबज़ादों से कहा कि मिस्र में अज़ीज़े मिस्र ने एलान किया है कि उसके पास ग़ल्ला हिफ़ाज़त से रखा हुआ है, तुम सब जाओ और ग़ल्ला ख़रीद कर लाओ। चुनांचे बाप के हुक्म के मुताबिक़ यह कनआनी क़ाफ़िला मिस्र के अज़ीज़ से ग़ल्ला लेने के लिए मिस्र रवाना हुआ—

तर्जुमा— *'और यूसुफ़ के भाई (ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र) आए। वे जब यूसुफ़*

के पास पहुंचे तो उसने फ़ौरन उनको पहचान लिया और वे यूसुफ़ को न पहचान सके।' (यूसुफ़ 12 : 58)

तौरात का बयान है कि यूसुफ़ के भाइयों पर जासूसी का इलज़ाम लगाया गया और इस तरह उनको यूसुफ़ के सामने हाज़िर होकर आमने-सामने बात करने का मौक़ा मिला और उन्होंने अपने बाप (हज़रत याक़ूब), सगे भाई (बिनयमीन) और घर के हालात को ख़ूब कुरेद-कुरेद कर पूछा और—

तर्जुमा—*'और जब यूसुफ़ ने उनका सामान मुहैया कर दिया तो कहा, अब आना तो अपने सौतेले भाई बिन यमीन को भी साथ लाना। तुमने अच्छी तरह देख लिया है कि मैं तुम्हें (ग़ल्ला) पूरी तौल देता हूं और बाहर से आने वालों के लिए बेहतर मेहमान नवाज़ हूं, लेकिन अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो फिर याद रखो, न तुम्हारे लिए मेरे पास ख़रीद व फ़रोख़्त होगी, न तुम मेरे पास जगह पाओगे।'* (यूसुफ़ 12 - 59-60)

फिर यूसुफ़ के भाई जब हज़रत यूसुफ़ से रुख़्सत होने आए, तो उन्होंने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि ख़ामोशी के साथ उनके कजावों में उनकी वह पूंजी भी रख दो जो उन्होंने ग़ल्ले की क़ीमत के नाम से दी है, ताकि जब घर जाकर उसको देखें, तो अजब नहीं कि फिर दोबारा आएं।

जब यह क़ाफ़िला कनआन वापस पहुंचा तो उन्होंने अपने तमाम हालात अपने बाप याक़ूब को सुनाए और उनसे कहा कि मिस्र के वाली (ज़िम्मेदार मालिक) ने साफ़-साफ़ हमसे कह दिया है कि उस वक़्त तक यहां न आना और न ग़ल्ले की ख़रीद का ध्यान करना, जब तक कि अपने सौतेले भाई बिन यमीन को साथ न लाओ, इसलिए अब आपको चाहिए कि उनको हमारे साथ कर दें, हम उसके हर तरह के निगहबान और हिफ़ाज़त करने वाले हैं। इस मौक़े पर हज़रत याक़ूब ने कहा—

तर्जुमा—*कहा, क्या मैं तुम पर (बिन यमीन) के बारे में ऐसा ही एतमाद करूं जैसा कि इससे पहले उसके भाई (यूसुफ़) के बारे में कर चुका हूं, सो अल्लाह ही बेहतरीन हिफ़ाज़त करने वाला है और वह ही सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।* (यूसुफ़ 12 : 64)

इस बात-चीत से फ़ारिग़ होने के बाद अब उन्होंने अपना सामान खोलना

शुरू किया, तो देखा, उनकी पूंजी उन्हीं को वापस कर दी गई है। यह देखकर वे कहने लगे, ऐ बाप! इससे ज़्यादा और क्या हमको चाहिए? अब हमें इजाज़त दें कि हम दोबारा उसके पास जाएं और घर वालों के लिए रसद लाएं और बिन यमीन को भी हमारे साथ भेज दे, हम उसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे।

हज़रत याक़ूब ने फ़रमाया कि मैं बिन यमीन को हरगिज़ तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा, जब तक तुम अल्लाह के नाम पर मुझसे अह्द न करो। ग़रज़ अह्द व पैमान के बाद यूसुफ़ के भाइयों का क़ाफ़िला दोबारा मिस्र को रवाना हुआ और इस बार बिनयमीन भी साथ था। हज़रत याक़ूब ने उनको रुख़्सत करते वक़्त नसीहतें फ़रमाईं— .

तर्जुमा—*फिर जब ये मिस्र में उसी तरह दाख़िल हुए जिस तरह उनके बाप ने उनको हुक्म दिया, तो यह (एहतियात) उनको अल्लाह की मशीयत के मुक़ाबले में कुछ काम न आई, मगर यह एक ख़्याल था याक़ूब के जी में जो उसने पूरा कर लिया और बेशक वह इल्म वाला था और हमने ही उसको यह इल्म सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते।'* (यूसुफ़ 12 : 68)

इस बीच यह सूरत पेश आई कि जब यूसुफ़ के भाई कनआन से रवाना हुए, तो रास्ते में बिनयमीन को तंग करना शुरू कर दिया। कभी उसको बाप की मुहब्बत का ताना देते और कभी इस बात पर हसद करते कि अज़ीज़े मिस्र ने ख़ास तौर पर उसको क्यों बुलाया है और जब ये लोग मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचे तो—

तर्जुमा— *'और जब ये सब यूसुफ़ के पास पहुंचे तो उसने अपने भाई (बिन यमीन) को अपने पास बिठा लिया और उससे (धीरे से) कहा, मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूं, पस जो बदसुलूकी ये तेरे साथ करते आए हैं, तू उस पर ग़मगीन न हो।'*

(यूसुफ़ 12 : 69)

कनआनी क़ाफ़िला कुछ दिनों के क़ियाम के बाद जब रुख़्सत होने लगा तो यूसुफ़ ﷺ ने हुक्म दिया कि उनके ऊंटों को इस क़दर लाद दो, जितना ये ले जा सकें। हज़रत यूसुफ़ ﷺ की यह ख़्वाहिश थी कि किसी तरह अपने प्यारे भाई बिनयमीन को अपने पास रोक लें, लेकिन मिस्र की हुकूमत के क़ानून के मुताबिक़ किसी ग़ैर-मिस्री को बग़ैर किसी माक़ूल वजह के रोक लेना

सख़्त मना था और हज़रत यूसुफ़ उस वक़्त हक़ीक़त खोलना नहीं चाहते थे, इसलिए जब क़ाफ़िला रवाना होने लगा तो किसी को इत्तिला किए बग़ैर शाही पैमाने को बिन यमीन की ख़ुरजी में रख दिया, (ताकि भाई के पास एक निशानी रहे।)

तर्जुमा– *'उस (यूसुफ़ ने अपने भाई बिन यमीन) के कजावे में कटोरा रख दिया।'* (यूसुफ़ 12 : 70)

कनआन के इस क़ाफ़िले ने अभी थोड़ा ही फ़ासला तै किया होगा कि यूसुफ़ के कारिंदों ने शाही बरतनों की देख-भाल की, तो उसमें प्याला न मिला, समझे कि शाही महल में कन्आनियों के सिवा दूसरा कोई नहीं आया, इसलिए उन्होंने ही चोरी की है, फ़ौरन दौड़े और चिल्लाए।

तर्जुमा–'फिर पुकारा पुकारने वाले ने, ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम तो अलबत्ता चोर हो। वे कहने लगे उनकी ओर मुंह करके तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई? वे कारिन्दे बोले, हम नहीं पाते बादशाह (यूसुफ़) का पैमाना (कटोरा) और जो कोई उसको लाए उसको मिले एक ऊंट का बोझ (ग़ल्ला) और मैं हूं उसका ज़ामिन। वे बोले, ख़ुदा की क़सम! तुमको मालूम है कि हम शरारत करने को नहीं आए मिस्र के मुल्क में और न हम कभी चोर थे। वे (कारिंदे) बोले, फिर क्या सज़ा है उसकी अगर तुम निकले झूठे। कहने लगे, उसकी सज़ा यह है कि जिनके सामानों में हाथ आए, वही उसके बदले में जाए। हम यही सज़ा देते हैं ज़ालिमों को।' (यूसुफ़ 12 : 71-75)

इस मरहले के बाद यह मामला अज़ीज़े मिस्र के सामने पेश हुआ और उनकी तलाशी ली गई तो बिनयमीन के कजावे में वह प्याला मौजूद था।

तर्जुमा–'फिर यूसुफ़ ने उनकी ख़ुर्जियां देखनी शुरू कीं। आख़िर में वह बरतन निकाला अपने भाई की ख़ुरजी से।' (यूसुफ़ 12 : 76)

इसके बाद अल्लाह तआला फ़रमाता है–

तर्जुमा–'यों ख़ुफ़िया तदबीर कर दी हमने यूसुफ़ के लिए। वह हरगिज़ न ले सकता था अपने भाई यमीन को उस बादशाह (मिस्र) के तरीक़े के मुताबिक़, मगर यह कि अल्लाह तआला ही चाहे। (यूसुफ़ 12 : 76)

इस तरह बिन यमीन को मिस्र में रोक लिया गया और यूसुफ़ के भाइयों

ने जब यह रंग देखा तो बाप का अह्द व पैमान याद आ गया और ख़ुशामद भरे अर्ज़-मारूज़ करके अज़ीज़े मिस्र को बिनयमीन की वापसी की तर्ग़ीब दिलाई। यह तरीक़ा भी कामियाब न हो सका तो आपस में मश्विरे से यह तै पाया कि वालिद बुज़ुर्गवार को सही सूरत बतला दी जाए और कहा कि वे इस वाक़िए की तस्दीक़ दूसरे क़ाफ़िले वालों से भी कर लें। इस मश्विरे के मुताबिक़ यूसुफ़ के भाई कनआन वापस आए और हज़रत याक़ूब से बिना कुछ घटाए-बढ़ाए सारा वाक़िया कह सुनाया। हज़रत याक़ूब यूसुफ़ के मामले में उनकी सदाक़त का तजुर्बा कर चुके थे, इसलिए फ़रमाया : 'तुम्हारे जी ने एक बात बना ली है, वाकिया यों नहीं है—बिन यमीन और चोरी? यह नहीं हो सकता, ख़ैर अब सब्र के सिवा कोई चारा नहीं, ऐसा सब्र कि बेहतर से बेहतर हो। अल्लाह तआला के लिए नामुम्किन तो नहीं कि एक दिन इन गुम लोगों को फिर जमा कर दे और एक साथ इन दोनों को मुझसे मिला दे। बेशक वह दाना है और हिक्मत वाला है और उनकी ओर से रुख़ फेर लिया और फ़रमाने लगे—

'आह! यूसुफ़ की जुदाई का ग़म!'

हज़रत याक़ूब ﷺ की आंखें ग़म की ज़्यादती की वजह से रोते-रोते सफ़ेद पड़ गई थीं और सीना ग़म की जलन से जल रहा था, मगर सब्र के साथ अल्लाह पर तकिया किए बैठे थे।

बेटे यह हाल देखकर कहने लगे—

'ख़ुदा की क़सम! तुम हमेशा इसी तरह यूसुफ़ की याद में घुलते रहोगे या इसी ग़म में जान दे दोगे!'

हज़रत याक़ूब ने यह सुनकर फ़रमाया, 'मैं कुछ तुम्हारा शिकवा तो नहीं करता और न तुमको सताता हूं—

तर्जुमा—'बल्कि मैं तो अपनी हाजत और ग़म अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करता हूं। मैं अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूं, जो तुम नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 86)

बहरहाल हज़रत याक़ूब ने अपने बेटों से फ़रमाया : देखो, एक बार फिर मिस्र जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की

रहमत से नाउम्मीद और मायूस न हो, इसलिए कि अल्लाह की रहमत से ना उम्मीदी काफ़िरों का शेवा है।'

यूसुफ़ के भाइयों ने तीसरी बार फिर मिस्र का इरादा किया और शाही दरबार में पहुंच कर अपनी परेशानी बयान की और ख़ुसूसी लुत्फ़ व करम की दरख़्वास्त भी की। हज़रत यूसुफ़ ने परेशानी का हाल सुना तो दिल भर आया और आपसे ज़ब्त न हो सका कि ख़ुद को छिपाएं और राज़ ज़ाहिर न होने दें। आख़िर फ़रमाने लगे—

तर्जुमा—'क्यों जी, तुम जानते हो कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या मामला किया, जबकि तुम जिहालत में डूबे हुए थे?'

(यूसुफ़ 12 : 89)

भाइयों ने यह उम्मीद के ख़िलाफ़ सुनकर कहा—

तर्जुमा—'क्या तू वाक़ई यूसुफ़ ही है?' (यूसुफ़ 12-87)

हज़रत यूसुफ़ ने जवाब दिया—

तर्जुमा—'हां, मैं यूसुफ़ हूं और यह (बिनयमीन) मेरा मांजाया भाई है। अल्लाह ने हम पर एहसान किया और जो आदमी भी बुराइयों से बचे और (मुसीबतों में) साबित क़दम रहे, तो अल्लाह नेक लोगों का अज्र बर्बाद नहीं करता।'

(यूसुफ़ 12-90)

यूसुफ़ के भाई यह सुनकर कहने लगे—

तर्जुमा—'ख़ुदा की क़सम, इसमें शक नहीं कि अल्लाह तआला ने तुझको हम पर बरतरी व बुलन्दी बख़्शी और बेशक हम पूरी तरह क़ुसूरवार थे।'

(यूसुफ़ 12 : 91)

हज़रत यूसुफ़ ने अपने सौतले भाइयों की ख़स्ताहाली और पशेमानी को देखा तो पैग़म्बराना रहमत और अफ़्व व दरगुज़र के साथ फ़ौरन फ़रमाया—

तर्जुमा—आज के दिन मेरी ओर से तुम पर कोई फटकार नहीं। अल्लाह तुम्हारा क़ुसूर बख़्शे और वह तमाम रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है।

(यूसुफ़ 12-92)

हज़रत यूसुफ़ ने यह भी फ़रमाया—

तर्जुमा—'अब तुम कनआन वापस जाओ और मेरा पैरहन लेते जाओ, यह

वालिद की आंखों पर डाल देना, इन्शाअल्लाह यूसुफ़ की ख़ुश्बू उनकी आं को रोशन कर देगी और तमाम ख़ानदान को मिस्र ले आओ।'

(यूसुफ़ 12-9

इधर यूसुफ़ के भाइयों का क़ाफ़िला कनआन को यूसुफ़ का पैरहन लेक चला, तो उधर हज़रत याक़ूब को वह्य इलाही ने यूसुफ़ की ख़ुश्बू से मह दिया। फ़रमाने लगे, ऐ याक़ूब के ख़ानदान! अगर तुम यह न समझो कि बुढ़ा में उसकी अक़्ल मारी गई है, तो मैं यक़ीन के साथ कहता हूं कि मुझको यूसु की महक आ रही है। वे सब कहने लगे, 'ख़ुदा की क़सम! तुम तो अपने उ पुराने ख़ब्त में पड़े हो, यानी इस क़दर मुद्दत गुज़र जाने के बाद भी, जबकि यूसु का नाम व निशान भी बाक़ी नहीं रहा, तुम्हें यूसुफ़ ही की रट लगी हुई है

कनआन का क़ाफ़िला वापस पहुंचा, तो वही हुआ जिसकी ओर हज़ यूसुफ़ ने इशारा किया था—

तर्जुमा—'फिर जब बशारत देने वाला आ पहुंचा, तो उसने यूसुफ़ के पैरहन को याक़ूब के चेहरे पर डाल दिया, पस उसकी आंखें रोशन हो ग याक़ूब ने कहा, क्या मैं तुमसे न कहता था कि मैं अल्लाह की ओर से बात जानता हूं, जो तुम नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 9

यूसुफ़ के भाइयों के लिए यह वक़्त बहुत कठिन था, शर्म व नदामत डूबे हुए, सर झुकाये हुए बोले, ऐ बाप! आप अल्लाह की जनाब में हम गुनाहों की मग़्फ़िरत के लिए दुआ फ़रमाइए, बेशक हम ख़ताकार अ क़ुसूरवार हैं।

हज़रत याक़ूब ने फ़रमाया—

तर्जुमा—'बहुत जल्द मैं अपने रब से तुम्हारी मग़्फ़िरत की दुआ करूं बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।' (यूसुफ़ 12 : 9

याक़ूब का ख़ानदान मिस्र में

ग़रज़ हज़रत याक़ूब अपने सब ख़ानदान को लेकर मिस्र रवाना गए। तौरात के मुताबिक़ मिस्र आने वाले सत्तर लोग थे। जब हज़रत यूसु को इत्तिला हुई कि उनके वालिद ख़ानदान समेत शहर के क़रीब प

गए तो वह फ़ौरन इस्तिक़बाल के लिए बाहर निकले। हज़रत याक़ूब ने एक लम्बी मुद्दत के बाद बेटे को देखा तो सीने से चिमटा लिया। हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने वालिद से अर्ज़ किया कि अब आप इज़्ज़त व एहतराम और अम्न व हिफ़ाज़त के साथ शहर में तशरीफ़ ले चलें। हज़रत यूसुफ़ ने वालिद माजिद और तमाम ख़ानदान को शाही सवारियों में बिठा कर शहर और शाही महल में उतारा। इसके बाद एक दरबार सजाया गया। हज़रत यूसुफ़ ﷺ के वालिद को शाही तख़्त पर जगह दी गई। इसके बाद ख़ुद हज़रत यूसुफ़ शाही तख़्त पर बैठे। उस वक़्त दरबारी 'हुकूमत के दस्तूर के मुताबिक़' तख़्त के सामने ताज़ीम के लिए सज्दे में गिर पड़े। (ताज़ीम का यह तरीक़ा शायद पिछले नबियों में जायज़ रहा हो। नबी अकरम ﷺ ने इस क़िस्म की ताज़ीम को अपनी उम्मत के लिए हराम क़रार दिया है और उसको ज़ाते इलाही ही के लिए मख़्सूस बनाया है) यूसुफ़ ﷺ के तमाम ख़ानदान वालों ने भी यही अमल किया। यह देखकर हज़रत यूसुफ़ ﷺ को अपने बचपन का ज़माना याद आ गया और अपने वालिद से कहने लगे—

तर्जुमा—'और यूसुफ़ (ﷺ) ने कहा, ऐ बाप! यह है ताबीर उस ख़्वाब की जो मुद्दत हुई, मैंने देखा था, मेरे परवरदिगार ने उसे सच्चा साबित कर दिया।' (यूसुफ़ 12 : 100)

ऊपर के वाक़ियात के अच्छे ख़ात्मे से मुतास्सिर होकर यूसुफ़ बे-अख़्तियार हो गए और अल्लाह की जनाब में इस तरह दुआ की—

तर्जुमा—ऐ परवदिगार! तूने मुझे हुकूमत अता फ़रमाई और बातों का मतलब और नतीजा निकालना तालीम फ़रमाया। ऐ आसमान व ज़मीन के बनाने वाले! तू ही मेरा कारसाज़ है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। तो यह भी कीजियो कि दुनिया से जाऊं तो तेरी फ़रमांबरदारी की हालत में जाऊं और उन लोगों में दाख़िल हो जाऊं जो तेरे नेक बन्दे हैं। (यूसुफ़ 12 : 101)

तौरात के मुताबिक़ इस वाक़िए के बाद हज़रत यूसुफ़ का तमाम ख़ानदान मिस्र ही में आबाद हो गया।

वफ़ात

हज़रत यूसुफ़ ने अपनी ज़िंदगी के लम्बे अर्से को मिस्र ही में गुज़ारा और जब उनकी उम्र 110 साल की हुई तो उनकी वफ़ात हो गई तो उनको हुनूत (मम्मी) करके ताबूत में महफ़ूज़ रख दिया और उनकी वसीयत के मुताबिक़ जब मूसा के ज़माने में बनी-इसराईल मिस्र से निकले तो उस ताबूत को भी साथ लेते गए और अपने बाप-दादा की सरज़मीन ही में ले जाकर सुपुर्दे ख़ाक कर दिया। बताया गया है कि इनकी क़ब्र नाबलस के आस-पास है, यह कनआ़न का इलाक़ा है जिस पर अब इसराईल का क़ब्ज़ा है।

अहम अख़्लाक़ी बातें

1. अगर किसी आदमी का निजी मिज़ाज उम्दा हो और उसका माहौल भी पाक, मुक़द्दस, और लतीफ़ हो, तो उस आदमी की ज़िंदगी अख़्लाक़े करीमाना में नुमायां और अच्छी सिफ़तों में मुम्ताज़ होगी और वह हर क़िस्म के शरफ़ व मज्द का हामिल होगा।

2. अगर किसी आदमी में अल्लाह पर ईमान मज़बूत और साफ़-सुथरा हो और उस पर यक़ीन पक्का और मज़बूत हो तो फिर इस राह की तमाम परेशानियां और मुश्किलें उस पर आसान बल्कि आसानतर हो जाती हैं और हक़ देख-समझ लेने के बाद तमाम ख़तरे और मुसीबतें बेकार होकर रह जाती हैं।

3. इब्तिला और आज़माइश मुसीबत व हलाकत की शक्ल में हो या दौलत व सरवत और नफ़्सानी अस्बाब की सूरत में, हर हालत में इंसान को अल्लाह की जानिब ही रुजू करना चाहिए और उसी से इल्तिजा करनी चाहिए कि वह हक़ मामले पर साबित क़दम रखे।

4. जब अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत और उसका इश्क़, दिल की गहराइयों में उतर जाता है, तो फिर इंसान की ज़िंदगी का तमामतर मक़्सद वही बन जाता है और उसके दीन की दावत व तब्लीग़ का इश्क़ हर वक़्त रग-रग में दौड़ता रहता है।

5. दयानत और अमानत एक ऐसी नेमत है कि उसको इंसान की दीनी व दुन्यवी सआदतों की कुंजी कहना चाहिए।

6. ख़ुदएतमादी इंसान की बुलन्द सिफ़तों से एक बड़ी सिफ़त है। अल्लाह ने जिस आदमी को यह दौलत दी है, वही दुनिया की मुसीबतों और दुखों से गुज़र कर दुनिया और दीन दोनों की बुलन्दियों को हासिल कर सकता है।

7. सब्र एक शानदार 'ख़ुल्क़' है और बहुत-सी बुराइयों के लिए सपर और ढाल का काम देता है। क़ुरआन करीम में सबसे ज़्यादा जगहों पर उसकी फ़ज़ीलत का एलान किया गया है और अल्लाह तआला ने ऊंचे रुत्बे और बुलन्द दर्जे का मदार इसी फ़ज़ीलत पर रखा है।

8. तक्लीफ़ पहुंचाने वाले भाइयों की नदामत के वक़्त सब्र का अख़्तियार करना यानी दिल की वुस्अत का सबूत है।

9. बेहतरीन अख़्लाक में शुक्र भी सबसे बेहतर अख़्लाक़ है, इसलिए यह अल्लाह के अख़्लाक़ में सबसे बुलन्द है।

10. हसद (जलन) और बुग़्ज़ (द्वेष) का अंजाम हसद करने वाले और बुग़्ज़ रखने वाले के हक़ ही में नुक़्सानदेह होता है और अगरचे कभी जिससे हसद और बुग़्ज़ किया गया है, उसको भी दुनिया का नुक़्सान पहुंच जाना मुम्किन है, लेकिन हसद करने वाला किसी हाल में भी फ़लाह नहीं पाता और वह दुनिया और आख़िरत में घाटा उठाने वाला जैसा हो जाता है, अलावा इसके कि तौबा कर ले और हसद वाली ज़िंदगी को छोड़ दे।

11. सदाक़त, दयानत, अमानत, सब्र और शुक्र जैसी ऊंची सिफ़तों वाली ज़िंदगी ही हक़ीक़ी और कामयाब ज़िंदगी है और अगर इंसान में ये सिफ़तें नहीं पाई जातीं, तो फिर वह इंसान नहीं, बल्कि हैवान है, बल्कि उससे भी बुरा।

हज़रत यूसुफ़ ﷺ की पूरी ज़िंदगी ऊपर लिखे अख़्लाक़ी मसलों पर गवाह है और इस दुआ के लिए दावत दे रही है—

'ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा मददगार है, तू मुझे अपनी इताअ़त पर मौत दीजियो और नेक लोगों के साथ शामिल कीजियो। (यूसुफ़ 12/101)

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम

शुऐब की क़ौम

हज़रत शुऐब मदयन या मदयान की ओर भेजे गए थे। मदयन एक क़बीले का नाम है, जो हज़रत इब्राहीम के बेटे मदयन की नस्ल से था। शुऐब भी चूंकि उसी नस्ल और उसी क़बीले से थे, इसलिए उनके भेजे जाने के बाद यह कौम 'शुऐब की क़ौम' (क़ौमे शुऐब) कहलाई।

मदयन या अस्हाबे ऐकः

कुरआन मजीद में इस क़बीले से मुताल्लिक़ हमको दो बातें बताई गई हैं—

तर्जुमा—'एक यह कि वह इमामे मुबीन पर आबाद था और लूत की क़ौम और मदयन दोनों बड़ी शाहराहें पर आबाद थे।' (15-79)

अरब के भूगोल में जो शाहराह (Main Road) हिजाज़ के ताजिर क़ाफ़िलों को शाम, फ़लस्तीन, यमन, बल्कि मिस्र तक ले जाती और लाल सागर के पूर्वी किनारे से होकर गुज़रती थी, कुरआन उसी को 'इमामे मुबीन' (खुला और साफ़ रास्ता) कहता है, जहां तक अस्हाबे ऐकः का ताल्लुक़ है, तो अरबी में 'ऐका' हरी-भरी झाड़ियों को कहते हैं जो झांदले की शक्ल अख़्तियार कर लेती है। इन दोनों बातों के जान लेने के बाद मदयन की आबादी के बारे में यही कहा जा सकता है कि मदयन का क़बीला लाल सागर के पूर्वी किनारे और अरब के उत्तर पश्चिम में ऐसी जगह आबाद था जो शाम से मिले हुए हिजाज़ का आख़िरी हिस्सा कहा जा सकता है। कुछ विद्वानों ने मदयन और अस्हाबे ऐका में फ़र्क़ किया हैं, लेकिन तर्जीही बात यही है कि मदयन और अस्हाबे ऐकः एक ही क़बीला है जो बाप की निस्बत से मदयन कहलाया और ज़मीन की तबई और जुग़राफ़ियाई (भौगोलिक) हैसियत से अस्हाबे ऐका कहलाया।

हक़ की दावत

बहरहाल शुऐब जब अपनी क़ौम में भेजे गए तो उन्होंने देखा कि अल्लाह की नाफ़रमानी और बड़े गुनाह के काम सिर्फ़ कुछ लोगों में ही नहीं पाए जाते, बल्कि सारी क़ौम इसकी शिकार है और अपनी बद-आमालियों में इतनी मस्त है कि एक लम्हे के लिए भी उनको यह एहसास नहीं होता कि यह जो कुछ हो रहा है, अल्लाह की नाफ़रमानी और गुनाह है बल्कि ये अपने इन आमाल को फ़ख़्र की वजह समझते हैं।

उनकी बहुत-सी नाफ़रमानियों और बद-अख़्लाक़ियों से हटकर जिन गंदे कामों ने ख़ास तौर से उनमें रिवाज पा लिया था, वे यह थे—

1. बुतपरस्ती और मुश्रिकाना रस्म और अक़ीदे,

2. ख़रीदे-बेचने में पूरा लेना और कम तौलना, यानी दूसरे को उसके हक़ से कम देना और अपने लिए हक़ के मुताबिक़ लेना, बल्कि उससे ज़्यादा।

3. तमाम मामलों में खोट और डाकाज़नी।

क़ौमों के आम रिवाज के मुताबिक़ असल में उनकी तनआसानी, ऐश परस्ती, दौलत की ज़्यादती, ज़मीन और बाग़ों की ज़रख़ेज़ी और हरियाली ने उनको इतना घमंडी बना दिया था कि वे इन तमाम चीज़ों को अपनी ज़ाती मीरास और अपना ख़ानदानी हुनर समझ बैठे थे और एक लम्हे के लिए भी उनके दिल में यह ख़तरा नहीं गुज़रता था कि यह सब कुछ अल्लाह की अता और बख़्शिश है कि शुक्रगुज़ार होते और सरकशी से बाज़ रहते, ग़रज़ उनकी ख़ुशहाली ने उनमें तरह-तरह की बद-अख़्लाक़ियां और क़िस्म-क़िस्म के ऐब पैदा कर दिए थे।

आख़िर हक़ की ग़ैरत हरकत में आई और अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ उनको हक़ का रास्ता दिखाने, नाफ़रमानियों और ग़लत और गन्दे कामों से बचाने और अमीन व मुत्तक़ी और अख़्लाक़ वाला बनाने के लिए उन्हीं में से एक हस्ती को चुन लिया और नुबूवत व रिसालत से नवाज़ कर उसको इस्लाम की दावत और हक़ के पैग़ाम का इमाम बनाया। यह हस्ती हज़रत शुऐब की ज़ाते गरामी थी।

अल्लाह की तौहीद और शिर्क से बेज़ारी का एतक़ाद तो तमाम नबियों (अलैहिमुस्सलाम) की तालीम की मुश्तरक बुनियाद और असल है जो हज़रत शुऐब ﷺ के हिस्से में भी आई थी, मगर क़ौम की मख़्सूस बद-अख़्लाक़ियों पर तवज्जोह दिलाने और उनको सीधे रास्ते पर लाने के लिए उन्होंने इस क़ानून को भी अहमियत दी कि बेचने-ख़रीदने के मामले में यह हमेशा नज़रों में रहना चाहिए कि जो जिसका हक़ है, वह पूरा-पूरा उसको मिले कि दुन्यवी मामलों में यही एक ऐसी बुनियाद है जो डगमगा जाने के बाद हर क़िस्म के ज़ुल्म, फ़िस्क़ व फ़ुजूर और मुत्लिक ख़राबियों और बद-अख़्लाक़ियों की वजह बनती है।

ख़ुलासा यह है कि हज़रत शुऐब ﷺ ने भी अपनी क़ौम की बद-आमालियों को देखकर बड़ा दुख महसूस किया और रुश्द व हिदायत की तालीम देते हुए क़ौम को उन्हीं उसूलों की तरफ़ बुलाया जो नबियों की दावत व इर्शाद का ख़ुलासा है—

उन्होंने फ़रमाया : 'ऐ क़ौम! एक अल्लाह की इबादत कर, उसके अलावा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है और ख़रीदने-बेचने में नाप-तौल को पूरा रख और लोगों के साथ मामलों में खोट न कर, कल तक मुम्किन है कि तुझको उन बद-अख़्लाक़ियों और बुराइयों का हाल मालूम न हुआ हो, मगर आज तेरे पास अल्लाह की हुज्जत, निशानी और बुरहान आ चुका, अब जह्ल व नादानी, अफ़्व व दरगुज़र के क़ाबिल नहीं है, हक़ को क़ुबूल कर और बातिल से बाज़ आ कि यही कामियाबी और कामरानी की राह है और अल्लाह की ज़मीन में फ़ित्ना व फ़साद न कर, जबकि अल्लाह तआला ने उसकी सलाह व ख़ैर के तमाम सामान जुटा दिए, अगर तुझमें ईमान व यक़ीन की सदाक़त मौजूद है तो समझ कि यही फ़लाह व बहबूदी की राह है और देख ऐसा न कर कि हक़ की दावत के रास्ते को रोकने और लोगों को लूटने के लिए हर राह पर जा बैठे और जो आदमी भी ईमान ले आए उसको अल्लाह का रास्ता अख़्तियार करने पर धमकियां देने लगे और उसमें टेढ़ पैदा करने पर उतर आए। ऐ क़ौम के लोगो! उस वक़्त को याद करो और अल्लाह का एहसान मानो कि तुम बहुत थोड़े थे, फिर उसने अम्न व आफ़ियत देकर तुम्हारी

तायदाद को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ा दिया—

'ऐ मेरी क़ौम! ज़रा इस पर भी ग़ौर कर कि जिन लोगों ने अल्लाह की ज़मीन में फ़साद फैलाने का तरीक़ा अख़्तियार किया था, उनका अंजाम कितना इबरतनाक हुआ, और अगर तुममें से एक जमाअत मुझ पर ईमान ले आई और एक जमाअत ईमान नहीं ले आई तो सिर्फ़ इतनी ही बात पर मामला ख़त्म हो जाने वाला नहीं, बल्कि सब्र के साथ इंतिज़ार कर, यहां तक कि अल्लाह तआला हमारे दर्मियान आख़िरी फ़ैसला कर दे और वही बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।'

हज़रत शुऐब बड़े फ़सीह व बलीग़ मुक़र्रिर (स्पष्ट और उत्साहवर्धक वक्ता) थे। शीरीं कलामी (बातों में मिठास) हुस्ने ख़िताबत (सुन्दर वक्तव्य) तर्ज़ेबयान (वर्णन-शैली) और तलाक़ते लिसानी (भाषा-विद्वता) में बहुत नुमायां इम्तियाज़ रखते थे, इसलिए मुफ़स्सिर (टीकाकार) उनको ख़तीबुल अंबिया के लक़ब से याद करते हैं। पस उन्होंने निहायत नर्म-गर्म हर तरीक़े से रुश्द व हिदायत के ये कलिमे कहे, पर उस बदबख़्त क़ौम पर ज़रा भी कोई असर न हुआ और कुछ कमज़ोर और बूढ़े लोगों के अलावा किसी ने हक़ के पैग़ाम पर कान न धरा, वे ख़ुद भी इसी तरह बद-आमाल (दुष्कर्मी) रहे और दूसरों का रास्ता भी मारते रहे, वे रास्तों में बैठ जाते और हज़रत शुऐब के पास आने जाने वालों को हक़ क़ुबूल करने से रोकते और अगर मौक़ा लग जाता तो लोगों को लूट लेते। अगर इस पर भी कोई ख़ुशक़िस्मत हक़ पर लब्बैक कह देता, तो उसको डराते-धमकाते और तरह-तरह से टेढ़े रास्ते पर चलने पर आमादा करते, लेकिन इन तमाम बातों के बावजूद हज़रत शुऐब अलै॰ की हक़ की दावत का सिलसिला बराबर जारी रहा, तो उनमें से बड़े क़िस्म के लोगों ने, जिन में अपनी शौकत और ताक़तवर पर घमंड था, हज़रत शुऐब अलै॰ से कहा: ऐ शुऐब! दो बातों में से एक बात ज़रूर होकर रहेगी या हम तुझको और तुझ पर ईमान लाने वालों को अपनी बस्ती में से निकाल देंगे और तेरा देस निकाला करेंगे या तुझको मजबूर करेंगे कि फिर हमारे दीन में वापस आ जाओ।'

हज़रत शुऐब अलै॰ ने फ़रमाया : 'अगर हम तुम्हारे दीन को ग़लत और

बातिल समझते हों, तब भी ज़बरदस्ती मान लें, यह तो बड़ा ज़ुल्म है? और जबकि हमको अल्लाह तआला ने तुम्हारे उस दीन से नजात दे दी तो फिर हम उसकी तरफ़ लौट जाएं, तो इसका मतलब तो यह होगा कि हमने झूठ बोलकर अल्लाह तआला पर बोहतान बांधा, यह नामुम्किन है। हां, अगर अल्लाह की (जो कि हमारा परवरदिगार है) यही मर्ज़ी हो तो वह जो चाहेगा करेगा, हमारे रब का इल्म तमाम चीज़ों पर छाया हुआ है, हमारा तो सिर्फ़ उसी पर भरोसा है। ऐ परवरदिगार! तू हमारे और हमारी क़ौम के दर्मियान हक़ और सच्चाई के साथ फ़ैसला कर दे, तू ही बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। क़ौम के सरदारों ने जब हज़रत शुऐब ﷺ का यह अ़ज़्म व इस्तिक़लाल देखा तो उन से चेहरा फेर कर अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगा : 'ख़बरदार! अगर तुमने शुऐब का कहना माना तो तुम हलाक व बर्बाद हो जाओगे।'

हज़रत शुऐब ﷺ ने यह भी फ़रमाया : देखो, अल्लाह तआला ने मुझको इसलिए भेजा है कि मैं अपनी ताक़त भर तुम्हारी इस्लाह की कोशिश करूं और मैं जो कुछ कहता हूं उसकी सदाक़त और सच्चाई के लिए अल्लाह की हुज्जत और दलील और निशानी भी पेश कर रहा हूं। मगर अफ़सोस तुम इस वाज़ेह हुज्जत को देखकर भी सरकशी और नाफ़रमानी पर क़ायम हो और मुख़ालफ़त का कोई पहलू ऐसा नहीं है जो तुमसे छूटा हुआ हो, फिर मैं तुमसे अपनी इस रुश्द व हिदायत के बदले में कोई उजरत भी नहीं मांगता और न कोई दुनिया के नफ़ा को तलब कर रहा हूं। मेरा बदला तो अल्लाह के पास है और अगर तुम अब भी न मानोगे, तो मुझे डर है कि कहीं अल्लाह का अ़ज़ाब तुमको हलाक व बर्बाद न कर डाले, उसका फ़ैसला अटल है और किसी की मजाल नहीं कि उसको रद्द कर दे।

क़ौम के सरदार त्यौरी चढ़ा कर बोले : शुऐब! क्या तेरी नमाज़ हमसे यह चाहती है कि हम अपने बाप-दादा के देवताओं को पूजना छोड़ दें और उसको अपने माल व दौलत में यह अख़्तियार न रहे कि जिस तरह चाहें, मामला करें, अगर हम कम तौलना छोड़ दें, लोगों के कारोबार में खोट न करें तो ग़रीब और क़ल्लाश होकर रह जाएं पस क्या ऐसी तालीम देने में तुझको कोई संजीदा और सच्चा रहबर कह सकता है?

हज़रत शुऐब ﷺ ने बड़ी दिलसोज़ी और मुहब्बत के साथ फ़रमायाः 'ऐ क़ौम! मुझे यह डर लग रहा है कि तेरी ये बेबाकियां और अल्लाह के मुक़ाबले में नाफ़रमानियां कहीं तेरा भी वह अंजाम न कर दें, जो तुझसे पहले क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौम सालेह और क़ौमे लूत का हुआ। अब भी कुछ नहीं गया, अल्लाह के सामने झुक जा और अपनी बद-किरदारियों के लिए बख़्शिश का तलबगार बन और हमेशा के लिए उनसे तौबा कर ले। बेशक मेरा परवरदिगार रहम करने वाला और बहुत ही मेहरबान है। वह तेरी तमाम ख़ताएं बख़्श देगा।

क़ौम के सरदारों ने यह सुनकर जवाब दिया, शुऐब! हमारी समझ में कुछ नहीं आता कि तू क्या कहता है? तू हम सबसे कमज़ोर और ग़रीब है। अगर तेरी बातें सच्ची होतीं, तो तेरी ज़िंदगी हम सबसे अच्छी होती और हमको सिर्फ़ तेरे ख़ानदान का डर है, वरना तुझको संगसार करके छोड़ते, तू हरगिज़ हम पर ग़ालिब नहीं आ सकता।

हज़रत शुऐब ने फ़रमाया : 'अफ़सोस है तुम पर! क्या तुम्हारे लिए अल्लाह के मुक़ाबले में मेरा ख़ानदान ज़्यादा डर की वजह बन रहा है, हालांकि मेरा रब तुम्हारे तमाम कामों का एहाता किए हुए है और वह दाना व बीना है।'

'ख़ैर, अगर तुम नहीं मानते तो तुम जानो, तो वह सब कुछ करते रहो जो कर रहे हो, बहुत जल्द अल्लाह का फ़ैसला बता देगा कि अज़ाब का हक़दार कौन है और कौन झूठा और काज़िब है, तुम भी इन्तिज़ार करो और मैं भी इन्तिज़ार करता हूं?'

आख़िर वही हुआ जो अल्लाह के क़ानून का अबदी व सरमदी फ़ैसला है, 'यानी हुज्जत व बुरहान की रोशनी आने के बाद भी जब बातिल पर इसरार हो और उसकी सच्चाई का मज़ाक़ उड़ाया जाए और उसकी इशाअत में रुकावटें डाली जाएं, तो फिर अल्लाह का अज़ाब इस मुज्रिमाना ज़िंदगी का ख़ात्मा कर देता है और आने वाली क़ौमों के लिए उसको इबरत व मौइज़त बना दिया करता है।

अज़ाब की क़िस्में

कुरआन अज़ीज़ कहता है कि नाफ़रमानी और सरकशी के बदले में शुऐब की क़ौम को दो क़िस्म के अज़ाब ने आ घेरा—एक ज़लज़ले का अज़ाब और दूसरा आग की बारिश का अज़ाब यानी जब वे अपने घरों में आराम कर रहे थे तो यकायक एक हौलनाक ज़लज़ला आया। अभी यह हौलनाकी ख़त्म भी न हुई थी कि ऊपर से आग बरसने लगी और नतीजा यह निकला कि सुबह को देखने वालों ने देखा कि कल के सरकश और मग़रूर आज घुटनों के बल औंधे झुलसे हुए पड़े हैं—

तर्जुमा—'फिर आ पकड़ा उनको ज़लज़ले ने, पस सुबह को रह गए अपने-अपने घरों के अन्दर औंधे पड़े।' (अल-आराफ़ 7 : 78)

तर्जुमा—'फिर उन्होंने शुऐब को झुठलाया, पस आ पकड़ा उनको बादल वाले अज़ाब ने (जिसमें आग थी) बेशक वह बड़े हौलनाक दिन का अज़ाब था।' (अश-शुअरा 26 : 189)

हज़रत शुऐब अलै० की क़ब्र

हज़रमौत में एक क़ब्र है, वहां के बाशिंदों का दावा है कि यह हज़रत शुऐब अलै० की क़ब्र है, जो मदयन की हलाकत के बाद यहां बस गए थे और यहीं उनकी वफ़ात हुई।

सबक़ भरी नसीहतें

1. इस्लाम में बन्दों के हक़ की हिफ़ाज़त, समाजी दुरुस्तकारी और मामलों में दयानत व अमानत को इस दर्जा अहम समझा गया है कि अल्लाह ने जलीलुलक़द्र पैग़म्बर को भेजे जाने का मक़्सद इसी को क़रार दिया और इन्हीं मामलों की इस्लाह के लिए रसूल बनाकर भेजा।

2. ख़रीदने-बेचने में दूसरे के हक़ को पूरा न देना इंसानी ज़िंदगी में ऐसा रोग लगा देता है कि यह बद-अख़्लाक़ी बढ़ते-बढ़ते बन्दों के तमाम हक़ों के बारे में हक़ मारने की ख़स्लत पैदा कर देती है और इस तरह इंसानी शराफ़त

और आपसी भाईचारा और मुहब्बत के रिश्ते को काट करके लालच, लोभ, ख़ुदग़रज़ी और कंजूसी जैसे ख़राब कामों वाला बना देती है।

3. नाप-तौल में इंसाफ़ सिर्फ़ चीज़ों के ख़रीदने-बेचने तक महदूद नहीं है, बल्कि इंसानी किरदार का यह कमाल होना चाहिए कि अल्लाह और उसके बन्दे के तमाम हक़ और फ़र्ज़ में इस असल को काम की बुनियाद बनाए और किसी मौक़े पर किसी हालत में भी अद्ल व इंसाफ़ के तराज़ू को हाथ से जाने न दे।

4. ख़रीदने-बेचने के दर्मियान नाप-तौल में कमी न करना और इंसाफ़ को बाक़ी रखना, गोया एक कसौटी है कि जो इंसानी ज़िंदगी के मामूली लेन-देन में अद्ल व इंसाफ़ नहीं बरतता, उससे क्या उम्मीद हो सकती है कि वह अहम दीनी और दुन्यवी मालों में अद्ल व इंसाफ़ को काम में लाएगा?

5. सुधार के बाद अल्लाह की ज़मीन में फ़साद पैदा करने से बढ़कर कोई जुर्म नहीं है, इसलिए कि ज़ुल्म, किब्र, क़त्ल और इस्मतरेज़ी जैसे बड़े-बड़े जुर्मों की बुनियाद और असल यही रज़ीला (गन्दे और घटिया काम) हैं।

6. नबियों और उनके मानने वालों की ज़िंदगी के पढ़ने से पता चलता है कि नबियों के रोशन दलील देने, आयातुल्लाह यानी अल्लाह की निशानियां दिखाने, मुहब्बत और रहम के जज़्बों को ज़ाहिर करने और अपनी दावत व तब्लीग़ पर किसी क़िस्म का अज्र तलब न करने का इत्मीनान दिलाते रहे हैं मगर इसके बावजूद दूसरी तरफ़ यानी बातिल पर क़ायम रहने वालों की तरफ़ से यही जवाब मिलता रहा है कि तुमको संगसार कर दिया जाएगा, क़त्ल कर दिया जाएगा। अल्लाह के पैग़म्बरों के वजूद तक को बरदाश्त नहीं किया गया और यहां तक कहा गया कि अगर सच्चे हो तो जिस अज़ाब से डराते हो, वह अभी ले आओ, वरना तो हमेशा के लिए तुम्हारा और तुम्हारे मिशन का ख़ात्मा कर दिया जाएगा?

7. हक़ व बातिल का यही वह आख़िरी मरहला है जिसके बाद अल्लाह तआला का यह क़ानून जिसको 'अमल के बदले का क़ानून' कहा जाता है, ऐसी सरकश और तकब्बुर भरी क़ौमों के लिए दुनिया ही में लागू हो जाता है और उनको हलाक व तबाह करके आने वाली नस्लों और क़ौमों के लिए

इबरत और नसीहत का सामान जुटा देता है।

हज़रत शुऐब ﷺ का ज़िक्र कुरआन पाक में

कुरआन हकीम में हज़रत शुऐब और उनकी क़ौम का तज़्किरा आराफ़, हूद और शुअ़रा में कुछ तफ़्सील से किया गया है और हिज्र व अंकबूत में थोड़े में है।

हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम

हज़रत मूसा ﷺ की शुरूआ़ती ज़िंदगी

बनी इसराईल मिस्र में

हज़रत यूसुफ़ ﷺ के क़िस्से में बनी इसराईल का ज़िक्र सिर्फ़ इसी क़दर किया गया था कि हज़रत याक़ूब और उनका ख़ानदान हज़रत यूसुफ़ ﷺ से मिलने मिस्र में आए, मगर उसके सदियों बाद फिर एक बार कुरआन करीम बनी इसराईल के वाक़िए तफ़्सील के साथ सुनाता है जिनसे मालूम होता है कि बनी इसराईल हज़रत यूसुफ़ ﷺ के ज़माने में मिस्र ही में बस गए थे। तौरात से और तफ़्सील मालूम होती है और यह भी कि हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने फ़िरऔ़न से अपने बाप और ख़ानदान के लिए अर्ज़े जाशान (Goshen) तलब की जो फ़िरऔ़न ने ख़ुशी-ख़ुशी उनके सुपुर्द कर दी। बहरहाल इन तफ़्सीलों से यह बात साफ़ हो जाती है कि बनी इसराईल हज़रत यूसुफ़ और हज़रत मूसा की दर्मियानी सदियों में मिस्र में आबाद रहे और उनकी तायदाद लगभग छः लाख हो गई थी। ('नेशनल ज्योग्रेफ़िक' जनवरी 1078 ई. के मुताबिक ये छः सौ ख़ानदान यानी पन्द्रह हज़ार लोगों से कुछ कम ही हो सकते हैं।)

फ़िरऔ़न

शुरू ही में यह साफ़ कर देना ज़रूरी है कि 'फ़िरऔ़न' मिस्र के बादशाहों

का लक़ब है, किसी ख़ास हुक्मरां या बादशाह का नाम नहीं है। तारीख़ी एतबार से तीन हज़ार साल क़ब्ल मसीह से शुरू होकर सिकन्दर आज़म के ज़माने तक फ़िरऔनों के 31 ख़ानदान मिस्र पर हुक्मरां रहे हैं। हज़रत मूसा के ज़माने में मिस्र का हुक्मरां (फ़िरऔन) कौन था और उसका क्या नाम था, यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता, इसलिए यहां फ़िरऔन को उस वक़्त के मिस्र का हुक्मरां (शासक) समझा जाए।

फ़िरऔन का ख़्वाब

तौरात में है और तारीख़ के माहिर भी कहते हैं कि फ़िरऔन को बनी इसराईल के साथ इसलिए दुश्मनी हो गई थी कि उस ज़माने के काहिनों, नजूमियों और क़याफ़ागरों ने उसको बताया था कि उसकी हुकूमत का ज़वाल एक इसराईली लड़के के हाथ से होगा और कुछ तारीख़ी रिवायतों में है कि फ़िरऔन ने एक भयानक ख़्वाब देखा था, जिसकी ताबीर दरबार के ज्योतिषियों और काहिनों ने वही दी थी, जिसका ज़िक्र गुज़र चुका है। इस पर फ़िरऔन ने एक जमाअत को इसलिए मुक़र्रर किया कि वह तफ़्तीश और तलाश के साथ इसराईली लड़कों को क़त्ल कर दे और लड़कियों को छोड़ दिया करे।

हज़रत मूसा عليه السلام की पैदाइश

हज़रत मूसा का नसब (वंश) कुछ वास्तों से हज़रत याक़ूब तक पहुंचता है। उनके वालिद का नाम इमरान और वालिदा का नाम यूकाबुद था। इमरान के घर में मूसा की पैदाइश ऐसे ज़माने में हुई जबकि फ़िरऔन इसराईली लड़कों के क़त्ल का फ़ैसला कर चुका था। बहरहाल जूं-जूं करके तीन माह तक उनके पैदा होने की किसी को मुतलक़ ख़बर न होने दी। इस सख़्त और नाज़ुक वक़्त में आख़िर अल्लाह तआला ने मदद की और मूसा की वालिदा के दिल में यह बात डाल दी कि एक ताबूत की तरह का सन्दूक़ बनाओ, जिस पर राल और रोग़न पालिश कर दो, ताकि पानी अन्दर असर न कर सके और उसमें उस बच्चे को हिफ़ाज़त से रख दो और फिर उस सन्दूक़ को नील नदी के बहाव

पर छोड़ दो।

मूसा की मां ने ऐसा ही किया और साथ ही अपनी बड़ी लड़की यानी मूसा की बहन को लगाया कि वह इस सन्दूक़ के बहाव के साथ किनारे-किनारे चलकर सन्दूक़ को निगाह में रखे और देखे कि अल्लाह उसकी हिफ़ाज़त का वायदा किस तरह पूरा करता है, क्योंकि मूसा की वालिदा को अल्लाह तआला ने यह बशारत पहले ही सुना दी थी कि हम इस बच्चे को तेरी ही तरफ़ वापस कर देंगे और यह हमारा पैग़म्बर और रसूल होगा।

फ़िरऔन के घर में तर्बियत

हज़रत मूसा अलै॰ की बहन बराबर सन्दूक़ के बहाव के साथ-साथ किनारे-किनारे निगरानी करती जा रही थीं कि उन्होंने देखा सन्दूक तैरते हुए शाही महल के किनारे आ लगा और फ़िरऔन के घराने में से एक औरत ने ख़ादिमों के ज़रिए उसको उठवा लिया और शाही महल में ले गई। हज़रत मूसा अलै॰ की हमशीरा (बहन) यह देखकर बहुत ख़ुश हुई और हालात की सही तफ़्सील मालूम करने के लिए शाही महल की नौकरानियों में शामिल हो गई।

यहां यह बात हो रही थी, उधर हज़रत मूसा अलै॰ की वालिदा लतीफ़ा ग़ैबी के इन्तिज़ार में आंखें फैलाए हुए थीं कि लड़की (हज़रत मूसा अलै॰ की बहन) ने आकर पूरी दास्तान कह सुनाई और कहा कि अब तुम चलकर अपने बच्चे को सीने से लगाओ और आंखें ठंडी करो और उसका शुक्र अदा करो कि उसने अपना वायदा पूरा कर दिया। इस तरह अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलै॰ की परवरिश का पूरा इन्तिज़ाम कर दिया।

मूसा का मिस्र से निकलना

हज़रत मूसा अलै॰ एक अर्से तक शाही तर्बियत में बसर करते-करते जवानी के दौर में दाख़िल हुए तो निहायत मज़बूत, कड़यल और बहादुर जवान निकले। चेहरे से रौब टपकता और बातों से एक ख़ास वक़ार और अज़मत की शान ज़ाहिर होती थी। उनको यह भी मालूम हो गया था कि वह इसराईली

हैं और मिस्री ख़ानदानों से इनकी कोई रिश्तेदारी नहीं है। उन्होंने यह भी देखा कि बनी इसराईल पर बड़े ज़ुल्म हो रहे हैं और वे मिस्र में बड़ी ज़िल्लत और गुलामी की ज़िंदगी बसर कर रहे हैं। यह देखकर उनका ख़ून खौलने लगता और मौक़े-मौक़े से इबरानियों की हिमायत व मदद में पेश पेश हो जाते।

एक बार शहरी आबादी से एक किनारे जा रहे थे कि देखा एक मिस्री एक इसराईली को बेगार के लिए घसीट रहा है। इसराईली ने मूसा को देखा तो लगा फ़रियाद करने और मदद चाहने। हज़रत मूसा को मिस्री की इस जाबिराना हरकत पर सख़्त गुस्सा आया और उसको बाज़ रखने की कोशिश की, मगर मिस्री न माना, मूसा ने गुस्से में आकर एक तमांचा रसीद कर दिया। मिस्री इस मार को सह न सका और उसी वक़्त मर गया। हज़रत मूसा ने यह देखा तो बहुत अफ़सोस किया, क्योंकि उनका इरादा बिल्कुल उसके क़त्ल का न था और नदामत व शर्मिन्दगी के साथ दिल में कहने लगे कि बेशक यह शैतान का काम है। वही इंसान को ग़लत रास्ते पर लगाता है और अल्लाह की दरगाह में अर्ज़ करने लगे कि यह जो कुछ हुआ, अनजाने में हुआ, मैं तुझसे माफ़ी चाहता हूं। अल्लाह ने भी उनकी ग़लती को माफ़ कर दिया और मग़फ़िरत की बशारत से नवाज़ा।

इधर शहर में मिस्री के क़त्ल की ख़बर फैल गई, मगर क़ातिल का कुछ पता न चला। आख़िर फ़िरऔन के पास मदद तलब की कि यह काम किसी इसराईली का है, इसलिए आप मदद फ़रमाएं। फ़िरऔन ने कहा कि इस तरह सारी क़ौम से बदला नहीं लिया जा सकता, तुम क़ातिल का पता लगाओ, मैं उसको ज़रूर पूरी सज़ा दूंगा।

बुरा इत्तिफ़ाक़ कहिए या अच्छा इत्तिफ़ाक़ कि दूसरे दिन भी हज़रत मूसा शहर के किनारे पर सैर फ़रमा रहे थे कि देखा वही इसराईली एक क़िब्ती से झगड़ रहा है और क़िब्ती ग़ालिब है। मूसा को देखकर कल की तरह उसने आज भी फ़रियाद की और मदद चाही।

इस वाक़िए को देखकर हज़रत मूसा ﷺ ने दोहरी नागवारी महसूस की, एक तरफ़ क़िब्ती का ज़ुल्म था और दूसरी तरफ़ इसराईली का शोर व

गूंगा और पिछले वाक़िए की याद थी, इसी झुंझलाहट में एक तरफ़ उन्
मिस्री को बाज़ रखने के लिए हाथ बढ़ाया और साथ ही इसराईली को
झिड़कते हुए फ़रमाया *'इन्न-क ल-ग़वीयुन अमीन०'* (तू भी बेशक खु
हुआ गुमराह है) यानी ख़्वामख़ाही झगड़ा मोल लेकर दाद व फ़रियाद क
रहता है।

इसराईली ने हज़रत मूसा को हाथ बढ़ाते और फिर अपने मुताल्लि
नागवार और कड़वे अलफ़ाज़ कहते सुना तो यह समझा कि यह मुझको मा
के लिए हाथ बढ़ा रहे हैं और मुझको पकड़ में लेना चाहते हैं, इसलिए शरा
भरे अन्दाज़ में कहने लगा—

तर्जुमा—*'जिस तरह कल तूने एक जान (क़िब्ती) को हलाक किया*
उसी तरह आज मुझको क़त्ल कर देना चाहता है।' (28 : 1

मिस्री ने जब यह सुना तो उस वक़्त फ़िरऔनियों से जाकर सारी दास्त
कह सुनाई। उन्होंने फ़िरऔन को इत्तिला दी कि मिस्री का क़ातिल मूसा
फ़िरऔन ने यह सुना तो जल्लाद को हुक्म दिया कि मूसा को गिरफ़्तार कर
हाज़िर करे। मिस्रियों के इस मज्मे में एक मुअज़्ज़ज़ शहरी वह भी था जो दि
व जान से हज़रत मूसा से मुहब्बत रखता और इसराईली मज़हब को ह
जानता था। यह फ़िरऔन ही के ख़ानदान का आदमी था और दरबार
हाज़िर-बाश। उसने फ़िरऔन का यह हुक्म सुना तो फ़िरऔनी जल्लादों
पहले ही दरबार से निकल कर दौड़ता हुआ हज़रत मूसा की ख़िदमत में हाज़ि
हुआ और उनसे सारा क़िस्सा बयान किया और उनको मश्विरा दिया कि इ
वक़्त मस्लहत यही है कि ख़ुद को मिस्रियों से नजात दिलाइए और किसी ऐ
मक़ाम पर हिजरत कर जाइए जहां उनकी पकड़ न हो सके। हज़रत मूसा
उसके मश्विरे को क़ुबूल फ़रमाया और अर्ज़े मदयन की तरफ़ ख़ामोशी के सा
रवाना हो गए।

हज़रत मूसा عليه السلام की मिस्र से मदयन के लिए हिजरत

मूसा और मदयन का इलाक़ा

हज़रत शुऐब عليه السلام के वाक़ियों में मदयन का ज़िक्र आ चुका है। मदयन की आबादी मिस्र से आठ मंज़िल पर वाक़े थी। हज़रत मूसा चूंकि फ़िरऔन के डर से भागे थे, इसलिए उनके साथ न कोई रफ़ीक़ और रहनुमा था और न ही रास्ते का ख़र्च और तेज़ भागने की वजह से नंगे पैर थे। इस परेशान हाली में मूसा मदयन के इलाक़े में दाख़िल हुए।

मदयन का पानी

जब मदयन की सरज़मीन में क़दम रखा तो देखा कि कुएं के सामने पानी के हौज़ (प्याऊ) पर भीड़ लगी हुई है और जानवरों को पानी पिलाया जा रहा है, मगर इस जमाअ़त से थोड़ी दूरी पर दो लड़कियां खड़ी हैं और अपने जानवरों को पानी पर जाने से रोक रही हैं।

बहरहाल हज़रत मूसा से यह हालत न देखी गई और आगे बढ़कर लड़कियों से मालूम किया : 'तुम क्यों नहीं पानी पिलातीं, पीछे किस लिए खड़ी हो?' दोनों ने जवाब दिया, हम मजबूर हैं, अगर जानवरों को लेकर आगे बढ़ते हैं तो ये ताक़तवर ज़बरदस्त हम को पीछे हटा देते हैं और हमारे वालिद बहुत बूढ़े हैं। अब उनमें यह ताक़त नहीं है कि उनके रोक को दूर कर सकें, पस जब ये सब पानी पिलाकर वापस हो जाएंगे, तब हम बचा हुआ पानी पिलाकर लौटेंगे, यही हमारा रोज़ का दस्तूर है।'

हज़रत मूसा عليه السلام को जोश आ गया और आगे बढ़कर तमाम भीड़ को चीरते हुए कुएं पर जा पहुंचे और कुएं का बड़ा डोल उठाया और तंहा खींच कर लड़कियों के मवेशियों को पानी पिला दिया। हज़रत मूसा जब भीड़ को चीरते

हुए दर्राना घुसने लगे, तो अगरचे लोगों को नागवार गुज़रा, लेकिन उनकी जलाली सूरत और जिस्मानी ताक़त से मर्ऊब हो गये और डोल को तंहा खींचते हुए देखकर उसी ताक़त से हार मान गए जिसके बलबूते पर कमज़ोरों और नातवानों को पीछे हटा दिया करते और उनकी ज़रूरतों को पामाल करते रहते थे।

ग़रज़ जब इन लड़कियों के जानवरों ने पानी पी लिया तो वे घर को वापस चलीं, घर पहुंचीं तो आदत के ख़िलाफ़ जल्द वापसी पर उनके बाप को बड़ा ताज्जुब हुआ, पूछने पर लड़कियों ने गुज़रा हुआ माजरा कह सुनाया कि किस तरह उनकी एक मिस्री ने मदद की। बाप ने कहा, 'जाओ और उसको मेरे पास लेकर आओ।'

यहां तो बाप-बेटी के दर्मियान यह बात-चीत हो रही थी और उधर हज़रत मूसा पानी पिलाने के बाद क़रीब ही एक पेड़ के साए में बैठकर सुस्ताने लगे। मुसाफ़रत, अजनबीपन और भूख-प्यास, इस हालत में उन्होंने दुआ की–

तर्जुमा– *'परवरदिगार! इस वक़्त जो भी बेहतर सामान मेरे लिए तू अपनी क़ुदरत से नाज़िल करे, मैं उसका मुहताज हूं।'* (28 : 24)

लड़की वहां पहुंची तो देखा कि कुएं के क़रीब ही हज़रत मूसा ﷺ बैठे हुए हैं। शर्म व हया के साथ नज़रें नीचे किए लड़की ने कहा, 'आप हमारे घर चलिए, वालिद बुलाते हैं। वह आपके इस एहसान का बदला देंगे।'

हज़रत मूसा ﷺ यह सुनकर उठ खड़े हुए और लड़की की रहनुमाई में चल पड़े और लड़कियों के बाप की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया। उन बुज़ुर्ग ने पहले तो खाना खिलाया और उनके हालात सुने। हज़रत मूसा ने ठीक ठीक अपनी पैदाइश और फ़िरऔन के बनी इसराईल पर मज़ालिम से शुरू करके आख़िर तक सारी दास्तान कह सुनाई। बुज़ुर्ग ने हज़रत मूसा को तसल्ली दी और फ़रमाया कि अल्लाह का शुक्र अदा करो कि अब तुमको ज़ालिमों के पंजे से निजात मिल गई। अब कोई डरने की बात नहीं है। क़ुरआन करीम ने उन बुज़ुर्ग को शेख़े कबीर कहा है।

शेख़ की बेटी से निकाह का रिश्ता

ऊपर की बातों के दौरान उस लड़की ने, जो हज़रत मूसा ﷺ को बुलाने

गई थी, अपने बाप से कहा–

तर्जुमा– 'ऐ बाप! आप उस मेहमान को अपने मवेशियों के चराने और पानी मुहैया करने के लिए अज्र पर रख लीजिए। अज्र पर किसी बेहतर आदमी को रखा जाए, जो मज़बूत भी हो और अमानतदार भी।'(अल-क़सस 28 : 26)

बुज़ुर्ग बाप ने बेटी की इन बातों को सुना तो बहुत मसरूर हुए और हज़रत मूसा से कहा कि अगर तुम आठ साल तक मेरे पास रहो और मेरी बकरियां चराओ तो मैं अपनी इस बेटी को तुमसे शादी करने को तैयार हूं और अगर तुम इस मुद्दत को दो साल बढ़ाकर दस साल कर दो तो और भी बेहतर है। यही इस लड़की का मह होगा। हज़रत मूसा ﷺ ने इस शर्त को मंज़ूर कर लिया और फ़रमाया कि यह मेरी ख़ुशी पर छोड़ दीजिए कि मैं इन दोनों मुद्दतों में से जिसको चाहूं पूरा कर दूं। आपकी तरफ़ से मुझ पर इस बारे में कोई जब्र न होगा। दोनों तरफ़ की इस आपसी रज़ामंदी के बाद बुज़ुर्ग मेज़बान ने मूसा से उस बेटी की शादी कर दी।

नोट–हज़रत मौलाना स्युहारवी रह० ने यह वाज़ेह किया है कि हज़रत मूसा ﷺ के ससुर जिनको कुरआन पाक ने 'शेख़ कबीर' कहा है, हज़रत शुऐब ﷺ न थे, क्योंकि उनका ज़माना कई सदियां पहले का है।

मुक़द्दस वादी

शादी के बाद हज़रत मूसा अपने ससुर के यहां मुक़र्रर की हुई मुद्दत पूरी करने, यानी बकरियां चराने के लिए ठहरे रहे। तफ़्सीर लिखने वाले मुस्तनद रिवायतों के पेशेनज़र फ़रमाते हैं कि मूसा ने पूरी मुद्दत यानी दस साल की मुद्दत पूरी की। कुरआन मजीद ने यह नहीं बताया कि मुद्दत पूरी होने के कितने क़दर बाद तक मूसा अपने ससुर के पास ठहरे रहे। बहरहाल हज़रत मूसा ﷺ ने मदयन में एक मुद्दत तक क़ियाम किया और इस पूरी मुद्दत में अपने ससुर के मवेशियों की देख-भाल करते रहे।

इस बीच एक बार हज़रत मूसा ﷺ अपने घर वालों समेत बकरियां चराते-चराते मदयन से बहुत दूर निकल गए। जानवरों के चरने-चराने का काम करने वाले क़बीलों के लिए यह बात ताज्जुब की न थी, मगर रात ठंडी थी

इसलिए सर्दी आग की खोज के लिए मजबूर कर रही थी, सामने सीना पर्वत का सिलसिला नज़र आ रहा था, यह सीना का पूर्वी कोना था और मदयन से एक दिन के फ़ासले पर लाल सागर की दो शाखाओं के दर्मियान मिस्र को जाते हुए वाक़े था। हज़रत मूसा ने चक़माक़ इस्तेमाल किया, मगर कड़ी ठंडक थी, उसने काम न किया। सामने की घाटी (ऐमन की घाटी) में निगाह दौड़ाई तो एक शोला चमकता हुआ नज़र पड़ा। बीवी से कहा कि तुम यहीं ठहरो, मैं आग ले आऊं, तापने का भी इन्तिज़ाम हो जाएगा और अगर वहां कोई रहबर मिल गया तो भटकी हुई राह का भी पता लग जाएगा।

तर्जुमा– *'फिर मूसा ने अपनी बीवी से कहा, तुम यहां ठहरो, मैंने आग देखी है, शायद उसमें से कोई चिंगारी तुम्हारे लिए ला सकूं या वहां अलाव पर किसी रहबर को पा सकूं।'* (ताहा 20 : 10)

रसूल बनाए गए

अल्लाह के फ़ज़्ल का हाल मूसा से पूछिए
आग लेने को जाएं पयम्बरी मिल जाए।

हज़रत मूसा ने देखा कि अजब आग है, पेड़ पर रोशनी नज़र आती है, मगर न पेड़ को जलाती है, न गुल ही होती है। यह सोचते हुए आगे बढ़े, ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते थे, आग और दूर होती जाती थी। यह देखकर मूसा को डर-सा पैदा हुआ और उन्होंने इरादा किया कि वापस हो जाएं। ज्यों ही वह पलटने लगे, आग क़रीब आ गई और क़रीब हुए तो सुना कि यह आवाज़ आ रही है–

तर्जुमा– *'ऐ मूसा! मैं हूं अल्लाह, परवरदिगार दुनियाओं का।'*

(क़सस 28 : 30)

तर्जुमा– *'पस जब मूसा उस (आग) के क़रीब आए तो पुकारे गए, ऐ मूसा! मैं हूं तेरा परवरदिगार पस अपनी जूती उतार दे, तू तुवा की मुक़द्दस वादी में खड़ा है और देख! मैंने तुझको अपनी रिसालत के लिए चुन लिया है, पस जो कुछ वह्य की जाती है, उसे कान लगाकर सुन।'* (ताहा 20 : 11-13)

हज़रत मूसा ﷺ ने जब अल्लाह की उस आवाज़ को सुना और उनकी

यह मालूम हुआ कि आज उनके नसीब में वह दौलत आ गई है जो इंसानी शराफ़त की इम्तियाज़ी शान और अल्लाह की मुहब्बत का आख़िरी निशान है, तो फूले न समाए और बेपनाह लगाव होने की शक्ल में मूर्ति की तरह हैरान खड़े रह गए। आख़िर फिर उसी तरफ़ से शुरूआत हुई और पूछा गया—

तर्जुमा—*'मूसा! तेरे दाहिने हाथ में यह क्या है?'* (ताहा 20 : 17)

पस फिर क्या था हक़ीक़ी महबूब का सवाल सच्चे इश्क़ जैसा होता है—

'यह नसीब अकबर! लूटने की जाए है।'

इश्क़ की इंतिहा में यह भी ख़्याल न रहा कि सवाल के पैमाने पर ही जवाब को तौला जाए और जो कुछ पूछा गया है, सिर्फ़ उसी क़दर जवाब दिया जाए। बोले—

तर्जुमा—*'यह मेरी लाठी है। इस पर (बकरियां चराते वक़्त) सहारा लिया करता हूं और अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ लेता हूं।'* (ताहा 20 : 18)

अल्लाह! दिल के वलवले और रूह की बेताबियां तो चाहती हैं कि कहे जाऊं और उस बेपनाह लुत्फ़ की लज़्ज़त को हासिल किए जाऊं, लेकिन अदब और हक़ीक़त देखने वाली आंख का हुक्म है कि ख़ामोश हो जाऊं, इसलिए क़िस्सा कोताह करता हूं, वरना दास्ताने इश्क़ बहुत लम्बी है।

इश्क़ कहता है, जुनूं का जोश रहना चाहिए
ज़ब्त की ताकीद है, ख़ामोश रहना चाहिए।
क़िस्सा-ए-मूसा सबक़ है होश वालों के लिए
किस तरह उश्शाक़ को ख़ामोश रहना चाहिए।

अल्लाह की निशानियां

अब अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया—

तर्जुमा—*'मूसा! अपनी इस लाठी को ज़मीन पर डाल दो।'* (ताहा 19-20)

और मूसा ने इस इर्शाद की तामील की—

तर्जुमा—*'मूसा ने लाठी को ज़मीन पर डाल दिया, पस यकायक वह अजगर बनकर दौड़ने लगा।'* (ताहा 20 : 21)

हज़रत मूसा ने जब हैरत में डाल देने वाला यह वाक़िया देखा, तो घबरा

गए और बशर होने के तक़ाज़े का असर लेकर भागने लगे। पीठ फेरकर भागे ही थे कि आवाज़ आई–

तर्जुमा–*'(अल्लाह तआला ने फ़रमाया) मूसा! इसको पकड़ लो और ख़ौफ़ न खाओ, हम इसको इसकी असल हालत पर लौटा देंगे।'*

(ताहा 20 : 21)

हज़रत मूसा की लकड़ी दो शाख़ा थी। अब वही दो शाख़ा अजगर का मुंह नज़र आ रहा था। सख़्त परेशान थे, मगर अल्लाह की क़ुर्बत ने तमानियत व सुकून की हालत पैदा कर दी और उन्होंने बे-ख़ौफ़ होकर उसके मुंह पर हाथ डाल दिया। इस अ़मल के साथ ही फ़ौरन वह दो शाख़ा फिर लाठी बन गया।

अब मूसा को दोबारा पुकारा गया और हुक्म हुआ कि अपने हाथ को गरेबान के अन्दर ले जाकर बग़ल से मस कीजिए और फिर देखिए, वह मरज़ से पाक बे-दाग़ चमकता हुआ निकलेगा–

तर्जुमा–*'और मिला दे अपने हाथ को अपनी बग़ल के साथ, निकल आएगा वह रोशन, बग़ैर किसी मरज़ के (यानी बर्स से पाक) यह दूसरी निशानी है।'* (ताहा 20-22)

मूसा! यह हमारी ओर से तुम्हारी नुबूवत व रिसालत के दो बड़े निशान हैं। ये सच्चाई के तुम्हारे पैग़ाम और हक़ की दलीलों की ज़बरदस्त ताईद करेंगे, पस जिस तरह हमने तुमको नुबूवत व रिसालत से नवाज़ा, उसी तरह तुमको ये दो अ़ज़ीमुश्शान निशान (मोजज़े) भी अ़ता किए–

तर्जुमा–*ताकि हम तुझको अपनी बड़ी निशानियों का मुशाहदा करा दें।'*

(ताहा 20-23)

तर्जुमा–*'पस मेरे परवरदिगार की ओर से फ़िरऔन और उसकी जमाअ़त के मुक़ाबले में तेरे लिए ये दो 'बुरहान' हैं। बेशक वह फ़िरऔन और उसकी जमाअ़त नाफ़रमान क़ौम हैं।'* (ताहा 28-32)

अब जाओ फ़िरऔन और उसकी क़ौम को हिदायत की राह दिखाओ। उन्होंने बहुत सरकशी और नाफ़रमानी अख़्तियार कर रखी है और अपने ग़ुरूर व तकब्बुर और बेइंतिहा ज़ुल्म के साथ उन्होंने बनी इसराईल को ग़ुलाम बना रखा है। सो उनको ग़ुलामी से नजात दिलाओ।'

हज़रत मूसा ने जनाबे बारी में अर्ज़ किया, 'परवरदिगार! मेरे हाथ से एक मिस्री क़त्ल हो गया था, इसलिए यह ख़ौफ़ है कि कहीं वे मुझको क़त्ल न कर दें। मुझे यह भी ख़्याल है कि वे मुझे बहुत ज़ोर से झुठलाएंगे और मुझे झूठा कहेंगे, यह ऊंचा मंसब जब तूने दिया है तो मेरे सीने को फ़राख़ी और नूर से भर दे और इस अहम ख़िदमत को मेरे लिए आसान बना दे और ज़ुबान में पड़ी हुई गिरह को खोल दे, ताकि लोगों को मेरी बात समझने में आसानी हो। चूंकि मेरी बातों में रवानी नहीं है और मेरे मुक़ाबले में मेरा भाई हारून मुझसे ज़्यादा निखरी ज़ुबान में बातें करता है, इसलिए उसको भी अपनी इस नेमत (नुबूवत) से नवाज़ कर मेरे कामों में शरीक बना दे।

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा को इत्मीनान दिलाया कि तुम हमारा पैग़ाम लेकर ज़रूर जाओ और उनको हक़ का रास्ता दिखाओ, वे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। हमारी मदद तुम्हारे साथ है और जो निशान हमने तुमको दिए हैं, वे तुम्हारी कामियाबी की वजह होंगे और नतीजे के तौर पर तुम्हीं ग़ालिब रहोगे। हम तुम्हारी दरख़्वास्त मंज़ूर करते हैं और तुम्हारे भाई हारून को भी तुम्हारा शरीकेकार बनाते हैं। देखो, तुम दोनों फ़िरऔन और उसकी क़ौम को जब हमारे सही रास्ते की ओर बुलाओ, तो उस पैग़ामे हक़ में नर्मी और मिठास के साथ पेश आना, क्या अजब है कि वे नसीहत क़ुबूल कर लें और ख़ुदा का ख़ौफ़ करते हुए ज़ुल्म से बाज़ आ जाएं।

हज़रत मूसा عليه السلام की एक नबी की हैसियत से मिस्र को वापसी और हज़रत हारून عليه السلام को रिसालत का मंसब अता किया जाना

मिस्र में दाख़िला

जब हज़रत मूसा नुबूवत के मंसब से सरफ़राज़ होकर कलामे रब्बानी से फ़ैज़याब बनकर और दावत और हक़ की तब्लीग़ में कामियाबी व कामरानी की ख़ुशख़बरी पाकर मुक़द्दस वादी से उतरे, तो अपनी बीवी के पास पहुंचे,

जो वादी के सामने जंगल में उनके इंतिज़ार में रास्ता देख रही थीं। उनको साथ लिया और यहीं से हुक्मे इलाही की तामील के लिए मिस्र रवाना हो गए। मंज़िलें तै करते हुए जब मिस्र पहुंचे तो रात हो गई थी। ख़ामोशी के साथ मिस्र में दाख़िल होकर अपने मकान पहुंचे, अन्दर दाख़िल हुए और मां के सामने एक मुसाफ़िर की हैसियत में ज़ाहिर हुए। यह बनी इसराईल में मेहमानवाज़ घर था। हज़रत मूसा की ख़ूब ख़ातिर मदारत की गई। इसी बीच उनके बड़े भाई हज़रत हारून आ पहुंचे। यहां पहुंचने से पहले ही हारून को अल्लाह की तरफ़ से रिसालत का मंसब दिया जा चुका था, इसलिए उनको वह्य के ज़रिए हज़रत मूसा का सारा क़िस्सा बता दिया गया था। वह भाई से आकर लिपट गए और फिर उनके घर वालों को घर के अन्दर ले गए और मां को सारा हाल सुनाया। तब सब ख़ानदान के लोग आपस में गले मिले और बिछड़े हुए भाई एक दूसरे की बीती ज़िंदगी के हालात से वाक़िफ़ हुए और मां की दोनों आंखों ने ठंडक हासिल की।

फ़िरऔन के दरबार में हक़ की दावत

बहरहाल हज़रत मूसा अलैहि॰ व हज़रत हारून अलैहि॰ के दर्मियान जब मुलाक़ात और बात-चीत का सिलसिला ख़त्म हुआ, तो अब दोनों ने तै किया कि अल्लाह का हुक्म पहुंचाने के लिए फ़िरऔन के पास चलना और उसको अल्लाह का पैग़ाम सुनाना चाहिए। इस ग़रज़ से दोनों भाई यानी अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर व नबी फ़िरऔन के दरबार में पहुंचे और बग़ैर कोई डर और ख़तरा महसूस किए दाख़िल हो गए। जब फ़िरऔन के तख़्त के क़रीब पहुंचे तो हज़रत मूसा व हारून ने अपने आने की वजह बयान की और बात-चीत शुरू हुई।

तर्जुमा— *'और मूसा ने कहा, ऐ फ़िरऔन! मैं जहानों के परवरदिगार का भेजा हुआ एलची हूं। मेरे लिए किसी तरह ज़ेबा नहीं कि अल्लाह पर हक़ और सच के अलावा कुछ और कहूं, बेशक मैं तुम्हारे लिए, तुम्हारे परवरदिगार के पास से दलील और निशान लाया हूं, पस तू मेरे साथ बनी इसराईल को भेज दे।'*

(अल-आराफ़ 7 : 104-105)

फ़िरऔन ने जवाब में कहा—

तर्जुमा—*क्या हमने तुझको अपने यहां लड़का-सा नहीं पाला और तू हमारे यहां एक मुद्दत तक नहीं रहा और तूने उस ज़माने में जो कुछ काम किया वह तुझे ख़ुद भी मालूम है और तू नाशुक्रगुज़ार है।'* (26 : 19)

हज़रत मूसा ने कहा—

तर्जुमा—*'मैंने वह काम (मिस्री का क़त्ल) ज़रूर किया और मैं चूक जाने वालों में से हूं, फिर यहां से तुम्हारे ख़ौफ़ से भाग गया, फिर मेरे रब ने मुझको सही फ़ैसले की समझ दी और मुझको अपने पैग़म्बरों में से बना लिया (ये उसकी हिक्मत की करिश्मासाज़ियां हैं) और मेरी (परवरिश) का यह एहसान जिसको तू मुझ पर जता रहा है, क्या ऐसा एहसान है कि तू बनी इसराईल को गुलाम बनाए रखे?'* (26 : 22)

फ़िरऔन बोला—

तर्जुमा—*'बोला फ़िरऔन क्या मानी हैं परवरदिगारे आलम के?'* (26-23)

हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया, 'रब्बुल आलमीन' वह हस्ती है, जिसके रब होने के असर से तेरा और तेरे बाप का वजूद भी ख़ाली नहीं है, यानी जिस वक़्त तू वजूद में न आया था, तो तुझको पैदा किया और तेरी तर्बियत की और इसी तरह वह तुझसे पहले तेरे बाप-दादा को आलमे वजूद में लाया और उनको अपने रब होने से नवाज़ा।

फ़िरऔन ने जब इस ख़ामोश कर देने वाली और ज़बरदस्त दलील को सुना और कोई जवाब न बन पड़ा तो दरबारियों से कहने लगा, मुझे ऐसा मालूम होता है कि यह जो ख़ुद को तुम्हारा पैग़म्बर और रसूल कहता है, मजनूं और पागल है।' हज़रत मूसा ﷺ ने जब यह देखा कि उससे अब कोई जवाब नहीं बन पड़ता तो सोचा यह बेहतर है कि ज़्यादा दिलनशीं अन्दाज़े बयान में अल्लाह के रब होने को वाज़ेह किया जाए, इसलिए फ़रमाया : 'यह जो पूरब और पच्छिम और उसके बीच सारी कायनात नज़र आती है उसका रब होना उसकी क़ुदरत में है, उसी को मैं 'रब्बुल आलमीन' कहता हूं। तुम अगर ज़रा भी अक़्ल से काम लो तो इस हक़ीक़त को आसानी से पा सकते हो।

एक बार फिर हज़रत मूसा ﷺ ने फ़िरऔन को याद दिलाया कि जो

रास्ता तूने अख़्तियार किया है, यह सही नहीं है, बल्कि रब्बुल-आलमीन ही वह ज़ात है, जो परस्तिश के लायक़ है और उसके मुक़ाबले में किसी इंसान का रब होने का दावा करना खुला हुआ शिर्क है। ऐ फ़िरऔन! तू इससे बाज़ आ, क्योंकि उस हस्ती ने जिसको मैं रब्बुल-आलमीन कह रहा हूं, हम पर यह वह्य उतारी है कि जो आदमी हक़ के इस क़ौल की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा और झुठलाएगा और उससे मुंह मोड़ेगा, वह अल्लाह के अज़ाब का हक़दार ठहरेगा।

तर्जुमा— *'जो कोई सरताबी करे तो हम पर वह्य उतर चुकी कि उसके लिए अज़ाब का पयाम है।'* (ताहा 20-48)

फ़िरऔन ने फिर वही सवाल दोहराया—

तर्जुमा— *'अगर ऐसा ही है तो बतलाओ तुम्हारा परवरदिगार कौन है? मूसा!'* (ताहा 20 : 49)

मूसा ने कहा—

'हमारा परवरदिगार वह है जिसने हर चीज़ को उसका वजूद बख़्शा और उस पर (ज़िंदगी व अमल की) राह खोल दी।' (ताहा 20 : 50)

तर्जुमा— *'फिर उनका क्या हाल होता है जो पिछले ज़मानों में गुज़र चुके हैं?'* (ताहा 20-51)

मूसा ने कहा—

तर्जुमा— *'इस बात का इल्म मेरे परवरदिगार के पास नविश्ते में है, मेरा परवरदिगार ऐसा नहीं कि खोया जाए या भूल में पड़ जाए, वह परवरदिगार जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन बिछौने की तरह बिछा दी, चलने-फिरने के लिए उसमें राहें निकाल दीं, आसमान से पानी बरसाया, उसकी सिंचाई से हर तरह की वनस्पति के जोड़े पैदा कर दिए, ख़ुद भी खाओ और मवेशी भी चराओ, इस बात में अक़्ल वालों के लिए कैसी खुली निशानियां हैं? उसने इस ज़मीन से तुम्हें पैदा किया, उसी में लौटना है और फिर उसी से दूसरी बार उठाए जाओगे।'* (ताहा 20 : 52-55)

हज़रत हारून का किरदार

तफ़्सीर के उलेमा लिखते हैं कि फ़िरऔन और मूसा के इन मुकालमों में

हज़रत हारून दोनों के दर्मियान तर्जुमान होते और हज़रत मूसा ﷺ की दलीलों और सबूतों को बड़े ही असरदार अंदाज़ के साथ अदा फ़रमाते थे।

फ़िरऔन का रद्देअमल (प्रतिक्रिया)

अलग-अलग मज्लिसों में बात-चीत का यह सिलसिला जारी रहा और फ़िरऔन ने बहस के सिलसिले को ख़त्म करने के लिए दूसरे तरीक़े अख़्तियार किए। आख़िरकार उसने अपनी क़ौम को मुख़ातब करते हुए कहा—

तर्जुमा— *'और फ़िरऔन ने कहा, ऐ जमाअत! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई ख़ुदा नहीं जानता।'* (क़सस 28 : 38)

और फिर (अपने वज़ीर मुशीर को) हुक्म दिया—

तर्जुमा— *'ऐ हामान! मेरे लिए एक बुलन्द इमारत तैयार कर, ताकि मैं आसमानों की बुलन्दियों और उनके ज़रियों तक दस्तरस हासिल कर सकूं और इस तरह मूसा के ख़ुदा का हाल मालूम कर सकूं और मैं तो उसको झूठा समझता हूं।'* (40 : 36-37)

हामान

हामान के बारे में कुरआन ने साफ़ नहीं किया कि यह शख़्सियत का नाम है या ओहदे और मंसब का और न उसने इस पर रोशनी डाली कि हामान ने इमारत तैयार कराई या नहीं। तौरात भी इस बारे में ख़ामोश है।

फ़िरऔन के दरबार में मुज़ाहरा

ग़रज़ फ़िरऔन का ख़दशा बढ़ता ही रहा और नौबत यहां तक पहुंची कि—

तर्जुमा— *'फ़िरऔन ने कहा, अगर तूने मेरे सिवा किसी को माबूद बनाया तो मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा।'* (26-29)

मूसा ने कहा,

तर्जुमा— *अगरचे मैं तेरे पास ज़ाहिर निशान लाया हूं, तब भी?* (शुअरा 30)

फ़िरऔन ने कहा,

तर्जुमा—*'अगर तू सच्चा है, तो वह निशान दिखा।'*

हज़रत मूसा आगे बढ़े और भरे दरबार में फ़िरऔन के सामने अपनी लाठी को ज़मीन पर डाला। उसी वक़्त उसने अजगर की शक्ल अख़्तियार कर ली और यह हक़ीक़त थी, नज़र का धोखा न था और फिर हज़रत मूसा ने अपने हाथ को गरेबान के अन्दर ले जाकर बाहर निकाला तो वह एक रोशन सितारे की तरह चमकता हुआ नज़र आ रहा था। यह दूसरी निशानी और दूसरा मोजज़ा था।

फ़िरऔन के दरबारियों ने जब इस तरह एक इसराईली के हाथों अपनी क़ौम और अपने बादशाह की हार को देखा, तो तिलमिला उठे और कहने लगे, बेशक यह बहुत बड़ा माहिर जादूगर है और उसने यह सब ढोंग इसलिए रचाया है कि तुम पर ग़ालिब आकर तुमको तुम्हारी सरज़मीन (मिस्र) से बाहर निकाल दे, इसलिए अब हमको सोचना है कि उसके बारे में क्या होना चाहिए। आख़िर फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के आपसी मश्विरे से यह तै पाया कि फ़िलहाल तो इसको और हारून को मोहलत दो और इस मुद्दत में पूरे राज्य से माहिर जादूगरों को राजधानी में जमा करो और फिर मूसा का मुक़ाबला कराओ, यह हार खा जाएगा और इसके तमाम इरादे ख़ाक में मिल जाएंगे, तब फ़िरऔन ने हज़रत मूसा से कहा, मूसा! हम समझ गए कि तू इस हीले से हमको मिस्र की धरती से बेदख़ल करना चाहता है, इसलिए तेरा इलाज अब इसके सिवा कुछ नहीं कि बड़े-बड़े माहिर जादूगरों को जमा करके तुझको हार दिला दी जाए। अब तेरे और हमारे दर्मियान मुक़ाबले के दिन का समझौता होना चाहिए और फिर न हम उससे टलेंगे और न तुम वादाख़िलाफ़ी करना।' हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया कि इस काम के लिए सबसे बेहतर वक़्त 'यौमुज़्ज़ीना' (जश्न का दिन) है, उस दिन सूरज बुलन्द होने पर हम सबको मौजूद होना चाहिए।

नोट : मिस्रियों की ईद का दिन जो 'वफ़ाउन्नैल' के नाम से मशहूर है, क्योंकि उनके यहां तमाम ईदों में सबसे बड़ी ईद का दिन यही था।

ग़रज़ हज़रत मूसा और फ़िरऔन के दर्मियान 'यौमुज़्ज़ीना' तै पाया और

फ़िरऔन ने उसी वक़्त अपने ज़िम्मेदारों और दरबारियों के नाम हुक्म जारी कर दिए कि पूरे राज्य में जो भी मशहूर और माहिर जादूगर हों, उनको जल्द-से-जल्द राजधानी रवाना कर दो।

जादूगरों की हार और फ़िरऔन का रद्देअमल (प्रतिक्रिया)

बहरहाल जश्न का दिन आ पहुंचा, जश्न के मैदान में तमाम शाहाना कर्र व फ़र्र के साथ फ़िरऔन तख़्तनशीं है और दरबारी भी दर्जे के एतबार से क़रीने से बैठे हैं और लाखों इंसान हक़ व बातिल के मारके का नज़ारा करने को जमा हैं। एक तरफ़ मिस्र के मशहूर जादूगरों का गिरोह अपने साज़ व सामान से लैस खड़ा है और दूसरी तरफ़ अल्लाह के रसूल, हक़ के पैग़म्बर, सच्चाई और रास्ती के पैकर हज़रत मूसा व हारून खड़े हैं। ऐसी हालत में—

तर्जुमा— *'जादूगर फ़िरऔन के पास आए और कहने लगे, क्या अगर हम मूसा पर ग़ालिब आ जाएं, तो हमारे लिए इनाम व इकराम है? फ़िरऔन ने कहा, हां, ज़रूर और यही नहीं बल्कि तुम शाही दरबार के मुक़र्रब बनोगे।'*

(7-113-114)

जादूगरों ने जब इस तरफ़ से इत्मीनान कर लिया तो हज़रत मूसा की तरफ़ मुतवज्जह हुए और हज़रत मूसा ने कहा—

तर्जुमा— *'अफ़सोस तुम पर देखो, अल्लाह पर झूठी तोहमत न लगाओ, ऐसा न हो कि वह कोई अज़ाब भेजकर तुम्हारी जड़ उखाड़ दे। जिस किसी ने झूठ बात बनाई, वह नामुराद हुआ।'* (20 : 61)

जादूगरों ने कहा—

तर्जुमा—*ऐ मूसा! या तो तुम अपनी लाठी फेंको या फिर हम फेंकें। मूसा ने कहा, तुम ही पहले फेंको। फिर जब जादूगरों ने जादू की बनाई हुई लाठियां और रस्सियां फेंकीं, तो लोगों की निगाहें जादू से मार दीं और अपने करतबों से उनमें दहशत फैला दी और बहुत बड़ा जादू बना लाए।*

(आराफ़ 7 : 115-116)

तर्जुमा— *'और उस वक़्त हमने मूसा पर वह्य की कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो। ज्यों ही उसने लाठी फेंकी तो अचानक क्या हुआ कि जो कुछ झूठी*

नुमाइश जादूगरों की थी, सब उसने निगल कर नाबूद कर दी, पस हक़ क़ायम हो गया और वे जो अमल कर रहे थे, बातिल होकर रह गया। पस इस मौक़े पर वे मग़्लूब हो गए।'

(आराफ़ 7 : 117-118)

जादूगरों ने जब मूसा के असा का यह करिश्मा देखा तो—

तर्जुमा—*'सब जादूगर सज्दे में गिर पड़े, कहने लगे, हम तो जहानों के परवरदिगार पर ईमान ले आए, जो मूसा व हारून का परवरदिगार है।'*

(आराफ़ 7 : 120-122)

इस हालत को देखकर फ़िरऔन ने कहा—

तर्जुमा—*तुम बग़ैर मेरे हुक्म के मूसा पर ईमान लाए, ज़रूर यह तुम्हारा सरदार है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, अच्छा देखो, मैं क्या करता हूं। मैं तुम्हारे हाथ-पांव उलटे-सीधे कटवा दूंगा और खजूर के तनों पर सूली दूंगा।*

(ताहा 71)

मगर सच्चा ईमान जब किसी को नसीब हो जाता है 'भले ही वह एक लम्हे ही का क्यों न हो' वह ऐसी बेपनाह रूहानी क़ूवत पैदा कर देता है कि कायनात की कोई ज़बरदस्त से ज़बरदस्त ताक़त भी उसको मरऊब नहीं कर सकती।

इसलिए जादूगरों को फ़िरऔन की जाबिराना धमकियां मरऊब न कर सकीं और उन्होंने कहा—

तर्जुमा—*'हम यह कभी नहीं कर सकते कि सच्चाई की जो रोशन दलीलें हमारे सामने आ गई हैं और जिस अल्लाह ने हमें पैदा किया है, उससे मुंह मोड़ कर तेरा हुक्म मान लें, तू जो फ़ैसला करना चाहता है, कर गुज़र, तू ज़्यादा से ज़्यादा जो कुछ कर सकता है वह यही है कि दुनिया की इस ज़िंदगी का फ़ैसला कर दे। हम तो अपने परवरदिगार पर ईमान ला चुके कि वह हमारी ख़ताएं बख़्श दे, ख़ास तौर से जादूगरी की ख़ता कि जिस पर तूने हमें मजबूर किया था। हमारे लिए अल्लाह ही बेहतर है और वही बाक़ी रहने वाला है।'*

(ताहा 72-73)

ग़रज़ हक़ व बातिल की इस कशमकश में फ़िरऔन और उसके दरबारियों को ज़बरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा और वे खुलेआम ज़लील व

रुसवा हुए और हज़रत मूसा अलै॰ पर अल्लाह का वायदा पूरा हुआ और कामियाबी का सेहरा उन्हीं के सर रहा और जादूगरों के अलावा एक छोटी सी जमाअ़त इसराईली नवजवानों में से भी मुसलमान हो गई।

तर्जुमा—*'फिर मूसा पर कोई ईमान नहीं लाया मगर सिर्फ़ एक गिरोह जो उसकी क़ौम के नवजवानों का गिरोह था, वह भी फ़िरऔन और उसके सरदारों से डरता हुआ कि कहीं किसी मुसीबत में न डाल दे।'* (यूनुस 10 : 83)

हज़रत मूसा की इस महदूद कामियाबी से मुतास्सिर होकर—

तर्जुमा—*फ़िरऔन की क़ौम में से एक जमाअ़त ने फ़िरऔन से कहा, क्या, तू मूसा और उसकी क़ौम को यों ही छोड़ देगा कि वह ज़मीन (मिस्र) में फ़साद करते फिरें और तुझको और तेरे देवताओं को ठुकरा दें। फ़िरऔन ने कहा हम इनके लड़कों को क़त्ल कर देंगे और उनकी लड़कियों को (बांदिया बनाने के लिए) जिंदा रखेंगे।* (आराफ़ : 127)

यह फ़िरऔन का दूसरा एलान था जो बनी इसराईल के बच्चों के क़त्ल से मुताल्लिक़ किया गया—

बनी इसराईल की बेचैनी

हज़रत मूसा अलै॰ को जब फ़िरऔन और उसके दरबारियों की बात-चीत का हाल मालूम हुआ, तो उन्होंने बनी इसराईल को जमा करके सब्र और अल्लाह पर भरोसा करने की तलक़ीन की, बनी इसराईल ने सुनकर जवाब दिया कि मूसा, हम पहले ही से मुसीबतों में गिरफ़्तार थे, अब तेरे आने पर कुछ उम्मीद बंधी थी, मगर तेरे आने के बाद भी वही मुसीबत बाक़ी रही, यह तो सख़्त आफ़त का सामना है। हज़रत मूसा अलै॰ ने तसल्ली दी कि अल्लाह का वायदा सच्चा है, घबराओ नहीं, तुम्हीं कामयाब रहोगे और तुम्हारे दुश्मन को हलाकत का मुंह देखना पड़ेगा। ज़मीन का मालिक फ़िरऔन या उसकी क़ौम नहीं है, बल्कि रब्बुल आलमीन है जो मुख़्तारे मुतलक़ है, पस वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे उसका मालिक बना दे और अंजामेकार यह इनाम मुत्तक़ियों ही का हिस्सा है।

इसके बाद हज़रत मूसा अलै॰ ने मुसमलानों से कहा कि फ़िरऔन के

जुल्मों का सिलसिला अभी ख़त्म नहीं हुआ और वह बनी इसराईल और मोमिनों को आज़ादी के साथ मिस्र से चले जाने पर राज़ी नहीं है और ही अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ की, ऐ अल्लाह! फ़िरऔन फ़िरऔनियों को जो तूने दौलत व सरवत अता फ़रमाई है; उस पर शुक्र करने के बजाए वे तेरे बन्दों पर जब्र और ज़ुल्म व सितम करने पर आ हो गए हैं और हक़ के तेरे रास्ते को न ये ख़ुद क़ुबूल करते हैं और न को क़ुबूल करने देते हैं, बल्कि जब्र व तशद्दुद से काम लेकर उनके आड़े हैं, इसलिए अब तो उनके ज़ुल्मों का मज़ा उनको चखा और उनकी दौल सरवत को तबाह व हलाक कर दे, जिस पर उन्हें घमंड है और जिस तर ईमान की सच्चाई को ठुकराते हैं, तू भी उनको ईमान की दौलत के बजाए ऐसा दर्दनाक अज़ाब दे कि उनकी दास्तान दूसरों के लिए इबरत बन जा

फ़िरऔन की जवाबी कार्रवाई

फ़िरऔन ने अपने सरदारों से अगरचे इत्मीनान का इज़्हार कर दिया लेकिन हज़रत मूसा के रूहानी ग़लबे का ख़्याल उसको अन्दर ही अन्दर घुल डालता था और बनी इसराईल के लड़कों के क़त्ल के हुक्म से भी उनके क़ को सुकून नसीब न था, आख़िरकार उसने कहा—

तर्जुमा—*'मुझे मूसा को क़त्ल ही कर लेने दो और उसको चाहिए अपने रब को पुकारे।'* (मोमिन

हज़रत मूसा को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने कहा—

तर्जुमा—*'मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह चाहता हूं, हर उस घमं से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं लाता।'* (मोमिन

मिस्री मर्दे मोमिन

फ़िरऔन और उसके सरदार जब उस बात-चीत में लगे हुए थे, तो उ मज्लिस में एक मिस्री 'मर्दे मोमिन' भी था, जिसने अभी तक अपने इस्ला को छिपा रखा था। उसने जब यह सुना तो अपनी क़ौम के उन लोगों के मुक़ाबले में हज़रत मूसा (अलैहि०) की ओर से बचाव करने की कोशिश शुरू की,

और उनको समझाया कि तुम एक ऐसे आदमी को क़त्ल करने चले हो जो सच्ची बात कहता है कि मेरा परवरदिगार अल्लाह है और जो तुम्हारे सामने अपनी सच्चाई पर बेहतरीन दलील और निशनियां लाया है। मान लीजिए अगर वह झूठा है तो उसके झूठ से तुमको कुछ नुक़्सान नहीं पहुंच रहा है और वह सच्चा है तो फिर उसकी उन धमकियों से डरो जो वह तुमको अल्लाह की ओर से सुनाता है।

फ़िरऔन ने मर्दे मोमिन की बात काटते हुए कहा कि मैं तुमको वही मश्विरा दे रहा हूं, जिसको अपने ख़्याल में दुरुस्त समझता हूं और तुम्हारी भलाई की बात कह रहा हूं।

मर्दे मोमिन ने आख़िरी नसीहत के तौर पर कहा : 'ऐ मेरी क़ौम! मुझे यह डर है कि हमारा हाल कहीं उन पिछली क़ौमों का-सा न हो जाए जो नूह-आ़द और समूद की कौमों के नाम से मशहूर हैं या उनके बाद क़ौमें आईं। अल्लाह अपने बन्दों पर कभी ज़ुल्म नहीं करता, बल्कि उन क़ौमों की हलाकत ख़ुद अपने इसी क़िस्म के आमाल की बदौलत पेश आई थी जो आज तुम मूसा के ख़िलाफ़ सोच रहे हो तो तुम आज दुनिया में 'बड़े' होने की सोच में पड़े हो और मैं तुम्हारे लिए उस दिन से डर रहा हूं जब क़ियामत का दिन होगा और सब एक दूसरे को पुकारेंगे, मगर उस वक़्त तुम्हें कोई अल्लाह के अ़ज़ाब से बचाने वाला न होगा।

ऐ क़ौम के सरदारो! तुम्हारा हाल तो यह है कि इस सरज़मीन में जब हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने अल्लाह का पैग़ाम सुनाया था तब भी तुम यानी तुम्हारे बाप-दादा इसी शक और तरद्दुद में पड़े रहे और इन पर ईमान न लाए और जब इनकी वफ़ात हो गई, तो कहने लगे कि अब अल्लाह अपना कोई रसूल न भेजेगा। अब यही मामला तुम मूसा के साथ कर रहे हो। ख़ुदा के लिए समझो और सीधी राह अपनाओ।

जब फ़िरऔन और उसके सरदारों ने उस मर्दे मोमिन की ये बातें सुनीं तो उनका रुख़ मूसा से हटकर उसकी तरफ़ हो गया और फ़िरऔनियों ने चाहा कि पहले उसकी ही ख़बर लें और उसको क़त्ल कर दें, मगर अल्लाह तआ़ला ने इस नापाक इरादे में उनको कामयाब न होने दिया।

तर्जुमा–*'सो अल्लाह तआला ने उनको उनकी तदबीरों के शर से ब लिया।'* (अल-मोमिन 4

फ़िरऔन का एलान

ग़रज़ जब फ़िरऔन और उसके सरदारों को मूसा को हराने में नाका हुई तो फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में एलान किया।

तर्जुमा–*ऐ क़ौम! क्या मैं मिस्र के ताज व तख़्त का मालिक नहीं हूं अ मेरी हुकूमत के क़दमों के नीचे ये नहरें बह रही हैं? क्या तुम (मेरे इस ज व जलाल को) नहीं देखते? (अब बताओ) क्या मैं बुलन्द व बाला हूं या जिसको न इज़्ज़त नसीब और जो बात भी साफ़ न कर सकता हो? (अगर अपने ख़ुदा के यहां इज़्ज़त वाला है) तो क्यों उस पर (आसमान से) सोने कंगन नहीं गिरते या फ़रिश्ते ही उसके सामने परे बांध कर खड़े नहीं होते*

(अज़-ज़ुख़रुफ़ 51-5

मिस्रियों पर ख़ुदा का क़हर

ग़रज़ हज़रत मूसा ﷺ की रुश्द व हिदायत का फ़िरऔन और उस सरदारों पर मुतलक़ असर नहीं हुआ और कुछ को छोड़कर आम मिस्रियों भी उन्हीं की पैरवी की और सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि फ़िरऔन के हुक्म से ब इसराईल की नरीना औलाद यानी लड़के क़त्ल किए जाने लगे। मूसा तौहीन व तज़्लील होने लगी और फ़िरऔन ने अपने रब और माबूद होने ज़ोर-शोर से तब्लीग़ शुरू कर दी। तब हज़रत मूसा पर वह्य आई कि फ़िरऔ को मुत्तला कर दो कि अगर तुम्हारा यही तौर-तरीक़ा रहा, तो बहुत जल्द तु पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होने वाला है।

चुनांचे उन्होंने जब इस पर भी ध्यान न दिया तो अब एक के बाद ए अल्लाह के अज़ाब आने लगे। यह देखकर फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने य तरीक़ा अख़्तियार किया कि जब अल्लाह का अज़ाब किसी एक शक्ल ज़ाहिर होता, तो फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम हज़रत मूसा से वायदा क

लगती, अच्छा हम ईमान ले आएंगे, तू अपने ख़ुदा से यह दुआ कर कि यह अ़ज़ाब जाता रहे और जब वह अ़ज़ाब जाता रहता, तो फिर सरकशी और नाफ़रमानी पर उतर आते, फिर अ़ज़ाब जब दूसरी शक्ल में आता तो कहते कि अच्छा हम बनी इसराईल को आज़ाद करके तेरे साथ रवाना कर देंगे। दुआ़ कर कि यह अ़ज़ाब ख़त्म हो जाए और जब हज़रत मूसा की दुआ़ से उनको फिर मोहलत मिल जाती और अ़ज़ाब ख़त्म हो जाता, तो फिर उसी तरह मुख़ालफ़त पर उतर आते और इस तरह अल्लाह की ओर से अलग-अलग क़िस्म के निशान ज़ाहिर हुए और फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम को बार-बार मोहलत दी जाती रही। क़ुरआन उन सात अ़ज़ाब की निशानियों का इस तरह ज़िक्र करता है—

तर्जुमा— *'और हमने पकड़ लिया फ़िरऔ़न वालों को अकालों में और मेवों के नुक़्सान में ताकि वे नसीहत मानें। फिर हमने भेजा उन पर तूफ़ान और टिड्डी चीचड़ी और मेंढक और ख़ून, बहुत-सी निशानियां अलग-अलग दीं।*

(अल-आराफ़ : 130-133)

इन आयतों में बयान की गई निशानियों में जूं और मेंढक के बारे में तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि इन चीज़ों की यह हालत थी कि बनी इसराईल के खाने-पीने, पहनने और बरतने की कोई चीज़ ऐसी न थी, जिनमें ये वजूद नज़र न आते हों और ख़ून के बारे में लिखा है कि नील नदी का पानी लहू के रंग का हो गया था और उसके मज़े ने उसका पीना मुश्किल कर दिया था और पानी में मछलियां तक मर गई थीं।

नोट : -'क़ुम्मल' डिक्शनरी के एतबार से बहुत मानी रखने वाला लफ़्ज़ है। इन तमाम मानी की जांच-पड़ताल इस तरह हो सकती है कि अल्लाह ने फ़िरऔ़नियों पर यह अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाया कि इंसानों पर जुएं मुसल्लत कर दीं, खाने-पीने की चीज़ों में छोटी मक्खियों को फैला दिया। इन जानवरों में हलाक करने वाला कीड़ा पैदा कर दिया, अनाज और ग़ल्ले में सुरसुरी पैदा कर दी। इन सब हलाक करने वाले कीड़ों को क़ुरआन ने एक लफ़्ज़ क़ुम्मल से ताबीर किया है।

बनी इसराईल का मिस्र से लौटना

बनी इसराईल की रवानगी

जब मामला इस हद तक पहुंच गया कि अज़ाब की बातें भी फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम पर असर न डाल सकीं, तो अल्लाह ने हज़रत मूसा को हुक्म दिया कि अब वक़्त आ गया है कि तुम बनी इसराईल को मिस्र से निकाल कर बाप-दादा की सरज़मीन की तरफ़ ले जाओ। इसलिए हज़रत मूसा और हारून बनी इसराईल को लेकर रातों रात लाल सागर के रास्ते पर हो लिए और रवाना होने से पहले मिस्री औरतों के ज़ेवरात और क़ीमती चीज़ें जो एक त्यौहार में उधार लिए थे, वह भी वापस न कर सके कि कहीं मिस्रियों पर असल हाल न खुल जाए।

फ़िरऔन का डूबना

हज़रत मूसा ने उनको तसल्ली दी और फ़रमाया : डरो नहीं, अल्लाह का वायदा सच्चा है, वह तुमको नजात देगा और तुम ही कामयाब होगे और फिर अल्लाह की बारगाह में हाथ फैलाकर दुआ करने लगे। अल्लाह की वह्य ने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी को पानी पर मारो ताकि पानी फटकर बीच में रास्ता निकल आए। चुनांचे मूसा ने ऐसा ही किया, जब उन्होंने समुद्र पर अपना डंडा मारा तो पानी फटकर दोनों तरफ़ दो पहाड़ों की तरह खड़ा हो गया और बीच में रास्ता निकल आया और हज़रत मूसा के हुक्म से तमाम बनी इसराईल उसमें उतर गए और सूखी ज़मीन की तरह उससे पार हो गए। फ़िरऔन ने यह देखा तो अपनी क़ौम से मुख़ातब होकर कहने लगा, यह मेरी करिश्मासाज़ी है कि बनी इसराईल को तुम जा पकड़ो, इसलिए बढ़े चलो, चुनांचे फ़िरऔन और उसकी पूरी फ़ौज बनी इसराईल के पीछे उसी रास्ते पर चल पड़ी लेकिन अल्लाह तआला की करिश्मासाज़ी देखिए कि जब बनी इसराईल का हर आदमी दूसरे किनारे पर सलामती के साथ पहुंच गया, तो पानी अल्लाह के हुक्म से फिर अपनी असली हालत पर आ गया और फ़िरऔन

और उसकी तमाम फ़ौज जो अभी बीच ही में थी, डूब गयी।

जब फ़िरऔन डूबने लगा और अज़ाब के फ़रिश्ते सामने नज़र आने लगे, तो पुकार कर कहने लगा, 'मैं उसी एक ख़ुदा पर जिसका कोई शरीक नहीं, ईमान लाता हूं जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए हैं और मैं फ़रमांबरदारों में से हूं।' मगर यह ईमान चूंकि हक़ीक़ी ईमान न था, बल्कि पिछले फ़रेबकारियों की तरह नजात हासिल करने के लिए यह भी एक डांवाडोल बात थी, इसलिए अल्लाह की तरफ़ से यह जवाब मिला—

तर्जुमा—*'अब यह कह रहा है, हालांकि इससे पहले जब इक़रार का वक़्त था, उसमें इंकार और ख़िलाफ़ ही करता रहा और हक़ीक़त में तू फ़साद पैदा करने वालों में से है।'* (यूनुस 91)

यानी अल्लाह को ख़ूब मालूम है कि तू 'मुस्लिमीन' में से नहीं, बल्कि फ़साद पैदा करने वालों में से है।

हक़ीक़त में फ़िरऔन की यह पुकार ऐसी पुकार थी जो ईमान लाने और यक़ीन हासिल करने के लिए नहीं, बल्कि अल्लाह के अज़ाब को देख लेने के बाद इज़्तिरारी और बे-अख़्तियारी की हालत में निकलती है और अज़ाब के देखने के वक़्त 'ईमान व यक़ीन' की यह सदा हज़रत मूसा अलै॰ की इस दुआ का नतीजा थी, जिसका ज़िक्र पिछले पन्नों में पढ़ चुके हैं।

तर्जुमा—*'पस ये उस वक़्त तक ईमान न लाएं जब तक अपनी हलाकत और अज़ाब को आंखों से देख न लें। अल्लाह ने कहा, बेशक तुम दोनों की दुआ क़ुबूल कर ली गई।'* (यूनुस 88-89)

इस मौक़े पर फ़िरऔन की पुकार पर अल्लाह की ओर से यह भी जवाब दिया गया—

तर्जुमा—*आज के दिन हम तेरे जिस्म को उन लोगों के लिए जो तेरे पीछे आने वाले हैं, नजात देंगे कि वह (इबरत का) निशान है।* (यूनुस 92)

फ़िरऔन की लाश

मिस्रवाद (Egyptiology) के मिस्री चिड़ियाघर में एक लाश आज तक महफ़ूज़ है। ऐसा मालूम होता है कि समुद्र में डूबे रहने की वजह से उसकी

नाक को मछली ने खा लिया है। कहा जाता है कि यह लाश मूसा के दौर के फ़िरऔन (Mernepatah) की है। (अल्लाह बेहतर जाने) बहरहाल यह हर आम व ख़ास की तमाशागाह है।

समुद्र का फटना

क़ुरआन मजीद नें बनी इसराईल के रवाना होने, फ़िरऔन के डूबने और बनी इसराईल की नजात के वाक़िए को बहुत थोड़े में बयान किया है और उसने उसके सिर्फ़ ज़रूरी हिस्सों का ही ज़िक्र किया है। अलबत्ता इससे मुताल्लिक़, इबरत, नसीहत, बसीरत, मौअ्ज़त के मामले थोड़ा तफ़्सील के साथ ज़िक्र किए गए हैं।

चुनांचे अल्लाह फ़रमाता है–

तर्जुमा–*'और (फिर देखो) हमने मूसा पर वह्य भेजी थी कि (अब) मेरे बन्दों को रातों-रात (मिस्र से) निकाल ले जा, फिर समुद्र में उनके गुज़रने के लिए ख़ुश्की का रास्ता निकाल ले, तुझे न तो पीछा करने वालों का डर होगा और न किसी तरह का ख़तरा, फिर (जब मूसा अपनी क़ौम को लेकर निकल गया तो) फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उसका पीछा किया, पस पानी का रेला (जैसा कुछ उन पर छाने वाला था) छा गया (यानी जो कुछ उन पर गुज़रनी थी, गुज़र गई) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम पर (नजात का) रास्ता गुम कर दिया, तो उन्हें सीधा रास्ता न दिखाया।'* (ताहा 77-79)

तर्जुमा–*'और इस तरह (ऐ पैग़म्बर!) तेरे परवरदिगार का पसन्दीदा फ़रमान बनी इसराईल के हक़ में पूरा हुआ कि (हिम्मत व सबात के साथ जमे रहे थे) और फ़िरऔन और उसका गिरोह (अपनी ताक़त व शौकत के लिए) जो कुछ बनाता रहा था और जो कुछ (इमारतों की) बुलन्दियां उठाई थीं, वे सब दरहम बरहम कर दीं।'* (अल-आराफ़ 137)

तर्जुमा–*'और बुराई करने लगे वह और उसकी फ़ौज मुल्क में नाहक़ और समझे कि वे हमारी ओर फिरकर न आएंगे, फिर पकड़ा हमने और उसके लश्करों को, फिर फेंक दिया हमने उनको दरिया में, सो देख ले कैसा अंजाम हुआ गुनाहगारों का।'* (अल-क़सस 40)

तर्जुमा– *'बहुत से छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेतियां और घर उम्दा और आराम का सामान जिनमें बातें बनाया करते थे, यों ही हुआ और वह सब हाथ लगा दिया हमने एक दूसरी क़ौम के, फिर न रोया उन पर आसमान और ज़मीन और न मिली उनको ढील।'* (अद-दुख़ान 27-28)

बड़ा मोजज़ा

कुरआन साफ़ कहता है कि लाल सागर में फ़िरऔन के डूबने और मूसा के नजात मिलने का यह वाक़िया मूसा की ताईद में एक बड़ा ही शानदार मोजज़ा था, जिसने माद्दी क़हरमानियत और सामाने इस्तब्दादियत को एक लम्हे में हरा कर मज़्लूम क़ौम को ज़ालिम क़ौम के पंजे से नजात दिलाई।

'वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०'

तर्जुमा– *'और हमने मूसा और उसके तमाम साथियों को नजात दी, फिर दूसरों को (यानी उनके दुश्मनों को) डुबो दिया। बेशक इस वाक़िए में (अल्लाह का ज़बरदस्त) निशान (मोजज़ा) है और उनके अक्सर ईमान नहीं लाते और इक़रार नहीं करते और बेशक तेरा रब ही (सब पर) ग़ालिब, रहमत वाला है।'* (अश-शुअ़रा 65 : 67)

फ़िरऔ़न, फ़िरऔ़न की क़ौम और क़ियामत का अ़ज़ाब

फ़िरऔ़न और हज़रत मूसा ﷺ का यह वाक़िया हक़ व बातिल के मारके में एक शानदार मारका है—एक ओर ग़ुरूर व घमंड, जब्र व ज़ुल्म, तो दूसरी ओर मज़्लूमियत, ख़ुदापरस्ती और सब्र व इस्तिक़ामत की फ़त्ह व कामरानी का अजीब व ग़रीब मुरक़्क़ा। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम को दुनिया की हलाकत के बाद इबरत व बसीरत के लिए इस तरफ़ भी तवज्जोह दिलाई है कि इस क़िस्म के लोगों के लिए आख़िरत में किस क़दर सख़्त अ़ज़ाब और फिटकार के कैसे इबतरनाक सामान मुहैया हैं—

तर्जुमा– *'और उलट पड़ा फ़िरऔ़न वालों पर बुरी तरह का अ़ज़ाब वह आग है कि दिखला देते हैं उनको सुबह व शाम और जिस दिन क़ायम होगी*

क़ियामत, हुक्म होगा दाख़िल करो फ़िरऔन वालों को सख़्त से सख़्त अ़ज़ाब में।'
(अल-मोमिन : 45 : 46)

हज़रत मूसा ﷺ और बनी इसराईल समुद्र पार करने के बाद

बनी इसराईल की पहली मांग—

हज़रत मूसा और बनी इसराईल ने सलामती के साथ लाल सागर पार करने के बाद शोर बयाबान से होते हुए सीना की राह ली। सीना के मूर्ति-घरों में बुत के पुजारी, बुतों की पूजा में लगे हुए थे। बनी इसराईल ने यह मंज़र देखा तो कहने लगे, मूसा! हमको भी ऐसे माबूद बना दे, ताकि हम भी इसी की तरह इनकी पूजा करें। हज़रत मूसा ने क़ौम की ज़ुबानी यह शिर्क भरी मांग सुनी, तो बहुत ज़्यादा नाराज़ हुए और बनी इसराईल को डांटा और इतनी शर्म दिलाई और मलामत की कि बदबख़्तो! एक अल्लाह की पूजा छोड़कर बुतों की पूजा की तरफ़ झुकाव है और अल्लाह की उन तमाम नेमतों को भूल बैठे जिन्हें अपनी आंखों से देख चुके हो।

बनी इसराईल पर अल्लाह के इनाम और खुली निशानियां

चश्मों का जारी होना

बनी इसराईल अब सीना की घाटी में थे, यहां बहुत तेज़ गर्मी पड़ती है। दूर-दूर तक हरियाली और पानी का पता नहीं। बनी इसराईल हज़रत मूसा से फ़रियाद करने लगे, तब हज़रत मूसा ने अल्लाह के दरबार में इल्तिजा की और अल्लाह की वह्य ने उनको हुक्म दिया कि अपना डंडा ज़मीन पर मारो। हज़रत मूसा ने इर्शाद की तामील की तो फ़ौरन बारह सोते उबल पड़े और बनी इसराईल के बारह क़बीलों के लिए अलग-अलग चश्मे जारी हो गए।

मन्न व सलवा

पानी के इस तरह जुटाए जाने के बाद बनी इसराईल ने भूख की

शिकायत की। हज़रत मूसा ने फिर रब्बुल आलमीन से दुआ की। हज़रत मूसा की दुआ क़ुबूल हुई और ऐसा हुआ कि जब रात बीत गई और सुबह हुई तो बनी इसराईल ने देखा कि ज़मीन और पेड़ों पर जगह-जगह सफ़ेद ओले के दाने की तरह ओस की शक्ल में आसमान से कोई चीज़ बरस कर गिरी हुई है। खाया, तो बहुत मीठे हलवे की तरह थी। यह 'मन्न' था और दिन में तेज़ हवा चली और थोड़ी देर में बटेरों के झुंड के झुंड ज़मीन पर उतरे और फैल गए। बनी इसराईल उनको भूनकर खाने लगे, यह 'सलवा' था।

बादलों का साया

अब बनी इसराईल ने गर्मी की तेज़ी और साएदार पेड़ों और मकानों की राहत मयस्सर न होने की शिकायत की, तो फिर हज़रत मूसा ने अल्लाह तआला से दुआ की, जो क़ुबूल हुई और आसमान पर बादलों के परे के परे बनी इसराईल पर साया फ़गन हो गए और बनी इसराईल जहां भी जाते, बादल साया फ़गन रहते।

बनी इसराईल की नाशुक्री

अल्लाह की इन मेहरबानियों और बख़्शिशों का बनी इसराईल शुक्र तो क्या अदा करते, एक दिन जमा होकर कहने लगे, 'मूसा! हम रोज़-रोज़ एक ही खाना खाते रहने से घबरा गए हैं, हमको तो इस 'मन्न व सलवा' की ज़रूरत नहीं है। अपने अल्लाह से दुआ कर कि वह हमारे लिए ज़मीन से बाक़ला, खीरा, ककड़ी, मसूर, लहसुन, प्याज़ जैसी चीज़ें उगाए ताकि हम ख़ूब खाएं। जवाब में हज़रत मूसा عليه السلام ने कहा—

तर्जुमा— *'क्या तुम बेहतर और उम्दा चीज़ के बदले में घटिया चीज़ की ख़्वाहिश करते हो, किसी शहर में जा क़ियाम करो, बेशक वहां यह सब कुछ मिल जाएगा, जिसके तुम तलबगार हो।'* (अल-बक़रः 61)

तूर पर एतिकाफ़

हज़रत मूसा से अल्लाह का वायदा था कि जब बनी इसराईल ग़ुलामी

से आज़ाद हो जाएंगे, तुमको 'शरीअत' दी जाएगी। अब हज़रत मूसा अल्लाह की वह्य के इशारे तूर पर पहुंचे और वहां अल्लाह की इबादत के लिए एतिकाफ़ किया।

तर्जुमा—*'और हमने मूसा से तीस रातों का वायदा किया था, फिर दस रातें बढ़ाकर उसे पूरा (चिल्ला) कर दिया। इस तरह परवरदिगार के हुज़ूर आने की मुक़र्रर की हुई मीयाद यानी चालीस रातों की मीयाद पूरी हो गई।'*

(अल-आराफ़ 142)

जब हज़रत मूसा तूर पर चिल्लाकशी के लिए तशरीफ़ ले गए तो—

तर्जुमा—*और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, तू मेरे पीछे मेरी क़ौम में नायब रहना और उनकी इस्लाह का ख़्याल करना और फ़साद पैदा करने वाले की राह पर न चलना।* (अल-आराफ़ 142)

तजल्ली-ए-ज़ात

जब चिल्ला पूरा हो गया तो अल्लाह ने हज़रत मूसा को हम कलामी का शरफ़ बख़्शा, तो वह पुकार उठे—

तर्जुमा—*'परवरदिगार! मुझे अपना जमाल दिखा कि तेरी तरफ़ नज़र कर सकूं। हुक्म हुआ, तू मुझे नहीं देख सकेगा, मगर हां, इस पहाड़ की तरफ़ देख! अगर यह (तजल्ली-ए-हक़ की ताब ले आया और) अपनी जगह टिका रहा, तो मुझे देख सकेगा, फिर जब उसके परवरदिगार ने तजल्ली की तो उस तजल्ली ने पहाड़ रेज़ा-रेज़ा कर दिया और मूसा ग़श खाकर गिर पड़ा। जब मूसा होश में आया, तो बोला, 'अल्लाह! तेरे लिए हर तरह की तक़्दीस हो। मैं तेरे हुज़ूर तौबा करता हूं और सबसे पहले यक़ीन करने वालों में हूं।'*

(अल-आराफ़ 143)

तौरात का उतरना

इस राज़ व नियाज़ के बाद मूसा को तौरात अता की गई।

तर्जुमा—*'और हमने उसके लिए तौरात की तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और (अह्काम में से) हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी है, पस इसको क़ूवत के साथ पकड़ और अपनी क़ौम को हुक्म कर कि वे उनको अच्छी तरह*

अख़्तियार करें।' (अल-आराफ़ 145)

बहरहाल हज़रत मूसा को (तख़्तियों की शक्ल में) तौरात अ़ता हुई और साथ-साथ यह भी बता दिया गया कि हमारा 'क़ानून' यह है कि जब कोई क़ौम हिदायत पहुंचने और उसकी सच्चाई पर दलील और रोशन हुज्जत आ जाने के बावजूद भी समझ से काम नहीं लेती और गुमराही और बाप-दादा की बुरी रस्म पर ही क़ायम रहती है और उस पर इसरार करती है, तो फिर हम भी उसको उस गुमराही में छोड़ देते हैं और हमारे हक़ के पैग़ाम में उनके लिए कोई हिस्सा बाक़ी नहीं रहता, इसलिए कि उन्होंने हक़ कुबूल करने की इस्तेदाद अपनी सरकशी के बदौलत बर्बाद कर दी।

बनी इसराईल की गौशालापरस्ती

इसी बीच एक और अ़जीब व ग़रीब वाक़िया पेश आया, वह यह कि कोहे तूर पर एतिकाफ़ में फैलाव से फ़ायदा उठाकर एक आदमी सामरी [सामरी के बारे में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने वज़ाहत की है कि वह बनी इसराईल में से न था, बल्कि वह सुमैरी क़ौम का आदमी था और सामरी उसका नाम नहीं है, बल्कि उसकी क़ौमियत की तरफ़ इशारा है (Sumarian) ने जो ज़ाहिर में मुसलमान था, बनी इसराईल से कहा कि अगर तुम वह तमाम ज़ेवर मेरे पास ले आओ जो तुमने मिस्रियों से उधार लिए थे और फिर वापस न कर सके, तो मैं तुम्हारे फ़ायदे की एक बात कर दूं। बनी इसराईल ने तमाम ज़ेवर सामरी के हवाले कर दिए। उसने उनको गलाकर बछड़े का जिस्म तैयार किया और फिर अपने पास से एक मुट्ठी मिट्टी उसके लिए डाल दी। इस तर्कीब से उसमें ज़िंदगी के निशान पैदा हो गए और उससे बछड़े की आवाज़ 'भाएं-भाएं' आने लगी। अब सामरी ने बनी इसराईल से कहा कि मूसा से ग़लती हो गई, तुम्हारा माबूद तो यह है। सामरी की इस तर्ग़ीब से बनी इसराईल ने उसकी पूजा शुरू कर दी।

हज़रत हारून ने यह देखा तो बनी इसराईल को समझाया कि ऐसा न करो। यह तो गुमराही का रास्ता है, मगर उन्होंने हारून की बात मानने से इंकार कर दिया और कहने लगे कि जब तक मूसा न आ जाएं, हम इससे बाज़

आने वाले नहीं।

यहां जब यह नौबत पहुंची तो अल्लाह तआला की मस्लहत का तक़ाज़ा हुआ कि हज़रत मूसा (अलै॰) को इस वाक़िए की इत्तिला दे दे, इसलिए हज़रत मूसा से पूछा, मूसा! तुमने क़ौम को छोड़कर यहां आने में इतनी जल्दी क्यों की? हज़रत मूसा (अलै॰) ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! इसलिए कि तेरे पास जल्द हाज़िर होकर क़ौम के लिए हिदायत हासिल करूं?' अल्लाह तआला ने उस वक़्त उनको बताया कि जिसकी हिदायत के लिए तुम इस क़दर बेचैन हो, वह इस गुमराही में मुब्तला है। हज़रत मूसा ने यह सुना तो उनको सख़्त रंज हुआ। और ग़ुस्से और नदामत के साथ क़ौम की तरफ़ वापस हुए और क़ौम से मुख़ातब होकर फ़रमाया : तुमने यह क्या किया? मुझसे ऐसी कौन-सी देर हो गई थी जो तुमने यह आफ़त खड़ी कर दी।' यह फ़रमाते जाते थे और ग़ैज़ व ग़ज़ब से कांप रहे थे, यहां तक कि हाथ की लौहें (तख़्तियां) भी गिर गईं।

बनी इसराईल ने कहा: हमारा तो कोई क़ुसूर नहीं। मिस्रियों के ज़ेवरों का जो बोझ हम साथ लिए फिर रहे थे, वह सामरी ने हमसे मांग कर यह स्वांग बना लिया और हमको गुमराह कर दिया।

'शिर्क' नुबूवत के मंसब के लिए एक बर्दाश्त न करने के क़ाबिल चीज़ है, इसलिए और फिर इसलिए भी कि हज़रत मूसा बहुत गर्म मिज़ाज थे। उन्होंने अपने भाई हारून की गरदन पकड़ ली और दाढ़ी की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो हज़रत हारून ने फ़रमाया, 'ब्रादर! मेरी मुतलक़ ख़ता नहीं है। मैंने उन्हें हर पहलू से समझाया, मगर उन्होंने किसी तरह नहीं माना और कहने लगे कि जब तक मूसा न आ जाएं, हम तेरी बात सुनने वाले नहीं, बल्कि उन्होंने मुझको कमज़ोर पाकर मेरे क़त्ल का इरादा कर लिया था। जब मैंने यह हालत देखी तो ख़्याल किया कि अगर इनसे लड़ाई की जाए और पूरे ईमान वालों और उनके दर्मियान लड़ाई छिड़ जाए तो कहीं मुझ पर यह इलज़ाम न लगाया जाए कि मेरे पीछे क़ौम में फूट डाल दी, इसलिए मैं ख़ामोशी के साथ तेरे इंतिज़ार में रहा। प्यारे भाई! तू मेरे सर के बाल न नोच और न दाढ़ी पर हाथ चला और इस तरह दूसरों को हंसने का मौक़ा न दे।'

हारून की यह माक़ूल दलील सुनकर हज़रत मूसा का ग़ुस्सा उनकी तरफ़

से ठंडा हो गया और अब सामरी की तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया—

'सामरी! तूने यह क्या स्वांग बनाया है?

सामरी ने जवाब दिया कि मैंने ऐसी बात देखी जो इन इसराईलियों में से किसी ने नहीं देखी थी, यानी फ़िरऔन के डूबने के वक़्त जिब्रील घोड़े पर सवार इसराईलियों और फ़िरऔनियों के दर्मियान रोक बने हुए थे। मैंने देखा कि उनके घोड़े की सुम की ख़ाक में ज़िंदगी का असर पैदा हो जाता है और सूखी ज़मीन पर सब्ज़ा उग आता है, तो मैंने जिब्रील के घोड़े के क़दमों की ख़ाक से एक मुट्ठी भर ली और उस ख़ाक को इस बछड़े में डाल दिया और उसमें ज़िंदगी की निशानियां पैदा हो गईं और यह 'भां-भां' करने लगा।

हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया—

अच्छा, अब दुनिया में तेरे लिए यह सज़ा तज्वीज़ की गई है कि तू पागलों की तरह मारा-मारा फिरे और जब कोई इंसान तेरे क़रीब आए तो उससे भागते हुए यह कहे कि देखना, मुझको हाथ न लगाना, यह तो दुनिया वाला अज़ाब है और क़ियामत में ऐसे नाफ़रमानों और गुमराहों के लिए जो अज़ाब मुक़र्रर है, वह तेरे लिए अल्लाह के वायदे की शक्ल में पूरा होने वाला है।

ऐ सामरी! यह भी देख कि तूने जिस गौशाला को माबूद बनाया था और उसकी समाधि लगाकर बैठा था, हम अभी उसको आग में डालकर ख़ाक किए देते हैं और इस ख़ाक को दरिया में फेंके देते हैं कि तुझको और तेरे इन बेवक़ूफ़ मुक़्तदियों को मालूम हो जाए कि तुम्हारे माबूद की क़द्र व क़ीमत और ताक़त व क़ूवत का यह हाल है कि वह दूसरों पर इनायत व करम तो क्या करता, ख़ुद अपनी ज़ात को हलाकत व तबाही से न बचा सका।

बनी इसराईल को माफ़ी

गुस्सा कम होने पर हज़रत मूसा ﷺ ने तौरात की तख़्तियों को उठा लिया और अल्लाह की तरफ़ रुजू किया कि अब बनी इसराईल की इस बेदीनी और इर्तिदाद की सज़ा अल्लाह के नज़दीक क्या है? जवाब मिला कि जिन लोगों ने यह शिर्क किया, उनको अपनी जान से हाथ धो लेना पड़ेगा।

नसई में रिवायत है कि हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से कहा कि तुम्हारी तौबा की सिर्फ़ एक शक्ल मुक़र्रर की गई है कि मुजि्रमों को अपनी जान को इस तरह ख़त्म कराना चाहिए कि जो आदमी रिश्ते में जिससे सबसे ज़्यादा क़रीब है, वह अपने अज़ीज़ को अपने हाथ से क़त्ल करे यानी बाप बेटे को और बेटा बाप को और भाई भाई को, आख़िरकार बनी इसराईल को इस हुक्म के आगे सर झुका देना पड़ा। काफ़ी तांयदाद में बनी इसराईल क़त्ल हुए, जब नौबत यहां तक पहुंची तो हज़रत मूसा अल्लाह के दरबार में सज्दे में गिर पड़े और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! अब इन पर रहम फ़रमा कर इनकी ख़ताओं को बख़्श दे। हज़रत मूसा ؑ की दुआ कुबूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हमने क़ातिल व मक़्तूल दोनों को बख़्श दिया और जो ज़िंदा और कुसूरवार हैं, उनकी भी ख़ता माफ़ कर दी। तुम उनको समझा दो कि आगे शिर्क के क़रीब भी न जाएं।

सत्तर सरदारों का इंतिख़ाब

जब बनी इसराईल का यह जुर्म माफ़ कर दिया गया तो अब हज़रत मूसा ने उनसे फ़रमाया कि मेरे पास जो ये 'अलवाह' (तख़्तियां) हैं, यह किताब है, जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी हिदायत और दीनी व दुन्यवी ज़िंदगी की फ़लाह के लिए मुझको अ़ता फ़रमाई है, यह तौरात है। अब तुम्हारा फ़र्ज़ है कि इस पर ईमान ले आओ और इसके हुक्मों को पूरा करो।

बनी इसराईल बहरहाल बनी इसराईल थे, कहने लगे, मूसा! हम कैसे यक़ीन करें कि यह अल्लाह की किताब है? सिर्फ़ तेरे कहने से तो हम नहीं मानेंगे, हम तो जब उस पर ईमान लाएंगे कि अल्लाह को बे-परदा अपनी आंखों से देख लें और वह हमसे यह कहे कि यह तौरात मेरी किताब है, तुम इस पर ईमान लाओ।

हज़रत मूसा ने उनको समझाया, यह बेवक़ूफ़ी का सवाल है, इन आंखों से अल्लाह को किसने देखा है जो तुम देखोगे? यह नहीं हो सकता, मगर बनी इसराईल का इसरार बराबर क़ायम रहा।

हज़रत मूसा ؑ ने जब यह देखा तो कुछ सोचकर इर्शाद फ़रमाया कि

यह तो नामुम्किन है कि तुम लाखों की तायदाद में मेरे साथ हुरैब (तूर) पर इसकी तस्दीक़ के लिए जाओ, मुनासिब यह है कि तुममें से कुछ सरदार चुनकर साथ लिए जाता हूं, वे अगर वापस आकर तस्दीक़ कर दें तो फिर तुम भी तस्लीम कर लेना और चूंकि अभी गौशाला परस्ती करके एक बहुत बड़ा गुनाह कर चुके हो, इसलिए नदामत के इज़्हार के लिए और अल्लाह से आगे नेकी के अह्द के लिए भी यह मौक़ा मुनासिब है। क़ौम इस पर राज़ी हो गई और हज़रत मूसा ने तमाम अस्बात से सत्तर सरदारों को चुन लिया और तूर पर जा पहुंचे। तूर पर एक सफ़ेद बादल की तरह 'नूर' ने हज़रत मूसा को घेर लिया और अल्लाह से हमकलामी शुरू हो गई। हज़रत मूसा ﷺ ने अल्लाह के दरबार में अर्ज़ किया कि तू बनी इसराईल के हालात का दाना व बीना है, मैं उनकी ज़िद पर सत्तर आदमी इंतिख़ाब कर लाया हूं, क्या अच्छा हो कि वे भी इस 'हिजाबे' नूर से मेरी और तेरी हमकलामी को सुन ले और क़ौम के पास जाकर तस्दीक़ करने के क़ाबिल हो जाए? अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा की दुआ मंज़ूर फ़रमा ली और उनको 'हिजाबे नूर' में लिया गया और उन्होंने हज़रत मूसा और अल्लाह रब्बुल आलमीन की हमकलामी (आपस की बात-चीत) को सुना।

सरदारों की हठधर्मी, अज़ाबे इलाही और नई ज़िंदगी

लेकिन जब नूर का परदा हट गया और हज़रत मूसा और उन सरदारों के दर्मियान आमना-सामना हुआ तो सरदारों ने वही अपना पहला इसरार क़ायम रखा कि जब तक बे-परदा अल्लाह को न देख लें, हम ईमान लाने वाले नहीं।

इस बेवक़ूफ़ी के इसरार और ज़िद पर अल्लाह की ग़ैरत ने उनको यह सज़ा दी कि एक हैबतनाक चमक, कड़क और ज़लज़ले ने उनको आ लिया और जला कर ख़ाक कर दिया। हज़रत मूसा ने जब यह देखा तो अल्लाह के दरबार में आजिज़ी के साथ दुआ मांगी, इलाही! ये बेवक़ूफ़ अगर बेवक़ूफ़ी कर बैठे तो क्या तू हम सब को हलाक कर देगा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से तू इनको माफ़ कर दे। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा की दुआ को सुना और

उन सबको दुबारा ताज़ा ज़िंदगी बख़्शी और फिर जब वे ज़िंदगी का लिबास पहन रहे थे तो एक दूसरे की ताज़ा ज़िंदगी को आंखों से देख रहे थे।

तर्जुमा– *'और जब तुमने कहा: ऐ मूसा! हम तुझ पर उस वक़्त तक ईमान नहीं लाएंगे जब तक अल्लाह को बे-परदा अपनी आंखों से न देख लें, पस आंखों देखते तुम को बिजली की कड़क ने आ पकड़ा फिर हमने तुम को मौत के बाद ज़िंदा किया ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो।'* (अल-बक़रः 55)

बनी इसराईल का फिर इंकार और तूर पहाड़ का सरों पर बुलन्द होना

बहरहाल जब ये सत्तर सरदार दोबारा ज़िंदगी पाकर क़ौम की तरफ़ वापस हुए तो उन्होंने क़ौम से तमाम क़िस्सा कह सुनाया और बताया कि मूसा जो कुछ कहते हैं वह हक़ है और बेशक वे अल्लाह के भेजे हुए हैं।

अब सलीम फ़ितरत का तक़ाज़ा तो यह था कि ये सब अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाते और उसके ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ज़्ल व करम को देखते हुए फ़रमांबरदारी और उबूदियत के साथ उसके सामने सर झुका देते, मगर हुआ यह कि उन्होंने अपनी टेढ़ को बाक़ी रखा और अपने नुमाइन्दों की तस्दीक़ के बावजूद तौरात के क़ुबूल करने में ठुकराने और क़ुबूल न करने का रवैया अपना लिया और हज़रत मूसा के इर्शाद पर कान न धरा।

जब हज़रत मूसा ने यह देखा तो ख़ुदा के दरबार में रुजू करते हुए क़ौम की बेराहरवी की शिकायत की। ख़ुदा के दरबार से हुक्म हुआ कि इन नाफ़रमानों के लिए मैं तुझको एक हुज्जत (मोजज़ा) और अता करता हूं और वह यह कि जिस पहाड़ (तूर) पर तू मुझसे हमकलाम हुआ है और जिस पर तेरी क़ौम के चुने हुए सरदारों ने हक़ का मुशाहदा किया है, उसी पहाड़ को हुक्म देता हूं कि वह अपनी जगह से हरकत करे और साइबान की तरह बनी इसराईल के सरों पर छा जाए और ज़ुबाने हाल से यह सवाल करे कि मूसा अल्लाह का सच्चा पैग़म्बर है और तौरात बेशक अल्लाह की सच्ची किताब है और अगर ये दोनों हक़ व सदाक़त का मज़हर न होते तो, यह शानदार 'निशान' तुम न देखते, जिसका ज़ाहिर होना अल्लाह की क़ुदरत के सिवा और किसी तरह भी नामुम्किन है।

चुनांचे ज्योंही अल्लाह का यह फ़ैसला हुआ, तूर उनके सरों पर सायबान की तरह नज़र आने लगा और ज़ुबाने हाल से कहने लगा कि ऐ बनी इसराईल! अगर तुममें अक़्ल और होश बाक़ी है और हक़ व बातिल की पहचान मौजूद है तो कान खोल कर सुनो कि मैं अल्लाह का निशान बनकर तुमको यक़ीन दिलाता हूं और गवाही देता हूं कि मूसा ने कई बार मेरी पीठ पर बैठ कर अल्लाह तआला के साथ बात करने का शरफ़ हासिल किया है और तुम्हारी रुश्द व हिदायत का क़ानून (तौरात) भी उसको मेरी पीठ ही पर अता हुआ है और ऐ ग़फ़लत व सरकशी में मस्त लोगो! मेरी यह हैबत (रौब व दबदबा), जो तुम्हारे लिए हैरान करने वाली बन रही है, इस बात की गवाही है कि जब इंसान के सीने में दिल की नर्मी सख़्ती से बदल जाती है, तो फिर वह पत्थर का टुकड़ा, बल्कि इससे भी ज़्यादा सख़्त बन जाता है और रुश्द व हिदायत उसमें किसी ओर से दाख़िल नहीं हो पाती। देखो, मैं पत्थर के टुकड़ों का मज्मूआ 'पहाड़' हूं, लेकिन अल्लाह के हुक्म के सामने किस तरह बन्दगी ज़ाहिर कर रहा हूं, मगर तुम हो कि अना (मैं) और ख़ुदी के घमंड में किसी हालत में भी 'नहीं' को 'हां' से बदल देने को तैयार नहीं, सच है—

तर्जुमा—*'फिर तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वे हो गए जैसे पत्थर या उनसे भी सख़्त।'* (अल-बक़रः 74)

बनी इसराईल ने जब यह 'निशान' देखा तो अब उसे वक़्ती ख़ौफ़ व दहशत का फल समझिए या खुली आंखों अल्लाह के शानदार 'निशान' के मुशाहदे का नतीजा, यक़ीन कीजिए कि बनी इसराईल तौरात की तरफ़ मुतवज्जह हुए और हज़रत मूसा के सामने उसके अह्काम की तामील का इक़रार किया, तब अल्लाह का फ़रमान हुआ कि ऐ बनी इसराईल! हमने जो तुझे दिया है, उसको मज़बूती के साथ लो और जो अह्काम इस (तौरात) में दर्ज हैं उनकी तामील करो, ताकि तुम परहेज़गार और मुत्तक़ी बन सको।

मगर अफ़सोस कि बनी इसराईल का यह अह्दे मीसाक़ हंगामी साबित हुआ और ज़्यादा दिनों तक वे उस पर क़ायम न रह सके और आदत के मुताबिक़ फिर ख़िलाफ़वर्ज़ी शुरू कर दी। क़ुरआन मजीद ने इन वाक़ियों को बहुत ही थोड़े में, मगर साफ़ और खुले लफ़्ज़ों में इस तरह बयान किया है।

तर्जुमा—*'और जब हमने तुमसे अह्द लिया और तुम्हारे सर पर तूर को*

ऊंचा किया (और कहा) जो हमने तुमको दिया है, उसको ताक़त से पकड़ो और जो कुछ उसमें है, उसको याद करो, ताकि परहेज़गार बनो। फिर इस के बाद तुमने (इस तौरात से) पीठ फेर ली, पस अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो बेशक तुम नुक़्सान उठाने वालों में हो जाते।'

(अल-बक़र: 63 : 64)

तर्जुमा–*'और जब हमने उनके (बनी इसराईल के) सरों पर पहाड़ बुलन्द कर दिया, गोया कि वह सायबान है और उन्होंने यक़ीन कर लिया कि वह उन पर गिरने वाला है, (तो हमने कहा) जो हमने तुमको दिया है, उसको ताक़त से लो और जो कुछ उसमें है, उसको याद करो, ताकि तुम परहेज़गार बनो।*

(अल-आराफ़ 170)

इन आयतों में साफ़ किया गया है कि बनी इसराईल ने जब तौरात के क़ुबूल करने में आनाकानी की, बल्कि इंकार कर दिया तो अल्लाह तआला ने उनके सरों पर तूर को बुलन्द कर दिया और इस तरह अल्लाह की निशानी ज़ाहिर करके उनको तौरात क़ुबूल करने पर तैयार किया।

अर्ज़े मुक़द्दस का वायदा और बनी इसराईल

नोट–(अर्ज़े मुक़द्दस से वह इलाक़ा मुराद है जो पहले कनआन कहलाया, फिर फ़लस्तीन)

सीना के जिस मैदान में, उस वक़्त बनी इसराईल मौजूद थे, वह सरज़मीन फ़लस्तीन से क़रीब थी और उनके बाप-दादा हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़, और हज़रत याक़ूब से अल्लाह का वायदा था कि तुम्हारी औलाद को फिर उस सरज़मीन का मालिक बनाएंगे और वह वहां फूले-फलेगी। इसलिए हज़रत मूसा की मारफ़त अल्लाह का हुक्म हुआ कि अपनी क़ौम से कहो कि अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल हों और वहां के ज़ालिम व जाबिर हुक्मरानों को निकाल कर अदल व इंसाफ़ की ज़िंदगी बसर करें। हम वायदा करते हैं कि फ़त्ह तुम्हारी होगी और तुम्हारे ज़ालिम दुश्मन नाकाम होंगे। हज़रत मूसा ने इससे पहले कि बनी इसराईल को अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल होने के लिए आमादा करें, बारह आदमियों को तफ़्तीशे हाल के लिए भेजा। वह फ़लस्तीन के क़रीबी शहर अरीहा (Jericho) में दाख़िल हुए और तमाम हालात को ग़ौर

से देखा, जब वापस आए तो हज़रत मूसा को बताया कि बहुत जसीम और तन व तोश के ज़बरदस्त हैं और बहुत क़वी हैकल हैं।

हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि जिस तरह तुमने मुझसे उनके बारे में कहा है, क़ौम के सामने न कहना इसलिए कि एक लम्बे अ़र्से की गुलामी ने उनके हौसले पस्त कर दिए हैं और उनकी शुजाअ़त, ख़ुददारी और ऊंची हिम्मत की जगह बुज़दिली, ज़िल्लत और पस्त हिम्मती ने ले ली है, मगर आख़िर ये भी उसी क़ौम के लोग थे, न माने और ख़ामोशी के साथ क़ौम के सामने दुश्मन की ताक़त का ख़ूब बढ़ा-चढ़ा कर ज़िक्र किया, अलबत्ता सिर्फ़ दो आदमी यूशेअ़ बिन नून और कालिब बिन यफ़ना ने हज़रत मूसा के हुक्म की पूरी-पूरी तामील की और उन्होंने बनी इसराईल से ऐसी कोई बात नहीं कही कि जिससे उनकी हिम्मत टूटे।

अब हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से कहा कि तुम इस बस्ती (अरीहा) में दाख़िल हो और दुश्मन का मुक़ाबला करके उस पर क़ाबिज़ हो जाओ, अल्लाह तुम्हारे साथ है।

तर्जुमा—*'और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ क़ौम! तुम पर जो अल्लाह का एहसान रहा है, उसको याद करो कि उसने तुममें नबी और पैग़म्बर बनाए और तुमको बादशाह और हुक्मरां बनाया और वह कुछ दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया। ऐ क़ौम! उस मुक़द्दस सरज़मीन में दाख़िल हो जिसको अल्लाह तआ़ला ने तुम पर फ़र्ज़ कर दिया है और पीठ फेरकर न लौटो (कि नतीजा यह निकले) कि तुम घाटा और नुक़्सान उठाने वाले बनकर लौटो।* (अल-माइदा 20-21)

बनी इसराईल की नाफ़रमानी और उसका नतीजा

बनी इसराईल ने यह सुनकर जवाब दिया कि, 'मूसा! वहां तो बड़े ज़ालिम लोग रहते हैं। हम तो उस वक़्त तक उस बस्ती में दाख़िल न होंगे जब तक वे वहां से निकल न जाएं।

अफ़सोस बदबख़्तों ने यह न सोचा कि जब तक हिम्मत व बहादुरी के साथ तुम उनको वहां से न निकालोगे, तो वे ज़ालिम ख़ुद कैसे निकल जाएंगे?

यूशेअ़ और कालिब ने जब यह देखा तो क़ौम को हिम्मत दिलाई और कहा, शहर के फाटक से गुज़र जाओ, कुछ मुश्किल नहीं, चलो और उनका

मुक़ाबला करो। हमको पूरा यक़ीन है कि तुम ही ग़ालिब रहोगे।

तर्जुमा– *'इन डरने वालों में से दो ऐसे आदमियों ने जिन पर अल्लाह ने अपना फ़ज़्ल और इनाम किया कि तुम इन जाबिरों पर दरवाज़े की तरफ़ से दाख़िल हो जाओ। बस जिस वक़्त तुम दाख़िल हो जाओगे, तुम बेशक ग़ालिब रहोगे और (यह भी कहा) कि अल्लाह ही पर भरोसा रखो, अगर तुम ईमान लाए हो।'*

(अल-माइदा : 23)

लेकिन बनी इसराईल पर इस बात का कुछ भी असर न हुआ और वे पहले की तरह अपने इंकार पर क़ायम रहे और जब हज़रत मूसा ने ज़्यादा ज़ोर दिया तो अपने इंकार पर इसरार करते हुए कहने लगे–

तर्जुमा– *'उन्होंने कहा, ऐ मूसा! हम कभी इस शहर में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं होंगे, जब तक वे उसमें मौजूद हैं। पस तू और तेरा रब दोनों जाओ और उनसे लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (यानी तमाशा देखेंगे)*

(अल-माइदा 24)

हज़रत मूसा अलै॰ ने जब यह ज़लील और बेहूदा बात सुनी तो बहुत दुखी हुए और इंतिहाई रंज व मलाल के साथ अल्लाह के हुज़ूर अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह! मैं अपने और हारून के सिवा किसी पर क़ाबू नहीं रखता, सो हम दोनों हाज़िर हैं। अब तू हमारे और इस नाफ़रमान क़ौम के दर्मियान जुदाई कर दे, ये तो सख़्त ना अह्ल हैं।'

अल्लाह ने हज़रत मूसा पर वह्य नाज़िल फ़रमाई, 'मूसा! तुम ग़मगीन न हो, इनकी नाफ़रमानी का तुम पर कोई बोझ नहीं। अब हमने इनके लिए यह सज़ा मुक़र्रर कर दी है कि ये चालीस साल इसी मैदान में भटकते फिरेंगे और इनको अर्ज़े मुक़द्दस में जाना नसीब न होगा। हमने उन पर अर्ज़े मुक़द्दस को हराम कर दिया है।'

तर्जुमा–(अल्लाह तआला ने) *कहा: 'बेशक उन पर अर्ज़े मुक़द्दस का दाख़िला चालीस साल तक हराम कर दिया गया। इस मुद्दत में ये इसी मैदान में भटकते रहेंगे। बस तू नाफ़रमान क़ौम पर ग़म न खा और अफ़सोस न कर।'*

(5 : 26)

(सीना घाटी को 'तीह' इसलिए कहते हैं कि क़ुरआन ने बनी इसराईल के लिए कहा है कि *'यतीहू-न फ़िलअर्ज़'* (ये उसमें भटकते फिरेंगे) जब कोई आदमी रास्ते से भटक जाए तो अरबी में कहते हैं 'ता-ह फ़्लां'

इस सूरतेहाल के बाद हज़रत मूसा और हज़रत हारून को भी उसी मैदान में रहना पड़ा और वे भी अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल न हो सके, क्योंकि ज़रूरी था कि बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत के लिए अल्लाह का पैग़म्बर उनमें मौजूद रहे।

हज़रत हारून की वफ़ात

ऊपर लिखे हालात में जब बनी इसराईल 'तीह' के मैदान में फिरते-फिराते पहाड़ की उस चोटी के क़रीब पहुंचे, जो 'हूर' के नाम से मशहूर थी, तो हज़रत हारून को मौत का पैग़ाम आ पहुंचा। वह और हज़रत मूसा ﷺ अल्लाह के हुक्म से 'हूर' पर चढ़ गए और वहीं कुछ दिनों अल्लाह की इबादत में लगे रहे और जब हज़रत हारून का वहां इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत मूसा ﷺ उनको कफ़नाने-दफ़नाने के बाद नीचे उतरे और बनी इसराईल को हारून ﷺ की वफ़ात से मुत्तला किया।

हज़रत मूसा ﷺ की वफ़ात

हज़रत मूसा ﷺ से रिवायत की गई एक हदीस के मुताबिक़ जब हज़रत मूसा की वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया, तो मौत का फ़रिश्ता उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। फ़रिश्ते से कुछ बात-चीत के बाद हज़रत मूसा ﷺ ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया कि अगर लम्बी से लम्बी ज़िंदगी का आख़िरी नतीजा मौत ही है, तो फिर वह चीज़ आज ही क्यों न आ जाए और दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस आख़िरी वक़्त में अर्ज़े मुक़द्दस से क़रीब कर दे। हज़रत मूसा की दुआ के मुताबिक़ उनकी क़ब्र अरीहा[1] की बस्ती में कसीबे अह्मर (लाल टीला) पर वाक़े है, जिसका ज़िक्र एक हदीस में भी आया है। वाज़ेह रहे कि 'तीह' मैदान के सबसे क़रीब वादी मुक़द्दस का इलाक़ा अरीहा की बस्ती है, गोया अल्लाह पाक ने उनकी आख़िरी दुआ को भी शरफ़े क़ुबूलियत बख़्शा।

---

1. अरीहा को रीहू भी कहा गया है और आजकल Dericeo भी कहा जाता है। यह जगह जॉर्डन नदी के पच्छिम में यूरूशलम से कुछ मील के फ़ासले पर है और यहां एक क़ब्र 'बनी मूसा' के नाम से मशहूर है।

हज़रत मूसा عليه السلام की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे वाक़िए

गाय के ज़िब्ह का वाक़िया

एक बार ऐसा हुआ कि बनी इसराईल में एक क़त्ल हो गया, मगर क़ातिल का पता न चला। आख़िर शुबहा ने तोहमत की शक्ल अख़्तियार कर ली और आपसी इख़्तिलाफ़ की ख़ौफ़नाक शक्ल पैदा हो गई। हज़रत मूसा ने अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू किया और अर्ज़ किया इस वाक़िए ने क़ौम में सख़्त इख़्तिलाफ़ रूनुमा कर दिया। तू ख़ुद जानने वाला और हिक्मत वाला है, मेरी मदद फ़रमा।

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा عليه السلام से फ़रमाया कि इनसे कहो, पहले एक गाय ज़िब्ह करें और इसके बाद गाय के एक हिस्से को मक़्तूल के जिस्म से मस करें। अगर वे ऐसा करेंगे तो हम उसको ज़िंदगी बख़्श देंगे और यह मामला साफ़ हो जाएगा। हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से जब 'गाय के ज़िब्ह' करने के बारे में फ़रमाया तो उन्होंने अपनी टेढ़ी बातों और बहानेबाज़ियों की आदत के मुताबिक़ बहस शुरू कर दी और कहने लगे, मूसा! तू हमसे मज़ाक़ करता है? यानी मक़्तूल के वाक़िए से गाय ज़िब्ह करने के वाक़िए से क्या ताल्लुक़? अच्छा, अगर यह वाक़ई अल्लाह का हुक्म है तो यह गाय कैसी हो? उसका रंग कैसा हो? इसकी कुछ और तफ़्सीली बातें मालूम होनी चाहिए।

हज़रत मूसा ने जब अल्लाह की वह्य की मारफ़त उनके तमाम सवालों के जवाब दे दिए और बहानेबाज़ी का उनके लिए कोई मौक़ा न रहा, तब वे हुक्म की तामील पर तैयार हुए और अल्लाह की वह्य के मुताबिक़ मामला पूरा किया। अल्लाह तआला के हुक्म से वह मक़्तूल ज़िंदा हो गया और उसने तमाम वाक़िए, जैसे कि वे थे, बयान कर दिए। और इस तरह न सिर्फ़ यह कि क़ातिल का पता चल गया, बल्कि क़ातिल को भी इक़रार के बग़ैर चारा

न रहा और आपस के इख़्तिलाफ़ दूर हो गए और इन मामलों का अच्छे ढंग से ख़ात्मा हुआ।

कुरआन ने इस वाक़िए से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इसी क़दर बतलाया है और बेशक यह वाक़िया अल्लाह की उन मुसलसल निशानियों में से एक निशानी थी जो यहूदियों की सख़्त, तेज़ तबियत व आदत के मुक़ाबले में हक़ की ताईद के लिए अल्लाह की हिक्मत के पेशेनज़र ज़ुहूर में आयी।

हज़रत मूसा और क़ारून

बनी इसराईल में एक बहुत बड़ा धनवान आदमी था। कुरआन ने उसका नाम क़ारून बताया है। उसके ख़ज़ाने ज़र व जवाहर से भरे हुए थे और बेइंतिहा मज़बूत मज़दूरों की जमाअत मुश्किल ही से उसके ख़ज़ाने की कुंजियां उठा सकती थी। इस ख़ुशहाली और सरमायादारी ने उसको बेहद मग़रूर (घमंडी) बना दिया था। क़ारून दौलत के नशे में इस क़दर चूर था कि अपने अज़ीज़ों, रिश्तेदारों और क़ौम के लोगों को हक़ीर और ज़लील समझता और उनसे हक़ारत के साथ पेश आता था।

हज़रत मूसा और उनकी क़ौम ने एक बार उसको नसीहत की कि अल्लाह तआला ने तुझको बेपनाह दौलत और पूंजी दे रखी है और इज़्ज़त और हश्मत अता फ़रमाई है, इसलिए उसका शुक्र अदा कर और माली हक़ 'ज़कात व सदक़ात' देकर ग़रीबों, फ़क़ीरों और मिस्कीनों की मदद कर, 'अल्लाह को भूल जाना और उसके हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी करना' अख़्लाक़ व शराफ़त दोनों लिहाज़ से सख़्त नाशुक्री और सरकशी है। उसकी दी हुई इज़्ज़त का बदला यह नहीं होना चाहिए कि तू कमज़ोरों और बूढ़ों को हक़ीर व ज़लील समझने लगे और घमंड और नख़्वत में चूर होकर ग़रीबों और अज़ीज़ों के साथ नफ़रत से पेश आए।

क़ारून के अपने बड़े होने के जज़्बे को हज़रत मूसा की यह नसीहत पसन्द न आई और उसने ग़ुरूर भरे अन्दाज़ में कहा—मूसा! मेरी यह दौलत व सरवत तेरे ख़ुदा की दी हुई नहीं है, यह तो मेरे अक़्ली तजुर्बों और इल्मी काविशों का नतीजा है। मैं तेरी नसीहत को मानकर अपनी दौलत को इस

तरह बर्बाद नहीं कर सकता।

मगर हज़रत मूसा ﷺ बराबर तबलीग़ का अपना फ़र्ज़ अंजाम देते रहे और क़ारून को हिदायत का रास्ता दिखाते रहे। क़ारून ने जब यह देखा कि मूसा किसी तरह पीछा नहीं छोड़ते तो उनको ज़च करने और अपनी दौलत व हश्मत के मुज़ाहरे से मरऊब करने के लिए एक दिन बड़े कर्र व फ़र्र के साथ निकला।

हज़रत मूसा ﷺ बनी इसराईल के मज्मे में अल्लाह का पैग़ाम सुना रहे थे कि क़ारून एक बड़ी जमाअत और ख़ास शान व शौकत और ख़ज़ानों की नुमाइश के साथ सामने से गुज़रा, इशारा यह था कि अगर हज़रत मूसा की तब्लीग़ का यह सिलसिला यों ही जारी रहा, तो मैं भी एक भारी जत्था रखता हूं और ज़र व जवाहर का भी मालिक हूं। इसलिए इन दोनों हथियारों के ज़रिए मूसा को हरा कर रहूंगा।

बनी इसराईल ने जब क़ारून की इस दुन्यवी सरवत व अज़्मत को देखा तो उनमें से कुछ आदमियों के दिलों में इंसानी कमज़ोरी ने यह जज़्बा पैदा कर दिया कि वे बेचैन होकर यह दुआ करने लगे, 'ऐ काश! यह दौलत व सरवत और अज़्मत व शौकत हमको भी नसीब होती।'

मगर बनी इसराईल के सूझ-बूझ वाले अह्ले इल्म ने फ़ौरन मुदाख़लत की और उनसे कहने लगे, 'ख़बरदार! इस दुन्यवी ज़ेब व ज़ीनत पर न जाना और उसके लालच में गिरफ़्तार न हो बैठना, तुम बहुत जल्द देखोगे कि इस दौलत व सरवत का बुरा अंजाम कैसा होने वाला है।'

आख़िरकार जब क़ारून ने किब्र व नख़वत के ख़ूब-ख़ूब मुज़ाहरे कर लिए और हज़रत मूसा और बनी इसराईल के मुसलमानों की तह्क़ीर व तज़लील में काफ़ी से ज़्यादा ज़ोर लगा लिया तो अब ग़ैरते हक़ हरकत में आई और 'अमल का बदला' के फ़ितरी क़ानून ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, और क़ारून और उसकी दौलत पर अल्लाह का यह अटल फ़ैसला सुना दिया— *'फ़ख़सफ़ना बिही व बिदारिहिलअर्ज़'* (हमने क़ारून को और उसके सरमाए को ज़मीन के अन्दर धंसा दिया) और बनी इसराईल का आंखों देखते न ग़रूर बाक़ी रहा और न सामाने ग़रूर, सबको ज़मीन ने निगल कर इबरत का सामान

मुहैया कर दिया। क़ुरआन मजीद ने कई जगहों पर इस वाक़िए को तफ़्सील से भी और मुख़्तसर भी बयान किया है।

तर्जुमा– *'फिर हमने क़ारून और उसके महल को ज़मीन में धंसा दिया, पस इसके लिए कोई जमाअत मददगार साबित न हुई, जो अल्लाह के अज़ाब से उसको बचाए, और वह बेयार व मददगार ही रह गया।'* (क़सस 28-81)

क़ारून का वाक़िया कब पेश आया?

तफ़्सीर लिखने वाले उलेमा को इसमें तरद्दुद है कि क़ारून का वाक़िया कब पेश आया?—मिस्र में फ़िरऔन के ग़र्क़ होने से पहले या 'तीह' के मैदान में फ़िरऔन के ग़र्क़ होने के बाद। क़ुरआन ने इस वाक़िए को फ़िरऔन के ग़र्क़ होने से मुताल्लिक़ वाक़ियों के बाद किया है। इसलिए हमारे नज़दीक यह वाक़िया 'तीह' मैदान का है।

हज़रत मूसा और ख़िज़्र

हज़रत मूसा की ज़िंदगी के वाक़ियों में एक अहम वाक़िया उस मुलाक़ात का है जो उनके और एक साहिबे बातिन के दर्मियान हुई और हज़रत मूसा ﷺ ने उनसे तक्वीनी दुनिया के कुछ असरार व रुमूज़ मालूम किए। इस मुलाक़ात का ज़िक्र तफ़्सील के साथ सूरः कह्फ़ में किया गया है और बुख़ारी में इस वाक़िए से मुताल्लिक़ कुछ और तफ़्सील से ज़िक्र आया है।

बुख़ारी में सईद बिन जुबैर ؓ से रिवायत है कि उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास से अर्ज़ किया कि नौफ़ बकाली कहता है कि ख़िज़्र के मूसा, बनी इसराईल के मूसा नहीं हैं, यह एक दूसरे मूसा हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ ने फ़रमाया, ख़ुदा का दुश्मन झूठ कहता है मुझसे उबई बिन काब ने हदीस बयान की है कि उन्होंने रसूले अकरम ﷺ से सुना है: इर्शाद फ़रमाते हैं कि, 'एक दिन हज़रत मूसा बनी इसराईल को ख़िताब कर रहे थे कि किसी आदमी ने मालूम किया कि इस ज़माने में सबसे बड़ा आलिम कौन है? हज़रत मूसा ने फ़रमाया, मुझे अल्लाह ने सबसे ज़्यादा इल्म अता फ़रमाया है। अल्लाह तआला को यह बात पसन्द न आई और उन पर इताब हुआ कि तुम्हारा मंसब

तो यह था कि उसको इल्मे इलाही के सुपुर्द करते और कहते, *'वल्लाहु आलम'* और फिर वह्य नाज़िल फ़रमाई कि जहां दो समुन्दर मिलते हैं (मजमउल बहरैन) वहां हमारा एक बन्दा है जो कुछ मामलों में तुझसे भी ज़्यादा आलिम व दाना है।'

हज़रत मूसा ने अर्ज़ किया, परवरदिगार! तेरे इस बन्दे तक पहुंचने का क्या तरीक़ा है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मछली को अपने तोशेदान में रख लो। पस जिस जगह वह मछली गुम हो जाए, उसी जगह वह आदमी मिलेगा। हज़रत मूसा ने मछली को तोशेदान में रखा और अपने ख़लीफ़ा यूशेअ् बिन नून को साथ लेकर 'मर्दे सालेह' की तलाश में रवाना हो गए। जब चलते-चलते एक मक़ाम पर पहुंचे, तो दोनों एक पत्थर पर सर रखकर सो गए। मछली में ज़िंदगी पैदा हुई और वह ज़ंबील से निकल कर समुन्दर में चली गई। मछली पानी के जिस हिस्से पर बहती गई और जहां तक गई, वहां पानी बर्फ़ की तह जम कर एक छोटी-सी पगडंडी की तरह हो गया, ऐसा मालूम होता था कि समुद्र में एक लकीर या ख़त खिंचा हुआ है।

यह वाक़िया यूशेअ् बिन नून ने देख लिया था, क्योंकि वह हज़रत मूसा ﷺ से पहले बेदार हो गए थे मगर जब हज़रत मूसा बेदार हुए तो उनसे ज़िक्र करना भूल गए और फिर दोनों ने अपना सफ़र शुरू कर दिया और उस दिन-रात आगे बढ़ते ही गए। जब दूसरा दिन हुआ तो हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि अब थकन ज़्यादा महसूस होने लगी, वह मछली लाओ, ताकि अपनी भूख मिटाएं। नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया, हज़रत मूसा को अल्लाह तआला की बताई हुई मंज़िले मक़्सूद तक पहुंचने में कोई थकन न हुई थी, मगर मंज़िल से आगे ग़लती से निकल गए तो अब थकन भी महसूस होने लगी।

यूशेअ् बिन नून ने कहा, आपको मालूम रहे कि जब हम पत्थर की चट्टान पर थे तो वहीं मछली का ताज्जुब भरा वाक़िया पेश आया कि उसमें हरकत पैदा हुई और वह मक्तल (ज़ंबील) में से निकल कर समुन्दर में चली गई और उसकी रफ़्तार पर समुद्र में रास्ता बनता चला गया। मैं आपसे यह वाक़िया कहना भूल गया। यह भी शैतान का एक चरका था।

नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि समुन्दर का वह 'ख़त' मछली के लिए

'सर्ब' (रास्ता) था और मूसा और यूशेअ् के लिए 'उज्ब' (ताज्जुब वाली बात)।

हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया कि जिस जगह की हमको तलाश है, वह वही जगह थी और यह कहकर दोनों फिर एक दूसरे से बात-चीत करते हुए उसी राह पर लौटे और उस सख़रा (पत्थर की चट्टान) तक जा पहुंचे।

वहां पहुंचे तो देखा कि उस जगह उम्दा कपड़ा पहने हुए एक आदमी बैठा है। हज़रत मूसा ने उसको सलाम किया। उस आदमी ने कहा, तुम्हारी इस सरज़मीन में 'सलाम' कहां? (यानी इस सरज़मीन में तो मुसलमान नहीं रहते) यह ख़िज़्र थे। हज़रत मूसा ने कहा, हां, मैं तुमसे वह इल्म हासिल करने आया हूं जो अल्लाह ने तुम ही को बख़्शा है।

ख़िज़्र ने कहा, तुम मेरे साथ रहकर उन मामलों पर सब्र न कर सकोगे? मूसा! अल्लाह ने मुझको तक्वीनी असरार व रुमूज़ का वह इल्म अता किया है जो तुमको नहीं दिया गया और उसने तुमको (तशरीई इल्मों का) वह इल्म अता फ़रमाया है जो मुझको अता नहीं हुआ। हज़रत मूसा ने कहा, 'इन्शाअल्लाह' आप मुझको सब्र व ज़ब्त करने वाला पाएंगे और मैं आपके इर्शाद की बिल्कुल ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करूंगा। हज़रत ख़िज़्र ने कहा, तो फिर शर्त यह है कि जब आप मेरे साथ रहें तो किसी मामले के मुताल्लिक़ भी, जिसको आपकी निगाहें देख रही हों, मुझसे कोई सवाल न करें। मैं ख़ुद उनकी हक़ीक़त आपको बता दूंगा। हज़रत मूसा ने मंज़ूर कर लिया और दोनों एक तरफ़ को रवाना हो गए।

जब समुद्र के किनारे पहुंचे तो सामने से एक नाव नज़र आई। हज़रत ख़िज़्र ने मल्लाहों से किराया पूछा। वे ख़िज़्र को पहचानते थे, इसलिए उन्होंने किराया लेने से इंकार कर दिया और इसरार करके दोनों को कश्ती पर सवार कर लिया और कश्ती रवाना हो गई। अभी चले हुए ज़्यादा देर न हुई थी कि हज़रत ख़िज़्र ने कश्ती के सामने वाले हिस्से का एक तख़्ता उखाड़ कर कश्ती में सूराख़ कर दिया। हज़रत मूसा से ज़ब्त न हो सका, ख़िज़्र से कहने लगे, कश्ती वालों ने यह एहसान किया कि आपको और मुझको मुफ़्त सवार कर लिया और आपने उसका यह बदला दिया कि कश्ती में सूराख़ कर दिया कि सब कश्ती वाले कश्ती समेत डूब जाएं, यह तो बहुत नामुनासिब हरकत हुई?

हज़रत ख़िज़्र ने कहा कि मैंने तो पहले ही कहा था कि आप मेरी बातों पर सब्र न कर सकेंगे? आख़िर वही हुआ। हज़रत मूसा ने फ़रमाया, मैं वह बात बिल्कुल भूल गया, इसलिए आप भूल-चूक पर पकड़ें नहीं और मेरे मामले में सख़्ती न करें। यह पहला सवाल वाक़ई मूसा की भूल की वजह से था। इसी बीच एक चिड़िया कश्ती के किनारे आकर बैठी और पानी में चोंच डालकर एक क़तरा पानी पी लिया। हज़रत ख़िज़्र ने कहा, बेशक तश्बीहे इल्म इलाही के मुक़ाबले में मेरा और तुम्हारा इल्म ऐसा ही बे-हक़ीक़त है, जैसा कि समुद्र के सामने यह क़तरा।

कश्ती किनारे लगी और दोनों उतर कर एक ओर को रवाना हो गए। समुन्दर के किनारे-किनारे जा रहे थे कि एक मैदान में कुछ बच्चे खेल रहे थे। हज़रत ख़िज़्र आगे बढ़े और उनमें से एक बच्चे को क़त्ल कर दिया। हज़रत मूसा फिर सब्र न कर सके, फ़रमाने लगे—'नाहक़ एक मासूम जान को आपने मार डाला, यह तो बहुत ही बुरा किया?' हज़रत ख़िज़्र ने कहा, मैं तो शुरू ही में कह चुका था कि आप मेरे साथ रहकर सब्र व ज़ब्त से काम न ले सकेंगे। नबी अकरम ने फ़रमाया, चूंकि यह बात पहली बात से भी ज़्यादा सख़्त थी, इसलिए हज़रत मूसा फिर सब्र न कर सके। हज़रत मूसा ने फ़रमाया, ख़ैर इस बार और नज़रअंदाज़ कर दीजिए इसके बाद भी अगर सब्र न हो सका, तो फिर उज़्र करने का कोई मौक़ा न रहेगा और इसके बाद आप मुझसे अलग हो जाइएगा।

ग़रज़ फिर दोनों रवाना हो गए और चलते-चलते एक ऐसी बस्ती में पहुंचे, जहां के रहने वाले ख़ुशहाल और मेहमानदारी के हर तरह क़ाबिल थे, मगर दोनों की मुसाफ़िराना दरख़्वास्त पर भी उनको मेहमान बनाने से इंकार कर दिया था। ये अभी बस्ती ही में से गुज़रे थे कि ख़िज़्र एक ऐसे मकान की ओर बढ़े, जिसकी दीवार कुछ झुकी हुई थी और उसके गिर जाने का डर था। हज़रत ख़िज़्र ने उसको सहारा दिया और दीवार को सीधा कर दिया। हज़रत मूसा ने फिर ख़िज़्र को टोका और फ़रमाने लगे कि 'हम इस बस्ती में मुसाफ़िर की हैसियत से दाख़िल हुए मगर उसके बसने वालों ने न मेहमानदारी की और न टिकने को जगह दी। आपने यह क्या किया उसके एक

बाशिंदे की दीवार को बग़ैर मुआवज़े के दुरुस्त कर दिया। अगर करना ही तो भूख-प्यास को दूर करने के लिए कुछ उजरत ही तै कर लेते। हज़रत ख़ि ने फ़रमाया, अब मेरी और तेरी जुदाई का वक़्त आ गया, *'हाज़ा फ़िराक़ु बै व बैनक'* और फिर उन्होंने हज़रत मूसा ﷺ को इन तीनों मामलों हक़ीक़तों को समझाया और बताया कि ये सब अल्लाह की तरफ़ से वे ह थीं, जिन पर आप सब्र न कर सके।

हज़रत ख़िज़्र से मुताल्लिक़ अहम बातें

हज़रत ख़िज़्र से मुताल्लिक़ कुछ बातें ज़िक्र के क़ाबिल हैं—

1. ख़िज़्र नाम है या लक़ब?
2. ख़िज़्र सिर्फ़ 'नेक बन्दा' हैं या वली हैं या नबी हैं या रसूल?
3. उनको हमेशा की ज़िंदगी हासिल है या वफ़ात पा चुके?
4. मज्मउल बहरैन (बहरैन की जगह) कहां है?
5. हज़रत ख़िज़्र का मक़ाम व मर्तबा क्या है?

1. कुरआन मजीद में न हज़रत ख़िज़्र का नाम ज़िक्र हुआ है औ लक़ब, बल्कि *'अब्दम मिन इबादिना'* (हमारे बन्दों में से एक बन्दा) क ज़िक्र किया गया है। बुख़ारी व मुस्लिम की सही हदीसों में ख़िज़्र कहकर हुआ है, इसलिए न यह कहा जा सकता है कि ख़िज़्र नाम है और न यह ख़िज़्र लक़ब है और इसका खोलना ज़रूरी भी नहीं।

2. तर्जीह के क़ाबिल यही है कि वह नबी थे। कुरआन मजीद ने अन्दाज़ में उनके शरफ़ का ज़िक्र किया है, वह नबी की पदवी के लिए ही उतरता है विलायत का मक़ाम तो उससे बहुत पीछे है।

3. तह्क़ीक़ करने वाले उलेमा की सही राय यह है कि वह वफ़ा चुके हैं, क्योंकि इस दुनिया में मौत एक हक़ीक़त है—

तर्जुमा—*'और ऐ मुहम्मद! हमने तुझसे पहले भी किसी बशर को हयात अ़ता नहीं की।'*

(अल-अंबि

4. 'मजमउल बहरैन' के बारे में हज़रत उस्ताद अल्लामा सैयद मु अनवर शाह क़द्द-स सिर्रहू फ़रमाते हैं—

'यह मक़ाम वह है जो आजकल अक़्बा के नाम से मशहूर है।

5. हज़रत ख़िज़्र का मक़ाम—कुरआन मजीद ने इस वाक़िए के शुरू में ख़िज़्र के 'इल्म' के मुताल्लिक़ कहा है 'व अल्लमहू मिल्लदुन्नी इलमा'

तर्जुमा—*'और हमने उसको अपने पास से इल्म अ़ता किया।'*

(अल-कह्फ़ 15)

और क़िस्से के आख़िर में ख़िज़्र का यह क़ौल नक़ल किया है—'व मा फ़-अल्तु हू अन अमरी'

तर्जुमा—*'मैंने वाक़ियों के इस सिलसिले को अपनी ओर से नहीं किया।'*

(अल-कह्फ़ 88)

तो इन दोनों जुम्लों से मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला ने ख़िज़्र को कुछ चीज़ों की हक़ीक़तों का वह इल्म अ़ता फ़रमाया था, जो तक्वीनी रुमूज़ व असरार और बातिनी हक़ीक़तों से मुताल्लिक़ है और यह एक ऐसा मुज़ाहरा था, जिसे अल्लाह तआ़ला ने हक़ वालों पर वाज़ेह कर दिया। अगर इस दुनिया की तमाम हक़ीक़तों पर से इसी तरह परदा उठा दिया जाए जिस तरह कुछ हक़ीक़तों के लिए ख़िज़्र के लिए बे-नक़ाब कर दिया था, तो इस दुनिया के तमाम हुक्म ही बदल जाएं और अ़मल की आज़माइशों का यह सारा कारख़ाना बिखर कर रह जाए, मगर दुनिया आमाल की आज़माइशगाह है, इसलिए 'तक्वीनी हक़ीक़तों' पर परदा पड़ा रहना ज़रूरी है, ताकि हक़ व बातिल की पहचान के लिए जो तराज़ू अल्लाह की क़ुदरत ने मुक़र्रर कर दिया है, वह बराबर अपना काम अंजाम देता रहे।

जहां तक हज़रत मूसा ﷺ का ताल्लुक़ है, तो नबूवत व रिसालत के मामलात के मज्मूए के एतबार से हज़रत मूसा ﷺ का मक़ाम हज़रत ख़िज़्र के मक़ाम से बहुत बुलन्द है, क्योंकि वे अल्लाह के नबी भी हैं और जलीलुलक़द्र रसूल भी, शरीअ़त वाले भी हैं और किताब वाले भी और रसूलों में अ़ज़्म वाले रसूल हैं, पस हज़रत ख़िज़्र का वह जुज़ई इल्म तक्वीन के असरार से ताल्लुक़ रखता था हज़रत मूसा की शरीअ़त के जामे इल्म से आगे नहीं जा सकता।

हज़रत मूसा ﷺ और बनी इसराईल का ईज़ा पहुंचाना

पीछे के पन्नों में जिन वाक़ियों का ज़िक्र किया गया है उनसे यह बात साफ़ हो चुकी है कि बनी इसराईल ने हज़रत मूसा ﷺ को क़ौल और अ़मल दोनों तरीक़ों से बड़ी तक्लीफ़ें पहुंचाईं, यहां तक कि बुहतान लगाने और तोहमत गढ़ने से भी बाज़ नहीं रहे, लेकिन क़ुरआन मजीद ने इन वाक़ियों के अलावा, जिनका ज़िक्र पीछे के पन्नों में हो चुका है, सूरः अह्ज़ाब और सूरः सफ़्फ़ में हज़रत मूसा के साथ बनी इसराईल के तक्लीफ़ पहुंचाने पर निंदा करते हुए कहा है—

तर्जुमा—*'ऐ ईमान वालो! तुम उन बनी इसराईल की तरह न बनो, जिन्होंने मूसा को तक्लीफ़ पहुंचाई।'* (अल-अह्ज़ाब 69)

तर्जुमा—*'और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ क़ौम! तू किस लिए मुझको तक्लीफ़ पहुंचाती है, जबकि तुझको मालूम है कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं।'* (अस्सफ़्फ़ 5)

इस बारे में बहस की गई है कि यहां जिस तक्लीफ़ का ज़िक्र किया गया है, क्या उससे वही हालात मुराद हैं जो बनी इसराईल की सरकशी से मुताल्लिक़ हैं या उनके अलावा किसी ख़ास वाक़िए की ओर इशारा है। इस बहस में सही मस्लक यह है कि जब क़ुरआन ने हज़रत मूसा ﷺ से मुताल्लिक़ तक्लीफ़ के वाक़िए को मुज्मल बयान किया है तो हमारे लिए भी यही मुनासिब है कि उसको किसी वाक़िए से मुताल्लिक़ न करें और जिस हिक्मत व मस्लहत की वजह से अल्लाह ने उसको मुज्मल रखना मुनासिब समझा, हम भी उसी को काफ़ी समझें।

सनीचर का दिन

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने अपनी उम्मत में अल्लाह की इबादत के लिए हफ़्ते के सात दिनों में से जुमे का दिन मुक़र्रर फ़रमाया था। हज़रत मूसा के ज़माने में बनी इसराईल ने इसरार किया कि जुमा की बजाए सनीचर का दिन इबादत व बरकत के लिए मुक़र्रर किया जाए। बनी इसराईल के इसरार पर अल्लाह की वह्य ने हज़रत मूसा को इत्तिला दी कि उनकी मांग मंज़ूर करते

हुए हफ़्ते (सनीचर) का दिन जुमा का क़ायम मक़ाम बनाया जाता है, लेकिन!

तर्जुमा– *'और हमने इन (बनी इसराईल) से कहा, सब्त के बारे में हद से न गुज़रना (ख़िलाफ़वर्ज़ी न करना) और हमने इनसे मुताल्लिक़ सख़्त अह्द व पैमान लिया।'* (अन-निसा 154)

हज़रत मूसा की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे मामले

फ़िरऔन नई तस्क़ीक़ की रोशनी में

मिस्री दारुल आसार के चित्रकार (मुसव्विर) और असरी और हजरी (पत्थरों और खंडरात के) नामी आलिम अहमद यूसुफ़ आफ़ंदी की खोज का ख़ुलासा यह है कि यूसुफ़ जब मिस्र में दाख़िल हुए हैं तो यह फ़िरऔन के सोलहवें ख़ानदान का ज़माना था और उस फ़िरऔन का नाम 'अबाबिल अव्वल' था और जिस फ़िरऔन ने बनी इसराईल को मुसीबतों में डाला वह रामीसीस सिकंड (Ramesses II) हो सकता है। यह मिस्र के हुक्मरानों का उन्नीसवां ख़ानदान था। हज़रत मूसा उसके ज़माने में पैदा हुए और उनकी गोद में पले-बढ़े। रामीसीस सिकंड ने इस डर से कि बनी इसराईल का यह शानदार क़बीला, जो लाखों इंसानों पर मुश्तमिल था, अन्दरूनी बग़ावत पर उतर न आए, बनी इसराईल को मुसीबतों में मुब्तला करना ज़रूरी नहीं समझा, जिनका ज़िक्र तौरात और क़ुरआन हकीम में किया गया है।

रामीसीस सिकंड ने अपने बुढ़ापे के ज़माने में अपने बेटे मरनिफ़ताह (Memeftah) को हुकूमत में शरीक कर लिया था, इसलिए मरनिफ़ताह ही वह फ़िरऔन हो सकता है जो नदी में डूबा। इस नतीजे की ताईद इससे होती है कि मिस्री दस्तूर के मुताबिक़ मरनिफ़ताह का अलग से मक़बरा नहीं, बल्कि वह अठारहवीं ख़ानदान के फ़िरऔन के मक़बरे में दफ़न किया गया। मिस्री अजाइबघरों में एक लाश आज भी महफ़ूज़ है और मुहम्मद अदवी की किताब 'दावतुर्रसुल इलल्लाहि' के मुताबिक़ इस लाश की नाक के सामने का हिस्सा नहीं है। ऐसा मालूम होता है कि शायद दरियाई मछली ने ख़राब किया है और

फिर उसकी लाश ख़ुदा के फ़ैसले के मुताबिक़ किनारे पर फेंक दी गई, ताकि—

तर्जुमा— *'वह मेरे बाद आने वालों के लिए (अल्लाह का) निशान रहे।'* (10 : 92)

देखो मुझे जो दीदा-ए-इबरत निगाह हो

मोरिस बकाईए (Maurice Bucaille) का फ़ैसला करने वाला क़ौल

फ़िरऔन के ग़र्क़ हो जाने का वाक़िया बहुत से पुराने और नए तहक़ीक़ करने वालों के लिए बहस का मौज़ू बना रहा और अब तक बना हुआ है, बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं और लिखी जा रही हैं लेकिन ये सब उस वाक़िए की तारीख़ी और जुग़राफ़ियाई (ऐतिहासिक और भौगोलिक) हैसियत पर ज़ोर देती हैं। इस बारे में मोरिस बकाईए (Maurice Bucaille) मशहूर व मारूफ़ फ्रांसीसी मुसन्निफ़ (लेखक) ने अपनी किताब बाइबिल, क़ुरआन और सांइस (Bible, Quran and Science) में तफ़्सीली बहस की है, जो देखने-पढ़ने वाले और ज़्यादा मालूमात के ख़्वाहिशमंद हों, वे उस किताब से जिसका उर्दू तर्जुमा भी हो चुका है, रुजू कर सकते हैं। हम यहां सिर्फ़ कुछ बातें बयान करेंगे—

1. हज़रत मूसा रामीसिस सिकेंड के ज़माने में पैदा हुए और उसके यहां उन्होंने परवरिश पाई।

2. रामीसिस सिकेंड का इंतिक़ाल हज़रत मूसा के मदयन में ठहरने के ज़माने में हो गया।

3. रामीसिस सिकंड के बाद उसका बेटा मरनिफ़्ताह तख़्त पर बैठा और लगभग बारह सौ साल क़ब्ल मसीह लाल सागर में डूबने वाला यही फ़िरऔन है। लाल सागर को किस जगह से पार किया गया, यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता।

4. रामीसिस सिकेंड और मरनिफ़्ताह दोनों की लाशें मिस्री म्यूज़ियम में महफ़ूज़ हैं। मोरिस बकाईए की बहस के ख़ात्मे पर आख़िरी लाइनें तवज्जोह के क़ाबिल हैं।

5. फ़लक़े बह (समुद्र का फटना) का ज़माना अन्दाज़ा है कि बारह सौ

साल क़ब्ल मसीह का है।

फ़लक़ बह (समुद्र के फटने) से मुताल्लिक़ क़ियास आराइयां

वे लोग जो मज़हब से मुताल्लिक़ हर मसले को 'माद्दी बातों' ही तक महदूद रखना चाहते हैं, और इसलिए अल्लाह के दिए हुए उन निशानों (मोजज़ों) का भी इंकार करते हैं, जो नबियों और रसूलों की सच्चाई की ताईद और दलील में ज़ाहिर होते हैं, यानी वे अल्लाह के किसी भी काम को किसी हालत में भी इस महसूस और माद्दी दुनिया के कारण और प्रभाव (Cause & Effect) से अलग मान लेने को तैयार नहीं, इसलिए हज़रत मूसा अलै॰ की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ फ़लक़े बह (समुन्दर का फटना) के मोजज़े के बारे में बहुत-से अन्दाज़े किए गए हैं, जिसमें सबसे आम ख़्याल यह ज़ाहिर किया जाता है कि यह मद्द व जज़्र (ज्वार-भाटा) था, लेकिन यह भूल जाते हैं कि अगरचे सलामत गुज़रने वालों की तायदाद, जो तौरात के मुताबिक़ छः लाख से ज़्यादा होती है, मुबालग़ा (अतिशयोक्ति) पर क़ायम है, फिर भी कुछ हज़ार की तो होगी ही और उनके साथ लाने-ले जाने के सामान भी और उनके जानवर और दूसरी चीज़ें भी और उसके साथ फ़िरऔन की सारी फ़ौज भी जो डूब गई, क़ुरआन में आता है—

तर्जुमा— *'बस दरिया फट गया, फिर हर ओर एक पहाड़ की तरह हो गई।'*

(अश-शुअरा 63)

ज़ाहिर है ऊपर वाली सूरत उस वक़्त तक क़ायम रही होगी जब तक बनी इसराईल एक किनारे से दूसरे किनारे पर सलामती से पहुंच जाएं और फिर उसमें फ़िरऔन और उसका लश्कर भी इस हद तक दाख़िल हो जाए कि वह पूरी तरह डूब जाए। क़ुरआन मजीद में साफ़ है—

'और हमने मूसा और उसके साथियों को नजात दी, फिर दूसरों को (यानी उनके दुश्मनों को) ग़र्क़ कर दिया।'

(अश-शुअरा 65-66)

और यह भी बता दिया—

तर्जुमा— *बेशक इस वाक़िए में (ख़ुदा का ज़बरदस्त मोजज़ा है)'*

(अश-शुअ्रा 67)

कुरआन के इतना वाज़ह कर देने के बाद उसको मामूल के मुताबिक़ मद्द व जज़्र समझना अक़्ल व ख़िरद की तंगदामनी के सिवा और क्या हो सकता है।

जादू और मज़हब

1. जादू की कोई हक़ीक़त भी है या वह सिर्फ़ नज़र का धोखा है और बे-हक़ीक़त कोई चीज़ है? इसके बारे में अह्ले सुन्नत उलेमा की यह राय है कि जादू सच में एक हक़ीक़त है और नुक़्सान पहुंचाने वाले असरात भी रखता है। अल्लाह तआला ने अपनी बड़ी हिक्मत को सामने रखकर उसमें इसी तरह नुक़्सान पहुंचाने वाले असरात रख दिए हैं, जिस तरह ज़हर वग़ैरह में मगर यह नहीं है कि 'जादू' अल्लाह की कुदरत से बेनियाज़ होकर 'अल्लाह की पनाह' ख़ुद बे-नियाज़ है, ख़ुद अपने आप असर रखने वाले चीज़ है, यह अक़ीदा ख़ालिस कुफ़्र है।

2. इस्लामी फ़ुक़हा (विद्वानों) ने जादू के बारे में साफ़ किया है कि जादू के जिन आमाल में शैतान, गन्दी रूहें और ग़ैरअल्लाह से मदद चाही जाए और उनको हाजत रवा क़रार देकर मंत्रों के ज़रिए उनको क़ाबू में करने का काम किया जाए, तो वह शिर्क जैसा है और उस पर अमल करने वाला काफ़िर है। जिन अमलों में इनके अलावा दूसरे तरीक़े अख़्तियार किए जाएं और उनसे दूसरों को नुक़्सान पहुंचाया जाए उनका करने वाला हराम और बड़े गुनाह का मुर्तकिब है।

मोजज़ा और जादू में फ़र्क़

नबी और रसूल का असल मोजज़ा उसकी वह तालीम होती है, जो वे राहे हक़ से हटी हुई और भटकी हुई क़ौमों की हिदायत के लिए नुस्ख़ा-ए-कीमिया और दीनी और दुन्यवी फ़लाह व कामरानी के लिए बेनज़ीर क़ानून की शक्ल में पेश करता है, लेकिन आम इंसानी दुनिया की फ़ितरत इस पर क़ायम है कि वे सच्चाई और सदाक़त के लिए भी कुछ ऐसी चीज़ों के ख़्वाहिशमन्द होते हैं जो लाने वाले के रूहानी करिश्मों से ताल्लुक़ रखती हों और जिनके मुक़ाबले से तमाम दुन्यवी ताक़तें आजिज़ हो जाती हों, क्योंकि उनके इल्म की पहुंच

फ़ैसी सच्चाई के लिए इसी को मेयार क़रार देती हैं।

इसलिए यह 'अल्लाह की सुन्नत' जारी रही है कि वे नबियों और रसूलों को दीने हक़ की तालीम व पैग़ाम के सथ एक या कुछ निशानियों (मोजज़ों) को भी अ़ता करता है और जब वे नुबूवत के दावे के साथ बग़ैर (सबब) के ऐसा 'निशान' दिखाता है, जिसका मुक़ाबला दुनिया की कोई ताक़त नहीं कर सकती तो उसका नाम 'मोजज़ा' होता है।

और इसीलिए यह भी 'अल्लाह की सुन्नत' है कि किसी नबी और रसूल को जो मोजज़ा या निशान दिया जाता है, वह उसी क़िस्म में से होता है, जिसमें उस क़ौम को सबसे पहले उस पैग़म्बर ने ख़िताब किया है, जिसे 'कमाल दर्जा' हासिल हो और वह उसकी तमाम हक़ीक़तों को अच्छी तरह जानता हो, ताकि उसको यह समझने में आसानी हो सके कि पैग़म्बर का यह निशान इंसानी और बशरी ताक़त से ऊंची ताक़त के साथ ताल्लुक़ रखता है और अगर तास्सुब और हठधर्मी रुकावट न हो तो वह बे-अख़्तियार यह इक़रार कर ले कि—

ईं सआ़दत बज़ोरे बाज़ू नेस्त ता न बख़्शद ख़ुदाए बख़्शंदा

और इस तरह हर फ़र्द-बशर पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हो जाए।

पस मोजज़ा असल में सीधे-सीधे अल्लाह तआ़ला का काम है जो बिना किसी सबब के एक सच्चे की सच्चाई के लिए वजूद में आता है और वह किसी उसूल और क़ानून पर टिका हुआ नहीं होता कि एक आर्ट (फ़न) की तरह सीखा जा सके और नबी हर वक़्त उसके दिखाने की क़ुदरत रखता हो उस वक़्त तक कि मुख़ालिफ़ को सच्चाई के सामने चैलेंज के तौर पर उसको दिखाने की ज़रूरत पेश न आ जाए, सो जब वह अहम वक़्त आता है और 'नबी' अल्लाह से रुजू करता है तो अल्लाह की ओर से उसको कर दिखाने की ताक़त मिल जाती है, सेहर और जादू के ख़िलाफ़ कि वह एक 'कला' है कि जिसको उसके उसूलों और क़ानूनों की पाबन्दी के साथ हर कलाकार जादूगर हर वक़्त काम में ला सकता है। इसकी वज्हें अगरचे नज़रों से छिपी होती हैं, लेकिन फ़न के तमाम जानने वाले उसे जानते हैं, इसी लिए वे दूसरे इल्मों और फ़नों की तरह तर्तीब दिए हुए नहीं होते, जिनको मिस्रियों, चीनियों

और हिन्दियों ने बहुत आगे बढ़ाया और कमाल दर्जे तक पहुंचा दिया।

यह मसले की इल्मी हैसियत है कि जिससे मोजज़े और जादू की हदें पूरी तरह अलग और नुमायां हो जाती हैं। रहा महसूस करने और देखने-दिखाने का मामला तो 'मोजज़े' और 'जादू' में यह फ़र्क है कि जादूगर की आम ज़िंदगी, डर, दहशत, कष्ट पहुंचाना और बद-अ़मली से जुड़ी होती है और लोग इस नज़र से डर खाते हैं या उसके सामने मरऊब हो जाते हैं, नबी और रसूल के ख़िलाफ़ कि उसकी पूरी ज़िंदगी सच्चाई, ख़ुलूस, अल्लाह की मख़्लूक़ की हमदर्दी व ग़मगुसारी और तक़्वा और पाकी से जुड़ी होती है और उसका किरदार बे-दाग़, साफ़ और रोशन होता है और वह मोजज़े को पेशा नहीं बनाता, बल्कि ख़ास अहम मौक़े पर सच्चाई और हक़ की हिमायत में उसे ज़ाहिर करता है और वह ऐसे वक़्त मोजज़ा दिखाता है जबकि दुश्मन भी उसकी पाकी, सच्चाई और किरदार की पाकीज़गी को पहले ही से मानते हैं, मगर उसकी दावत को शक की नज़र से मानते हैं या ज़िद, हठधर्मी और इंकार के पहलू से और फिर उससे मोजज़े की तलब करते हैं, साथ ही अगर जादू और मोजज़े का मुक़ाबला हो जाए तो मोजज़ा ग़ालिब रहेगा और ऊंचे से ऊंचा जादू भी मग़लूब होगा और आजिज़ होगा और इसके ख़िलाफ़ महाल और नामुम्किन है। चुनांचे जादूगरों और नबियों और रसूलों के मुक़ाबले की तारीख़ इसकी गवाह है।

हासिल यह है कि मूसा को अ़सा और हाथ की सफ़ेदी के निशान (मोजज़े) इसलिए दिए गए कि उनके ज़माने में मिस्र सेहर और जादू का सेंटर था और जादू की कला चोटी पर और मिस्रियों ने तमाम दुनिया के मुक़ाबले में इसको कमाल दर्जे तक पहुंचा दिया था।

मरने के बाद की ज़िंदगी

कुरआन मजीद ने मरने के बाद की ज़िंदगी का आम क़ानून तो यह बताया है कि दुनिया की मौत के बाद फिर आख़िरत की दुनिया ही के लिए दोबारा ज़िंदगी मिलेगी, लेकिन ख़ास 'क़ानून' यह है कि कभी-कभी हिक्मत व मस्लहत के पेशेनज़र अल्लाह तआ़ला इस दुनिया ही में मुर्दा को ज़िंदगी

बख़्श दिया करता है और नबियों की मोजज़ों वाली ज़िंदगी में ख़ुद क़ुरआनी गवाही के मुताबिक़ यह सच्चाई कई बार ज़ाहिर होकर सामने आ चुकी है। हज़रत मूसा की नुबूवत के ज़माने में बनी इसराईल के सत्तर सरदारों के दोबारा जी उठने के मौक़े पर यह सूरत सामने आई कि उनके नामाक़ूल और गुस्ताख़ी वाले इसरार पर 'रजआ' के अज़ाब ने उनको मौत के घाट उतार दिया और फिर हज़रत मूसा की इज्ज़ वाली दुआ पर अल्लाह की रहमत की वुसअत ने तरस खाया और इन जान से तंग इंसानों को दोबारा ज़िंदगी बख़्श दी।

इसी तरह 'गाय के ज़िब्ह करने' के वाक़िए में मक़्तूल को दोबारा ज़िंदगी बख़्शी। इन वाक़ियों से मुताल्लिक़ हिक्मत व मस्लहत ख़ुद अल्लाह ही बेहतर जानते हैं। इंसानी समझ तो इतना ही कह सकती है कि इसका मक़्सद यह है कि मुतास्सिर होने वाले शुक्रगुज़ार हों और आगे इस क़िस्म की बेजा ज़िद को काम में न लाएं और अल्लाह के सच्चे फ़रमांबरदार बन्दे बनकर रहें। क़ुरआन के साफ़ और खुले बयान के बाद घटिया तावील ग़ैर-ज़रूरी है।

मोजज़ों का ज़्यादा होना

हज़रत मूसा ﷺ के नबी होने के ज़माने में मोजज़ों का ज़्यादा होना नज़र आता है, जिनको दो हिस्सों में बांटा जाता है—

1. क़ुलज़ुम के पार करने से पहले, और
2. क़ुलज़ुम के पार करने के बाद,

क़ुलज़ुम के पार करने से पहले

1. अ़सा (डंडा)
2. यदे बैज़ा (हाथ की सफ़ेदी)
3. सिनीन (अकाल)
4. फलों का नुक़्सान
5. तूफ़ान
6. जराद (टिड्डी दल)
7. क़ुम्मल
8. ज़फ़ादेअ (मेंढ़क)

9. दम (ख़ून)

10. फ़लके बह (कुलज़ुम नदी का फट कर दो हिस्सों में हो जाना)

कुलज़ुम पार करने के बाद

11. मन्न व सलवा

12. ग़माम (बादलों का साया)

13. इन्फ़िजारे उयून (पत्थर से चश्मों का बह पड़ना)

14. नत्क़े जबल (पहाड़ का उखड़ कर सरों पर आ जाना) और

15. तौरात का नाज़िल होना

ऊपर के ज़्यादा-से-ज़्यादा मोजज़ों के सिलसिले में यह भूलना न चाहिए कि सदियों की ग़ुलामी की ज़िंदगी बसर करने और छोटी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहने की वजह से बनी इसराईल की नुमायां ख़ूबियों को घुन लग गया था और मिस्रियों में रहकर मज़हर परस्ती और अस्नाम परस्ती ने उनकी अक़्ल और हवास को इस दर्जा मुअ़त्तल कर दिया था कि वे क़दम-क़दम पर अल्लाह के एक होने और अल्लाह के हुक्मों में किसी करिश्मे का इन्तिज़ार करते रहते, इसके बग़ैर उनके दिल में यक़ीन व ईमान की कोई जगह न बनती थी।

पस उनकी हिदायत के लिए दो ही शक्लें हो सकती थीं—

एक यह कि उनको सिर्फ़ समझाने-बुझाने के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों ही से हक़ के क़ुबूल करने पर तैयार किया जाता और पिछले नबियों की उम्मतों की तरह किसी ख़ास और अहम मौक़े पर आयतुल्लाह (अल्लाह की निशानी यानी मोजज़े का मुज़ाहरा पेश आता और दूसरी शक्ल यह थी कि उनकी सदियों की तबाह हुई इस हालत की इस्लाह के लिए रूहानी ताक़त का जल्द-जल्द मुज़ाहरा किया जाए और हक़ और सच्चाई की तालीम के साथ-साथ अल्लाह तआ़ला के तक्वीनी निशान (मोजज़े) इनके क़ुबूल करने और तसल्ली करने की इस्तेदाद को बार-बार ताक़त पहुंचाएं। पस इस क़ौम की पस्त ज़ेहनियत और तबाह हाली के पेशेनज़र अल्लाह की मस्लहत ने उनकी इस्लाह व तर्बियत के लिए यही दूसरी शक्ल अख़्तियार की। *'वल्लाहु अलीमुन हकीम०'* (अल्लाह ही जानने वाला और हिक्मत वाला है।)

बनी इसराईल पर इनामों की ज़्यादती

बनी इसराईल की क़ौमी ज़िंदगी और उनकी सरकशी और तमर्रुद के बावजूद क़ुरआन जिस अन्दाज़ से उन पर किए हुए इनाम याद दिलाता है, उसको सामने रखकर यह सवाल पैदा होता है कि अल्लाह तआला ने ऐसी क़ौम को किस लिए नेमतों और फ़ज़ीलतों के लिए चुना? इसका जवाब तारीख़ी एतबार से यही हो सकता है कि उस दौर में तमाम क़ौमों में शिर्क व कुफ़्र, बग़ावत व सरकशी और ज़ुल्म व तुग़यान का जो हैबतनाक मुज़ाहरा चल रहा था उसके सामने बनी इसराईल बहुत ग़नीमत थे। तारीख़ इसका सबूत भी बहम पहुंचाती है कि उस क़ौम की एक आम बद-बख़्ती के बावजूद उसी की एक छोटी जमाअत के ज़रिए अल्लाह की रुश्द व हिदायत का पैग़ाम एक लम्बे अर्से तक इंसानी कायनात तक पहुंचता रहा। ग़रज़ यह कि बनी इसराईल का यह चुनाव उनके तक़्वा की वजह से न था, बल्कि उनको उनसे भी ज़्यादा फ़साद व सरकशी फैलाने वाली ताक़तों का सर कुचल देने का ज़रिया बनाना था।

हज़रत मूसा ﷺ का रुत्बा, एक पैग़म्बर की हैसियत से

क़ुरआन और नबी ﷺ की हदीसों में हज़रत मूसा ﷺ के मनसक़िब व फ़ज़ाइल (गुणों) और बनी इसराईल के वाक़ियों में उनका बड़प्पन और बुज़ुर्गी नुमायां है साथ ही हज़रत मूसा ने फ़िरऔन, फ़िरऔन की क़ौम और बनी इसराईल के वाक़ियों में तक्लीफ़ें उठाईं। उनकी नज़ीर (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत इब्राहीम ﷺ को छोड़कर) और किसी नबी और रसूल की मुबारक ज़िंदगी में नहीं मिलती इसलिए यह कहा जा सकता है कि ख़त्मुल मुर्सलीन मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ और मुजद्दिद अंबिया हज़रत इब्राहीम ﷺ के बाद हज़रत मूसा ﷺ अज़्म वाले पैग़म्बर और रसूल हैं, बड़े मर्तबे वाले और बड़ी क़द्र व क़ीमत और मंज़लत के मालिक।

यह ज़िक्र भी ज़रूरी है कि बुख़ारी व मुस्लिम में है कि नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया—

'मुझको मूसा पर फ़ज़ीलत न दो इसलिए कि क़ियामत के दिन लोगों पर दहशत से ग़शी छा रही होगी, तो सबसे पहला आदमी जिसे होश आएगा, मैं हूंगा तो मैं यह देखूंगा कि मूसा अ़र्श का पाया पकड़े खड़े हैं, अब मैं नहीं कह सकता कि उनको पहले इफ़ाक़ा हो गया था वह तूर पर बेहोश किए जाने के बदले में आज की बेहोशी से छूट गए।'

इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि नबी अकरम ﷺ का यह इर्शाद तवाज़ो और इंकिसार की वजह से है, वरना तो दूसरी जगह आपका ख़ुद यह इर्शादे मुबारक है *'अना सैयदु वुल्दि आदम व ला फ़ख़'* (बग़ैर किसी फ़ख़्र के कहता हूं कि मैं तमाम आदम की औलाद का सरदार हूं) और आपका *ख़ातमुन्नबीयीन* (आख़िरी पैग़म्बर) होना इसकी रोशन दलील है। रहा क़ियामत का यह वाक़िया तो यह एक हिस्से की फ़ज़ीलत है और फ़ज़्ल व कमाल के स्रोत का कमालात की बरतरी व बढ़ावे पर उसका असर नहीं पड़ता। इस रिवायत की रूह हज़रत मूसा की बरतरी का इज़्हार है और बस।

नसीहतें क्या मिलीं?

मुसीबतों में सब्र किया जाए

1. अगर इंसान को कोई मुसीबत और आज़माइश पेश आ जाए तो उस यह ज़रूरी है कि सब्र व रज़ा के साथ उसे सहे। अगर ऐसा करेगा तो बेशक उसको बड़ा अज्र हासिल होगा और वह यक़ीनी तौर पर सफल और कामयाब होगा।

कामियाबी के लिए शर्त

2. जो आदमी अपने मामलों में अल्लाह पर भरोसा और एतमाद रखता है और उसी को दिल के ख़ुलूस के साथ अपना हासिल समझता है, तो अल्लाह तआला ज़रूर उसकी मुश्किलों को आसान कर देते हैं और उसकी मुसीबतों को नजात और कामियाबी के साथ बदल देते हैं।

बनी इसराईल पर इनामों की ज़्यादती

बनी इसराईल की क़ौमी ज़िंदगी और उनकी सरकशी और तमर्रुद के बावजूद क़ुरआन जिस अन्दाज़ से उन पर किए हुए इनाम याद दिलाता है, उसको सामने रखकर यह सवाल पैदा होता है कि अल्लाह तआ़ला ने ऐसी क़ौम को किस लिए नेमतों और फ़ज़ीलतों के लिए चुना? इसका जवाब तारीख़ी एतबार से यही हो सकता है कि उस दौर में तमाम क़ौमों में शिर्क व कुफ़्र, बग़ावत व सरकशी और ज़ुल्म व तुग़यान का जो हैबतनाक मुज़ाहरा चल रहा था उसके सामने बनी इसराईल बहुत ग़नीमत थे। तारीख़ इसका सबूत भी बहम पहुंचाती है कि उस क़ौम की एक आम बद-बख़्ती के बावजूद उसी की एक छोटी जमाअ़त के ज़रिए अल्लाह की रुश्द व हिदायत का पैग़ाम एक लम्बे अर्से तक इंसानी कायनात तक पहुंचता रहा। ग़रज़ यह कि बनी इसराईल का यह चुनाव उनके तक़्वा की वजह से न था, बल्कि उनको उनसे भी ज़्यादा फ़साद व सरकशी फैलाने वाली ताक़तों का सर कुचल देने का ज़रिया बनाना था।

हज़रत मूसा ﷺ का रुत्बा, एक पैग़म्बर की हैसियत से

क़ुरआन और नबी ﷺ की हदीसों में हज़रत मूसा ﷺ के मनसक़िब व फ़ज़ाइल (गुणों) और बनी इसराईल के वाक़ियों में उनका बड़प्पन और बुज़ुर्गी नुमायां है साथ ही हज़रत मूसा ने फ़िरऔ़न, फ़िरऔ़न की क़ौम और बनी इसराईल के वाक़ियों में तक्लीफ़ें उठाईं। उनकी नज़ीर (नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़रत इब्राहीम ﷺ को छोड़कर) और किसी नबी और रसूल की मुबारक ज़िंदगी में नहीं मिलती इसलिए यह कहा जा सकता है कि ख़त्मुल मुर्सलीन मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ और मुजद्दिद अंबिया हज़रत इब्राहीम ﷺ के बाद हज़रत मूसा ﷺ अ़ज़्म वाले पैग़म्बर और रसूल हैं, बड़े मर्तबे वाले और बड़ी क़द्र व क़ीमत और मंज़लत के मालिक।

यह ज़िक्र भी ज़रूरी है कि बुख़ारी व मुस्लिम में है कि नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया—

'मुझको मूसा पर फ़ज़ीलत न दो इसलिए कि क़ियामत के दिन लोगों पर दहशत से ग़शी छा रही होगी, तो सबसे पहला आदमी जिसे होश आएगा, मैं हूंगा तो मैं यह देखूंगा कि मूसा अ़र्श का पाया पकड़े खड़े हैं, अब मैं नहीं कह सकता कि उनको पहले इफ़ाक़ा हो गया था वह तूर पर बेहोश किए जाने के बदले में आज की बेहोशी से छूट गए।'

इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि नबी अकरम ﷺ का यह इर्शाद तवाज़ो और इंकिसार की वजह से है, वरना तो दूसरी जगह आपका ख़ुद यह इर्शाद मुबारक है *'अना सैयदु वुल्दि आदम व ला फ़ख़्र'* (बग़ैर किसी फ़ख़्र के कहता हूं कि मैं तमाम आदम की औलाद का सरदार हूं) और आपका *ख़ातमुन्नबीयीन* (आख़िरी पैग़म्बर) होना इसकी रोशन दलील है। रहा क़ियामत का यह वाक़िया तो यह एक हिस्से की फ़ज़ीलत है और फ़ज़्ल व कमाल के स्रोत का कमालात की बरतरी व बढ़ावे पर उसका असर नहीं पड़ता। इस रिवायत की रूह हज़रत मूसा की बरतरी का इज़्हार है और बस।

नसीहतें क्या मिलीं?

मुसीबतों में सब्र किया जाए

1. अगर इंसान को कोई मुसीबत और आज़माइश पेश आ जाए तो उस यह ज़रूरी है कि सब्र व रज़ा के साथ उसे सहे। अगर ऐसा करेगा तो बेशक उसको बड़ा अज्र हासिल होगा और वह यक़ीनी तौर पर सफल और कामयाब होगा।

कामियाबी के लिए शर्त

2. जो आदमी अपने मामलों में अल्लाह पर भरोसा और एतमाद रखता है और उसी को दिल के ख़ुलूस के साथ अपना हासिल समझता है, तो अल्लाह तआला ज़रूर उसकी मुश्किलों को आसान कर देते हैं और उसकी मुसीबतों को नजात और कामियाबी के साथ बदल देते हैं।

इश्क़े इलाही की ताक़त

3. जिसका मामला हक़ के साथ इश्क़ तक पहुंच जाता है, उसके लिए बातिल की बड़ी से बड़ी ताक़त भी हेच और बे-वजूद होकर रह जाती है।

हर कि पैमां बा 'हुवल मौजूद बस्त'
गरदिनश अज़ बन्द हर माबूद हरस्त

अल्लाह की मदद

4. अगर कोई अल्लाह का बन्दा हक़ की मदद और हिमायत के लिए सरफ़रोशाना खड़ा हो जाता है, तो अल्लाह दुश्मनों और बातिल परस्तों ही में से उसका मददगार पैदा कर देता है।

ईमानी लज़्ज़त के असरात

5. अगर एक बार भी कोई ईमानी लज़्ज़त का लुत्फ़ उठा ले और सच्चे दिल से उसे मान ले, तो यह नशा उसको ऐसा मस्त बना देता है कि उसकी जान के हर रेशे से वही हक़ की आवाज़ निकलने लगती है।

सब्र का फल

6. सब्र का फल हमेशा मीठा होता है, भले ही उसके फल हासिल होने में कितनी ही कड़ुवाहटें सहनी पड़ें, मगर जब भी वह फल लगेगा, मीठा ही होगा।

सब्र तल्ख़ अस्त वले बर शीरीं दारद (सादी रह०)

ग़ुलामी के असरात

7. ग़ुलामी और महकूमी की ज़िंदगी का सबसे बुरा असर यह होता है कि हिम्मत और इरादे की रूह पस्त होकर रह जाती है और इंसान इस नापाक ज़िंदगी के ज़िल्लत भरे अम्न व सुकून को नेमत समझने और हक़ीर रास्तों को सबसे बड़ी अज़्मत सोचने लगता है और जद्दुजुहद की ज़िंदगी से परेशान व हैरान नज़र आता है।

ज़मीन की विरासत के लिए शर्तें

8. ज़मीन या मुल्क की विरासत उसी क़ौम का हिस्सा है जो बे-सर व सामानी से बेख़ौफ़ होकर और अज़्म व हिम्मत का सबूत देकर हर क़िस्म की मुश्किल और रुकावट का मुक़ाबला करती और 'सब्र' और अल्लाह की मदद पर भरोसा करते हुए जद्दुजुहद के मैदान में साबित क़दम रहती हैं।

बातिल की नाकामी

9. बातिल की ताक़त कितनी ही ज़बरदस्त और शान व शौकत से भरी हुई हो, अंजाम यह होगा कि उसे नामुरादी का मुंह देखना पड़ेगा और आख़िरी अंजाम में कामरानी व कामियाबी का सेहरा उन्हीं के लिए होता है जो नेक और हिम्मत वाले हैं।

ज़ालिम क़ौमों का अंजाम

10. यह 'आदतुल्लाह' है कि जाबिर व ज़ालिम क़ौमें, जिन क़ौमों को ज़लील और हक़ीर समझती हैं, एक दिन आता है कि वही ज़ईफ़ और कमज़ोर क़ौमें अल्लाह की ज़मीन की वारिस बनती और हुकूमत व इक़्तिदार की मालिक हो जाती हैं और ज़ालिम क़ौमों का इक़्तिदार ख़ाक में मिल जाता है।

ताक़त का ख़ुमार और उसका अंजाम

11. ताक़त, हुकूमत और दौलत, सरवत में डूबी जमाअतों का हमेशा से यह शिआर रहा है कि सबसे पहले वही 'हक़ की दावत' के मुक़ाबले में सामने आ खड़ी होती है, मगर क़ौमों की तारीख़ यह भी बताती है के हमेशा हक़ के मुक़ाबले में उनको नाकामी, हार और नामुरादी का मुंह देखना पड़ा है।

सरकशी का अंजाम

12. जो हस्ती या जमाअत जानते-बूझते और हक़ को हक़ जानते हुए भी सरकशी करे और अल्लाह की दी हुई निशानियों की इंकारी और नाफ़रमान बने तो उसके लिए अल्लाह का क़ानून यह है कि वह उनसे हक़ क़ुबूल करने

की इस्तेदाद फ़ना कर देता है, क्योंकि यह उनकी लगातार सरकशी का कुदरती फल है।

13. यह बहुत बड़ी गुमराही है कि इंसान को जब हक़ की बदौलत कामियाबी हासिल हो जाए तो अल्लाह के शुक्र की जगह हक़ के मुख़ालिफ़ों की तरह ग़फ़लत व सरकशी में मुब्तला हो जाए।

दीन में इस्तिक़ामत (जमाव)

14. कोई हक़ को क़ुबूल करे या न करे, हक़ की दावत देने वाले का फ़र्ज़ है कि हक़ की नसीहत करने से बाज़ न रहे।

15. किसी क़ौम पर जाबिर व ज़ालिम हुक्मरां का मुसल्लत होना, उस हुक्मरां की अल्लाह के नज़दीक मक़्बूल होने और सरबुलन्द व सरफ़राज़ होने की दलील नहीं, बल्कि वह अल्लाह का एक अज़ाब है जो महकूम क़ौम की बद-अमलियों के बदले की शक्ल में ज़ाहिर होता है, मगर महकूम क़ौम की ज़ेहनियत पर जाबिर ताक़त का इस क़दर ग़लबा छा जाता है कि वह अपनी परेशानियों को ज़ालिम हुकूमत पर अल्लाह की रहमत समझने लगती है।

अल्लाह की बरदाश्त

16. जब कोई क़ौम या कोई जमाअत बदकिरदारी और सरकशी में मुब्तला होती है तो अल्लाह का क़ानून यह है कि उसको फ़ौरन ही पकड़ में नहीं लिया जाता, बल्कि एक तदरीज के साथ मोहलत मिलती रहती है कि अब बाज़ आ जाए, अब समझ जाए और इस्लाहे हाल कर ले। लेकिन जब वह इस्लाह पर तैयार नहीं होती और उनकी सरकशी और बदअमली एक ख़ास हद तक पहुंच जाती है तो फिर अल्लाह की पकड़ व पंजा उनको पकड़ लेता है और वे बे-यार व मददगार फ़ना के घाट उतर जाते हैं।

इंसानी इल्म की अहमियत

17. किसी हस्ती के लिए भी, वह नबी या रसूल ही क्यों न हो, यह मुनासिब नहीं कि वह यह दावा करे कि मुझसे बड़ा आलिम कायनात में कोई

नहीं, बल्कि उसको अल्लाह के इल्म के सुपुर्द कर देना बेहतर है।

ग़ुलामी एक लानत है

18. मिल्लते इस्लामिया की पैरवी करने वालों के लिए 'ग़ुलामी' बहुत बड़ी लानत है और अल्लाह का ग़ज़ब है और उस पर क़नाअत कर लेना गोया अल्लाह के अ़ज़ाब और अल्लाह की लानत पर भरोसा कर लेने के बराबर है।

फ़ातबिरू या उलिल अब्सार

अहम नुक्ते (Points)

अल्लाह की वह्य की हैसियत

कुरआन पाक के बयान यूरोप के उन पीछे चलने वालों के लिए सबक़ हासिल करने का बहुत बड़ा सरमाया हैं जो जल्दबाज़ी के साथ पूरब पर काम करने वालों की हर एक तह्क़ीक़ पर बग़ैर किसी पस व पेश के आमन्ना व सद्दक़ना कह देने के आदी हैं, जो अल्लाह और अल्लाह के नबी के हुक्मों पर तो शक कर सकते हैं और करते रहते हैं मगर यूरोपीय तारीख़दानों और पूरब पर काम करने वालों की इल्मी तह्क़ीक़ात को अल्लाह की वह्य से ज़्यादा एतबार वाला समझते हैं, हालांकि यह बात भी उनसे छिपी नहीं कि यूरोप के तह्क़ीक़ करने वाले ख़ुद अपनी तह्क़ीक़ों और खोजों से हमेशा रुजू करते आए हैं, लेकिन न इंकार की जाने वाली हक़ीक़तें ऐसी हैं कि यक़ीन व अ़मल की जो राह अल्लाह की वह्य यानी कुरआन के ज़रिए हासिल हो चुकी है, उसको ज़र्रा बराबर अपनी जगह से हटने की ज़रूरत पेश नहीं आएगी और शक व गुमान से हासिल किया गया इल्म उस वक़्त तक बराबर गर्दिश में रहेगा जब तक कुरआनी सच्चाई पर आकर न ठहर जाए।

मुसलसल ग़ुलामी के असरात

तारीख़ की यह तस्लीमशुदा बात है कि जब किसी क़ौम पर ग़ुलामी की हालत में सदियां बीत जाती हैं, तो उसकी बर्बादी और पस्ती की हदें यहीं

ख़त्म नहीं हो जातीं कि वे मुफ़्लिस और बदहाल हों और काहिल और परेशानहाल, बल्कि उनकी अमली ताक़तों की ख़राबी से ज़्यादा उनकी दिमाग़ी ताक़तें बेकार, थकी हुई और नाकारा हो जाती हैं उनमें हिम्मत और बहादुरी ख़त्म हो जाती है और वे पस्ती पर ही क़नाअत कर लेते हैं। ना उम्मीदी उनका शेवा हो जाती है और ज़िल्लत व नकबत को वह सब्र व क़नाअत समझने लगते हैं, इसलिए जब कोई सुधारक या पैग़म्बर व रसूल उस दिमाग़ी पस्ती से निकालने के लिए उनको पुकारता है और हिम्मत व बहादुरी पर तैयार करता है, तो यह उनके लिए सबसे मुश्किल और अमल में नामुम्किन पैग़ाम जैसा नज़र आता है और वह कभी इस राह की सख़्तियों से घबरा कर आपस में टकराते जाते और कभी अपने नजात दिलाने वाले पर शक व शुबहा की निगाह डालने लगते हैं और अगर इस जद्दोजेहद में उनको कोई फ़ायदा हासिल हो जाता है तो वक़ार और संजीदगी से भी गुज़र कर ख़ुशी ज़ाहिर करने लगते हैं और अगर इस राह में कोई मुसीबत और आज़माइश का सवाल आ पड़ता है तो मुस्लेह या पैग़म्बर को इलज़ाम देने लगते हैं कि हमको ख़ामख़ाही तूने इस मुसीबत में फंसा दिया। हम तो अपनी हालत पर ही सब्र व शुक्र करने वाले थे—

नज़र आते नहीं बेपरदा हकाइक़ उनको
आंख जिनकी हुई महकूमी व तक़्लीद से कोर।।

ईमान की बरकतें

अल्लाह तआला ने यहां इज़्ज़त का मेयार 'सिद्क़ व ख़ुलूस' और अल्लाह की 'वफ़ादाराना उबूदियत' है, न कि दुन्यवी दौलत व सरवत और जाह व हश्मत अलबत्ता जो आदमी असल इज़्ज़त को हासिल कर लेता है, तो अल्लाह तआला ये चीज़ें भी उसके क़दमों पर निसार कर देता है—

विलायत, बादशाही, इल्म व हिक्मत की जहांगीरी।
ये सब क्या हैं, फ़क़त एक नुक्ता-ए-ईमां की तफ़्सीरें।

तर्तीब देने वाले की तरफ़ से इज़ाफ़ाः

एक बद्दू मुसलमान का ईमान

नेशनल जियोग्राफ़िक (National Geographic) मैगज़ीन जनवरी सन् 1976 ई. के अंक में हारवी आरडन का एक जरनलिस्ट सर्वे 'In Search of Moses' (हज़रत मूसा की तलाश में) के नाम से निकला था। इस रिपोर्ट में हारवी ने बड़ी मेहनत और जांफ़शानी से तौरात के बयानों को बुनियाद बनाते हुए उस उत्तरी/दक्खिनी रास्ते की निशानदेही करने की कोशिश की है जिससे हज़रत मूसा मिस्र से वापस हुए और जिस जगह लाल सागर पार किया और जहां फ़िरऔन फ़ौज के साथ डूबा, आरडन ने उन इलाक़ों का जो हज़रत मूसा के क़िस्से से मुताल्लिक़ हैं, एक जुग़राफ़ियाई नक़्शा (भौगोलिक चित्र) भी दिया है, लेकिन वह रास्ते के तऐयुन (निर्धारण) में विश्वास के साथ कुछ कह न सका और इसमें कोई ताज्जुब की बात भी नहीं। वह आख़िर में लिखता है कि जिसकी उसको तलाश थी, वह उसको मिल गया, लेकिन ज़्यादा ग़ालिब गुमान यह है कि उस धरती पर इतनी खोज-तलाश के बाद उसको उस 'एक अकेली, जिसमें कोई शरीक नहीं ज़ात का कुछ न कुछ एहसास जरुर हुआ, जिसकी तजल्ली हज़रत मूसा ने उस पाक धरती पर आग लेने जाने के बहाने देखी थी। अल्लाह का शुक्र है उस पाक ज़ात की सीधी सादी समझ उसको एक बद्दू मुसलमान चरवाहे से मिली, जैसा कि नीचे लिखी बातचीत से ज़ाहिर है–

आरडन–क्या तुम इस ज़मीन के मालिक हो?

बद्दू मुसलमान–यह ज़मीन अल्लाह की है।

आरडन–और यह पेड़?

बद्दू मुसलमान–ये पेड़ भी अल्लाह के हैं।

इस जवाब के बाद उसने आरडन की उम्मीद के मुताबिक़ सोचकर कहा, 'ये ज़ैतून के पेड़ मेरे हैं।'

बद्दू मुसलमान के जवाबों में उस जवाब की झलक नज़र आती है जो

हज़रत मूसा ﷺ ने अपनी क़ौम को दिया था--

तर्जुमा– *'मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो, बेशक ज़मीन अल्लाह की मिल्कियत है और वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है, मालिक बना देता है।'* (अल-आराफ़ 7/15)

अपने सर्वे के आख़िरी मरहले पर आरइन एक और ईमान बढ़ाने वाला मंज़र पेश करता है, वह लिखता है कि--

'बाहर की तरफ़ नज़र डालते हुए मैंने एक नवउम्र चरवाहे को देखा जो अपनी भेड़ों को उस घाटी में चराने के लिए ले जा रहा था, जिसको एक मानी में हज़रत मूसा का असा (डंडा) सैराब कर रहा था। उसने अपनी निगहबानी के असा को रखकर पहाड़ी के एक तरफ़ निकले हुए हिस्से पर अल्लाह की बारगाह में सर को झुका कर मग़रिब की नमाज़ अदा की और उसका ख़ाका शफ़क़ में बिल्कुल नुमायां था। मैं इस मंज़र से न बयान कर पाने की हद तक मुतास्सिर हुआ। कोई भी मंज़र इससे ज़्यादा हस्बे हाल नहीं हो सकता। मेरी मूसा की तलाश यहां ख़त्म हो गई और एक नई ज़िंदगी की शुरूआत हुई।' वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह०

सहाबा किराम की बेमिसाल अज़्मत (बड़ाई)

हज़रत मूसा के क़िस्से में जब हम बनी इसराईल के किरदार पर ग़ौर करते हैं, तो हमें नबी ﷺ के सहाबा किराम ؓ की अज़्मत और बुज़ुर्गी का एक नया एहसास पैदा होता है। बनी इसराईल पर अल्लाह तआला के लगातार लुत्फ़ व करम और बनी इसराईल के लगातार इंकार व सरकशी के मुक़ाबले में सहाबा किराम के ईमान की पुख़्तगी, सच्चाई व साफ़दिली, शिद्दतों और मुसीबतों के बावजूद सब्र व बरदाश्त और जनाब रिसालत मआब ﷺ से मुहब्बत का एहसास व एतराफ़, जो पढ़ने वाले के दिल में और ज़्यादा पक्का हो जाना लाज़मी है, क्योंकि जनाब रिसालत मआब ﷺ की पूरी ज़िंदगी में हमें एक वाक़िया भी ऐसा नहीं मिलता जिसमें शिद्दतों, मुसीबतों या किसी और वजह से एक भी आदमी ईमान लाने के बाद इस्लाम से अपना रिश्ता तोड़ लेना तो बड़ी बात, शिकायत का एक हर्फ़ भी ज़ुबान पर लाया हो।

हज़रत यूशेअ् बिन नून (अलैहिस्सलाम)

हज़रत यूशेअ् का ज़िक्र क़ुरआन में

हज़रत यूशेअ् बनी इसराईल की औलाद में से हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की नस्ल से ताल्लुक़ रखते हैं। अलबत्ता क़ुरआन पाक में हज़रत यूशेअ् (अलैहिस्सलाम) के नाम का ज़िक्र नहीं है। सूरः कह्फ़ में दो जगह हज़रत मूसा के सफ़र के एक नवजवान साथी का ज़िक्र मौजूद है जबकि वह हज़रत ख़िज़्र से मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ ले गए। एक सहीह हदीस में जो हज़रत उबई बिन काब से नक़ल की गई है, उस नवजवान साथी का नाम यूशेअ् बताया गया है। यह हज़रत मूसा की ज़िंदगी में उनके ख़ादिम (Servant) थे और हज़रत हारून और हज़रत मूसा की वफ़ात के बाद उनके ख़लीफ़ा और नुबूवत के जानशीं बने। कनआ़न में जाबिर और मुश्रिक क़ौमों के हालात मालूम करने के लिए जो वफ़्द गया था, उसके एक मेम्बर यह भी थे और अल्लाह की मदद का वायदा याद दिलाकर जिहाद पर उकसाया और कहा कि अगर तुम लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ, तो यक़ीनी तौर पर जीत तुम्हारी है। चुनांचे हज़रत मूसा के बाद उन्ही की रहनुमाई में चालीस वर्ष बाद बनी इसराईल की नस्ल पाक ज़मीन में दाख़िल हुई और उन्होंने 'शाम' के कनआ़न (ट्रान्स जार्डन) की तमाम जाबिर व ज़ालिम ताक़तों को पामाल कर दिया।

अर्ज़े मुक़द्दस (पाक सरज़मीन) में दाख़िला

इस थोड़ी सी बात की तफ़्सील यह है कि चालीस साल गुज़र जाने के बाद अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यूशेअ् को हुक्म दिया कि तुम बनी इसराईल के इस क़ाफ़िले को लेकर मौऊदा सरज़मीन की तरफ़ बढ़ो और वहां जाबिर क़ौमों को हरा दो, मेरी मदद तुम्हारे साथ है।

हज़रत यूशेअ् ने बनी इसराईल को अल्लाह का पैग़ाम सुनाया और सब दश्ते सीना से निकल कर कनआ़न की सरज़मीन के सबसे पहले शहर अरीहा

(यराहो Jericho) की ओर बढ़े और दुश्मनों को ललकारा। दुश्मनों ने भी बाहर निकल कर सख़्त मुक़ाबला किया और आख़िरकार हार कर वहीं खेत रहे और बनी इसराईल को ज़बरदस्त जीत मिली। बनी इसराईल इसी तरह लड़ते-लड़ते पूरे अर्ज़े मुक़द्दस पर क़ाबिज़ हो गए और एक बार फिर अपने बाप-दादा के वतन के मालिक कहलाए।

नाशुक्री

कुरआन अज़ीज़ में बनी इसराईल की कामियाबी और फ़ातेह (विजयी) की हैसियत से दाख़िले के मुताल्लिक़ इस तरह आता है—

तर्जुमा— *'और जब हमने कहा, इस बस्ती में दाख़िल हो और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जो चाहो खाओ और शहर के दरवाज़े में नियाज़मंदी के साथ झुकते हुए दाख़िल होना और यह कहते हुए जाना, 'इलाही! हमारी ख़ताओं को माफ़ फ़रमा' हम तुम्हारी ख़ताओं को बख़्श देंगे और बहुत जल्द नेक लोगों को और ज़्यादा देंगे, पस ज़ालिमों ने इस क़ौल को जो उनसे कहा गया था, दूसरे क़ौल से बदल दिया। पस हमने ज़ालिमों और उनकी नाफ़रमानी की वजह से आसमान से सख़्त अज़ाब भेजा।'* (अल-बक़रः 2 : 58, 59)

क़रीब क़रीब यही मज़्मून सूरः आराफ़ की बीसवें रुकूअ् में बयान हुआ है। इन आयतों में अल्लाह तआला ने अपने सच्चे और नियाज़मंद बन्दों और मुतकब्बिर इंसानों के दर्मियान एक खुला फ़र्क़ क़ायम कर दिया है कि उसके नेक और फ़रमांबरदार बन्दे किसी से अपनी ज़ाती ग़रज़ और ज़ाती सरबुलन्दी के लिए नहीं लड़ते, बल्कि अल्लाह के दुश्मनों, फ़सादी और शरीर इंसानों की शरारत और ज़ालिम और सरकश क़ौमों के ज़ुल्म व तुग़यान को मिटाने के लिए सिर्फ़ इसलिए जंग करते हैं कि उससे अद्ल ग़लबा पाता है और अल्लाह का हुक्म बुलन्द होता है। इसलिए जब उनको कामियाबी नसीब होती है तो अपनी ख़ुशी घमंड के साथ नहीं ज़ाहिर करते, बल्कि अल्लाह की जनाब में ख़ुज़ूअ् व ख़ुशूअ के साथ सज्दे में गिरकर सज्दे करते हैं और जब क़ब्ज़ा किए गए इलाक़ों में दाख़िल होते हैं तो शुक्रगुज़ार और नेक इंसानों की तरह दाख़िल होते हैं।

अल्लाह का अज़ाब

हक़ न पहचानना और नाशुक्री करना, यही तस्वीर का दूसरा रुख़ है कि बनी इसराईल में से जिन्होंने उस क़ौल को, जो उनसे कहा गया था, दूसरे क़ौल से बदल डाला और अपने किए की सज़ा पाई। लेकिन क़ुरआन पाक ने इसकी कोई तफ़्सील बयान नहीं की, बस इतना कहकर कि 'आसमान से सख़्त अज़ाब भेजा' छोड़ दिया। मालूम होता है कि हक़ न पहचानने और फ़रमान न मानने का यह गन्दा काम बनी इसराईल की पूरी जमाअत से सरज़द नहीं हुआ था।

सबक़ और नसीहत

1. हज़रत यूशेअ् और बनी इसराईल के इन वाक़ियों में सबसे ज़्यादा जो बात तवज्जोह अपनी तरफ़ खींच रही थी, वह यह कि एक इंसान का इंसानी और अख़्लाक़ी फ़र्ज़ है कि जब उसको किसी मुसीबत या इम्तिहान से निजात मिले और वह कामियाब और सफल होकर अपनी मुराद को पहुंचे तो ग़रूर और घमंड के जाल में फंसकर यह न समझ बैठे कि यह मेरी निजी क़ाबिलियत और इस्तेदाद का नतीजा है, बल्कि अल्लाह का शुक्रगुज़ार बने और अपने इज्ज़ का एतराफ़ करते हुए उसके सामने सरे नियाज़ झुका दे, ताकि रहमते इलाही उसको अपने दामन में छिपा ले और दुनिया की तरह आख़िरत में भी वह बामुराद और शादकाम हो।

2. जिस क़ौम पर अल्लाह का फ़ज़्ल व एहसान और इनाम व इकराम खुली हुई निशानियों के ज़रिए होता है, वह अगर शुक्र व इताअ़त के बजाए नासपासी और नाफ़रमानी पर उतर आती है, तो फिर जल्द ही अल्लाह की *'बत्शे शदीद'* और कड़ी पकड़ का शिकार भी हो जाती है, क्योंकि उसकी सरकशी और बग़ावत मुशाहदा और तजुर्बा के बाद है और बेशुबहा वह सख़्त सज़ा की हक़दार है।

हज़रत हिज़क़ील عليه السلام

क़ुरआन और हज़रत हिज़क़ील عليه السلام

क़ुरआन मजीद में हिज़क़ील नबी का ज़िक्र नहीं है, लेकिन सूरः बक़रः में बयान किए गए एक वाक़िए के बारे में पुराने नेक लोगों से जो रिवायतें नक़ल की गई हैं उनसे मालूम होता है कि इस वाक़िए का ताल्लुक़ हज़रत हिज़क़ील عليه السلام ही से है। क़ुरआन में इस वाक़िए को इस तरह बयान किया गया है।

तर्जुमा– *'(ऐ मुख़ातब!) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जो मौत के डर से अपने घरों से हज़ारों की तायदाद में निकले, फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मर जाओ, फिर उनको ज़िंदा कर दिया। बेशक अल्लाह तआ़ला लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।'*

(अल-बक़रः 2 : 246)

तफ़सीर की किताबों में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और कुछ दूसरे सहाबा से यह रिवायत नक़ल की गई है कि बनी इसराईल की एक बहुत बड़ी जमाअ़त से जब उनके बादशाह या उनके पैग़म्बर हिज़क़ील ने यह कहा कि फ़्लां दुश्मन से लड़ाई करने के लिए तैयार हो जाओ और हक़ का कलिमा बुलन्द करने का फ़र्ज़ अदा करो, तो वे अपनी जानों के ख़ौफ़ से भाग खड़े हुए और यक़ीन करके कि अब जिहाद से बचकर मौत से महफ़ूज़ हो गए हैं, दूर एक घाटी में मुक़ीम हो गए। अल्लाह तआ़ला को यह हरकत नागवार हुई और उसके ग़ज़ब ने उन पर मौत तारी कर दी और वे सबके सब मौत के आग़ोश में चले गए। एक हफ़्ते के बाद उन पर हज़रत हिज़क़ील का गुज़र हुआ तो उन्होंने उनकी इस हालत पर अफ़सोस किया और दुआ मांगी कि इलाहुल आ़लमीन! इनको मौत के अ़ज़ाब से निजात दे, ताकि उनकी ज़िंदगी ख़ुद उनके लिए और दूसरों के लिए इबरत व बसीरत बन जाए। पैग़म्बर की दुआ क़ुबूल हुई और वह ज़िंदा होकर इबरत व नसीहत का नमूना बने।

अहम बातें

हज़रत हिज़क़ील से मुताल्लिक़ हालात के सिलसिले में दो अहम बातें सामने आती हैं—मरने के बाद की ज़िंदगी और जिहाद से बचना। इन दोनों बातों की वज़ाहत की जाती हैं—

मरने के बाद की ज़िंदगी

जिन लोगों ने पीछे के पन्नों में 'मोजज़े' की बहस को पढ़ा है वे हज़रत हिज़क़ील के ज़माने में मरने के बाद की ज़िंदगी के बारे में किसी शक व शुबहे के या ग़ैर-ज़रूरी बहसों के शिकार नहीं होंगे। यह सही है कि दुनिया में आम क़ानून के मुताबिक़ अगरचे दोबारा ज़िंदगी नहीं मिलती और क़ियामत ही के दिन जिस्मों के उठाए जाने का वाक़िया पेश आएगा, लेकिन अल्लाह के ख़ास क़ानून के पेशेनज़र किसी हिक्मत व मस्लहत की बुनियाद पर ऐसा होना अक़्ल के लिहाज़ से न सिर्फ़ यह कि मुम्किन है, बल्कि होता रहता है। दूसरे आज के ज़माने में नई रूहानियत (New Spiritualism) के माहिरों के नज़दीक यह बात नई खोज को पहुंच चुकी है कि 'रूह' जिस्म से अलग एक मुस्तक़िल मख़्लूक़ है और जिस्म के गल-सड़ जाने और उसके उन्सरी तख़्लीक़ के मिट जाने के बावजूद रूह ज़िंदा रहती है। साथ ही यह भी एक माक़ूल बात है कि जिस हस्ती ने किसी चीज़ को तर्कीब दिया है, वह तर्कीब के बिखर जाने के बाद दोबारा उसको तर्कीब दे सकती है, तो फिर कोई वजह नहीं कि हयाते रूह और बिखरे हुए हिस्सों के दोबारा तर्कीब के माक़ूल होने के बाद मुरदे के ज़िंदा होने के बारे में किसी शक व शुब्हा में फंसकर ग़ैर ज़रूरी तावील का सहारा लिया जाए।

जिहाद से पहलू बचाना

जब इंसान का ईमान व एतक़ाद इस यक़ीन को हासिल कर ले कि ख़ैर व शर और मौत और ज़िंदगी सब कायनात के पैदा करने वाले के हाथ में है, तो फिर एक लम्हे के लिए भी उसको ख़्याल नहीं आता कि वह अल्लाह की मुक़र्रर की हुई क़द्र के बारे में यह सोचे कि उसका हीला (बहाना) अल्लाह के

फ़ैसले को रद्द कर सकता है और अगर उसकी तक़्दीर लागू है तो दूसरी जगह वह उसके असर से आज़ाद रह सकता है।

इस्लाम की निगाह में तक़्दीर का यह फ़लसफ़ा है कि इंसान अपने अन्दर यक़ीन पैदा कर ले कि मेरा फ़र्ज़ अल्लाह के हुक्मों का मानना और उस पर अमल करना है। रहा यह मामला कि इस तामील की अदाएगी में जान का डर या माल की तबाही का डर है, तो वह मेरे अपने अख़्तियार में नहीं है। अगर कुदरत का हाथ जान व माल की हलाकत का फ़ौरी फ़ैसला कर चुका है तो दूसरे अस्बाब पैदा होकर तक्वीनी दुनिया के इस फ़ैसले को ज़रूर सच कर दिखाएंगे। यह यक़ीन इंसान को निडर और बहादुर बनाता और बुज़दिली और नामर्दी से दूर रखता है। उसकी नज़र सिर्फ़ फ़र्ज़ की अदाएगी पर जम जाती है और वह तक्वीनी फ़ैसलों को अपनी पहुंच से बाहर समझ कर उससे बे-नियाज़ हो जाता है।

इस्लाम ने तक़्दीर के ये मानी कभी नहीं बताए कि हाथ-पैर तोड़ कर और जद्दोजुहद और अमल की ज़िंदगी को छोड़कर ग़ैबी मदद के इंतिज़ार करने वाले हो बैठो और फ़र्ज़ अदा करने को यह कहकर छोड़ दो कि तक्वीनी फ़ैसले के मुताबिक़ जो कुछ होना होगा, होकर रहेगा। असल में यह ख़्याल बुज़दिली और नामर्दी की पैदावार है, जो फ़र्ज़ की अदाएगी से रोकता है और तन-आसानी की दावत देकर ज़िल्लत के हवाले कर दिया जाता है। इसीलिए मुहम्मदी ﷺ शरीअत में जिहाद के मैदान से भाग जाना (शिर्क के बाद) सबसे बड़ा गुनाह समझा जाता है और सच भी यही है कि अल्लाह पर ईमान लाने के बाद, जबकि इंसान अपनी जान व माल को उसके सुपुर्द कर देता है और सुपुर्दगी का नाम ही इस्लाम है, तो फिर उसको एक लम्हे के लिए भी यह हक़ नहीं रहता कि वह उसके हुक्म के ख़िलाफ़ जान बचाने की फ़िक्र करे। बुज़दिली और नामर्दी इस्लाम के साथ नहीं हो सकती और हक़ के रास्ते में बहादुरी ही इस्लाम की इम्तियाज़ी शान है।

नतीजे

1. अगर सलीम फ़ितरत और सीधी तबियत हो तो इंसान की हिदायत

और बसीरत के लिए एक बार फ़िक्र व ज़ेहन की हक़ीक़तों की तरफ़ मुतवज्जह कर देना काफ़ी है, फिर उसकी इंसानियत अपने आप सीधे रास्ते पर चल पड़ती है और मंज़िले मक़्सूद का पता लगा लेती है, लेकिन अगर बाहरी अस्बाब की वजह से फ़ितरत में टेढ़ और तबियत में ख़राबी पैदा हो चुकी हो, तो उसको हमवार करने के लिए अगरचे बार-बार अल्लाह की पुकार उसको बेदार करती है, पर हर बार के बाद उसकी सलाहियतें और इस्तेदादी ताक़तें सो जातीं बल्कि और ज़्यादा ग़फ़लत में डूबकर रह जाती हैं, यहां तक कि ताक़त और सलाहियत ख़त्म हो जाती है और जब इस दर्जे पर पहुंच जाती है, जिसका ज़िक्र क़ुरआन मजीद ने इस तरह किया है 'ख़-त-मल्लाहु अला कुलूबिहिम व अला समइहिम व अला अब्सारिहिम ग़िशावः' तो फिर उस पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होता है और वह हमेशा के लिए उसके ग़ज़ब और उसके फिटकार का निशाना बन जाता और इस एलान का हक़दार ठहरता है कि—

'उन पर ज़िल्लत और मस्कनत तारी हो गई और वे अल्लाह के ग़ज़ब के शिकार हो गए।'

चुनांचे बनी इसराईल की लगातार सरकशी और अल्लाह के फ़रमानों के मुक़ाबले में बराबर बग़ावत ने उनके टेढ़ेपन को उस दूसरे रास्ते पर डाल दिया था और हज़रत हिज़क़ील के दौर में भी वे उस बुरे रास्ते पर चलने में लगे हुए थे, पर उनमें एक छोटी-सी जमाअत पैग़म्बरों की रुश्द व हिदायत के सामने हमेशा सर झुकाती रही और लग़्ज़िशों और ख़ताकारियों के बावजूद उसने सीधे रास्ते को गिरते-पड़ते हासिल कर ही लिया।

2. जिहाद अगरचे क़ौम के कुछ लोगों के लिए मौत का पैग़ाम बनकर उनको दुन्यवी लज़्ज़त से महरूम कर देता है, लेकिन वह उम्मत और क़ौम की ज़िंदगी के लिए अक्सीर है और क़ौमी व मिल्ली निज़ाम के लिए हमेशा की बक़ा का कफ़ील और साथ ही मौत की गोद में जाने वाले लोगों के लिए फ़ानी और नापायदार हयात के बदले हमेशा की हयात अता करने वाला है। यही मौत का वह फ़लसफ़ा है जिसने मुसलमानों की ज़िंदगी को दूसरी क़ौमों से इस क़दर मुम्ताज़ (सर्वोच्च) कर दिया था कि ख़ुदा का कलिमा बुलन्द करने वाला

इंसान दुन्यवी ज़िंदगी से अलग शाद काम रहा तो ग़ाज़ी और मुजाहिद है और अगर मौत का शरबत हलक़ से उतार लिया तो शहीद, इसीलिए इर्शाद है—

तर्जुमा— *'जो अल्लाह की राह में क़त्ल हुए, उनको मुर्दा न कहो, बल्कि हक़ीक़ी हयात तो उन ही को हासिल है, लेकिन तुम इस सच्चाई को जानते नहीं हो।'* (अल-बक़रः 2 : 154)

और इसीलिए इस ज़िंदगी से जान चुराने वाले के लिए यह डरावा है—

तर्जुमा— *'और जो कोई उस दिन (जिहाद के दिन) काफ़िरों को पीठ देगा, सिवाए उस आदमी के जो लड़ाई की तरफ़ वापस आने वाला हो या अपनी जमाअत में पनाह तलाश करने वाला हो, वह अल्लाह के ग़ज़ब की तरफ़ लौटा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है।'* (अंफ़ाल : 16)

3. इस्लाम बहादुरी को अच्छा अख़्लाक़ कहता है और बुज़दिली को अख़्लाकी ख़राबी में गिनता है। एक हदीस में बुरे आमाल को गिनाते हुए नबी करीम ﷺ का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि मुसलमान होते हुए भी लग़्ज़िश और ख़ता की राह से इन आमाल का हो जाना मुम्किन है, लेकिन इस्लाम के साथ जुब्न (बुज़दिली) किसी हाल में भी जमा नहीं हो सकती। मगर याद रहे कि किसी पर बेजा क़ूवते आज़माइश का नाम बहादुरी नहीं है, बल्कि हक़ के मामले पर क़ायम हो जाना और बातिल से बेख़ौफ़ बन जाना बहादुरी है।

हज़रत इलयास عليه السلام

क़ुरआन और हज़रत इलयास

क़ुरआन में हज़रत इलयास का ज़िक्र दो जगह आया है, सूरः 'अल-अनआम' में और सूरः 'वस्साफ़्फ़ात' में सूरः अनआम में उनको सिर्फ़ नबियों की फ़ेहरिस्त में गिना गया है और 'वस्साफ़्फ़ात' में बेसत (नबी बनाए जाने) और क़ौम की हिदायत से मुताल्लिक़ हालात को मुख़्तसर तौर पर बयान किया है। बेसत के बारे में तफ़्सीर लिखने वालों और तारीख़ के माहिरों का ख़्याल है कि वह शाम के बाशिंदों की हिदायत के लिए भेजे गये थे और बालबक का

मशहूर शहर उनकी रिसालत और हिदायत का मर्कज़ था। हज़रत इलयास ﷺ की क़ौम मशहूर बुत बाल की परस्तार, तौहीद से बेज़ार, शिर्क में मुब्तला थी। तफ़्सीर की किताबों में नक़ल किया गया है कि बाल (बुत) सोने का था, बीस गज़ का क़द था, उसके चार मुंह थे और उसकी ख़िदमतगार चार सौ ख़ादिम मुक़र्रर थे। हज़रत इलयास की क़ौम दूसरे बुतों के साथ ख़ुसूसियत से उसकी पूजा करती थी, चुनांचे इस पहलू से कुरआन में इसका ज़िक्र आया है--

तर्जुमा--*'और बेशक इलयास रसूलों में से हैं और वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते? क्या तुम बाल को पुकारते हो? और सबसे बेहतर अल्लाह को छोड़े हुए हो? अल्लाह ही तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप-दादों का परवरदिगार है। पस उन्होंने इलयास को झुठलाया तो बेशुबहा वे लाए जाएंगे पकड़े हुए, अलावा उनके जो चुन लिए गए हैं और हमने बाद के लोगों में इलयास ﷺ का ज़िक्र बाक़ी रखा। इलयास रह० पर सलाम हो। बेशक हम नेकों को उसी तरह बदला दिया करते हैं, बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से हैं।*

(अस्साफ़्फ़ात 123 : 128)

नसीहत

हज़रत इलयास और उनकी क़ौम का वाक़िया अगरचे कुरआन में बहुत थोड़े में ज़िक्र किया गया है, फिर भी उससे यह सबक़ मिलता है कि यहूदी और बनी इसराईल की ज़ेहनियत इतनी ज़्यादा बिगड़ी हुई थी कि दुनिया की कोई बुराई ऐसी नहीं थी, जिसके करने का इनके भीतर लोभ न पाया जाता हो और कोई ख़ूबी ऐसी न थी जिसके ये दिलदादा हों। नबियों और रसूलों के एक लंबे और लगातार सिलसिले के बावजूद बुतपरस्ती, अ़नासिर परस्ती, तारापरस्ती, ग़रज़ ग़ैरअल्लाह की परस्तिश का कोई शोबा ऐसा न था, जिसके परस्तार ये न बने हों।

पर कुरआन मजीद में बनी इसराईल से मुताल्लिक़ इन वाक़ियों में जहां उनकी बद-बख़्ती और टेढ़ेपन पर रोशनी पड़ती है वहीं हमें यह नसीहत भी मिलती है कि अब जबकि नबियों और रसूलों का सिलसिला ख़त्म हो चुका

है और आख़िरी नबी के आ जाने और कुरआन के आख़िरी पैग़ाम ने इस सिलसिले को ख़त्म कर दिया है तो हमारे लिए बिल्कुल ज़रूरी है कि बनी इसराईल की बिगड़ी फ़ितरत और तबाह ज़ेहनियत के ख़िलाफ़ अल्लाह के हुक्मों को मज़बूती से पकड़ें और उनमें टेढ़ और बिगाड़ से काम लेकर उनके ख़िलाफ़ चलने की जुर्रात न करें। गोया हमारा तरीक़ा सुपुर्द व तस्लीम हो, इंकार और रास्ते से हटना न हो कि 'इस्लाम' के सिर्फ़ यही मानी हैं–

नोट–इंजील यूहन्ना (John) में उनको एलिया (Eliah) नबी कहा गया है।

हज़रत अल-यसअ् عليه السلام

नबी बनाया जाना

तारीख़ की किताबों में नक़ल किया गया है कि हज़रत अल-यसअ عليه السلام हज़रत इलयास عليه السلام के चचेरे भाई हैं और उनके नायब और ख़लीफ़ा भी। वे उम्र की शुरूआत से ही हज़रत इलयास عليه السلام के साथ रहते थे और उनके इंतिक़ाल के बाद अल्लाह ने बनी इसराईल की रहनुमाई के लिए हज़रत अल-यसअ् को नबी बनाया और उन्होंने हज़रत इलयास عليه السلام ही के तरीक़े पर बनी इसराईल की रहनुमाई की।

कुरआन और हज़रत अल-यसअ्

कुरआन में सिर्फ़ दो जगह हज़रत अल-यसअ् का ज़िक्र आया है

1. **तर्जुमा**–*'...और इस्माईल और **अल-यसअ्** और यूनुस عليه السلام और लूत और इन सबको हमने दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई।'*

2. **तर्जुमा**–*'...और ज़िक्र करो इस्माईल और अल-यसअ और ज़ुल किफ़्ल का और उनमें से हर एक नेक इंसानों में से थे।'* (स्वाद : 48)

नसीहत

बनी इसराईल के कुछ नबी और पैग़म्बर जलीलुल क़द्र नबियों की

सोहबत और उनकी ख़ुलूस के साथ पैरवी करने में ख़िलाफ़त के बाद नुबूवत के मंसब पर बिठाए गए, इससे यह ज़ाहिर होता है कि नेकों की सोहबत ख़ैर (भलाई) के हासिल करने के लिए अचूक तरीक़ा है–

यक ज़माना सोहबते बा - औलिया
बेहतर अज़ सद साला ताअ़त बे रिया।

हज़रत शमूईल

हज़रत शमूईल के क़िस्से में हज़रत तालूत, जालूत और हज़रत दाऊद का भी ज़िक्र आता है, इसलिए शुरू ही में उन शख़्सियतों का थोड़े में बयान किया जाता है।

कुरआन पाक और हज़रत शमूईल

कुरआन में हज़रत शमूईल का नाम नहीं है, बल्कि उन आयतों में जिस नबी का ज़िक्र है, वह यही शमूईल हैं–

तर्जुमा–*'क्या तुमको बनी इसराईल की उस जमाअ़त का हाल मालूम नहीं जिसने मूसा के बाद अपने ज़माने के नबी से दरख़्वास्त की थी कि हम अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेंगे, हमारे लिए एक हुक्मरां मुक़र्रर कर दीजिए।'* (अल-बक़रः 246)

हज़रत तालूत (Saul)

ऊपर की आयत में की गई दरख़्वास्त के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने जिसे हुक्मरां मुक़र्रर किया, वह हज़रत तालूत हैं–

तर्जुमा–*फिर ऐसा हुआ कि उनके नबी ने कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को मुक़र्रर किया है।* (अल-बक़रः 247)

जालूत (Goliath)

दुश्मन की फ़ौज का सरदार जालूत नामी देव हैकल शख़्स था। जालूत का नाम सूरः बक़रः आयत न. 249, 250-51 में आया है।

हज़रत दाऊद (David)

दुश्मन की फ़ौज के मुक़ाबले में हज़रत तालूत की रहनुमाई में बनी इसराईल में से जिस आदमी ने बहादुरी के जौहर दिखाए और जालूत को क़त्ल किया, वह हज़रत दाऊद हैं। (उनका तफ़्सील से ज़िक्र अलग किया गया है, वहां देखिए)

हज़रत शमूईल का नबी बनाया जाना

हज़रत यूशेअ् के ज़माने में बनी इसराईल जब फ़लस्तीन की सरज़मीन में दाख़िल हो गए तो वह आख़िर उम्र तक उनकी निगरानी और इस्लाह में लगे रहे और उनके मामले और आपसी झगड़ों के फ़ैसलों के लिए क़ाज़ियों को मुक़र्रर किया। काफ़ी अर्से तक यह निज़ाम चला। लेकिन एक वक़्त ऐसा आया कि उनमें न कोई नबी या रसूल था और न कोई पूरी क़ौम का हुक्मरां था, इसीलिए पड़ोसी क़ौमें अक्सर उन पर हमला करती रहती थीं और बनी इसराईल उनका निशाना बनते रहते थे। ऐसे ही एक हमले में बनी इसराईल को हवाली ग़ज़्ज़ा की फ़लस्तीनी क़ौम अशदूद के हाथों हारने की वजह से मुतबर्रक संदूक़, ताबूते सकीना से हाथ धोना पड़ा। इस संदूक़ में तौरात का असल नुस्ख़ा और हज़रत मूसा और हारून के तबर्रुक, सब मौजूद थे। इन हालात में अल्लाह ने क़ाज़ियों में से एक क़ाज़ी शमूईल को नबी का मंसब देकर बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत पर लगाया। तारीख़ के माहिरों के मुताबिक़ हज़रत शमूईल हज़रत हारून की नस्ल से हैं। क़ुरआन की सूरः बक़रः के 32वें रुकूअ् में जिस नबी का ज़िक्र किया गया है, वे यही हज़रत शमूईल हैं—

हज़रत तालूत का मुक़र्रर किया जाना

हज़रत शमूईल के ज़माने में भी बनी इसराईल की मुख़ालिफ़ ताक़तों की शरारतें जारी रहीं तो बनी इसराईल ने हज़रत शमूईल से दरख़्वास्त की कि वे हम पर एक बादशाह (हाकिम) मुक़र्रर कर दें जिसकी रहनुमाई में हम ज़ालिमों

का मुक़ाबला करें और अल्लाह के रास्ते में किए जिहाद के ज़रिए दुश्मनों की लाई हुई मुसीबत का ख़ात्मा कर दें। क़ुरआन पाक में आता है—

तर्जुमा— *'क्या तुम्हें बनी इसराईल की उस जमाअत का हाल मालूम नहीं जिसने मूसा के बाद अपने ज़माने के नबी से दरख़्वास्त की कि हम अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, हमारे लिए एक हुक्मरां मुक़र्रर कर दीजिए।'* (अल-बक़रः : 246)

बनी इसराईल की इस मांग पर अल्लाह के नबी (हज़रत शमूईल) ने फ़रमाया—

तर्जुमा— *'कुछ नामुम्किन नहीं है कि अगर तुमको लड़ाई का हुक्म दिया गया तो तुम लड़ने से इंकार कर दो।'* (अल-बक़रः : 246)

नबी के इस जवाब पर सरदारों ने कहा—

तर्जुमा— *'ऐसा क्योंकर हो सकता है कि हम अल्लाह की राह में न लड़ें, जबकि हम अपने घरों से निकाले जा चुके हैं और अपनी औलादों से अलग किए जा चुके हैं।'* (अल-बक़रः : 246)

इस तरह हुज्जत पूरी हो जाने के बाद हज़रत शमूईल ने अल्लाह की बारगाह में रुजू किया और अल्लाह ने तालूत को जो इल्मी और जिस्मानी दोनों लिहाज़ से बनी इसराईल में नुमायां थे, उन पर बादशाह मुक़र्रर कर दिया। बनी इसराईल को यह तक़र्रुरी पसन्द न आई और बातें बनाने लगे।

तारीख़ के माहिरों के ख़्याल में इस नापसंदीदगी की एक वजह यह थी कि एक मुद्दत से नुबूवत का सिलसिला हज़रत याक़ूब के एक बेटे लावी की नस्ल में और हुकूमत की सरदारी का सिलसिला यहूदा के ख़ानदान में चला आता था। अब यह शरफ़ बिन यमीन यानी हज़रत याक़ूब के एक और बेटे के ख़ानदान में मुंतक़िल होता नज़र आया तो इन सरदारों को जलन हुई और वे इसको सह न सके। क़ुरआन पाक में आता है—

तर्जुमा— *'फिर ऐसा हुआ कि उनके नबी ने कहा अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को मुक़र्रर कर दिया है। जब उन्होंने यह बात सुनी तो (इताअत व फ़रमांबरदारी के बजाए) कहने लगे, वह हम पर कैसे हुक्मरां बन सकता है? जब कि हम उससे कहीं ज़्यादा हुक्मरां बनने के हक़दार हैं। इसके अलावा*

उसको माल व दौलत की वुसअत भी हासिल नहीं है। नबी ने फ़रम (हुक्मरां का जो मेयार तुमने बना लिया है, वह ग़लत है) बेशक अल्ल तआला ने हुक्मरानी की क़ाबिलियत व इस्तेदाद में तुम पर उसको बेहतर बरतर बनाया है और इल्म की फ़रावानी और जिस्म की ताक़त दोनों में उस वुसअत फ़रमाई है। (और हुक्मरानी व क़ियादत तुम्हारे देने से नहीं मिल बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है, उसको अह्ल समझ कर) अपनी ज़मीन हुक्मरानी बख़्श देता है और वह अपने तसर्रुफ़ और कुदरत में बड़ी वुसअ रखने वाला और सब कुछ जानने वाला है। (अल-बक़रः : 24

ताबूते सकीना

बनी इसराईल की रद्दो व कद्द ने यहां तक तूल खींचा कि उन्होंने शमूई से मांग की कि अगर तालूत की तक़र्रुरी अल्लाह की तरफ़ से है तो उसके लिए अल्लाह का कोई निशान दिखला दे और इस पर उनके नबी (हज़रत शमूईल) ने फ़रमाया—

तर्जुमा– *'तालूत में हुकूमत की अह्लियत की निशानी यह है कि (ज मुक़द्दस) ताबूत (तुम खो चुके हो और दुश्मनों के क़ब्ज़े में चला गया है) तुम्हा पास वापस आ जाएगा और फ़रिश्ते उसको उठा लाएंगे।'* (अल-बक़रः 248)

हज़रत शमूईल की यह बशारत सामने आई और बनी इसराईल के सामने अल्लाह के फ़रिश्तों ने ताबूते सकीना को पेश कर दिया। अब बनी इसराईल को इंकार करने के लिए कोई उज़्र बाक़ी न रहा और तालूत को बनी इसराईल का बादशाह मान लिया गया।

तालूत और जालूत की लड़ाई और बनी इसराईल का इम्तिहान

अब तालूत ने बनी इसराईल में आम एलान कर दिया कि वे दुश्मनों (फ़लस्तीनियों) के मुक़ाबले में निकलें, इसलिए जब बनी इसराईल तालूत की रहनुमाई में एक नदी के किनारे पहुंचे तो एक और मरहला पेश आया—

तर्जुमा—जब तालूत लश्करियों को लेकर रवाना हुआ, तो उन्होंने कहा, बेशक अल्लाह तुमको नहर के पानी से आज़माएगा। पस जो आदमी उससे

सेराब होकर पिएगा, वह मेरी जमाअ़त में नहीं रहेगा, और जो एक चुल्लू पानी के सिवा उससे सैराब होकर नहीं पिएगा वह मेरी जमाअ़त में रहेगा फिर थोड़े से लोगों के अलावा सबने उस नहर से सेराब होकर पी लिया, फिर जब तालूत और उसके साथ वे लोग जो (अल्लाह के हुक्म पर सच्चा) ईमान रखते थे, नदी के पार उतरे तो उन लोगों ने (जिन्होंने तालूत के हुक्म की नाफ़रमानी की थी) कहा, हममें यह ताक़त नहीं कि आज जालूत से और उसकी फ़ौज से मुक़ाबला कर सकें। लेकिन वे लोग जो समझते थे उन्हें एक दिन अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर होना है, पुकार उठे (तुम दुश्मनों की ज़्यादती और अपनी कमी से क्यों परेशान हुए जाते हो) कितनी ही छोटी जमाअ़तें हैं जो बड़ी जमाअ़तों पर अल्लाह के हुक्म से ग़ालिब आ गईं और अल्लाह सब्र करने वालों का साथी है।'

(अल-बक़रः 249)

थोड़े में यह कि नतीजा यह निकला कि जब लश्कर नदी के पार हो गया, तो जिन लोगों ने ख़िलाफ़वर्ज़ी करके पानी पी लिया था, वे कहने लगे, हममें जालूत जैसे क़वी हैकल और उसकी जमाअ़त से लड़ने की ताक़त नहीं, लेकिन जिन लोगों ने ज़ब्ते नफ़्स और अमीर की इताअ़त का सबूत दिया था, उन्होंने बे-ख़ौफ़ होकर यह कहा कि हम ज़रूर दुश्मन का मुक़ाबला करेंगे, इसलिए अल्लाह की कुदरत का यह मुज़ाहरा अक्सर होता रहता है कि छोटी जमाअ़तें बड़ी जमाअ़तों पर ग़ालिब आ जाती हैं, अलबत्ता अल्लाह पर ईमान और इख़्लास व सबात शर्त है। चुनांचे मुजाहिदों ने अल्लाह की दरगाह में इख़्लास व गिड़गिड़ाहट के साथ दुआ़ की—

तर्जुमा— *'और जब वे (मुजाहिद) जालूत और उसकी फ़ौज के मुक़ाबले में आ गए तो कहने लगे, ऐ परवरदिगार! हमको सब्र दे और हमारे क़दम जमाए रख और काफ़िर क़ौम पर हम को फ़त्ह और मदद इनायत फ़रमा।'*

(अल-बक़रः 250)

हज़रत दाऊद की बहादुरी

बनी इसराईल (मुजाहिदों) का लश्कर जालूत के मुक़ाबले में आ खड़ा हुआ। उस लश्कर में एक नवजवान भी था, यह हज़रत दाऊद थे। उन्होंने

हज़रत दाऊद عليه السلام

हज़रत शमूईल के हालात में हज़रत दाऊद का ज़िक्र हज़रत तालूत और जालूत की लड़ाई के सिलसिले में आ चुका है। यही नवजवान आगे चलकर अल्लाह के बरगज़ीदा और पैग़म्बर बने और बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत के लिए रसूल और उनके इज्तिमाई नज़्म व ज़ब्त के लिए ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए। तालूत की मौजूदगी में ही या उनकी मौत के बाद हुकूमत की बागडोर हज़रत दाऊद के हाथ में आ गई।

हज़रत दाऊद और ख़लीफ़ा का लक़ब

बनी इसराईल में हज़रत दाऊद पहले शख़्स हैं जो अल्लाह के पैग़म्बर और रसूल भी थे और ताज व तख़्त के मालिक भी, चुनांचे क़ुरआन मजीद ने हज़रत दाऊद के इस शरफ़ व इम्तियाज़ का इस तरह ज़िक्र किया है—

1. **तर्जुमा**—*'अल्लाह ने उनको हुकूमत भी अ़ता की और हिक्मत (नुबूवत) भी और अपनी मर्ज़ी से जो चाहा, सिखाया।'* (अल-बक़रः 251)

2. **तर्जुमा**—*'ऐ दाऊद! बेशक हमने तुमको ज़मीन में अपना नायब बनाया।'* (स्वाद : 26)

3. **तर्जुमा**—*'और हमने हर एक (दाऊद व सुलैमान) को हुकूमत बख़्शी और इल्म अ़ता किया।'* (अल-अंबिया : 79)

नबियों और रसूलों में से हज़रत आदम عليه السلام के अलावा सिर्फ़ हज़रत दाऊद ही वह पैग़म्बर हैं जिनको क़ुरआन मजीद ने ख़लीफ़ा के लक़ब से पुकारा है। यह लक़ब हज़रत दाऊद के अल्लाह के इल्म और क़ुदरत वाली सिफ़तों का पूरा मज़्हर होना साबित करता है। ज़ाहिर है कि इसके लिए सच्ची शरीअ़त की इस्तिलाह में ख़लीफ़ा से बेहतर और कोई लफ़्ज़ नहीं हो सकता था। ख़ुलासा यह कि हज़रत दाऊद ने बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत की ख़िदमत भी अंजाम दी और उनकी इज्तिमाई ज़िंदगी की निगरानी भी की। उनकी ख़ुसूसियतें ये थीं—

1. वह तक़रीर व ख़िताबत के फ़न में कमाल रखते थे और इस तरह बोलते थे कि लफ़्ज़-लफ़्ज़ और जुम्ला-जुम्ला एक-एक करके समझ में आ जाता था, और इससे बात वाज़ेह और कलाम ज़ोरदार हो जाता था।

2. उनका हुक्म और फ़ैसला हक़ व बातिल के दर्मियान क़ौले फ़ैसल की हैसियत रखता था।

ज़बूर

कुरआन में आता है—

1. **तर्जुमा**—*'और हमने दाऊद को ज़बूर अ़ता की।* (अन-निसा : 163)

2. **तर्जुमा**—*'और बेशक कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है और हमने दाऊद को ज़बूर बख़्शी।'* (इसरा : 55)

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत दाऊद पर ज़बूर नाज़िल फ़रमाई जो ऐसे क़सीदों और सजे-सजाए कलिमों का मज्मूआ़ था, जिसमें अल्लाह की हम्द व सना और इंसान के आ़जिज़ बन्दा होने का एतराफ़ और नसीहतों और हिक्मतों के मज़्मून थे, लेकिन बनी इसराईल ने जान-बूझकर ज़बूर को भी तौरात और इंजील की तरह बदल डाला, जैसा कि कुरआन मजीद में ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—*'कुछ यहूदी वे हैं जो (तौरात, ज़बूर व इंजील) के कलिमों को उनकी असली हक़ीक़त से बदलते और फेरते हैं।'* (अन-निसा : 46)

हज़रत दाऊद عليه السلام की ख़ुसूसियतें

यों तो अल्लाह तआ़ला ने सभी पैग़म्बरों को ख़ुसूसी शरफ़ व इम्तियाज़ से नवाज़ा है और अपने नबियों और रसूलों को बेशुमार इनाम व इकराम बख़्शे हैं, फिर भी शरफ़ व ख़ुसूसियत के दर्जों के एतबार से उनके दर्मियान भी दर्जों का फ़र्क़ रखा है और यही इम्तियाज़ी दर्जे और मर्तबे उनको एक दूसरे से मुम्ताज़ करते हैं

तर्जुमा– *'ये रसूल! हमने इनके बाज़ (कुछ) को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है।'*

(अल-बक़रः 253)

चुनांचे हज़रत दाऊद ﷺ के बारे में भी कुरआन ने कुछ ख़ुसूसियतों और इम्तियाज़ों का ज़िक्र किया है और वे यह हैं–

पहाड़ों और चिड़ियों पर क़ब्ज़ा और उनकी तस्बीह

हज़रत दाऊद अल्लाह तआला की तस्बीह व तक़दीस में बहुत ज़्यादा लगे रहते थे और इतनी अच्छी आवाज़ वाले थे कि जब ज़बूर पढ़ते या अल्लाह की तस्बीह व तह्लील में लगे होते तो उनके घुमा देने वाले नग़्मों से न सिर्फ़ इंसान बल्कि चरिंद व परिंद वज्द में आ जाते और आपके आस-पास जमा होकर अल्लाह की हम्द के तराने गाते और सुरीली और वज्द में ला देने वाली आवाज़ों से तक़्दीस व तस्बीह में हज़रत दाऊद ﷺ का साथ देते और सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि पहाड़ भी अल्लाह की हम्द में गूंज उठते, चुनांचे दाऊद की इस फ़ज़ीलत का क़ुरआन ने सूरः अंबिया, सबा और साद में खोलकर ज़िक्र किया है–

तर्जुमा–*'और हमने पहाड़ों और परिंदों को ताबे (आधीन) कर दिया है कि वे दाऊद के साथ तस्बीह करते हैं और हम ही में ऐसा करने की क़ुदरत है।'*

(अंबिया : 79)

तर्जुमा–*'और बेशक हमने दाऊद को अपनी ओर से फ़ज़ीलत बख़्शी है (वह यह कि हमने हुक्म दिया) ऐ पहाड़ो और परिंदो! तुम दाऊद के साथ मिलकर तस्बीह और पाकी बयान करो।'*

तर्जुमा– *'बेशक हमने दाऊद के लिए पहाड़ों को सधा दिया कि उसके साथ सुबह और शाम तस्बीह करते हैं और परिंदों के परे के परे जमा होते और सब मिलकर ख़ुदा की हम्द करते हैं।'*

(साद : 18-19)

कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने इन आयतों की तफ़्सीर में कहा है कि चरिंद और परिंद और पहाड़ों की तस्बीह ज़ुबाने हाल से थी, गोया कायनात

की हर चीज़ का वजूद और उसकी तर्कीब बल्कि उसकी हक़ीक़त ज़र्रा-ज़र्रा पैदा करने वाले अल्लाह की गवाही देती है और यही उसकी तस्बीह व तह्मीद है।

इस ख़्याल के ख़िलाफ़ तस्क़ीक़ करने वालों की राय यह है कि जानवर पेड़-पौधे और दरिया पहाड़ वग़ैरह हक़ीक़त में तस्बीह करते हैं इसलिए क़ुरआन मजीद ने खोलकर इसका एलान किया है—

'सातों आसमान और ज़मीन और जो इनमें हैं, उसी की तस्बीह करते हैं और (मख़्लूक़ में से) कोई चीज़ नहीं है, मगर उसकी तारीफ़ के साथ तस्बीह करती है, लेकिन तुम उनकी तस्बीह नहीं समझते। बेशक वह बुर्दबार और माफ़ करने वाला है।' (बनी इसराईल : 44)

इस जगह दो बातें साफ़-साफ़ नज़र आती हैं एक यह कि कायनात की हर चीज़ तस्बीह करती है, दूसरे यह कि जिन्न व इंसान उनकी तस्बीह समझने की समझ नहीं रखते, इसलिए इन चीज़ों में तस्बीह का हक़ीक़ी वजूद मौजूद हो और फिर दूसरे जुम्ले का इतलाक़ किया जाए कि जिन्न व इंसान तस्बीह की समझ से मजबूर हैं, तो किसी क़िस्म का शक नहीं रहता।

ग़रज़ क़ुरआन मजीद का यह इर्शाद है कि कायनात की हर चीज़ अल्लाह की हम्द व सना करती है, अपने हक़ीक़ी मानी के एतबार से है अलबत्ता उनकी यह तस्बीह व तह्मीद इंसानों की आम समझ से ऊपर रखी गयी है। लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी और मशीयत के मातहत कभी-कभी नबियों और रसूलों को इसकी समझ दे दी जाती है जो उनके लिए निशान (मोजज़े) के तौर पर होता है और यह मोजज़ा हज़रत दाऊद की ख़ास बातों में से एक ख़ास बात थी।

हज़रत दाऊद ﷺ के हाथ में लोहे का नर्म होना

क़ुरआन ने इस वाक़िए को इस तरह बयान किया है—

तर्जुमा— *'और हमने उस (दाऊद) के लिए लोहा नर्म कर दिया कि बना*

ज़िरहें बड़ी और अन्दाज़े से जोड़ कड़ियां।' (सबा : 101-11)

तर्जुमा—*और हमने उस (दाऊद) को सिखाया एक क़िस्म का लिबास बनाना, ताकि तुमको लड़ाई के मौक़े पर उससे बचाव हासिल हो।*

(अंबिया : 80)

हज़रत दाऊद पहले आदमी हैं जिनको अल्लाह ने यह फ़ज़ीलत बख़्शी कि उन्होंने वह्य की तालीम के ज़रिए ऐसी ज़िरहें ईजाद कीं जो नाज़ुक और बारीक जंजीरों के हलक़ों (कड़ियों) से बनाई जाती थीं और हल्की और नर्म होने की वजह से जिनको जंग के मैदान का सिपाही पहन कर आसानी से चल-फिर भी सकता था और दुश्मन से महफ़ूज़ रहने के लिए भी बहुत उम्दा साबित होती थीं।

परिंदों से बातचीत करना

हज़रत दाऊद ﷺ और उनके साहबज़ादे सुलैमान ﷺ को अल्लाह तआला की ओर से एक शरफ़ यह हासिल हुआ था कि दोनों बुज़ुर्गों को परिंदों की बोलियां समझने का इल्म दिया गया था, इसकी तफ़्सीली बहस हज़रत सुलैमान ﷺ के वाक़िए में आएगी।

ज़बूर की तिलावत

बुख़ारी किताबुल अंबिया में एक रिवायत नक़ल की गई है कि हज़रत दाऊद पूरी ज़बूर को इतने मुख़्तसर वक़्त में तिलावत कर लिया करते थे कि जब घोड़े पर ज़ीन कसना शुरू करते तो तिलावत भी शुरू करते और जब कस कर फ़ारिग़ होते तो पूरी ज़बूर ख़त्म कर चुके होते। हज़रत दाऊद ﷺ के लफ़्ज़ों के अदा करने में इतनी तेज़ी की ताक़त अता कर दी गई थी कि दूसरा आदमी जिस कलाम को घंटों में अदा करे, हज़रत दाऊद उसको रिवायत के मुताबिक़ मुख़्तसर वक़्त में अदा करने पर क़ुदरत रखते थे।

हज़रत दाऊद عليه السلام से मुताल्लिक़ दो अहम वाक़िए

खेती का मामला

कुरआन में इर्शाद है—

तर्जुमा—*'और दाऊद और सुलैमान (का वाक़िया) जबकि वे एक खेती के मामले का फ़ैसला कर रहे थे, जिसको एक फ़रीक़ की बकरियों के रेवड़ ने ख़राब कर डाला था और हम अपने फ़ैसले के वक़्त (अपने फैले हुए इल्म के एतबार से) मौजूद थे, फिर उसके (बेहतरीन) फ़ैसले की समझ सुलैमान को अ़ता की और दाऊद व सुलैमान को हमने इल्म व हिक्मत अ़ता किए।'* (अंबिया : 78-79)

इस आयत की तफ़्सीर में जम्हूर तफ़्सीर लिखने वालों ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنه से यह वाक़िया नक़ल किया है कि एक बार हज़रत दाऊद عليه السلام की ख़िदमत में दो आदमी मुक़दमा लेकर हाज़िर हुए। मुद्दई ने दावे की रिपोर्ट यह दी कि मुद्दआ़ अ़लैहि की बकरियों के गल्ले ने उसकी तमाम खेती तबाह व बर्बाद कर डाली और उसको चर कर रौंद डाला।

हज़रत दाऊद عليه السلام ने अपने इल्म व हिक्मत के पेशेनज़र यह फ़ैसला दिया कि मुद्दई की खेती का नुक़्सान चूंकि मुद्दआ़ अ़लैहि के रेवड़ की क़ीमत के क़रीब बराबर है, इसलिए यह पूरा रेवड़ मुद्दई को तावान में दे दिया जाए। हज़रत सुलैमान عليه السلام की उम्र अभी ग्यारह साल थी, वह वालिद साहब के पास बैठे थे, कहने लगे कि अगरचे आपका यह फ़ैसला सही है, मगर इससे भी ज़्यादा मुनासिब शक्ल यह है कि मुद्दआ अ़लैहि का तमाम रेवड़ मुद्दई के सुपुर्द कर दिया जाए कि वह उसके दूध और उसके ऊन से फ़ायदा उठाए और मुद्दआ अ़लैहि से कहा जाए कि वह इस दर्मियान में मुद्दई के खेत की ख़िदमत अंजाम दे और खेत की पैदावार अपनी असली हालत पर वापस आ जाए तो खेत मुद्दई के सुपुर्द कर दे और अपना रेवड़ वापस ले ले। हज़रत दाऊद को

बेटे का यह फ़ैसला बहुत पसन्द आया।

कुरआन ने भी इस तरफ़ इशारा किया है कि इस सिलसिले में सुलैमान عليه السلام का फ़ैसला ज़्यादा मुनासिब रहा और इस ख़ास वाक़िए में दाऊद عليه السلام की समझ पर सुलैमान عليه السلام की समझ भारी पड़ी। फ़िक़्ह की इस्तिलाह में हज़रत दाऊद عليه السلام के फ़ैसले को क़ियासी कहेंगे और हज़रत सुलैमान عليه السلام के फ़ैसले को इस्तिहसानी मगर इस क़िस्म की जुज़ई (आंशिक) फ़ज़ीलत के यह मानी नहीं हैं कि कुल मिलाकर फ़ज़ीलत के मामले में हज़रत सुलैमान عليه السلام अपने वालिद हज़रत दाऊद عليه السلام पर फ़ज़ीलत रखते थे, इसलिए कि अल्लाह तआला ने फ़ज़ीलतों के मज्मूए के एतबार से हज़रत दाऊद की जो तारीफ़ की है, वह हज़रत सुलैमान عليه السلام के हिस्से में नहीं आई।

दुंबियों का मामला

कुरआन की सूरः साद में दाऊद عليه السلام से मुताल्लिक़ इस तरह ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा— *'और क्या तुझको उन दावे वालों की ख़बर पहुंची है, जब वे दीवार कूद कर इबादतख़ाने में घुस आए दाऊद के पास, तो दाऊद उनसे घबराया। वे बोले, घबराओ नहीं। हम दो झगड़ रहे हैं, ज़्यादती की है एक ने दूसरे पर हमारे दर्मियान, इंसाफ़ के मुताबिक़ फ़ैसला कर दे और टालने वाली बात न करना और हमको सीधी राह बता। यह मेरा भाई है, इसके पास 99 दुंबियां हैं और मेरे पास एक दुंबी है। पस यह कहता है कि वह भी मेरे हवाले कर दे और मुझसे बात करने में भी तेज़ है। दाऊद ने कहा, वह अपनी दुंबियों में तेरी एक दुंबी को मिलाने के लिए जो सवाल करता है, ज़ुल्म करता है और अक्सर शरीक एक दूसरे पर ज़ुल्म करते हैं, अलावा उसके कि जो ईमान लाए और अमल किए, वे नेक हैं और ऐसे नेक बहुत कम हैं और दाऊद के ख़्याल में गुज़रा कि हमने उसका इम्तिहान लिया, पस फिर मग्फ़िरत चाहने लगा वह अपने रब से और गिर पड़ा झुकाकर और रुजू हुआ (अल्लाह के सामने) फिर हमने उसको वह काम माफ़ कर दिया और उसके लिए हमारे पास (इज़्ज़त का) मर्तबा है और अच्छा ठिकाना। ऐ दाऊद! हमने तुझको मुल्क में*

(अपना) नायब मुक़र्रर किया है, सो तू लोगों में इंसाफ़ के साथ हुकूमत कर और नफ़्स की ख़्वाहिश पर न चल कि वह तुझको अल्लाह की राह से बिचला दे। जो लोग अल्लाह की राह से फिसलते हैं, उनके लिए है सख़्त अज़ाब।'

(पृ. 21-26)

इन आयतों में हज़रत दाऊद के एक इम्तिहान का ज़िक्र है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको पेश आया। हज़रत दाऊद अलै॰ ने पहले उसको नहीं समझा, मगर यकायक दिल में यह ख़्याल आया कि यह अल्लाह की तरफ़ से एक आज़माइश है, इसलिए फ़ौरन ही अल्लाह के बरगज़ीदा पैग़म्बरों की तरह अल्लाह तआला की ओर रुजू किया और दरगाहे इलाही में उनकी तौबा क़ुबूल होकर उनकी शान में बड़ाई और अल्लाह से क़रीब होने की वजह बना।

ऊपर वाली आयत की तफ़्सीर

मामला तो इस क़दर था, जितना बयान हुआ, लेकिन क़ुरआन ने इस आज़माइश की कोई तफ़्सील नहीं बयान की। इस सूरतेहाल में कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने इसराईली ख़ुराफ़ात का सहारा लेकर ऐसी तफ़्सीर कर डाली जो किसी तरह क़ुबूल करने के क़ाबिल नहीं हो सकती। (हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब स्योहारवी उन तमाम तफ़्सीरों पर तफ़्सीरी बहस के बाद जिस नतीजे पर पहुंचे, वह नीचे दिया जाता है।)

हमारे नज़दीक आयतों की बेहतरीन तौजीह व तफ़्सीर वह है जो नज़्मे कलाम, आयतों के रब्त और आगे-पीछे में मुताबक़त के लिहाज़ से भी सही है और जिसकी बुनियाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ के एक 'असर' पर क़ायम है, जो नीचे दिया जाता है—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया है कि हज़रत दाऊद ने कामों की तक़सीम को सामने रखकर अपने मामूलात को चार दिनों पर इस तरह बांट दिया था कि एक दिन ख़ालिस अल्लाह की इबादत के लिए, एक दिन मुक़दमों के फ़ैसले के लिए, एक दिन ख़ालिस ज़ात के लिए, एक दिन बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत के लिए आम था।

लेकिन दिनों की तक़्सीम की इस तफ़्सील में उस हिस्से को ज़्यादा अहमियत हासिल थी जो अल्लाह की इबादत के लिए ख़ास था, इसलिए कि यों तो हज़रत दाऊद ﷺ का कोई दिन भी अल्लाह की इबादत से ख़ाली न था, पर एक दिन को उन्होंने सिर्फ़ उसी के लिए ख़ास कर लिया था और उसमें कोई दूसरा काम अंजाम न देते थे। चुनांचे क़ुरआन मजीद उनकी इस ख़ुसूसियत को *'इन्नहू अव्वाब'* कहकर नुमायां करता है।

साथ ही क़ुरआन मजीद और बनी इसराईल की तारीख़ से साबित है कि हज़रत दाऊद हुजरा बन्द करके इबादत और तस्बीह व तह्मीद किया करते थे, ताकि कोई ख़लल अन्दाज़ न हो सके, गोया दिनों की तक़्सीम में सिर्फ़ एक दिन ऐसा था जिसमें हज़रत दाऊद तक किसी का पहुंचना बहुत मुश्किल था और बनी इसराईल से उसका ताल्लुक़ कट जाता था और बाक़ी दिनों में अगर कोई ख़ास हंगामी शक्ल पेश आ जाए तो हज़रत दाऊद के साथ वास्ता बाक़ी रहता था और वे अपने मामलों को उनकी तरफ़ रुजू कर सकते थे।

इसलिए हज़रत दाऊद ﷺ के दिनों की यह तक़्सीम, अगरचे ज़िंदगी के नज़्म और तक़्सीमे अ़मल के लिहाज़ से हर तरह तारीफ़ के क़ाबिल थी, लेकिन उसमें से एक दिन को अल्लाह की इबादत के लिए इस तरह ख़ास कर लेना कि उनका ताल्लुक़ अल्लाह की मख़्लूक़ से टूट जाए, 'नुबूवत के मंसब' और 'ख़िलाफ़त के मंसब' के ख़िलाफ़ था और हज़रत दाऊद ﷺ को अल्लाह तआला ने एक गोशा-नशीन इबादतगुज़ार और ज़ाहिद की हैसियत से नहीं नवाज़ा था, बल्कि उनको नुबूवत और ख़िलाफ़त बख़्श कर मख़्लूक़ की दीनी व दुन्यवी हर क़िस्म की ख़िदमत व हिदायत के लिए भेजा था और इस तरह उनकी मुबारक ज़िंदगी का बड़ा कारनामा 'ख़ल्क़ की हिदायत' और 'ख़ल्क़ की ख़िदमत' था, न कि 'इबादत की कसरत', चुनांचे हज़रत दाऊद ﷺ की इस रविश को ख़त्म करने के लिए अल्लाह ने उनको इस तरह आज़माइश (फ़ित्ने) में डाल दिया कि दो आदमी जिनके दर्मियान एक ख़ास झगड़ा था, इबादत के ख़ास दिन में हुजरे की दीवार फांद कर अन्दर दाख़िल हो गए। हज़रत दाऊद ﷺ ने अचानक आदत के ख़िलाफ़ इस तरह दो इंसान को मौजूद पाया तो बशर होने के तक़ाज़े के तौर पर घबरा गए। दोनों ने सूरतेहाल का अन्दाज़ा करते हुए अर्ज़ किया कि आप डरें नहीं। हमारे इस तरह

अचानक दाख़िल होने की वजह यह झगड़ा है और हम इसका फ़ैसला चाहते हैं। तब हज़रत दाऊद ने वाक़िए को सुना और ऊपर वाली नसीहत फ़रमाई।

कुरआन ने इस जगह झगड़े के आम पहलुओं को नज़रअन्दाज़ कर दिया, क्योंकि वे हर समझदार के दिमाग़ में अपने आप आ जाते हैं कि दाऊद का फ़ैसला बेशक हक़ के मुताबिक़ ही रहा होगा और उसने सिर्फ़ उसी पहलू को नुमायां किया, जिसका ताल्लुक़ 'रुश्द व हिदायत' से था, यानी ज़बरदस्तों का कमज़ोरों के साथ ज़ुल्म करना।'

ग़रज़ दोनों फ़रीक़ों का फ़ैसला करने के बाद हज़रत दाऊद फ़ौरन ख़बरदार हो गए कि मुझको अल्लाह तआला ने इस आज़माइश में किसलिए डाला है और वे हक़ीक़ते हाल को समझ कर अल्लाह की दरगाह में सज्दे में गिर गए, तौबा की और अल्लाह ने तौबा को कुबूल फ़रमा कर उनके बड़प्पन को कई गुना बढ़ा दिया और फिर यह नसीहत फ़रमाई कि ऐ दाऊद! हमने तुमको ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बनाकर भेजा है। इसलिए तुम्हारा फ़र्ज़ है कि अल्लाह के नायब होने का पूरा-पूरा हक़ अदा करो और यह ख़्याल रखो कि इस राह में अद्ल व इंसाफ़ बुनियादी बात है और सीधे रास्ते से हटकर कभी इतिहाओं के रास्ते को अख़्तियार न करो।

मुबारक उम्र और कफ़न-दफ़न

हज़रत दाऊद ﷺ ने एक लम्बी उम्र पाई और एक रिवायत के एतबार से सत्तर साल हुकूमत की। तौरात के मुताबिक़ वह 'सैहून' (Sidon) में दफ़न किए गए।

क्या सबक़ मिला?

1. अल्लाह तआला जब किसी हस्ती को अज़्म वाला बनाता है और उसकी शख़्सियत को ख़ास ख़ूबियों से नवाज़ना चाहता है, तो उसकी फ़ितरी जौहरों को शुरू ही से चमका देता है—

बाला-ए-सरश ज़ होशमन्दी   मी ताफ़्त सितारा-ए-बुलन्दी

(सादी रह०)

2. कभी-कभी हम एक चीज़ को मामूली समझ लेते हैं, लेकिन हालात व वाक़ियात बाद में ज़ाहिर करते हैं कि 'बहुत क़ीमती चीज़' है।

3. हमेशा 'ख़लीफ़तुल्लाह' (अल्लाह के ख़लीफ़ा) और 'ताग़ूती बादशाह' के दर्मियान यह फ़र्क़ नज़र आएगा कि पहले ज़िक्र किए गए लोगों में हर क़िस्म की शान व शौकत के बावजूद आजिज़ी, इन्कसारी और जन-सेवा की भावना पाई जाएगी और दूसरे क़िस्म के लोगों में घमंड, 'मैं ही सब कुछ हूं' की भावना और ज़ुल्म और ज़्यादती का ग़लबा होगा और वह अल्लाह की मख़्लूक़ को अपनी राहत और ऐश का एक आला समझेगा।

4. अल्लाह का क़ानून है कि जो हस्ती इज़्ज़त और उरूज पर पहुंचने के बाद जिस क़दर अल्लाह का शुक्र और उसके फ़ज़्ल व करम का एतराफ़ करती है, उसी क़दर उसको ज़्यादा से ज़्यादा इनाम व इकराम से और ज़्यादा नवाज़ा जाता है। हज़रत दाऊद की पूरी ज़िंदगी इस पर गवाह है।

5. मज़हब और दीन अगरचे रूहानियत से ज़्यादा ताल्लुक़ रखता है, लेकिन माद्दी ताक़त (ख़िलाफ़त) उसकी बड़ी मददगार है, यानी दीन व मिल्लत, दीनी और दुन्यवी इस्लाह के लिए काफ़ी है और ख़िलाफ़त व ताक़त उसके बताए हुए अद्ल के निज़ाम की हिफ़ाज़त करने वाली, चुनांचे हज़रत उस्मान ؓ का यह क़ौल बहुत मशहूर है—

'बेशक अल्लाह तआला साहिबे ताक़त (ख़लीफ़ा) के ज़रिए बचाव का वह काम लेता है जो क़ुरआन करीम के ज़रिए अंजाम नहीं पाता।'

(अल-बिदायः वन्निहायः, भाग 1, पृ. 10)

6. अल्लाह तआला ने मुल्क व हुकूमत देने के लिए क़ुरआन मजीद की अलग-अलग आयतों में जो इर्शाद फ़रमाया है, उसका हासिल यह है कि सबसे पहले इंसान को यह यक़ीन पैदा करना चाहिए कि मुल्क व हुकूमत का देना और उसका छिन जाना सिर्फ़ अल्लाह की क़ुदरत के हाथ में है, चुनांचे दुनिया के बड़े-बड़े शहंशाहों और बाजबरूत सुल्तानों की तारीख़ इसकी ज़िंदा गवाह है कि—

तर्जुमा—*अल्लाह! शाही और जहांदारी के मालिक! तू जिसे चाहे मुल्क बख़्श दे, जिससे चाहे, मुल्क ले ले, जिसे चाहे इज़्ज़त दे दे, जिसे चाहे ज़लील*

कर दे, तेरे ही हाथ में भलाई है। बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वा है।' (आले इमरान : 2

लेकिन उसने इस देने और लेने का एक क़ानून मुक़र्रर कर दिया जिसको 'अल्लाह की सुन्नत' बताना मुनासिब है। क़ानून यह है कि क़ौमों अ उम्मतों को हुकूमत व सल्तनत दो तरह हासिल होती है, एक 'अल्लाह विरासत' की मारफ़त और दूसरी 'दुन्यवी अस्बाब व वसाइल' की मारफ़ पहली सूरत में किसी क़ौम को जब हुकूमत अ़ता होती है कि उसके अक़ी और अ़मल में पूरी तरह विरासते इलाही काम करे, यानी अल्लाह तआ़ला साथ उसकी अक़ीदत का रिश्ता भी सही और उस्तवार हो और इंफ़िरादी अ इज्तिमाई आमाल में भी सलाह व ख़ैर के इस दर्जे पर फ़ाइज़ होकर क़ुरआ के लफ़्ज़ों में उसको 'सालिहीन' में गिना जा सके।

यह क़ौम बेशक इसकी हक़दार है कि वह अल्लाह के इस इनाम नवाज़ी जाए, जिसका नाम 'ख़िलाफ़ते इलाहीया' है और जो हक़ीक़त दुनिया में अल्लाह की नियाबत (नायाब होना) का मज़्हर और नबियों अ रसूलों की पाक विरासत है। अल्लाह का वायदा है कि जो क़ौम भी अक़ी व अ़मल में नबियों और रसूलों की विरासत से फ़ैज़ हासिल कर रही है, व ज़मीनी विरासत की भी मालिक होगी और अगर दुनिया के अस्बाब औ वसीलों के पहाड़ भी उसके दर्मियान रोक बनेंगे, तो इनसे सबको ज़ेर व ज़ब करके अल्लाह तआ़ला वायदा ज़रूर पूरा करेगा, चुनांचे इर्शाद है—

तर्जुमा— *'और हमने बेशक ज़बूर में नसीहत के बाद यह लिख दिया कि अल्लाह की ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे।'* (अल-अंबिया : 105

तर्जुमा— *'बेशक ज़मीन अल्लाह ही की मिल्कियत है, वह अपने बन्दों से जिसको चाहता है वारिस बना देता है।'* (अल-आराफ़ : 128

इन आयतों में उसकी मशीयत का यही फ़ैसला है कि ज़मीन की विरासत उन्हीं को नसीब होती है जो उसके सालेह बन्दे हैं और अगर किसी क़ौम या उम्मत में यह सलाहियत मौजूद नहीं है, तो वह चाहे इस्लाम की दावेदार ही क्यों न हो, तो उसको ज़मीनी विरासत नसीब नहीं हो सकती और 'ख़िलाफ़ते इलाहीया' उसका हक़ नहीं बन सकती है और न उस क़ौम की इज़्ज़त व

कर दे, तेरे ही हाथ में भलाई है। बेशक तू हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।' (आले इमरान : 26)

लेकिन उसने इस देने और लेने का एक क़ानून मुक़र्रर कर दिया है जिसको 'अल्लाह की सुन्नत' बताना मुनासिब है। क़ानून यह है कि क़ौमों और उम्मतों को हुकूमत व सल्तनत दो तरह हासिल होती है, एक 'अल्लाह की विरासत' की मारफ़त और दूसरी 'दुन्यवी अस्बाब व वसाइल' की मारफ़त। पहली सूरत में किसी क़ौम को जब हुकूमत अ़ता होती है कि उसके अ़क़ीदे और अ़मल में पूरी तरह विरासते इलाही काम करे, यानी अल्लाह तआ़ला के साथ उसकी अक़ीदत का रिश्ता भी सही और उस्तवार हो और इंफ़िरादी और इज्तिमाई आ़माल में भी सलाह व ख़ैर के इस दर्जे पर फ़ाइज़ होकर कुरआन के लफ़्ज़ों में उसको 'सालिहीन' में गिना जा सके।

यह क़ौम बेशक इसकी हक़दार है कि वह अल्लाह के इस इनाम से नवाज़ी जाए, जिसका नाम 'ख़िलाफ़ते इलाहीया' है और जो हक़ीक़त में दुनिया में अल्लाह की नियाबत (नायाब होना) का मज़्हर और नबियों और रसूलों की पाक विरासत है। अल्लाह का वायदा है कि जो क़ौम भी अ़क़ीदे व अ़मल में नबियों और रसूलों की विरासत से फ़ैज़ हासिल कर रही है, वह ज़मीनी विरासत की भी मालिक होगी और अगर दुनिया के अस्बाब और वसीलों के पहाड़ भी उसके दर्मियान रोक बनेंगे, तो इनसे सबको ज़ेर व ज़बर करके अल्लाह तआ़ला वायदा ज़रूर पूरा करेगा, चुनांचे इर्शाद है—

तर्जुमा— *'और हमने बेशक ज़बूर में नसीहत के बाद यह लिख दिया कि अल्लाह की ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे।'* (अल-अंबिया : 105)

तर्जुमा— *'बेशक ज़मीन अल्लाह ही की मिल्कियत है, वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है वारिस बना देता है।'* (अल-आराफ़ : 128)

इन आयतों में उसकी मशीयत का यही फ़ैसला है कि ज़मीन की विरासत उन्हीं को नसीब होती है जो उसके सालेह बन्दे हैं और अगर किसी क़ौम या उम्मत में यह सलाहियत मौजूद नहीं है, तो वह चाहे इस्लाम की दावेदार ही क्यों न हो, तो उसको ज़मीनी विरासत नसीब नहीं हो सकती और 'ख़िलाफ़ते इलाहीया' उसका हक़ नहीं बन सकती है और न उस क़ौम की इज़्ज़त व

अज़्मत के लिए अल्लाह के पास कोई वायदा है। अलबत्ता अल्लाह की मशीयत अपनी हिक्मत व मस्लहत के पेशेनज़र कायनात के नज़्म व इन्तिज़ाम के लिए जिसको चाहती है, हुकूमत अ़ता कर देती है और जिससे चाहती है, छीन लेती है। इस देने-लेने में उसका क़ानून इसी तरह काम करता रहता है। इस देने और छीन लेने में इतनी अलग-अलग और अनगिनत मस्लहतें होती हैं कि इंसान उनकी हक़ीक़त तक पहुंचने से आ़जिज़ है।

सबक़ हासिल करने की जगह यह होती है कि ताज व तख़्त के मालिक को इसलिए हुकूमत नहीं दी जाती कि अल्लाह उससे ख़ुश है, बल्कि इसलिए दी जाती है कि ज़मीन के हक़ीक़ी वारिसों ने अपनी बदकिरदारियों की वजह से विरासत के हक़ों को अपने हाथों से खो दिया और अब कायनात की आम मस्लहतों को सामने रखकर हुकूमत के लिए न मुस्लिम की शर्त है, न काफ़िर व मुश्रिक की।

तर्जुमा—*'और अल्लाह जिसे चाहता है, अपना मुल्क बख़्श देता है।'* (अल-बक़र: : 247)

अगर मुसलमान इबरत की आंखें खोलें और अपनी गन्दी ज़िंदगी में क्रान्ति पैदा करके 'सालिहीन' बन जाएं तो अल्लाह का वायदा भी उनको बशारत देने के लिए आगे बढ़ता है।

तर्जुमा—*'वायदा कर लिया अल्लाह ने उन लोगों से जो तुममें ईमान वाले हैं और किए हैं उन्होंने नेक काम, अलबत्ता बाद में हाकिम कर देगा उनको मुल्क में जैसा हाकिम किया था उनके अगलों को और जमा देगा उनके लिए दीन जो पसन्द कर लिया उनके वास्ते और देगा उनको उनके ख़ौफ़ के बदले अम्न।'* (अन-नूर 55)

एक अहम नुक्ता

इसमें कोई शुबहा नहीं कि अल्लाह की इबादत और अल्लाह की तस्बीह (सुब्हानल्लाह कहना) और तह्लील *(ला इला-ह इल्लल्लाह कहना)* एक मुसलमान की ज़िंदगी का मक़्सद है, फिर भी अल्लाह ने जिन हस्तियों को अपनी मख़्लूक़ की रुश्द व हिदायत और ख़िदमते-ख़ल्क़ के लिए चुन लिया

है उनके लिए 'कसरते इबादत' (ज़्यादा से ज़्यादा इबादत) के मुक़ाबले में 'अदाएगी फ़र्ज़ में इन्हिमाक' (फ़र्ज़ अदा करने में लगा रहना) अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा महबूब और पसन्दीदा अमल है। बेशुबहा एक सूफ़ी और रियाज़ करने वाला आबिद व ज़ाहिद, गोशा गीर और ख़लवतनशीं होकर इबादतों में लगा रहता है। 'विलायत मंसब के दर्जों को उतना ही हासिल करता है, नुबूवत के मंसब और 'ख़िलाफ़त' के मंसब के ख़िलाफ़ कि अल्लाह तआला की ओर से उसको दिए जाने की ग़रज़ और मक़्सद मख़्लूक़ की रुश्द व हिदायत और उनकी ख़िदमत और सेवा है। इसलिए उसका कमाल मख़्लूक़ के साथ रिश्ता व ताल्लुक़ क़ायम करके अल्लाह के हुक्मों को सरबुलन्द करना है, न कि ख़लवत में बैठकर 'सूफ़ी' बनना।

मस्लहत दर दीने ईसा ग़ार व कोह।
मस्लहत दर दीने मा जंग व शिकोह।

इसराईली पैग़म्बरों के हालात से मुताल्लिक़ एक अहम वज़ाहत

(हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्युहारवी रह० ने हज़रत सुलैमान ﷺ से मुताल्लिक़ वाक़ियों को तफ़्सीली तौर पर बयान करने के बाद एक अहम नुक्ता लिखा है। इस नुक्ते को शुरू ही में बयान कर दिया जाए तो ख़ुलासा लिखने की सूरत वाज़ेह हो जाएगी—लेखक)

नबी अकरम ﷺ ने एक जगह सिर्फ़ यह इर्शाद फ़रमाया है कि अह्ले किताब की जो रिवायतें कुरआन और इस्लाम की तालीम के ख़िलाफ़ न हों, उनको नक़ल करना सही है। लेकिन हमने इस मुबारक इर्शाद की बुनियादी शर्त कि 'वह कुरआन और इस्लाम की बुनियादी तालीम के ख़िलाफ़ न हों' को नज़रअंदाज़ करके हर क़िस्म की इसराईली रिवायतों को न सिर्फ़ नक़ल किया बल्कि कुरआन की तफ़्सीर व तौज़ीह के लिए उनको दलील बना लिया और जगह-जगह कुरआन की तावील व तफ़्सीर में उनको पेश करना शुरू कर दिया। इसके नतीजे अच्छे न हुए। इस्लाम की तालीम के ख़िलाफ़ इसराईली रिवायतों को इस्लामियात, ख़ास तौर से तफ़्सीरे कुरआन में जगह देना ग़लत और सख़्त मुश्किल क़दम है। सही और साफ़ राह (सीधा रास्ता) सिर्फ़ वह है जो

तहक़ीक़ करने वाले उलेमा ने अपनाया है कि वह एक तरफ़ कुरआन व हदीस की नस्स पर अपना ईमान व यक़ीन रखते और उनमें इलहाद भरी तावीलों को तहरीफ़ समझते हैं और दूसरी तरफ़ कुरआन व हदीस के दामन को इसराईली रिवायतों से पाक साबित करके हक़ीक़त की रोशनी को सामने लाते हैं।'

(तफ़्सील जानने की ख़्वाहिश रखने वाले 'क़ससुल कुरआन' भाग 2, पृ. 171, 172 पढ़ें।)

हज़रत सुलैमान عليه السلام

ख़ानदान और बचपन

हज़रत सुलैमान عليه السلام हज़रत दाऊद عليه السلام के बेटे हैं। अल्लाह ने उनको बड़ा अच्छा ज़ेहन दिया था और मुक़दमों के फ़ैसला करने में अपने ज़ेहन के इस्तेमाल का कमाल फ़ितरत ने शुरू ही से दे रखा था। चुनांचे उनके बचपन का वाक़िया दाऊद के ज़िक्र में बयान किया जा चुका है।

दाऊद عليه السلام की विरासत

तारीख़ लिखने वाले कहते हैं कि हज़रत सुलैमान عليه السلام जवानी को पहुंच चुके थे कि हज़रत दाऊद का इंतिक़ाल हो गया और अल्लाह तआला ने उनको नुबूवत और हुकूमत दोनों में हज़रत दाऊद عليه السلام का जानशीं बना दिया।

कुरआन मजीद में इर्शाद है—

तर्जुमा— *'और सुलैमान दाऊद का वारिस हुआ।'* (नम्ल 16)

तर्जुमा— *'और (दाऊद व सुलैमान) हर एक को हमने हुकूमत दी और इल्म (नुबूवत) दिया।'* (अल-अंबिया 79)

सुलैमान عليه السلام की ख़ुसूसियतें

हज़रत दाऊद की तरह अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान عليه السلام को भी कुछ ख़ुसूसियतों और इम्तियाज़ी बातों से नवाज़ा और अपनी नेमतों में से कुछ ऐसी नेमतें अता फ़रमाईं जो उनकी मुबारक ज़िंदगी की ख़ास बातें बनीं।

परिंदों की बोलियां समझना

कुरआन मजीद में इर्शाद है—

तर्जुमा— *'और सुलैमान दाऊद का वारिस हुआ और उसने कहा कि ऐ लोगो! हमको परिंदों की बोलियों का इल्म दिया गया है और हमको हर चीज़ बख़्शी गई है। बेशक यह अल्लाह का खुला हुआ फ़ज़्ल है।'* (अन-नम्ल 16)

कुरआन के ऊपर के बयान से तो यह साबित होता है कि यह कोई आम बात न थी, बल्कि एक ऐसी नेमत थी जिसको निशान (मोजज़ा) कहा जाता है और वह बेशक परिंदों की बोलियां बोलने वाले इंसान की बातों की तरह समझते थे और यक़ीनन उनका यह इल्म दुन्यवी अस्बाब से ऊपर ख़ालिस क़ुदरत के क़ानूनों के फ़ैज़ान का नतीजा था और एक ऐसी बख़्शिश और देन थी, जिसको अल्लाह का निशान कहना चाहिए, मगर जो इन जैसी पाक हस्तियों के लिए ख़ास है।

हवा पर क़ाबू

कुरआन मजीद ने हज़रत सुलैमान ﷺ के हवा पर कन्ट्रोल से मुताल्लिक़ जितना बयान किया है, वह यह है—

तर्जुमा— *'और क़ाबू में कर दिया सुलैमान के लिए तेज़ व तुंद हवा को कि उसके हुक्म से ज़मीन पर चलती थी, जिसको हमने बरकत दी थी और हम हर चीज़ के जानने वाले हैं।'* (अंबिया 181)

तर्जुमा— *'और सुलैमान के लिए क़ाबू में कर दिया हवा को कि सुबह से एक महीने की मुसाफ़त (दूरी) और शाम को एक महीने की मुसाफ़त (तै कराती)।* (सबा : 12)

तर्जुमा— *और क़ाबू में कर दिया हमने उस (सुलैमान) के लिए हवा को कि चलती है वह उसके हुक्म से, नर्मी के साथ, जहां वह पहुंचना चाहे।'* (साद : 36)

ऊपर की आयतों में हज़रत सुलैमान ﷺ के उस शरफ़ के बारे में तीन बातें बयान की हैं—

1. एक यह कि 'हवा' को हज़रत सुलैमान के हक़ में 'सधा' दिया गया था।

2. दूसरी यह कि 'हवा' उनके हुक्म की इस तरह ताबे थी कि शदीद और तेज़ व तुन्द होने के बावजूद उनके हुक्म से नर्म और धीरे-धीरे चलने की वजह से 'राहत पहुंचने वाली' हो जाती थी।

3. तीसरी बात यह है कि नर्मरफ़्तारी के बावजूद उसके तेज़ चलने का यह हाल था कि हज़रत सुलैमान का सुबह व शाम का जुदा-जुदा सफ़र एक शहसवार (घोड़सवार) की लगातार एक माह की तेज़ रफ़्तार दूरी के जितना होता था, गोया 'सुलैमान का तख़्त इंजन और मशीन जैसे ज़ाहिरी साधनों से कहीं आगे सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म से एक बहुत तेज़रफ़्तार हवाई जहाज़ से भी ज़्यादा तेज़ मगर हल्केपन के साथ हवा के कांधे पर उड़ा चला जाता था। इसलिए हवाओं को क़ाबू में करने के वाक़िए को हज़रत सुलैमान की सच्ची नुबूवत की ख़ास और नुमायां बातों में से एक बात मानते हुए बिना किसी तावील के सही मान लिया जाए और बेकार की तफ़्सील, तावील और इसराईली ख़ुराफ़ात में न उलझा जाए।

जिन्नों और हैवानों को क़ाबू में रखना

हज़रत सुलैमान ﷺ ने एक बार अल्लाह के दरबार में यह दुआ की—

तर्जुमा—*'ऐ परवरदिगार! मुझको बख़्श दे और मेरे लिए ऐसी हुकूमत अ़ता कर, जो मेरे बाद किसी के लिए भी मयस्सर न हो, बेशक तू बहुत देने वाला है।'* (साद 35)

अल्लाह तआ़ला ने उनकी इस दुआ़ को कुबूल फ़रमाया और एक ऐसी अजीब व ग़रीब हुकूमत अ़ता की कि न इससे पहले किसी को नसीब हुई और न इनके बाद किसी को मयस्सर आएगी। उनकी यह हुकूमत इंसानों के अलावा जिन्नों, हैवानों और हवाओं पर भी थी और ये सब अल्लाह के हुक्म से इनके ताबे और फ़रमांबरदार (अधीन और आज्ञापालक) थे। (जिन्न अल्लाह की मख़्लूक़ है। इनका ज़िक्र हज़रत आदम के ज़िक्र में हो चुका है।)

बैतुलमक़्दिस की तामीर

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी ﷺ से रिवायत की गई एक सहीह मर्फ़ूअ़ हदीस से यह मतलब लिया गया है कि जिस तरह हज़रत इब्राहीम ﷺ ने मस्जिदे हराम की बुनियाद रखी और वह मक्का की आबादी की वजह बनी, हज़रत याक़ूब (इसराईल) ने मस्जिद बैतुलमक़्दिस की बुनियाद डाली और इसकी वजह से बैतुलमक़्दिस की आबादी वजूद में आई, फिर एक लम्बे अर्से के बाद हज़रत सुलेमान के हुक्म से मस्जिद और शहर नए सिरे से बसाया गया और जिन्नों के क़ब्ज़े में होने की वजह से बेनज़ीर और शानदार तामीर वजूद में आई। जिन्न क़ौम ने हज़रत सुलैमान ﷺ के लिए और भी तामीरें कीं जैसा कि क़ुरआन में ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा— *'और शैतानों (सरकश जिन्नों) में से हमने क़ाबू में कर दिए, वे जो उस (सुलैमान) के लिए समुद्रों में ग़ोते मारते (यानी क़ीमती से क़ीमती समुद्री चीज़ें निकालते और इसके अलावा और बहुत से काम अंजाम देते और हम उनके लिए निगरां और निगहबान थे।'* (अंबिया : 82)

तर्जुमा—*और जिन्नों में से वे थे जो उसके सामने ख़िदमत अंजाम देते थे उसके परवरदिगार के हुक्म से और जो कोई उनमें से हमारे हुक्म के ख़िलाफ़ टेढ़ापन दिखावे, हम उसको दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखाएंगे। वे उसके लिए बनाते थे जो कुछ वह चाहता था, क़िलों की तामीर, हथियार, तस्वीरें और बड़े-बड़े लगन जो हौज़ों की मानिंद थे और बड़ी-बड़ी देगें जो अपनी बड़ाई की वजह से एक जगह जमी रहें। ऐ आले दाऊद! शुक्रगुज़ारी के काम करो और मेरे बन्दों में से बहुत कम शुक्रगुज़ार हैं।* (सबा : 12-13)

तर्जुमा—*और इकट्ठा किए गए सुलैमान के लिए उसके लश्कर जिन्नों में से, इंसानो में से, जानवरों में से और वे दर्जा-ब-दर्जा खड़े किए जाते हैं।* (नम्ल : 17)

तर्जुमा— *'और सधा दिए गए सुलैमान के लिए शैतान (सरकश जिन्न), हर क़िस्म के काम करने वाले, इमारत बनाने वाले, दरिया में ग़ोता लगाने वाले और वे सरकश से सरकश जो जकड़े होते हैं जंजीरों में। यह हमारी बख़्शिश*

व अता है, चाहे उसको बख़्श दो या रोके रखो, तुमसे उसकी पूछताछ नहीं।'

(साद : 36-40)

हज़रत सुलैमान के ज़माने की ये तामीरात जो जिन्नों के क़ाबू में होने की वजह से वजूद में आईं, आज तक लोगों के हैरत की वजह हैं कि ऐसे भारी-भरकम पत्थर कहां से लाए गए, किस तरह लाए गए और किस तरह उनको बुलन्दियों पर पहुंचा कर एक दूसरे से मिला दिया गया।

तांबे के ज़ख़ीरे

इन शानदार इमारतों की तामीर के सिलसिले में कुछ तफ़्सीर लिखने वालों का कहना है कि अल्लाह तआला ज़रूरत के मुताबिक़ हज़रत सुलैमान के लिए तांबे को पिघला देता था, जबकि तांबे के चश्मों का भी ज़िक्र किया गया है। कुरआन ने इस हक़ीक़त की कोई तफ़सील नहीं बयान की।

हज़रत सुलैमान और मलिका सबा

कुरआन ने मलिका सबा के इस वाक़िए को मोजज़ों की तरह ऐसे थोड़े में बयान किया है कि वाक़िया के बयान करने से जो हक़ीक़ी मक़्सद है यानी 'याददेहानी', वह भी नुमायां रहे और वाक़िए के अहम और ज़रूरी हिस्से भी ज़िक्र में आ जाएं और साथ ही यह भी मालूम हो जाए कि हज़रत सुलैमान को 'परिंदों की बोली का इल्म' दिए जाने का जो पहली आयतों में ज़िक्र है, उसकी गवाही के लिए यह दूसरा वाक़िया है। यह वाक़िया सूरः नम्ल की आयतें 36-44 में बयान हुआ है। (और मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब स्योहारवी ने इस तरह बयान किया है।)

एक बार दरबारे सुलैमानी अपनी पूरी शान के साथ चल रहा था। हज़रत सुलैमान अलै॰ ने जायज़ा लिया तो हुदहुद को अपनी जगह पर ग़ैर-हाज़िर पाया। इर्शाद फ़रमाया, हुदहुद को मौजूद नहीं पाता। अगर वाक़ई ग़ैर-हाज़िर है तो उसकी यह बे-वजह की ग़ैरहाज़िरी सख़्त सज़ा के क़ाबिल है। इसलिए या तो मैं उसको सख़्त अज़ाब दूंगा या ज़िब्ह कर डालूंगा या फिर वह अपनी ग़ैर-हाज़िरी की माक़ूल वजह बताए।

अभी ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़रा था कि हुदहुद हाज़िर हो गया और हज़रत सुलैमान के पूछ-ताछ करने पर कहने लगा कि मैं एक यक़ीनी इत्तिला लाया हूं, जिसकी आपको पहले से ख़बर नहीं है। वह यह कि यमन के इलाक़े में सबा की एक मलिका रहती है और अल्लाह ने उसको सब कुछ दे रखा है और उसकी सल्तनत का तख़्त अपनी ख़ास ख़ूबियों की वजह से बहुत ज़्यादा शानदार है।

मलिका और उसकी क़ौम सूरज की पुजारी है और शैतान ने उनको गुमराह कर रखा है और वे कायनात के मालिक, परवरदिगारे आलम, जो अकेला है, जिसका कोई शरीक नहीं, की परस्तिश नहीं करते।

हज़रत सुलैमान ﷺ ने फ़रमाया, अच्छा, तेरे सच-झूठ का इम्तिहान अभी हो जाएगा, तू अगर सच्चा है तो मेरा यह ख़त ले जा और इसको उन तक पहुंचा दे और इंतिज़ार कर कि वे इसके बारे में क्या बातें करते हैं।

मलिका की गोद में जब ख़त गिरा तो उसने पढ़ा और फिर अपने दरबारियों से कहने लगी कि अभी मेरे पास एक मुअज़्ज़ज़ (बहुत इज़्ज़तदार) ख़त आया है, जिसमें यह लिखा है—

'यह ख़त सुलैमान की ओर से अल्लाह के नाम से शुरू है जो बड़ा मेहरबान है, रहम वाला है। तुमको हम पर सरकशी और सरबुलन्दी का इज़्हार नहीं करना चाहिए और तुम मेरे पास अल्लाह की फ़रमांबरदार (मुस्लिम) होकर आओ।'

मलिका सबा ने ख़त की इबारत पढ़कर कहा, ऐ मेरे दरबारियो! तुम जानते हो कि मैं अहम मामले में तुम्हारे मश्विरे के बग़ैर कोई क़दम नहीं उठाती। इसलिए अब तुम मश्विरा दो कि क्या करना चाहिए?

दरबारियों ने कहा कि जहां तक रोब खाने का ताल्लुक़ है, तो इसकी क़तई तौर पर ज़रूरत नहीं क्योंकि हम ज़बरदस्त ताक़त और जंगी कूवत के मालिक हैं, रहा मश्विरे का मामला तो फ़ैसला आपके हाथ में है, जो मुनासिब हो उसके लिए हुक्म कीजिए।

मलिका ने कहा, बेशक हम ताक़त व शौकत वाले ज़रूर हैं, लेकिन सुलैमान ﷺ के मामले में हमको जल्दी नहीं करनी चाहिए। पहले हमको

उसकी ताक़त व क़ूवत का अन्दाज़ा करना ज़रूरी है, क्योंकि जिस अजीब तरीक़े से हम तक यह पैग़ाम पहुंचा है, यह यह सबक़ देता है कि सुलैमान ﷺ के मामले में सोच-समझ कर क़दम उठाना मुनासिब है। मेरा इरादा यह है कि कुछ क़ासिद रवाना करूं और वे सुलैमान के लिए उम्दा और क़ीमती तोहफ़े ले जाएं। इस बहाने से वे उसकी शौकत और अ़ज़्मत का अन्दाज़ा लगा सकेंगे और यह भी मालूम हो जाएगा कि वह हमसे क्या-क्या चाहता है। अगर वह वाक़ई ज़बरदस्त क़ूवत का मालिक और शहंशाह है, तो फिर उससे हमारा लड़ना बेकार है। इसलिए कि ताक़त व शौकत के मालिक बादशाहों का यह दस्तूर है कि जब वे किसी बस्ती में फ़त्ह करते हुए और ग़लबा हासिल करते हुए दाख़िल होते हैं, तो उस शहर को बर्बाद और इज़्ज़तदार शहरियों को ज़लील व ख़्वार करते हैं। इसलिए बेवजह बर्बादी मोल लेना क्या ज़रूरी है?

जब मलिका-ए-सबा के क़ासिद तोहफ़े लेकर हज़रत सुलैमान की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने फ़रमाया, तुमने और तुम्हारी मलिका ने मेरे पैग़ाम का मक़्सद ग़लत समझा, क्या तुम यह चाहते हो कि इन तोहफ़ों के ज़रिए 'जिनको तुम बहुत क़ीमती समझ कर ख़ुश हो' मुझको फुसलाओ, हालांकि तुम देख रहे हो कि अल्लाह तआ़ला ने मुझको जो कुछ दे रखा है, उसके मुक़ाबले में तुम्हारी यह क़ीमती दौलत बिल्कुल हेच है इसलिए तुम अपने तोहफ़े वापस ले जाओ और अपनी मलिका से कहो कि अगर उसने मेरे पैग़ाम की तामील नहीं की, तो मैं ऐसी भारी-भरकम फ़ौज के साथ सबा वालों तक पहुंचूंगा कि तुम उससे बचाव करने और मुक़ाबला करने में कामियाब न होगे और मैं तुमको ज़लील व रुसवा करके शहर बदर कर दूंगा।

क़ासिदों ने वापस जाकर मलिका-ए-सबा के सामने पूरी रिपोर्ट दी और हज़रत सुलैमान की शौकत व अ़ज़्मत को जो कुछ देखा था, वह पूरे का पूरा सुनाया और बताया कि उसकी हुकूमत सिर्फ़ इंसानों पर ही नहीं बल्कि जिन्न और हैवान भी उनके फ़रमान के ताबे और सधे हुए हैं।

मलिका-ए-सबा ने जब यह सुना तो तै कर लिया कि हज़रत सुलैमान से लड़ना अपनी हलाकत को दावत देना है। बेहतर यही है कि उसकी दावत

मान ली जाए।

हज़रत सुलैमान ﷺ के मक्तूब गरामी (ख़त) में यह जुम्ला भी था *'वातूनी मुस्लिमीन'* (अधीन बनकर मेरे पास आओ) चूंकि मलिका सबा हज़रत सुलैमान के दीन व मज़हब को नहीं जानती थी, इसलिए उसने लफ़्ज़ मुस्लिम को लफ़्ज़ के मानी में समझते हुए यह समझा कि जाबिर बादशाहों की तरह सुलैमान का मक़्सद भी यह है कि मैं उसकी फ़रमांबरदारी और शाने हुकूमत का एतराफ़ करते हुए उसके मातहत हो जाना क़ुबूल कर लूं। इसलिए उसने यह तै करके सफ़र करना शुरू कर दिया और हज़रत सुलैमान की ख़िदमत में रवाना हो गई।

हज़रत सुलैमान ﷺ को वह्य के ज़रिए मालूम हो गया कि मलिका-ए-सबा ख़िदमत में हाज़िर हो रही हैं, तब आपने अपने दरबारियों को ख़िताब करके फ़रमाया कि मैं चाहता हूं कि मलिका-ए-सबा के यहां पहुंचने से पहले उसका शाही तख़्त उठाकर यहां ले आया जाए, तुममें से कौन इस ख़िदमत को अंजाम दे सकता है? यह सुनकर एक देव पैकर जिन्न ने कहा कि आपके दरबार बरख़ास्त करने से पहले मैं तख़्त को ला सकता हूं, मुझको यह ताक़त हासिल है और यह कि मैं उसके बेश बहा सामान के लिए अमीन हूँ, हरगिज़ ख़ियानत नहीं करूंगा।

देव पैकर जिन्न का यह दावा सुनकर हज़रत सुलैमान के वज़ीर ने कहा कि मैं आंख झपकते ही उसको आपकी ख़िदमत में पेश कर सकता हूं। हज़रत सुलैमान ने रुख़ फेरकर देखा तो मलिका सबा का तख़्त मौजूद पाया। फ़रमाने लगे! यह मेरे परवरदिगार का फ़ज़्ल व करम है। वह मुझको आज़माता है कि मैं उसका शुक्रगुज़ार बनता हूं या नाफ़रमान और सच तो यह है कि जो आदमी उसका शुक्रगुज़ार बनता है, वह असल में अपनी ज़ात ही को नफ़ा पहुंचाता है और जो नाफ़रमानी करता है, तो अल्लाह उसकी नाफ़रमानी से बेपरवाह और बुज़ुर्गतर है और उसका वबाल ख़ुद नाफ़रमानी करने वाले ही पर पड़ता है।

अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के बाद हज़रत सुलैमान ﷺ ने हुक्म दिया कि इस तख़्त की शक्ल में कुछ तब्दीली कर दी जाए। मैं देखना

चाहता हूं कि मलिका-ए-सबा यह देखकर सच्चाई का रास्ता पाती है या नहीं।

कुछ दिनों के बाद मलिका सबा हज़रत सुलैमान की ख़िदमत में पहुंच गई और जब दरबार में हाज़िर हुई तो उससे मालूम किया गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है?

अक़्लमंद मलिका ने जवाब दिया, 'ऐसा मालूम होता है, मानो वही है।' यानी तख़्त की बनावट और मज्मूई हैसियत तो यही बता रही थी कि यह मेरा ही तख़्त है और थोड़ी-सी बनावट में तब्दीली इस यक़ीन में शक पैदा कर रही है, इसलिए यह भी नहीं कह सकती कि यक़ीनन मेरा ही तख़्त है।

मलिका-ए-सबा ने साथ ही यह भी कहा मुझको आपकी बेमिसाल ताक़त व क़ूवत का पहले से इल्म हो चुका है, इसलिए इताअ़तगुज़ार और फ़रमांबरदार बनकर ख़िदमत में हाज़िर हुई हूँ और अब तख़्त का यह हैरत में डाल देने वाला मामला तो आपकी बेमिसाल ताक़त का ताज़ा मुज़ाहरा है और हमारी इताअ़त और झुकाव के लिए एक कोड़ा, इसलिए हम फिर एक बार आपकी ख़िदमत में वफ़ादारी और फ़रमांबरदारी ज़ाहिर करते हैं।

मलिका ने यक़ीन कर लिया कि *'कुन्ना मुस्लिमीन'* (हम फ़रमांबरदार हैं) कहकर हमने सुलैमान के पैग़ाम की तामील कर दी और उस मक़्सद को पूरा कर दिया और मलिका की शिर्क भरी ज़िंदगी और सूरजपरस्ती रोक बनी कि वह हज़रत सुलैमान के पैग़ाम की हक़ीक़त समझ सके और हिदायत का रास्ता मिल सके। इसलिए हज़रत सुलैमान ने मक़्सद ज़ाहिर करने के लिए दूसरा दिलचस्प तरीक़ा अख़्तियार किया और उसकी तेज़ी और ज़हानत को भड़काया, वह यह कि उन्होंने जिन्नों की मदद से एक शानदार शीशमहल तैयार कराया था, जो आबगीने की चमक, महल की ऊंचाई और अनोखी कारीगरी के लिहाज से बेनज़ीर था और उसमें दाख़िल होने के लिए सामने जो सेहन पड़ता था उसमें बहुत बड़ा हौज़ खुदवा कर पानी से भर दिया था और शफ़्फ़ाफ़ आबगीनों और बिल्लौर के टुकड़ों से ऐसा नफ़ीस फ़र्श बनाया गया था कि देखने वाले की निगाह धोखा खाकर यह यक़ीन कर लेती थी कि सेहन में साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी बह रहा है।

मलिका-ए-सबा से कहा गया कि शाही महल में क़ियाम करे। मलिका

महल के सामने पहुंची तो शफ़्फ़ाफ़ पानी बहता हुआ पाया, यह देखकर मलिका ने पानी में उतरने के लिए कपड़ों को पिंडुलियों से ऊपर उठाया तो हज़रत सुलैमान ने फ़रमाया कि इसकी ज़रूरत नहीं, यह पानी नहीं है। सारे का सारा महल और उसका ख़ूबसूरत आंगन चमकते हुए आबगीने का है।

मलिका की तेज़ी और सूझ-बूझ पर यह कड़ी चोट थी, जिसने सूरतेहाल समझने के लिए उसकी अक़्ली ताक़तों को जगा दिया और उसने अब समझा कि इस वक़्त तक यह जो कुछ होता रहा है, एक ज़बरदस्त बादशाह की क़ाहिराना ताक़तों का मुज़ाहरा नहीं है, बल्कि मक़्सद मुझे यह बता देना है कि सुलैमान को यह बेनज़ीर ताक़त और मोजज़े की यह शान किसी ऐसी हस्ती की दी हुई है जो चांद-सूरज, बल्कि कुल कायनात का अकेला मालिक है, इसलिए सुलैमान मुझसे अपनी ताबेदारी और फ़रमांबरदारी की मांग नहीं कर रहे, बल्कि उस 'अकेली ज़ात' की इताअत व फ़रमांबरदारी की दावत देना उसका मक़्सद है।

मलिका के दिमाग़ में यह ख़्याल आना था कि उसने फ़ौरन हज़रत सुलैमान के सामने एक शर्मिंदा और नादिम इंसान की तरह अल्लाह के दरबार में यह इक़रार किया। पालनहार! आज तक अल्लाह के अलावा की परस्तिश करके मैंने अपने नफ़्स पर बड़ा ज़ुल्म किया, मगर अब मैं भी सुलैमान के साथ होकर सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान लाती हूं जो तमाम कायनात का परवरदिगार है।' और इस तरह हज़रत सुलैमान के पैग़ाम *'वातूनी मुस्लिमीन'* की हक़ीक़ी मुराद तक पहुंच कर उसने दीन इस्लाम अख़्तियार कर लिया।

सबा की तह्क़ीक़

क़ह्तानी नस्ल की एक मशहूर शाख़ सबा है। सबा अपने क़बीले की बुनियाद डालने वाला था। यह अरब तारीख़ के माहिरों और नई तारीख़ के माहिरों की तह्क़ीक़ है और नाम उमर या अब्दे शम्स था। यह आदमी बहुत बहादुर और हिम्मतों वाला इंसान था। उसने सबा हुकूमत की बुनियाद डाली। सबा की तरक़्क़ी का ज़माना, तह्क़ीक़ करने वालों के नज़दीक लगभग 1100

ईसा पूर्व समझा जाता है। सबा की हुकूमत का असल मर्कज़ अरब के दक्खिनी हिस्से यमन के पूर्वी इलाक़े में था और राजधानी का नाम मआरिब था। इसी को शहरे सबा भी कहते थे। इसकी सरहद हज़्रमौत तक फैल गई थी और दूसरी तरफ़ अफ़रीक़ा तक भी इसका असर पहुंच चुका था (अंग्रेज़ी भाषा में इसको Sheba कहा जाता है)। कुरआन ने इस वाक़िए में मलिका का नाम नहीं बताया, मगर यहूदियों की इसराईली दास्तानों में इसका नाम 'बिलक़ीस' बताया गया है।

हुद हुद

कुरआन ने बहुत साफ़ लफ़्ज़ों में बयान किया है कि हज़रत सुलैमान ﷺ का क़ासिद हुद हुद परिंदा था। (हज़रत सुलैमान से मुताल्लिक़ 'परिंदों, की बात समझने जैसे मोजज़े की रोशनी में हुद हुद के सिलसिले की तावील की गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती।)

सबा की मलिका का तख़्त

मलिका सबा के तख़्त की तारीफ़ हुद हुद की ज़ुबानी हो चुकी है और इस सिलसिले में हज़रत सुलैमान ﷺ का मोजज़ा भी कुरआन में ज़िक्र किया गया है। (इस सिलसिले में तावीलों की बहस बेकार की बात मालूम होती है।)

मलिका सबा का इस्लाम कुबूल कर लेना

मलिका ने हज़रत सुलैमान ﷺ के पैग़म्बराना जाह व जलाल को देखकर इस्लाम कुबूल कर लिया। इस मुकम्मल वाक़िए में हज़रत सुलैमान ﷺ की यही एक ग़रज़ थी, जिसे उन्होंने अपने पहले ही ख़त में ज़ाहिर कर दिया था, मगर मलिका उस वक़्त इस ग़रज़ को न पा सकी थी।

मलिका-ए-सबा का हज़रत सुलैमान के साथ निकाह

कुरआन और सहीह हदीसों में नफ़ी या इस्बात (निषेधात्मक या स्वीकारात्मक) दोनों हैसियतों से उसके बारे में कोई ज़िक्र नहीं है।

हज़रत सुलैमान ﷺ की वफ़ात

कुरआन मजीद में हज़रत सुलैमान की वफ़ात का जो वाक़िया बयान हुआ है, उसका हासिल यह है कि हज़रत सुलैमान के हुक्म से जिन्नों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त शानदार इमारत बनाने में लगी हुई थी कि सुलैमान ﷺ को मौत का पैग़ाम आ पहुंचा, मगर जिन्नों को उनकी मौत की ख़बर न हुई और वे अपनी ज़िम्मेदारियों के अदा करने में लगे रहे और एक मुद्दत के बाद जब दीमक ने उनकी लाठी को चाट कर इस तवाज़ुन (सन्तुलन) को ख़राब कर दिया, जिसकी वजह से हज़रत सुलैमान लाठी से टेक लगाए खड़े नज़र आते थे और वे गिर गए, तब जिन्नों को मालूम हुआ कि हज़रत सुलैमान का ज़माना हुआ इंतिक़ाल हो गया था, मगर अफ़सोस कि हम मालूम न कर सके। काश! कि हम ग़ैब का इल्म रखते तो अ़र्से तक इस मशक़्क़त व मेहनत में न पड़े रहते जिसमें हज़रत सुलैमान ﷺ के ख़ौफ़ से मुब्तला रहे।

तर्जुमा– *'और जब हमने उस (सुलैमान) की मौत का फ़ैसला कर दिया तो इन जिन्नों को उसकी मौत की ख़बर किसी ने नहीं दी, मगर दीमक ने, जो सुलैमान की लाठी चाट रही थी और अब सुलैमान (लाठी का तवाज़ुन (सन्तुलन) ख़राब होने की वजह से) गिर पड़ा तो जिन्नों पर ज़ाहिर हो गया कि वह ग़ैब का इल्म रखते होते तो इस सख़्त मुसीबत में मुब्तला न रहते।'*

(34-14)

कहते हैं कि जिन्नों पर जब यह राज़ खुला तो तामीर मुकम्मल हो चुकी थी, इसलिए जिन्नों को अफ़सोस रहा कि अगर वे ग़ैबदां होते तो इससे बहुत पहले आज़ाद हो गए होते।

इस जगह कुरआन का मक़्सद जिस तरह हज़रत सुलैमान ﷺ की वफ़ात के वाक़िए को ज़ाहिर करना है, उसी तरह बनी इसराईल को उनकी हिमाक़त (मूर्खता) पर तंबीह करना भी है कि उनके अ़क़ीदे के मुताबिक़ अगर जिन्न ग़ैबदां होते तो वे अ़र्से तक हज़रत सुलैमान ﷺ के ख़ौफ़ से बैतुलमक़्दिस की तामीर या किसी दूसरे शहर की तामीर की परेशानियों में फंसे न रहते।

चुनांचे हज़रत सुलैमान की वफ़ात का जिस शक्ल में उनको इल्म हुआ उसके बाद ख़ुद शैतानों (जिन्नों) को भी यह मानना पड़ा कि हमारा ग़ैबदानी का दावा क़तई तौर पर ग़लत साबित हुआ।

हज़रत सुलैमान ؑ के वाक़ियों से मुताल्लिक़ तफ़्सीरी नुक्ते

जिहाद के घोड़ों का वाक़िया

कुरआन में यह वाक़िया इस तरह लिखा हुआ है—

तर्जुमा—'और हमने दाऊद को सुलैमान (बेटा) अ़ता किया। वह अच्छा बन्दा था, बेशक वह अल्लाह की तरफ़ बहुत रुजू होने वाला था, (उसका वाक़िया ज़िक्र के क़ाबिल है) जब उसके सामने शाम के वक़्त अस्तबल और तेज़ दौड़ने वाले हल्के घोड़े पेश किए गए तो वह कहने लगा, बेशक मेरी माल की मुहब्बत (जिहाद के घोड़ों की मुहब्बत) परवरदिगार के ज़िक्र ही में से है, यहां तक कि वे घोड़े नज़रों से ओझल हो गए। (हज़रत सुलैमान ने फ़रमाया) उनको वापस लाओ, फिर वह उनकी पिंडलियां और गरदनें छूने और थपथपाने लगा।'

(साद : 32)

[इन आयतों की तफ़्सीर में मुसन्निफ़ (लेखक मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब) ने ख़ासी बहस के बाद इब्ने जरीर और इमाम राज़ी रह० के क़ौल के मुताबिक़ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से अ़ली बिन अबी तलहा रज़ि० से जो तफ़्सीर नक़ल की गई है, उसको तर्जीह के क़ाबिल और सही क़रार दिया है और वह बयान की जाती है।]

ऊपर लिखी हर दो तफ़्सीरों से जुदा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ؓ की जो तफ़्सीर हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब के वास्ते से नक़ल की गई है कि उनमें न नमाज़ त होने का ज़िक्र है और न सूरज डूबने का मस्अला है और न घोड़ों के ज़िब्ह कर देने का वाक़िया बहस में आया है, बल्कि वाक़िए की शक्ल इस तरह बयान की गई है कि जिहाद की एक मुहिम के मौक़े पर एक शाम को हज़रत सुलैमान ؑ ने जिहाद के घोड़ों को अस्तबल से लाने का हुक्म दिया, जब वे पेश किए गए, तो आपको चूंकि घोड़ों की नस्लों और

उनकी निजी ख़ूबियों के इल्म का कमाल हासिल था, इसलिए आपने जब इन सबको असील, सुबुक रो, ख़ुश रो (ख़ानदानी, हल्की चाल चलने वाले और देखने में ख़ूबसूरत) और फिर बहुत बड़ी तायदाद में पाया, तो आपका चेहरा खिल उठा और फ़रमाने लगे, इन घोड़ों से मेरी यह मुहब्बत ऐसी माली मुहब्बत में शामिल है जो पालनहार के ज़िक्र ही का एक हिस्सा है। हज़रत सुलैमान ﷺ के इस ग़ौर व फ़िक्र के दर्मियान घोड़े अस्तबल को रवाना हो गए। चुनांचे जब उन्होंने नज़र ऊपर उठाई तो वे निगाह से ओझल हो चुके थे। आपने हुक्म दिया, उनको वापस लाओ। जब वे वापस लाए गए तो हज़रत सुलैमान ﷺ ने मुहब्बत और जिहाद के हथियार (साधन) की हैसियत से इज़्ज़त व तौक़ीर की ख़ातिर उनकी पिंडुलियों और गरदनों पर हाथ फेरना और थपथपाना शुरू कर दिया और फ़न के एक माहिर की तरह उनको मानूस करने लगे।

गोया इस तफ़्सीर के मुताबिक़ आयत *'इन्नी अह्बबतु हुब्बल ख़ैरि अन ज़िक्रि रब्बी'* का तर्जुमा यह हुआ, 'बेशक मेरी माल को मुहब्बत (जिहाद के घोड़ों की मुहब्बत) अल्लाह के ज़िक्र ही से है और *'तवारत बिल हिजाब'* में तवारत की ज़मीर (सर्वनाम) *'साफ़िनातुल जनाद'* ही की तरफ़ है यानी जब घोड़े आंखों से ओझल हो गए और इस तरह 'शम्स' के महज़ूफ़ मानने की ज़रूरत नहीं रहती, 'त-फ़-क़ बिस्सूकि वल आनाकि' में मस्ह के 'छूने और हाथ फेरने के' वही आम मानी हैं जो लुग़त में बहुत मशहूर हैं।

हज़रत सुलैमान ﷺ की आज़माइश

हज़रत सुलैमान की आज़माइश और अल्लाह तआला की तरफ़ से आज़माने का एक मुज्मल वाक़िया इस तरह ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा— *'और बेशक हमने सुलैमान ﷺ को आज़माया और डाल दिया हमने उसकी एक कुर्सी पर एक जिस्म फिर वह अल्लाह की ओर रुजू हुआ, कहा, ऐ परवरदिगार! मुझको बख़्श दे।'*

(साद : 24)

इन आयतों में यह नहीं ज़ाहिर किया गया है कि हज़रत सुलैमान ﷺ को जब आज़माइश पेश आई, तो वह क्या थी, सिर्फ़ इस क़दर इशारा है कि

उनकी कुर्सी पर एक जिस्म डाल दिया गया। साथ ही हदीसों में भी उससे मुताल्लिक़ किसी तफ़्सील का ज़िक्र नहीं है। (इस सूरत में हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने तफ़्सीर लिखने वालों की रायों पर बहस के बाद जो कुछ लिखा है, वह यह है–)

इस वाक़िए से मुताल्लिक़ नसीहत और सबक़ के पहलू को बहुत साफ़ और नुमायां तौर पर बयान किया गया है और क़ुरआन मजीद के तज़्करे से यही मक़्सद मालूम होता है। इसलिए 'हमको भी इस नसीहत के पहलू को सबक़ हासिल करने का ज़रिया बनाते हुए वाक़िए के इज्माल पर ही ईमान रखना चाहिए, अलबत्ता दिल के इत्मीनान के लिए इमाम राज़ी की तफ़्सीर को अख़्तियार करना ज़्यादा मुनासिब है, जो नीचे लिखा जाता है–

राज़ी की इस तफ़्सीर के मुताबिक़ 'और बेशक हमने सुलैमान को आज़माया' में आज़माइश से मुराद 'शदीद मरज़' है (और डाल दिया हमने कुरसी पर एक जसद) से सुलैमान का मरज़ की शिद्दत में बे-रूह जिस्म की तरह तख़्त पर पड़ जाना मक़्सूद है और *'सुम-म अनाब'* (फिर वह अल्लाह की तरफ़ रुजू हुआ) से सेहत की जानिब रुजू हो जाना मुराद है, गोया आज़माइश का मक़्सद यह था कि हज़रत सुलैमान 'ऐनुल यक़ीन' (विश्वास-चक्षु) के दर्जे में समझ लें कि इस हाकिमाना शान के बावजूद उनका न सिर्फ़ इक़्तिदार बल्कि जान तक अपने क़ब्ज़े में नहीं है, ताकि एक उलुल-अज़्म पैग़म्बर की तरह अल्लाह के सामने झुक जाएं और मग़फ़िरत की तलब के ज़रिए बारगाहे इलाही से बुलन्द दर्जा और ज़्यादा सरबुलन्दी हासिल करें। (और यही हुआ भी)

सुलैमान (अलैहि०) की फ़ौज और चींटियों की घाटी

क़ुरआन में आता है–

तर्जुमा– *'और जमा हुई फ़ौज सुलैमान के लिए जिन्नों, इंसानों और परिंदों (जानदारों) में से और वे दर्जा-ब-दर्जा क़रीने के साथ आगे-पीछे चल रहे थे, यहां तक कि वे वादी नमला पहुंचे तो एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियो! अपने घरों में घुस जाओ, ऐसा न हो कि बेख़बरी में सुलैमान और उसकी फ़ौज तुम्हें*

पीस डाले। चींटी की यह बात सुनकर सुलैमान हंस पड़ा और कहने लगा कि ऐ परवरदिगार! मुझको यह तौफ़ीक़ दे कि मै तेरा शुक्र अदा करूं जो तूने मुझ पर और मेरे मां-बाप पर इनाम किया है।' (नम्ल 27 : 17-18-19)

नमला की घाटी और चींटियों से मुताल्लिक़ बहुत से सवाल पैदा किए गए हैं और इन सवालों का जवाब इसराईली दास्तानों और यहूदी ख़ुराफ़ात से देने की कोशिश की गई है। मगर ये सब बहसें बेकार की हैं, बे-सनद बल्कि बकवास हैं। क़ुरआन और रसूल की हदीसें इस क़िस्म की बेकार की चीज़ों से अलग हैं।

इस वाक़िए के ज़िक्र से क़ुरआन मजीद का मक़्सद यह है कि हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान ﷺ को अल्लाह तआला ने 'परिंदों की बोली का इल्म' अता फ़रमाया और यह उनकी अज़्मते शान का एक निशान है। यह इल्म दुनिया के आम इल्म की तरह नहीं था, बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उन दोनों बड़े दर्जे वाले नबियों के लिए ख़ास अता व बख़्शिश और निशान (मोजज़ा) था। चुनांचे इसी से मिला हुआ पहला वाक़िया नमला की वादी का बयान किया कि किस तरह हज़रत सुलैमान ﷺ ने एक मामूली क़िस्म के जानदार की बातों को इस तरह सुन लिया जिस तरह एक इंसान दूसरे इंसान की बातें बेतकल्लुफ़ सुनता है और साथ ही यह ज़ाहिर कर दिया कि जब इस हैरत में डाल देने वाले इल्म के बारे में हज़रत सुलैमान को ऐनुल यक़ीन और हक़्क़ुल यक़ीन (भरपूर यक़ीन) का दर्जा हासिल हो गया तो उन्होंने एक अज़्म वाले पैग़म्बर की शान के मुताबिक़ अल्लाह के इस दिए हुए निशान पर शुक्र का इज़्हार किया। वाज़ेह रहे कि इस वाक़िए की अहमियत का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि जिस सूरः में उसका ज़िक्र मौजूद है, अल्लाह ने उसका नाम ही 'चींटी की सूरः' रखा है। ज़्यादातर तारीख़ लिखने वालों की राय यह है कि नमला की घाटी अस्क़लान के क़रीब है जैसा कि इब्ने बतूता ने बयान किया है या बैत-जबरून और अस्क़लान के दर्मियान, शाम (सीरिया) के आम तफ़्सीर लिखने वाले बताते हैं।

मलिका-ए-सबा का तख़्त उठाकर लाने वाले की शख़्सियत

मलिका-ए-सबा के वाक़िए में यह ज़िक्र हो चुका है कि जब हज़रत सुलैमान ﷺ को यह मालूम हो गया कि मलिका-ए-सबा ख़िदमत में हाज़िर हो रही है, तो आपने अपने दरबारियों को मुख़ातब करके फ़रमाया, मैं चाहता हूं कि मलिका-ए-सबा के यहां पहुंचने से पहले उसका तख़्ते शाही उठाकर यहां ले आया जाए, तुममें से कौन इस ख़िदमत को अंजाम दे सकता है? यह सुनकर एक देव पैकर जिन्न ने कहा कि आपके दरबार बरख़ास्त करने से पहले मैं तख़्त को ला सकता हूं। जिन्न के इस दावे को सुनकर हज़रत सुलैमान ﷺ के दरबारियों में से एक आदमी ने (जिसके पास किताब का इल्म था) कहा कि मैं आंख झपकते ही उसको आपकी ख़िदमत में पेश कर सकता हूं। इस वाक़िए से मुताल्लिक़ दो सवाल पैदा किए गए हैं— .

एक तो यह कि वह आदमी जिसके पास किताब का 'इल्म' था, उसका नाम क्या था? और वह कौन था? उसका नाम आसिफ़ बिन बरख़या था और वह हज़रत सुलैमान ﷺ का ख़ास मोतमद और कातिब (वज़ीर) था। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ से नक़ल किया गया है कि ज़्यादातर तफ़्सीर लिखने वालों ने इस क़ौल को तर्जीह दी है।

दूसरा सवाल यह है कि इल्मे किताब (किताब का इल्म) से क्या मुराद है? इस बारे में (लेखकः हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० के मुताबिक़) सही और तर्जीह के क़ाबिल क़ौल यह है कि यह आदमी आसिफ़ हो या किसी और नाम वाला, हक़ीक़त में हज़रत सुलैमान का सहाबी और उनका बहुत क़रीबी था, जिस तरह सिद्दीक़े अक्बर की शख़्सियत नबी अकरम की रफ़ाक़त में नुमायां थी। इसी तरह यह हज़रत सुलैमान ﷺ का रफ़ीक़ था और उनके शरफ़े सोहबत से उसको तौरात और ज़बूर और अस्मा और सिफ़ाते इलाह से मुताल्लिक़ असरार और हक़ीक़तों का ज़बरदस्त इल्म हासिल था। इसलिए जब जिन्नों में से एक 'इफ़रीत' ने सबा के तख़्त को हाज़िर करने का दावा किया, तो अगरचे मक़्सद को हासिल करने के लिए यह मुद्दत भी काफ़ी थी, मगर हज़रत सुलैमान का ख़्याल यही रहा कि यह अमल 'जिन्नों

में से एक इफ़रीत' के ज़रिए न होना चाहिए, ताकि उनकी पैग़म्बराना तवज्जोह से वह 'मोजज़ा' और 'निशान' बनकर मलिका-ए-सबा के सामने पेश हो। आसिफ़ ने हज़रत सुलैमान की इस तवज्जोह को समझ कर, फ़ौरन ख़ुद को पेश किया और 'इफ़रीत' की बयान की हुई मुद्दत से भी बहुत कम मुद्दत में हाज़िर कर देने का वायदा कर लिया, क्योंकि उसको यक़ीन था कि हज़रत सुलैमान عليه السلام की मुबारक तवज्जोह इस एजाज़ को पूरा कर दिखाएगी और चूंकि मोजज़ा असल में अल्लाह तआला का अपना फ़ेल (काम) होता है जो नबी के हाथ पर ज़ाहिर किया जाता है, (जैसा कि पीछे के पन्नों में गुज़र चुका है) तो हज़रत सुलैमान ने अपनी नुबूवत की सदाक़त और रिसालत की अज़्मत के इस निशान को देखकर इन लफ़्ज़ों में अल्लाह का शुक्र अदा किया 'हाज़ा मिन फ़ज़्लि रब्बी' यानी जो कुछ भी हुआ उसमें आसिफ़ की या मेरी कोशिश और ताक़त का कोई दख़ल नहीं, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसने यह काम कर दिखाया।

हज़रत सुलैमान عليه السلام पर बनी इसराईल का बोहतान

दूसरे इल्ज़ामों के अलावा बनी इसराईल ने एक इल्ज़ाम हज़रत सुलैमान पर यह भी लगाया कि वह जादू के हामिल और उसके ज़ोर पर 'किंग सुलैमान' थे और जिन्नों, इंसानों, जानवरों और परिंदों को क़ाबू में किए हुए थे। इस बारे में क़ुरआन अज़ीज़ ने वाज़ेह किया है—

तर्जुमा— *'और जब उन (बनी इसराईल) के पास अल्लाह की तरफ़ से रसूल आया जो तस्दीक़ कर रहा है उन इलहामी किताबों की जो उनके पास हैं, तो जो लोग (बनी इसराईल) किताब (तौरात) देने गए थे, उन्होंने अल्लाह की किताब (तौरात) को पीठ पीछे डाल दिया और (आपकी सच्चाई की ख़ुशख़बरी) के बारे में ऐसे हो गए, गोया वे जानते ही नहीं। (ये तो वे लोग हैं कि) उन्होंने सुलैमान के ज़माने में उस चीज़ की पैरवी अख़्तियार कर ली थी जो शैतान पढ़ते थे और सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया था, लेकिन शैतानों ने कुफ़्र किया था कि जो लोगों को जादू सिखाते थे और वह (इल्म), जो बाबिल में हारूत व मारूत दो फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया और जिसको कि वे*

दोनों जब किसी को सिखाते थे तो यह कहकर सिखाते थे कि हम (तुम्हारे लिए) सख़्त आज़माइश हैं, इसलिए तुम (अब) कुफ़्र न करना, मगर वे (बनी इसराईल) इन दोनों से भी ऐसी बातें सीखते थे कि जिसके ज़रिए से मियां-बीवी के दर्मियान तफ़रीक़ पैदा हो जाए, हालांकि वे इसके ज़रिए से अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर किसी को भी नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते (अलबत्ता) वे ऐसी चीज़ सीखते हैं जो (अंजामेकार) उनको नुक़्सान पहुंचाने वाली है और उनको हरगिज़ नफ़ा नहीं देगी और बेशुब्हा वे जानते हैं कि जिस शख़्स ने उस शै (जादू) को ख़रीदा उसके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है और ज़रूर वह चीज़ बहुत बुरी है, जिसके बदले में उन्होंने अपनी जान बेच डाली। काश! कि वे समझते (यानी वे समझने के बाद उससे बचते) और वह काम न करते जिसका नतीजा बुरा है।' (अल-बक़रः 2 : 101, 103)

ऊपर की आयतों में जिन हक़ीक़तों को वाज़ेह किया गया है, उनकी तफ़्सीर में तफ़्सीर लिखने वाले अलग-अलग ज़ौक़ रखते हैं। चुनांचे इस सिलसिले की तफ़्सीरों में से हमने तर्जुमे में आम तफ़्सीर से जुदा रास्ता अख़्तियार किया है जो 'अल्लाह की आयतों में एक आयत', आज के मुहक़्क़िक़ (तह्क़ीक़ करने वाले) अल्लामा मुहम्मद अनवर शाह (नव्वरल्लाहु मर्क़दहू) की तह्क़ीक़ से ली गई है। हज़रत उस्ताद की तफ़्सीर का ख़ुलासा यह है—

'जब बनी इसराईल को शैतान ने जादू दिखाकर गुमराह कर दिया और वे शैतानों को ग़ैबदां यक़ीन करने लगे और वह यह ज़माना था कि हज़रत सुलैमान ﷺ की वफ़ात हो चुकी थी और उस वक़्त उनके दर्मियान अल्लाह का कोई नबी मौजूद नहीं था तो बनी इसराईल को हिदायत का रास्ता दिखाने और संभालने के लिए उस मोजज़ाना तरीक़े के मुताबिक़ जो सदियों से उनके लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से विरासत वाली सुन्नत बना हुआ था, हारूत-मारूत दो फ़रिश्ते आसमान से नाज़िल किए गए और उन्होंने बनी इसराईल को तौरात से लिए गए अल्लाह की सिफ़तों के नामों के भेद भरे मानी का ऐसा इल्म सिखाया जो 'सेहर' (जादू) के मुक़ाबले में मुमताज़ और सेहर के नापाक असर से पाक था और इस वजह से एक इसराईली आसानी

से यह समझा सकता है कि यह जादू है और यह *'अलवी उलूमिल असरार'* है और जब वे फ़रिश्ते बनी इसराईल को ये उलूम सिखाते तो फिर उनको नसीहत करते कि अब जबकि तुम पर असल हक़ीक़त खुल गई और तुमने हक़ व बातिल के दर्मियान आंखों देखा मुशाहदा कर लिया तो अल्लाह की किताब के इल्म को पीठ पीछे डालकर फिर भी जादू की तरफ़ रुजू करोगे तो तुम बेशुबहा काफ़िर हो जाओगे। क्योंकि अल्लाह की हुज्जत तुम पर तमाम हो गई और अब तुम्हारे लिए कोई उज़्र बाक़ी नहीं रहा। गोया हमारा वजूद तुम्हारे लिए एक आज़माइश है कि तुम हमारी तालीम के बाद शैतानों के ताबे होकर 'सेहर' ही के शैदाई रहते हो या इससे ज़्यादा ज़बरदस्त और सच्ची बात अल्लाह की किताब के इल्म की पैरवी करते हो? लेकिन बनी इसराईल की टेढ़ी फ़ितरत ने इस मौक़े पर भी उनका साथ न छोड़ा और उन्होंने उस पाक 'अलवी इल्म' (महत्वपूर्ण ज्ञान) को भी नाजायज़ और हराम ख़्वाहिशों के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, जैसे शौहर-बीवी के दर्मियान नाहक़ अलगाव वग़ैरह और इस तरह हक़ को बातिल के साथ मिला-जुला कर उसको भी एक करिश्मा बना दिया और हक़ व बातिल के साथ ग़लत करने या किसी पाक जुम्ले के ख़वास व असरात को नाजायज़ और हराम कामों में इस्तेमाल करने के बारे में हक़ उलेमा की खुली बातें मौजूद हैं कि यह भी जादू के कामों की शक्ल अख़्तियार कर लेता है और इसीलिए हराम और कुफ़्र है।

थोड़े में अगर बयान किया जाए तो कहा जा सकता है कि कुरआन ने इस वाक़िए को जिस ग़रज़ के लिए बयान किया है, वह तो सिर्फ़ इस क़दर है कि बनी इसराईल का हज़रत सुलैमान ﷺ की तरफ़ जादू (कुफ़्र) का जोड़ देना बोहतान और झूठ है।

ख़ुलासा

यह काम शैतानों का था, हज़रत सुलैमान ﷺ का दामन उससे पाक है और यह कि बनी इसराईल ने शैतानों की पैरवी की और अल्लाह की किताब को पीठ पीछे डाल दिया, अगरचे हारूत व मारूत जो दो फ़रिश्ते थे और आसमान से नाज़िल किए गए थे, ताकि बनी इसराईल को तौरात से लिए गए

अस्मा और सिफ़ाते इलाही के भेदों का इल्म सिखाएं। लेकिन बनी इसराईल शैतानों के ताबे होकर जादू ही के शैदाई बने रहे। क़ुरआन ने बाक़ी तफ़्सीलों को नज़रअंदाज़ कर दिया है, इसलिए हमारे लिए उसके 'थोड़े' ही पर ईमान लाना काफ़ी है, क्योंकि तफ़्सील से दीन व मिल्लत का कोई मसला जुड़ा हुआ नहीं है।

सबक़ और ख़ुलासा

1. पिछली उम्मतों ने अल्लाह के सच्चे दीन में अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों के असर में आकर जहां और बहुत-सी घट-बढ़ की हैं, उनमें से एक शर्मनाक कांट-छांट अल्लाह के सच्चे पैग़म्बरों और बड़े अ़ज़्म वाले रसूलों पर बोहतान लगाकर और उनकी जानिब बेहूदा और गन्दी बातों के जोड़ने का बेजा क़दम उठाना भी है।

और इस मामले में बनी इसराईल का क़दम सबसे आगे है। वे एक तरफ़ अल्लाह की एक बुज़ुर्ग हस्ती को नबी और रसूल भी मानते हैं और दूसरी तरफ़ बग़ैर किसी झिझक के शर्मनाक और ग़ैर-अख़्लाक़ी बातें उनसे जोड़ देते हैं, जैसे हज़रत लूत ﷺ और उनकी बेटियों का मामला साथ ही कुछ नबियों और रसूलों और अल्लाह के बड़े-बड़े पैग़म्बरों की रिसालत व नुबूवत से इंकार करके उन पर अलग-अलग क़िस्म के बोहतान और झूठे इल्ज़ाम लगाना फ़ख़्र की बात समझते हैं, जैसे हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान ﷺ का मामला।

क़ुरआन मजीद ने दीन के बारे में सच्चाई और हक़ के एलान का जो बीड़ा उठाया, धर्मों में सुधार के साथ दीने हक़ (इस्लाम) की जो हक़ीक़ी रोशनी अ़ता की, उसके इन एहसानों में से एक बड़ा एहसान यह भी है कि जिन नबियों और रसूलों का उसने ज़िक्र किया है उनसे मुताल्लिक़ बनी इसराईल की ख़ुराफ़ात और बेकार की बातों को दलीलों के साथ रद्द कर दिया और उनके मुक़द्दस दामन को लगाई गई गन्दगियों से पाक ज़ाहिर किया और इस तरह हक़ीक़त को सामने लाकर गन्दे लोगों की गन्दगी का परदा चाक कर दिया।

2. हज़ार बार सबक़ लेने की यह बात कि जिस गुमराही को बनी इसराईल ने अख़्तियार किया और क़ुरआन ने जिसको रोशन और खुली दलीलों के साथ रद्द कर दिया था, उस गन्दगी से हमारा दामन भी बचा न रह सका और क़ुरआन की साफ़ और रोशन राह को छोड़कर हमने बनी इसराईल की बिगड़ी रिवायतों को इस्लामी रिवायतों में जगह देनी शुरू कर दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक जगह इर्शाद फ़रमाया है कि अह्ले किताब की जो रिवायतें क़ुरआन और इस्लाम की तालीम की ज़िद न हों, उनका नक़ल करना ठीक है, लेकिन हमने इस मुबारक इर्शाद की बुनियादी शर्त कि वह क़ुरआन और इस्लाम की तालीम के ख़िलाफ़ न हो' को नज़रअंदाज़ करके हर क़िस्म की 'इसराईली रिवायतों को न सिर्फ़ नक़ल किया, बल्कि क़ुरआन की तफ़्सीर में उनको पेश करना शुरू कर दिया। नतीजा यह निकला कि एक ओर तो ग़ैर-मुस्लिमों ने इन रिवायतों को इस्लामी रिवायत बना दिया और उनमें रंग-रौग़न चढ़ाकर इस्लाम की बेग़रज़ और पाक तालीम पर हमले शुरू कर दिए और अपने नापाक मक़्सद के लिए बहाना और हीला बना लिया और दूसरी ओर ख़ुद मुसलमानों में इलहाद व ज़ंदक़ा के अलमबरदारों ने इन रिवायतों की आड़ लेकर क़ुरआन और सही हदीसों से साबित और इल्मे यक़ीन (वह्य इलाही) से हासिल हक़ीक़तों (मोजज़ों), हश्र व नश्र के वाक़िए, जन्नत व जहन्नम की तफ़्सीलों से इंकार के लिए राह बना ली और हर ऐसे मक़ाम पर बेसनद यह कहना शुरू किया कि यह तो हमारे तफ़्सीर लिखने वालों ने आदत के मुताबिक़ इसराईली अक़ीदतों से ले लिया है, हालांकि इस वाक़िए के लिए ख़ुद क़ुरआन या हदीसे रसूल सल्ल० की क़तई नस्स (यक़ीनी बात) मौजूद होती है।

ग़रज़ ये दोनों राहें ग़लत हैं—इस्लाम की तालीम के ख़िलाफ़ इसराईली रिवायतों को इस्लामियात, ख़ास तौर से क़ुरआन में जगह देना भी ग़लत राह और हलाक कर देने वाला कड़ा क़दम है। चाहे वह कितनी ही नेक नीयती से क्यों न उठाया गया हो और इसी तरह इलहाद की दावत के लिए रिवायतों को इस तरह नक़ल करने का बहाना बनाकर क़ुरआन व हदीस की नस्स

(बुनियादी बात) से इंकार या तफ़्सीर के नाम से उसकी व्याख्या में घट या बढ़ का क़दम भी इस्लामी तालीम को बर्बाद करना और उसकी रूप-रेखा को बिगाड़ देना है।

सही और साफ़ (सीधा रास्ता) सिर्फ़ वह हे जो तहक़ीक़ करने वाले उलेमा ने अपनाया है कि वे एक तरफ़ क़ुरआन व हदीसं की नस्स को अपना ईमान यक़ीन करते और उनमें मुलहिदाना तावील (बेख़ुदा) की रहनुमाई और बातों को बिगाड़ समझते हैं और दूसरी ओर क़ुरआन व हदीस के दामन को इसराईलियात से पाक साबित करके हक़ीक़त की रोशनी को सामने लाते हैं।

३. हुकूमत वाले नबियों और रसूलों और दुनिया के बादशाहों और हुक्मरानों की ज़िंदगी में हमेशा साफ़ और वाज़ेह फ़र्क़ रहा और रहता है। पहली क़िस्म के लोगों की ज़िंदगी के हर पहलू और हर हिस्से में अल्लाह का ख़ौफ़, उसका डर, अद्ल व इंसाफ़, दावत व इर्शाद, ख़िदमते ख़ल्क़ (जन-सेवा) साफ़ नज़र आते हैं। वे किसी जायज़ मौक़े पर हाकिमाना इक़्तिदार का मुज़ाहरा भी करते हैं तो उसमें घमंड और तकब्बुर की जगह अल्लाह के लिए बुग़्ज़ नज़र आता है। यानी उनका ग़ुस्सा अपने लिए नहीं, अपने निजी फ़ायदे के लिए नहीं, बल्कि अल्लाह के कलिमे की बुलन्दी के लिए होता है। चुनांचे हज़रत यूसुफ़, हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान की पाक ज़िंदगियों का पूरा दौर इस पर गवाह है और आख़िर लोगों की ज़िंदगी के हर शोबे में ज़ाती वक़ार (निजी प्रतिष्ठा) शख़्सी या जमाअ़ती (व्यक्तिगत या दलगत) बरतरी (उच्चता) का प्रदर्शन, छोटों पर ज़ुल्म, बुनियाद और नीवं की तरह काम करते नज़र आते हैं।

मिसाल के तौर पर आप फ़िरऔन अव्वल के इस एलान पर तवज्जोह फ़रमाइए, *'अना रब्बुकुमुल आला'* (मैं तुम्हारा सबसे बड़ा पालनहार हूं, दूसरा कोई नहीं) और फिर हज़रत सुलैमान के इस ख़िताब पर नज़र कीजिए *'अल्ला तालू अ़लै-य वातूनी मुस्लिमीन'* (मुझ पर बुलन्दी ज़ाहिर कर और मुसलमान होकर मेरे पास हाज़िर हो।) दोनों हिस्सों में हाकिमाना इक़्तिदार का मुज़ाहरा मौजूद है। मगर फ़िरऔन के एलान में अल्लाह के साथ सरकशी, ख़ुदा की

मख़्लूक़ पर ज़ालिमाना अन्दाज़ और ख़ुदाई के दावे के लिए 'मैं' (अह) जैसे मामले साफ़ दिखाई पड़ रहे थे और हज़रत सुलैमान के ख़िताब में मुख़तब के मुक़ाबले में सरबुलन्दी का इज़्हार, ज़ाती वक़ार और शख़्सी सरबुलन्दी के लिए नहीं, बल्कि एक ख़ुदा के इर्शाद व तब्लीग़, अल्लाह के कलिमे और शिर्क से बेज़ारी के साथ तौहीद की दावत के लिए किया जा रहा है और यही फ़र्क़ है जो नबियों (अलैहिस्सलाम) की विरासत के ज़रिए हमेशा सही ख़िलाफ़त और दुन्यवी हुकूमत के दर्मियान नुमायां रहना चाहिए।

4. जिस शख़्स की ज़िंदगी ख़ालिस अल्लाह की हो जाती है, अल्लाह तआला भी अपनी कुल कायनात को उसके लिए ताबे और मुसख़्ख़र कर देते हैं और उसकी यह कैफ़ियत हो जाती है कि उसका कोई क़दम भी अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं उठता। अब अगर ऐसा शख़्स कुछ ऐसे मामले कर दिखाता है जो आम दुन्यवी असबाब व वसाइल से बालातर होकर अमल में आए हैं, तो कम समझ और शक्की निगाहों वाले तो देखने और समझने की ज़हमत गवारा नहीं करते कि जिस हस्ती से ये आमाल हो गए हैं, वह अल्लाह की मर्ज़ी में ख़ुद को फ़ना कर चुकी है, इसलिए अल्लाह की बे-क़ैद क़ुदरत का हाथ उसके सर पर है और उसके इन आमाल (मोजज़ों) को भी क़ुदरत के आम क़ानूनों की तराज़ू में तौलकर उनके इंकार पर तैयार हो जाती है। यह रास्ता बेशक ग़लत और गुमराही का रास्ता है और साफ़ और रोशन 'सीधा रास्ता' वह है जिसको हमेशा इस्लाम के सोचने-समझने वाले क़ुरआन व हदीस की रोशनी में बयान करते चले आए हैं।

5. शैतानी असरों में सबसे बुरा असर या शैतानी वस्वसा यह है कि मियां-बीवी के ख़ुशगवार ताल्लुक़ात में नफ़रत-दुश्मनी का ऐसा ज़हर मिला दिया जाए, जो उनके दर्मियान फूट पड़ने की वजह बने। यह इसलिए सबसे बुरा है कि इसके नतीजे झूठ, बोहतान, बदकलामी, बदअख़्लाक़ी और बेहयाई, यहां तक कि दूर तक फैले हुए होते हैं। यही वजह है कि शैतान को यह अमल बहुत महबूब है।

हज़रत अय्यूब عليه السلام

हज़रत अय्यूब और क़ुरआन पाक

क़ुरआन में हज़रत अय्यूब عليه السلام का ज़िक्र चार सूरतों में आया है—

तर्जुमा—'और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान' (अलैहिमुस्सलाम) (निसा 163)

तर्जुमा—*'और उसकी औलाद में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और हारून।'* (अल-अनआम 84)

तर्जुमा—*और अय्यूब (का मामला भी याद करो) जब उसने अपने परवरदिगार को पुकारा था। मैं दुख में पड़ गया हूं और अल्लाह! तुझसे बढ़कर रहम करने वाला कोई नहीं, पस हमने उसकी दुआ क़ुबूल कर ली और उसका दुख दूर कर दिया और उसको उसका कुंबा उसकी मिस्ल उसके साथ अपनी रहमत से अपने इबादतगुज़ार बन्दों की नसीहत के लिए अता कर दिया।'* (अल-अंबिया 83 : 84)

तर्जुमा—*और याद करो हमारे बन्दे अय्यूब (के मामले) को, जब उसने अपने पालनहार को पुकारा था कि मुझको शैतान ने ईज़ा और तक्लीफ़ के साथ हाथ लगाया है। (तब हमने उससे कहा) अपने पांव से ठोकर मार। (उसने ऐसा ही किया और चश्मा ज़मीन से उबल पड़ा। तो हमने कहा) यह है नहाने की जगह ठंडी और पीने की और हमने उसको उसके अह्ल व अयाल अता किए और उनकी मानिंद और ज़्यादा अपनी मेहरबानी से और यादगार बनाने के लिए अक़्लमंदों के लिए और अपने हाथ में सींकों का मुट्ठा ले और उससे मार और अपनी क़सम में झूठा न हो। बेशक हमने उसको सब्र करने वाला पाया (और वह अच्छा बन्दा है) बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) बहुत रुजू होने वाला है।'* (साद 41-44)

इन आयतों में हज़रत अय्यूब के वाक़िए को अगरचे बहुत थोड़े और सादा तरीक़े से बयान किया गया है, लेकिन बलाग़त व मआनी के लिहाज़ से

वाक़ियों के जिस क़दर भी सही और अहम हिस्से थे, उनको ऐसे ढंग से अदा किया गया है कि अय्यूब (अलै॰) के सफ़र की लम्बी और मोटी किताब में भी वह बात नज़र नहीं आती।

एक पाक और मुक़द्दस इंसान है जो अल्लाह के यहां नबियों और रसूलों की जमाअत में शामिल है और उसका नाम अय्यूब है, *'वज़्कुर अब्दना अय्यूब'* वह दौलत व सरवत और बाल-बच्चों की कसरत के लिहाज़ से भी बहुत ख़ुश बख़्त और फ़ीरोज़मंद था, मगर यकायक इम्तिहान व आज़माइश में आ गया और माल व दौलत, घर-बार, बाल-बच्चे और जिस्म व जान सबको मुसीबत ने आ घेरा, माल व सामान बर्बाद हुआ, बाल-बच्चे हलाक हुए, और जिस्म व जान को सख़्त रोग लग गया, तब भी उसने न शिकवा किया और न शिकायत, बल्कि सब्र व शुक्र के साथ अल्लाह तआला की जनाब में अर्ज़ कर दिया—

'इज़ नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियश्शैतानु बिनुस्बिंव-व अज़ाब'

अदब का इतना ख़्याल है कि यह नहीं कहा, 'तूने मुसीबत में डाल दिया', क्योंकि उसको इल्म है कि तक्लीफ़ व अज़ाब गो अल्लाह ही की मख़्लूक़ है, मगर शैतानी अस्बाब की बुनियाद पर ज़ाहिर होते हैं। इसलिए यह कहा, 'शैतान ने मुझको तक्लीफ़ के अज़ाब के साथ छू दिया' और फिर हालत बयान करने के लिए निहायत अजीब और लतीफ़ अन्दाज़ अख़्तियार किया कि 'अन्नी मस्सनियज़्ज़ुर' (अल्लाह! मुझको मुसीबत ने आ घेरा है) 'व अन-त अरहमुर्राहिमीन' (और तू मेहरबानों में सबसे बड़ा मेहरबान है) और जब उसने पुकारा, तो अल्लाह ने सुना और उसे क़ुबूल किया। जो माल व मता बर्बाद हुआ और जो घर वाले हलाक हुए, अल्लाह ने उससे कई गुना और ज़्यादा उसको बख़्श दिए और सेहत व तन्दुरुस्ती के लिए चश्मा जारी कर दिया कि नहा कर चंगा हो जाए।

'उरकुज़ बिरिज्लि-क हाज़ा मुग़्तसलुन बारिदुंव व शराब व व-हब्ना लहू अह्लहू व मिस्लहुम म-अ हुम फ़स्तजबना लहू फ़-कशफ़ना मा बिही मिन ज़ुर्रिन व आतैनाहु अह्लहू व मिस्लहुम व मअहुम।' 'और यह सब कुछ इसलिए हुआ कि रहमत उसकी ज़ाती ख़ूबी है। 'व रहमती व सिअत्त कुल्ल शैइन फ़-स अक्तुबुहा लिल्लज़ी-न यत्तक़ून०' और ताकि सोचने-समझने वाले और फ़रमांबरदार

वन्दे उससे नसीहत व इबरत हासिल करें। और फिर हज़रत अय्यूब ﷺ के सब्र और वन्दगी की तारीफ़ करते हुए उसने यह कहकर उनकी अज़्मत को चार चांद लगा दिए *'इन्ना वजदनाहु साबिरन नेमल अब्दु इन्नहू अव्वाब'* 'और इसमें कोई शक नहीं कि हमने अय्यूब को बड़ा साबिर पाया। वह बहुत ही अच्छा बन्दा और हमारी जानिब रुजू होने वाला है।

कुछ तफ़्सीरी हक़ीक़तें

हज़रत अय्यूब ﷺ का मरज़

1. इसराईली रिवायतों में हज़रत अय्यूब के मरज़ के बारे में बढ़ा-चढ़ा कर बयान की गई रिवायतें दर्ज हैं और उनमें ऐसे-ऐसे मरज़ों को जोड़ा गया है जो नफ़रत की वजह समझे जाते हैं, जिनकी वजह से रोगी से इंसान का बचना ज़रूरी हो जाता है। तह्क़ीक़ करने वालों की राय यह है और यही सही और ठीक है कि जब क़ुरआन ने मरज़ की कोई तफ़्सील नहीं बयान की और हदीस का पूरा ज़ख़ीरा उसके ज़िक्र से ख़ाली है तो इसराईली रिवायतों पर बहस क़ायम करना फ़िज़ूल है।

'मस्सनियश्शैतानु' से क्या मुराद है?

2. 'मुझको शैतान ने ईज़ा और तक्लीफ़ के साथ हाथ लगाया है', तह्क़ीक़ करने वालों के ख़्याल में अय्यूब ने यह बात अदब के तौर पर फ़रमाई (इनका ताल्लुक़ उनके जिस्म पर शैतान को क़ाबू देने से बिल्कुल नहीं) इसलिए कि यह एक हक़ीक़त है कि अल्लाह की तरफ़ से तो ख़ैर ही ख़ैर है और जिस चीज़ को हम शर कहते हैं, वह हमारी निस्बत से शर है, वरना कायनात की तमाम मस्लहतों के लिहाज़ से ग़ौर करोगे तो उसको भी ख़ैर ही मानना पड़ेगा। हमारी ज़िंदगी और हमारे आमाल (काम) की निस्बतें कुछ चीज़ों को शर बना देती हैं, लेकिन हक़ीक़त के एतबार से ये भी ख़ैर ही होती हैं।

3. **आयत 'व व हब्ना लहू अह्लहू व मिस्लहुम मअहुम** में बाल-बच्चों के देने का जो ज़िक्र किया है, क्या उससे यह मुराद है कि अल्लाह तआला ने

अय्यूब की सेहत के बाद उनके हलाक हुए बाल-बच्चों की जगह पहले से ज़्यादा उनके बाल-बच्चों में इज़ाफ़ा कर दिया और जो ख़ानदान के लोग बिखरे थे, उनको दोबारा जमा कर दिया या यह मक़्सद है कि हलाक हुए लोगों को भी ताज़ा ज़िंदगी बख़्श दी और ज़्यादा भी दिए। इब्ने कसीर ने हसन और क़तादा से यही मानी नक़ल किए हैं और शाह अब्दुल क़ादिर साहब (नव्वरल्लाहु मरक़दहू) की भी यही राय है और इमाम राज़ी रह० और इब्ने हब्बान रह० का रुझान पहले मानी की ओर है और आयत में दोनों मानों की गुंजाइश है।

4. सूरः साद में है, **'व ख़ुज़ बि-य-दि-क ज़िग़्सन फ़ज़्रिब बिही व ला तह्नस'** और अपने हाथ में सींकों का मुट्ठा ले, फिर उससे मार और क़सम में झूठा न हो' तो यह किस वाक़िए की तरफ़ इशारा है? कुरआन और सहीह हदीसों में तो इसकी कोई तफ़्सील नहीं ज़िक्र की गई, अलबत्ता तफ़्सीर लिखने वाले यह कहते हैं कि अय्यूब की हर क़िस्म की बर्बादी के बाद जब उनकी बीवी के अलावा कोई ग़मगुसार बाक़ी न रहा तो वह नेक बीवी हर वक़्त अय्यूब की तीमारदारी में मश्ग़ूल और दुख-दर्द की शरीक रहती थी। एक बार उसने हज़रत अय्यूब की इंतिहाई तक्लीफ़ से बेचैन होकर कुछ ऐसी बातें कह दीं जो सब्रे अय्यूब को ठेस पहुंचाने वाली और अल्लाह तआला की तरफ़ शिकवा का पहलू लिए हुए थीं, अय्यूब उसको बरदाश्त न कर सके और क़सम खाकर फ़रमाया कि मैं तुझको सौ कोड़े लगवाऊंगा। जब हज़रत अय्यूब अलै० के इम्तिहान की मुद्दत ख़त्म हो गई और वह सेहतयाब हुए तो क़सम पूरी करने का सवाल सामने आया। एक तरफ़ ज़िंदगी की साथी की इंतिहाई वफ़ादारी, ग़मख़्वारी और अच्छी ख़िदमत करने का मामला और दूसरी तरफ़ क़सम को सच्चा और पूरा करने का सवाल, हज़रत अय्यूब अलै० सख़्त तरद्दुद में थे कि अल्लाह तआला ने नेक बीवी की नेकी और शौहर के साथ वफ़ादारी का यह सिला दिया कि सौ तिनकों का एक मुट्ठा बनाएं और उससे अपनी जीवन-साथी को मारें, इस तरह आपकी क़सम पूरी हो जाएगी।

5. सूरः साद में है 'उर्कुज़ बिरिज्लि-क हाज़ा मुग्तसलुंव बारिदुंव-व शराब', इब्ने कसीर ने उसकी तफ़्सीर में जो कुछ फ़रमाया है। उसका हासिल यह है—

अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि अय्यूब ﷺ अपनी जगह से उठो और ज़मीन पर ठोकर मारो। अय्यूब ﷺ ने अल्लाह तआला के हुक्म की तामील की, तो अल्लाह तआला ने उनके लिए एक चश्मा जारी कर दिया, जिसमें उन्होंने ग़ुस्ल किया और जिस्म का ज़ाहिरी रोग सब जाता रहा। इसके बाद फिर उन्होंने ठोकर मारी और दूसरा चश्मा उबल पड़ा और उन्होंने उसका पानी पिया और उससे जिस्म के बातिनी हिस्से पर मरज़ का जो असर था, उसकी भी जड़ें कट गईं और इसी तरह वह चंगे होकर अल्लाह का शुक्र बजा लाए।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने इब्ने जरीर के वास्ते से क़तादा से भी इसी क़िस्म का क़ौल नक़ल किया है—

चश्मा एक था या दो, इस बहस से हटकर अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब ﷺ के लिए सेहत का जो तरीक़ा अख़्तियार फ़रमाया, वह फ़ितरी तरीक़ा है। आज भी ऐसे मादनी (खनिज) चश्मे उसने इंसानी कायनात के फ़ायदे के लिए ज़ाहिर कर रखे हैं, जिनमें ग़ुस्ल करने और उनका पानी पीने से वहुत-से रोग कम हो जाते या दूर हो जाते हैं। फ़र्क़ इस क़दर है कि ऐसे चश्मे का ज़ाहिर होना अय्यूब के लिए एजाज़ की शक्ल में हुआ और आम हालात में अस्बाब के तहत हुआ करता है।

दूसरे वाक़िए

इमाम बुख़ारी रह० ने अपनी सहीह में रिवायत नक़ल की है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, हज़रत अय्यूब ﷺ ग़ुस्ल फ़रमा रहे थे कि अल्लाह तआला ने सोने की कुछ टिड्डियां उन पर बरसाईं। हज़रत अय्यूब ने उनको देखा तो मुट्ठी भर कर कपड़े में रखने लगे। अल्लाह तआला ने अय्यूब को पुकारा, अय्यूब! क्या हमने तुमको यह सब कुछ धन-दौलत देकर ग़नी नहीं बना दिया, फिर यह क्या?

हज़रत अय्यूब ﷺ ने अर्ज़ किया, परवरदिगार! यह सही और दुरुस्त, मगर तेरी नेमतों और बरकतों से कब कोई बे-परवाह हो सकता है? *'व लाकिन ला ग़नी अन बरकतिक०'*

इस रिवायत की शरह करते हुए हाफ़िज़ इब्ने हजर तहरीर फ़रमाते हैं कि इमाम बुख़ारी रह० की अपनी शर्त के मुताबिक़ हज़रत अय्यूब ﷺ के वाक़िए से मुताल्लिक़ कोई ख़बर साबित नहीं हो सकी, इसलिए सिर्फ़ ऊपर लिखी गई रिवायत ही को उन्होंने काफ़ी समझा, इसलिए कि वह उनकी शर्त के मुताबिक़ सही है। इसके बाद हाफ़िज़ इब्ने हजर अपनी तरफ़ से फ़रमाते हैं कि इस सिलसिले में अगर कोई रिवायत सेहत को पहुंच सकी है, तो वह इस तरह है—

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हज़रत अय्यूब तेरह साल तक मुसीबतों के इम्तिहान में मुब्तला रहे, यहां तक कि उनके तमाम रिश्ते-नातेदार और क़रीब व दूर के जान-पहचान के सभी लोगों ने उनसे किनारा कर लिया, अलबत्ता अज़ीज़दारों में से उनके दो अज़ीज़ सुबह व शाम उनके पास आते रहे। एक बार उनमें से एक ने दूसरे से कहा, मालूम होता है कि अय्यूब ने कोई बहुत बड़ा गुनाह किया है, तभी तो वह इसके बदले में ऐसी सख़्त मुसीबत में फंस गया है। अगर यह बात न होती तो अल्लाह उन पर मेहरबान न हो जाता और उनको शिफ़ा न हो जाती?

यह बात दूसरे ने हज़रत अय्यूब से कह सुनाई। अय्यूब यह सुनकर बड़े बेचैन और परेशान हो गए और अल्लाह की दरगाह में सज्दे में गिरकर दुआ करने लगे। इसके फ़ौरन बाद ही अय्यूब ﷺ ज़रूरत पूरी करने के लिए जगह से उठे और उनकी बीवी हाथ पकड़ कर ले गईं। जब फ़ारिग़ हुए और वहां से अलग हुए तो अल्लाह की वह्य नाज़िल हुई कि ज़मीन पर पांव से ठोकर मारो और जब उन्होंने ठोकर मारी तो पानी का चश्मा उबल पड़ा और उन्होंने ग़ुस्ले सेहत किया और पहले से ज़्यादा सही व तन्दुरुस्त नज़र आने लगे। यहां बीवी इंतिज़ार कर रही थी कि अय्यूब ﷺ ताज़गी और शगुफ़्तगी के साथ सामने नज़र आए। यह क़तई तौर पर न पहचान सकीं और अय्यूब से मुताल्लिक़ उन्हीं से मालूम करने लगीं। तब आपने फ़रमाया, मैं ही अय्यूब हूं और अल्लाह के फ़ज़्ल व करम का वाक़िया सुनाया। रोज़ाना के खाने के लिए अय्यूब ﷺ के पास एक गठरी गेहूं की और एक जौ की थी। अल्लाह ने उनकी दौलत में इज़ाफ़ा करने के लिए गेहूं को सोने और जौ को चांदी

में बदल दिया।

क़रीब-क़रीब इसी क़िस्म का वाक़िया इब्ने अबी हातिम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से भी रिवायत किया है और मुसीबत की मुद्दत के मुताबिक़ वहब बिन मुनब्बह तीन साल बयान करते हैं और हसन से सात साल नक़ल किए गए हैं।

सबक़ और नसीहत

1. अल्लाह की मख़्लूक़ में से जिसको अल्लाह तआला के साथ जिस क़दर क़ुरबान हासिल होती है, उसी हिसाब से वह आज़माइशों और मुसीबतों की भट्ठी में ज़्यादा तपाया जाता है और जब वह उनके पेश आने पर सब्र व जमाव से काम लेता है तो यही मुसीबतें उसके क़ुर्ब वाले दर्जों की, ऊंचाई और बुलन्दी की वजह बन जाती हैं। चुनांचे इस मज़्मून को नबी अकरम ﷺ ने इन लफ़्ज़ों में इर्शाद फ़रमाया—

'मुसीबतों में सबसे ज़्यादा सख़्त इम्तिहान नबियों का होता है, इसके बाद नेक बन्दों का होता है और फिर मर्तबों और दर्जों के मुताबिक़। (हदीस)

'इंसान अपने दीन के दर्जों के मुताबिक़ आज़माया जाता है, पस अगर उसके दीन में पुख़्तगी और मज़बूती है तो वह मुसीबत की आज़माइश में भी दूसरों से ज़्यादा होगा।'

(हदीस)

2. इज़्ज़त, शोहरत, दौलत, सरवत, ख़ुशहाली और अच्छी हालत में अल्लाह की शुक्रगुज़ारी और एहसान शनासी कुछ ज़्यादा मुश्किल नहीं है और अगर घमंड, गर्व और 'मैं' काम नहीं कर रहा है तो बहुत आसान है, लेकिन मुसीबत, आज़माइश, दुख-ग़म, तंगी, बदहाली में अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहकर शिकायत का एक लफ़्ज़ भी ज़ुबान पर न लाना और सब्र व इस्तिक़ामत का सबूत देना बहुत मुश्किल और कठिन है, इसलिए जब कोई अल्लाह का बन्दा इस बुरी हालत में सब्र व ज़ब्त का दामन हाथ से नहीं छोड़ता और सब्र व शुक्र का बराबर मुज़ाहरा करता है, तो फिर अल्लाह की रहमत भी जोश में आ जाती है और ऐसे आदमी पर उसके फ़ज़्ल व करम की बारिश होने लगती है और उम्मीद के ख़िलाफ़ बेपनाह फ़ज़्ल व करम से नवाज़ा जाता और

दीन व दुनिया दोनों की कामरानी का हक़दार बन जाता है। चुनांचे हज़रत अय्यूब की मिसाल इसके लिए रोशन गवाही है।

तर्जुमा—'और अय्यूब को हिदायत दी जिस वक़्त पुकारा उसने अपने रब को, बेशक मुझको पहुंची है ईज़ा और तू बहुत मेहरबान है सब मेहरबानी करने वालों से, पस क़ुबूल किया हमने वास्ते उसके, पस खोल दी हमने जो कुछ थी उसको पीड़ा और दी हमने उसको औलाद उसकी और मानिंद उनकी साथ उनके मेहरबानी अपनी तरफ़ से और नसीहत वास्ते इबादत करने वालों के।'

(अंबिया : 83, 84)

3. इंसान को चाहिए कि किसी हालत में भी अल्लाह तआला की रहमत से नाउम्मीद न हो, इसलिए कि मायूसी कुफ़्र का तरीक़ा है और यह न समझे कि मुसीबत व बला गुनाहों ही के बदले में वजूद में आती हैं, बल्कि कभी-कभी आज़माइश और इम्तिहान बनकर आती और सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए अल्लाह तआला की रहमत का दरवाज़ा खोल देती है। एक हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला अपने बन्दों को मुख़ातब करके इर्शाद फ़रमाता है, 'मैं अपने बन्दे के गुमान से क़रीब हूं।' (अल-हदीस) यानी बन्दा मेरे बारे में जिस क़िस्म का गुमान अपने दिल में रखता है, मैं उसके गुमान को पूरा कर देता हूं।

4. मियां-बीवी के ताल्लुक़ात में वफ़ादारी और जमाव सबसे ज़्यादा महबूब चीज़ है और इसीलिए एक हदीस में वस्वसों में सबसे घटिया वस्वसा, जो शैतान को बहुत ही प्यारा है, मियां-बीवी के दर्मियान बद-गुमानी और बुग़्ज़ और दुश्मनी के बीज बो देना है। इसलिए सही हदीसों में उस औरत को जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई है जो अपने शौहर के लिए नेक और वफ़ादार साबित हो और इस वफ़ा और मुहब्बत की क़द्र व क़ीमत उस वक़्त बहुत ज़्यादा हो जाती है जब शौहर, दुख और रंज में गिरफ़्तार हो और उसके अज़ीज़ और रिश्तेदार तक उससे अलग हो चुके हों, चुनांचे हज़रत अय्यूब की 'पाक बीवी' ने हज़रत अय्यूब की मुसीबत के ज़माने में जिस वफ़ादारी, इताअत, हमदर्दी और ग़मख़्वारी का सबूत दिया, अल्लाह ने उसके एहतराम में अय्यूब की क़सम को उनके हक़ में पूरा करने के लिए आम हुक्मों की क़िस्म से जुदा

एक ऐसा हुक्म दिया जिससे अल्लाह तआला के यहां उस नेक बीवी की क़द्र व अहमियत का आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

5. तर्जुमा—*'और ख़ुश्नूदी की ख़ुशख़बरी सुना दो उन लोगों को कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही का माल हैं और उसी की तरफ़ लौट जाने वाले हैं। यही लोग हैं उन पर उनके परवरदिगार की मेहरबानी और रहमत है और यही सीधे रास्ते पर हैं।'* (अल-बक़रः : 157)

हज़रत यूनुस عليه السلام

हज़रत यूनुस عليه السلام का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में

क़ुरआन मजीद में हज़रत यूनुस عليه السلام का ज़िक्र छः सूरतों में किया गया है, सूरः निसा, अनआम, यूनुस, अस्साफ़्फ़ात, अंबिया और अल-क़लम। इनमें से पहली चार सूरतों में नाम का ज़िक्र है और आख़िर की दो सूरतों में 'ज़ुन्नून' और 'साहिबुल हूत' कहकर सिफ़त ज़ाहिर की गई है। यह भी वाज़ेह रहे कि सूरः निसा और अनआम में नबियों की सूची में सिर्फ़ नाम का ज़िक्र है और बाक़ी सूरतों में वाक़ियों पर थोड़ी-सी रोशनी डाली गई है और हज़रत यूनुस عليه السلام की मुबारक ज़िंदगी के सिर्फ़ उसी पहलू को नुमायां किया गया है जो उनकी पैग़म्बराना ज़िंदगी से जुड़ा हुआ है और जिसमें रुश्द व हिदायत के अलग-अलग गोशे सोचने-समझने की दावत देते हैं। क़ुरआन में आता है—

फिर क्यों ऐसा हुआ यूनुस क़ौम की बस्ती के सिवा और कोई बस्ती न निकली कि (अज़ाब नाज़िल होने से पहले) यक़ीन कर लेती और ईमान की बातों से फ़ायदा उठाती? यूनुस की क़ौम जब ईमान ले आई तो हमने रुसवाई का वह अज़ाब उन पर से टाल दिया जो दुनिया की ज़िंदगी में पेश आने वाला था और एक ख़ास मुद्दत तक ज़िंदगी के सर व सामान से फ़ायदा उठाने की मोहलत दे दी और ज़ुन्नून (यूनुस) का मामला याद करो, जब ऐसा हुआ था कि वह (हक़ के रास्ते में) घबरा कर चला गया, फिर उसने ख़्याल किया कि हम उसको तंगी (आज़माइश) में नहीं डालेंगे, फिर (जब उसको आज़माइश की

तंगी ने आ घेरा, तो) उसने (मछली के पेट में और दरिया की गहराई के) अंधेरियों में पुकारा, 'अल्लाह तेरे सिवा कोई माबूद नहीं! तेरे लिए हर तरह की पाकी हो!' सच यह है कि मैंने अपने ऊपर बड़ा ही ज़ुल्म किया। तब हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे ग़मगीनी से निजात दी और हम इसी तरह ईमान वालों को निजात दिया करते हैं और बेशक यूनुस पैग़म्बरों में से था। (और वह वाक़िया याद करो) जबकि वह भरी हुई कश्ती की ओर भागा (और जब नाव वालों ने डूब जाने के डर से) क़ुरआ डाला, तो (दरिया में डाले जाने के लिए) उसका नाम निकला फिर निगल गई उसको मछली और वह (अल्लाह के नज़दीक क़ौम के पास से भाग आने पर) मलामत के क़ाबिल था। पस अगर यह बात न होती कि वह अल्लाह की पाकी बयान करने वालों में से था तो मछली के पेट में क़ियामत तक रहता, फिर डाल दिया हमने उसको (मछली के पेट से निकाल कर) चटयल ज़मीन में और वह नातवां और बेहाल था और हमने उस पर साए के लिए एक बेल वाला पेड़ उगाया और हमने उसको एक लाख से ज़्यादा इंसानों की तरफ़ बनाकर भेजा, पस वे ईमान ले आए। फिर हमने उसको एक मुद्दत (मौत के पैग़ाम) तक ज़िंदगी के सामान से नफ़ा उठाने का मौक़ा दिया।

पस अपने परवरदिगार के हुक्म की वजह से सब्र को काम में लाओ और मछली वाले (यूनुस) की तरह (बेसब्र) न हो जाओ, जबकि उसने (अल्लाह को) पुकारा और वह बहुत ग़मगीन था। अगर यह बात न होती कि उसके परवरदिगार के फ़ज़्ल ने उसको (गोद में) ले लिया था, तो वह ज़रूर चटयल मैदान में मलामत का मारा होकर फेंक दिया जाता। पस उसके परवरदिगार ने उसको बरगज़ीदा किया और उसको नेकों में लिखा।

हज़रत यूनुस को सूरः अंबिया में 'ज़ुन्नून' कहा गया है, इसलिए कि पुरानी अरबी ज़ुबान में 'नून' मछली को कहते हैं और अल-क़लम में 'साहिबुलहूत' से याद किया गया है क्योंकि 'हूत' भी मछली ही को कहते हैं और उन पर मछली का हादसा गुज़रा था, इसलिए 'मछली वाला' उनका लक़ब हो गया।

नसब व ज़माना

बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ से साफ़-साफ़ रिवायत किया गया है कि मत्ता वालिद का नाम है और अस्ले किताब यूनुस का नाम बोनाह और उनके वालिद का नाम अमती बताते हैं, जहां तक उनके ज़माने का ताल्लुक़ है तो हज़रत इमाम बुख़ारी रह० ने 'किताबुल अंबिया' में जो तर्तीब क़ायम की है, उसमें यूनुस का ज़िक्र हज़रत मूसा ﷺ, हज़रत शुऐब ﷺ और हज़रत दाऊद ﷺ के दर्मियान किया है।

हज़रत शाह अ़ब्दुल क़ादिर (नव्वरल्लाहु मर्क़दहू) का क़ौल है कि यूनुस ﷺ हिज़क़ील के ज़माने के हैं, जबकि हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़रमाते हैं कि यूनुस ﷺ के ज़माने का तै करना तारीख़ी एतबार से मुश्किल है। (हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान रह०) का ख़्याल है कि हज़रत शाह अ़ब्दुल क़ादिर रह० का क़ौल सही मालूम होता है। *(वल्लाहु आलम)*

दावत की जगह

इराक़ के मशहूर व मारूफ़ मक़ाम नैनवा के बाशिंदों की हिदायत के लिए वे ज़ाहिर हुए थे। नैनवा आशूरी हुकूमत की राजधानी था और मूसल के इलाक़े में मर्कज़ी शहर था। क़ुरआन में इस शहर की आबादी एक लाख से ज़्यादा बताई गई है।

वफ़ात

शाह अ़ब्दुल क़ादिर नव्वरल्लाहु मरक़दहू फ़रमाते हैं कि यूनुस ﷺ की वफ़ात इसी शहर में हुई जिसकी जानिब को भेजे गए, यानी नैनवा में और वहीं उनकी क़ब्र थी। शाह साहब का यह क़ौल सही है।

कुछ दूसरी बातें

यूनुस ﷺ की फ़ज़ीलत

सहीह हदीसों में नबी अकरम ﷺ ने यूनुस ﷺ का भला ज़िक्र करते हुए उनकी अज़्मत व फ़ज़ीलत का ख़ास ज़िक्र फ़रमाया है, चुनांचे बुख़ारी में नक़ल किया गया है—

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें से कोई आदमी हरगिज़ यह न कहे कि मैं (यानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बेहतर हूं 'यूनुस बिन मत्ता' से।

और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से नक़ल किया गया है कि एक बार एक यहूदी सामान बेच रहा था कि किसी आदमी ने कुछ ख़रीद कर जो क़ीमत देनी चाही, वह उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ थी। वह कहने लगा, ख़ुदा की क़सम! जिसने मूसा को अफ़ज़ल बशर बनाया, मैं इस क़ीमत पर अपनी चीज़ को नहीं बेचूंगा। एक अंसारी ने यह सुना तो गुस्से में यहूदी को एक तमांचा रसीद कर दिया और कहा, तू ऐसी बात कहता है, जबकि हमारे दर्मियान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मौजूद हैं। यहूदी फ़ौरन दरबारे रिसालत में हाज़िर हुआ और फ़रियाद करने लगा, अबुल क़ासिम! जबकि मैं आपके अह्द और ज़िम्मे में हूं तो इस अंसारी ने मेरे मुंह पर तमांचा किस लिए मारा? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अंसारी से वजह मालूम की और जब अंसारी ने वाक़िया सुनाया तो फिर मुबारक चेहरा गुस्से से लाल हो गया और फ़रमाया, नबियों को एक दूसरे पर फ़ज़ीलत न दो, इसलिए कि जब पहला सूर फूंका जाएगा, तो ज़मीन व आसमान के अन्दर जो भी जानदार हैं, वे सब बेहोश हो जाएंगे, मगर जिनको अल्लाह अलग कर दे। इसके बाद दूसरा सूर फूंका जाएगा तो सबसे पहले जो आदमी होश में आएगा, वह मैं हूंगा, मगर मैं जब ग़शी से बेदार हूंगा तो देखूंगा कि मूसा ﷺ अर्श के सहारे खड़े हैं। अब मैं नहीं कह सकता कि उनकी ग़शी का मामला सूर के वाक़िए में महसूब

हो गया कि वह ग़शी से बचे रहे या वह मुझसे भी पहले होश में आ गए और मैं नहीं कहता कि कोई नबी भी यूनुस बिन मत्ता से अफ़ज़ल है।

इन रिवायतों से ख़ुसूसियत के साथ हज़रत युनूस ﷺ का जो ज़िक्र आया है तो इस पर उलेमा का इत्तिफ़ाक़ है कि वह सिर्फ़ इसीलिए कि जो आदमी भी हज़रत यूनुस के वाक़ियों को पढ़े, उसके दिल में ज़ाते अक़्दस के ताल्लुक़ से कोई ख़राब पहलू भी न आने पाए, पस ज़रूरी हुआ कि उनकी शान की अज़्मत को नुमायां करके तंक़ीस (ख़राबी निकालने) के इस डर को ख़त्म कर दिया जाए।

नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) के फ़ज़ाइल

मगर इस जगह यह मस्अला ज़रूर हल तलब हो जाता है कि दूसरी हदीस में हज़रत मूसा ﷺ की फ़ज़ीलत के ताल्लुक़ से आपने जो तफ़्सील इर्शाद फ़रमाई और *'ला तफ़ज़्ज़लू बैनल अंबिया'* (नबियों के दर्मियान एक दूसरे को फ़ज़ीलत न दो) फ़रमा कर नबियों के दर्मियान फ़ज़ीलत की 'नहीं' कर दी तो इस मसले की हक़ीक़त क्या है?

इसे और नुमायां करने के लिए यों समझना चाहिए कि एक तरफ़ क़ुरआन में इर्शाद है—'रसूलों में हमने कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई' साथ ही नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया—'मैं बग़ैर किसी फ़ख़्र के कहता हूं कि मैं आदम की तमाम औलाद का सरदार हूं और आपने यह भी फ़रमाया, नबियों के दर्मियान अफ़ज़ल-ग़ैर अफ़ज़ल का फ़र्क़ क़ायम न करो और न एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दो। तो आपस में इनमें किस तरह मेल हो सकता है? इस मस्अले का बेहतरीन हल यह है कि बेशक नबियों और रसूलों के दर्मियान फ़ज़ाइल मौजूद हैं और उनके दर्मियान अफ़ज़ल और मफ़्ज़ूल की निस्बत क़ायम है और यक़ीनी तौर पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम नबियों और रसूलों से अफ़ज़ल हैं, फिर ऊपर की रिवायतों में आपने जो नबियों के दर्मियान फ़ज़ीलत देने से मना किया है, तो इसका मतलब यह है कि किसी नबी को दूसरे नबी पर इस तरह की फ़ज़ीलत देने से सख़्ती से रोका गया है कि उस नबी की कमज़ोरी बताना

हो तो अफ़ज़ल नहीं है, यानी यह नहीं होना चाहिए कि किसी पैग़म्बर की मुहब्बत के जोश में दूसरे नबियों का मुक़ाबला करते हुए ऐसी तारीफ़ की जाए कि जिससे किसी दूसरे पैग़म्बर में कमी या कमज़ोरी (नुक़्स) का पहलू निकलता हो, साथ ही ऐसे मौक़े पर फ़ज़ीलत की बहस से रोका गया है, जबकि यह लड़ाई-झगड़े की शक्ल अख़्तियार कर ले इसलिए कि ऐसी शक्ल में एहतियात के बावजूद इंसान बेक़ाबू होकर दूसरे पैग़म्बर के बारे में ऐसी बातें कह जाएगा जो उनकी तौहीन और तंक़ीस (नुक़्स निकालना) की वजह बनती हैं और नतीजे में ईमान की जगह कुफ़्र लाज़िम हो जाता है। चुनांचे जिस वाक़िए में आपने यह इर्शाद फ़रमाया था, वह इसी क़िस्म के लड़ाई-झगड़े का मौक़ा था। बाक़ी नबियों के दर्मियान अल्लाह तआला ने कुछ ख़ुसूसियतों के एतबार से जो दर्जों का फ़र्क़ क़ायम किया है और जिसके बारे में ख़ुद यह फ़रमाया है—

'तिलकर्रुसुलु फ़ज़्ज़लना बाज़ुहुम अला बाज़' तो यह मामला अपनाने लायक़ है, न कि छोड़ने लायक़।'

कुछ सबक़, कुछ नसीहतें

1. क़ौमों की रुश्द व हिदायत से मुताल्लिक़ यह 'अल्लाह की सुन्नत' है कि जब वह नबी की दावत से मुंह मोड़कर सरकशी पर इसरार करने लगती और ज़ुल्म करती, ज़ुल्म ढाने को उसवा बना लेती है और नबी मायूस होकर उनको अज़ाब की ख़बर दे देता है, तो फिर उम्मत के लिए सिर्फ़ दो राहें बाक़ी रह जाती हैं, या अज़ाब आने से पहले ईमान ले आए और अज़ाब से बच जाए और या अल्लाह के अज़ाब का शिकार हो जाए और यह नामुम्किन है कि नबी की अज़ाब की इत्तिला के बाद वे अज़ाब से पहले ईमान भी न लाएं और अज़ाब से भी बच जाएं।

क़ौमे नूह, क़ौमे सालेह, क़ौमे लूत, आद, समूद वग़ैरह इन सब पुराने नामों और पिछली क़ौमों का शानदार तमद्दुन (संस्कृति) ऊंची और शानदार तहज़ीब (सभ्यता), भारी-भरकम ताक़त और क़ूवत और फिर अल्लाह के अज़ाब से उनका फ़ना होकर बेनाम व निशान हो जाने की तारीख़ इस हक़ीक़त

को खोल देती है।

2. पिछली क़ौमों में से क़ौमे यूनुस की मिसाल ऐसी है जिसने अज़ाब आने से पहले ईमान को क़ुबूल किया और वह अल्लाह की सच्ची मुतीअ् व फ़रमांबरदार बनकर अल्लाह के अज़ाब से बच गई, काश कि बाद में आने वाली नस्लें और क़ौमें यूनुस के नक़्शे क़दम पर चलकर उसी तरह अल्लाह के अज़ाब से बची रह सकतीं, मगर अफ़सोस कि ऐसा न हुआ।

3. नबियों का अल्लाह तआला के साथ मामला आम और ख़ास दोनों से जुदा रहता है और रहना भी चाहिए, इसलिए कि वे सीधे-सीधे अल्लाह से मुख़ातब होने और बात करने का शरफ़ रखते हैं, इसलिए अल्लाह के अह्काम के मिसाल में लेने की वह ज़िम्मेदारी जो उनसे जुड़ी होती है, वह दूसरों के साथ नहीं होती पस उनका फ़र्ज़ है कि जो काम भी अंजाम दें, अल्लाह की वह्य की रोशनी में होना चाहिए, ख़ास तौर से दीन की तब्लीग़ और हक़ के पैग़ाम से मुताल्लिक़ तमाम मामलों में अल्लाह की वह्य के इल्मुल यक़ीन ही पर उनका मामला लटका रहे। यही वजह है कि जब वे किसी काम में जल्दी कर बैठते हैं या वह्य का इन्तिज़ार किए बग़ैर किसी क़ौल या अमल पर क़दम उठाते हैं, तो भले ही वह बात कितनी ही मामूली क्यों न हो, उनकी अल्लाह तआला बहुत सख़्त पकड़ करता और उनकी इस सूरतेहाल के लिए ऐसी सख़्त ताबीर करता है कि सुनने वाले को महसूस होता है कि सच में उन्होंने कोई बहुत बड़ा जुर्म किया है, मगर साथ ही उसकी मदद भी शामिले हाल रही है और वह तुरन्त तंबीह लेकर ग़लती माफ़ करने के लिए दुआ करते हैं और तौबा को काम का वसीला बनाते हैं जो बहुत जल्द अल्लाह के यहां मक़्बूल हो जाती और उनकी इज़्ज़त व एहतराम में ज़्यादती की वजह बन जाती है।

क़ुरआन के बयान करने के तरीक़े में इस सच्चाई की बहुत ज़्यादा अहमियत है और जो इस सच्चाई को नहीं जानता, उसके लिए इस क़िस्म के मौक़े ज़्यादा उलझनों की वजह बनते हैं, क्योंकि वह एक तरफ़ देखता है कि अल्लाह एक हस्ती को नबी और रसूल कहकर उसकी तारीफ़ कर रहा है और दूसरी ओर यह नज़र आता है कि गोया वह बहुत बड़ा जुर्म कर रहा है, तो वह हैरान और परेशान होकर या टेढ़ का शिकार हो कर रह जाता है या

वस्वसों के अंधेरे मैदान में घिर जाता है, इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि नबियों के हालात में हमेशा इस बात को सामने रखा जाए, ताकि सीधे रास्ते से पांव न डगमगा जाएं।

4. इस्लाम की तालीम यह है कि अल्लाह के सच्चे नबी इस्लाम के अपने नबी हैं, चाहे वे किसी दीन से ताल्लुक़ रखते हों और उन पर इसी तरह ईमान लाना ज़रूरी है जिस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना, इसलिए इसका यक़ीन रखते हुए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम नबियों और रसूलों के सरदार और अफ़ज़लुल-बशर हैं, किसी नबी के मुक़ाबले में आपकी ऐसी तारीफ़ और बखान करने से सख़्ती से मना किया गया है जिससे किसी नबी की भी कोई कमज़ोरी सामने आती हो, जैसा कि आम तौर पर मीलाद की पाई जाने वाली मज्लिसों में इस अहम हक़ीक़त से ना आशना मीलाद-ख़्वानों के शेर में यह मना किया गया तरीक़ा पाया जाता है।

नोट—हज़रत यूनुस عليه السلام के क़िस्से से मुताल्लिक़ कुरआनी आयतों की तफ़्सीर में तफ़्सीर लिखने वालों के इख़्तिलाफ़ जिसकी बुनियाद ज़्यादातर लुग़त और ग्रामर पर है, शामिल नहीं किए गए। (मुरत्तिब)

हज़रत ज़ुलकिफ़्ल عليه السلام

कुरआन और ज़ुलकिफ़्ल

कुरआन में ज़ुलकिफ़्ल का ज़िक्र दो सूरतों 'अंबिया' और 'साद' में किया गया है और उनमें भी सिर्फ़ नाम आया है, लेकिन न तफ़्सील, न इज्माल किसी क़िस्म के हालात का कोई तज़्किरा नहीं है।

तर्जुमा—*'और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल सब (राहे हक़ में) सब्र करने वाले थे। हमने उन्हें अपनी रहमत के साए में ले लिया। यक़ीनन वे नेक बन्दों में से थे।* (अल-अंबिया 85-86)

तर्जुमा—*और याद करो इस्माईल, अल-यसअ और ज़ुलकिफ़्ल (के वाक़िए) और वे सब नेक लोगों में से थे।* (साद 48)

हालात

कुरआन की तरह सहीह हदीसों में हज़रत ज़ुलकिफ़्ल के बारे में कोई चीज़ नक़ल नहीं हुई है, इसलिए इससे ज़्यादा नहीं कहा जा सकता कि हज़रत ज़ुलकिफ़्ल अल्लाह के बर्गज़ीदा नबी और पैग़म्बर थे और किसी क़ौम की हिदायत के लिए भेजे गए थे। हज़रत ज़ुलकिफ़्ल से मुताल्लिक़ तौरात भी ख़ामोश है और इस्लामी तारीख़ भी।

सबक़

ऐसा मालूम होता है कि हज़रत ज़ुलकिफ़्ल बनी इसराईल में से हैं और उनके ज़माने में कोई ख़ास वाक़िया ऐसा पेश न आया जो आम तब्लीग़ व हिदायत से ज़्यादा अपने अन्दर इबरत व बसीरत का पहलू रखता हो। इसलिए कुरआन ने उनके नाम को ही सिर्फ़ काफ़ी समझा और हालात व वाक़ियात को नहीं छेड़ा।

हज़रत उज़ैर عليه السلام

कुरआन और हज़रत उज़ैर عليه السلام

कुरआन मजीद में हज़रत उज़ैर عليه السلام का नाम सिर्फ़ एक जगह सूरः तौबा में ज़िक्र किया गया है और उसमें भी सिर्फ़ यही कहा गया है कि यहूदी उज़ैर को अल्लाह का बेटा कहते हैं, जिस तरह नसारा (ईसाई) हज़रत ईसा को अल्लाह का बेटा मानते हैं। (तौरात में हज़रत उज़ैर عليه السلام को 'अज़रा' नबी (EZRA) कहा गया है।)

तर्जुमा–*और यहूदियों ने कहा, उज़ैर अल्लाह का बेटा है और ईसाइयों ने कहा, मसीह अल्लाह का बेटा है। ये उनकी बातें हैं, महज़ उनकी ज़ुबानों से निकाली हुई। उन लोगों ने उन्हीं की सी बात कही जो पहले कुफ़्र का रास्ता अख़्तियार कर चुके हैं। उन पर अल्लाह की लानत, ये किधर भटके जा रहे हैं?*

(तौबा 9/10)

हज़रत उज़ैर की मुबारक ज़िंदगी

हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम की पाक ज़िंदगी से मुताल्लिक़ तफ़्सीली हालात का कुछ ज़्यादा मैटर सीरत और तारीख़ की किताबों में नहीं पाया जाता। तारीख़ लिखने वालों का इत्तिफ़ाक़ है कि वह हज़रत हारून अलै॰ बिन इमरान की नस्ल से हैं और तर्जीह के क़ाबिल क़ौल यही है कि वह बेशक अल्लाह के पैग़म्बर हैं।

हज़रत उज़ैर अलै॰ और अल्लाह का बेटा होने का अक़ीदा

लगभग सातवीं सदी क़ब्ल मसीह के बीच में बख़्ते नम्र ने बनी इसराईल को हरा कर यरूशलम और फ़लस्तीन के तमाम इलाक़ों को बर्बाद कर डाला, तमाम बनी इसराईल को क़ैद करके भेड़-बकरियों की तरह हंकाता हुआ बाबिल ले गया और तौरात के तमाम नुस्ख़ों (प्रतियों) को जलाकर राख कर दिया, यहां तक कि एक नुस्ख़ा भी बनी इसराईलियों के हाथ में न बच सका। उनमें तौरात का कोई हाफ़िज़ भी न था, इसलिए बनी इसराईल तौरात से क़तई तौर पर महरूम हो गए। एक लम्बी मुद्दत की क़ैद के बाद जब उनको रिहाई मिली और वे दोबारा बैतुलमक़्दिस में आबाद हुए तब हज़रत उज़ैर अलै॰ (अज़रा) नबी ने सब इसराईलियों को जमा किया और उनके सामने तौरात को शुरू से आख़िर तक पढ़ा और लिख लिया। इस तरह तौरात लिखने से हज़रत उज़ैर अलै॰ की क़द्र और इज़्ज़त इसराईलियों में इतनी बढ़ गई कि उसने गुमराही की शक्ल अख़्तियार कर ली कि उन्होंने उज़ैर अलै॰ को अल्लाह का बेटा मान लिया और उनकी एक जमाअत ने उसकी एक दलील यह क़ायम की कि हज़रत उज़ैर अलै॰ ने बग़ैर किसी तख़्ती या काग़ज़ के अपने सीने की लौह से उसको (तौरात को) एक-एक हर्फ़ करके उनके सामने नक़ल कर दिया। हज़रत उज़ैर अलै॰ में यह कुदरत जब ही हुई कि वह अल्लाह का बेटा है। (अल-अयाज़ बिल्लाह) 'सुबहान-क हाज़ा बुहतानुन अज़ीम०'

सूरः बक़रः में ज़िक्र किया गया वाक़िया

सूरः बक़रः में एक वाक़िया इस तरह ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—*और क्या तुमने उस आदमी का हाल देखा जिसका एक बस्ती पर गुज़र हुआ, जो अपनी छतों समेत जमीन पर ढेर था, तो वह कहने लगा, इस बस्ती की मौत (तबाही) के बाद अल्लाह तआला किस तरह इसको ज़िंदगी देगा (आबाद करेगा) पस अल्लाह ने उस आदमी पर (उसी जगह) सौ वर्ष तक मौत तारी कर दी और फिर ज़िंदा कर दिया। अल्लाह ने मालूम किया, तुम यहां कितनी मुद्दत पड़े रहे? उसने जवाब दिया, एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा। अल्लाह ने कहा, ऐसा नहीं है, बल्कि तुम सौ वर्ष तक इस हालत में रहे, पस तुम अपने खाने-पीने (की चीज़ों) को देखो कि वह बिगड़ी तक नहीं और फिर अपने गधे को देखो (कि वह गल-सड़ कर हड्डियों का ढांचा रह गया है) और (यह सब कुछ इसलिए हुआ) ताकि हम तुम लोगों के लिए 'निशान' बनाएं और अब तुम देखो कि किस तरह हम हड्डियों को एक दूसरे पर चढ़ाते हैं और आपस में जोड़ते हैं और फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं, फिर जब उसको हमारी क़ुदरत का मुशाहदा हो गया तो उसने कहा, मैं यक़ीन करता हूं कि बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।* (2 : 259)

इन आयतों की तफ़्सीर में यह सवाल पैदा होता है कि वह आदमी कौन था, जिसके साथ यह वाक़िया पेश आया. तो इसके जवाब में मशहूर क़ौल यह है कि यह हज़रत उज़ैर ﷺ थे। जिन रिवायतों में हज़रत उज़ैर ﷺ को ऊपर की बातों का मिस्दाक़ क़रार दिया गया है, उनमें यह भी साफ़ है कि हज़रत उज़ैर ﷺ नबी नहीं 'मर्दे सालेह' (नेक और भले आदमी) थ हालांकि जम्हूर का क़ौल है कि हज़रत उज़ैर ﷺ नबी थे, क्योंकि क़ुरआन ने जिस अन्दाज़ और ढंग से उनका ज़िक्र किया है, वह भी इसी की दलील बनता है।

तवज्जोह के क़ाबिल बात यह है कि सूरः बक़रः की ऊपर की आयत में अल्लाह ने जिस शख़्स को बिला वास्ता ख़िताब किया है और उससे हमकलाम हुआ है, वह उसके 'मर्दे सालेह' नहीं, नबी होने का खुला सुबूत है। इस टकराव को निगाह में रखकर (मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने) तफ़्सीली और तारीख़ी बहस के बाद यह ख़्याल ज़ाहिर किया है कि ऊपर के वाक़िए में जिस आदमी का ज़िक्र है वह हज़रत इर्मियाह (यर्मियाह Jaremiah) नबी थे।

सबक़

इंसान कितनी ही तरक़्क़ी की सीढ़ियां पार कर ले और अल्लाह के साथ उसको ज़्यादा से ज़्यादा कुर्ब हासिल हो जाए, तब भी वह अल्लाह का बन्दा ही रहता है। वह अल्लाह का बेटा नहीं हो सकता। यह इंसान की सबसे बड़ी गुमराही है कि वह जब किसी बुज़ुर्ग इंसान से ऐसी बातें होते देखता है जो आम तौर पर अक़्ल के नज़दीक हैरत में डालने वाली और ताज्जुब में डालने वाली हों तो वह रौब या अक़ीदत की ज़्यादती की वजह से उसके बारे में ग़लत और बातिल अक़ीदा अख़्तियार कर लेता है।

हज़रत जक़रिया عليه السلام

कुरआन और हज़रत ज़करिया عليه السلام

कुरआन में हज़रत ज़करिया का ज़िक्र चार सूरतों, आले इमरान, अनआम, मरयम और अंबिया में आया है, उनमें से सूरः अनआम में सिर्फ़ अंबिया की फ़ेहरिस्त में नाम ज़िक्र किया गया है और बाक़ी तीन सूरतों में मुख़्तसर तज़्किरा नक़ल किया गया है। लेकिन कुरआन में जिस ज़करिया का ज़िक्र हुआ है, यह वह नहीं हैं जिनका ज़िक्र मज्मूआए-तौरेत के सहीफ़ा ज़करिया (ZECHA RIAH) में आया है।

ज़िंदगी के हालात

हज़रत ज़करिया के हालात तफ़्सील से मालूम नहीं हैं, लेकिन जिस क़दर भी कुरआन और सीरत और तारीख़ की भरोसे की रिवायतों से मालूम हो सके हैं, वे यह हैं—

1. हज़रत ज़करिया बनी इसराईल में इज़्ज़तदार काहिन [इस्लाम के पहले दौर में अरब में जो काहिन मुस्तक़्बिल (भविष्य) के हालात बतलाते थे, वे इस मंसब से अलग हैं] भी थे और ऊंचे रुत्बे वाले पैग़म्बर भी। चुनांचे कुरआन ने उनको नबियों की फ़ेहरिस्त में गिनते हुए इर्शाद फ़रमया है—

तर्जुमा—*'और ज़करिया और यह्या और ईसा और इलयास, ये सब नेक लोगों में से हैं।'* (6 : 85)

2. पिछले तज़्किरों में बयान किया गया है कि तमाम नबी अ़लैहिमुस्सलाम, चाहे वे बादशाह हों और हुकूमत वाले ही क्यों न हों, अपनी रोज़ी हाथ की मेहनत से पैदा करते और किसी के कंधे पर बोझ नहीं होते थे। इसीलिए हर नबी ने जब अपनी उम्मत को रुश्द व हिदायत की तब्लीग़ की है, तो साथ ही यह भी एलान कर दिया है—

तर्जुमा—*'मैं तुमसे इस तब्लीग़ पर कोई उजरत नहीं मांगता। मेरा अज्र तो अल्लाह के सिवा और किसी के पास नहीं है।'*

चुनांचे हज़रत ज़करिया भी अपनी रोज़ी के लिए नज्जारी (बढ़ई का काम) का पेशा करते थे, जैसा कि हदीसों में ज़िक्र हुआ है।

3. हज़रत ज़करिया के ख़ानदान में इमरान बिन नाशी और उसकी बीवी हन्ना, दो नेक नफ़्स इंसान थे, मगर औलाद न थी। हन्ना की दुआ से उनके यहां एक लड़की पैदा हुई जिनका नाम उन्होंने मरयम रखा। समझदार हो गईं तो ज़करिया ने उनके लिए हैकल के क़रीब एक हुजरा मख़्सूस कर दिया, जहां वह अल्लाह की इबादत में लगी रहतीं और रात अपनी ख़ाला हज़रत ज़करिया عليه السلام की मोहतरमा बीवी के पास गुज़ारतीं। उस ज़माने में—

तर्जुमा—*'जब ज़करिया मरयम के पास मेहराब (ख़लवत) में दाख़िल होता, तो उसके पास खाने-पीने का सामान रखा देता। ज़करिया ने मालूम किया, मरयम! यह तेरे पास कहां से आता है? मरयम ने कहा, यह अल्लाह के पास से है। वह बिला शुबहा जिसको चाहता है, बेगुमान रोज़ी अ़ता कर देता है।* (3 : 37)

हज़रत ज़करिया عليه السلام के यहां औलाद

ज़करिया عليه السلام के यहां कोई औलाद न थी और उनको ज़्यादा फ़िक्र इस बात की थी कि उनके भाई-बंद बनी इसराईल की ख़िदमत के अह्ल न थे। इसलिए उनके दिल में यह तमन्ना पैदा हुई कि अगर अल्लाह उनके यहाँ कोई नेक और भली तबियत का लड़का पैदा कर दे, तो यह उनके लिए इत्मीनान

की वजह हो जाए, लेकिन वह बड़ी उम्र वाले हो चुके थे और उनकी बीवी भी बांझ थीं। इस हालत के बावजूद अब उन्होंने मरयम पर अल्लाह का लुत्फ़ व करम देखा, तो उम्मीद बंधी और उन्होंने अल्लाह के दरबार में दुआ की—

तर्जुमा—'जब ऐसा हुआ था कि ज़करिया ने चुपके-चुपके अपने पालनहार को पुकारा, उसने अर्ज़ किया, पालनहार! मेरा जिस्म कमज़ोर पड़ गया है, मेरे सर के बाल बिल्कुल सफ़ेद पड़ गए हैं। ऐ अल्लाह! कभी ऐसा नहीं हुआ कि मैंने तेरी जनाब में दुआ की हो और महरूम रहा हूं। मुझे अपने मरने के बाद अपने भाई-बंदों से अंदेशा है (कि न जाने वे क्या ख़राबी फैलाएं) और मेरी बीवी बांझ है, पस तू अपने ख़ास फ़ज़्ल से मुझे एक वारिस बख़्श दे, ऐसा वारिस जो मेरा भी वारिस हो और याक़ूब के ख़ानदान (की बरकतों) का भी, और पालनहार! उसे ऐसा कर दीजियो, जिससे कि (तेरे और तेरे बंदों की नज़र में) पसंदीदा हो। (इस पर हुक्म हुआ) ऐ ज़करिया! हम तुझे एक लड़के की पैदाइश की ख़ुशख़बरी देते हैं। उसका नाम यह्या रखा जाए, इससे पहले हमने किसी के लिए यह नाम नहीं ठहराया है। (ज़करिया ने ताज्जुब से कहा) परवरदिगार! मेरे यहां लड़का कहां से होगा, मेरी बीवी बांझ हो चुकी और मेरा बुढ़ापा दूर तक पहुंच चुका, इर्शाद हुआ, ऐसा ही होगा, तेरा पालनहार फ़रमाता है कि ऐसा करना मेरे लिए मुश्किल नहीं है, मैंने इससे पहले ख़ुद तुझे पैदा किया, हालांकि तेरी हस्ती का नाम व निशान न था। इस पर ज़करिया ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मेरे लिए (इस बारे में) एक निशानी ठहरा दे। फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि सही व तंदुरुस्त होने के बावजूद तू तीन रात लोगों से बात न करेगा। फिर वह हुजरे से निकला और अपने लोगों में आया और उसने उनसे इशारे से कहा, 'सुबह-शाम अल्लाह की पाकी और जलाल की सदाएं बुलंद करते रहो' (19 : 3-11)

और सूरः अंबिया में इर्शाद है—

तर्जुमा—'और (इसी तरह ज़करिया का मामला याद करो) जब उसने अपने परवरदिगार को पुकारा था, ऐ ख़ुदा! मुझे (इस दुनिया में) अकेला न छोड़ (यानी बग़ैर वारिस के न छोड़) और (वैसे तो) तू ही (हम सबका) बेहतर वारिस है, तो देखो हमने उसकी पुकार सुन ली। उसे (एक फ़रज़ंद) यह्या अता

फ़रमाया और उसकी बीवी को उसके लिए तन्दुरुस्त कर दिया। ये तमाम लोग नेकी की राहों में सरगर्म थे (और हमारे फ़ज़्ल से) उम्मीद लगाए हुए और (हमारे जलाल से) डरते हुए दुआएं मांगते थे और हमारे आगे इज्ज़ व नियाज़ से झुके हुए थे। (21 : 89-90)

और सूरः आले इमरान में इर्शाद है—

तर्जुमा—*उसी वक़्त ज़करिया ने अपने पालनहार से दुआ की, कहा, ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको अपनी फ़ज़्ल से पाकीज़ा औलाद अता कर। बेशक तू दुआ का सुननेवाला है, फिर जब ज़करिया हुजरे के अंदर नमाज़ में मश्गूल था तो फ़रिश्तों ने उसको आवाज़ दी कि अल्लाह तुझको यह्या की (पैदाइश की) ख़ुशख़बरी देता है, जो गवाही देगा अल्लाह के एक कलिमा (ईसा) की और सत्वे वाला होगा और औरत के पास तक न जाएगा (या हर क़िस्म की छोटी-बड़ी तलवीस से पाक होगा) और नेकों से (होते हुए) नबी होगा। (ज़करिया) ने कहा, परवरदिगार! मेरे लड़का किस तरह होगा, जबकि मैं बहुत बूढ़ा हो गया और मेरी बीवी बांझ है। फ़रमाया, अल्लाह जो चाहे, इसी तरह करता है। ज़करिया ने कहा, परवरदिगार! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर कीजिए, फ़रमाया, यह निशानी है कि तू तीन दिन लोगों से इशारे के सिवा (ज़ुबान से) बात न करेगा और अपने रब की याद में (शुक्र के ज़ाहिर करने के लिए) बहुत ज़्यादा रह और सुबह-शाम तस्बीह कर।'* (3 : 38-41)

तफ़्सीरी नुक्ते

हज़रत ज़करिया के वाक़िए से मुताल्लिक़ सबसे अह्म नुक्ता ऊपर की आयत में 'यह निशानी है कि तू तीन दिन लोगों से इशारे के सिवा (ज़ुबान से) बात न करेगा' से मुताल्लिक़ है। (हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह०) के मुताबिक़ बात न करने से मतलब यह है कि ज़ुबान में बोलने की ताक़त के पूरी तरह रहने के बावजूद निशानी के तौर पर तीन दिन के लिए अल्लाह की ओर से ज़ुबान में रुकावट पैदा हो गई थी और चूंकि पुराने बुज़ुर्ग उन दिनों में रोज़ा रखने से भी इत्तिफ़ाक़ नहीं करते, इसलिए यह सूरत भी क़ुबूल करने के क़ाबिल नहीं है। रहा इस अर्से के लिए 'गूंगा हो जाना' तो

यह किसी की भी राय नहीं'

ज़करिया ﷺ की वफ़ात

यह्या के वाक़िए की गवाही के तौर पर सीरत व तारीख़ के उलेमा के दर्मियान यह मामला इख़्तिलाफ़ी रहा है कि ज़करिया की वफ़ात तबई मौत से हुई या वह शहीद किए गए और लुत्फ़ यह है कि दोनों की सनद वह्ब बिन मुनब्बः ही पर जाकर पहुंचती है। चुनांचे वह्ब की एक रिवायत में है कि यहूदियों ने जब यह्या को शहीद कर दिया तो फिर ज़करिया की तरफ़ मुतवज्जह हुए कि उनको भी क़त्ल करें, ज़करिया ने जब यह देखा तो वह भागे, ताकि उनके हाथ न लग सकें। सामने एक पेड़ आ गया और वह उसके शिगाफ़ में घुस गए, यहूदी पीछा कर रहे थे, तो उन्होंने जब यह देखा तो उनको निकलने पर मजबूर करने के बजाए पेड़ पर आरा चला दिया। जब आरा ज़करिया पर पहुंचा तो अल्लाह की वह्य आई और ज़करिया को कहा गया कि अगर तुमने कुछ भी आह व ज़ारी की, तो हम यह सब ज़मीन तह व बाला कर देंगे और अगर तुमने सब्र से काम लिया तो हम भी इन यहूदियों पर फ़ौरन अपना ग़ज़ब नाज़िल नहीं करेंगे, चुनांचे ज़करिया ने सब्र से काम लिया और उफ़ तक नहीं की और यहूदियों ने पेड़ के साथ उनके भी दो टुकड़े कर दिए और उन्हीं वह्ब से दूसरी रिवायत यह है कि पेड़ पर आरा चलाने का जो मामला पेश आया, वह शाया ﷺ से मुताल्लिक़ है और ज़करिया ﷺ शहीद नहीं हुए, बल्कि उन्होंने तबई मौत से वफ़ात पाई।

बहरहाल मशहूर क़ौल यही है कि उनको भी यहूदियों ने शहीद कर दिया था। रहा यह मामला कि किस तरह और किस जगह शहीद किया, तो इसके बारे में सिर्फ़ यही कहा जा सकता है कि *'वल्लाहु आलमु बिहक़ीक़तिलहाल* (हक़ीक़ते हाल को अल्लाह ही बेहतर जानता है)

('नतीजा और सबक़' हज़रत यह्या के क़िस्से में देखिए)

हज़रत यह्या عليه السلام

क़ुरआन और यह्या عليه السلام

क़ुरआन मजीद में हज़रत यह्या عليه السلام का ज़िक्र उन्हीं सूरतों में आया है, जिनमें उनके मोहतरम वालिद हज़रत ज़करिया का ज़िक्र है और जिनकी दुआओं का वह हासिल थे।

'ऐ ज़करिया! हम बेशक तुमको बशारत देते हैं एक बेटे की, उसका नाम यह्या होगा कि इससे पहले हमने किसी के लिए यह नाम नहीं ठहराया है।'

(19 : 7)

हज़रत ज़करिया और बेटे की विलादत

हज़रत यह्या से मुताल्लिक़ रिवायतों का हासिल यह है कि वह यानी हज़रत यह्या عليه السلام हज़रत ईसा عليه السلام से छः महीने बड़े थे और यह्या عليه السلام के लिए जब ज़करिया عليه السلام ने दुआ की तो उसमें यह कहा था कि वह 'पाक औलाद' हो, चुनांचे क़ुरआन अज़ीज़ ने बताया कि अल्लाह तआला ने उनकी दुआ मंज़ूर फ़रमा ली, चुनांचे यह्या नेकों के सरदार और ज़ुह्द और तक़्वा में बे-मिसाल थे, न उन्होंने शादी की और न उनके दिल में कभी गुनाह का ख़तरा पैदा हुआ और अपने बुज़ुर्ग बाप की तरह वह भी अल्लाह के बरगज़ीदा नबी थे और अल्लाह तआला ने उनको बचपन ही में इल्म व हिक्मत से भर दिया था और उनकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा काम यह था कि वे ईसा عليه السلام के आने की बशारत देते और उनके आने से पहले रुश्द व हिदायत के लिए ज़मीन हमवार करते थे। चुनांचे मुबारक इर्शाद है—

तर्जुमा—*'पस ज़करिया जिस वक़्त मस्जिद में नमाज़ अदा कर रहा था, तो फ़रिश्ते ने उसको पुकारा। ऐ ज़करिया! अल्लाह तुमको (एक फ़र्ज़ंद) यह्या की ख़ुशख़बरी देता है जो अल्लाह के कलिमा (ईसा) की बशारत देगा और वह अल्लाह की और उसके बंदों की नज़र में बरगज़ीदा और गुनाहों से बेलौस होगा और नेकों में से नबी होगा।*

(3 : 39)

तफ़्सीरी नुक्ते

1. सीरत की किताबों में इस जगह पर 'सैयद' के अलग-अलग मानी नक़ल किए गए हैं। जैसे हलीम (सहनशील), आलिम, फ़क़ीह, दीन व दुनिया का सरदार, शरीफ़ व परहेज़गार, अल्लाह के नज़दीक पसंदीदा और बरगज़ीदा, लेकिन आख़िरा मानी चूंकि ऊपर लिखी तमाम सतरों के मानी को हावी हैं, इसलिए तर्जुमा में उन्हीं को अपनाया गया है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2 : पृ.361)

2. इसी तरह तफ़्सीरे इब्ने कसीर में 'हुसूर' के भी अलग-अलग मानी ज़िक्र किए गए हैं, 'वह आदमी जो औरत के क़रीब तक न गया हो' 'जो हर क़िस्म के गुनाह से बचा हो', और उसके दिल में गुनाह का ख़तरा भी न गुज़रता हो' 'जो आप भी अपने नफ़्स पर पूरी तरह क़ाबू रखता हो और नफ़्सानी ख़्वाहिशों को रोकता हो।'

हमारे ख़्याल में ये सब मानी एक ही हक़ीक़त की अलग-अलग ताबीरें हैं, इसलिए कि डिक्शनरी में 'हस्र' के मानी 'रुकावट' आते हैं और हुसूर इसका मुबालग़ा है, इसलिए इस जगह यह मतलब है कि अल्लाह के नज़दीक जिन मामलों से रुकना ज़रूरी है, उनसे रुकने वाला 'हुसूर' है और इस लिहाज़ से चूंकि यह्या में तमाम सिफ़तें मौजूद हैं, इसलिए सभी मानी उन पर फ़िट बैठते हैं, अलबत्ता ताक़त बाक़ी रहने के बावुजूद उस पर क़ाबू पाने के लिए अल्लाह के बरगज़ीदा इंसानों के हमेशा दो तरीक़े रहे हैं—एक यह कि बिन ब्याही ज़िंदगी अख़्तियार कर के मुजाहदों, रियाज़तों और नफ़्सकुशी के ज़रिए हमेशा के लिए उसको दबा दिया जाए, गोया उसको फ़ना कर दिया जाए। ईसा अलैहि. की मुबारक ज़िंदगी में यही पहलू ज़्यादा नुमायां है और यह्या में अल्लाह तआला ने यह वस्फ़, बग़ैर मुजाहदा व रियाज़त ही के शुरू फ़ितरत में ही रख दिया था।

और दूसरा तरीक़ा यह है कि उसको इस दर्जा क़ाबू में रखा जाए और उस पर इस हद तक ज़ब्त क़ायम किया जाए कि वह कभी एक लम्हे के लिए भी बे-महल हरकत में न आ पाए, बल्कि बे-महल हरकत में आने का ख़तरा तक बाक़ी न रहे, लेकिन इंसानी नस्ल के बाक़ी रखने के लिए सही तरीक़े के

ज़रिए शादीशुदा ज़िंदगी अख़्तियार की जाए।

पहला तरीक़ा अगरचे (यद्यपि) कुछ हालतों में पसंदीदा होता है, मगर इंसानी फ़ितरत और इज्तिमाई ज़िंदगी के लिए ग़ैर-मुनासिब है, पस जिन नबियों ने इस तरीक़े को अपनाया, वह वक़्त की अहम ज़रूरत के हिसाब से था, ख़ासतौर से जबकि उनकी दावत ख़ास-ख़ास क़ौमों में महदूद थी, लेकिन जमाअती ज़िंदगी के लिए फ़ितरत का हक़ीक़ी तक़ाज़ा सिर्फ़ दूसरा तरीक़ा पूरा करता है और इसीलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम और आपका ज़ाती अमल इसी तरीक़े की ताईद करते हैं और जबकि आप तमाम दुनिया के लिए भेजे गए हैं, तो ऐसी शक्ल में आपके लाए हुए 'दीने फ़ितरत' में उसी को बरतरी हासिल होनी चाहिए थी, चुनांचे आपने ज़िंदगी के कई शोबों में इस हक़ीक़त की तरफ़ तवज्जोह दिलाई है कि दुनिया के मामलों से अलग होकर पहाड़ों के ग़ारों और बयाबानों में ज़िंदगी गुज़ारने वाले आदमी के मुक़ाबले में उस आदमी का रुत्बा अल्लाह के यहां ज़्यादा बुलंद है जो दुनिया की ज़िंदगी के मामलों में क़ैद रहकर एक लम्हे के लिए भी अल्लाह की नाफ़रमानी न करे और क़दम-क़दम पर उसके हुक्मों को नज़रों के सामने रखे।

तर्जुमा– *'ऐ यह्या! (ख़ुदा का हुक्म हुआ, क्योंकि वह ख़ुशख़बरी के मुताबिक़ पैदा हुआ और बढ़ा) अल्लाह की किताब (तौरात) के पीछे मज़बूती के साथ लग जा, चुनांचे वह अभी लड़का ही था कि हमने उसे इल्म व फ़ज़ीलत बख़्शी, साथ ही अपने ख़ास फ़ज़्ल से दिल की नर्मी और नफ़्स की पाकी अता फ़रमाई। वह परहेज़गार और मां-बाप का ख़िदमत गुज़ार था, सख़्तगीर और नाफ़रमान न था। उस पर सलाम हो (यानी सलामती हो) जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरा और जिस दिन फिर ज़िंदा किया जाएगा।*

(19 : 12-15)

3. बहस में आई आयतों में 'व आतै नाहुल हुक-म सबीया' के यही मानी हैं जैसा कि तारीख़ इब्ने कसीर में अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने मुअम्मर से नक़ल किया है और जिस आदमी ने उससे यह मुराद ली है कि 'यह्या बचपन ही में नबी बना दिए गए थे' सही नहीं है, इसलिए नुबूवत के मंसब जैसा ऊंचा

और अहम मंसब किसी को भी बचपन ही में मिल जाना न अक़्ल के नज़दीक सही है और न नक़्ल से साबित है।

4. अल्लाह तआला की ओर से हज़रत यह्या को इन आयतों में जो सलामती की दुआ दी गई है, वह तीन वक़्तों के साथ ख़ास है। सच तो यह है कि इंसान के लिए यही तीन वक़्त सबसे ज़्यादा नाज़ुक और अहम हैं—पैदाइश का वक़्त, जिसमें रहमे मादर (गर्भाशय) से जुदा होकर दुनिया में आता है। और वक़्ते मौत कि 'जिसमें दुनिया से विदा होकर आलमे बरज़ख़ में पहुंचता है और 'हश्र व नश्र का वक़्त' कि 'जिसमें क़ब्र (बरज़ख़) से आख़िरत की दुनिया में आमाल की जज़ा व सज़ा के लिए पेश होता है', इसलिए जिस आदमी को अल्लाह की ओर से इन तीन वक़्तों के लिए सलामती की बशारत मिल गई उसको दोनों दुनिया की सआदत का कुल भंडार मिल गया। *'फ़तूबा लहू व हुस-न मआब'*

तर्जुमा— *'ख़ुशहाली और नेक अंजामी है उसके लिए।'* (13 : 29)

दावत व तब्लीग़

सही हदीसों में ज़िक्र किया गया है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

'अल्लाह तआला ने यह्या बिन ज़करिया को पांच बातों का ख़ुसूसियत के साथ हुक्म फ़रमाया कि वे ख़ुद भी इन पर अमल करें और बनी इसराईल को भी इन की हिदायत फ़रमाएं। चुनांचे उन्होंने बनी इसराईल को बैतुल-मक़्दिस में जमा किया और जब मस्जिद भर गई तो इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझको पांच बातों का हुक्म दिया है कि मैं ख़ुद भी उन पर अमल करूं और तुमको भी अमल के लिए हिदायत करूं और वे पांच हुक्म ये हैं—

'पहला हुक्म यह है कि अल्लाह के सिवा किसी की परस्तिश न करो और न किसी को उसका शरीक ठहराओ, क्योंकि मुश्रिक की मिसाल उस ग़ुलाम की सी है जिसको उसके मालिक ने अपने रुपए से ख़रीदा, मगर ग़ुलाम ने यह तरीक़ा अख़्तियार किया कि जो कुछ कमाता है, वह मालिक के सिवा

एक दूसरे आदमी को दे देता है, तो अब बताओ कि तुममें से कोई आदमी यह पसंद करेगा कि उसका ग़ुलाम ऐसा हो? इसलिए समझ लो कि जब अल्लाह ही ने तुमको पैदा किया और वही तुमको रोज़ी देता है तो तुम भी सिर्फ़ उसी की परस्तिश करो और उसका किसी को शरीक न ठहराओ।'

'दूसरा हुक्म यह है कि तुम दिल लगा कर अल्लाह से डरते हुए नमाज़ पढ़ो, क्योंकि जब तक तुम नमाज़ में किसी दूसरी तरफ़ मुतवज्जह न होगे, तो अल्लाह बराबर तुम्हारी तरफ़ रज़ा व रहमत के साथ मुतवज्जह रहेगा।'

'तीसरा हुक्म यह है कि रोज़ा रखो। इसलिए कि रोज़ेदार की मिसाल उस आदमी की सी है जो एक जमाअत में बैठा हो और उसकी मुश्क की थैली हो। चुनांचे मुश्क उसको भी और उसके साथियों को भी अपनी ख़ुश्बू से मस्त करता रहेगा और रोज़ेदार के मुंह की बू का ख़्याल न करो इसलिए कि अल्लाह के नज़दीक रोज़ेदार के मुंह की बू (जो ख़ाली मेदे से उठती है) मुश्क की ख़ुश्बू से ज़्यादा पाक है।'

'चौथा हुक्म यह है कि माल में से सदक़ा निकाला करो, क्योंकि सदक़ा करने वाले की मिसाल उस आदमी की सी है जिसको उसके दुश्मनों ने अचानक आ पकड़ा हो और उसके हाथों को गरदन से बांध कर वे मक़्तल की तरफ़ ले चले हों और इस नाउम्मीदी की हालत में वह यह कहे, क्या यह मुम्किन है कि मैं माल देकर अपनी जान छुड़ा लूं और 'हां' में जवाब पाकर अपनी जान के बदले सब धन-दौलत क़ुरबान कर दे।'

'पांचवां हुक्म यह है कि दिन-रात में कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करते रहा करो, क्योंकि ऐसे आदमी की मिसाल उस आदमी की-सी है जो दुश्मन से भाग रहा हो और दुश्मन तेज़ी के साथ उसका पीछा कर रहा हो और भागकर वह किसी मज़बूत क़िले में पनाह हासिल करके दुश्मन से बच जाए। बेशक इंसान के दुश्मन 'शैतान' के मुक़ाबले में अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल हो जाना मज़बूत क़िले में महफ़ूज़ हो जाना है।'

इसके बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा की जानिब मुतवज्जह होकर इर्शाद फ़रमाया—

'मैं भी तुमको ऐसी पांच बातों का हुक्म करता हूं जिनका अल्लाह ने

मुझको हुक्म दिया है : यानी 'जमाअ़त का लाज़िम करना', 'सुनना', 'इताअ़त करना', 'हिजरत' और 'अल्लाह के रास्ते में जिहाद'। पस जो आदमी 'जमाअ़त' से एक बालिश्त बाहर निकल गया, उसने बेशक अपनी गरदन से इस्लाम की रस्सी को निकाल दिया, मगर यह कि जमाअ़त का लाज़िम होना अख़्तियार करे और जिस आदमी ने जाहिलियत के दौर की बातों की तरफ़ दावत दी, तो उसने जहन्नम को ठिकाना बनाया। हारिस अशअ़री रह० कहते हैं, कहने वाले ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! चाहे वह आदमी नमाज़ और रोज़े का पाबन्द ही हो, तब भी जहन्नम का हक़दार है? फ़रमाया, हां अगरचे, नमाज़ व रोज़े का पाबन्द भी हो, और यह समझता हो कि मैं मुसलमान हूं, तब भी जहन्नम का मुस्तहिक़ है।'

(अल-बिदाया वन्निहाया, भाग 2, पृ. 52)

इब्ने अ़साकिर ने वह्ब बिन मुनब्बह से कुछ रिवायतें नक़ल की हैं जिनका हासिल यह है कि यह्या ؑ पर अल्लाह का डर इस तरह छाया रहता था कि वे अक्सर रोते रहते थे, यहां तक कि उनके गालों पर आंसुओं के निशान पड़ गए थे, चुनांचे एक बार उनके बाप ज़करिया ने जब उनको जंगल में तलाश करके पा लिया, तो उनसे फ़रमाया, बेटा! हम तो तेरी याद में परेशान तुझको तलाश कर रहे हैं और तू यहां आह व गिरया में लगा है?' तो यह्या ؑ ने जवाब दिया, ऐ बाप! तुमने मुझे बताया है कि जन्नत और जहन्नम के दर्मियान एक ऐसा लम्बा-चौड़ा मैदान है जो अल्लाह के डर से आंसू बहाए बग़ैर तै नहीं होता और जन्नत तक पहुंच नहीं होती। यह सुनकर हज़रत ज़करिया भी रोने लगे।'

(अल-बिदाया वन्निहाया)

शहादत का वाक़िया

यह्या ؑ ने जब अल्लाह के दीन की मुनादी शुरू कर दी और लोगों को यह बताने लगे कि मुझसे बढ़कर एक और अल्लाह का पैग़म्बर आने वाला है तो यहूदियों को उनके साथ दुश्मनी और अ़दावत हो गई और वे उनकी बरगज़ीदगी, क़ुबूलियत और मुनादी को बरदाश्त न कर सके और एक दिन उनके पास इकट्ठा होकर आए और मालूम किया, क्या तू मसीह है? उसने

कहा, नहीं, तब उन्होंने कहा, क्या तू वह नबी है? उसने कहा, नहीं। क्या तू एलिया नबी है! उसने कहा, नहीं, तब उन सबने कहा कि फिर तू कौन हैं, जो इस तरह मुनादी करता और हमको दावत देता है? यह्या ﷺ ने जवाब दिया, मैं जंगल में पुकरने वाले की एक आवाज़ हूं जो हक़ के लिए बुलन्द की गई है, यह सुनकर यहूदी भड़क उठे और आख़िरकार उनको शहीद कर डाला।

मक़्तल (क़त्लगाह)

इस बारे में कोई फ़ैसला कर देने वाली गवाही मौजूद नहीं है कि यह्या का मक़्तल कौन-सी जगह है? लेकिन यह मानी हुई बातों में से है कि यहूदियों ने उनको शहीद कर दिया। कुरआन में यहूदियों के हाथों नबियों और पैग़म्बरों के क़त्ल का ज़िक्र कई जगहों पर आया है।

शबे मेराज और यह्या ﷺ

किताबुल अंबिया में बुख़ारी ﷺ ने यह्या रह० के ज़िक्र में सिर्फ़ इसरा की हदीस के उस टुकड़े को बयान किया है जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दूसरे आसमान पर उनके साथ मुलाक़ात करना ज़िक्र किया गया है। रिवायत में है—

'पस जब मैं (दूसरे आसमान पर) पहुंचा तो देखा कि यह्या ﷺ और ईसा ﷺ मौजूद हैं और ये दोनों ख़लेरे भाई हैं। जिब्रील ﷺ ने कहा, यह यह्या व ईसा ﷺ हैं, इनको सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया, तो उन दोनों ने सलाम का जवाब दिया और फिर दोनों ने कहा, आपका आना मुबारक हो, ऐ हमारे नेक भाई और नेक पैग़म्बर।'

नतीजा और सबक़

1. दुनिया में उस आदमी से ज़्यादा बद-बख़्त और ज़ालिम दूसरा कोई नहीं हो सकता जो ऐसी मुक़द्दस हस्ती को क़त्ल कर दे, जो न उसको सताती है और न उसके माल व दौलत पर हाथ डालती है, बल्कि इसके ख़िलाफ़ बग़ैर किसी उजरत और मुआवज़े के उसकी ज़िंदगी की इस्लाह के लिए हर क़िस्म

की ख़िदमत अंजाम देती और अख़्लाक़, आमाल और अक़ाइद की ऐसी तालीम बख़्शती है, जो उसको दुनिया और आख़िरत दोनों की फ़लाह व सआदत के लिए काफ़ी हो।

2. इंसान को अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से कभी नाउम्मीद नहीं होना चाहिए और अगर कुछ हालात में ख़ुलूस के साथ दुआएं करने के बावजूद भी मक़्सद हासिल न हो, तो इसके यह मानी हरगिज़ नहीं है कि उस आदमी से अल्लाह की मेहरबान निगाह ने रुख़ फेर लिया है, नहीं, बल्कि 'हकीमे मुतलक़' की आम और मुकम्मल हिक्मत की नज़र में कभी इंसान की तलब की हुई चीज़ माल और अंजाम के लिहाज़ से उसके लिए फ़ायदेमंद होने की जगह नुक़्सानदेह होती है, जिसका ख़ुद उसको इसलिए इल्म नहीं होता कि उसका इल्म एक हद के अन्दर है और कभी ऐसा होता है कि चाहे शख़्सी मस्लहतों से ऊपर होकर इज्तिमाई मस्लहतों की फ़लाह व कामियाबी के लिए 'देर' चाहता है या इससे बेहतर मक़्सद के लिए उसको क़ुरबान कर दिया जाता है।

बहरहाल 'क़ुनूत' और 'मायूसी' अल्लाह के दरबार में ख़राब और नापसन्दीदा बात है।

तर्जुमा—*अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो, इसलिए कि अल्लाह की रहमत से सिर्फ़ वही लोग नाउम्मीद होते हैं, जो इंकारी हैं।'* (12 : 87)

बाग़ वाले

क़ुरआन की सूरः अल-क़लम में अल्लाह तआला ने मक्का के काफ़िरों के हस्बे हाल एक मिसाल बयान फ़रमाई है, जो इस तरह है—

तर्जुमा— *'बेशक हमने इन (मक्का के काफ़िरों) को इसी तरह आज़माया है जिस तरह बाग़ वालों को आज़माया, जबकि उन्होंने यह क़सम खा ली कि हम सुबह होते इन (के फलों) को काट लेंगे और वे 'इन्शाअल्लाह' भी न कहते थे। पस वे अभी सो ही रहे थे कि (उनके बाग़ पर) तेरे परवरदिगार की तरफ़ से फिरने वाला फिर गया, (यानी) अल्लाह के अ़ज़ाब से वह बाग़ बर्बाद हो गया) पस सुबह को ऐसा हो गया, गोया जड़ से काट कर फेंक दिया गया है। (सुबह हुई) तो उन्होंने एक दूसरे को पुकारा कि अगर खेती काटना चाहते हो*

तो सवेरे चले चलो और वे चलते-चलते आपस में चुपके-चुपके बातें करते जाते थे (कि जल्दी करो), ऐसा न हो कि काटते वक़्त तुमको फ़क़ीर आ घेरें और अपने बुख़्ल की वजह से बहुत सवेरे (बाग़-खेत) पर पहुंचे। अन्दाज़ा लगाकर (कि उस वक़्त तक फ़क़ीर न पहुंच सकेंगे), पस जब उसको (इस हाल में) देखा तो कहने लगे, हम राह भूल गए हैं। (यह वह जगह नहीं है, मगर जब ग़ौर से देखा, तो कहने लगे) बल्कि हम (बाग़ के नफ़ा से) महरूम रह गए। उनमें से एक भले आदमी ने कहा, क्या मैंने तुमसे पहले ही न कहा था कि (अल्लाह की इस नेमत) पर क्यों अल्लाह की पाकी बयान नहीं करते? (अब बुरे अंजाम के बाद) कहने लगे, हमारे परवरदिगार के लिए पाकी है। बेशक हमने ख़ुद ही अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया और आपस में एक दूसरे को मलामत करने लगे (यह कि तूने ही हमको पहले से क्यों न समझाया) और कहने लगे, हाय बदक़िस्मती, बेशक हम सरकश थे। जल्द उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार हमको इससे बेहतर बदल अता फ़रमाए, बेशक (अब) हम अपने परवरदिगार ही की तरफ़ मुतवज्जह हैं। (ऐ मक्का वालो! अल्लाह का अज़ाब इसी तरह (अचानक) आ जाता है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही हौलनाक है, काश! कि वे जान लेते। (68 : 17-23)

वाक़िए से मुताल्लिक़ क़ौल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह मक्का के काफ़िरों के हालात के मुताबिक़ क़ुरआन ने एक मिसाल दी है, कोई वाक़िया नहीं है। सईद बिन जुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह वाक़िया है, जो यमन की एक बस्ती ज़रवान में पेश आया जो कि सुनआ से छः मील पर वाक़े थी।

यह मिसाल हो या वाक़िया, क़ुरआन ने उसके बयान में याददेहानी और डरावे का जो पहलू रखा है, वह बहरहाल अपनी जगह है। इसलिए कि इन आयतों से पहले मक्का के क़ुरैश की नाफ़रमानी और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने से इंकार और ढिठाई का ज़िक्र करते हुए, ख़ास तौर पर उनके एक सरदार वलीद बिन मुग़ीरह की बद-आमालियों का तज़्करा हो रहा है। अब उनको एक मिसाल देकर या

वाक़िया सुनाकर यह बताया जा रहा है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और अल्लाह की नेमत (क़ुरआन) के ख़िलाफ़ आपस में सरगोशियां करने, क़ुरआन की अ़ता की हुई तालीम से मुताल्लिक़ अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ से बचकर अपनी ताक़त व क़ूवत पर इतराते और घमंड करते, मासूम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और मुसलमानों को हक़ारत की नज़र से देखने का अंजाम वही होने वाला है जो 'बाग़ वालों' का हुआ और यह इसलिए कि एक तो अल्लाह की तरफ़ से इम्हाल के क़ानून (मोहलत देने का क़ानून) घमंड करने वालों को ढील देता है और हालत में सुधार लाने के लिए मौक़ा जुटाता है, मगर जब कोई क़ौम उससे फ़ायदा नहीं उठाती, बल्कि अल्लाह की उस मोहलत को अपनी बातिल परस्ती के लिए सच्चाई की दलील ठहरा कर सच्चों को और उसकी सच्चाई को हक़ीर व ज़लील करने पर तैयार हो जाती है, तो फिर पकड़ का क़ानून अपना सख़्त पंजा उन पर जमा देता है और उनको हलाक व बर्बाद करके कायनात की इबरत व नसीहत का सामान जुटा देता है, बल्कि न उस वक़्त हसरत काम आती है, न नदामत और न उस घड़ी ईमान लाना फ़ायदेमंद होता है और न अल्लाह की इताअ़त व फ़रमांबरदारी का एलान।

सबक़

अल्लाह तआ़ला ने इस कायनात में इंसान को इज्तिमाई ज़िंदगी जीने के लिए पैदा किया है और इंसानी ज़रूरतों को एक दूसरे से इस तरह जोड़ दिया है कि यह कारख़ाना आपसी मेल-मदद के बग़ैर नहीं चल सकता और चूंकि इज्तिमाई ज़िंदगी फ़र्द ही से बनती और संवरती है, इसलिए बहुत ज़रूरी है कि उनके आगे बढ़ने और ज़िंदगी को बाक़ी रखने का ऐसा क़ानून मुक़र्रर किया जाए जिसकी बदौलत इंसानों के दर्मियान भाईचारा और रहम व मुरव्वत क़ायम हो सके और किसी वक़्त भी हसद और ज़िद न पैदा होने पाए, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उस निज़ाम को पूरा करने के लिए मआशी ज़िंदगी से मुताल्लिक़ दो हक़ मुक़र्रर फ़रमाए—एक मईशत का हक़ और दूसरा मईशत के दर्जे।

मईशत के हक़ का क़ानून यह है कि इस दुनिया में एक जानदार भी ऐसा नहीं रहना चाहिए जो मआश के हक़ से महरूम हो। यह हर आदमी का अपना हक़ है कि वह ज़िंदा रहे। इसलिए मईशत के हक़ में यहां सब बराबर हैं और किसी को किसी पर बुलन्दी और बरतरी हासिल नहीं।

दूसरी मईशत के दर्जों का मसला है यानी यह ज़रूरी है कि मआशी ज़िंदगी के लिए सबको मिले, मगर यह ज़रूरी नहीं कि सबको बराबर मिले।

तर्जुमा–*'और अल्लाह तआला ने तुमको कुछ को कुछ पर रोज़ी में फ़ज़ीलत दी है।'* (16 : 71)

लेकिन मआश के दर्जों में इस कमी-बेशी और बरतरी का यह मतलब नहीं कि उसने जो कुछ कमाया है, वह सब उसका इंफ़िरादी हक़ है, नहीं, बल्कि जो जितना ज़्यादा कमाएगा उतना ही उसकी दौलत में इज्तिमाई हक़ (अल्लाह का हक़ और बन्दों का हक़) ज़्यादा होगा। जो इंफ़िरादी मिल्क समझ कर इन हक़ों का इंकार करेगा, उसका अंजाम भी बख़ैर न होगा और वह अल्लाह के ग़ज़ब का हक़दार क़रार पाएगा।

मोमिन व काफ़िर

मोमिन और काफ़िर का वाक़िया

अल्लाह तआला ने सूरः कह्फ़ में अस्हाबे कह्फ़ के वाक़िए के बाद एक और वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाया है। यह वाक़िया दो इंसानों के दर्मियान मुनाज़रे जैसी गुफ़्तगू की शक्ल में हुआ है और साथ ही इसका नतीजा और फल भी ज़िक्र किया गया है यानी एक का तरीक़ा-ए-ज़िंदगी माल के एतबार से कामियाब रहा और दूसरे को नदामत व हसरत का मुंह देखना पड़ा। क़ुरआन ने जिस अन्दाज़ में इस वाक़िए का ज़िक्र किया है, हदीस और सीरत और तारीख़ की किताबों में इससे ज़्यादा कुछ नहीं, इसलिए उसी की तरफ़ लौटना चाहिए–

तर्जुमा–*'और (ऐ पैग़म्बर!) लोगों को एक मिसाल सुना दो, दो आदमी थे, उनमें से एक के लिए हमने अंगूर को दो बाग़ मुहय्या कर दिए, गिर्दागिर्द*

खजूर के पेड़ों का घेरा था, बीच की ज़मीन में खेती थी, पस ऐसा हुआ दोनों बाग़ फलों से लद गए और पैदावार में किसी तरह की भी कमी न हुई। हमने उनके बीच (सिंचाई के लिए) एक नदी जारी कर दी थी। नतीजा यह निकला कि वह आदमी दौलतमंद हो गया, तब एक दिन (घमंड में आकर) अपने दोस्त से (जिसे खुशहालियां मयस्सर न थीं) बातें करते-करते बोल उठा, देखो, मैं तुमसे ज़्यादा मालदार हूं और मेरा जत्था भी बड़ा ताक़तवर जत्था है, फिर वह (ये बातें करते हुए) अपने बाग़ में गया और वह अपने हाथों अपना नुक़्सान कर रहा था। उसने कहा, मैं नहीं सझता कि ऐसा शादाब बाग़ कभी वीरान हो सकता है। मुझे उम्मीद नहीं कि क़ियामत की घड़ी बरपा होगी और अगर ऐसा हुआ भी कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया गया तो (मेरे लिए क्या खटका है) मुझे ज़रूर (वहां भी) इससे बेहतर ठिकाना मिलेगा। यह सुनकर उसके दोस्त ने कहा और आपस में बात-चीत का सिलसिला जारी था, क्या तुम उस हस्ती का इंकार करते हो जिसने तुम्हें पहले मिट्टी से और फिर नुत्फ़े से पैदा किया और फिर आदमी बनाकर सामने ला दिया, लेकिन मैं तो यक़ीन रखता हूं कि वही अल्लाह मेरा परवरदिगार है और मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं करता और फिर जब तुम अपने बाग़ में आए (और उसकी शादाबियां देखीं) तो क्यों तुमने यह न कहा कि वही होता है जो अल्लाह चाहता है उसकी मदद के बग़ैर कोई कुछ नहीं कर सकता? और यह जो तुम्हें दिखाई दे रहा है कि मैं तुमसे माल और दौलत कमतर रखता हूं, तो (उस पर घमंड न कर)। क्या अजब है मेरा परवरदिगार मुझे तुम्हारे इस बाग़ से भी बेहतर बाग़ (जन्नत) दे दे और तुम्हारे बाग़ पर आसमान से ऐसी अन्दाज़ा की हुई बात उतार दे कि वह चटयल मैदान होकर रह जाए या फिर बर्बादी की कोई और शक्ल निकल आए। जैसे उसकी नहर का पानी बिल्कुल नीचे उतर जाए और तुम किसी तरह भी उस तक न पहुंच सको और फिर (देखो) ऐसा ही हुआ कि उसकी दौलत (बर्बादी) के घेरे में आ गई। वह हाथ मल-मल कर अफ़सोस करने लगा कि इन बाग़ों की दुरुस्तगी पर मैंने क्या कुछ ख़र्च किया था (वह सब बर्बाद हो गया) और बाग़ों का हाल यह हुआ कि टट्टियां गिर कर के ज़मीन के बराबर हो गईं। अब वह कहता है, ऐ काश! मैं

अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक न करता और देखो कोई जत्था न हुआ कि अल्लाह के सिवा उसकी मदद करता और न ख़ुद उसने यह ताक़त पाई कि बर्बादी से जीत सकता, यहां से मालूम हो गया कि हक़ीक़त में सारा अख़्तियार अल्लाह ही के लिए है, वही है, जो बेहतर सवाब देने वाला है और उसी के साथ बेहतर अंजाम है।' (18 : 32-44)

वाक़िए की तश्रीह (व्याख्या)

इन आयतों से पहले यह ज़िक्र हो रहा है कि जो लोग इंकारी हैं, उनके लिए जहन्नम की आग है और जो ईमान वाले हैं, उनके लिए हर क़िस्म की ख़ुश ऐशियां हैं और हमेशा का बाग़ (जन्नत) है। इसके बाद बहस में आई आयत में यह कहा जा सकता है कि जो इंकारी हैं, उनके लिए सिर्फ़ आख़िरत ही की महरूमियां नहीं हैं, बल्कि वे इस दुनिया में भी बहुत जल्द नाकामियों और बदबख़्तियों से दोचार होने वाले हैं। उनका यह घमंड कि उनको हर क़िस्म का आराम और ख़ुशऐशी हासिल है और वे माल व दौलत के मालिक हैं और उनका जत्था भी बहुत ताक़तवर है, बहुत जल्द ख़ाक में मिल जाने वाला है और ईमान वाले अपनी मौजूदा तंगहाली पर बददिल न हों कि वक़्त आ पहुंचा है कि उनकी यह बेचारगी और बेबसी हर क़िस्म की इज़्ज़त व ताक़त से बदल जाएगी। साथ ही यह कि दुनिया की ख़ुशऐशी भी चलती फिरती छांव है, उस पर भरोसा बेकार है। वह जब मिटने पर आती है तो लम्हों की भी देर नहीं लगती और दुनिया की कोई भी ताक़त उसको नहीं बचा सकती।

अजब नादां है जिनको है उज्बे ताजे सुलतानी
फ़लक वाले हुमा को पल में सौंपे है मगस रानी।

बहरहाल यह वाक़िया हो या मिसाल, याददेहानी कराने और डराने के जिस मक़्सद की ख़ातिर बयान की गई है, उसे देखते हुए मक्का के मुश्रिकों और मुसलमानों के आपस में मुक़ाबले का बड़ा ही जामेअ़ और हर पहलू से मुकम्मल नक़्शा है और मुसलमानों के हक़ में नासाज़गार हालात के वक़्त उनकी कामियाबी और मुश्रिकों की नाकामी के उस अंजाम की ख़बर दी है

जो कुछ दिनों बाद होने वाला था।

सबक़ और नतीजे

1. दुनिया की नेमतें दो घड़ी की धूप और चार दिन की चांदनी है। कमज़ोर और मिट जाने वाली, पस अक़्लमंद वह है जो इन पर घमंड न करे और इनके बलबूते पर अल्लाह की नाफ़रमानी पर आमादा न हो जाए और तारीख़ के उन पन्नों को निगाह में रखे, जिनकी गोद में फ़िरऔन, नमरूद, समूद और आद की जाबिराना ताक़तों का अंजाम आज तक महफ़ूज़ है।

तर्जुमा—*'ज़मीन की सैर करो और फिर देखो कि नाफ़रमानों का अंजाम क्या हुआ।'* (27-69)

2. सच्ची इज़्ज़त अल्लाह पर ईमान और भले अ़मल से बनती है, दौलत व सरवत और सतवत व दुनिया की हश्मत से हासिल नहीं होती। मक्का के क़ुरैश को सरवत व सतवत दोनों हासिल थीं, मगर बद्र के मैदान में उनका बुरा अंजाम और दीन व दुनिया की उनकी रुसवाई को कोई रोक न सका। मुसलमान दुनिया के हर क़िस्म के ऐश के सामान से महरूम थे, मगर अल्लाह पर ईमान और नेक अ़मल ने जब उनको दीनी और दुनिया की इज़्ज़त व हश्मत अ़ता की, तो उसमें कोई रुकावट न बन सका।

तर्जुमा—*हक़ीक़ी इज़्ज़त अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों के लिए ही है, मगर मुनाफ़िक़ इस हक़ीक़त को नहीं जानते।* (63-8)

3. मोमिन की शान यह है कि अगर उसको अल्लाह ने दुनिया की नेमतों से नवाज़ा है तो घमंड और तकब्बुर के बजाए अल्लाह के दरबार में माथा झुका कर नेमत का एतराफ़ करे और दिल व ज़ुबान दोनों से इक़रार करे कि अल्लाह अगर तौबा न अ़ता फ़रमाता तो उनका हासिल करना मेरी अपनी क़ूवत व ताक़त से बाहर था। सब तेरी ही अ़ता व बख़्शिश का सदक़ा है—

व लौला इज़्र दख़ल-त जन्न-त-क क़ुल-त माशाअल्लाह, व ला क़ूव-त इल्ला बिल्लाहि०

जन्नत के छिपे ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना यह है कि बन्दा माने कि भलाई करने की ताक़त और बुराई से बचने की ताक़त अल्लाह की मदद के

बिना नामुम्किन है, यानी जिस आदमी ने ज़ुबान से इसका इक़रार किया और दिल में इस हक़ीक़त को बिठा लिया, उसने गोया जन्नत के ख़ज़ाने की कुंजी हासिल कर ली।

4. सईद (भाग्यवान) वह है जो अंजाम से पहले अंजाम की हक़ीक़त को सोच ले और अंजाम यह हो कि अबदी व सरमदी सआदत पाए और शक़ी व बदबख़्त वह है जो अंजाम पर ग़ौर किए बग़ैर एक तो घमंड और ग़ुरूर ज़ाहिर करे और इस बुरे अंजाम को देखने के बाद नदामत (शार्मिन्दगी) और हसरत का इज़्हार करे और यह नदामत व हसरत उस वक़्त कुछ काम न आए। चुनांचे इस वाक़िए या मिसाल में भी इन्कार करने वाले को वही शक़ावत (दुर्भाग्य) पेश आई और यही बुरा अंजाम फ़िरऔन को भी देखना पड़ा कि वक़्त गुज़रने पर उसने वही कहा कि अगर अज़ाब को देखने से पहले मूसा की नसीहत मान लेता तो इस दर्दनाक अज़ाब की भेंट न चढ़ता।

क़रिया वाले या अस्हाबे यासीन

क़रिया वाले और क़ुरआन

क़ुरआन में एक बहुत ही मुख़्तसर वाक़िया सूरः यासीन में ज़िक्र किया गया है, इसको सूरः की निस्बत से 'अस्हाबे यासीन का वाक़िया' और आयतों के बयान के तरीक़े के मुताबिक़ 'अस्हाबे क़रिया का वाक़िया' कहते हैं। अस्हाबे क़रिया अगरचे मुश्रिक व बुतपरस्त थे, मगर उनके यहां 'रहमान' का विचार पाया जाता था। क्या अजब है कि आयत के मुताबिक़ 'कोई क़ौम ऐसी नहीं जहां हमारा डराने वाला न पहुंचा हो'— वे इस दावत से पहले अर्से तक किसी सच्चे पैग़म्बर की पैरवी करने वाले रहे हों और धीरे-धीरे एक ज़माने के बाद शिर्क में पड़ गए हों। क़ुरआन पाक में यह वाक़िया इस तरह ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा–'*(ऐ पैग़म्बर!) इन (मक्के के मुश्रिकों से) बस्ती वालों का वाक़िया बयान करो कि जब उनके पास अल्लाह के रसूल आए, जब यह शक्ल*

बनी कि हम ने एक तो उनके पास दो भेजे थे, तो उन्होंने उनको झुठलाया, जब हमने उन दोनों को तीसरे के ज़रिए से ताक़त व इज़्ज़त अ़ता की, तब इन तीनों ने बस्ती वालों से कहा, हम यक़ीन दिलाते हैं कि हमको अल्लाह ने तुम्हारे पास भेजा है। बस्ती वालों ने कहा, इस बात के अलावा कि तुम भी हमारी तरह एक इंसान हो, कौन-सी ऐसी ख़ूबी है कि तुम अल्लाह के रसूल हो और रहमान ने तुम पर कुछ भी नाज़िल नहीं किया, इसलिए तुम साफ़ झूठे हो। उन तीनों ने कहा, हमारा परवरदिगार ख़ूब जानता है कि हम यक़ीनी तौर पर अल्लाह के भेजे हुए हैं और हमारे ज़िम्मे सिर्फ़ वाज़ेह और साफ़ तौर पर अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा देना है। (ज़बरदस्ती क़ुबूल करा देना हमारा काम नहीं है।) बस्ती वाले कहने लगे हम तो तुमको मनहूस समझते हैं, पर अगर तुम इस (तब्लीग़) से बाज़ न आए तो हम तुमको पत्थर मार-मार कर हलाक कर देंगे और सख़्त क़िस्म का अ़ज़ाब चखाएंगे।

उन्होंने कहा, तुम्हारी नहूसत तो ख़ुद तुम्हारे साथ लगी हुई है कि तुमको जब नसीहत की जाती है तो उसको नहूसत कहते हो, बल्कि तुम तो हद से गुज़र रहे हो और शहर के आख़िरी किनारे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया और उससे कहा, 'ऐ क़ौम! तुम अल्लाह के रसूलों की पैरवी करो उनकी पैरवी करो, जो तुमसे अपनी नेक हिदायत पर कोई बदला तलब नहीं करते और मुझे क्या बात रोक बनी हुई है कि मैं सिर्फ़ अपने पैदा करने वाली की ही परस्तिश न करूं। उसकी परस्तिश, जिसकी तरफ़ हम तुमको लौट जाना है। क्या मैं उस ज़ात के सिवा बातिल माबूदों को अल्लाह बना लूं कि अगर रहमान मुझको कोई नुक़्सान पहुंचाना चाहे तो इन बातिल माबूदों की न कोई सिफ़ारिश चल सके और न वे उस नुक़्सान से बचा सकें। मैं अगर ऐसा करूं तो खुला गुमराह हूं। बेशक मैं तो अपने और तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान ले आया। तुम ख़ूब कान लगाकर सुन लो। तब उसको हमारी ओर से कहा गया, जन्नत में किसी ख़तरे के बग़ैर दाख़िल हो जा। हमने कहा, काश कि मेरी क़ौम जान लेती कि मेरे परवरदिगार ने मुझे मग़्फ़िरत का कैसा अच्छा तोहफ़ा दिया और मुझको उन लोगों में शामिल कर लिया जिनको उसने एज़ाज़ व इकराम से नवाज़ा है और

हमने उसकी मौत के बाद उसकी क़ौम पर आसमान से कोई लश्कर सज़ा देने के लिए नहीं उतारा और हमको ऐसा करने की क़तई तौर पर कोई ज़रूरत नहीं थी, (उनकी सज़ा के लिए) और कुछ नहीं था। मगर एक हौलनाक चीख़, पस वे वहीं बुझ कर रह गए, (यानी हलाक हो गए) (36 : 13-29)

तफ़सीर और सीरत लिखने वाले इस वाक़िए के ज़माने और तफ़्सील में इस दर्जा शक में पड़ गए हैं और बेचैन हैं कि उनके बयानों और रिवायतों से वाक़िए का तै करना नामुम्किन हो जाता है। इसलिए हम यही कह सकते हैं कि क़ुरआन ने अपने अज़ीम मक़्सद 'भली नसीहत' को नज़र में रखकर जिस क़दर बयान किया है, वह एक देखने-समझने वाले के लिए काफ़ी-शाफ़ी है। अल्लाह की इस सरज़मीन पर हक़ व बातिल के जहां बहुत से वाक़िए हो गुज़रे हैं और इस बूढ़े आसमान ने इस सिलसिले में जितने पन्ने भी उलटे हैं, उनमें एक यह वाक़िया भी इसी आसमान के नीचे और इसी ज़मीन के ऊपर हो गुज़रा है। बस्ती, नेक मर्द और मुक़द्दस रसूलों के नाम मालूम हुए, तब और न हुए, तब नफ़्से वाक़िया पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ता, क्योंकि तारीख़ के जिन पन्नों ने नूह और क़ौमे नूह, हूद और आद, सालेह और समूद, इब्राहीम, लूत और क़ौम लूत, मूसा और फ़िरऔन, ईसा और बनी इसराईल के हक़ व बातिल के मारकों के तफ़्सीली हालात और वाक़ियों को अपने सीने में आज तक महफ़ूज़ कर रखा है, उसमें अगर इस वाक़िए का भी इज़ाफ़ा हो जाए, जिसका मुख़्तसर व मुज्मल ज़िक्र क़ुरआन ने किया है तो कौन-सी हैरत की बात और ताज्जुब का मक़ाम है।

वाक़िए का हासिल यही तो है कि कुछ मुक़द्दस पैग़म्बरों ने एक गुमराह मख़्लूक़ को सीधा रास्ता दिखाने की कोशिश की और उसने दुश्मनी और गुमराही को बुनियाद बनाकर उनकी बात मानने से इंकार कर दिया, यहां तक कि ख़ुदा के पहुंचे हुए इन हादियों को क़त्ल कर देने से भी बाज़ न रहे, तो इस क़िस्म के वाक़ियों को तारीख़ ने सिर्फ़ बनी इसराईल ही में इतनी बार दोहराया है कि क़ौमों और मिल्लतों की तारीख़ की जानकारी रखने वाला एक लम्हे के लिए भी उसके बारे में तरद्दुद नहीं कर सकता।

वाक़िए से मुताल्लिक़ बातें

इब्ने इस्हाक़, काब अह्बार, वह्ब बिन मुनब्बह के वास्ते से अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से नक़ल करते हैं कि यह वाक़िया शहर अन्ताकिया (शाम) का है। इस शहर के लोग बुतपरस्त थे और उनके बादशाह का नाम इंतख़ीस बिन इन्तख़ीस था। अल्लाह ने उनकी हिदायत के लिए तीन पैग़म्बरों, सादिक़, मस्दूक़ और शलूम को भेजा और शहर के आख़िरी सिरे से जो नेक मर्द उनकी ताईद के लिए आया, उसका नाम हबीब था। फिर कोई कहता है कि यह आबिद, ज़ाहिद और मुर्ताज़ था और शहर के किनारे इबादत में लगा रहता था और किसी का क़ौल है कि वह रेशमी और सूती कपड़ा बुनने का काम करता था और सदक़ात व ख़ैरात करने वाला था। ग़रज़ उनके नज़दीक यह वाक़िया हज़रत ईसा ﷺ के ज़माने का है और शहर अन्ताकिया ही का वाक़िया है। वाक़िए की दूसरी छोटी-छोटी बातों की तफ़्सील कुछ भी हो, वह इसके बड़े मक़्सद को पूरा करता है और सोचने-समझने वालों को सबक़ लेने की दावत देता है।

हासिल

1. बातिल वालों का हमेशा से यही अक़ीदा रहा है कि अल्लाह का पैग़म्बर इंसान नहीं होना चाहिए, बल्कि किसी 'फ़ितरत से ऊपर की हस्ती' को अल्लाह का रसूल होना चाहिए। इस अक़ीदे की बुनियाद ही बेवक़ूफ़ी पर टिकी है, इसलिए कि जब दुनिया में इंसान बस रहे हैं तो फिर उनकी हिदायत के लिए भी रसूल और पैग़म्बर इंसान ही होना चाहिए, न कि फ़रिश्ता।

2. जहां बुराई, ख़राबी, बिगाड़ और गुमराही के कीड़े ज़्यादा से ज़्यादा पाए जाते हैं, वहां भलाई और अच्छाई की भी कोई रूह निकल आती है और वह कलिमा-ए-हक़ की ताईद में जान की बाज़ी लगा देती है।

3. हक़ ज्यों-ज्यों अपनी सच्चाई को उजागर करता जाता है, बातिल उतना ही इश्तिआल में आता जाता है और दलीलों की जगह लड़ने-झगड़ने पर तैयार हो जाता है, मगर हक़ के परस्तार इसकी परवाह न करते हुए हक़ पर जान क़ुर्बान कर देते हैं। 'ख़ुदा रहमत कुनद ईं आशिक़ाने पाक तीनत रा०'

हज़रत लुक़मान रज़ि०

लुक़मान

लुक़मान या हकीम लुक़मान अरबों की एक मशहूर शख़्सियत हैं, लेकिन उनके हालात और ज़िंदगी से मुताल्लिक़ तफ़्सीलात से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इतना ही इत्तिफ़ाक़ है कि वह एक बहुत बड़े दाना (हकीम) थे और उनकी हिक्मत भरी बातें 'सहीफ़ा लुक़मान' के नाम से उनके बीच मशहूर व मारूफ़ थे और उनसे मुताल्लिक़ दूसरे मामलों में आपस में टकराने वाली राएं पाई जाती हैं।

क़ुरआन और हज़रत लुक़मान

हज़रत लुक़मान का ज़िक्र क़ुरआन ने भी किया है और क़ुरआन की एक सूरः का नाम भी इसी वजह से 'सूरः लुक़मान' है और अगरचे उसने अपने सामने के मक़्सद के लिए उनके नसब और ख़ानदान की बहस में जाना पसन्द नहीं किया, फिर भी उनकी हिक्मत भरी बातों का जिस ढंग से ज़िक्र किया है, उससे लुक़मान की शख़्सियत पर एक हद तक ज़रूर रोशनी पड़ती है। इसलिए मुनासिब है कि उसको बयान करने के बाद यह फ़ैसला किया जाए कि ऊपर लिखी हर दो रायों में कौन-सी सही या क़ियास के क़रीब है।

तर्जुमा— *'और बेशक हमने लुक़मान को हिक्मत अता की (और कहा कि) अल्लाह का शुक्र अदा करो। पस जो आदमी उसका शुक्र अदा करता है, वह अपने नफ़्स के फ़ायदे के लिए करता है और जो कुफ़्र करता है तो अल्लाह बे-परवाह है, तमाम तारीफ़ों का मालिक है और जिस वक़्त लुक़मान ने अपने बेटे से नसीहत करते हुए कहा, ऐ मेरे बेटे! अल्लाह का शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है और हमने हुक्म किया इंसान को, उसके मां-बाप के बारे में कि उठाती है उसको उसकी मां तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ झेल कर और दो वर्ष के अन्दर दूध पिलाते रहना, यह कि मेरा शुक्रगुज़ार बन और अपने मां-बाप का शुक्रगुज़ार हो। आख़िर मेरी ही तरफ़ लौटना है और अगर तेरे मां-बाप तुझ पर सख़्ती करें इस बारे में कि मेरा शरीक ठहरा कि जिसके बारे*

में वे नादानी और जिहालत में हैं, तो उसमें उन दोनों की पैरवी न कर और दुनिया की जिंदगी में उनके साथ अच्छा बर्ताव कर और पैरवी उस आदमी की कर कि जो सिर्फ़ मेरी तरफ़ रुजू करता है, फिर मेरी ही तरफ़ तुम सबको लौटना है। पस मैं उस वक़्त तुमको तुम्हारे किए की ख़बर दूंगा। ऐ मेरे बेटे! बिला शुबहा अगर राई के दाने के बराबर भी कोई चीज़ छोटी होती है और वह पत्थर के अन्दर या आसमानों या ज़मीनों में कहीं भी हो, अल्लाह उसको ले आता है। बेशक अल्लाह बारीकी से देखने वाला ख़बरदार है। ऐ मेरे बेटे! क़ायम कर नमाज़ को और हुक्म कर भलाई का और बुराई से मना कर और जो तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर। बेशक ये अ़ज़ीमत की बातें हैं और तू अपने गालों को लोगों से (घमंड की वजह से) न फेर और ज़मीन पर इतरा कर न चल। बेशक अल्लाह किसी तकब्बुर और शेख़ी करने वाले को दोस्त नहीं रखता और चाल में बीच का रास्ता अपना और अपनी आवाज़ को नरम और पस्त कर। बेशक गधे की अवाज़ बहुत ही नापसन्दीदा आवाज़ है।'

(31 : 14-19)

इन आयतों में लुक़मान ने अपने बेटे को जो नसीहतें की हैं और हिक्मत व दानाई की जो बातें बताई हैं, उनमें इन बातों पर ज़ोर दिया है कि—

1. लोगों के साथ अच्छे व्यवहार से पेश आना चाहिए, यह न हो कि घमंड की वजह से मुंह मोड़ लिया जाए।

2. और न अल्लाह की ज़मीन में अकड़ कर चलो। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि अल्लाह घमंडी और अकड़ने वाले को पसन्द नहीं करता।

3. हमेशा चाल चलने में बीच का रास्ता अख़्तियार करना चाहिए।

4. और आवाज़ को बात-चीत में नर्म रखो, इसलिए कि चीख़ना-चिल्लाना इंसानों का काम नहीं है। अगर कड़ी और बेवजह बुलन्द आवाज़ पसन्दीदा चीज होती, तो गधे की आवाज़ तारीफ़ के क़ाबिल समझी जाती। उसकी आवाज़ सबसे बुरी आवाज़ समझी जाती है।

नुबूवत या हिक्मत

अगरचे एक रिवायत में यह कहा गया है कि हज़रत लुक़मान ﷺ एक

नबी थे, लेकिन कुरआन के बयान का अन्दाज़ इसका साथ नहीं देता और किसी एक जुम्ले में भी इसका इशारा नहीं पाया जाता कि जो उनकी 'नुबूवत' के लिए दलील बनता हो। इसीलिए जम्हूर की राय यह है कि लुक़मान रह० अल्लाह के वली और हकीम व दाना थे।

कुछ अहम तफ़्सीरी नुक्ते

1. हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को सबसे पहले जो अहम नसीहत की वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराने से बचना और ख़ुदा को मानना है। उन्होंने शिर्क को बड़ा भारी ज़ुल्म (ज़ुल्मे अज़ीम) फ़रमाया। असल में दीन हक़ में यही वह हक़ीक़त है जो 'हनीफ़' को मुश्रिक से अलग करती है और शिर्क ही ऐसा गुनाह है जो किसी हाल में बख़्शिश के क़ाबिल नहीं, मगर यह कि उससे तौबा कर ले।

2. सूरः *लुक़मान में 'व इज़ क़ा-ल लुक़मानु लि इब्निही' से 'लज़ुल्मुन अज़ीम' तक और फिर 'या बनी-य' से 'ल-सौतुल हमीर' तक हज़रत लुक़मान* ﷺ *की बातें बयान की गई हैं और बीच में 'वस्सैनलइंसानु' से 'उनब्बिउकुम बिमा कुन्तुम तामलून'* तक अल्लाह का अलग से इर्शाद मुबारक है, तो इसके लिए मुनासिब वजह यह है कि जब कुरआन ने ऐसे एक वाक़िए का ज़िक्र किया है, जिसमें बाप ने बेटे को नसीहतें की हैं, तो अल्लाह ने उम्मते मुस्लिमा को यह नसीहत करना ज़रूरी समझा कि जब बाप और मां की मुहब्बत का यह आलम है, तो दुनिया और आख़िरत किसी मामले में भी औलाद के लिए बिल्कुल ज़रूरी है कि वह अल्लाह की सही और हक़ीक़ी मारफ़त के बाद सबसे ज़्यादा मां-बाप की ख़िदमत और उनकी रज़ा हासिल करने को मुक़द्दम समझे। यहां तक कि अगर मां-बाप काफ़िर व मुश्रिक हों तब भी उसका फ़र्ज़ है उनकी ख़िदमत और उनके साथ अच्छा व्यवहार, नर्मी और नियाज़मन्दी को हाथ से न जाने दे, अलबत्ता अगर वह दीने हक़ से एराज़ और शिर्क के अख़्तियार पर ज़िद करें तो उसको कुबूल न करे। इसलिए कि अल्लाह की नाफ़रमानी में किसी की इताअत भी दुरुस्त नहीं है, चुनांचे इर्शादे नबवी है—

'ला ता-अ-तलि मिख़्लूक़िन फ़ी मासियतिल ख़ालिक़'

लेकिन इस मुकालमे में भी अपने इंकार के वक़्त नर्मी और ढंग से बात करना न छोड़िए और सख़्त ज़ुबान इस्तेमाल न करे।

3. सूरः लुक़मान में जिन नसीहतों का ज़िक्र किया गया है उनमें अच्छे अख़्लाक़ और नर्मी पर उभारा गया है और घमंड, शेख़ी और बुरे अख़्लाक़ को बुरा बताया गया है। हज़रत लुक़मान ने भलाइयों का जो हुक्म दिया है और बुराइयों से जो रोका है, इन बातों का ख़ास तौर से इसलिए इंतिख़ाब फ़रमाया है कि कायनात में जितनी भी भलाई और बुराई पेश आती है, उन सबकी जड़ व बुनियाद यही होते हैं। चुनांचे नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी मुसलमानों को इन बातों की अहमियत पर बहुत ज़्यादा तवज्जोह दिलायी है।

4. हज़रत लुक़मान ﷺ ने कड़ी और तेज़ आवाज़ से बात-चीत करने को भी मना फ़रमाया है, इसलिए कि नर्म बात-चीत अच्छे अख़्लाक़ का शोबा और कड़ी और तेज़ आवाज़ बुरे अख़्लाक़ का हिस्सा है और इसी बुनियाद पर बात करने के इस तरीक़े को 'गधे की आवाज़' का नाम दिया गया है।

5. हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को जो नसीहतें की हैं, उनमें यह भी कहा है कि ज़मीन पर अकड़ कर न चलो। इस मज़्मून को क़ुरआन मजीद ने सूरः बनी इसराईल की एक आयत में अजीब अन्दाज़ से बयान किया है—

'और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, तू अपनी इस चाल से न ज़मीन को फाड़ सकेगा और न पहाड़ों की चोटियों तक लम्बा हो जाएगा।'

और इसके ख़िलाफ़ नर्म और अख़्लाक़ वाले इंसानों की यह कैफ़ियत है कि—

तर्जुमा— *'और जो रहमान के बन्दे (यानी हुक्मबरदार बन्दे) हैं, वे ज़मीन पर वक़ार और तवाज़ो के साथ चलते हैं और जब उनसे जाहिल लोग मुख़ातब होते हैं, तो वे (जिहालत से बचने के लिए) सलाम कहकर अलग हो जाते हैं।*

(25 : 63)

हज़रत लुक़मान की हिक्मत

पीछे की लाइनों में यह ज़िक्र आ चुका है कि अरब में लुक़मान की

हिक्मत की काफ़ी चर्चा थी और वे अक्सर मज्लिसों में उनकी हिक्मत भरी बातों को नक़ल करते रहते थे, चुनांचे ताबिईन, सहाबा, बल्कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से भी इस सिलसिले के क़ौल नक़ल किए गए हैं और उनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं–

1. हिक्मत व समझदारी ग़रीब को बादशाह बना देती है।

2. जब किसी मज्लिस में दाख़िल हो तो पहले सलाम करो। फिर एक तरफ़ बैठ जाओ और जब तक मज्लिस वालों की बातें न सुन लो, ख़ुद बात शुरू न करो, पस अगर वे अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल हों, तो तुम भी उसमें से अपना हिस्सा ले लो और अगर वे फ़िज़ूल कामों में मश्ग़ूल हों तो वहां से अलग हो जाओ और दूसरी किसी अच्छी मज्लिस को हासिल करो।

3. अल्लाह तआ़ला जब किसी को अमानतदार बनाए, तो अमानत रखने वाले का फ़र्ज़ है कि उस अमानत की हिफ़ाज़त करे।

4. ऐ बेटे! अल्लाह से डर और दिखावे के तौर पर अल्लाह से डरने का मुज़ाहरा न कर कि लोग इस वजह से तेरी इज़्ज़त करें और तेरा दिल हक़ीक़त में गुनाहगार है।

5. ऐ बेटे! जाहिल से दोस्ती न कर कि वह यह समझने लगे कि तुझको उसकी जिहालत भरी बातें पसन्द हैं और दाना (समझदार आदमी) के ग़ुस्से को बेपरवाही में न टाल कि कहीं वह तुझसे जुदाई न अख़्तियार कर ले।

6. वाज़ेह रहे कि दानाओं की ज़ुबान में अल्लाह की ताक़त होती है, उनमें से कोई कुछ नहीं बोलता, मगर यह कि इस बात को अल्लाह तआ़ला इसी तरह करना चाहता हो।

7. ऐ बेटे! ख़ामोशी में कभी नदामत नहीं उठानी पड़ती और अगर कलाम चांदी है तो सुकूत सोना है।

8. बेटा! ग़ैज़ व ग़ज़ब से बचो, इसलिए कि ग़ज़ब की शिद्दत दाना के क़ल्ब को मुर्दा बना देती है।

9. बेटा! ख़ुश कलाम बनो, ख़ुश मिज़ाजी अख़्तियार करो, तब तुम लोगों की नज़रों में उस आदमी से भी ज़्यादा महबूब हो जाओगे जो हर वक़्त उसको दाद व दहिश करता रहता है।

10. नर्मी दानाई (सूझ-बूझ) की जड़ है।

11. जो बोओगे, वही काटोगे।

12. अपने और अपने वालिद के दोस्त को महबूब रखो।

13. किसी ने लुक़मान रज़ि० से पूछा, सबसे ज़्यादा सब्र करने वाला आदमी कौन है? कहा, जिसके सब्र के पीछे ईज़ा (पीड़ा) न हो। फिर पूछा सबसे बड़ा आलिम कौन है? जवाब दिया जो दूसरों के इल्म के ज़रिए अपने इल्म में बढ़ौतरी करता रहे।

14. फिर सवाल किया, सबसे बेहतर आदमी कौन सा है? फ़रमाया, ग़नी। पूछने वाले ने फिर पूछा, ग़नी से मालदार मुराद है? जवाब में कहा, नहीं, बल्कि ग़नी वह है जो अपने अन्दर ख़ैर को तलाश करे तो मौजूद पाए, वरना ख़ुद को दूसरों से बेनियाज़ बनाए रखे।

15. किसी ने पूछा, सबसे बुरा आदमी कौन-सा है? फ़रमाया जो इसकी परवाह न करे कि लोग उसको बुराई करता देखकर बुरा समझेंगे।

16. बेटा! तेरे दस्तरख़्वान पर हमेशा नेकों का इज्तिमा रहे तो बेहतर है और मश्विरा सिर्फ़ उलेमा-ए-हक़ से लेना।

नसीहत और सबक़

1. इंसान अगर मासूम नबी व पैग़म्बर भी न हो, मगर हिक्मत व दानाई वाला हो, तब भी अल्लाह के नज़दीक उसका दर्जा बहुत बड़ा है। इसीलिए हज़रत लुक़मान को यह इज़्ज़त मिली कि अल्लाह ने क़ुरआन में उनकी तारीफ़ फ़रमाई और उम्मत के लिए उनकी कुछ उन नसीहतों और वसीयतों को नक़ल फ़रमाया जो उन्होंने अपने बेटे को की थीं, यहां तक कि क़ुरआन में एक सूरः उनके नाम से जोड़ दी गई।

2. अल्लाह के साथ शिर्क तमाम भलाइयों को मिटाकर इंसान को अल्लाह के सामने ख़ाली हाथ ले जाता है, इसलिए हमेशा उससे परहेज़ ज़रूरी है।

खुले शिर्क की तरह छिपा शिर्क भी इंसानी आमाल को उसी तरह खा लेता है, जिस तरह आग लकड़ी को खा लेती है और छिपे शिर्क में दिखावा, नुमाइश और शोहरत पाने का जज़्बा ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र है।

3. मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार और उनके बड़प्पन को इस्लाम में इस दर्जा अहमियत हासिल है कि उनको मजाज़ी रब कहा है और उनकी ख़िदमत और उनके सामने सरे नियाज़ झुका देने को मां-बाप के इस्लाम व कुफ़्र दोनों हालतों में ज़रूरी क़रार दिया है और इसी अहमियत को देखते हुए जगह-जगह अपने हक़ यानी एक अल्लाह को मानने के साथ-साथ मां-बाप का ज़िक्र किया और उनको तमाम हक़ों पर मुक़द्दम रखा। (सूरः बनी इसराईल की आयतें 23-24) और मां-बाप के साथ अच्छे व्यवहार से मुताल्लिक़ हदीसें तो बहुत ज़्यादा मौजूद हैं, यहां तक कि यह कहा गया है कि—

'जन्नत मां के क़दमों के नीचे है।' (नसई)

अस्हाबे सब्त (सनीचर वाले)

सब्त और उसकी हुर्मत

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने अपनी उम्मत में अल्लाह की इबादत के लिए हफ़्ते के सात दिनों में से जुमा का दिन मुक़र्रर फ़रमाया था। हज़रत मूसा ﷺ के ज़माने में यहूदी बनी इसराईल ने अपनी रिवायती टेढ़ की बुनियाद पर हज़रत मूसा ﷺ से यह इसरार किया कि उनके लिए हफ़्ते (सनीचर) का दिन इबादत व बरकत का दिन मुक़र्रर कर दिया जाए।

हज़रत मूसा ﷺ ने पहले तो उनको हिदायत फ़रमाई कि वे अपनी ग़लत ढिठाई से बाज़ आ जाएं और इब्राहीमी मिल्लत के इस इम्तियाज़ को जो अल्लाह के नज़दीक पसन्दीदा और मक़्बूल है, हाथ से बर्बाद न होने दें। लेकिन जब उनका इसरार हद से आगे निकल गया तो अल्लाह की वह्य ने मूसा को यह इत्तिला दी कि अल्लाह तआला ने उनकी बेजा ज़िद के नतीजे में जुमा की सआदत व बरकत को उनसे वापस ले लिया और उनकी मांग को मंज़ूर करते हुए उनके लिए हफ़्ता (सनीचर) को जुमा का क़ायम-मक़ाम बनवाए देता है, इसलिए आप उनको बता दें कि वे अपने इस मांगे हुए दिन की अज़्मत का अदब व एहतराम करें और इसकी हुर्मत क़ायम रखें। हम इस

दिन में इनके लिए ख़रीदना-बेचना, खेती, तिजारत और शिकार को हराम करते और उसको सिर्फ़ इबादत के लिए ख़ास किए देते हैं।

कुरआन ने भी मुख़्तसर लफ़्ज़ों में इस इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र किया है जो उन्होंने हफ़्ते में इबादत के लिए एक दिन ख़ास करने के बारे में अपने पैग़म्बर (मूसा ﷺ) के साथ किया था—

तर्जुमा—*'बेशक सब्त का दिन उन लोगों के लिए (इबादत का दिन) मुक़र्रर किया गया जो उसके मुताल्लिक़ झगड़ा करते थे और यक़ीनन तेरा रब ज़रूर क़ियामत के दिन उनके दर्मियान फ़ैसला कर देगा कि जिसके बारे में वे इख़्तिलाफ़ करते थे, उसमें हक़ क्या था, बातिल क्या था।'* (16 : 124)

चुनांचे मूसा ﷺ ने सब्त की तक़र्रुरी के बारे में बनी इसराईल से पक्का अह्द लिया—

तर्जुमा—*'और हमने उन (बनी इसराईल) से कहा, सब्त (हफ़्ता) के बारे में हद से न गुज़रना और ख़िलाफ़वर्ज़ी न करना और हमने उनसे उनके बारे में बहुत सख़्त क़िस्म का वायदा लिया।* (4 : 154)

वाक़िया क्या था?

हज़रत मूसा ﷺ के मुबारक अह्द से 'एक लम्बे अर्से तक के बाद बनी इसराईल की एक जमाअ़त लाल सागर के किनारे आबाद हो गई थी। मछली उनका क़ुदरती शिकार था और महबूब मश्ग़ला बनी। वे उसके ख़रीदने-बेचने का कारोबार करते थे। ये लोग हफ़्ते के छः दिन मछली का शिकार खेलते और सब्त का दिन अल्लाह की इबादत में लगाते। इसलिए क़ुदरती तौर पर मछलियां छः दिन जान बचाने के लिए पानी की तह में छिपी रहतीं और सब्त के दिन पानी की सतह पर तैरती नज़र आती थीं। साथ ही अल्लाह तआला ने इस तरीक़े से उनको आज़माया और उनकी ईमानी क़ूवत का इम्तिहान लिया, यहां तक कि सब्त के अलावा हफ़्ते के बाक़ी दिनों में मछलियों का हासिल होना बहुत मुश्किल हो गया और छः दिन यह कैफ़ियत रहने लगी कि गोया लाल सागर में मछली का नाम व निशान बाक़ी नहीं रहा, मगर सब्त के दिन वे इस बड़ी तायदाद में पानी पर तैरती नज़र आतीं कि जाल और कांटे

के बग़ैर हाथों से आसानी से पकड़ में आ सकती थीं।

कुछ दिनों तक तो यहूदी इस हालत को सब्र करते हुए देखते रहे, आख़िर न रह सके और उनमें से कुछ ने तो ख़ुफ़िया तरीक़े से ऐसे-ऐसे हीले ईजाद कर लिए कि जिससे यह भी ज़ाहिर न हो सके कि वे सब्त के हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर रहे हैं और सब्त के दिन मछलियों की कसरत से आने से भी फ़ायदा उठा लें।

चुनांचे कुछ तो यह करते कि जुमा की शाम को लाल सागर के क़रीब गढ़े खोद लेते और नदी से इन गढ़ों तक नहर की तरह एक गोल नहर निकाल लेते और जब सब्त के दिन पानी की सतह पर मछलियां तैरने लगतीं तो वे दरिया के पानी को खोल देते ताकि पानी गढ़ों में चला जाए और इस तरह मछलियां भी पानी के बहाव से उनमें चली जाएं और जब सब्त का दिन गुज़र जाता तो इतवार की सुबह को इन मछलियों को गढ़े में से निकाल कर काम में लाते।

और कुछ यह करते कि जुमा के दिन नदी में जाल और कांटे लगा आते, ताकि सब्त के दिन उनमें मछलियां धंस जाएं और इतवार की सुबह को इन जालों और कांटों में गिरफ़्तार मछलियों को पकड़ लाते और ये सब अपनी इन चालों पर बेहद ख़ुश नज़र आते थे, चुनांचे जब उनके उलेमा-ए-हक़ और उम्मत के मुख़्लिस लोगों ने उनको इस हरकत से रोका, तो उन्होंने एतराज़ करने वालों को यह जवाब दिया कि अल्लाह का हुक्म यह है कि सब्त के दिन शिकार न करो, इसलिए हम इसकी तामील में सब्त के दिन शिकार नहीं करते, बल्कि इतवार के दिन करते हैं, बाक़ी ये तरकीबें मना नहीं हैं और अगरचे उनका दिल और ज़मीर मलामत करता था, मगर उनकी टेढ़ उनको यह जवाब देकर के मुतमइन कर देती थी कि हमारा यह हीला अल्लाह के यहां ज़रूर चल जाएगा।

असल बात यह थी कि वे दीन के हुक्मों पर सदाक़त व सच्चाई के साथ अ़मल नहीं करते थे और इसीलिए शरई हीले निकाल कर उनकी शक्ल से बचना चाहते थे, गोया अपने आप धोखे में पड़े हुए थे और दूसरों को भी गुमराह करते थे, चुनांचे नतीजा यह निकला कि इन कुछ हीला ढूंढने वाले

इंसानों की इन हरकतों का इल्म दूसरे हीला ढूंढने वालों को भी हुआ और उन्होंने भी इसकी तक़्लीद शुरू कर दी और आख़िरकार बस्ती की एक बड़ी जमाअ़त एलानिया इन हीलों की आड़ में सब्त की हुर्मत की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने लगी।

इस जमाअ़त की ये ज़लील हरकतें देखकर बस्ती ही में एक सआ़दतमंद जमाअ़त ने हिम्मत की और उनके मुक़ाबले में आकर उनको इस बदअ़मली से बाज़ रखने की कोशिश की और नेकी फैलाने और बुराई को मिटाने के फ़रीज़े को अदा किया, मगर उन्होंने कुछ परवाह नहीं की और अपनी हरकत पर क़ायम रहे, तब सआ़दतमंद जमाअ़त के दो हिस्से हो गए। एक ने दूसरे से कहा कि इन लोगों को नसीहत करना और समझाना बेकार है। ये बाज़ आने वाले नहीं, क्योंकि ये इस काम को अगर गुनाह समझ कर करते, तो यह उम्मीद थी कि शायद किसी वक़्त बाज़ आकर तौबा कर लें। लेकिन जबकि ये शरई हीले तलाश कर अपनी बदअ़मली पर नेकी का परदा डालना चाहते हैं, तो हमको यक़ीन होता जाता है कि इस जमाअ़त पर बहुत जल्द अल्लाह का अ़ज़ाब आने वाला है या ये हलाक कर दिए जाएंगे या किसी सख़्त अ़ज़ाब में डाल दिए जाएंगे, इसलिए अब इनसे कोई छेड़ख़ानी न करो।

यह सुनकर सआ़दतमंद जमाअ़त के दूसरे हिस्से ने कहा कि हम इसलिए ऐसा करते हैं कि उनको यह उज़्र पेश कर सकें कि हमने आख़िर वक़्त तक उनको समझाया और बुराई से रोकने का फ़रीज़ा अदा किया, लेकिन उन्होंने किसी तरह नहीं माना, साथ ही हम मायूस नहीं हैं, बल्कि उम्मीद रखते हैं कि अजब नहीं उनको तौफ़ीक़ मिल जाए और ये अपनी बदअ़मली से बाज़ आ जाएं।

बहरहाल हीला तलाश करने वाली जमाअ़त अपने हीलों पर क़ायम रही और सब्त की हुरमत और उस दिन में शिकार के मना करने का इंकार करके, और हुक्मों से बिल्कुल ग़ाफ़िल और बेपरवाह होकर निडर और बेबाक हो गई, तब अचानक हक़ की ग़ैरत को हरकत हुई और मोहलत के क़ानून ने पकड़ की शक्ल अख़्तियार कर ली, यानी अल्लाह तआ़ला का हुक्म हो गया कि जिस तरह तुमने मेरे क़ानून की असल शक्ल व सूरत को हीलों के ज़रिए मस्ख़ कर दिया, अ़मल के बदले के क़ानून के मुताबिक़ उसी तरह तुम्हारी शक्ल व

सूरत भी मस्ख़ कर दी जाती है। ताकि 'पादाशे अ़मल अज़ जिंसे अ़मल' (अ़मल का बदला अ़मल के जिंस से है) के मुज़ाहरे से दूसरे लोग भी सबक़ व नसीहत हासिल करें, चुनांचे अल्लाह जल्ल शानुहू ने 'कुन' के इशारे से उनको बन्दरों और सुअरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया और वह इंसानी शरफ़ से महरूम होकर ज़लील व ख़्वार हैवानों में तब्दील हो गए।

तफ़्सीर लिखने वाले कहते हैं कि सआ़दतमंद जमाअ़त का जो हिस्सा नेकी का हुक्म और बुराई से रोकने का फ़रीज़ा अदा करता रहा, उसने जब यह देखा कि ढीठ और सरकश जमाअ़त किसी तरह हक़ पर कान नहीं धरती तो मजबूर होकर उसने इनकी मदद करना छोड़ दिया और खाना-पीना और लेना-देना, ग़रज़ हर क़िस्म का मेल-जोल ख़त्म कर दिया, यहां तक कि अपने मकानों के दरवाज़ों तक को उन पर बन्द कर दिए, ताकि किसी क़िस्म का ताल्लुक़ बाक़ी न रहे, चुनांचे जिस दिन बद-किरदारों पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल हुआ, तो उनके मामले की इस जमाअ़त को घंटों ख़बर न हुई, लेकिन जब काफ़ी वक़्त गुज़र गया और इस तरफ़ से किसी इंसान की नक़्ल व हरकत महसूस न हुई, तब उनको ख़्याल हुआ कि मामला गड़बड़ है, इसलिए वहां जाकर देखा तो सूरतेहाल इस दर्जा अजीब थी कि जिसे वे सोच भी नहीं सकते थे यानी वहां इंसानों की जगह बन्दर और ख़िंज़ीर थे जो अपने इन रिश्तेदारों को देखकर क़दमों में लोटते और अपनी इस ख़राब हालत को इशारों से ज़ाहिर करते थे। सआ़दतमन्द जमाअ़त ने हसरत व यास के साथ उनसे कहा कि क्या हम तुमको बार-बार इस ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब से नहीं डराते थे? उन्होंने यह सुना तो हैवानों की तरह सर हिलाकर इक़रार किया और आंखों से आंसू बहाते हुए अपनी ज़िल्लत व रुसवाई का दर्दनाक नज़ारा पेश किया।

तर्जुमा—*'और (ऐ यहूदियो!) तुम बेशक (अपने आगे चलने वालों में से) उन लोगों को अच्छी तरह जानते हो जो सब्त के बारे में अल्लाह के हुक्मों की हदें पार कर गए थे और हमने उनके लिए कह दिया, तुम ज़लील बन्दर हो जाओ, पस हमने उस बस्ती के उन बदबख़्त लोगों को गिर्द व पेश के लोगों के लिए सबक़ और ख़ुदा से डरने वालों के लिए नसीहत बना दिया।'*

(2 : 65-66)

तर्जुमा– 'और (ऐ पैग़म्बर!) बनी इसराईल से उस शहर के बारे में पूछो जो समुन्दर के किनारे वाक़े था और जहां सब्त के दिन लोग ख़ुदा की ठहराई हुई हद से बाहर हो जाते थे। सब्त के दिन उनकी चाही मछलियां पानी पर तैरती हुई उनके पास आ जातीं, मगर जिस दिन सब्त न मनाते, न आतीं, इस तरह हम उन्हें आज़माइश में डालते थे। नाफ़रमानी की वजह से जो वे किया करते थे और जब उस शहर के बाशिंदों में से एक गिरोह ने (उन लोगों से जो नाफ़रमानों को वाज़ व नसीहत करते थे) कहा, तुम ऐसे लोगों को (बेकार) नसीहतें क्यों करते हो, जिन्हें (उनकी शक़ावत की वजह से) या तो अल्लाह हलाक कर देगा या निहायत सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेगा। उन्होंने कहा, इसलिए करते हैं ताकि तुम्हारे परवरदिगार के हुज़ूर माज़रत कर सकें (कि हमने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया) और इसलिए भी कि शायद ये लोग बाज़ आ जाएं। फिर जब ऐसा हुआ कि उन लोगों ने वे तमाम नसीहतें भुला दीं जो उन्होंने कही थीं, तो हमारी पकड़ ज़ाहिर हो गई। हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो बुराई से रोकते थे मगर शरारत करने वालों को एक ऐसे अज़ाब में डाला कि जो महरूमी और नामुरादी में मुब्तला करने वाला अज़ाब था, उन नाफ़रमानियों की वजह से, जो वे किया करते थे। फिर जब वे इस बात में हद से ज़्यादा सरकश हो गए, जिससे उन्हें रोका गया था, तो हमने कहा बन्दर हो जाओ ज़िल्लत व ख़्वारी से ठुकराए हुए।' (7 : 163-165)

तर्जुमा–(ऐ पैग़म्बर!) कह दीजिए, क्या मैं तुमको बताऊं कि क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़दीक जज़ा (बदले) के एतबार से कौन सबसे बुरा होगा? वह आदमी होगा जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर ग़ज़बनाक हुआ और वे जिनमें से उसने बन्दर और ख़िंज़ीर की शक्ल में मस्ख़ कर दिए और जिसने उनमें से शैतान (या बुत) की पूजा की। यही हैं सबसे बुरे दर्जे वाले और सीधे रास्ते से बहुत दूर भटके हुए (यानी ऐ बनी इसराईल! हम सबसे बुरी जज़ा के हक़दार नहीं हैं, बल्कि तुम हो जिनके ये कुछ आमाल व अतवार हैं।)'

तर्जुमा–ऐ अह्ले किताब! तुम उस किताब पर ईमान ले आओ जो हमने तुम पर उतारी है, जो उसकी तस्दीक़ करने वाली है जो तुम्हारे पास है (यानी

तौरात), इससे पहले ईमान लाओ कि हम चेहरों को मिटा डालें और उनकी पीठ पर उनको लगा दें या हम उन पर लानत करें जिस तरह हमने सब्त वालों पर लानत की और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहने वाला है। (4 : 47)

वह जगह

जिस बस्ती पर यह हादसा गुज़रा, उसका नाम क्या है? क़ुरआन सूरः आराफ़ में सिर्फ़ यह बयान करता है कि वह समुन्दर के साहिल पर वाक़े थी–'अल-क़रयतुल्लती कानत हाज़िरतल बह्र', मगर तफ़्सीर लिखने वालों ने उसके तै करने में कई नाम लिए हैं। एक क़ौल यह है कि उस बस्ती का नाम ऐला था और यह लाल सागर के साहिल पर वाक़े थी। अरब जुग़राफ़िया (Geography) के माहिर करते हैं कि जब कोई आदमी तूरे सीना से गुज़रकर मिस्र को रवाना हो तो तूरे सीना की तरफ़ समुन्दर के साहिल पर यह बस्ती मिलती थी या यों कह लीजिए कि मिस्र का बाशिंदा अगर मक्का का सफ़र करे तो रास्ते में यह शहर पड़ता था।

(मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने इसी क़ौल को तर्जीह दी है)

हादसे का ज़माना

क़ुरआन के बयान के अन्दाज़ और महान तफ़्सीर लिखने वालों की शरह व तफ़्सील से यह साबित होता है कि अस्हाबे सब्त का यह वाक़िया हज़रत मूसा ﷺ और हज़रत दाऊद ﷺ के दर्मियानी ज़माने (लगभग 1100 क़ब्ल मसीह) में किसी ऐसे वक़्त पेश आया कि अब ऐला में कोई नबी मौजूद नहीं थे। इसलिए क़ुरआन ने सिर्फ़ उन्हीं का ज़िक्र किया और किसी नबी या पैग़म्बर का ज़िक्र नहीं किया और मारूफ़ का हुक्म देने और बुराई से रोकने का फ़रीज़ा वहां के उलेमा के सुपुर्द था।

कुछ अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें

सूरः बक़रः में 'सब्त' वालों के तज़्क़िरे में आयत 2 : 60 में गिर्द व पेश

के 'लोगों' से क्या मुराद है? इसके जवाब में तफ़्सीर लिखने वालों के कई क़ौल हैं–

1. बेहतर क़ौल हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से नक़ल किया गया है, यानी इनसे वे बस्तियां मुराद हैं जो ऐला के आस-पास आबाद थीं।

2. सूरः माइदा में आयत 5 : 60 में 'बन्दर और ख़िंज़ीर की शक्ल में मस्ख़ कर दिए।' हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस गिरोह पर अ़ज़ाब मुसल्लत हुआ, उसके नौजवान बन्दर की शक्ल में बिगाड़ दिए गए और बूढ़े ख़िंज़ीर की शक्ल में बिगाड़ दिए गए।

बिगाड़ने की हक़ीक़त

इंसान के बन्दर और ख़िंज़ीर हो जाने के क्या मानी हैं? जम्हूर की राय यह है कि इससे मस्ख़ हक़ीक़ी मुराद है यानी वे लोग जिन पर अ़ज़ाब मुसल्लत हुआ सूरत-शक्ल के एतबार से बन्दर और ख़िंज़ीर बना दिए गए।

मस्ख़ की गई क़ौमों का अंजाम

चुनांचे यही वजह है कि सही हदीसों (मुस्नद अहमद) में खोल कर लिखा गया है कि जो क़ौमें जानवरों की शक्ल में मस्ख़ हुई हैं, वे तीन दिन से ज़्यादा ज़िंदा नहीं रहीं, यानी मस्ख़ का अ़ज़ाब उनके अन्दर और ज़ाहिर को इस दर्जा फ़ासिद और गन्दा कर देता है कि वे फ़िर ज़िंदा नहीं हो सकतीं और जल्द ही मौत की गोद में चली जाती हैं।

नतीजे और सबक़

1. 'नेकियों का हुक्म देना और बुराई से रोकना।' शानदार फ़रीज़ा (ज़िम्मेदारी) है नबियों की बेसत का बड़ा मक़सद भी इस फ़र्ज़ को पूरा करना है जब किसी क़ौम और उम्मत में कोई नबी या रसूल मौजूद न हो तो फिर उम्मत के उलेमा के ज़िम्मे वाजिब है कि वे इस फ़र्ज़ को अंजाम दें, चुनांचे क़ुरआन और सहीह हदीसों ने इस फ़र्ज़ की तरफ़ बहुत ज़्यादा अहमियत के साथ तवज्जोह दिलाई है और तामील करने वाले के अज्र व सवाब की बशारत

और तर्क करने वाले को सज़ा का हक़दार क़रार देता है।

2. इंसान की अलग-अलग गुमराहियों में से बहुत बड़ी गुमराही यह भी है कि अल्लाह के हुक्मों से बचने के लिए हीले-बहाने तलाश कर हराम को हलाल और हलाल को हराम बनाने की कोशिश करे। चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मते मुस्लिमा को सख़्त ताकीद फ़रमाई है कि वे ऐसी गुमराही की ओर हरगिज़ क़दम न उठाएं और अपने अ़मल का दामन उससे बचाए रखें।

3. फ़र्ज़ के अदा करने में इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए कि जिनके मुक़ाबले में फ़रीज़ा अंजाम दिया जा रहा है, वे इसको क़ुबूल करते हैं या नहीं।

अस्हाबुर्रस्स

(लगभग 630 क़ब्ल मसीह या नामालूम मुद्दत)

रस्स

डिक्शनरी में 'रस्स' के मानी पुराने कुएं के हैं, इसलिए 'अस्हाबुर्रस्स' के मानी हुए कुएं वाले। क़ुरआन ने इस निस्बत के साथ एक क़ौम की नाफ़रमानी और सरकशी के बदले में उसकी हलाकत व बर्बादी का ज़िक्र किया है।

क़ुरआन और अस्हाबुर्रस्स

क़ुरआन ने सूरः फ़ुरक़ान और सूरः क़ाफ़ में इनका ज़िक्र किया है और जिन क़ौमों ने नबियों अलै॰ के झुठलाने और उनकी खिल्ली उड़ाने की वजह से हलाकत व तबाही मोल ली, उनकी लिस्ट में उनका नाम सिर्फ़ बयान कर दिया है और हालात व वाक़िए से कोई छेड़ नहीं की।

तर्जुमा— *'और आ़द, समूद और अस्हाबुर्रस्स को और उनके दर्मियानी ज़माने की बहुत-सी (क़ौमों) को (हमने हलाक कर दिया) और हमने हर एक के वास्ते मिसालें बयान कीं और हमने इन सबको हलाक कर दिया।'*

(25 : 38-39)

तर्जुमा— *'इनसे पहले भी नूह की क़ौम ने और कुएं वालों ने और समूद,*

आद, फ़िरऔन, 'बिरादराने लूत' 'अस्हाबे ऐका' 'तुब्बअ्' की क़ौम के रसूलों को झुठलाया। इनमें से हर एक ने रसूलों को झुठलाया, पस उन पर अज़ाब लाज़िम हुआ।' (50 : 12-14)

अस्हाबुर्रस्स

इनको अस्हाबुर्रस्स क्यों कहते हैं? इसके जवाब में तफ़्सीर लिखने वाले उलेमा के क़ौल इतने अलग-अलग हैं कि सही हक़ीक़त खुलने के बजाए और ज़्यादा छुप गई हैं। इन क़ौलों में से एक तह्क़ीक़ मिस्र के आज के मशहूर आलिम फ़रजुल्लाह ज़की कुर्दी की है। वह कहते हैं कि लफ़्ज़ रस्स 'अरस' का छोटा रूप है और यह उस मशहूर शहर क नाम है जो क़फ़क़ाज़ के इलाक़े में वाक़े है। अल्लामा ज़की के इस क़ौल की ताईद इब्ने कसीर के उस बयान से होती है कि कुछ तफ़्सीर लिखने वाले कहते हैं कि आज़रबाईजान में एक पुराना कुंवा 'रस्स' था। इस घाटी में रहने वाले इसी वजह से 'अस्हाबुर्रस्स' (रस्स वाले) कहलाते थे।

सही बात

इस मसले में क़ुरआन का ज़ाहिर यह साबित करता है कि यह वाक़िया यक़ीनन हज़रत मसीह से पहले हो गुज़रा है। अब रही यह बात कि यह हज़रत मूसा और ईसा ﷺ के दर्मियान के ज़माने की किसी क़ौम का ज़िक्र है या किसी पुरानी क़ौम का तो क़ुरआन ने इसे छेड़ा नहीं और ऊपर दी गई तफ़्सीरी रिवायतों से इसका क़तई फ़ैसला नामुम्किन है, अलबत्ता मेरा ज़ेहन आख़िरी क़ौल (ऊपर ज़िक्र किए गए) को तर्जीह देता है।

बहरहाल, क़ुरआन का जो मक़्सद सबक़ और नसीहत है, वह अपनी जगह साफ़ और वाज़ेह है और ये तारीख़ी बहसें और तै की गई चीज़ें इसको रोक नहीं रही हैं, बल्कि एक सबक़ लेने वाली निगाह के लिए यह काफ़ी व शाफ़ी है कि जो क़ौमें इस दुनिया में अल्लाह के पैग़ामे हक़ को ठुकराती और उसके ख़िलाफ़ बग़ावत और सरकशी का झंडा ऊपर किए रहती हैं और बराबर मोहलत और ढील देने के बावजूद वे अपने घमंड और फ़साद भरी ज़िंदगी को

छोड़ कर के भली और पाक ज़िंदगी बसर करने के लिए तैयार नहीं होतीं, तो फिर उन पर अल्लाह तआला की कड़ी पकड़ *'बत्शे शदीद'* आ जाती है और वह बे-यार व मददगार हलाक व बर्बाद कर दी जाती हैं।

सबक़ और नसीहत

1. इंसानी कायनात के पास जिस वक़्त से अपनी तारीख़ का भंडार मौजूद है, वह इस हक़ीक़त को ख़ूब अच्छी तरह जानती है कि दुनिया की जिस क़ौम ने भी अल्लाह के पैग़ामे हक़ को मज़ाक़ उड़ाने का मामला किया और अल्लाह के पैग़म्बरों और हादियों के साथ सरकशी और शरारत को जायज़ रखा, उनकी ज़बरदस्त ताक़त व शौकत और शानदार तमद्दुन के बावजूद क़ुदरत के हाथों ने हलाक व बर्बाद करके उनका नाम व निशान तक मिटा दिया और आसमानी या ज़मीनी सबक़ भरे हुए अज़ाब ने दुनिया से मिटाकर रख दिया, मगर यह अजीब बात है कि अपने पहलों के दर्दनाक अंजाम को देखने और सुनने के बाद भी उनकी वारिस क़ौमों ने तारीख़ को दोहराया और उसी क़िस्म की हरकतों को अख़्तियार किया, जिनके अंजाम में उनके अगलों को बुरे दिन देखने पड़े थे। 'इन-न हाज़ा ल शैउन अजीब'

2. अगर इंसान इस ज़िंदगी में इन दो सच्चाइयों को जान-समझ ले, तो हमेशा वाली ज़िंदगी में भी नाकाम नहीं रह सकता और ज़िंदगी के यही वे राज़ हैं जिन पर चलकर क़ौमें *'अस्हाबुलजन्न:'* कहलाईं और इनसे ग़ाफ़िल रहकर *'अस्हाबुन्नार'* कहलाने की हक़दार हुईं।

बैतुलमक़्दिस और यहूद

(604 क़ब्ल मसीह से 561 क़ब्ल मसीह तक और 70 ई. से 18 हि. यानी 639 ई. तक)

तम्हीद—पिछले पन्नों में यह बात साफ़ की जा चुकी है कि क़ुरआन पिछली क़ौमों के तारीख़ी वाक़ियों यानी उनके रुश्द व हिदयत के क़बूल व इंकार और नेक व बद नतीजों के हालात सामने लाने और सबक़ और नसीहत हासिल करने की जगह-जगह तर्ग़ीब देता और ख़ुद भी इसीलिए पिछली क़ौमों

के इन वाक़ियों को ज़्यादा से ज़्यादा बयान करता है। पिछली क़ौमों के इन हालात व वाक़ियात में से जो बदकिरदार और नेक किरदार इंसानों के दर्मियान फ़र्क़ पैदा करते और क़ौमों की इंफ़िरादी और इज्तिमाई इस्लाह व इंक़िलाब के सबक़ व नसीहत का सरमाया साबित होते हैं, एक अहम वाक़िया वह भी है जो यहूदी इसराईल की लगातार शरारतों और फ़सादों के कामों की वजह से दो बार मुक़द्दस हैकल और यरूशलम व बैतुल मक़्दिस की तबाही व बर्बादी और ख़ुद उनकी गुलामी और रुसवाई की शक्ल में ज़ाहिर हुआ और जिसने उनकी क़ौमी ज़िल्लत और इज्तिमाई हलाकत पर हमेशा के लिए मुहर लगा दी।

बैतुल मक़्दिस

बैतुल मक़्दिस की तामीर का वाक़िया हज़रत सुलैमान अलै० के वाक़ियों के ज़िम्न में तफ़्सील के साथ बयान हो चुका है। यह पाक जगह अपने हैकल (मस्जिद) की वजह से बनी इसराईल का क़िब्ला रही है और यह मुक़द्दस मक़ाम बनी इसराईल के बेशुमार नबियों के दफ़न होने की जगह है और इसकी अज़्मत न सिर्फ़ यहूदियों और ईसाइयों ही की निगाह में है, बल्कि इसको मुसलमान भी मुक़द्दस जगह मानते और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मेराज के वाक़िए ने इसके तक़द्दुस को और भी चार चांद लगा दिए हैं। जब भी कोई मुसलमान सूरः इसरा की तिलावत करता है, उसके दिल में इस जगह का तक़द्दुस व जलाल असर किए बग़ैर नहीं रहता।

तर्जुमा– *'पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्ल०) को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक सैर कराई, वह मस्जिदे अक़्सा जिसके हर तरफ़ हमने बड़ी बरकत दी है और इसलिए सैर कराई कि अपनी निशानियां दिखाएं। बेशक वही ज़ात है जो सुनने वाली, देखने वाली है।'* (17 : 1)

बनी इसराईल को तंबीह (चेतावनी)

क़ुरआन कहता है कि हमने किताब (सुहुफ़े अंबिया अलैहिमुस्सलाम) में

पहले से बनी इसराईल को आगाह कर दिया था कि तुम दो बार सख़्त फ़िला व फ़साद और सरकशी व बग़ावत करोगे और उनके इस मुक़द्दस जगह पर फ़िले पैदा करोगे और उसके बदले में दोनों बार तुमको ज़िल्लत व हलाकत का मुंह देखना पड़ेगा और जिस सरज़मीन को तुम बहुत ज़्यादा महबूब रखते हो, वह भी दो बार ज़ालिमों के हाथों तबाह व बर्बाद होगी।

इसके बाद हम फिर एक बार तुम पर रहम करेंगे और सआदत व फ़लाह की तरफ़ दावत देंगे, पस अगर तुमने पिछले वाक़ियों से इबरत व मौअ़ज़त हासिल करके हक़ की उस दावत को लब्बैक कहा और उसको ख़ुशदिली से क़ुबूल किया, तो दुनिया की कोई ताक़त तुम्हारी इस सआदत को नहीं छीन सकती और अगर तुम्हारी तारीख़ी टेढ़ और सरकशी और हक़ के साथ बग़ावत और मुख़ालफ़त ने तुम्हारा साथ न छोड़ा और गुज़रे हुए वाक़ियों की तरह इस बार भी तुमने फ़साद व गुमराही को अपनाया, तो हमारी ओर से भी अमल के बदले का क़ानून उसी तरह फिर दोहराया जाएगा और इसके बाद तुम पर हमेशा के लिए ज़िल्लत व रुसवाई की मुहर लगा दी जाएगी और यह सब कुछ तो दुनिया का मामला है और ऐसे सरकशों के लिए आख़िरत में बहुत बुरा ठिकाना जहन्नम ही है।

तर्जुमा—*'और हमने किताब (सुहुफ़े अंबिया) में बनी इसराईल को इस फ़ैसले की ख़बर दे दी थी कि तुम ज़रूर मुल्क में शर व फ़साद फैलाओगे और बहुत ही सख़्त दर्जे की सरकशी करोगे, फिर जब दो वक़्तों में से पहला वक़्त आ गया, तो ऐ बनी इसराईल! हमने तुम पर अपने ऐसे बन्दे भेज दिए जो बड़े ही ख़ौफ़नाक थे, पस वे तुम्हारी आबादियों के अन्दर फैल गए और अल्लाह का वायदा तो इसीलिए था कि पूरा होकर रहे, फिर (देखो) हमने ज़माने की गर्दिश तुम्हारे दुश्मनों के ख़िलाफ़ और तुम्हारे मुवाफ़िक़ कर दी और माल व दौलत और औलाद के ज़्यादा होने से तुम्हारी मदद की और तुम्हें फिर ऐसा बना दिया कि बड़े जत्थे वाले हो गए। अगर तुमने भलाई के काम किए तो अपने ही लिए किए और अगर बुराइयां कीं तो भी अपने ही लिए कीं। फिर जब दूसरे वायदे का वक़्त आ गया (तो हमने अपने दूसरे) बन्दों को भेज दिया' था कि तुम्हारे चेहरों पर रोशनाई की कालिख फेर दें और उसी तरह*

(हैकल) मस्जिद में दाख़िल हो जाएं, जिस तरह पहली बार हमलावर घुसे थे और जो कुछ पाएं, तोड़-फोड़ कर बर्बाद कर डालें। कुछ अजब नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर रहम फ़रमाए, (अगर अब भी बाज़ आ जाओ), लेकिन अगर तुम फिर सरकशी-फ़साद की तरफ़ लौट आओगे तो हमारी तरफ़ से अमल का बदला लौट आएगा और हमने हक़ के इंकारियों के लिए जहन्नम का क़ैदख़ाना तैयार कर रखा है।' (17-8,14)

यहां 'अल-किताब' से मुराद बनी इसराईल के नबियों के वे सहीफ़े हैं जिनमें यहूदियों के दो बार सख़्त फ़साद और सरकशी करने और उसकी बदौलत बैतुल मक़्दिस की बर्बादी और उनके हलाक और ग़ुलाम बनकर ज़लील व रुसवा होने के बारे में वे पेशेनगोइयां की गई थीं, जो इलहाम व वह्य के ज़रिए उनको अल्लाह की जानिब से मालूम हुई थीं। चुनांचे मौजूदा तौरात में यसइयाहु हिज़क़ील, यरमियाह और ज़करीया के सहीफ़ों में उनका अब भी ज़िक्र किया गया है और इन सहीफ़ों के बड़े हिस्से में इस क़िस्म की पेशीनगोइयां पाई जाती हैं और इन तीनों सहीफ़ों में दो बार के इन फ़सादों और फ़सादों से मुताल्लिक़ अल्लाह तआला की तरफ़ से सख़्त सज़ा का जिस तफ़्सील के साथ ज़िक्र है उसके एक-एक हर्फ़ से क़ुरआन के इर्शाद की तस्दीक़ होती है। इसलिए अब सवाल यह पैदा होता है कि ये पेशेनगोइयां किस-किस ज़माने में और किस तरह ज़ाहिर हुईं, इस बारे में तफ़्सीर लिखने वालों की राएं अलग-अलग हैं।

एक राय यह है कि यहूद की पहली शरारत और उसके बदले का मामला बख़्त नस्र (Nebuchadenzzar) के बैतुलमक़्दिस के हमले से ताल्लुक़ रखता है और दूसरी बार का मामला तितूस (Titus) रूमी के हमले से मुताल्लिक़ है और यही राय सही और क़ुरआन की आयतों और तारीख़ी नक़्लों के मुताबिक़ है यह इसलिए कि क़ुरआन ने इस मामले से मुताल्लिक़ जो कुछ कहा है उससे नीचे लिखी जा रही बातें ख़ास तौर से ज़ाहिर होती हैं—

1. 'अल-किताब' में यह ख़बर दे दी गई थी कि यहूदी दो बार सख़्त तौर पर शर्र फैलाएंगे और फ़साद करेंगे।

2. जब उन्होंने पहली बार शर्र व फ़साद किया तो हमने उन पर ऐसी

ज़बरदस्त ताक़त मुसल्लत कर दी कि उसने उसके घरों में घुसकर उनको और उनके घरों को तबाह व बर्बाद कर डाला।

3. इस तबाही के बाद (उनकी तौबा और गिड़गिड़ाहट पर) हमने उनको पहले की तरह फिर हुकूमत और ताक़त बख़्शी और माल व मताअ् की बहुतात से भी फ़ैज़ पहुंचाया।

4. और उनको यह भी बता दिया कि सरकशी और फ़साद से परहेज़ और अम्न व आश्ती और अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी कुबूल करने पर हमको कोई फ़ायदा या नुक़्सान नहीं पहुंचता, बल्कि उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी में तुम्हारा अपना ही नुक़्सान और उसकी इताअ़त से तुम ही को फ़ायदा पहुंचता है।

5. मगर उन्होंने दूसरी बार फिर बद अह्दी की, तो हमने पहले की तरह उन पर एक ज़ालिम ताक़त को मुसल्लत कर दिया, जिसने पिछले ज़ालिम हुक्मरां की तरह दोबारा बैतुलमक़्दिस और उसके हैकल (मस्जिद) को भी बर्बाद कर दिया और उनको भी ज़लील व रुसवा करके उनकी सरकशी का सर कुचल दिया।

और अगरचे यहूदियों की यह तबाही देखने में भले ही अबदी (सदा-सर्वदा) की हो, लेकिन अल्लाह तआ़ला की यह रहमत तीसरी बार और मौक़ा देगी कि वे इज़्ज़त और सरबुलन्दी हासिल करें, लेकिन अगर उन्होंने उसको भी ठुकरा दिया तो बेशक फिर उसका क़ानून 'अ़मल का बदला' भी ज़रूर उनको सज़ा देगा और फिर यक़ीनन रहती दुनिया तक ज़लील व ख़्वार रहेंगे और आख़िरत के घर में तो जहन्नम ऐसे ही तकब्बुर (घमंड) करने वालों के लिए तैयार की गई है।

इन तफ़्सीलों से यह ज़ाहिर होता है कि यहूद की शरारतों पर सज़ा और अ़ज़ाब कि शक्ल जिन जाबिर व क़ाहिर बादशाहों पर मुसल्लत की गई, उन्होंने दोनों बार बैतुलमक़्दिस (Jerusalem) को ज़रूर तबाह व बर्बाद किया और तौरात (नबियों के सहीफ़ों) और सीरत और तारीख़ की नक़्लों के एक राय होने पर यह साबित होता है कि फ़लस्तीन और यहूदाह की सरज़मीन की तबाही और हैकल की बर्बादी सिर्फ़ दो बादशाहों के हाथों हुई है और न सिर्फ़ शहरों की बर्बादी बल्कि यहूदी क़ौमियत की वह तबाही और बर्बादी, जो

दुनिया के इंक़िलाबों की तारीख़ में अहम जगह रखती है, एक बाबिल के क़ाहिर बादशाह बनू कद नज़्र (बख़्त नस्र) के हाथ से यह लगभग 104 क़ब्ल मसीह का वाक़िया है और दूसरी तैतूस रोमी के हाथों से और यह वाक़िया मसीह अलै॰ के उठाए जाने से लगभग सत्तर साल बाद पेश आया और इन ही दो वाक़ियों में यहूद और यहूदी क़ौमियत और यहूदी मज़हब पर वह कुछ हो गुज़रा जिसकी इत्तिला पहले तौरेत (नबियों के सहीफ़ों) में दे दी गई थी और जिसकी तस्दीक़ के लिए कुरआन भी गवाही दे रहा है।

इसलिए रद्द किए जाने के ख़ौफ़ के बग़ैर यह कहना सही है कि यहूद की बद-किरदारियों के नतीजे में जाबिर व क़ाहिर बादशाहों के हाथों उनकी तबाही व बर्बादी के जो दो सानहे पेश आए और जिनका ज़िक्र सूरः इसरा (बनी इसराईल) में है, वह बेशक बख़्त नस्र और तैतूस (Tatus) ही से ताल्लुक़ रखते हैं तो अब बिल्कुल ज़रूरी है कि इन हर दो वाक़ियों की तफ़्सील बयान करके यह दिखाया जाए कि उस ज़माने में यहूद की शरारतें और फ़साद भरी कारगुज़ारियां इस हद तक बढ़ गई थीं कि उन दोनों तबाह कर देने वाले हादसों में उन पर जो कुछ गुज़रा, वह उनकी बदआमालियों ही का नतीजा था और अमल के नतीजे ही ने इन दो ताक़तों की शक्लों में अपने को ज़ाहिर किया था।

यहूद की शरारत का पहला दौर

अल्लाह तआला के बनाए हुए कुदरती क़ानून का हमेशा से यह अटल फ़ैसला रहा है कि जब बद-अख़्लाक़ी, फ़ित्ना व फ़साद, ख़ूरेज़ी, जब्र व ज़ुल्म और हक़ के मुक़ाबले में बुग़्ज़ व हसद किसी जमाअत का क़ौमी मिज़ाज बन जाते हैं और कुछ लोगों में नहीं, बल्कि पूरी क़ौम के अन्दर ये बातें जड़ पकड़ लेती हैं तो फिर हक़ क़ुबूल करने की सही सलाहियत उनसे छीन ली जाती है और वे इस दर्जा बे-ख़ौफ़ और बेबाक हो जाते हैं कि अगर उनके पास अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हक़ की दावत देने और अल्लाह का पैग़ाम सुनाने आते हैं तो वे सिर्फ़ उस दावत से मुंह ही नहीं मोड़ लेते हैं बल्कि उन रसूलों और नबियों को क़त्ल तक कर देने से नहीं झिझकते और शिर्क व तुग़यान को

राहे अ़मल बनाकर रहमान के औलिया की जगह शैतान के औलिया बन जाते हैं। जब उनकी हालत इस दर्जे तक पहुंच जाती है तो अब अल्लाह का क़ानून 'अ़मल का बदला' सामने आ जाता है और आख़िरत के दर्दनाक अ़ज़ाब के अलावा दुनिया ही में उनको ऐसी हलाकत व बर्बादी से दोचार कर देता है कि उस क़ौम का तमाम किब्र व ग़रूर, शर व फ़साद के शोलों में ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ ख़ाक कर दी जाती हैं और उनकी क़ौमी ज़िंदगी को ज़िल्लत के गढ़े में झोंक दिया जाता है, ताकि उनकी आंखें देख लें और सबक़ लेने वाले दिल भी यह समझ लें कि हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त व सरबुलन्दी के मालिक तुम नहीं हो और ज़िल्लत व इ़ज़्ज़त तुम्हारे हाथ में नहीं है, बल्कि उस क़ादिरे मुतलक़ हस्ती के क़ब्ज़े में है जो पूरी कायनात का पैदा करने वाला और मालिक है और जिसका यह एलान है कि बदकारों के लिए अंजामेकार ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा और कुछ नहीं है और हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त नेक लोगों के लिए ही है और वही इस हक़ीक़त को सामने रखकर जिसको चाहता है इ़ज़्ज़त बख़्शता है और जिसको चाहता है ज़िल्लत देता है।

पस जब हम फ़ितरत के इस क़ानून को नज़रों में रखकर बनी इसराईल के यहूदियों के उस अ़ह्द की तारीख़ पढ़ते हैं जो ऊपर दर्ज किए गए वाक़ियों से मुताल्लिक़ हैं तो यह बात चमकते दिन की तरह साफ़ नज़र आती है कि उनकी क़ौमी ज़िंदगी का क़िवाम ऊपर लिखी बद-अख़्लाक़ियों से ही बना था और उन्हें अपनी इस ज़िंदगी पर घमंड भी था, चुनांचे हज़रत दाऊद व सुलैमान ﷺ के बाद उनकी मज़हबी और अख़्लाक़ी पस्ती का यह हाल था कि झूठ, फ़रेब, ज़ुल्म व सरकशी और फ़साद व फ़ितना उनका तरीक़ा बन गया था, यहां तक कि शिर्क व बुतपरस्ती तक उनमें रच गई थी, लेकिन इसके बावजूद एक लम्बी मुद्दत तक अल्लाह के 'मोहलत के क़ानून' ने उनको मोहलत दी कि वे अपनी हालत की इस्लाह करें और उसकी सिफ़त 'रहमत' ने उनसे मुंह नहीं मोड़ा, बल्कि उनकी रुश्द व हिदायत और इस्लाहे अख़्लाक़ व आमाल के लिए नबियों और पैग़म्बरों का सिलसिला क़ायम रख, जो बराबर उनको नेक कामों पर उभारते और बदकारी से बचने को कहते रहते थे, ताकि उनको दीन व दुनिया की सरबुलन्दी हासिल हो और वे नबियों और रसूलों की औलाद होने

की हैसियत से दूसरों के लिए बेहतरीन नमूना बन सकें, मगर यहूदियों पर उनके इर्शाद व तब्लीग़ का क़तई कोई असर न हुआ और उनकी सरकशी और नाफ़रमानी बढ़ती गई और उनके उलेमा व अह्बार ने सोने-चांदी के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों में घट-बढ़ शुरू कर दी और हलाल को हराम और हराम को हलाल बनाने में निडर हो गए और आम लोगों ने किताबे इलाही को पीठ पीछे डालकर गुमराही को अपना इमाम बना लिया और बेबाकी के साथ हर क़िस्म की बदअख़्लाक़ी को अपना लिया और आख़िरकार उसके ख़ास व आम इस इंतिहाई शक़ावत व बदबख़्ती पर उतर आए कि अल्लाह के मासूम पैग़म्बरों को क़त्ल करना शुरू कर दिया और उनको झुठला करके उनके ख़ूने नाहक़ पर फ़ख़्र व मुबाहात करने लगे।

बख़्त नस्र

सातवीं सदी क़ब्ल मसीह के आख़िरी दौर में बाबिल (इराक़) की हुकूमत के तख़्त पर एक ज़बरदस्त बहादुर और ज़ालिम व जाबिर बादशाह बैठा। उसका नाम बनू कद नज़्र या बनू कदज़ार (Nebuchadenzzar) था। अरब उसको बख़्ते नस्र कहते थे। बनू कद नज़्र अगरचे एक शानदार बादशाह था, पर उसकी नज़रें शाम व फ़लस्तीन पर पड़ने लगीं। चुनांचे वह उस इलाक़े की ओर बढ़ा। नतीजा यह निकला कि वह फ़लस्तीन व शाम के शहरों और आबादियों को तबाह करता हुआ यरूशलम के दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। बादशाह, सरदारों और अमीरों (बड़ों) को क़ैद कर लिया। शहर की ईंट से ईंट बजा दी, हैकल की तमाम चीज़ों को लूट लिया गया। तौरात के तमाम नुस्ख़ों (प्रतियों) को जलाकर ख़ाक कर दिया गया और रिवायत में इख़्तिलाफ़ के साथ एक लाख से ज़्यादा यहूदियों को भेड़-बकरियों की तरह हंकाता हुआ पैदल बाबिल ले गया और सबको लौंडी-गुलाम बना लिया। उसने दमिश्क़ में भी अनगिनत यहूदियों को जान से मार दिया, यहां तक कि ख़ुद यहूदियों की ज़ुबान पर यह था कि नबियों के नाहक़ ख़ून की सज़ा है, जो हमको बाबुल के बादशाह की खुली तलवार के ज़रिए दी जा रही है।

गुलामी से निजात

बाबिल की गुलामी के उस ज़माने में यहूदियों के लिए उम्मीद की एक झलक यसइयाह और यर्मियाह (अ़लैहिमुस्सलाम) की उन पेशेनगोइयों में देखी जा सकती है जिनकी सच्चाई का वे तजुर्बा कर चुके थे और जिनमें यह ख़बर भी दी गई थी कि यहूदी बाबिल में सत्तर वर्ष गुलाम रहेंगे और यह मुद्दत गुज़रने के बाद फ़ारस से एक बादशाह ज़ाहिर होगा, जो अल्लाह का मसीह और उसका चरवाहा कहलाएगा और वह यहूदियों और यरूशलम का निजात दिलाने वाला होगा और उसका नाम ख़ोरस होगा। यह पेशेनगोई हज़रत यसइयाह (Isiah) के वाक़िए से लगभग एक सौ साठ वर्ष और हज़रत यर्मियाह (Jeremia) ने साठ साल पहले यहूदाह को उनकी उनकी तबाही व बर्बादी की पेशेनगोई के साथ-साथ सुना दी थी, यहां तक कि बाबिल के क़ियाम के दौरान में पेशेनगोई ज़ाहिर होने से थोड़ा पहले दानियाल (Daniel) ने अपने ख़्वाब में फ़ारस के उस बादशाह को एक ऐसे मेंढ़े की शक्ल में देखा था जिसके दो सींग हैं और जिब्रील ने उससे यह नतीजा बताया है कि इससे मुराद यह है कि वह बादशाह मादा (मीडिया) और फ़ारस दो बादशाहियों को मिला करइ बादशाही करेगा और इसी ख़्वाब में उन्होंने यह भी देखा कि एक और बकरा है जिसके माथे पर सिर्फ़ एक सींग है और उसने दो सींग वाले मेंढे को मग़लूब कर दिया और फिर जिब्रील ने उसकी ताबीर यह दी कि यह एक ऐसा ज़बरदस्त बादशाह होगा जो ईरान की उस शहनशाही का ख़ात्मा करके उस पर क़ाबिज़ हो जाएगा (यानी सिकन्दर यूनानी Alexander)।

तौरात के बयान और तारीख़

तारीख़ से पता चलता है कि 559 क़ब्ल मसीह (ईसा पूर्व) में अचानक मीडिया के रईस कम्बूचा के जानशीं अरश (ख़ोरस) ग़ैरमामूली हालात के तहत ज़ाहिर हुआ और कुछ ही दिनों में मीडिया (ईरान का उत्तरी-पश्चिमी हिस्सा) और फ़ारस (ईरान का दक्खिनी हिस्सा) की रियासतों ने अपनी ख़ुशी से उसको अपना अकेला शहंशाह मान लिया और वह एक ज़बरदस्त और ख़ुद मुख़्तार

बादशाह हो गया (फ़ारस वाले उसको अरश और गोरख कहते हैं लेकिन यह यूनानी में साइरस और इब्रानी में ख़ोरस और अरबी में ख़ुसरो के नामों से मशहूर है) यह वह वक़्त था कि बाबिल की सल्तनत बनू कद नज़र (बख़्त नस्र) के एक जानशीं बेल शाज़ार (Belteshazzar) के हाथ में थी। यह बादशाह अगरचे बख़्त नस्र की तरह बहादुर और वीर नहीं था, मगर ज़ुल्म और ऐयाशी में उससे भी आगे था, यहां तक कि ख़ुद उसकी अपनी प्रजा (रियाया) उसके बुरे कामों से परेशान और उसके ज़ुल्म से आजिज़ और हर वक़्त इन्क़लाब चाहने वाली रहती थी, चुनांचे बाबिल की रियाया ने कुछ अफ़सरों को इस बात पर तैयार किया कि वे ख़ोरस के पास जाएं और उसको दावत दें कि आप हमको बेलशाज़ार के ज़ुल्मों से निजात दिला कर अपनी रियाया बना लीजिए। ख़ोरस के पास यह वफ़्द उस वक़्त पहुंचा जबकि वह पूरब की मुहिम सर करने में लगा हुआ था। उसने वफ़्द की दरख़्वास्त को सुना और क़ुबूल किया और पूर्वी मुहिम से फ़ारिग़ होकर बाबिल पहुंचा और उसकी मज़बूत और न तस्ख़ीर होने वाली दोहरी शहर पनाह को गिराकर बाबिल की हुकूमत का ख़ात्मा कर दिया और तमाम रियाया को अमन देकर उनको बेलशाज़ार के ज़ुल्म से नजात दिलाई जिसका, बाबिल की रियाया ने बेहद शुक्रिया अदा किया और ख़ुशी से उसकी इताअ़त क़ुबूल कर ली।

जब ख़ोरस बाबिल के शहर में फ़त्ह करने वाले की शक्ल में दाख़िल हुआ तो दानियाल ने उसको तौरात (नबियों के सहीफ़े) की वे पेशीनगोइयां दिखाईं जो हज़रत यसईयाह और हज़रत यर्मियाह ने यहूदियों को ग़ुलामी से निजात दिलाने वाली हस्ती के बारे में की थीं। ख़ोरस उनको देखकर बेहद मुतास्सिर हुआ और उसने एलान कर दिया कि तमाम यहूदी आज़ाद हैं कि वे शाम व फ़लस्तीन मुल्क को वापस चले जाएं और वहां जाकर अल्लाह के मुक़द्दस घर यरूशलम (बैतुलमक़्दिस) और उसके हैकल (मस्जिद) को दोबारा तामीर करें और इस सिलसिले के तमाम ख़र्चे सरकारी ख़ज़ाने से अदा किए जाएं। यह भी एलान किया कि यही दीन 'दीने हक़' है और यरूशलम का ख़ुदा ही सच्चा ख़ुदा है।

'अज़रा की किताब' में है कि अगरचे ख़ोरस की बदौलत यहूदियों को

दोबारा आज़ादी और ख़ुशहाली नसीब हुई और हैकल की तामीर भी शाही ख़ज़ाने से शुरू हो गई, मगर अभी काम पूरा नहीं हुआ था कि ख़ोरस का इंतिक़ाल हो गया और उसका बेटा केक़बाद (कम्बूचा) भी जल्द मर गया, तब आठ साल के अन्दर ही दारा जो ख़ोरस का चचेरा भाई था, उसका जानशीं हुआ और जल्द ही इस तामीर को मुकम्मल करा दिया।

बनी इसराईल यहूदियों को अब फिर एक बार अम्न व इत्मीनान नसीब हुआ, उन्होंने अपनी हुकूमत को दोबारा जमाया और चूंकि शाहे बाबिल ने तौरेत के तमाम नुस्ख़ों को जलाकर ख़ाक कर दिया था, इसलिए उनके बार-बार कहने पर हज़रत उज़ैर (अज़रा) ﷺ ने अपनी याददाश्त से नए सिरे से उसको लिखवाया। क्या यह बात हैरान कर देने वाली नहीं हो सकती कि इतनी सख़्त ठोकर खाने और ज़िल्लत व रुसवाई की इस सबक़ भरी सज़ा बरदाश्त करने के बावजूद, जिनकी तफ़्सील अभी लिखी जा चुकी है, उनकी आंख खोलने और कानों को हरकत देने में कामियाबी न हुई और उनकी हालत इस आयत के मुताबिक़ साबित हुई कि 'उनके दिल थे, लेकिन वे समझते न थे, आंखें थीं, लेकिन देखते न थे, कान थे, लेकिन सुनते न थे।' यानी धीरे-धीरे उन्होंने फिर ज़ुल्म व फ़साद और बग़ावत व सरकशी पर कमर बांध ली और पिछली बद-आमालियों और बदकिरदारियों को ज़ाहिर करना शुरू कर दिया।

हज़रत यह्या ﷺ का क़त्ल

इस होश उड़ा देने वाले हादसे की तफ़्सील यह है कि बनी इसराईल के नबियों में से यह दौर हज़रत यह्या ﷺ की तब्लीग़ व दावत का दौर था और यहूदिया के इलाक़े में हज़रत यह्या ﷺ के वाज़ों का यह असर हो रहा था कि बनी इसराईल के दिल मुसख़्ख़र होते जाते थे और वे जिस तरफ़ भी निकल जाते थे, बहुत सारे लोग उन पर परवानों की तरह फ़िदा होने लगते थे। इधर तो यह हालत थी और दूसरी तरफ़ यहूदिया का बादशाह हीरोदेस (Herodias) निहायत ही बदकार और ज़ालिम था। वह हज़रत यह्या ﷺ की मक़्बूलियत देख-देखकर कांप-कांप जाता था, डरने लगता था कि कहीं यहूदिया की

बादशाही मेरे हाथ से निकल न जाए और हिदायत के रास्ते पर लगाने वाले इस शख़्स के पास न चली जाए? बदक़िस्मती कि हीरोदेस के सौतेले भाई का इंतिक़ाल हो गया। उसकी बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी और हीरोदेस की भाभी होने के अलावा उसकी रिश्ते की भतीजी भी थी। हीरोदेस उस पर आशिक़ हो गया और उससे निकाह कर लिया, चूंकि यह निकाह इसराईली मिल्लत के ख़िलाफ़ था, इसलिए हज़रत यह्या ने भरे दरबार में उसकी इस हरकत पर मलामत की और अल्लाह के ख़ौफ़ से डराया, हीरोदेस की महबूबा ने यह सुना तो ग़म व ग़ुस्से से बेताब हो गई और हीरोदेस को तैयार किया कि वह यह्या को क़त्ल कर दे। हीरोदेस अगरचे इस नसीहत से ख़ुद भी ख़फ़ा था, मगर इस इरादे में उसे झिझक थी, लेकिन महबूबा के बार-बार कहने पर उसने हज़रत यह्या का सर क़लम करके उस तश्त में रखकर उसके पास भेजवा दिया। बड़े हैरत की जगह है कि हज़रत यह्या से आम तौर पर मुहब्बत किए जाने के बावजूद किसी इसराईली को यह जुर्रात न हुई कि हीरोदेस की इस लानत भरी हरकत पर उसको रोके या मलामत करे, बल्कि एक जमाअत ने उसके इस लानत भरे अमल को अच्छी नज़र से देखा। अब हज़रत यह्या عليه السلام की शहादत के बाद हज़रत ईसा عليه السلام की दावत व तब्लीग़ का वक़्त आ गया और उन्होंने एलानिया यहूदियों की बिदअ़तों, शिर्क भरी रस्मों, ज़ुल्म भरी ख़स्लतों और बद-दीनी के ख़िलाफ़ ज़ुबान से जिहाद करना शुरू कर दिया। यहूदियों में यह सलाहियत कहां थी कि वे सही बात पर लब्बैक कहते। चुनांचे थोड़ी-सी तायदाद के सिवा भारी तायदाद ने उनकी मुख़ालफ़त शुरू कर दी। इसी दर्मियान नब्ती बादशाह हारिस ने जो हीरोदेस की पहली बीवी के रिश्ते से उसका ससुर था, उस पर चढ़ाई कर दी और सख़्त ख़ून ख़राबा करके हीरोदेस को ज़बरदस्त तौर पर हराया जिसने हीरोदेस की ताक़त का ख़ात्मा कर दिया। फिर भी यहूदिया की रियासत रोमियो के बलबूते पर क़ायम रही। उस वक़्त अगरचे आम तौर पर यहूदिया कहते थे कि हीरोदेस और इसराईलियों को यह ज़िल्लत और हार हज़रत यह्या عليه السلام के नाहक़ ख़ून के बदले में मिली, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने इस हादसे से कोई सबक़ नहीं लिया और वे अपने ज़ुल्म भरे मक़सद से बाज़ न आए और हज़रत ईसा की

मुख़ालफ़त में बुग़्ज़ व इनाद के साथ सरगर्म रहे, यहां तक कि शाह यहूदिया पिलाटेस (Pilate) से उनके क़त्ल की इजाज़त हासिल करके उनको घेर लिया, मगर अल्लाह ने उनके इरादों को नाकाम बनाकर हज़रत ईसा ﷺ को ज़िंदा आसमान पर उठा लिया।

अ़मल का बदला

आख़िर अ़मल का बदला सामने आया और अब ख़ुद यहूदियों की आपसी ख़ाना जंगी शुरू हो गई। वजह यह हुई कि इस दौर में यहूदियों के तीन फ़िर्क़े हो गए थे। एक फ़ुक़हा की जमाअ़त थी और उनको फ़रेसी (Pharisee) कहते थे और दूसरी जमाअ़त ज़ाहिर वालों की थी जो इलहामी लफ़्ज़ों के ज़ाहिर पर जम जाते थे, उनको सदूक़ी (Sadourcee) कहते थे और तीसरी जमाअ़त मुर्ताज़ राहिबों की थी। इनमें से फ़रेसी और सदूक़ी का इख़्तिलाफ़ इस दर्जा तरक़्क़ी पर गया था कि उनमें सख़्त ख़ूंरेज़ियां होने लगीं शाहे यहूदिया जिस गिरोह का तरफ़दार हो जाता था वह दूसरे गिरोह को बेदरेग क़त्ल करता था। आख़िर यह लड़ाई इतनी आगे बढ़ गई कि शाह यहूदिया को बाग़ियों के ख़िलाफ़ रूमियों से मदद लेनी पड़ती थी और बुतपरस्तों के हाथों यहूदियों को क़त्ल कराया जाता था। चुनांचे इस कशमकश में ईसा ﷺ के उठाए जाने के लगभग सत्तर साल बाद यहूदियों के हक़ के दावेदार यूहन्नान और शमऊन के बीच ज़बरदस्त लड़ाई हुई। यह वह ज़माना था जबकि तख़्त रूम पर उसका एक बहादुर जरनैल असेबानूम क़ैसरी कर रहा था और अर्ज़े यहूदिया में यूहन्नान को कामियाबी हो गई थी जो निहायत ज़ालिम और बदकार था और उसके ज़ालिम साथियों के हाथों अर्ज़े मुक़द्दस की तमाम गली-कूचों में ख़ून की नदियां बह रही थीं। इस हालत में यहूदियों ने अशेबानूस से मदद चाही और उसने अपने बेटे तैतूस (टेटस) को अर्ज़े मुक़द्दस को जीत लेने पर लगाया। वह आगे बढ़ा और अर्ज़े यहूदिया के क़रीब जाकर अपने एक क़ासिद नेक़ानूस को सुलह के लिए भेजा। यहूदियों का ज़ुल्म व सितम का पारा बहुत चढ़ा हुआ था, उन्होंने उसको भी क़त्ल कर दिया। अब तैतूस ग़ज़बनाक हो गया और उसने कहा, किसी फ़िर्क़े का लिहाज़ किए

बग़ैर तमाम यहूदियों की जड़ें काट कर जाऊंगा ताकि हमेशा के लिए इस सरज़मीन का झगड़ा पाक हो जाए। चुनांचे तारीख़ लिखने वालों के मुताबिक़ उसने बैतुल मक़्दिस पर इतना ज़बरदस्त हमला किया कि शहर पनाह टूट गई, हैकल की दीवारें बिखर गईं, घेराव के लंबे हो जाने से हज़ारों यहूदी भूखे मर गए और हज़ारों फ़रार होकर बे-वतन हो गए और जो बचे थे, वे तलवार के घाट उतार दिये गए। रूमियों ने हैकल की बेहुर्मती की और जहां एक ख़ुदा की इबादत होती थी, वहां बुत ले जाकर रख दिए।

ग़रज़ यह वह हार थी कि फिर यहूदी कभी न उभरे और अपनी कमीना और ज़ालिमाना हरकतों और एलानिया फ़िस्क़ व फ़ुजूर और नबियों के क़त्ल के बदले में हमेशा के लिए ज़लील व ख़्वार होकर रह गए।

तीसरा सुनहरा मौक़ा और यहूदियों का मुंह मोड़ना

कुछ दिनों के बाद रूमियों ने बुतपरस्ती छोड़कर ईसाइयत अख़्तियार कर ली और इस तरह उनके उरूज व तरक़्क़ी ने यहूदी क़ौमियत और मज़हब दोनों को मग़लूब व मक़्हूर बना दिया।

आप अभी पढ़ चुके हैं कि जब तीतूस रूमी ने बैतुल मक़्दिस को बर्बाद कर दिया तो यहूदियों की एक बड़ी तायदाद वहां से भागकर आस-पास के इलाक़े में जा बसी, उन्हीं में कुछ वे क़बीले भी हैं जो यसरिब (हिजाज़) और उसके आस-पास में जाकर आबाद हो गए थे। ये और इससे पहले और बाद के जो यहूदी क़बीले यहां आकर ठहर गए उनके इस बयान के मुताल्लिक़ तारीख़ लिखने वालों की राय यह है कि यहूदियों को तौरात और पुरानी किताबों (सहीफ़ों) से यह मालूम हो चुका था कि यह सरज़मीन नबी आख़िरुज़्ज़मां की दारुल हिजरत (हिजरत की जगह) बनेगी और यहूदी नबी आख़िरुज़्ज़मां के इतने इंतिज़ार में थे और उनके यहां उनके आने की इस क़दर शोहरत थी कि जब हज़रत यह्या ﷺ ने तब्लीग़ व दावत के ज़रिए पैग़ामे इलाही सुनाना शुरू किया तो यहूदियों ने जमा होकर उनसे साफ़ कहा कि हम तीन नबियों का इंतिज़ार कर रहे हैं—एक मसीह ﷺ का, दूसरे इलयास ﷺ का और तीसरे उस मशहूर व मारूफ़ नबी आख़िरुज़्ज़मां का, जिसके आने की

शोहरत हमारे बीच इतनी है कि हम उसका नाम लेने की भी ज़रूरत नहीं समझते और सिर्फ़ उसकी तरफ़ इशारा कर देने से हर एक यहूदी उसको पहचान लेता है। तौरात इंजील, नबियों के सहीफ़े और यहूदियों की तारीख़ में और भी बहुत-सी गवाहियां मौजूद हैं कि जिनसे यह पता चलता है कि यहूदियों को ऐसे पैग़म्बर का इंतिज़ार था जो आख़िरी नबी होगा और हिजाज़ में भेजा जाएगा। इसी वजह से जब भी वे अपने मर्कज़ से बिखरे हैं तो उनकी एक माक़ूल तायदाद उसी के इन्तिज़ार में यसरिब में जा बसी।

हमेशा की ज़िल्लत और नुक़्सान

पस कितनी बद-बख़्त व बदक़िस्मत है वह जमाअ़त जिसने हज़रत ईसा अ़० की पैदाइश से लगभग 570 साल बाद तक इस इंतिज़ार में गुज़ारे कि यसरिब की इस धरती पर जब अल्लाह तआ़ला का वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हिजरत करके आएगा, तो हम उसकी पैरवी करके अपनी क़ौमी और मज़हबी बड़कप्पन और वक़ार (Prestige) को फिर एक बार हासिल करेंगे। यहां तक कि यसरिब के क़बीले औस व ख़ज़रज के मुक़ाबले में भी उसी की मदद के इंतिज़ार में रहते थे। मगर जब वह सच्चा नबी आया और उसने मूसा और ईसा और तौरेत और इंजील की तस्दीक़ करते हुए उनको हक़ का पैग़ाम सुनाया तो सबसे पहले उन्होंने (यहूदियों) ने ही इनके ख़िलाफ़ बुग़्ज़ व अ़दावत ज़ाहिर की और उसकी आवाज़ पर कान न धरते हुए उसकी मुख़ालफ़त को अपनी ज़िंदगी का मक़्सद बना लिया और नतीजे में हमेशा-हमेशा की ज़िल्लत और बदक़िस्मती को मोल ले लिया।

अल्लाह तआ़ला ने तो शुरू ही में उनको तंबीह कर दी थी कि दो बार की सरकशी और उसके अंजाम के बाद हम तुमको एक मौक़ा और इनायत करेंगे, पर अगर तुम उस वक़्त संभल गए और तुमने अल्लाह की फ़रमांबरदारी का सबूत दिया और अल्लाह के पैग़म्बर की सदाक़त का इक़रार करके दीने हक़ को क़ुबूल कर लिया तो हम भी तुम्हारी पुरानी अ़ज़्मत को वापस ले आएंगे और दीन व दुनिया की सआ़दत से तुम्हें नवाज़ेंगे, लेकिन अगर तुमने इस मौक़े को भी गंवा दिया और पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि व

दुनिया के इंक़िलाबों की तारीख़ में अहम जगह रखती है, एक बाबिल के क़ाहिर बादशाह बनू कद नज़्र (बख़्त नस्र) के हाथ से यह लगभग 104 क़ब्ल मसीह का वाक़िया है और दूसरी तैतूस रोमी के हाथों से और यह वाक़िया मसीह अलै॰ के उठाए जाने से लगभग सत्तर साल बाद पेश आया और इन ही दो वाक़ियों में यहूद और यहूदी क़ौमियत और यहूदी मज़हब पर वह कुछ हो गुज़रा जिसकी इत्तिला पहले तौरेत (नबियों के सहीफ़ों) में दे दी गई थी और जिसकी तस्दीक़ के लिए कुरआन भी गवाही दे रहा है।

इसलिए रद्द किए जाने के ख़ौफ़ के बग़ैर यह कहना सही है कि यहूद की बद-किरदारियों के नतीजे में जाबिर व क़ाहिर बादशाहों के हाथों उनकी तबाही व बर्बादी के जो दो सानहे पेश आए और जिनका ज़िक्र सूरः इसरा (बनी इसराईल) में है, वह बेशक बख़्त नस्र और तैतूस (Tatus) ही से ताल्लुक़ रखते हैं तो अब बिल्कुल ज़रूरी है कि इन हर दो वाक़ियों की तफ़्सील बयान करके यह दिखाया जाए कि उस ज़माने में यहूद की शरारतें और फ़साद भरी कारगुज़ारियां इस हद तक बढ़ गई थीं कि उन दोनों तबाह कर देने वाले हादसों में उन पर जो कुछ गुज़रा, वह उनकी बदआमालियों ही का नतीजा था और अमल के नतीजे ही ने इन दो ताक़तों की शक्लों में अपने को ज़ाहिर किया था।

यहूद की शरारत का पहला दौर

अल्लाह तआला के बनाए हुए कुदरती क़ानून का हमेशा से यह अटल फ़ैसला रहा है कि जब बद-अख़्लाक़ी, फ़ित्ना व फ़साद, ख़ूरेज़ी, जब्र व ज़ुल्म और हक़ के मुक़ाबले में बुग़्ज़ व हसद किसी जमाअत का क़ौमी मिजाज़ बन जाते हैं और कुछ लोगों में नहीं, बल्कि पूरी क़ौम के अन्दर ये बातें जड़ पकड़ लेती हैं तो फिर हक़ क़ुबूल करने की सही सलाहियत उनसे छीन ली जाती है और वे इस दर्जा बे-ख़ौफ़ और बेबाक हो जाते हैं कि अगर उनके पास अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हक़ की दावत देने और अल्लाह का पैग़ाम सुनाने आते हैं तो वे सिर्फ़ उस दावत से मुंह ही नहीं मोड़ लेते हैं बल्कि उन रसूलों और नबियों को क़त्ल तक कर देने से नहीं झिझकते और शिर्क व तुग़यान को

राहे अमल बनाकर रहमान के औलिया की जगह शैतान के औलिया बन जाते हैं। जब उनकी हालत इस दर्जे तक पहुंच जाती है तो अब अल्लाह का क़ानून 'अमल का बदला' सामने आ जाता है और आख़िरत के दर्दनाक अज़ाब के अलावा दुनिया ही में उनको ऐसी हलाकत व बर्बादी से दोचार कर देता है कि उस क़ौम का तमाम किब्र व ग़रूर, शर व फ़साद के शोलों में ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ ख़ाक कर दी जाती हैं और उनकी क़ौमी ज़िंदगी को ज़िल्लत के गढ़े में झोंक दिया जाता है, ताकि उनकी आंखें देख लें और सबक़ लेने वाले दिल भी यह समझ लें कि हक़ीक़ी इज़्ज़त व सरबुलन्दी के मालिक तुम नहीं हो और ज़िल्लत व इज़्ज़त तुम्हारे हाथ में नहीं है, बल्कि उस क़ादिरे मुतलक़ हस्ती के क़ब्ज़े में है जो पूरी कायनात का पैदा करने वाला और मालिक है और जिसका यह एलान है कि बदकारों के लिए अंजामेकार ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा और कुछ नहीं है और हक़ीक़ी इज़्ज़त नेक लोगों के लिए ही है और वही इस हक़ीक़त को सामने रखकर जिसको चाहता है इज़्ज़त बख़्शता है और जिसको चाहता है ज़िल्लत देता है।

पस जब हम फ़ितरत के इस क़ानून को नज़रों में रखकर बनी इसराईल के यहूदियों के उस अह्द की तारीख़ पढ़ते हैं जो ऊपर दर्ज किए गए वाक़ियों से मुताल्लिक़ हैं तो यह बात चमकते दिन की तरह साफ़ नज़र आती है कि उनकी क़ौमी ज़िंदगी का क़िवाम ऊपर लिखी बद-अख़्लाक़ियों से ही बना था और उन्हें अपनी इस ज़िंदगी पर घमंड भी था, चुनांचे हज़रत दाऊद व सुलेमान ﷺ के बाद उनकी मज़हबी और अख़्लाक़ी पस्ती का यह हाल था कि झूठ, फ़रेब, ज़ुल्म व सरकशी और फ़साद व फ़ितना उनका तरीक़ा बन गया था, यहां तक कि शिर्क व बुतपरस्ती तक उनमें रच गई थी, लेकिन इसके बावजूद एक लम्बी मुद्दत तक अल्लाह के 'मोहलत के क़ानून' ने उनको मोहलत दी कि वे अपनी हालत की इस्लाह करें और उसकी सिफ़त 'रहमत' ने उनसे मुंह नहीं मोड़ा, बल्कि उनकी रुश्द व हिदायत और इस्लाहे अख़्लाक व आमाल के लिए नबियों और पैग़म्बरों का सिलसिला क़ायम रख, जो बराबर उनको नेक कामों पर उभारते और बदकारी से बचने को कहते रहते थे, ताकि उनको दीन व दुनिया की सरबुलन्दी हासिल हो और वे नबियों और रसूलों की औलाद होने

की हैसियत से दूसरों के लिए बेहतरीन नमूना बन सकें, मगर यहूदियों पर उनके इर्शाद व तब्लीग़ का क़तई कोई असर न हुआ और उनकी सरकशी और नाफ़रमानी बढ़ती गई और उनके उलेमा व अह्बार ने सोने-चांदी के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों में घट-बढ़ शुरू कर दी और हलाल को हराम और हराम को हलाल बनाने में निडर हो गए और आम लोगों ने किताबे इलाही को पीठ पीछे डालकर गुमराही को अपना इमाम बना लिया और बेबाकी के साथ हर क़िस्म को बदअख़्लाक़ी को अपना लिया और आख़िरकार उसके ख़ास व आम इस इंतिहाई शक़ावत व बदबख़्ती पर उतर आए कि अल्लाह के मासूम पैग़म्बरों को क़त्ल करना शुरू कर दिया और उनको झुठला करके उनके ख़ूने नाहक़ पर फ़ख़्र व मुबाहात करने लगे।

बख़्त नस्र

सातवीं सदी क़ब्ल मसीह के आख़िरी दौर में बाबिल (इराक़) की हुकूमत के तख़्त पर एक ज़बरदस्त बहादुर और ज़ालिम व जाबिर बादशाह बैठा। उसका नाम बनू कद नज़्र या बनू कदज़ार (Nebuchadenzzar) था। अरब उसको बख़्ते नस्र कहते थे। बनू कद नज़्र अगरचे एक शानदार बादशाह था, पर उसकी नज़रें शाम व फ़लस्तीन पर पड़ने लगीं। चुनांचे वह उस इलाक़े की ओर बढ़ा। नतीजा यह निकला कि वह फ़लस्तीन व शाम के शहरों और आबादियों को तबाह करता हुआ यरूशलम के दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। बादशाह, सरदारों और अमीरों (बड़ों) को क़ैद कर लिया। शहर की ईंट से ईंट बजा दी, हैकल की तमाम चीज़ों को लूट लिया गया। तौरात के तमाम नुस्ख़ों (प्रतियों) को जलाकर ख़ाक कर दिया गया और रिवायत में इख़्तिलाफ़ के साथ एक लाख से ज़्यादा यहूदियों को भेड़-बकरियों की तरह हंकाता हुआ पैदल बाबिल ले गया और सबको लौंडी-ग़ुलाम बना लिया। उसने दमिश्क़ में भी अनगिनत यहूदियों को जान से मार दिया, यहां तक कि ख़ुद यहूदियों की ज़ुबान पर यह था कि नबियों के नाहक़ ख़ून की सज़ा है, जो हमको बाबुल के बादशाह की खुली तलवार के ज़रिए दी जा रही है।

गुलामी से निजात

बाबिल की गुलामी के उस ज़माने में यहूदियों के लिए उम्मीद की एक झलक यसइयाह और यर्मियाह (अ़लैहिमुस्सलाम) की उन पेशेनगोइयों में देखी जा सकती है जिनकी सच्चाई का वे तजुर्बा कर चुके थे और जिनमें यह ख़बर भी दी गई थी कि यहूदी बाबिल में सत्तर वर्ष गुलाम रहेंगे और यह मुद्दत गुज़रने के बाद फ़ारस से एक बादशाह ज़ाहिर होगा, जो अल्लाह का मसीह और उसका चरवाहा कहलाएगा और वह यहूदियों और यरूशलम का निजात दिलाने वाला होगा और उसका नाम ख़ोरस होगा। यह पेशेनगोई हज़रत यसइयाह (Isiah) के वाक़िए से लगभग एक सौ साठ वर्ष और हज़रत यर्मियाह (Jeremia) ने साठ साल पहले यहूदाह को उनकी उनकी तबाही व बर्बादी की पेशेनगोई के साथ-साथ सुना दी थी, यहां तक कि बाबिल के क़ियाम के दौरान में पेशेनगोई ज़ाहिर होने से थोड़ा पहले दानियाल (Daniel) ने अपने ख़्वाब में फ़ारस के उस बादशाह को एक ऐसे मेंढ़े की शक्ल में देखा था जिसके दो सींग हैं और जिब्रील ने उससे यह नतीजा बताया है कि इससे मुराद यह है कि वह बादशाह मादा (मीडिया) और फ़ारस दो बादशाहियों को मिला करइ बादशाही करेगा और इसी ख़्वाब में उन्होंने यह भी देखा कि एक और बकरा है जिसके माथे पर सिर्फ़ एक सींग है और उसने दो सींग वाले मेंढे को मग़लूब कर दिया और फिर जिब्रील ने उसकी ताबीर यह दी कि यह एक ऐसा ज़बरदस्त बादशाह होगा जो ईरान की उस शहनशाही का ख़ात्मा करके उस पर क़ाबिज़ हो जाएगा (यानी सिकन्दर यूनानी Alexander)।

तौरात के बयान और तारीख़

तारीख़ से पता चलता है कि 559 क़ब्ल मसीह (ईसा पूर्व) में अचानक मीडिया के रईस कम्बूचा के जानशीं अरश (ख़ोरस) ग़ैरमामूली हालात के तहत ज़ाहिर हुआ और कुछ ही दिनों में मीडिया (ईरान का उत्तरी-पश्चिमी हिस्सा) और फ़ारस (ईरान का दक्खिनी हिस्सा) की रियासतों ने अपनी ख़ुशी से उसको अपना अकेला शहंशाह मान लिया और वह एक ज़बरदस्त और ख़ुद मुख़्तार

बादशाह हो गया (फ़ारस वाले उसको अरश और गोरख कहते हैं लेकिन यह यूनानी में साइरस और इब्रानी में ख़ोरस और अरबी में ख़ुसरो के नामों से मशहूर है) यह वह वक़्त था कि बाबिल की सल्तनत बनू कद नज़र (बख़्त नस्र) के एक जानशीं बेल शाज़ार (Belteshazzar) के हाथ में थी। यह बादशाह अगरचे बख़्त नस्र की तरह बहादुर और वीर नहीं था, मगर ज़ुल्म और ऐयाशी में उससे भी आगे था, यहां तक कि ख़ुद उसकी अपनी प्रजा (रियाया) उसके बुरे कामों से परेशान और उसके ज़ुल्म से आजिज़ और हर वक़्त इन्क़लाब चाहने वाली रहती थी, चुनांचे बाबिल की रियाया ने कुछ अफ़सरों को इस बात पर तैयार किया कि वे ख़ोरस के पास जाएं और उसको दावत दें कि आप हमको बेलशाज़ार के ज़ुल्मों से निजात दिला कर अपनी रियाया बना लीजिए। ख़ोरस के पास यह वफ़्द उस वक़्त पहुंचा जबकि वह पूरब की मुहिम सर करने में लगा हुआ था। उसने वफ़्द की दरख़्वास्त को सुना और क़ुबूल किया और पूर्वी मुहिम से फ़ारिग़ होकर बाबिल पहुंचा और उसकी मज़बूत और न तस्ख़ीर होने वाली दोहरी शहर पनाह को गिराकर बाबिल की हुकूमत का ख़ात्मा कर दिया और तमाम रियाया को अमन देकर उनको बेलशाज़ार के ज़ुल्म से नजात दिलाई जिसका, बाबिल की रियाया ने बेहद शुक्रिया अदा किया और ख़ुशी से उसकी इताअत क़ुबूल कर ली।

जब ख़ोरस बाबिल के शहर में फ़त्ह करने वाले की शक्ल में दाख़िल हुआ तो दानियाल ने उसको तौरात (नबियों के सहीफ़े) की वे पेशीनगोइयां दिखाईं जो हज़रत यसईयाह और हज़रत यर्मियाह ने यहूदियों को ग़ुलामी से निजात दिलाने वाली हस्ती के बारे में की थीं। ख़ोरस उनको देखकर बेहद मुतास्सिर हुआ और उसने एलान कर दिया कि तमाम यहूदी आज़ाद हैं कि वे शाम व फ़लस्तीन मुल्क को वापस चले जाएं और वहां जाकर अल्लाह के मुक़द्दस घर यरूशलम (बैतुलमक़्दिस) और उसके हैकल (मस्जिद) को दोबारा तामीर करें और इस सिलसिले के तमाम ख़र्चे सरकारी ख़ज़ाने से अदा किए जाएं। यह भी एलान किया कि यही दीन 'दीने हक़' है और यरूशलम का ख़ुदा ही सच्चा ख़ुदा है।

'अज़रा की किताब' में है कि अगरचे ख़ोरस की बदौलत यहूदियों को

दोबारा आज़ादी और ख़ुशहाली नसीब हुई और हैकल की तामीर भी शाही ख़ज़ाने से शुरू हो गई, मगर अभी काम पूरा नहीं हुआ था कि ख़ोरस का इंतिक़ाल हो गया और उसका बेटा केक़बाद (कम्बूचा) भी जल्द मर गया, तब आठ साल के अन्दर ही दारा जो ख़ोरस का चचेरा भाई था, उसका जानशीं हुआ और जल्द ही इस तामीर को मुकम्मल करा दिया।

बनी इसराईल यहूदियों को अब फिर एक बार अम्न व इत्मीनान नसीब हुआ, उन्होंने अपनी हुकूमत को दोबारा जमाया और चूंकि शाहे बाबिल ने तौरेत के तमाम नुस्ख़ों को जलाकर ख़ाक कर दिया था, इसलिए उनके बार-बार कहने पर हज़रत उज़ैर (अज़रा) ﷺ ने अपनी याददाश्त से नए सिरे से उसको लिखवाया। क्या यह बात हैरान कर देने वाली नहीं हो सकती कि इतनी सख़्त ठोकर खाने और ज़िल्लत व रुसवाई की इस सबक़ भरी सज़ा बरदाश्त करने के बावजूद, जिनकी तफ़्सील अभी लिखी जा चुकी है, उनकी आंख खोलने और कानों को हरकत देने में कामियाबी न हुई और उनकी हालत इस आयत के मुताबिक़ साबित हुई कि 'उनके दिल थे, लेकिन वे समझते न थे, आंखें थीं, लेकिन देखते न थे, कान थे, लेकिन सुनते न थे।' यानी धीरे-धीरे उन्होंने फिर ज़ुल्म व फ़साद और बग़ावत व सरकशी पर कमर बांध ली और पिछली बद-आमालियों और बदकिरदारियों को ज़ाहिर करना शुरू कर दिया।

हज़रत यह्या ﷺ का क़त्ल

इस होश उड़ा देने वाले हादसे की तफ़्सील यह है कि बनी इसराईल के नबियों में से यह दौर हज़रत यह्या ﷺ की तब्लीग़ व दावत का दौर था और यहूदिया के इलाक़े में हज़रत यह्या ﷺ के वाज़ों का यह असर हो रहा था कि बनी इसराईल के दिल मुसख़्ख़र होते जाते थे और वे जिस तरफ़ भी निकल जाते थे, बहुत सारे लोग उन पर परवानों की तरह फ़िदा होने लगते थे। इधर तो यह हालत थी और दूसरी तरफ़ यहूदिया का बादशाह हीरोदेस (Herodias) निहायत ही बदकार और ज़ालिम था। वह हज़रत यह्या ﷺ की मक़्बूलियत देख-देखकर कांप-कांप जाता था, डरने लगता था कि कहीं यहूदिया की

बादशाही मेरे हाथ से निकल न जाए और हिदायत के रास्ते पर लगाने वाले इस शख़्स के पास न चली जाए? बदक़िस्मती कि हीरोदेस के सौतेले भाई का इंतिक़ाल हो गया। उसकी बीवी बहुत ख़ुबसूरत थी और हीरोदेस की भाभी होने के अलावा उसकी रिश्ते की भतीजी भी थी। हीरोदेस उस पर आशिक़ हो गया और उससे निकाह कर लिया, चूंकि यह निकाह इसराईली मिल्लत के ख़िलाफ़ था, इसलिए हज़रत यह्या ने भरे दरबार में उसकी इस हरकत पर मलामत की और अल्लाह के ख़ौफ़ से डराया, हीरोदेस की महबूबा ने यह सुना तो ग़म व गुस्से से बेताब हो गई और हीरोदेस को तैयार किया कि वह यह्या को क़त्ल कर दे। हीरोदेस अगरचे इस नसीहत से ख़ुद भी ख़फ़ा था, मगर इस इरादे में उसे झिझक थी, लेकिन महबूबा के बार-बार कहने पर उसने हज़रत यह्या का सर क़लम करके उस तश्त में रखकर उसके पास भेजवा दिया। बड़े हैरत की जगह है कि हज़रत यह्या से आम तौर पर मुहब्बत किए जाने के बावजूद किसी इसराईली को यह जुर्रत न हुई कि हीरोदेस की इस लानत भरी हरकत पर उसको रोके या मलामत करे, बल्कि एक जमाअत ने उसके इस लानत भरे अ़मल को अच्छी नज़र से देखा। अब हज़रत यह्या عليه السلام की शहादत के बाद हज़रत ईसा عليه السلام की दावत व तब्लीग़ का वक़्त आ गया और उन्होंने एलानिया यहूदियों की बिदअ़तों, शिर्क भरी रस्मों, ज़ुल्म भरी ख़स्लतों और बद-दीनी के ख़िलाफ़ ज़ुबान से जिहाद करना शुरू कर दिया। यहूदियों में यह सलाहियत कहां थी कि वे सही बात पर लब्बैक कहते। चुनांचे थोड़ी-सी तायदाद के सिवा भारी तायदाद ने उनकी मुख़ालफ़त शुरू कर दी। इसी दर्मियान नब्ती बादशाह हारिस ने जो हीरोदेस की पहली बीवी के रिश्ते से उसका ससुर था, उस पर चढ़ाई कर दी और सख़्त ख़ून ख़राबा करके हीरोदेस को ज़बरदस्त तौर पर हराया जिसने हीरोदेस की ताक़त का ख़ात्मा कर दिया। फिर भी यहूदिया की रियासत रोमियो के बलबूते पर क़ायम रही। उस वक़्त अगरचे आम तौर पर यहूदिया कहते थे कि हीरोदेस और इसराईलियों को यह ज़िल्लत और हार हज़रत यह्या عليه السلام के नाहक़ ख़ून के बदले में मिली, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने इस हादसे से कोई सबक़ नहीं लिया और वे अपने ज़ुल्म भरे मक़्सद से बाज़ न आए और हज़रत ईसा की

मुख़ालफ़त में बुग़्ज़ व इनाद के साथ सरगर्म रहे, यहां तक कि शाह यहूदिया पिलाटेस (Pilate) से उनके क़त्ल की इजाज़त हासिल करके उनको घेर लिया, मगर अल्लाह ने उनके इरादों को नाकाम बनाकर हज़रत ईसा ﷺ को ज़िंदा आसमान पर उठा लिया।

अमल का बदला

आख़िर अमल का बदला सामने आया और अब ख़ुद यहूदियों की आपसी ख़ाना जंगी शुरू हो गई। वजह यह हुई कि इस दौर में यहूदियों के तीन फ़िर्क़े हो गए थे। एक फ़ुक़हा की जमाअ़त थी और उनको फ़रेसी (Pharisee) कहते थे और दूसरी जमाअ़त ज़ाहिर वालों की थी जो इलहामी लफ़्ज़ों के ज़ाहिर पर जम जाते थे, उनको सदूक़ी (Sadourcee) कहते थे और तीसरी जमाअ़त मुर्ताज़ राहिबों की थी। इनमें से फ़रेसी और सदूक़ी का इख़्तिलाफ़ इस दर्जा तरक़्क़ी पर गया था कि उनमें सख़्त ख़ूरेज़ियां होने लगीं शाहे यहूदिया जिस गिरोह का तरफ़दार हो जाता था वह दूसरे गिरोह को बेदरेग़ क़त्ल करता था। आख़िर यह लड़ाई इतनी आगे बढ़ गई कि शाह यहूदिया को बाग़ियों के ख़िलाफ़ रूमियों से मदद लेनी पड़ती थी और बुतपरस्तों के हाथों यहूदियों को क़त्ल कराया जाता था। चुनांचे इस कशमकश में ईसा ﷺ के उठाए जाने के लगभग सत्तर साल बाद यहूदियों के हक़ के दावेदार यूहन्नान और शमऊन के बीच ज़बरदस्त लड़ाई हुई। यह वह ज़माना था जबकि तख़्त रूम पर उसका एक बहादुर जरनैल असेबानूस कैसरी कर रहा था और अर्ज़े यहूदिया में यूहन्नान को कामियाबी हो गई थी जो निहायत ज़ालिम और बदकार था और उसके ज़ालिम साथियों के हाथों अर्ज़े मुक़द्दस की तमाम गली-कूचों में ख़ून की नदियां बह रही थीं। इस हालत में यहूदियों ने अशेबानूस से मदद चाही और उसने अपने बेटे तैतूस (टेटस) को अर्ज़े मुक़द्दस को जीत लेने पर लगाया। वह आगे बढ़ा और अर्ज़े यहूदिया के क़रीब जाकर अपने एक क़ासिद नेक़ानूस को सुलह के लिए भेजा। यहूदियों का ज़ुल्म व सितम का पारा बहुत चढ़ा हुआ था, उन्होंने उसको भी क़त्ल कर दिया। अब तैतूस ग़ज़बनाक हो गया और उसने कहा, किसी फ़िर्क़े का लिहाज़ किए

बग़ैर तमाम यहूदियों की जड़ें काट कर जाऊंगा ताकि हमेशा के लिए इ
सरज़मीन का झगड़ा पाक हो जाए। चुनांचे तारीख़ लिखने वालों के मुताबि
उसने बैतुल मक़्दिस पर इतना ज़बरदस्त हमला किया कि शहर पनाह टूट ग
हैकल की दीवारें बिखर गईं, घेराव के लंबे हो जाने से हज़ारों यहूदी भूखे म
गए और हज़ारों फ़रार होकर बे-वतन हो गए और जो बचे थे, वे तलवार
घाट उतार दिये गए। रूमियों ने हैकल की बेहुर्मती की और जहां एक ख़ु
की इबादत होती थी, वहां बुत ले जाकर रख दिए।

ग़रज़ यह वह हार थी कि फिर यहूदी कभी न उभरे और अपनी कमीन
और ज़ालिमाना हरकतों और एलानिया फ़िस्क़ व फ़ुजूर और नबियों के क़त
के बदले में हमेशा के लिए ज़लील व ख़्वार होकर रह गए।

तीसरा सुनहरा मौक़ा और यहूदियों का मुंह मोड़ना

कुछ दिनों के बाद रूमियों ने बुतपरस्ती छोड़कर ईसाइयत अख़्तियार क
ली और इस तरह उनके उरूज व तरक़्क़ी ने यहूदी क़ौमियत और मज़हब दोन
को मग़्लूब व मक़्हूर बना दिया।

आप अभी पढ़ चुके हैं कि जब तीतूस रूमी ने बैतुल मक़्दिस को बर्बा
कर दिया तो यहूदियों की एक बड़ी तायदाद वहां से भागकर आस-पास के
इलाक़े में जा बसी, उन्हीं में कुछ वे क़बीले भी हैं जो यसरिब (हिजाज़) औ
उसके आस-पास में जाकर आबाद हो गए थे। ये और इससे पहले और बा
के जो यहूदी क़बीले यहां आकर ठहर गए उनके इस बयान के मुताल्लिक़
तारीख़ लिखने वालों की राय यह है कि यहूदियों को तौरात और पुरान
किताबों (सहीफ़ों) से यह मालूम हो चुका था कि यह सरज़मीन नबी
आख़िरुज़्ज़मां की दारुल हिजरत (हिजरत की जगह) बनेगी और यहूदी नबी
आख़िरुज़्ज़मां के इतने इंतिज़ार में थे और उनके यहां उनके आने की इस क़द
शोहरत थी कि जब हज़रत यह्या ﷺ ने तब्लीग़ व दावत के ज़रिए पैग़ाम
इलाही सुनाना शुरू किया तो यहूदियों ने जमा होकर उनसे साफ़ कहा कि हम
तीन नबियों का इंतिज़ार कर रहे हैं—एक मसीह ﷺ का, दूसरे इलयास ﷺ
का और तीसरे उस मशहूर व मारूफ़ नबी आख़िरुज़्ज़मां का, जिसके आने की

शोहरत हमारे बीच इतनी है कि हम उसका नाम लेने की भी ज़रूरत नहीं समझते और सिर्फ़ उसकी तरफ़ इशारा कर देने से हर एक यहूदी उसको पहचान लेता है। तौरात इंजील, नबियों के सहीफ़े और यहूदियों की तारीख़ में और भी बहुत-सी गवाहियां मौजूद हैं कि जिनसे यह पता चलता है कि यहूदियों को ऐसे पैग़म्बर का इंतिज़ार था जो आख़िरी नबी होगा और हिजाज़ में भेजा जाएगा। इसी वजह से जब भी वे अपने मर्कज़ से बिखरे हैं तो उनकी एक माक़ूल तायदाद उसी के इन्तिज़ार में यसरिब में जा बसी।

हमेशा की ज़िल्लत और नुक़सान

पस कितनी बद-बख़्त व बदक़िस्मत है वह जमाअ़त जिसने हज़रत ईसा عليه السلام की पैदाइश से लगभग 570 साल बाद तक इस इंतिज़ार में गुज़ारे कि यसरिब की इस धरती पर जब अल्लाह तआ़ला का वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हिजरत करके आएगा, तो हम उसकी पैरवी करके अपनी क़ौमी और मज़हबी बड़कप्पन और वक़ार (Prestige) को फिर एक बार हासिल करेंगे। यहां तक कि यसरिब के क़बीले औस व ख़ज़रज के मुक़ाबले में भी उसी की मदद के इंतिज़ार में रहते थे। मगर जब वह सच्चा नबी आया और उसने मूसा और ईसा और तौरेत और इंजील की तस्दीक़ करते हुए उनको हक़ का पैग़ाम सुनाया तो सबसे पहले उन्होंने (यहूदियों) ने ही इनके ख़िलाफ़ बुग़्ज़ व अ़दावत ज़ाहिर की और उसकी आवाज़ पर कान न धरते हुए उसकी मुख़ालफ़त को अपनी ज़िंदगी का मक़्सद बना लिया और नतीजे में हमेशा-हमेशा की ज़िल्लत और बदक़िस्मती को मोल ले लिया।

अल्लाह तआ़ला ने तो शुरू ही में उनको तंबीह कर दी थी कि दो बार की सरकशी और उसके अंजाम के बाद हम तुमको एक मौक़ा और इनायत करेंगे, पर अगर तुम उस वक़्त संभल गए और तुमने अल्लाह की फ़रमांबरदारी का सबूत दिया और अल्लाह के पैग़म्बर की सदाक़त का इक़रार करके दीने हक़ को क़ुबूल कर लिया तो हम भी तुम्हारी पुरानी अ़ज़्मत को वापस ले आएंगे और दीन व दुनिया की सआ़दत से तुम्हें नवाज़ेंगे, लेकिन अगर तुमने इस मौक़े को भी गंवा दिया और पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम के साथ भी पुरानी शरारतें कीं तो हम भी अमल के बदले का क़ानून लागू कर देंगे।

तर्जुमा– *'और अगर फिर वही करोगे तो हम फिर वही करेंगे।'* (17 : 8)

ग़रज़ जब यहूदियों ने इस बार भी अपनी क़ौमी आदत को हाथ से न जाने दिया तो अल्लाह तआला ने भी उनके हक़ में यह आख़िरी फ़ैसला सुना दिया–

'ज़ुरिबत अलैहिमु ज़-ज़िल्लतु वल मसकनः व बाअ बिग़ज़बिम मिनल्लाह०'

और यही हुआ भी कि यहूदी क़ौम को फिर कभी इज़्ज़त नसीब न हुई और न हुकूमत। वे सदियों यूरोप में हक़ीर नज़रों से देखे जाते रहे। (शेक्सपियर के ड्रामा 'मर्चेन्टस ऑफ़ वेनिस' 'शाई लॉक' का किरदार) यहां तक कि तीसरी बार जंगे अज़ीम दोम (द्वितीय युद्ध) में हिटलर के हाथों लाखों यहूदियों का क़त्ले आम हुआ, उनके लिए एक बार फिर जीना दूभर हुआ और उनको जर्मनी और यूरोप से अमरीका मुंतक़िल होना पड़ा। वह अगरचे अमरीका और साम्राज्यवादी ताक़तों के सहारे मश्रिक़े वुस्ता (मध्यपूर्व) में एक छोटे से टुकड़े में अपनी हुकूमत क़ायम करने में कामियाब हो गए, लेकिन यह हुकूमत बड़ी ताक़तों के दम पर क़ायम है और कौन जानता है कि यह कब तक क़ायम रहती है। जो लोग इस वक़्त 'सोशलिस्ट' दुनिया का ज़वाल देख रहे हैं, वे अच्छी तरह समझ सकते हैं कि इसराईल का क़ियाम किस क़दर वक़्ती साबित हो सकता है। दूसरे लफ़्ज़ों में यहूदी के साथ कुछ ऐसी हक़ारत वाबिस्ता हो चुकी है कि कोई भी शरीफ़ आदमी ख़ुद को यहूदी कहलवाना पसन्द नहीं करता। क्या यह अल्लाह तआला का ग़ज़ब नहीं?

नतीजे

1. अगरचे दुनिया 'दारुल अमल' (अमली की जगह) है, दारुल-जज़ा (बदला पाने की जगह) नहीं, फिर भी अल्लाह तआला कभी-कभी दुनिया में भी मुज्रिमों को उनके अमल के बदले में इस तरह कस दिया करते हैं कि ख़ुद उनको और उनके ज़माने के लोगों को यह मानना पड़ता है कि यह उनके जुर्मों की सज़ा है और उनकी तारीख़ी ज़िंदगी बाद में आने वालों के लिए नसीहत

और सबक़ का सामान बन जाती है, ख़ास तौर से गुरूर (घमंड) और ज़ुल्म, ये दो ऐसे कड़े जुर्म और उम्मुल ख़बाइस (तमाम ख़राबियों की जड़) हैं कि घमंडी और ज़ालिम को आख़िरत की सज़ा के अलावा दुनिया में भी ज़रूर अपनी बदआमालियों का कुछ न कुछ ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ता है, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना होता है कि एक शख़्स के किब्र व ज़ुल्म का बदला उस आदमी की ज़िंदगी से मुताल्लिक़ होता है और क़ौमी और इज्तिमाई किब्र व ज़ुल्म का बदला क़ौमी और इज्तिमाई ज़िंदगी से वाबिस्ता हो जाता है, इसलिए पहले ज़िक्र किए गए मुद्दत में ज़्यादा अर्सा नहीं होता, मगर दूसरे ज़िक्र की मुद्दत कभी इतनी लम्बी नज़र आती है कि मज़्लूम क़ौम और जमाअत मायूसी की हद तक पहुंच जाती है और उसकी नज़र से यह प्वाइंट ओझल होजाता है कि क़ौमों के उरूज व ज़वाल, इज़्ज़त व ज़िल्लत और कामियाबी और नाकामी की उम्र किसी एक शख़्स की उम्र की तरह नहीं होती, बल्कि लम्बी होती है, फिर भी कुछ हालात में सबक़ के पहलुओं को नुमायां करने के लिए इस मुद्दत को कभी मुख़्तसर भी कर दिया जाता है। चुनांचे यहूदियों की तारीख़ के वाक़िए और हालात इसकी ज़िंदा मिसाल हैं और हैं हज़ारों के सबक़ लेने की बात।

2. हक़ का इंकार करने वाली और बातिल की परस्तार क़ौमों को अगर सबक़ हासिल करने के लिए दुनिया में किसी क़िस्म की सज़ा दी जाती या उनको अल्लाह के अज़ाब में पकड़ा जाता है तो इसका यह मतलब नहीं है कि उन पर से आख़िरत का अज़ाब (जहन्नम का अज़ाब) टल जाता और माफ़ हो जाता है, बल्कि वह उसी तरह क़ायम रहता है जो अपने वक़्त पर होकर रहे।

तर्जुमा– *'और किया है हमने दोज़ख़ को काफ़िरों का क़ैदख़ाना।'* (78-8)

3. अल्लाह तआला जब किसी क़ौम को उसकी बद-किरदारियों और उसके ज़ुल्मों और फ़सादों की वजह से अज़ाब में मुब्तला करता और अपने अमल के बदले के क़ानून को उन पर नाज़िल करना चाहता है तो अल्लाह की सुन्नत यह जारी है कि वह बद-आमालियों के बाद फ़ौरन ही ऐसा नहीं करता, बल्कि एक अर्से तक उसको मोहलत देता और हादियों और पैग़म्बरों की मारफ़त उनको तर्ग़ीब व तर्हीब की राह से हिदायत पर लाने के तमाम मौक़े जुटाता है, ताकि अल्लाह की हुज्जत हर हरह तमाम हो जाए। पस अगर

उसके बाद भी उनकी सरकशी और बग़ावत और ज़ुल्म व उदवान का तसलसुल उसी तरह क़ायम रहता है तो उसकी 'सख़्त पकड़' अचानक मुज्रिम क़ौम को इस तरह दबोच लेती है कि फिर अपने नतीजे को पहुंच कर रहता है और उनके सामने अल्लाह का यह फ़रमान मुशाहदे की शक्ल में ज़ाहिर हो जाता है।

तर्जुमा—'बहुत जल्द ज़ालिम जान लेंगे कि किस तरह इंक़िलाब के तरीक़े के ज़रिए वे उलट दिए जाएंगे।' (26 : 257)

ज़ुलक़रनैन

531 क़ब्ल मसीह (लगभग)

तम्हीद

क़ुरआन मजीद में सूरः कह्फ़ में एक ऐसे बादशाह का ज़िक्र किया गया है जिसका लक़ब 'ज़ुलक़रनैन' है और जिसने मश्रिक़ व मग़रिब (पूरब व पच्छिम) तक फ़त्हें कीं और फ़त्ह (जीत) के दौरान एक ऐसी जगह पर पहुंचा जहां बसने वालों ने उनसे शिकायत की कि याजूज माजूज हमको सताते और वहशियाना हमले करके फ़साद मचाते और बर्बादी लाते हैं। आप हमको उनसे नजात दिलाइए।

ज़ुलक़रनैन ने उनको तसल्ली दी और लोहे और तांबे को पिघला कर दो पहाड़ों के दर्मियान एक ऐसी रुकावट खड़ी कर दी कि शिकायत करने वाले याजूज व माजूज के फ़ित्ने से बच गए। यह वाक़िया तीन अहम हिस्सों में तक़सीम किया जा सकता है—

1. ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत,
2. ज़ुलक़रनैन का महल्ल व वक़ूअ और आस-पास का इलाक़ा,
3. याजूज-माजूज के बारे में तै करना।

ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत

ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत के बारे में नीचे लिखे क़ौल पेश किए गए हैं—

1. मशहूरे ज़माना सिकन्दरे आज़म (Alexandar, the Great) ही ज़ुलक़रनैन है।

2. अरब और ईरान के शायरों ने अपने-अपने मुल्क और इलाक़े के अलग-अलग बादशाहों को ज़ुरक़रनैन कहा है।

3. क़ुरआन में ज़िक्र किया गया ज़ुलक़रनैन अरब वंश का था, सामिया ऊला में से था और हज़रत इब्राहीम के ज़माने का बादशाह था।

हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने ऊपर के क़ौलों से मुताल्लिक़ तफ़्सीली बहस के बाद आख़िर के लोगों में से मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की तह्क़ीक़ से एक हद तक इत्तिफ़ाक़ करते हुए जो कुछ लिखा है, वह पेश किया जाता है। मौलाना ने इस तफ़्सीली बहस को जिस उसूल के पेशेनज़र रखा है, वह यह है कि ज़ुलक़रनैन को एक ऐसा शख़्स समझना चाहिए जो हर एतबार से मर्दे सालेह और अपने वक़्त के दीने हक़ की पैरवी करने वाला होना चाहिए।

इस उसूल पर मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० की तह्क़ीक़ के मुताबिक़ जो शख़्सियत पूरी उतरती है, वह इबरानी में ख़ोरस की है, जिसको फ़ारस के लोग अरश या गोरश कहते हैं, लेकिन यूनानी में साइरस और अरबी में ख़ुसरो कहा जाता है, जिसकी तफ़्सील नीचे दी जा रही है—

ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत पर बहस करने से पहले हल तलब अहम सवाल यह है कि क़ुरआन मजीद ने इस मामले की तरफ़ किसलिए तवज्जोह की और ख़ुद से नहीं बल्कि किसी सवाल के जवाब पर तवज्जोह की तो सवाल करने वाले कौन हैं और किस बुनियाद पर उन्होंने इस सवाल को चुना? यही वह सवाल है जो असल में इस मामले की कुंजी है और अगरचे यह शाने नुज़ूल के सिलसिले में तफ़्सीर लिखने वालों और सीरत लिखने वालों ने इसकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई है, लेकिन शख़्सियत की तह्क़ीक़ के वक़्त उन्होंने इस हक़ीक़त को नज़रंदाज़ कर दिया है।

साथ ही यह बात भी तवज्जोह के क़ाबिल है कि ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत, रोक (सद्द) का तै करना और याजूज माजूज की तह्क़ीक़ अगरचे तीन मुस्तक़िल मसअले हैं, फिर भी ये तीनों आपस में इस तरह जुड़े हुए हैं

कि अगर किसी एक के बारे में खुलकर तस्क़ीक़ आ जाए तो क़ुरआन की तफ़्सील की रोशनी में बाक़ी दो मस्अलों के हल में भी बहुत ज़्यादा आसानी हो जाती है।

ज़ुलक़रनैन से मुताल्लिक़ सवाल की शक्ल

मुहम्मद बिन इसहाक़ ने इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत किया है कि मक्का के क़ुरैश ने नज़्र बिन हारिस और उक़बा बिन मुईत को यहूदी उलेमा के पास यह पैग़ाम देकर भेजा कि चूंकि तुम ख़ुद को अह्ले किताब कहते हो और तुम्हारा दावा है कि तुम्हारे पास पीछे के पैग़म्बरों का वह इल्म है जो हमारे पास नहीं है, इसलिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुताल्लिक़ हम को यह बताएं कि पैग़म्बरी के उनके दावे की सच्चाई के बारे में आप लोगों की इल्हामी किताबों में कोई तज़्किरा या निशानियां मौजूद हैं या नहीं? चुनांचे क़ुरैश के वफ़्द ने यसरिब पहुंच कर यहूदी उलेमा से अपने आने का मक़्सद बयान किया और यहूदी अह्बार ने उनसे कहा, तुम और बातों को छोड़ दो, हम तुमको तीन सवाल बता देते हैं, अगर वह उनका सही जवाब दे दें तो समझ लेना, वे ज़रूर अपने दावे में सच्चे हैं और नबी मुर्सल हैं और तुम पर उनकी पैरवी वाजिब है और अगर वे सही जवाब न दे सकें, तो वह झूठे हैं, फिर तुमको अख़्तियार है जो मामला उनके साथ चाहो, करो। वे सवाल ये हैं–

1. उस आदमी का हाल बयान कीजिए जो पूरब से पच्छिम तक जीतता चला गया?

2. उन कुछ नवजवानों पर क्या गुज़रा जो काफ़िर बादशाह के डर से पहाड़ की खोह में जा छिपे थे?

3. रूह के मुताल्लिक़ बयान कीजिए

मक्का का वफ़्द वापस आया और उसने क़ुरैश को यहूदी उलेमा की बातें सुनाईं, क़ुरैश ने सुनकर कहा, अब हमारे लिए मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में फ़ैसला करना आसान हो गया कि यहूदियों के इन सवालों के जवाब एक उम्मी (अनपढ़) इंसान जभी दे सकता है कि हक़ीक़त में उस पर अल्लाह की ओर से वह्य आती हो, चुनांचे मक्का के क़ुरैश ने ख़िदमते

अक़्दस में हाज़िर होकर तीनों सवाल पेश कर दिए। उन्हीं सवालों के जवाब के लिए आप पर सूरः कह्फ़ उतरी।

यहूदी, क़ुरैश और सवालों का इंतिख़ाब

एक बार फिर उस रिवायत पर ग़ौर फ़रमाइए जो मुहम्मद बिन इसहाक़ ने नक़ल फ़रमाई है और जिसका हासिल यह है कि अस्हाबे कह्फ़ और ज़ुलक़रनैन के बारे में मक्का के मुश्रिकों ने जो सवाल नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से किए, वे असल में मदीना के यहूदियों के बार-बार ताकीद करने पर किए गए, तो अब कुदरती तौर पर यह सवाल पैदा होता है कि आख़िर यहूदियों को इन वाक़ियों से ऐसी क्या दिलचस्पी थी कि जिसकी बुनियाद पर उन्होंने उसका चुनाव किया और उनके सही जवाबों को ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नुबूवत के दावे और रिसालत की सच्चाई का मेयार ठहराया।

आख़िर ज़ुलक़रनैन के बारे में क्यों सवाल किया गया? इसका जवाब यह है कि यहूदियों ने इस सवाल में हक़ीक़त में एक ऐसी शख़्सियत का इंतिख़ाब किया है जो उनकी मज़हबी ज़िंदगी के सिलसिले में बहुत ही ज़्यादा अहमयित रखती है और जिसको वे अपनी मिल्ली और इज्तिमाई ज़िंदगी में किसी वक़्त भी नहीं भुला सकते, क्योंकि उस शख़्सियत की बदौलत बनी इसराईल ने बाबिल की ग़ुलामी से नजात पाई और उनका क़ौमी मर्कज़ क़िब्ला नमाज़ और मुक़द्दस मक़ाम यरूशलम (बैतुलमक़्दिस) हर क़िस्म की तबाही व बर्बादी के बाद उसी के हाथों दोबारा आबाद हुआ, चुनांचे इन अहम मामलों की बुनियाद पर यहूदियों के नज़दीक वह नजात दहन्दा अल्लाह का मसीह और अल्लाह का चरवाहा कहलाया, क्योंकि उनके नबियों के मुक़द्दस सहीफ़ों में उसके बारे में यही अलक़ाब दर्ज थे और उसकी अज़्मत ज़ाहिर करते थे। यही वजह थी कि उन्होंने सवालों में उस शख़्सियत के मसले को भी मुंतख़ब किया, बल्कि उसी को ज़्यादा अहमियत दी, जैसा कुरआन के बयान करने के उस्लूब *'यस अलू-न-क अन ज़िलक़रनैन'* से वाज़ेह होता है। वह समझते थे कि जबकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दावा करते हैं कि वे अल्लाह के सच्चे

पैग़म्बर और उसके तमाम सच्चे पैग़म्बरों के दीन को और अपने दीन को एक दीन समझते हैं, ख़ास तौर से बनी इसराईल के नबियों की अज़्मत व इज़्ज़त और उनकी सदाक़त व हक्क़ानियत को ज़ाहिर फ़रमाते हैं। अगर वह हक़ीक़त में अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं तो 'उम्मी' (अपढ़) होने के बावजूद ज़रूर वह्य इलाही के ज़रिए उस आदमी के वाक़ियों पर रोशनी डाल सकेंगे, जिसकी वजह से बनी इसराईल के नबियों के गढ़ (यरूशलम) और बनी इसराईल के नबी और क़ौम बनी इसराईल को एक बुतपरस्त बादशाह की ग़ुलामी और तबाहकारियों से निजात मिली और जो अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने में बनी इसराईल के नबियों का मददगार साबित हुआ।

बनी इसराईल के नबियों की पेशीनगोइयां

बनी इसराईल के नबी हज़रत यसइयाह, यर्मियाह, दानियाल, अज़रा और ज़करिया ﷺ की तौरात में खुलकर और साफ़ ज़िक्र की गई पेशीनगोइयों से नीचे लिखे वाक़िए साबित होते हैं—

1. जिस हस्ती ने बनी इसराईल को बातिल की ग़ुलामी से निजात दिलाई उसका नाम ख़ोरस था और वह फ़ारस और मीडिया का एक ही बादशाह था।

2. दानियाल नबी के मुकाश्फ़ा और जिब्रील अलैहिस्सलाम की ताबीर ने इन दो हुकूमतों के इत्तिहाद की बुनियाद पर ही ख़ोरस को दो सींगोंवाला (ज़ुलकरनैन) बादशाह कहा और इस ख़्याल की बुनियाद पर बनी इसराईल में उसका लक़ब ज़ुलक़रनैन मशहूर हुआ।

3. मुताल्लिक़ सहीफ़ों में उस बादशाह को अल्लाह का मसीह, बनी इसराईल को निजात दिलाने वाला और अल्लाह का चरवाहा कहा गया।

4. यहूदियों में क़ौमी असबियत और नस्ली तास्सुब की ज़्यादती के बावजूद इन्हीं वाक़ियों की बुनियाद पर वे ग़ैर इसराईली शख़्स को ऐसी बातों से याद करते हैं, जो वे सिर्फ़ अपने नबियों के हक़ में ही कहने के आदी हैं।

5. यसइयाह नबी के सहीफ़े में उसका उत्तर से आना बताया गया है। ख़ोरस बाबिल से उत्तर ही की तरफ़ (फ़ारस व मीडिया) से आया था, इसलिए वही इस पेशनगोई पर पूरा उतरता है।

6. ज़करिया नबी की पेशीनगोई में उसको 'उगने वाली शाख़' बताया गया है। इससे मतलब यह है कि उसका उगना-बढ़ना और ज़ाहिर होना ग़ैर-मामूली हालात में होगा, जैसा कि आम तौर से ऐसी शख़्सियतों के बारे में अल्लाह की तरफ़ से होता रहा है जिनसे उसको कोई काम लेना होता है।

तारीख़ी गवाहियां

622 क़ब्ल मसीह में बाबिल व नैनवा की हुकूमतें बड़े उरूज और तरक़्क़ी पर थीं और ख़ोरस से पहले उसी ज़माने में ईरान की हुकूमत दो अलग-अलग हिस्सों में तक़्सीम थी। उत्तरी-पश्चिमी हिस्से को मीडिया (माहात) कहते थे और पश्चिमी हिस्से को फ़ारस और दोनों हिस्सों में क़बीलों के सरदार हुकूमत करते थे। ये क़बीलों की हुकूमतें उनके असर में और ताबेअ् थीं, लेकिन 612 क़ब्ल मसीह में जब नैनवा की आशूरी हुकूमत तबाह हो गई, तो अगरचे मीडिया आज़ाद हो गया और क़बीलों की हुकूमत की जगह धीरे-धीरे शाही हुक्मरानी की दाग़-बेल पड़ने लगी थी, फिर भी बाबुल के बादशाह बख़्त नस्र के क़ाहिराना इक़्तिदार के सामने ईरान का उभरना मुम्किन नज़र न आता था, मगर इन्हीं हालात के अन्दर 559 ई.पू. में क़ुदरत ने एकेमी नीज़िया बख़ामश ख़ानदान की एक ग़ैर मामूली हस्ती को नुमायां किया जो शुरू में अगरचे एक-छोटी रियासत अश्शान का रईस था, मगर वह 559 ई.पू. में हैरत में डाल देने वाले अन्दाज़ में उसके अद्ल व इंसाफ़, सियासत व तदब्बुर, ख़ुदातरसी और हिल्म ने फ़ारस और माबात दोनों हुकूमतों को बिना किसी लड़ाई के उसके क़ब्ज़े में दे दिया और दोनों हुकूमतों के क़बाईली हुक्मरानों ने ब रज़ा व रग़बत उसको अपना बादशाह मान लिया। यही वह हस्ती है जिसको फ़ारस के लोग 'गोरश' या अरश और यहूदी ख़ोरस कहते हैं।

पच्छिमी मुहिम

ख़ोरस ने जब फ़ारस और मीडिया की हुकूमतों को मिलाकर फ़रमांरवाई का एलान किया, तो उससे क़रीबी ज़माने में उसको 'पच्छिमी मुहिम' पेश आई और इस वजह से पेश आई कि ख़ोरस से बहुत पहले मीडिया और ईरान के

मग़रिब में वाक़े हुकूमत लीडिया 'एशिया-ए-कोचक' के दर्मियान आपसी जंग रहती थी, मगर ख़ोरस के ज़माने के लीडिया बादशाह 'क़ादूसिस' के बाप ने ख़ोरस (गोरश) के नाना अस्टियागस के बाप से सुलह कर ली थी और आपसी शादी-ब्याह का रिश्ता क़ायम करके मुस्तक़िल तौर से जंग का ख़ात्मा कर दिया था, लेकिन अब जबकि ख़ोरस ने फ़ारस और मीडिया दोनों को मिलाकर के एक मज़बूत हुकूमत क़ायम कर ली, तो एशिया-ए-कोचक का बादशाह क़ाइरिस उसको सह न सका और उसने बाप के किए हुए तमाम वायदों और समझौतों को तोड़कर मीडिया पर हमला कर दिया, तब गोरश मजबूर होकर अपनी राजधानी हमदान से तेज़ी के साथ आगे बढ़ा और दो ही लड़ाइयों के बाद तमाम एशिया-ए-कोचक पर क़ब्ज़ा कर लिया, चुनांचे मशहूर यूनानी तारीख़दां बैरोडोटस कहता है कि गोरशा की यह मुहिम ऐसी अजीब और मोजज़ों से भरी हुई थी के पटेरिया के मारके से सिर्फ़ चौदह दिन के अन्दर उसने लीडिया की मज़बूत राजधानी को क़ब्ज़े में कर लिया और करडीसन क़ैद होकर मुज्रिम की हैसियत में उसके सामने खड़ा नज़र आया। अब अगरचे काला सागर तक तमाम एशिया-ए-कोचक उसके तहत था, मगर फिर भी वह आगे बढ़ता चला गया, यहां तक कि पच्छिमी किनारे पर जा पहुंचा यानी राजधानी से चौदह सौ मील फ़ासला तै करके पच्छिमी तरफ़ जा खड़ा हुआ।

जुग़राफ़िया के माहिर कहते हैं कि लीडिया की राजधानी सारडेस पच्छिमी साहिल के क़रीब था और एशिया-ए-कोचक के पश्च्छिमी किनारे की हालत यह है कि यहां समरना के क़रीब छोटे-छोटे जज़ीरे (द्वीप) निकल आने की वजह से पूरा साहिल (तट) झील की तरह बन गया है और बहे अजियन के इस किनारे का पानी ख़लीज (खाड़ी) की वजह से बहुत गदला रहता है और शाम के वक़्त सूरज डूबते हुए ऐसा मालूम होता है कि गोया एक गदले हौज़ में डूब रहा है।

तारीख़ के माहिर कहते हैं कि ख़ोरस ने अगरचे एशिया-ए-कोचक को बहादुरी से जीता, लेकिन वक़्त के दूसरे बादशाहों की तरह उसने जीते हुए मुल्कों पर ज़ुल्म नहीं किया और न उनको वतन से बेवतन किया, यहां तक कि सारडेस की जनता को यह भी महसूस नहीं होने दिया कि यहां कोई

इंक़िलाब आ गया है, मगर सिर्फ़ शख़्सियत का यानी उनको करडीसल की जगह ख़ुरस जैसा आदिल बादशाह मिल गया, चुनांचे हीरोडोटिस लिखता है—

साइरस (ख़ोरस) ने अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि दुश्मन की फ़ौज के सिवा और किसी इंसान पर हाथ न उठाया जाए और दुश्मन की फ़ौज में भी जो कोई नेज़ा झुका दे उसे हरगिज़ न क़त्ल किया जाए और करडीस अगर तलवार भी चलाए, तब भी उसको तक्लीफ़ (पीड़ा) न पहुंचाई जाए।

साथ ही हुकूमत के बारे में उसका अक़ीदा वही था जो एक भले और नेक बादशाह का होना चाहिए। चुनांचे यूनानी तारीख़ लिखने वाला कीस्याज़ लिखता है।

'उसका अक़ीदा यह था कि दौलत बादशाहों के ज़ाती ऐश व आराम के लिए नहीं है, बल्कि इसलिए है 'कि भलाई के कामों में लगाया जाए और मातहतों को उससे फ़ायदा पहुंचे।'

पूरबी मुहिम

यही तारीख़ का माहिर हीरोडोट्स बयान करता है कि गोरश ने अभी बाबिल को जीता नहीं था कि उसको ईरान में एक अहम लड़ाई पेश आई, क्योंकि दूर मश्रिक़ के कुछ वह्शी और जंगलों में रहने वाले क़बीलों ने सरकशी और बग़ावत की थी और ये बाख़्तर (बकटीरिया) के क़बीले थे और कुछ तारीख़ी हवालों से यह बात खुले तौर पर मिलती है कि जिस जगह को आजकल मकरान कहते हैं, उस जगह के ख़ानाबदोश क़बीलों ने यह सरकशी की थी। यह जगह बेशक ईरान के लिए दूर पूरब का हुक्म रखती है, इसलिए कि इसके बाद पहाड़ हैं जिन्होंने आगे बढ़ने के लिए राह रोक दी है।

तीसरी (उत्तरी) मुहिम

बाबिल की फ़त्ह के अलावा तारीख़ गोरश की एक और मुहिम का ज़िक्र करती है, जो ईरान से उत्तर की ओर पेश आई। इस मुहिम में वह बहे कास्पियन (ख़ज़र) को दाहिनी तरफ़ छोड़ता हुआ काकेशिया के पहाड़ी सिलसिले तक पहुंचा है। इन्हीं पहाड़ों में उसको एक दर्रा मिला है जो दो

पहाड़ों के दर्मियान फाटक की तरह नज़र आता है। इस जगह जब वह पहुंचा है तो एक क़ौम ने उससे याजूज व माजूज क़बीलों की लूट-मार की शिकायत की कि वे इस दर्रे में से निकल कर हमलावर होते और तोड़-फोड़ करके हमको तबाह व बर्बाद कर डालते हैं, चुनांचे उसने लोहा और तांबा इस्तेमाल करके इस फाटक को बन्द कर दिया और धातु की एक रोक (दीवार) क़ायम कर दी, जिसकी निशानियां इस वक़्त भी पाई जाती हैं। चुनांचे हीरोडोटस ज़म्बूफ़न दोनों यूनानी तारीख़दां साफ़ कहते हैं कि गोरश ने लीडिया की जीत के बाद सेथीन क़ौम के सरहदी हमलों की रोक-थाम के लिए ख़ास इंतिज़ाम किए।

और यह सच्चाई बहुत जल्द सामने आ जाएगी कि गोरश के ज़माने में याजूज माजूज क़बीलों में से यही सेथीन थे जो हमलावर होकर क़रीब की आबादियों को तबाह व बर्बाद करते रहते थे।

बाबिल की जीत

अब जबकि गोरश या ख़ोरस की जीतें इतनी फैल चुकी थीं कि ईरान के दूर पच्छिम में वह उत्तरी समुन्दर से लेकर काले समुन्दर के आख़िरी साहिल तक क़ाबिज़ था और मश्रिक़े अक़्सा में मकरान के पहाड़ों तक बल्कि दारा के रक़्बा हुकूमत की तफ़्सील को मुस्तनद मान लिया जाए तो सिंध नदी तक जीत चुका था और उत्तर में काकेशिया के पहाड़ी सिलसिले तक हुक्मरां था तो उसको इराक़ की मशहूर और मुतमद्दिन, मगर क़ाहिर व जाबिर हुकूमत बाबिल की तरफ़ मुतवज्जह होना पड़ा, चुनांचे उसकी तफ़्सील भी तारीख़ ही की ज़ुबानी सुनिए—

ख़ोरस से लगभग पचास वर्ष पहले बाबिल की हुकूमत पर बनू कद नज़्र (बख़्ते नस्र) नज़र आता है और उसके ज़िम्नी (ग़ैर बुनियादी) अक़ीदों के मुताबिक़ वह न सिर्फ़ बादशाह था, बल्कि बाबुली बुतों में से सबसे बड़े बुत का मज़्हर और देवता भी समझा जाता था और इसलिए उसका हक़ था कि वह जिस हुकूमत को चाहे, अपने क़हू व ग़ज़ब का शिकार बनाकर उसके बाशिंदों को हौलनाक और सख़्त अ़ज़ाब में डाले। उनको हलाक करे या ग़ुलाम बनाकर इन वहशियों वाले ज़ुल्म व ज़्यादती को बाक़ी रखे। इसलिए इस

बादशाह के ज़ुल्म बेपनाह और मुल्कों पर क़ब्ज़ा करने का उसका तरीक़ा वहशियाना था, जैसा कि पिछले पन्नों में बयान हो चुका है। उसने अपनी हुकूमत के दौर में यरूशलम (बैतुल मक़्दिस) पर तीन बार हमले किए और फ़लस्तीन को तबाह व बर्बाद करके तमाम बाशिंदों को मवेशियों की तरह हंका कर बाबिल ले गया। एक यहूदी तारीख़ लिखने वाला जो-ज़ेफ़स कहता है—

'कोई सख़्त से सख़्त बेरहम क़साई भी इस वहशत व ख़ूंख़्वारी के साथ भेड़ों को मज़बह (ज़िब्ह करने की जगह) में नहीं ले जाता जिस तरह बनू कद नज़्र बनी इसराईल को बाबिल में हंका कर ले गया।'

बाबुल की हुकूमत आशूरी हुकूमत की तबाही के बाद और भी ज़्यादा मज़बूत और क़ाहिर हुकूमत हो गई थी और उस ज़माने में आस-पास की ताक़तों में किसी को भी यह जुर्रात नहीं थी कि वह इस जाबिर हुकूमत के क़ह व ज़ुल्म की जड़ काट सके, लेकिन बैतुल मक़्दिस की जीत के कुछ दिनों बाद बख़्त नस्र मर गया और उसका जानशीं नायूनीदस मुक़र्रर हुआ, मगर उसने हुकूमत का तमाम बोझ शाही ख़ानदान के एक आदमी बेल शाज़ार पर डाल दिया। यह आदमी अगरचे बहुत अय्याश और ज़ालिम था, मगर बख़्त नस्र की तरह बहादुर और जरी नहीं था, उसके ज़माने में बनी इसराईल के क़ैदियों में से हज़रत दानियाल ﷺ ने अपनी सूझ-बूझ और हिक्मत भरी चालों से बाबुल दरबार को इस तरह क़ब्ज़े में कर लिया था कि वह हुकूमत के ख़ास मुशीर समझे जाते थे। हज़रत दानियाल ने बेल शाज़ार को बार-बार उसकी ज़ालिम और ऐश भरी ज़िंदगी के ख़िलाफ़ डांट-फटकार और तंबीह की, मगर उसने कुछ सुनवाई नहीं की, यहां तक कि उन्होंने हुकूमत के मामलों से किनाराकशी अख़्तियार कर ली।

इधर यह वाक़िया पेश आया कि बाबुल के लोग अर्से से बेल शाज़ार के ज़ुल्मों से छुटकारा पाने की तज्वीज़ें सोच रहे थे कि उनके कुछ सरदारों ने यह मश्विरा दिया कि क़रीब की ज़बरदस्त ताक़त ईरान से मदद हासिल की जाए और उसके इंसाफ़ पसन्द हुक्मरां से यह अर्ज़ किया जाए कि वह हमको बेल शाज़ार के ज़ुल्मों से निजात दिलाए और उसको यह इत्मीनान दिलाया जाए कि

बाबुल के लोग हर तरह उसकी मदद करने को तैयार हैं। चुनांचे सन् 54 ई. पू. बाबिली सरदारों का एक वफ़्द ख़ोरस के पास उस वक़्त पहुंचा जबकि वह अपनी मश्रिक़ी मुहिम में लगा हुआ था। ख़ोरस ने उनका स्वागत किया और उनको इत्मीनान दिलाया कि वह अपनी मुहिम से फ़ारिग़ होकर ज़रूर बाबुल पर हमला करेगा और उनको बेल शाज़ार जैसे ज़ालिम और ऐयाश बादशाह से नजात दिलाएगा। ख़ोरस जब अपनी मुहिम से फ़ारिग़ हो गया तो वायदे के मुताबिक़ उसने बाबुल पर हमला कर दिया।

तारीख़ इस पर एक राय है कि उस अह्द में बाबुल से ज़्यादा ताक़त रखने वाली और किसी के क़ब्ज़े में न आने वाली कोई जगह नहीं थी, इसलिए कि उसकी शहर पनाह इस दर्जा तह दर तह मोटी और मज़बूत थी कि कोई जीतने वाला उसको क़ाबू में करने की जुरात नहीं कर सकता था, लेकिन ख़ोरस का इंसाफ़ और रहम के हालात देखकर बाबुल की प्रजा ख़ुद इस क़दर उस पर मोहित थी कि बाबुल हुकूमत का एक गवर्नर गोबरयास ख़ुद उसके साथ था और हीरोडोटस के क़ौल के मुताबिक़ उसी ने दरिया में नहर काटकर उसका बहाव दूसरी तरफ़ कर दिया और दरिया की जानिब से फ़ौज शहर में दाख़िल हो गयी और ख़ोरस के वहां तक पहुंचने से पहले ही शहर फ़त्ह हो गया और बेल शाज़ार मारा गया।

ख़ोरस का मज़हब

ख़ोरस के मज़हब के बारे में तौरात और तारीख़ दोनों एक राय हैं कि जिस तरह उसने ईरान के बंटे हुए हिस्सों और छोटी-छोटी रियासतों को एक करके एक बड़ी शहंशाही क़ायम की और जिस तरह वक़्त के जाबिर व क़ाहिर बादशाहों के ख़िलाफ़ उसने इंसाफ़ और रहमदिली पर अपनी हुकूमत को मज़बूत किया, उसी तरह वह दीन व मज़हब के बारे में भी ईरान के राइज मज़हब के ख़िलाफ़ दीने हक़ के ताबे था, जैसा कि अज़रा नबी और दानियाल नबी की किताबों (Old Testament अज़रा नबी और दानियाल नबी की किताबों) से अच्छी तरह मालूम होता है, साथ ही दारा के उन कतबों (शिला लेखों) से जो पहाड़ों की चट्टानों पर नक़्श करा दिए गए थे, इसकी ताईद

होती है कि दारा और उसके पहले के ख़ोरस का मज़हब ईरान के पुराने मज़हब 'मोगोश' (मजूसी मज़हब) से जुदा और मुख़ालिफ़ था और यह कि दारा जिस हस्ती को अस्वर मोज़दह कहकर पुकारता है और जो उसकी ख़ूबियां बयान करता है, उससे यह साफ़ मालूम होता है कि वह और उसका पेशरो (पहले का) 'दीने हक़' पर थे और अरबी का 'अल्लाह', सुरयानी का 'उलूहेम' और इबरानी का 'एल' और ईरान का 'अस्वर मोज़दह' एक ही मुक़द्दस हस्ती के नाम हैं, क्योंकि दारा कहता है, वही यकता है और बेहमता है और कायनात का पैदा करने वाला है और ख़ैर व शर अकेले उसी के हाथ में है, साथ ही तौहीदे ख़ालिस पर ईमान के साथ-साथ आख़िरत पर ईमान रखता और सीधे रास्ते पर उभारता और गुनाहों से बचने की तालीम ज़ाहिर करता है और ज़ाहिर है कि अक़ीदों की यह तफ़्सील मजूसी मज़हब के बिल्कुल ख़िलाफ़ है और इसीलिए दारा मजूसियों पर कामियाबी हासिल करने का अस्वर मूज़दह की मेहरबानी क़रार देता है।

रही यह बात कि ख़ोरस और दारा वक़्त के किस मज़हब की पैरवी करने वाले थे तो इसका जवाब थोड़ी-सी तम्हीद के बाद आसानी से दिया जा सकता है।

ईरान और ज़रतुश्त मज़हब

ईरान के पुराने मज़हब की पैरवी करने वाले मोगोश (मजूस) कहे जाते थे लेकिन 550 ई.पू. और 583 ई.पू. के दर्मियान उत्तर पच्छिमी ईरान यानी क़फ़क़ाज़ और आज़र बाई जान के उसके क़रीब जो अर्स वादी के नाम से मशहूर है, एक मुलहिम मिनल्लाह हस्ती ज़ाहिर हुई। यह इब्राहीम ज़रदुश्त की शख़्सियत थी। उन्होंने ईरान के मजूसियों में दीने इलाही का एलान किया और रुश्द व हिदायत और दावत व तब्लीग़ का फ़र्ज़ अंजाम दिया।

अगरचे ज़रदुश्त से जुड़ी हुई इलहामी किताब अवेस्ता भी कुरआन पाक से पहले की इलहामी किताबों की तरह घट-बढ़ का शिकार हो चुकी है, फिर भी उसमें ऐसे जुम्ले हैं जिनका मतलब सच्ची इलहामी किताबों में मुश्तरक पाया जाता है, यानी शैतानी वस्वसों से पनाह और अल्लाह रहमान व रहीम

की मद्ह व सना आज अरब और यूरोप के तह्क़ीक़ करने वाले तारीख़ के माहिर भी बग़ैर किसी झिझक के दलीलों और निशानियों की रोशनी में इस हक़ीक़त का एलान करते हैं कि ज़रदुश्त का मज़हब ईरान के पुराने मज़हब से जुदा 'दीने हक़' था, जिसमें मज़ाहिरपरस्ती, अस्नामपरस्ती, आतिशपरस्ती सब मना की गई थी और एक अल्लाह की परस्तिश के सिवा किसी की परस्तिश जायज़ न थी।

ज़ुलक़रनैन और क़ुरआन

ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत के बारे में अगरचे दो अहम बहसें यानी ज़ुलक़रनैन से मुताल्लिक़ तौरात की पेशीनगोइयों और तारीख़ी गवाहियों के बाद अभी एक सबसे अहम मस्अला यह बाक़ी है कि क्या वह शख़्सियत जिसके लिए तौरात और तारीख़ से रिवायतें व गवाहियां पेश की गई हैं, हक़ीक़त में क़ुरआन में ज़िक्र किए गए ज़ुलक़रनैन ही की शख़्सियत है। तो उसके जवाब से पहले क़ुरआन की इन आयतों को पेश कर देना ज़रूरी है जो सूरः कह्फ़ में इस वाक़िए से मुताल्लिक़ बयान की गई हैं, ताकि बाद में मेल करने से अच्छी तरह वाज़ेह हो सके।

क़ुरआन (सूरः कह्फ़) में ज़ुलक़रनैन का वाक़िया इस तरह ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—*ऐ पैग़म्बर! तुमसे ज़ुलक़रनैन का हाल मालूम करते हैं, तुम कह दो— मैंने उसका कुछ हाल तुम्हें (कलामे इलाही में से) में पढ़कर सुना देता हूं। हमने उसे ज़मीन में हुक्मरानी दी थी, साथ ही उसके लिए हर तरह का साज़ व सामान मुहैया करा दिया था, तो (देखो) उसने (पहले) एक मुहिम के लिए साज़ व सामान किया (और पच्छिम की ओर निकल खड़ा हुआ) यहां तक कि (चलते-चलते) सूरज के डूबने की जगह पहुंच गया। वहां उसे सूरज ऐसा दिखायी दिया, जैसे स्याह दलदल की झील में डूब जाता है और उसके क़रीब एक गिरोह को भी आबाद पाया। हमने कहा, ऐ ज़ुलक़रनैन! (अब ये लोग तेरे अख़्तियार में हैं) तू चाहे इन्हें अज़ाब में डाले, चाहे अच्छा सुलूक करके अपना बना ले। ज़ुलक़रनैन ने कहा, हम नाइंसाफ़ी करने वाले नहीं जो सरकशी*

करेगा, उसे ज़रूर सज़ा देंगे, फिर उसे अपने परवरदिगार की ओर लौटना है। वह (बदआमालों) को सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेगा और जो ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा तो उसके बदले उसे भलाई मिलेगी और हम उसे ऐसी ही बातों का हुक्म देंगे, जिसमें उसके लिए राहत व आसानी हो। इसके बाद उसने फिर तैयारी की और (पूरब) की तरफ़ निकला, यहां तक कि सूरज निकलने की आख़िरी हद तक पहुंच गया। उसने देखा, सूरज एक गिरोह पर निकलता है जिससे हमने कोई आड़ नहीं रखी है, मामला यों ही था और जो कुछ ज़ुलक़रनैन के पास था, इसकी हमें पूरी ख़बर है।

उसने फिर साज़ व सामान तैयार किया और तीसरी मुहिम में निकला, यहां तक कि (दो पहाड़ों की) दीवारों के दर्मियान पहुंच गया। वहां उसने देखा पहाड़ों के उस तरफ़ एक क़ौम आबाद है, जिससे बात की जाए तो कुछ नहीं समझती। उस क़ौम ने (अपनी ज़ुबान में) कहा, ऐ ज़ुलक़रनैन! याजूज और माजूज इस मुल्क में आकर लूट-मार करते हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि आप हमारे और उनके दर्मियान एक रोक बना दें। इस ग़रज़ से हम आपके लिए कुछ ख़िराज मुक़र्रर कर दें। ज़ुलक़रनैन ने कहा, मेरे परवरदिगार ने जो कुछ मेरे क़ब्ज़े में दे रखा है, वही मेरे लिए बेहतर है। (तुम्हारे ख़िराज का मुहताज नहीं), मगर तुम अपनी ताक़त से (इस काम में) मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और याजूज माजूज के दर्मियान एक मज़बूत दीवार खड़ी कर दूंगा। (इसके बाद उसने हुक्म दिया) लोहे की सिलें मेरे लिए मुहैया कर दो। फिर जब (तमाम सामान मुहय्या हो गया और) दोनों पहाड़ों के दर्मियान दीवार उठाकर उसके बराबर बुलन्द कर दी तो हुक्म दिया, (भट्ठियां सुलगाओ और) उसे धौंको। फिर जब (इस क़दर धौंका गया कि) बिल्कुल आग की तरह लाल हो गई, तो कहा, गला हुआ तांबा लाओ, उस पर उंडेल दें, चुनांचे (इसी तरह) एक ऐसी रोक बन गई, न तो (याजूज व माजूज) इस पर चढ़ सकते थे, न उसमें सुरंग लगा सकते थे।

ज़ुलक़रनैन ने (काम पूरा होने के बाद) कहा, यह जो कुछ हुआ तो (हक़ीक़त में) मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है। जब मेरे परवरदिगार की फ़रमाई हुई बात ज़ाहिर होगी तो वह इसे ढा कर रेज़ा-रेज़ा कर देगा और मेरे

परवरदिगार की फ़रमाई हुई बात सच है, टलने वाली नहीं और उस दिन हम ऐसा करेंगे कि उनमें से एक क़ौम दूसरी क़ौम पर मौजों की तरह आ पड़ेगी और फूंका जाएगा नरसिंहा (सूर), पस इकट्ठा करेंगे हम उनको।'

(कह्फ़ 18 : 83-90)

पस ज़ुलक़रनैन के बारे में क़ुरआन ने किन सच्चाइयों को ज़ाहिर किया है और ख़ोरस से मुताल्लिक़ वाक़िए किस तरह इन हक़ीक़तों के साथ मुताबक़त रखते हैं, नीचे की लाइनों में तर्तीबवार पढ़ने के लिए दिए जा रहे हैं—

1. क़ुरआन के बयान करने का तरीक़ा बताता है कि उसने ज़ुलक़रनैन का वाक़िया दूसरों के सवाल करने पर बयान किया है और सवाल करने वालों ने उसी लक़ब के साथ उसको याद किया है, क़ुरआन ने अपनी ओर से लक़ब तज्वीज़ नहीं किया।

नतीजा—सही रिवायतों से यह साबित हो चुका है कि यह सवाल यहूदियों के बार-बार उकसाने पर मक्का के क़ुरैश ने किया था और सवाल में यह बात थी कि ऐसे बादशाह का हाल बताओ जो पूरब-पच्छिम में फिर गया और जिसको तौरेत में सिर्फ़ एक जगह इस लक़ब से याद किया गया है और तौरेत यह कहती है कि दानियाल के क़ौल में ईरान के एक बादशाह को ऐसे मेंढे की शक्ल में दिखाया गया है, जिसके दो सींग ज़ाहिर थे और जिब्रील फ़रिश्ते ने इन दो सींगों वाले मेंढे (ज़ुलक़रनैन) की ताबीर यह दी कि इससे वह बादशाह मुराद है जो फ़ारस और मीडिया दो बादशाहतों का मालिक होगा और यसइयाह नबी की पेशीनगोई और तारीख़ दोनों की इसमें राय एक है कि ईरान का यह बादशाह ख़ोरस था जिसने फ़ारस और मीडिया दोनों को मिलाकर शहंशाही की। यहूदियों को इससे इसलिए दिलचस्पी थी कि उनके नबियों (अलैहिमुस्सलाम) के इलहामों के मुताबिक़ वह उनको नजात दिलाने वाला था, चुनांचे यहूदियों का दिया हुआ यह लक़ब 'ज़ुलक़रनैन' ख़ुद ईरान के शाही ख़ानदान में इस दरजा मशहूर व मक़्बूल हुआ कि उन्होंने ख़ोरस के मरने के बाद उसका मुजस्समा (Statue) बनाया, तो उसमें भी तारीख़ी यादगार के तौर पर दानियाल के ख़्वाब को तस्वीरों के ज़रिए दिखाया। चूंकि

यसइयाह नबी के सहीफ़े में एक जगह उनको उक़ाब भी कहा गया है, इसीलिए इस्तख़र के क़रीब ख़ोरस की जो पत्थर की मूर्ति निकली है, उसको इसी मिले-जुले ख़्याल पर ही बनाया गया है कि उसके सर के दोनों तरफ़ दो सींग हैं और सर पर एक उक़ाब है और ख़ोरस के सिवा दुनिया के किसी बादशाह के बारे में यह कल्पना मौजूद नहीं है।

पस यह दलील है इस बात की कि यहूदियों को अपने निजात दिलाने वाले 'अल्लाह के मसीह' और 'अल्लाह के चरवाहे' के साथ इस दर्जा दिलचस्पी थी कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच होने का मेयार उस बादशाह के वाक़ियों के इल्म को क़रार दिया और उसी को सामने रखकर क़ुरआन ने उस बादशाह (ख़ोरस) का मुनासिबेहाल ज़िक्र किया है।

2. क़ुरआन कहता है कि वह बहुत शौकत वाला बादशाह था और अल्लाह ने उसको हुकूमत के हर क़िस्म के साज़ व सामान से नवाज़ा था।

ख़ोरस (गोरश) के बारे में तौरात और पुराने व नये तारीख़ी हवालों से यह साबित हो चुका है कि उसने न सिर्फ़ ईरान की अलग-अलग क़बाइली हुकूमतों को ही एक शहंशाही में जोड़ दिया था, बल्कि बाबुल व नैनवा की शानदार हुकूमतों पर भी क़ब्ज़ा करके अपनी जुग़राफ़ियाई हैसियत में ऐसे फैले मुल्क का मालिक हो गया था कि अल्लाह तआला ने उसको ज़िंदगी और हुकूमत के तमाम साज़ व सामान से मालामाल कर दिया।

3. क़ुरआन कहता है कि ज़ुलक़रनैन ने ज़िक्र के क़ाबिल तीन मुहिमें पूरी की हैं।

एतबार के क़ाबिल तारीख़ी गवाहियां साबित करती हैं कि ख़ोरस ने तीन ज़िक्र के क़ाबिल मुहिमें सर कीं।

4. क़ुरआन कहता है कि ज़ुलक़रनैन ने पहले पच्छिम की ओर एक मुहिम सर की।

तर्जुमा—'पस उसने (एक मुहिम के लिए) साज़ व सामान किया और पच्छिम की ओर निकल खड़ा हुआ, यहां तक कि (चलते-चलते) सूरज के डूबने की जगह पहुंचा, वहां उसे सूरज ऐसा दिखाई दिया जैसे एक स्याह दलदल

में डूब जाता है।' (कस्फ़ : 88-86)

यूनानी तारीख़ लिखने वाला हीरोडोटस और कुछ तारीख़ लिखने वालों के हवाले से यह साबित हो चुका है कि ख़ोरस को सबसे पहली और अहम मुहिम पच्छिम की तरफ़ पेश आई, जबकि लीडिया (एशिया-ए-कोचक) के बादशाह करडीसस के ग़द्दारी भरे तरीक़े के ख़िलाफ़ उसको लीडिया पर हमला करना पड़ा। यह जगह ईरान के पच्छिम में वाक़े है और इसकी राजधानी 'सारडीस' एशिया-ए-कोचके के आख़िरी पच्छिमी किनारे से क़रीब थी। हीरोडोनटस के कहने के मुताबिक़ ख़ोरस की यह मुहिम ऐसे मोजज़े भरे अन्दाज़ में भी थी कि वह पच्छिम की ओर फ़त्हें हासिल करता हुआ चौदह दिन के अन्दर 'एशिया-ए-कोचक' के आख़िरी साहिल पर जा खड़ा हुआ और सारडेस जैसे मज़बूत शहर को क़ब्ज़े में कर लिया। अब उसके सामने समुन्दर के सिवा और कुछ न था। समरना के क़रीब बहरे एजिन (Aegan sea) का यही वह साहिल है जो अपने अन्दर बहुत से छोटे-छोटे जज़ीरे रखने की वजह से झील बन गया है और उसका पानी बहुत गन्दा रहता है और शाम के वक़्त जब सूरज डूबता है तो यों मालूम होता है, गोया काले दलदल में डूब रहा है।

5. कुरआन कहता है कि अल्लाह तआला ने वहां की क़ौम पर ज़ुलक़रनैन को ऐसा ग़लबा दे दिया था कि वह जिस तरह चाहे उनके साथ मामला करे, चाहे उनकी बग़ावत के बदले में उनको सज़ा दे और चाहे तो उनके साथ अच्छा व्यवहार करके उनको माफ़ कर दे।

तारीख़ी हवालों से यह साबित है कि ख़ोरस (के अरश) ने लीडिया को फ़त्ह करके आम बादशाहों की तरह उसको बर्बाद नहीं किया, बल्कि इंसाफ़पसन्द, नेक और सालेह बादशाह की तरह माफ़ी का एलान कर दिया और उनको बे-वतन कर दिया, बल्कि करडेसस की गिरफ़्तारी के सिवा यह भी नहीं महसूस होने दिया कि यहां कोई हुकूमत में इंक़िलाब आया है। अलबत्ता करडेसस की जुर्रात के इम्तिहान के लिए एक तो उसको चिता में जलाने का हुक्म दिया, मगर जब वह मरदानावार चिता के अन्दर बैठ गया तो उसको भी माफ़ कर दिया और उसके साथ एज़ाज़ व इकराम के साथ पेश आया।

6. कुरआन ने ज़ुलक़रनैन का जो क़ौल नक़ल किया है उससे मालूम होता

है कि वह 'मोमिन' भी था और 'नेक और इंसाफ़पसन्द' भी। वह कहता है, ज़ुलक़रनैन ने कहा, हम नाइंसाफ़ी करने वाले नहीं हैं। जो सरकशी करेगा, उसे ज़रूर सज़ा देंगे, फिर उसे अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटना है। वह (बद आमालों को) सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेगा और जो ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा, तो उसके बदले में उसको भलाई मिलेगी और हम उसे ऐसी ही बातों का हुक्म देंगे, जिसमें उसके लिए आसानी और राहत हो। (18 : 87-88)

तौरेत में ख़ोरस का यरूशलम से मुताल्लिक़ फ़रमान और दारा के कतबे व एलान, ज़िक्र किए गए तौरात 'अवेस्ता' की अन्दरूनी गवाहियों और तारीख़ी बयानों में से सब गवाहियां इंकार न करने के क़ाबिल की हद तक यह साबित करती हैं कि ख़ोरस और दारा मोमिन थे और वक़्त के सच्चे, दीन के पैरो, बल्कि उसकी तब्लीग़ करने वाले और उसकी ओर बुलाने वाले थे, वे इब्राहीम ज़रदुश्त की इत्तिबा करने वाले, एक ख़ुदा की परस्तिश करने वाले और आख़िरत के क़ायल थे और उनका दीन बनी इसराईल के नबियों की तालीम के एक शाख़ की हैसियत रखता था जो दारा के बाद बहुत ही जल्द बदल कर और बिगड़ कर रह गया।

7. क़ुरआन कहता है कि ज़ुलक़रनैन ने दूसरी मुहिम पूरब की तरफ़ सर की और वह चलते-चलते जब सूरज निकलने की आख़िरी हद पर पहुंचा तो उसको वहां ख़ानाबदोश क़बीलों से वास्ता पड़ा—

तर्जुमा—*इसके बाद उसने फिर तैयारी की और पूरब की तरफ़ निकला, यहां तक कि मकरान के ख़ानाबदोश क़बीलों ने सरकशी की जो कि उसकी राजधानी से पूरब में पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे और जिनसे मुताल्लिक़ मुहिम की तफ़्सील पिछले पन्नों में बयान की जा चुकी।*

इस जगह यह बात भी ध्यान देने की है कि क़ुरआन ने ज़ुलक़रनैन की ज़िक्र के क़ाबिल पच्छिमी और पूर्वी मुहिमों के लिए 'मग़रिबश्शम्स' (सूरज डूबने की जगह) और 'मतलइश शम्स' (सूरज निकलने की जगह) की ताबीर अख़्तियार की है। इससे कुछ लोगों को यह ग़लतफ़हमी हो गई कि ज़ुलक़रनैन सारी दुनिया का बिना किसी शरीक के हुक्मरां बन गया था और उसने दुनिया के दोनों तरफ़ के आख़िरी चौथाई इलाक़ों तक क़ब्ज़ा कर लिया था, हालांकि

तारीख़ी एतबार से यह किसी भी बादशाह के लिए साबित नहीं है और न कुरआन ने इस मक़्सद के लिए ऐसा कहा है, बल्कि इसका साफ़ और खुला मतलब यह है कि ज़ुलक़रनैन अपनी हुकूमत के मर्कज़ के लिहाज़ से मग़रिब की इंतिहा और मश्रिक़ की इंतिहा तक पहुंचा है और मग़रिब में वह इस हद तक पहुंच गया कि जहां ख़ुश्की का सिलसिला शुरू होकर समुन्दर शुरू हो जाता है और मश्रिक़ में इस हद तक पहुंचा कि वहां ख़ानाबदोश क़बीलों के सिवा कोई शहरी आबादी नहीं थी। यह मतलब इतना साफ़ है कि अगर बे-दलील ग़लतफ़हमी की वजह से ऊपर वाला क़ौल नक़ल न किया गया होता, तो हर आदमी ज़ुबान के मुहावरे के लिहाज़ से यही समझता, जो हमने समझा है। चुनांचे आज भी हम हिन्दुस्तान में रहते हुए दूर पूरब और दूर पच्छिम से 'बहुत दूर के मुल्क' मुराद लेते हैं और इन लफ़्ज़ों को इस बात में बांध नहीं देते कि पूरब और पच्छिम के वे किनारे मुराद हैं जिनके बाद दुनिया का कोई हिस्सा भी बाक़ी न रहा हो, अलबत्ता दलीलों और क़रीनों के ज़रिए से कभी-कभी ये मानी भी मुराद हो जाते हैं।

दूर पच्छिम और दूर पूरब के इस लफ़्ज़ को जो कुरआन ने ज़ुलक़रनैन के सिलसिले में बयान किया है, अगर और गहरी नज़र से देखा जाए तो यह मालूम होता है कि ज़ुलक़रनैन (ख़ोरस) से मुताल्लिक़ तौरात ने चूंकि यही ताबीर की थी, इसलिए बहुत मुम्किन है, कुरआन ने सवाल करने वालों को उसका वाक़िया सुनाते वक़्त इस लफ़्ज़ को अख़्तियार करना पसन्द किया हो। यसइयाह नबी के सहीफ़े में ख़ोरस के हक़ में ठीक यही ताबीर मिलती है और इसी तरह ज़करिया नबी के सहीफ़े में भी।

ज़ाहिर है कि इन दोनों जगहों पर दुनिया के दोनों तरफ़ आख़िरी कोने मुराद नहीं हैं, बल्कि जिनका ज़िक्र है उनकी हुकूमत या रहने की जगह से मश्रिक़ी और मग़रिबी सम्तें (दशाएं) मुराद हैं।

8. कुरआन कहता है कि ज़ुलक़रनैन को ज़िक्र के क़ाबिल तीसरी मुहिम पेश आई और जब वह ऐसी जगह पहुंचा जहां दो पहाड़ों की फांकें एक दर्रा बनाती थीं, तो वहां उसको एक ऐसी क़ौम से वास्ता पड़ा जो उसकी ज़ुबान और बोली को नहीं जानती थी, उन्होंने ज़ुलक़रनैन पर (किसी तरह) यह साफ़

किया कि इन पहाड़ों के दर्मियान से निकल कर हम को याजूज और माजूज सताते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, क्या आप हमारी इतनी मदद करेंगे कि हम से माली टैक्स लेकर उनके और हमारे दर्मियान सीमा-रेखा हो जाए और रोक बन जाए। ज़ुलक़रनैन ने कहा, मेरे पास ख़ुदा का दिया सब कुछ है, इसकी मुझे उजरत की ज़रूरत नहीं, अलबत्ता इसके बनाने में मेरी मदद करो। इन लोगों ने ज़ुलक़रनैन के हुक्म से लोहे के टुकड़े जमा किए और उनको ज़ुलक़रनैन ने दोनों पहाड़ों के दर्मियान 'सद्द' बना दी और फिर तांबा पिघला कर उस लोहे की दीवार को मज़बूत किया।

तारीख़ की न इंकार की जा सकने वाली गवाहियों ने यह साबित कर दिया है कि ख़ोरस को उत्तर की तरफ़ एक अहम मुहिम पेश आई, जिसमें काकेशिया (जबले क़ोक़ा या क़ाफ़ पर्वत) के पहाड़ी सिलसिले में ऐसे दो पहाड़ों के क़रीब एक क़ौम मिली जिनकी फांकों के दर्मियान कुदरती दर्रा था और पहाड़ के दूसरी तरफ़ से सेथेनियन क़बीलों के जंगली और ग़ैर-मुहज़्ज़ब लुटेरे दल के दल आकर उस क़ौम पर हमला करते और लूट-मार करके दर्रे के रास्ते वापस हो जाया करते थे। ख़ोरस जब उस जगह पहुंचा, तो उस आबादी के लोगों ने हमलावर लुटेरों की शिकायत करते हुए उससे पहाड़ों के दर्मियान 'सद्द' (दीवार) बना देने की दर्ख़्वास्त की। ख़ोरस ने उनकी दर्ख़्वास्त को मंज़ूर किया और लोहे और तांबे से मिला कर एक सद्द क़ायम कर दी, जिसको वक़्त के गाग और मीगाग असभ्य (सेन्थनीन) क़बीले अपनी दरिन्दगी और ख़ूंख़्वारी के बावजूद न तोड़-फोड़ सके और न उसके ऊपर से उतर कर हमलावर हो सके और इस तरह पहाड़ों के दर्रे की आबादी उनके हमलों से बच गई।

याजूज व माजूज

अब दूसरा मसला याजूज और माजूज के तै करने का है। तफ़्सीर लिखने वालों और इस्लाम की तारीख़ लिखने वालों ने झूठी-सच्ची रिवायतों का वह तमाम ज़ख़ीरा नक़ल कर दिया है जो इस सिलसिले में बयान की गई हैं और साथ ही यह भी वाज़ेह कर दिया है कि कुछ रिवायतों के अलावा इस

सिलसिले की तमाम रिवायतें झूठ और ख़ुराफ़ात का मज्मूआ हैं, जो न अक़्ल के एतबार से भरोसे के लायक़ हैं, न और किसी एतबार से और ये इसराईली रिवायतों का बे-मतलब का भंडार हैं।

इन तमाम रिवायतों में जो सब में पाई जाती है, वह यह है कि याजूज और माजूज एक ऐसे क़बीलों का मज्मूआ (योग) है जो जिस्मानी और समाजी एतबार से अजीब व ग़रीब ज़िंदगी जीते हैं, जैसे वे बालिश्त या डेढ़ बालिश्त या ज़्यादा से ज़्यादा एक हाथ का क़द रखते हैं और कुछ ग़ैर मामूली लम्बे हैं और उनके दोनों कान इतने बड़े हैं कि एक ओढ़ने और दूसरा बिछाने के काम में आता है, चेहरे चौड़े चकले और क़द से कोई मेल नहीं खाते। इनके खाने के लिए कुदरत साल भर में दो बार समुन्दर से ऐसी मछलियां निकाल कर फेंक देती है जिनके सर और दुम का फ़ासला इतना लम्बा होता है कि दस दिन व रात अगर कोई उस पर चलता रहे, तब उस फ़ासले को तै कर सकता है या एक ऐसा सांप उनका खाना है जो पहले आस-पास के ख़ुश्की के जानवरों को हज़म कर जाता है और फिर कुदरत समुन्दर में उसको फेंक देती है और वहां मीलों तक समुन्दरी जानवरों को चट कर लेता है और फिर एक बादल आता है और फ़रिश्ता उस भारी-भरकम जिस्म वाले अजगर को उठाकर उस पर रख देता है और बादल उनको इन क़बीलों में ले जा डाल देता है और यह कि याजूज व माजूज एक ऐसी ही बरज़ख़ी मख़्लूक़ हैं जो आदम की नस्ल से तो हैं, मगर हव्वा (अलैहस्सलाम) के पेट से नहीं हैं, लेकिन इन तह्क़ीक़ करने वालों के क़ौलों से, जो हदीस, तफ़्सीर और तारीख़ के इल्म की माहिर हस्तियां हैं, यह बात क़तई तौर पर साफ़ हो जाती है कि याजूज-माजूज आम इंसानी मख़्लूक़ की तरह दुनिया के बाशिंदे और उनकी नस्ल बनी आदम की आम नस्ल की तरह है। वह कोई अनोखी मख़्लूक़ नहीं है और यह कि याजूज-माजूज उन वहशी क़बीलों को कहा जाता रहा है जो रूस और यूरोप की क़ौमों की असल और जड़ हैं और चूंकि उनकी पड़ोसी क़ौम उन क़बीलों में से दो बड़े क़बीलों को मोग और योची कहती थी, इसलिए यूनानियों ने उनकी तक़्लीद में उनको मेक या मेगॉग और लोगॉग कहा और इबरानी और अरबी में तसर्रुफ़ करके उनको याजूज-माजूज के नाम से याद किया गया यानी

याजूज माजूज भी अगरचे मंगोली (तातारी) हैं मगर पहाड़ों के दर्रे के जो तातारी क़बीले अपने मर्कज़ से हटकर आज़ाद हो गए थे और मुतमद्दिन (सभ्य) बन गए थे, एक ही नस्ल होने के बाद भी दोनों में इतनी दूरी हो गई कि एक दूसरे से अनजान, बल्कि हरीफ़ (दुश्मन) बन गए और एक ज़ालिम कहलाए और दूसरे मज़लूम और उन्हीं क़बीलों ने ज़ुलक़रनैन से सद्द बनाने की फ़रमाइश की।

और कुछ तारीख़दानों ने तो 'तुर्क' नाम पड़ने की वजह ही यह बयान कर दी कि ये वे क़बीले हैं जो याजूज माजूज के हमनस्ल होने के बाद भी सद्द से परे आबाद थे और इसलिए जब ज़ुलक़रनैन ने सद्द क़ायम की और उनको उसमें शामिल नहीं किया तो इस छोड़ दिए जाने से वे तर्क (तुर्क) कहलाए।

नाम पड़ने की यह वजह अगरचे एक चुटकुला है, फिर भी इस बात का सबूत ज़रूर पहुंचाती है कि तमद्दुन वाले क़बीले तमद्दुन व तह्ज़ीब पाने के बाद अपने हमनस्ल मर्कज़ी क़बीलों से अनजाने हो जाते थे और वह याजूज-माजूज नहीं कहलाते थे और लफ़्ज़ याजूज माजूज सिर्फ़ उन्हीं क़बीलों के लिए ख़ास हो गए हैं जो अपने मर्क़ज़ में पहले की तरह अब भी वहशत व बरबरीयत और दरिंदगी के साथ जुड़े हुए हैं।

सद्द

याजूज-माजूज के इस तरह तै हो जाने के बाद दूसरा मामला 'सद्द' का सामने आता है, यानी वह सद्द किस जगह वाक़े है जो ज़ुलक़रनैन ने याजूज व माजूज के फ़ित्ने व फ़साद को रोकने के लिए बनाई और जिसका ज़िक्र क़ुरआन में भी किया गया है—

1. सद्द के तै होने से पहले यह हक़ीक़त सामने रहनी चाहिए कि याजूज-माजूज की तोड़-फोड़ और शर व फ़साद का दायरा इतना बड़ा था कि एक तरफ़ काकेशिया के नीचे बसने वाले उनके ज़ुल्म व सितम से नालां थे, दूसरी तरफ़ तिब्बत और चीन के बाशिंदे भी उनके उत्तरी छेड़-छाड़ से बचे हुए न थे, इसलिए सिर्फ़ एक ही ग़रज़ के लिए यानी क़बीलों—याजूज माजूज—के शर व फ़साद और लूट-मार से बचने के लिए अलग-अलग तारीख़ी ज़मानों में

कई 'सद्द' बनाई गईं इनमें से पहली सद्द वह है जो दीवारे चीन के नाम से मशहूर है। यह दीवार लगभग एक हज़ार मील लम्बी है। इस दीवार को मंगोली अतकोदा कहते हैं और तुर्की में इसका नाम बोक़ोरक़ा है।

2. दूसरी सद्द बीच एशिया में बुख़ारा और तुर्ज़ के क़रीब वाक़े है और उसके वाक़े होने की जगह का नाम दरबन्द है। यह सद्द मशहूर मुग़ल बादशाह और तैमूर लंग के ज़माने में मौजूद थी और शाहे रूम के नदीम ख़ास सेलाबरजर जर्मनी ने भी इसका ज़िक्र अपनी किताब में किया है और उन्दुलुस के बादशाह कस्टील के क़ासिद कलामचू ने भी अपने सफ़रनामे में इस का ज़िक्र किया है और यह 1403 ई. में अपने बादशाह का सफ़ीर होकर जब तैमूर साहिबक़रां की ख़िदमत में हाज़िर हुआ है तो उस जगह से गुज़रा है। वह लिखता है कि बाबूल हदीद की 'सद्द' मूसल के उस रास्ते पर है जो समरक़ंद और हिन्दुस्तान के दर्मियान वाक़े है।

3. तीसरी 'सद्द' रूसी इलाक़े दाग़िस्तान में वाक़े है। यह भी दरबंद और बाबुल अबवाब के नाम से मशहूर है और कुछ तारीख़दां इसको 'अल-बाब' भी लिख देते हैं। याक़ूत हमवी ने मोजमुलबुलदान में, इदरीसी ने जुग़राफ़िया में और बुस्तानी ने दाइरतुल मआरिफ़ में इसके हालात को बहुत तफ़्सील के साथ लिखा है आर इन सब का ख़ुलासा यह है कि—

'दाग़िस्तान दरबन्द' एक रूसी शहर है, यह शहर बहे ख़ज़र (Caspian Sea) के ग़रबी (पश्चिमी) किनारे पर वाक़े है। इसकी चौड़ाई अर्ज़ुलबलद 3-43° उत्तरी और तूलुल बलद 15-48° पूर्वी है और इसको दरबन्द अनुशेरवां भी कहते हैं और बाबुल अबवाब के नाम से बहुत मशहूर है और उसके आस-पास को पुराने ज़माने से चारदीवारी घेरे हुए है, जिसके पुराने तारीख़दां अबवाबे अलबानिया कहते आए हैं और अब यह टूटी-फूटी हालत में है और इसको बाबुल हदीद इसलिए कहते हैं कि उसकी सद्द की दीवारों में लोहे के बड़े-बड़े फाटक लगे हुए थे।

4. और जब उसी बाबुल अबवाब के पश्चिम की तरफ़ काकेशिया के भीतरी हिस्सों में बढ़ते हैं तो एक दर्रा मिलता है जो दर्रा दानियाल के नाम से मशहूर है और यह काकेशिया के बहुत ऊपरी हिस्सों से गुज़रा है। यहां एक

चौथी सद्द है, जो क़फ़क़ाज़ या जबले क़ूक़ा या जबले क़ाफ़ की सद्द कहलाती है और यह सद्द दो पहाड़ों के दर्मियान बनाई गई है। बुस्तानी इसके मुताल्लिक़ लिखता है–

और उसी के क़रीब एक और सद्द है, जो पश्चिम की ओर बढ़ती चली गई है, शायद उसको फ़ारस वालों ने उत्तरी बरबरों से हिफ़ाज़त के लिए बनाया होगा, क्योंकि उसकी बुनियाद डालने वालों का सही हाल नहीं मालूम हो सका। कुछ ने उसका ताल्लुक़ सिकन्दर से जोड़ दिया और कुछ ने किसरा और नौशेरवां की ओर मोड़ दिया। याक़ूत कहता है कि यह तांबा पिघला कर उससे तैयार की गई है। इंसाइक्लोपेडिया ब्रिटैनिका में भी 'दरबन्द' के आर्टिकल में लोहे की दीवार का हाल क़रीब-क़रीब इसी तरह बयान किया गया है।'

चूंकि ये सब दीवारें उत्तर ही में बनाई गई हैं और एक ही ज़रूरत के लिए बनाई गई हैं इसलिए ज़ुलकरनैन की बनाई हुई सद्द के तै करने में उलझनें पैदा हो गई हैं और इसीलिए हम तारीख़ के माहिरों में इस जगह ज़बरदस्त इख़्तिलाफ़ पाते हैं और इस इख़्तिलाफ़ ने एक दिलचस्प शक्ल अख़्तियार कर ली है, इसलिए कि दरबन्द के नाम से दो जगहों का ज़िक्र आता है और दोनों जगहों में सद्द या दीवार भी मौजूद है और ग़रज भी दोनों की एक ही नज़र आती है।

तो अब चीन की दीवार को छोड़कर बाक़ी तीन दीवारों के बारे में बहस की बात यह है कि ज़ुलक़रनैन की सद्द इन तीनों में से कौन-सी है और इस सिलसिले में जिस दरबन्द का ज़िक्र आता है, वह कौन-सा है।

क़ुरआन और सद्द

ज़ुलक़रनैन के सद्द के बारे में क़ुरआन ने दो बातें साफ़-साफ़ बयान की हैं, एक यह कि वह सद्द दो पहाड़ों के दर्मियान तामीर की गई है और उसने पहाड़ों के उस दर्रे को बन्द कर दिया है, जहां से होकर याजूज-माजूज इस तरफ़ के बसने वालों को तंग करते थे।

तर्जुमा–यहां तक कि जब ज़ुलक़रनैन दो पहाड़ों के दर्मियान पहुंचा तो इन दोनों के इस तरफ़ ऐसी क़ौम को पाया, जिनकी बात वह पूरी तरह नहीं

समझता था, वे कहने लगे, ऐ ज़ुलक़रनैन! बेशक याजूज-माजूज उस सरज़मीन में फ़साद मचाते हैं। (18 : 94)

दूसरे यह कि वह चूने या ईंट-गारे से नहीं बनाई गई है, बल्कि लोहे के टुकड़ों से तैयार की गई है, जिसमें तांबा पिघला हुआ शामिल किया गया था--

तर्जुमा--मैंने तुम्हारे और उनके (यानी याजूज व माजूज) के दर्मियान एक मोटी दीवार क़ायम कर दूंगा। तुम मेरे पास लोहे के टुकड़े ला कर दो, यहां तक कि पहाड़ के दोनों फाटकों (चोटियों) के दर्मियान जब दीवार को बराबर कर दिया, तो उसने कहा कि धौंको, यहां तक कि जब धौंक कर उसको आग कर दिया। कहा, लाओ मेरे पास पिघला हुआ तांबा, कि उसपर डालूं। (18 : 96)

कुरआन की बताई हुई इन दोनों सिफ़तों को सामने रखकर अब हमको यह देखना चाहिए कि बिना किसी तावील के ऐसी कौन-सी सद्द हो सकती है और किस सद्द पर ये सिफ़तें ठीक बैठती हैं।

ज़ुलक़रनैन की सद्द (दीवार)

आज के देखने से भी यह बात साबित है कि दारियाल का यह दर्रा पहाड़ों की दो चोटियों के दर्मियान घिरा हुआ है और तारीख़ी हक़ीक़तें भी इसको मानती और वाज़ेह करती हैं, साथ ही वासिक़ बिल्लाह के कमीशन ने अपना देखा हुआ यह बयान किया है कि यह लोहे और पिघले हुए तांबे से तैयार की गई है। बेशक यह मान लेना चाहिए कि यही दिवार ज़ुलक़रनैन की वह दिवार है, जिसका ज़िक्र कुरआन ने सूरः कह्फ़ में किया है, क्योंकि कुरआन की बताई हुई दोनों ख़ूबियाँ सिर्फ़ इसी दीवार के लिए सही साबित होती हैं, इसलिए वहब अबू हैय्यान, इब्ने ख़ुरदाद, अल्लामा अनवर शाह और मौलाना आज़ाद जैसे तहक़ीक़ करने वालों की यही राय है कि ज़ुलक़रनैन का सद्द क़फ़क़ाज़ के इसी दर्रे की सद्द का नाम है।

इन वज़ाहतों के बाद अब हमको कहने दीजिए कि दारियाल दर्रे की यह सद्द (यानी चौथी सद्द) साइरस (गोरशया के ख़ुसरो) की तामीर की हुई है और जैसा कि हम याजूज व माजूज की बहस में बयान कर चुके हैं, यह उन वहशी

क़बीलों के लिए उसने बनाई थी, जो काकेशिया के इंतिहाई इलाक़ों से आकर और इस दर्रे से गुज़र कर कफ़क़ाज़ के पहाड़ों के इस तरफ़ बसनेवालों पर लूट-मार मचाते थे और यही के क़बीले थे जो साइरस के ज़माने में हमलावर हो रहे थे और उस वक़्त के याजूज माजूज जैसे यही क़बीले थे और इन्हीं की रोक-थाम की ज़रूरत से साइरस ने एक क़ौम की शिकायत पर यह 'सद्द' तैयार की और अरमनी नविश्तों में इस सद्द का जो पुराना नाम 'फाक को राई' (कोर का दर्रा) लिखा चला आता है इस कोर से मुराद शायद केरश है, जो साइरस ही का फ़ारसी नाम है।

दूसरी सद्दें

ऊपर दर्ज की गई सद्द के क़रीब दरबन्द (बड़े ख़ज़र) की दीवार इसके बाद इसी ग़रज़ से किसी दूसरे बादशाह ने बनवाई है और अनुशेरवां ने अपने ज़माने में उसको दोबारा साफ़ और दुरुस्त कराया है, जैसा कि इंसाइक्लोपेडिया ऑफ़ इस्लाम में ज़िक्र किया गया है और इन तीनों दीवारों (सद्द) में से सिकन्दर की बनाई हुई कोई एक सद्द भी नहीं है, इसलिए कि सिकन्दर की जीतों की तारीख़ जो कि सामने है, उससे किसी तरह यह साबित नहीं होता कि सिकन्दर को इस ग़रज के लिए किसी सद्द क़ायम करने की ज़रूरत पेश आई हो, क्योंकि उसकी हुकूमत के सारे दौर में याजूज व माजूज क़बीलों का कोई हमला तारीख़ में मौजूद नहीं है और न दरबन्द (हिसार) तक पहुंचने पर किसी क़ौम का इस क़िस्म के वहशी क़बीलों से दो-चार होना और सिकन्दर से उसकी शिकायत करना तारीख़ी हक़ीक़तों में कहीं नज़र आता है।

याजूज व माजूज का ख़ुरूज

ज़ुलक़रनैन, याजूज व माजूज और सद्द की बहस के बाद सबसे ज़्यादा अहम मस्अला याजूज व माजूज के उस ख़ुरूज का है, जिसका ज़िक्र क़ुरआन ने किया है। इस मस्अले की अहमियत इसलिए और भी बढ़ जाती है कि इस मस्अले का ताल्लुक़ क़ियामत की निशानियों से है। यह एक हक़ीक़त है कि याजूज व माजूज के ख़ुरूज़ (निकलने) का मस्अला कि जिसकी ख़बर क़ुरआन

मजीद ने पेशीनगोई के तौर पर दी है, ऐसा मस्अला नहीं है कि जिसको सिर्फ़ गुमान और अन्दाज़े की बुनियाद पर हल कर लिया जाए और जबकि इस मस्अले का ताल्लुक़ क़ुरआनी गैबों की ख़बरों में से है तो फिर इससे मुताल्लिक़ फ़ैसला करने का हक़ भी क़ुरआन ही को पहुंचता है, न कि अन्दाज़े और गुमान को।

क़ुरआन ने इस वाक़िए को सूरः कह्फ़ और सूरः अंबिया में बयान किया है और इस मस्अले से मुताल्लिक़ जो कुछ भी है, उनका सिर्फ़ दो सूरतों में ज़िक्र किया गया है।

सूरः कह्फ़ में इस वाक़िए का इस तरह ज़िक्र है—

तर्जुमा : *'पस नहीं ताक़त रखते वे (याजूज व माजूज) इस सद्द पर चढ़ने की और न वे उसमें सूराख़ करने की ताक़त रखते हैं। (ज़ुलक़रनैन) ने कहा, यह मेरे परवरदिगार की रहमत है, फिर जब मेरे रब का वायदा आएगा, तो उसको गिरा कर रेज़ा-रेज़ा कर देगा और मेरे परवरदिगार की फ़रमाई हुई बात सच है।'* (कह्फ़ 97-98)

और सूरः अंबिया में इस वाक़िए को इस तरह बयान किया गया है—

तर्जुमा— *'यहां तक कि जब खोल दिए जाएंगे याजूज और माजूज और ज़मीन की बुलन्दियों से दौड़ते हुए उतर आएंगे और अल्लाह का सच्चा वायदा क़रीब आ जाएगा तो उस वक़्त अचानक ऐसा होगा कि जिन लोगों के कुफ़्र किया है, उनकी आंखें खुली रह जाएंगी और वे पुकार उठेंगे, हाय कमबख़्ती हमारी कि हम बेख़बर रहे।* (अंबिया 96-97)

इन दोनों जगहों पर क़ुरआन ने एक तो यह बताया है कि जिस ज़माने में ज़ुलक़रनैन ने याजूज-माजूज पर सद्द क़ायम की तो उसकी मज़बूती की हालत यह थी कि ये क़ौमें न उसको फांद कर इस ओर आ सकती थीं और न उसमें सुराख़ पैदा करके उसको पार कर सकती थीं और सद्द की इस मज़बूती और पायदारी को देखकर ज़ुलक़रनैन ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और यह कहा कि यह सब कुछ अल्लाह की रहमत का करिश्मा है कि उसने मुझसे यह नेक ख़िदमत करा दी।

और दूसरी बात यह बयान की है कि क़ियामत का ज़माना क़रीब होगा

तो याजूज व माजूज अनगिनत फ़ौज पर फ़ौज निकलकर दुनिया में फैल जाएंगे और लूटमार और तबाही व बर्बादी मचा देंगे।

इन दोनों बातों से आमतौर से तफ़्सीर लिखनेवालों ने यह समझा है कि याजूज व माजूज ज़ुलक़रनैन की सद्द में इस तरह घिर गए हैं कि यह सद्द क़ियामत तक इसी तरह सही व सालिम खड़ी रहेगी और जब याजूज व माजूज के ख़ुरूज का वक़्त आएगा और वह क़ियामत के क़रीब और क़ियामत की निशानियों मे से होगा तो उस वक़्त एकबारगी सद्द गिर कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएगी और इसलिए उन्होंने दोनों जगहों में उसी के मुताबिक़ आयतों की तफ़्सीर की है। चुनांचे उन्होंने सूरः अंबिया की इस आयत का *'हत्ता इज़ा फ़ुतिहत याजूजु व माजूजु'* का यह तर्जुमा करके, 'यहां तक कि जब याजूज और माजूज सद्द तोड़कर खोल दिए जाएंगे' इस इर्शादे इलाही को ज़ुलक़रनैन के इस क़ौल के साथ जोड़ दिया जिसका सूरः कह्फ़ में ज़िक्र है, 'फ़ इज़ा जा-अ वादुरब्बी ज-अ-लहू दक्का', (फिर मेरे रब का वायदा आएगा तो वह उसको रेज़ा-रेज़ा कर देगा।'

मगर आयतों के आगे-पीछे और उनके मतलब पर गहरी नज़र डालने से यह तफ़्सीर क़ुरआनी आयतों का हक़ अदा नहीं करती।

इस इज्माल की तफ़्सील यह है कि क़ुरआन ने सूरः कह्फ़ में तो सिर्फ़ इसी का ज़िक्र किया है कि याजूज व माजूज पर जब ज़ुलक़रनैन ने सद्द तामीर कर दी तो उसकी मज़बूती का ज़िक्र करते हुए यह भी कह दिया कि जब मेरे अल्लाह का वायदा आ जाएगा तो यह सद्द रेज़ा-रेज़ा हो जाएगी और अल्लाह का वायदा बर-हक़ है और उसके ख़िलाफ़ होना मुश्किल, बल्कि नामुम्किन, मगर इस जगह याजूज व माजूज के निकलने का कोई ज़िक्र नहीं है जो क़ियामत के क़रीब वाक़े होगा और होता भी कैसे, क्योंकि यह तो ज़ुलक़रनैन का अपना क़ौल है, जो सद्द के मज़बूत और मुस्तहक्म होने के सिलसिले में कहा गया है और याजूज और माजूज का निकलना ग़ैब की उन चीज़ों में से है जो क़ियामत की निशानी के तौर पर अल्लाह तआला की ओर से बयान किया गया है और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए से दुनिया की क़ौमों के लिए तंबीह है कि अल्लाह की यह ज़मीन अपने आख़िरी

लम्हों में एक सख़्त और हौलनाक आलमी हादसे से दो चार होने वाली है।

और सूरः अंबिया में सिर्फ़ यह ज़िक्र है कि क़ियामत के क़रीब याजूज व माजूज का निकलना होगा और वे बहुत तेज़ी के साथ बुलन्दियों से पस्ती की तरफ़ फ़साद बरपा करने के लिए उमंड पड़ेंगे और उस जगह सद्द का और सद्द के रेज़ा-रेज़ा होकर उससे याजूज व माजूज के निकलने का क़तई तौर पर कोई ज़िक्र नहीं है और लफ़्ज़ 'फ़ुतिहत' को ऐसा समझना सिर्फ़ क़ियासी व तख़्मीनी है, जैसा कि बहुत जल्द वाज़ेह होगा।

पस सूरः कह्फ़ और सूरः अंबिया दोनों में इस वाक़िए से मुताल्लिक़ आयतों का साफ़ और सादा मतलब यह है कि सूरः कह्फ़ में तो पहले इस वाक़िए की तफ़्सीलें सुनाई गई हैं, जिनके बारे में यहूदियों ने नबी अकरम सल्ललाहु अलैहि व सल्लम से सीधे-सीधे या ख़ुद या मुश्रिकों के वास्ते से सवाल किया था कि ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत से मुताल्लिक़ अगर कोई इल्म रखते हो तो उसको ज़ाहिर करो। कुरआन यानी वह्य इलाही ने उनको बताया कि ज़ुलक़रनैन नेक और सालेह बादशाह था। उसने ज़िक्र के क़ाबिल तीन मुहिमें सर कीं—

एक मश्रिक़े बुस्ता (मध्य पूर्व) की,

दूसरी मग़्रिबे अक़्सा (दूर पश्चिम) की और

तीसरी उत्तर की ओर

और इस तीसरी मुहिम में उसको एक ऐसी क़ौम से वास्ता पड़ा, जिसने याजूज माजूज की मचाई तबाहियों का शिकवा करते हुए अपने और उनके दर्मियान 'सद्द' क़ायम करने की मांग की। ज़ुलक़रनैन ने उनकी मांग को इस तरह पूरा किया कि उस तरफ़ वे, जिस दर्रे से निकल कर वे हमलावार हुआ करते थे, उसको लोहे की तख़्तियों और पिघले हुए तांबे से बन्द कर दिया और दो पहाड़ों के दर्मियान दर्रे पर एक बेहतरीन 'सद्द' क़ायम कर दी और साथ ही अल्लाह का शुक्र बजा लाते हुए उसने यह भी ज़ाहिर किया कि यह 'सद्द' इतनी मुस्तहकम और मज़बूत है कि अब याजूज व माजूज न उसमें सूराख़ कर सकेंगे, और न उस पर चढ़ कर इधर आ सकेंगे, लेकिन मैं यह दावा नहीं करता कि यह सद्द हमेशा-हमेशा के लिए इसी तरह रहेगी, बल्कि

अल्लाह को जब तक मंज़ूर है, यह इसी तरह क़ायम है और वह चाहेगा कि यह रोक बाक़ी न रहे, तो यह टूट-फूट जाएगी और अल्लाह का वायदा 'यानी हर चीज़ की तरह सद्द का भी फ़ना हो जाना' पूरा हो कर रहेगा।

यहूदियों ने चूंकि सिर्फ़ ज़ुलक़रनैन के बारे में सवाल किया था, इसलिए सूरः कह्फ़ में उसी के बारे में तफ़्सील से बताया गया और याजूज व माजूज का सिर्फ़ ज़िमनी ज़िक्र आ गया और सूरः अंबिया में अल्लाह तआला मुश्रिकों का रद्द करते हुए फ़रमाते हैं कि जो बस्तियां हलाक कर दी गईं, अब उनके बाशिंदे दुनिया में ज़िंदा नहीं वापस आएंगे। हां, जब क़ियामत आ जाएगी 'और वह जब आएगी कि उससे पहले याजूज-माजूज का फ़ित्ना पेश आएगा' तब अलबत्ता हश्र के मैदान में सब दोबारा ज़िंदा करके रब्बुल आलमीन के सामने जवाबदेह होने के लिए जमा किए जाएंगे।

फिर चूंकि इस जगह याजूज-माजूज के ख़ारिज होने को क़ियामत की निशानी बयान करके अहमियत दी गई है, इसलिए उसके निकलने को सद्द के टूटने और रेज़ा-रेज़ा होने के साथ बांधा नहीं गया, बल्कि सिरे से सद्द का ज़िक्र ही नहीं किया, बल्कि यह कहा कि जब इनके निकलने का वक़्त आ जाएगा, तो तेज़ी के साथ बुलन्दियों से पस्ती की तरफ़ उमंड पड़ेंगे और तमाम इलाक़ों में फैल जाएंगे।

पस आयतों के इस मज्मूए से दो बातें मालूम हुईं, एक यह कि 'ज़ुलक़रनैन की सद्द' याजूज व माजूज के निकलने से पहले ज़रूर टूट-फूट चुकी होगी, दूसरे यह कि याजूज व माजूज के ख़ुरूज का वह वक़्त होगा कि क़ियामत का वक़्त बिल्कुल क़रीब हो जाए और उसके बाद सूर के फूंके जाने ही का मरहला बाक़ी रह जाए। उस वक़्त याजूज व माजूज के तमाम क़बीले बेपनाह सैलाब की तरह उमंड पड़ेंगे और तमाम कायनात में बड़ा फ़साद बरपा करेंगे।

बहरहाल ज़ुलक़रनैन के क़ौल *'इज़ा जा-अ वादु रब्बी ज-अ-लहू दक्का'* में 'वाद' से मुराद याजूज व माजूज का निकलना नहीं है, बल्कि मतलब यह है कि एक वक़्त ऐसा ज़रूर आएगा कि बेशक सद्द तबाह हो जाएगी और वह टूट-फूट जाएगी और सूरः अंबिया में अल्लाह तआला के इर्शाद *'फ़ुतिहत*

याजूजु व माजूज' में फ़ुतिहत से यह मुराद नहीं है कि वे सद्द तोड़ कर निकल आएंगे, बल्कि मुराद यह है कि वे इस बड़ी तायदाद में फ़ौज दर फ़ौज निकल पड़ेंगे, गोया कहीं बन्द थे और आज खोल दिए गए हैं।

चुनांचे अरब के लोग लफ़्ज़ 'फ़त्ह' को, जब जानदार चीज़ों के लिए इस्तेमाल करते हैं तो उससे यह मुराद होती है कि ये किसी कोने में अलग-थलग पड़ी हुई थीं और अब अचानक निकल पड़ीं, इसलिए जब कोई शख़्स कहता है 'फ़त्हुल जराद' तो इसका यह मतलब नहीं होता कि टिड्डियां किसी जगह बन्द थीं और अब उनको खोल दिया गया, बल्कि यह मतलब लिया जाता है कि टिड्डी दल किसी पहाड़ी कोने में अलग-थलग पड़ा था कि अब अचानक फ़ौज दर फ़ौज बाहर निकल पड़ा। पस यहां भी यह बताया है कि याजूज व माजूज जैसे शानदार क़बीले जो अर्से से इतनी भारी तायदाद में हैं, इतनी बड़ी दुनिया के एक कोने में अलग-थलग पड़े हुए थे, उस दिन इस तरह उमड आएंगें गोया बन्द थे, और अब अचानक खोल दिए गए।

नोट : (इस मरहले पर हज़रत मौलना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने यांजूज व माजूज से मुताल्लिक़ नबी सल्ल० की हदीसों पर तफ़्सील से बहस की है और हज़रत मौलाना अनवर शाह रह० की तफ़्सीर की तरफ़ क़ौले फ़ैसले के तौर पर रुजू किया है।)

हज़रत मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी (रह०) की तफ़्सीर

हज़रत शाह साहब ने आयत 'व *त-रकना बाज़ुहुम यौ-मइज़िन यमूजु फ़ी बाज़'* की तफ़्सीर यह की है कि ज़ुलक़रनैन के इस वाक़िए में चूंकि याजूज व माजूज पर इस जानिब से रोक क़ायम हो जाने का तज़्किरा है, इसलिए अल्लाह तआला ने ज़ुलक़रनैन के क़ौल के बाद अपनी तरफ़ से इस आयत में यह इर्शाद फ़रमाया है कि ऐ मुख़ातब लोगो! तुम जिन याजूज व माजूज क़बीलों के बारे में ये बातें सुन रहे हो, यह भी सुन लो कि हमने उन क़बीलों के लिए यह मुक़द्दर कर दिया है कि वे आपस में उलझते रहेंगे और मौज दर मौज आपस में दस्त व गरेबां होते रहेंगे, यहां तक कि वह वक़्त आ जाए जब क़ियामत बरपा होने में सूर फूंकने के अलावा और कोई मरहला बाक़ी न रहे

और सूरः अंबिया में यह इर्शाद फ़रमाया कि 'सूर फूंकने' से पहले क़ियामत की शर्तों और निशानियों में से एक शर्त या निशानी यह पेश आएगी कि याजूज व माजूज के तमाम क़बीले अपने निकलने के हर मक़ाम से एक साथ उमंड आएंगे और दुनिया की आम ग़ारतगरी के लिए अपनी मक़ामी बुलन्दियों से तेज़ी के साथ उतरते हुए कायनात के कोने-कोने में फैल जाएंगे। 'मिन कुल्लि ह-दबिंय-यं सलून' में हदब का मतलब है ऊपर से नीचे झुकना, इसलिए हदब के मानी ऊंची जगह से नीचे उतरने के होते हैं और 'नस्लान' अरबी भाषा में फिसलने को कहते हैं। इसलिए 'यन्सलून' के मानी यह हुए कि वे इस तेज़ी से उमंड आएंगे कि यह मालूम होगा, गोया वे किसी टीले से फिसल रहे हैं। चुनांचे हज़रत इमाम राग़िब के 'मुफ़रदात' और इब्ने असीर के निहाया में 'हदब' और 'नसलुन व नसलान' की बहस में इसी तफ़्सील का ज़िक्र है।

इसलिए इस तफ़्सीर से साफ़ हो जाता है कि क़ुरआन ने याजूज व माजूज के निकलने की जो हालत बताई है, वह इन्हीं क़बीलों पर फ़िट आती है, जो कैस्पियन सागर से लेकर मंचूरिया तक फैले हुए हैं और जो दुनिया की बहुत बड़ी आबादी के महवर हैं और जगह के एतबार से आम सतहे आबादी से ज़मीन के इस क़दर बलन्द हिस्से पर मुक़ीम हैं कि जब कभी निकल कर मुहज़्ज़ब क़ौमों पर हमलावर होते हैं तो यह मालूम होता है कि गोया ऊपर से नीचे को फिसल रहे हैं, पस आगे भी जब वक़्त की शर्तों की शक्ल में उन का आख़िरी ख़ुरूज होगा, तो उनके तमाम क़बीलों का सैलाब एक ही बार उमंड आएगा और ऐसा मालूम होगा कि इंसानों के समुन्दर का बांध टूट गया है और वह अपनी जगहों की हर बुलन्दी से नीचे की तरफ़ बह पड़ा है।

बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसें

कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने सूरः अंबिया की आयतों से मुराद तातार का फ़ित्ना लिया है और उसकी ताईद में बुख़ारी की मशहूर हदीस *'वैलुल लिल हर्ब मिनशर्रिन क़दिक़्र-त-र-ब'* को पेश किया है, उनकी यह तफ़्सीर ग़लत है और हदीस से इसकी ताईद बिल्कुल बेमहल है, बल्कि बुख़ारी व मुस्लिम की दूसरी सहीह हदीसें जो कि बाबुल फ़ितन में ज़िक्र की गई हैं, इस तफ़्सीर के

ख़िलाफ़ साफ़-साफ़ यह बयान करती है कि क़ियामत की अलामतों (निशानियों) में जब आख़िरी अलामतें सामने आएंगी तो पहले हज़रत ईसा का आसमान से नुज़ूल (उतरना) होगा और दज्जाल का सख़्त फ़ित्ना बरपा करना होगा और आख़िरकार हज़रत ईसा अलैहि० के हाथों वह मारा जाएगा और फिर कुछ दिनों के बाद याजूज व माजूज निकलेंगे जो तमाम दुनिया पर शर व फ़साद की सूरत में छा जाएंगे और फिर कुछ दिनों के बाद सूर फूंका जाएगा और दुनिया का यह कारख़ाना दरहम बरहम हो जाएगा।

इस बुनियाद पर यह ख़्याल भी बातिल है कि अंग्रेज़ और रूस, बल्कि यूरोपीय हुकूमतों का क़ब्ज़ा याजूज व माजूज का निकलना है और यह इसलिए कि एक तो अभी ज़िक्र हो चुका कि मुतमद्दिन क़ौमों को याजूज व माजूज कहना ही ग़लत है, दूसरे इसलिए कि याजूज व माजूज के इस फ़ित्ने व फ़साद के पेशे नज़र, जिसका ज़ुलक़रनैन के वाक़िए में सूरः कह्फ़ में ज़िक्र किया गया है और सहीह हदीसों की वज़ाहतों के मुताबिक़ उनका वह ख़ुरूज भी जिसका ज़िक्र सूरः अंबिया में किया गया है और जिसको क़ियामत की निशानी में से ठहराया गया है, ऐसे ही फ़साद व शर के साथ होगा, जिसका ताल्लुक़ तहज़ीब व तमद्दुन से दूर का भी न हो और जो ख़ालिस वहशियाना तरीक़े पर बरपा किया जाए। कहां साइंस की ईजादों और हथियारों की जंग का तरीक़ा और कहां ग़ैर तहज़ीबी और वहशियाना लड़ाई और जंग?

और यह बात इसलिए भी वाज़ेह है कि मुतमद्दिन क़ौमों के लड़ाई-झगड़े कितने ही वहशियाना अन्दाज़ क्यों न अपनाएं, बहरहाल साइंस और लड़ाई के उसूल के मुताबिक़ होते हैं और यह सिलसिला क़ौमों और उम्मतों में हमेशा से है, इसलिए अगर इस क़िस्म के जाबिराना और क़ाहिराना क़ब्ज़े के बारे में क़ुरआन को पेशीनगोई करनी थी, तो इसकी ताबीर के लिए हरगिज़ यह तरीक़ा न अख़्तियार किया जाता जो माजूज व याजूज के निकलने के सिलसिले में सूरः अंबिया में अख़्तियार किया गया है, बल्कि इनकी तरक़्क़ीनुमा बरबरता की ओर ज़रूरी इशारों या वज़ाहतों का होना लाज़िम था।

हासिल यह कि सहीह हदीसों और क़ुरआनी आयतों के मुताबिक़ होने के साथ-साथ जब इस मस्अले पर ग़ौर व फ़िक्र किया जाता है, तो खुलकर

यह बात सामने आती है कि इस निशानी से पहले हज़रत ईसा (अलै॰) के आने का इन्तिज़ार किया जाए। पस याजूज-माजूज का निकलना किसी हाल में भी इन क़ौमों पर सही नहीं उतरता जो तहज़ीब व तमद्दुन की राहों से ज़ोर-ज़बरदस्ती की जंगों के ज़रिए से दुनिया पर ग़ालिब और क़ाबिज़ होती रही हैं।

क्या ज़ुलक़रनैन नबी थे?

ज़ुलक़रनैन नबी हैं या नेक बादशाह, तर्जीही बात तो यह है कि ज़ुलक़रनैन नेकों में से हैं और नेक नफ़्स बादशाह। वह नबी या रसूल नहीं हैं।

नतीजे

1. अल्लाह तआला किसी को हुकूमत व दौलत इसलिए नहीं देता कि वह उसको निजी ऐश में लगाए, बल्कि इसलिए अ़ता करता है कि उसके ज़रिए मख़्लूक़ ख़ुदा की ख़िदमत करे।

2. इंसाफ़ और नाइंसाफ़ी की हुकूमत के दर्मियान हमेशा से यह नुमायां फ़र्क़ चला आता है कि अ़द्ल वाली हुकूमत का नस्बुलऐन रियाया और पब्लिक की ख़िदमत होता है, इसलिए आ़दिल बादशाह का शाही ख़ज़ाना पब्लिक की भलाई, ख़िदमत और उनकी ख़ुशहाली के लिए होता है और वे अपनी ज़ात पर ज़रूरी जरूरतों से ज़्यादा उसमें से ख़र्च नहीं करता और न जनता को टैक्सों की ज़्यादती से परेशान हाल बनाता है, इसके ख़िलाफ़ जब्र व ज़ुल्म की हुकूमत का मंशा बादशाह और हुकूमत का इख़्तिदार, निजी ऐश और उसकी मज़बूती होती है, इसलिए न वह पब्लिक के दुख-दर्द की परवाह करता है और न उसकी राहत और आराम का ख़्याल रखता है और इस सिलसिले में अगर कुछ हो भी जाता है तो वह हुकूमत के फ़ायदों और मस्लहतों को देखते हुए ग़ैर-ज़रूरी हो जाता है। साथ ही इस हुकूमत में पब्लिक हमेशा टैक्सों के बोझ से दबी रहती है और मुल्क की अकसरीयत इफ़्लास व ग़ुर्बत की शिकार रहती है—

•नोट—(संग्रहकर्त्ता की ओर से)

ज़ुलक़रनैन से मुताल्लिक़ हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० की रिसर्च 129 पृष्ठों पर छपी हुई है जो हज़रत मौलाना की कोशिश और खोज का नतीजा है। कोशिश की गई है कि इस लम्बी बहस को इस तरह छोटा किया जाए कि कोई अहम प्वाइंट रह न जाए, फिर भी 40 पृष्ठों में उसको समेटा गया है। हो सकता है कि कुछ लोग इस तरह ख़ुलासा करने में कुछ कमी महसूस करें, तो उनसे गुज़ारिश है कि वे असल किताब से रुजू फ़रमाएं, क्योंकि तौरात और तारीख़ के लम्बे हिस्से और उनकी रोशनी में अलग-अलग रायों पर बहस का खुलासा करना मुश्किल था, इसलिए सिर्फ़ इन नतीजों को बुनियादी तौर पर पेश किया गया है, जिन पर मौलाना इतनी तहक़ीक़ के बाद पहुंचे।

हज़रत मौलाना ने 'बसाइर' में जो कुछ लिखा है, उसके बड़े हिस्से का ताल्लुक़ 'ज़ुलक़रनैन' के वाक़िए से सीधा नहीं है, लेकिन वह अपनी जगह पर हद दर्जा अहम है, यह हिस्सा असल में सोचने-समझने वालों के लिए ज़्यादा ज़रूरी है, इसलिए उसको अलग पेश किया जाता है। (संग्रहकर्त्ता)

'बसाइर' के हिस्से

1. कुरआन के मतलब की समझ के लिए जिस तरह अरबी भाषा का मतलब, बयान, ग्रामर, आसार हदीस और सहाबा के क़ौलों जैसे इल्मों का जानना ज़रूरी है, उसी तरह तारीख़ के इल्म की मारफ़त भी ज़रूरी है, चुनांचे पिछली क़ौमों और उम्मतों के हालात व वाक़ियात का इल्म हासिल करके उनसे सबक़ लेने पर उभारने का काम ख़ुद कुरआन ने ज़ोरदार बयान के साथ किया है। इर्शाद है—

तर्जुमा— *'कह दीजिए, ज़मीन में घूमो-फिरो, फिर देखो कि झुठलानेवालों का अंजाम क्या हुआ?'* (6 : 11)

तर्जुमा— *'बेशक तुम से पहले ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई राहें गुज़र चुकी हैं, पस ज़मीन की सैर करो, फिर देखो झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ?'* (3 : 137)

2. जहां तक इस्लाम के बुनियादी मसअलों का ताल्लुक़ है, उनमें 'पुराने

भले लोगों की राय ही, बिना कुछ कहे-सुने राह की रोशनी है और उससे हटना टेढ़ और गुमराही है, लेकिन जहां तक कुरआन के लतीफ़े, नुक्ते, मारफ़त और इल्म, असरार और इल्मी और तारीखी मतलबों का ताल्लुक़ है, उसके लिए किसी ज़माने में भी तहक़ीक़ का दरवाजा बन्द नहीं है। चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मुबारक है—

'कुरआन के लताइफ़ व हकम (हिक्मत की गूढ़ बातें) कभी ख़त्म होने वाले नहीं हैं।'

ख़ासतौर पर जबकि तारीख़ का मतलब हासिल करने के लिए आज की मालूमात के ज़राए तारीख़ के पुराने उलूम के ज़रिए (साधन) ज़्यादा फैल चुके हैं तो पुराने नेक लोगों के पुराने मस्लक पर क़ायम रहते हुए कुरआनी हक़ीक़तों और उसकी तारीख़ी बहसों की तफ़्सील या ग़ैर तफ़्सील में पुराने लोगों की पाबन्दी न करते हुए कुरआन की ताईद के लिए तहक़ीक़ का क़दम उठाना, पुराने नेक लोगों की पैरवी है न कि उनके मस्लक से हटना। क्या कोई अह्ले इल्म (विद्वान) और सूझ-बूझ रखनेवाला इस हक़ीक़त का इंकार कर सकता है कि इन तफ्सीरी मतलबों के अलावा जिनके बारे में दलीलों से यह साबित हो चुका है कि ये नबी सल्ल० के इर्शाद हैं, सहाबा रज़ि० के ज़ाती क़ौलों के ख़िलाफ़ या उनसे अलग ताबिईन और तबअ् ताबिईन के क़ौल ज़्यादा से ज्यादा तफ़्सीर की किताबों में दर्ज हैं और बाद के तफ्सीर के उलेमा पहलों के क़ौलों पर जिरह करते और उनकी रायों से इख़्तिलाफ़ करते नज़र आते हैं। और इनमें से हर आदमी की तहक़ीक़ कुरआन के मतलब की ख़िदमत ही समझी जाती है, अलबत्ता अस्लियत शर्त है और जो आदमी भी इस ख़िदमत के लिए क़दम उठाए, उसका फ़र्ज है कि *'फ़ीमा बैनी व बैनल्लाह'* पर ग़ौर व फ़िक्र करे कि वह जिस मस्अले में कोई राय अख़्तियार करता है, हक़ीकत में वह उसके तमाम आगे-पीछे की बातों को जानता है या नहीं और यह कि उसकी इस तहक़ीक से कुरआन की और ज़्यादा ताईद ही होती है और पुराने बुज़ुर्गों के बुनियादी पुराने मस्लक से क़तई तौर पर आगे बढ़ जाना लाज़िम नहीं आता।

अस्हाबुल कह्फ़ वर्रक़ीम

(कह्फ़ और रक़ीम वाले)

कह्फ़ और रक़ीम

डिक्शनरी में कह्फ़ पहाड़ के भीतर लम्बे चौड़े ग़ार (खोह) को कहते हैं, मगर रक़ीम के मानी में तफ़्सीर लिखने वाले एक नहीं हैं, अलबत्ता कुबूल यही है कि यह शहर अंबात (बनू नाबित बिन इस्माईल, जिनकी हुकूमत का ज़माना 700 ई०पू० से 106 ई०पू० तक है) की राजधानी था और अक़्बा खाड़ी (ऐला) से उत्तर की ओर बढ़ते हुए पहाड़ों के जो दो मुतवाज़ी (समानांतर) सिलसिले मिलते हैं, उन्हीं में से एक पहाड़ की बुलन्दी पर आबाद था। उसका नाम रक़ीम (आज का पटरा या बतरा) था। पुराने खंडहरों की रिसर्च में एक नुमायां खोज इस शहर की है। इसमें नई-नई बातों के साथ-साथ उसके पहाड़ों के अजीब व ग़रीब ग़ार भी ज़िक्र के क़ाबिल हैं, जो बहुत लम्बे-चौड़े और गहरे हैं और इस तरह वाक़े हैं कि दिन की धूप और गर्मी उन तक नहीं पहुंचती। एक ग़ार ऐसा भी खोज लिया गया है जिसके मुहाने पर पुरानी इमारतों के निशान पाए जाते हैं और बहुत से स्तूनों के खंडहर बाक़ी रह गए हैं। ख़्याल किया जाता है कि यह किसी हैकल की इमारत है। मुख़्तसर यह कि इस शहर के बारे में जितनी खोज की जा रही है, उससे क़ुरआन के एक-एक शब्द की तस्दीक़ (पुष्टि) होती है, इसलिए यह कहना आसान हो जाता है कि क़ुरआन ने जिन अस्हाबे कह्फ़ का वाक़िया बयान किया है उनका ताल्लुक़ इसी शहर रक़ीम (पटरा) के किसी ग़ार से है। (हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने लम्बी बहस के बाद यह भी साफ़ किया है कि) अस्हाबे कह्फ़ और अस्हाबे रक़ीम दोनों एक ही हैं और बुख़ारी शरीफ़ में अस्हाबे कह्फ़ वाले बाब की ग़ार वाली हदीस में जो वाक़िया बयान हुआ है, वह बनी इसराईल का एक दूसरा वाक़िया है और यह भी कि अस्हाबे कह्फ़ और रक़ीम के वाक़िए का ताल्लुक़ शुरू के ईसाई दौर से है।

क़ुरआन और अस्हाबे कह्फ़ और अस्हाबे रक़ीम

जैसा कि ज़ुलक़रनैन के वाक़िए में ज़िक्र किया जा चुका है, यहूदी उलेमा ने क़ुरैश के वफ़्द के ज़रिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तीन सवालों के जवाब चाहे थे, उनमें से एक यह भी था कि 'अस्हाबे कह्फ़' कौन थे? और उन पर क्या गुज़री? आपने वह्य आने पर उनके सामने सूरः कह्फ़ तिलावत करके वाक़ियों की हक़ीक़त उन पर खोल दी—

तर्जुमा— *'क्या तुमने यह गुमान कर लिया है कि अस्हाबे कह्फ़ व रक़ीम का मामला हमारी निशानियों में से कोई अजीब (मामला) है, जबकि कुछ नवजवानों ने पहाड़ के ग़ार में पनाह ले लिया था और यह दुआ मांग रहे थे, ऐ हमारे परवरदिगार! तू अपने पास से हमको रहमत अता कर और हमारे लिए रुश्द व हिदायत मुहैय्या कर। फिर हमने ग़ार में कुछ साल तक उनको थपक कर सुला दिया, फिर उनको उठाया (बेदार किया), ताकि हम जान लें कि दोनों, बस्ती वालों और ग़ार वालों में से किसने उनकी मुद्दत का सही अन्दाज़ा लगाया। हम तुझको उनका सच्चा वाक़िया बताए देते हैं। बेशक वे कुछ नवजावान थे जो अपने परवरदिगार पर ईमान ले आए थे और हमने उनको हिदायत की रोशनी और ज़्यादा अता कर दी थी और जब वे (वक़्त के हाकिम के सामने) यह एलान करने पर उतर आए कि हमारा परवरदिगार वही है जो आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार है और हम हरगिज़ उसके अलावा किसी को ख़ुदा नहीं पुकार सकते और अगर ऐसा करें तो ख़ुदा पर बोहतान बांधेंगे, उस वक़्त हमने उनके दिल ख़ूब मज़बूत कर दिए थे। वे कहते थे, यह हमारी क़ौम है जिन्होंने अल्लाह के अलावा बहुत से माबूद बना लिए हैं। ये क्यों खुली दलील अपने बातिल माबूदों (की सदाक़त) के लिए नहीं लाते? पस उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाए और ऐ रफ़ीक़ो! जब तुम उनसे और उनकी इबादत से अल्लाह के सिवा जो वे बातिल माबूदों की करते हैं, अलग हो जाते हो, तो पहाड़ के ग़ार में चले चलो, तुम्हारा परवरदिगार अपनी रहमत निछावर करेगा और तुम्हारे मामले में काम की आसानी पैदा करेगा और ऐ पैग़म्बर! तुम सूरज को देखोगे कि वह निकलते वक़्त उनके ग़ार से दाहिनी जानिब बच कर निकल जाएगा और डूबते वक़्त ग़ार से कतरा कर बाईं ओर को हो जाता है और वे बड़े फैले ग़ार में हैं। यह*

अल्लाह की निशानियों में से है, जिसको वह हिदायत दे वही रास्ते पर है और जिस आदमी को उसकी बराबर सरकशी की बुनियाद पर गुमराह करे तो वह किसी राह दिखाने वाले मददगार को न पाएगा और तू उनको बेदार गुमान करेगा, हालांकि वे सो रहे होंगे और हम उनकी करवटें बदलते रहते हैं, दाएं भी और बाएं भी और उनका कुत्ता अपने अगले हाथ फैलाए ग़ार के मुंह पर बैठा हुआ है। अगर तू उनको झांक कर देखे तो उनकी इस शान और हालत को देखकर मर्ऊब हो जाए और भाग पड़े और इसी तरह हमने उनको उठा दिया, जगा दिया, ताकि आपस में पूछ-गछ करें। एक ने उनमें से कहा, तुम ग़ार में कब से हो? दूसरे ने जवाब दिया, एक दिन या दिन के कुछ हिस्से से फिर उन्होंने कहा, तुम्हारा परवरदिगार ही ख़ूब जानता है कि तुम यहां कितनी मुद्दत से हो, (तो अब यह क़रो कि) अपने में से किसी एक को शहर में यह सिक्का दे कर भेजो कि वह तुम्हारे लिए देख-भाल कर उम्दा क़िस्म का खाना लाए और उसको चाहिए कि बहुत ही राज़दाराना तरीक़े से वह जाए और हरगिज़ किसी को पता न चलने दे कि हम यहां ठहरे हुए हैं, इसलिए कि अगर इन पर तुम्हारा मामला खुल गया, तो वे तुम को पत्थर मार-मार कर हलाक कर देंगे या तुम को ज़बरदस्ती अपने दीन की तरफ़ लौटने पर मजबूर करेंगे और उस वक़्त तुम हरगिज कामियाब न रहोगे, (न दुनिया में, न आख़िरत में) और इसी तरह हमने शहर वालों पर उनका मामला ज़ाहिर कर दिया, ताकि वे यक़ीन कर लें कि अल्लाह का वायदा सच्चा है और क़ियमत की घड़ी ज़रूर आनेवाली है, इसमें कोई शक नहीं है। हमने उनको उस वक़्त इस मामले की ख़बर दी जब कि वे क़ियामत के आने और न आने पर आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे, फिर वे कहने लगे कि इन अस्हाबे कह्फ़ पर क़ुब्बा तामीर कर दो, इनका परवरदिगार इनके हाल को ख़ूब जानता है, यानी इनसे कोई छेड़-छाड़ न करो। उन लोगों ने, जो हुकूमत में थे कहा, हम तो उनके ग़ार पर एक मस्जिद (हैकल) तामीर करेंगे। ऐ पैग़म्बर! कुछ लोग कहेंगे, वे तीन आदमी हैं, चौथा उनका कुत्ता है। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं, नहीं पांच हैं, छठा उनका कुत्ता हैं। ये सब अंधेरे में तीर चलाते हैं। कुछ कहते हैं, सात हैं, आठवां उनका कुत्ता हैं। (ऐ पैग़म्बर!) कह दो असल गिनती तो मेरा परवरदिगार ही बेहतर जानता है, क्योंकि उनका हाल बहुत कम लोगों के इल्म में आया है और तुम लोगों से इसमें मत झगड़ो, मगर सिर्फ़ इस हद तक कि

साफ़-साफ़ बात में हो (यानी बारीकियों में नहीं पड़ना चाहिए कितने आदमी थे, कितने दिनों तक रहे थे और न उन लोगों में से किसी से इस बारे में कुछ पूछो और हरगिज़ किसी चीज़ के बारे में यह न कहना कि मैं कल को यह ज़रूर करने वाला हूं, मगर (यह कहकर) होगा वही जो अल्लाह चाहेगा और जब कभी भूल जाओ तो अपने परवरदिगार की याद ताज़ा कर लो, तुम कह दो, उम्मीद है मेरा परवरदिगार इससे भी ज़्यादा कामियाबी का रास्ता मुझ पर खोल देगा और कहते हैं, वे ग़ार में तीन सौ वर्ष तक रहे और लोगों ने नौ वर्ष और बढ़ा दिए हैं। (ऐ पैग़म्बर!) तुम कह दो अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे कितनी मुद्दत तक रहे, वह आसमान व ज़मीन की सारी छिपी बातें जाननेवाला है, बड़ा ही देखने वाला, बड़ा सुनने वाला है, उसके सिवा लोगों का कोई करता-धरता नहीं, और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है। (कहफ़ 18 : 8-26)

मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने इस वाक़िए को इस तरह बयान किया है—

वाक़िया

इस्माईली अरबों के मज़हब से मुताल्लिक़ तारीख़ के पन्ने यह गवाही देते हैं कि इनमें, गो कुछ अर्से बाप-दादा का दीने हक़ 'मिल्लते इब्राहीम' बाक़ी रहा, मगर धीरे-धीरे मिस्र, शाम और इराक़ के मूर्ति पूजकों के ताल्लुक़ात ने अम्र बिन लह्य के ज़रिए उनमें बुतपरस्ती और सितारा परस्ती की बुनियाद डाल दी और कुछ दिनों बाद इन अरबों को शिर्क परस्ती में ऐसा कमाल हासिल हो गया कि वे दूसरों के लिए रहनुमा बन गए, चुनांचे साबित की औलाद भी शिर्क की गुमराही में मुब्तला थी और उनके मशहूर बुत ज़ुश्शुरा, लात-मनात, हुबल, कसआ, अमयानस और हरीश थे। सदियों तक नबती बुतपरस्ती की इस गुमराही में मुब्तला रहे कि मसीही दौर के शुरू में राजधानी रक़ीम के अन्दर एक अजीब मामला पेश आया जिस की तफ़्सील नीचे दी जाती है।

मसीही मज़हब का शुरू का दौर है। नबती हुकूमत के चारों तरफ़ यानी शाम वग़ैरह में ईसाइयत का ज़ोर है कि रक़ीम की कुछ नवजवान सईद रूहें

हैं, शिर्क से बेज़ार और नफ़रत में पड़कर तौहीद की तरफ़ मायल हो जाती हैं और ईसाई मज़हब को क़ुबूल कर लेती हैं। धीरे-धीरे यह बात वक़्त के बादशाह तक भी पहुंच जाती है। बादशाह नवजवानों को दरबार में बुलाता है और हालात जानना चाहता है। नवजवान हक़ का कलिमा बुलन्द करने में बेबाक और जरी साबित होते हैं। यह बात बादशाह को नागवार गुज़रती है, मगर वह दोबारा मामले पर ग़ौर करने के लिए उनको कुछ दिनों की मोहलत देता है। ये दरबार से वापस आकर आपस में मश्विरा करते हैं और तै पाता है कि ख़ामोशी के साथ किसी पहाड़ के ग़ार में छिप जाना चाहिए, ताकि मुश्रिकों के शर से बचे रह कर अल्लाह की इबादत में मश्ग़ूल रह सकें। यह सोच कर वे एक ग़ार में छुप जाते हैं। जब वे ग़ार में दाख़िल होते हैं तो अल्लाह के हुक्म से नींद उन पर छा जाती है और वे ख़्वाब ही की हालत में करवटें बदलते रहते हैं। ग़ार की अजीब कैफ़ियत, अन्दर से बहुत बड़ा है मगर क़ुदरत ने उसको ऐसा मौक़ा नसीब किया है कि ज़िंदगी बाक़ी रखने के क़ुदरती सामान वहां सब मौजूद हैं। एक तरफ़ मुहाना है, तो दूसरी तरफ़ हवा गुज़रने की जगहें और सूराख़ हैं, जिनकी वजह से हर वक़्त ताज़ा हवा अन्दर आती रहती है। ग़ार का रुख़ उत्तर-दक्खिन है, इसलिए निकलने-डूबने के वक़्त सूरज की तपन अन्दर नहीं पहुंच पाती, मगर हल्की-हल्की रोशनी बराबर पहुंचती रहती है और ऐसी कैफ़ियत पैदा हो गई है कि न अंधेरा ही है कि कुछ नज़र आए और न इतनी रोशनी है कि खुले मैदान की तरह जगह रोशन हो जाए। इस हालत में कुछ इंसान इस ग़ार में सो रहे हैं और उनका साथी कुत्ता अपने हाथ फैलाए ग़ार के मुहाने पर बाहर की तरफ़ मुंह किए बैठा है।

कुल मिला कर इस सूरत ने ऐसी कैफ़ियत पैदा कर दी है कि पहाड़ों के दर्मियान ग़ार के भीतर झांकने वाले इंसान पर ख़ौफ़ व हरास की हालत छा जाती है और वह भाग खड़े होने पर मजबूर हो जाता है।

वर्षों तक ये नवजवान इसी हालत में आराम के साथ महफ़ूज़ रहते हैं कि शहर में इंक़िलाब आ जाता है। रूमी ईसाई नबती हुकूमत पर हमलावर होते हैं और दुश्मन को हरा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं और इस तरह रक़ीम (पटरा) ईसाई धर्म की गोद में आ जाता है। अब अल्लाह की मशीयत फ़ैसला

करती है कि ये नवजवान बेदार हों, वे बेदार हो जाते हैं और आपस में सरगोशियां करते हुए एक दूसरे से मालूम करते हैं हम कितनी मुद्दत सोते रहे। एक ने जवाब दिया, एक दिन और दूसरे ने कहा या दिन का कुछ हिस्सा। फिर कहने लगे कि हम में से कोई शहर जा कर खाना ले आए और यह सिक्का ले जाए, मगर जो भी जाए, इस तरह लेन-देन करे कि शहर वालों को पता न लग सके कि हम कौन हैं और कहां हैं? वरना मुसीबत आ जाएगी। बादशाह ज़ालिम भी है और मुश्रिक भी। वह या तो शिर्क पर तैयार और बेदीनी पर मजबूर करेगा, वरना हम सबको क़त्ल कर डालेगा और ये बातें हमारे दीन व दुनिया को बर्बाद करने देने वाली साबित होंगी।

अब नवजवानों में से एक आदमी सिक्का लेकर शहर गया, वहां देखा तो हालात बिल्कुल बदल चुके हैं और नए आदमी और नया तौर-तरीक़ा नज़र आ रहा है, मगर फिर भी डरते-डरते एक बावरची की दुकान पर पहुंचा और खाने-पीने की चीज़ें ख़रीदीं। जब क़ीमत अदा करने लगा तो बावरची ने देखा लि सिक्का पुराना है। इस तरह आख़िर बात खुल गई। लोगों को जब असल हक़ीक़त मालूम हुई तो उन्होंने उस आदमी का स्वागत किया और इस अजीब व ग़रीब मामले में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी ली, क्योंकि अर्सा हुआ कि यहां मुश्रिक बादशाहों का दौर ख़त्म हो चुका था और यहां के बाशिंदों ने ईसाई धर्म अपना लिया था।

उस आदमी ने जब यह हाल देखा तो अगरचे ईसाई धर्म फैल जाने से उसको बेहद ख़ुशी हुई, मगर अपने और अपने साथियों के लिए यही पसन्द किया कि दुनिया के हंगामों से अलग रह कर ख़ुदा की याद में गुज़ार दें, इसलिए किसी तरह मज्मे से जान बचाकर पहाड़ की राह ली और अपने साथियों में पहुंच कर सब हाल कह सुनाया। इधर शहरियों में उनकी तलाश का शौक़ पैदा हुआ और उन्होंने आख़िर उनको एक ग़ार में पा लिया। लोगों ने इसरार किया कि वे शहर चलें और अपनी पाक ज़िंदगी से शहर वालों को फ़ायदा पहुंचाएं, पर वे किसी तरह तैयार न हुए और उन्होंने अपनी उम्र का बाक़ी हिस्सा राहिबों जैसी ज़िंदगी में गुज़ार दिया।

जब इन ख़ुदा के बन्दे राहिबों का इंतिक़ाल हो गया, तो अब लोगों में चर्चा

हुई कि उन की यादगार क़ायम होनी चाहिए, चुनांचे इनमें जो लोग असरदार और बाइक़्तिदार थे, उन्होंने कहा कि हम तो उनके ग़ार पर हैकल (मस्जिद) तामीर करेंगे और ग़ार के मुहाने पर एक शानदार हैकल तामीर करा दिया।

और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० की रिवायत में है कि जब उस जवान के पीछे वक़्त के बादशाह और पब्लिक दोनों आए, तो ग़ार के क़रीब पहुंच कर वे यह न मालूम कर सके कि जवान किस तरफ़ चला गया और जब बहुत तलाश के बाद असहाबे कह्फ़ का पता न पा सके, तब मजबूर होकर वापस हो गए और उनकी यादगार में पहाड़ पर एक हैकल (मस्जिद) तामीर कराया।

अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें

1. तर्जुमा— *'फिर हमने उनको (ख़्वाब से) उठाया, ताकि मालूम करें कि दो जमाअ़तों में से किसने इस मुद्दत को महफ़ूज़ रखा, जिसमें वे (ग़ार के अन्दर) रहे।* (18 : 12)

यहां दो जमाअ़तों में से एक अस्हाबे कह्फ़ की और दूसरी अह्ले शहर की जमाअ़त मुराद है। मतलब यह है कि यह इसलिए किया कि मुद्दत ज़ाहिर हो जाए और यह मालूम करने के बाद कि अल्लाह तआ़ला ने उनको वर्षों तक ख़्वाब की हालत में ज़िंदा रखा, जबकि वे ज़िंदगी की बक़ा के साधनों से यकसर महरूम थे,' लोगों को यह यक़ीन हो जाए कि बेशक इसी तरह वह मख़्लूक़ को मरने के बाद भी ज़िंदा करेगा और बेशक मौत के बाद उठाए जाने का मसला हक़ है, चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने उनको बेदार किया और उनमें से एक नवजवान शहर में खाना ख़रीद करने गया तो उस ज़माने में बस्ती वालों के दर्मियान 'मौत के बाद उठाए जाने' पर झगड़ा और बहस जारी थी, एक जमाअ़त कहती थी कि फ़क़त रूह का उठाया जाना होगा और दूसरी जमाअ़त क़ायल थी कि रूह और जिस्म दोनों को ज़िंदा होना है, यह तो नसारा की जमाअ़तें थीं और जो नब्ती मुश्रिक आबाद थे, वे सिरे से मौत के बाद उठाए जाने ही के इंकारी थे। ऐसे नाज़ुक वक़्त में अल्लाह तआ़ला ने उस आदमी को ग़ार से बेदार करके भेजा और इस तरह जब अस्हाबे कह्फ़ का

वाक़िया सब पर ज़ाहिर हो गया तो उसने एलानिया यह नज़ीर क़ायम कर दी कि जिस तरह वर्षों तक ज़िंदगी के सामानों से महरूम रहने के बावजूद रूह के साथ जिस्म भी सही-सालिम बाक़ी रहा, उसी तरह 'मौत के बाद उठना', रूह और जिस्म दोनों से ताल्लुक़ रखता है और जिस तरह सोते रहने के बाद अस्हाबे कह्फ़ बेदार कर दिए गए, उसी तरह क़ब्र से (बरज़ख की दुनिया में) सैकड़ों और हज़ारों वर्ष मुर्दा रहने के बाद भी क़ियामत में ज़िंदा कर दिए जाएंगे।

तर्जुमा—*'ऐ पैग़म्बर! कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन आदमी हैं, चौथा उनका कुत्ता है, कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं, नहीं पांच हैं, छठा उनका कुत्ता है, ये सब अंधेरे में तीर चलाते है।'* (18 : 22)

अल्लाह ने इस वाक़िए से मुताल्लिक़ इन हक़ीक़तों को ज़ाहिर करने के बाद, जो उसके मक़्सद 'तज़कीर' (याददेहानी) के लिए फ़ायदेमंद थीं, वाक़िए की इन छोटी-छोटी बातों के बारे में जो सिर्फ़ तारीख़ी हैसियत रखती हैं और उनके जान लेने से कोई ख़ास फ़ायदा भी नहीं होता, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह नसीहत फ़रमाई कि वे इन ला-हासिल बहसों से परहेज़ करें और इन पर सरसरी तौर से गुज़र जाएं और बेकार बातों की खोज लगाने की फ़िक्र न करें, जैसे यह कि इन नवजवानों की तायदाद क्या थी? उनकी उम्रों का तनासुब क्या था? वे ग़ार में कितनी मुद्दत तक ठहरे रहे? मुद्दत की सही मिक़्दार क्या है? वग़ैरह।

तर्जुमा—*'(ऐ पैग़म्बर!) कह दे कि उनकी असल गिनती को मेरा पालनहार ही जानता है, क्योंकि उनका हाल बहुत कम लोगों के इल्म में आया है और जब सूरतेहाल यह है तो लोगों से इस बारे में बहस और झगड़ा न करो, मगर सिर्फ़ इस हद तक कि साफ़-साफ़ बात में हो और न उन लोगों में से किसी से इस बारे में कुछ मालूम करना? इसलिए जो बात भी होगी अटकल होगी।'* (18-22)

3. 'व लबिसू फ़ी कहफ़िहिम सला-स मि-अति सिनीन वज़दादू तिसआ' (18-25)

इस आयत का तर्जुमा आमतौर से तफ़्सीर लिखने वालों ने इस तरह

किया है गोया अल्लाह तआला अपनी ओर से यह इत्तिला दे रहा है कि वे तीन सौ नौ साल ग़ार में रहे, मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से कुछ रिवायतों में जो मानी ज़िक्र किए गए हैं, उनका मतलब यह है कि यह लोगों का क़ौल है, अल्लाह तआला का अपना क़ौल नहीं है, यानी वे आयत 'व लाबिसू' को इससे पहले के जुम्ले 'यक़ूलून' के तहत में दाख़िल समझते और यह मानी करते हैं कि जिस तरह लोग (ईसाई) अस्हाबे कह्फ़ की तायदाद के बारे में अलग-अलग बातें कहते हैं और कहेंगे, इसी तरह वे यह भी कहते पाए जाते हैं कि अस्हाबे कह्फ़ तीन सौ नौ साल तक ग़ार में रहे।

हमारे (मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० के) नज़दीक यही मानी तर्जीह के लायक़ है, क्योंकि क़ुरआन मजीद का सबाक़ (प्रसंग) इसी को ज़ाहिर करता है, इसलिए कि इन्हीं आयतों में क़ुरआन ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह हिदायत की है कि वे इस क़िस्म की ग़ैर-मुफ़ीद और अटकल की बातों के पीछे न पड़ें, तो इससे यह बात साफ़ हो गई कि ग़ार में क़ियाम का मस्अला भी अंधेरे का तीर है और इसे अल्लाह के इल्म के सुपुर्द कर दिया जाए, तो बेहतर है।

4. 'ज़ालि-क मिन आयातिल्लाह (18 : 17)' (यह अल्लाह की निशानियों में से है,) यानी पहाड़ के अन्दर ग़ार की यह मज्मूई कैफ़ियत कि ग़ार का मुहाना अगरचे तंग है, मगर उसके अन्दर बहुत काफ़ी फैलाव है, उसका रुख़ उत्तर-दक्खिन है जिसकी वजह से सूरज का निकलना और डूबना दोनों हालतों में सूरज दाहिने और बाएं कतरा कर निकल जाता है और ग़ार उसके तपन से बचा रहता है और दूसरी तरफ़ खुला होने की वजह से हवा और रोशनी ज़रूरत भर पहुंचती रहती है, गोया जिस्मानी बक़ा के लिए जो चीज़ नुक़्सानदेह है यानी तपन, उससे हिफ़ाज़त और जो ज़िंदगी बाक़ी रखने के लिए ज़रूरी चीज़ें हैं यानी रोशनी और हवा, उसकी मौजूदगी, ये ऐसी बातें हैं जो अल्लाह तआला की खुली निशानियां कही जा सकती हैं कि उनकी बदौलत यहां तक अल्लाह के नेक बन्दे दुनिया की ख़राबियों से अलग होकर ग़ार में ख़्वाब की हालत में बसर कर सकें और ऐसी हालत में बसर कर सके जबकि

खाने-पीने के सामान और ज़िंदगी की बक़ा के दूसरे दुनिया के साधनों से क़तई तौर पर महरूम थे।

5. आमतौर पर मशहूर है कि अस्हाबे कह्फ़ अभी तक ग़ार में सो रहे हैं और ज़िंदा हैं, मगर यह सही नहीं है, इसलिए कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने खोलकर यह फ़रमाया है कि उनका इंतिक़ाल हो चुका।

6. 'व कल्बुहुम बासितुन ज़िराऐहि बिलवसीद' (18 : 18) कुत्ते ने वफ़ादारी और जांनिसारी का सबूत दिया और भले लोगों की सोहबत पाई तो कुरआन ने भी उसका ज़िक्रे ख़ैर करके उसे वह इज़्ज़त बख़्शी कि इंसानों के लिए क़ाबिले रश्क बना दिया। शेख़ सादी रहमतुल्लाहि अलैहि ने क्या ख़ूब कहा है—

सगे अस्हाबे कह्फ़ रोज़े चन्द
पए एकां गिरफ़्ते मर्दम शुद।
पिसर नूहे ब अब्दां बनशिस्त
ख़ानदाने नबूतश गुमशुद

7. तर्जुमा—*'और किसी चीज़ के लिए यह न कहो कि कल मैं इसको ज़रूर करूंगा, (मगर यह कह लिया करो) यह कि अल्लाह चाहे तो'* (18 : 23)

इस आयत में अल्लाह तआला ने यह तालीम दी है कि जब मुस्तक़्बिल में किसी काम का इरादा हो तो दावे के साथ यह नहीं कहना चाहिए कि मैं इसको ज़रूर करूंगा, इसलिए कि कौन जानता है कि कल क्या होगा और कहने वाला इस कायनात में मौजूद भी होगा या नहीं, इसलिए इस मामले को अल्लाह के सुपुर्द करते हुए 'इन शाअल्लाह' ज़रूर कहना चाहिए।

8. तर्जुमा—*'तुम कहो उम्मीद है मेरा परवरदिगार इससे भी ज़्यादा कामियाबी की राह मुझ पर खोल देगा।'* (18 : 24)

इस आयत में इस तरफ़ इशारा है कि बहुत जल्द ऐसा ही मामला तुम को भी पेश आने वाला है, बल्कि वह इससे भी अजीब व ग़रीब होगा, यानी अपना आबाई वतन छोड़ना पड़ेगा। राह में ग़ारे सौर के अन्दर कई दिन तक छिपे रहोगे। दुश्मन ग़ारे सौर के मुंह पर पहुंच जाने के बावजूद तुमको न पा सकेंगे, तुम ख़ैरियत के साथ मदीना पहुंच जाओगे और वहां तुम पर फ़त्ह व

कामरानी की ऐसी राहें खोल दी जाएंगी जो इस मामले से कहीं ज़्यादा अजीब व जलील होंगी। यह सूरः मक्की दौर की आख़िरी सूरतों में से है, इसलिए इसके उतरने के बहुत थोड़े दिनों के बाद हिजरत का वह शानदार वाक़िया पेश आया, जिसने मुसलमानों की ज़िंदगी के दौर में हैरत में डाल देने वाला इंक़िलाब पैदा कर दिया और बातिल ने हक़ के सामने हथियार डाल दिए।

सबक़ और नतीजे

1. अगर हम को कोई बात अपनी अक़्ल के मुताबिक़ अजीब व ग़रीब मालूम हो तो यह ज़रूरी नहीं है कि वह अपनी हक़ीकत के लिहाज़ से भी वाक़ई कोई अजीब बात है। अगर वह अजीब है भी तो हमारे लिए है, न कि कायनात के पैदा करने वाले के लिए, जिसने कि कायनात को पैदा किया और फिर ऐसे मज़बूत निज़ाम पर उसको क़ायम किया कि अक़्ल हैरान है मगर आंख रोज़ाना उसे देखती और दिल हर लम्हा इस हक़ीक़त का एतराफ़ करता है कि :

तर्जुमा— *'अल्लाह पर यह बात कुछ भारी नहीं है।'*

2. जब शर व फ़साद और ज़ुल्म व सरकशी इस दर्जा बढ़ जाए कि अल्लाह के नेक बन्दों के लिए कहीं पनाह न रहे, तो अगरचे अज़ीमत का दर्जा यही है कि कायनात की रुश्द व हिदायत की ख़ातिर हर क़िस्म की तक्लीफ़ें बरदाश्त करे और हक़ कलिमे पर पहाड़ की तरह जमा रहे, मगर मख़्लूके ख़ुदा से कट कर कोना न पकड़ ले, लेकिन अगर हालात इस दर्जा नज़ाकत अख़्तियार कर लें कि मख़्लूक़ के साथ ताल्लुक़ रखने की शक्ल में जान देनी पड़े या दीनं बातिल क़ुबूल करने पर मजबूर होना पड़े और हालत यह हो जाए—

तर्जुमा— *'अगर वे लोग कहीं तुम्हारी ख़बर पर जाएंगे तो तुमको या तो पत्थरों से मार डालेंगे या तुम को (जबरन) अपने तरीक़े में फेर लेंगे और अगर ऐसा हुआ तो तुम को कभी फ़लाह नसीब न होगी।'* (18 : 20)

तो इस वक़्त रुख़सत है कि जान की हिफ़ाजत और दीन की ख़िदमत के लिए दुनिया और आलाइशों से कट कर किनाराकशी अख़्तियार कर ले।

गोया यह इज़्तिरारी हालत का एक हंगामी और वक़्ती इलाज है जो सिर्फ़ दीन ईमान की हिफ़ाज़त के लिए किया जा सकता है, लेकिन इस्लाम की निगाह में अपने आपमें कोई महबूब अ़मल नहीं है और अख़्तियारी तौर पर इस योगियाना ज़िंदगी को आख़्तियार करना रहबानियत है। 'वला *रहबानियत फ़िल इस्लाम*' (इस्लाम में रहबानियत नहीं है।) और इस्लाम रहबानियत को नापसन्द करता है। ईसाइयों की मज़हबी तारीख़ के पढ़ने से यह मालूम होता है कि शुरू के ज़माने में कुछ सच्चे ईसाइयों को अस्हाबे कह्फ़ की तरह के कुछ वाक़िए पेश आए, जिनमें से एक रूम में, एक अन्ताकिया में और शहर अफ़स में पेश आना बताया जाता है, चुनांचे उन्होंने हालात से मजबूर होकर इज़्तिरारी तौर पर इस योगियाना ज़िंदगी को अख़्तियार किया था, मगर बाद में दूसरी बिदअ़तों की तरह यह अ़मल भी ईसाई धर्म का बहुत अहम हिस्सा और पसंदीदा अ़मल गिना जाने लगा और जिस तरह भारत के पुराने धर्म के मुताबिक़ दुनिया के झमेलों से कट कर हिन्दू योगी पहाड़ों की खोह और वीरानों में योग करना मुक़द्दस अ़मल समझते हैं, उसी तरह ईसाइयों ने भी अख़्तियारी सन्यास को मज़हब के मुक़द्दस कामों में शामिल कर लिया।

लेकिन कुरआन हकीम ने उनके इस अ़मल के मुताल्लिक़ सफ़ाई के साथ ज़ाहिर कर दिया है कि अल्लाह के नज़दीक अपने आपमें यह अ़मल कोई पसन्दीदा अ़मल नहीं है, बल्कि अह्ले किताब की मज़हबी बिदअ़तों में से एक बिदअ़त है।

तर्जुमा– *'और राहिबाना ज़िंदगी को कि जिसको इन (ईसाइयों) ने दीन में ईजाद कर लिया, हमने उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था, मगर उन्होंने अख़्तियार किया था अल्लाह की रज़ा जूई के लिए, पर उसके हक़ की रियायत न रख सके।'*

(57-27)

मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने उनके लिए यह तरीक़ा दीन के तरीक़ों में से नहीं मुक़र्रर किया था, बल्कि उन्होंने खुद ही अख़्तियार कर लिया था, मगर बाद में उसको निबाह न सके और रहबानियत के परदे में दुनियादारों से ज़्यादा दुनियातलबी और लालच में फंस गए।

हक़ यह है कि साफ़ और सीधा रास्ता एतदाल का रास्ता है, न इसमें

पेच व ख़म है और न नशेब व फ़राज़। यह राह इफ़रात व तफ़रीत दोनों से जुदा करके असल मंज़िल तक पहुंचा देती है और चूंकि इस्लाम फ़ितरत का दीन है, इसलिए उसने हर मामले में एतदाल ही को पसन्दीदा अमल क़रार दिया है। उसकी नज़र में जितना दुनिया में लगा रहना बुरा है, उतना ही मख़्लूक़े ख़ुदा से कट कर योगियाना रहबानियत भी मज़मूम (निन्दनीय) है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है, इस उम्मत के लिए रहबानियत 'अल्लाह के रास्ते का जिहाद' है, क्योंकि जिहाद के मैदान के लिए इंसान जब ही क़दम उठाता है कि वह अपने नफ़्स, अपने बाल-बच्चों और हर क़िस्म की दुन्यवी झंझटों से बेनियाज़ होकर सिर्फ़ अल्लाह तआला की मर्ज़ी को पूरा करना अ ना मक़्सद और नस्बुलऐन (निगाह के सामने रहने वाली मंज़िल) बना ले।

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से आयत 'वला तक़ूलन्नलिशैइन इन्नी फ़ाइलुन गदा इल्ला अंय्यशा अल्लाहु' (18 : 23-24) के नाज़िल होने के बारे में यह रिवायत बयान की जाती है कि जब मक्का के मुश्रिकों ने नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से अस्हाबे कह्फ़ के बारे में सवाल किया, तो आपने फ़रमाया कि मैं कल वह्य से मालूम करके इसका जवाब दूंगा, मगर आपको 'इनशा अल्लाह' कहना याद न रहा, इस वजह से पन्द्रह दिन तक वह्य नहीं आयी, तब मुश्रिकों ने कानाफूसियां शुरू कर दीं और आपका दिल इस वजह से टूटने लगा।

पन्द्रह दिन के बाद वह्य नाज़िल हुई और उसने वाक़िए की ज़रूरी तफ़्सीलों के साथ-साथ यह भी बतलाया कि इंसान जबकि 'कल' को नहीं जानता, तो उसके लिए ज़रूरी है कि जब कल के लिए किसी बात का वायदा करे तो अल्लाह की मर्ज़ी का हवाला ज़रूर दे दिया करे, ताकि यह बात कभी भूलने न पाए कि बन्दा नहीं जानता कि कल क्या होगा, मैं ज़िंदा भी रहूंगा या नहीं और अगर ज़िंदा भी रहा तो वायदे के पूरे होने पर मैं क़ादिर हो सकूंगा या नहीं।

4. दीन और मिल्लत अल्लाह तआला की साफ़ और सीधी राह का नाम है, इसलिए वह ज़बरदस्ती करने से दिल में नहीं उतरती, बल्कि अपनी सच्ची

रोशनी से अंधे दिलों को रोशन और मुनव्वर करती है। 'ला इकरा-ह फ़िद्दीन' (दीन के बारे में कोई ज़बरदस्ती नहीं है), मगर इसके ख़िलाफ़ बातिल की हमेशा यह कोशिश रहती है कि अल्लाह की मख़्लूक़ पर ज़बरदस्ती ज़ुल्म और जब्र से अपना असर जमाए और दलील की जगह जब्र से काम ले, लेकिन अल्लाह की मशीयत अंजाम की शक्ल में सच्चाई (दीने हक़) ग़ालिब करती और बातिल को मग़्लूब कर देती है और अंजाम व नतीजा हक़ के हाथ रहता है, मगर चूंकि अल्लाह की पकड़ का क़ानून एक तो काफ़ी मोहलत देता है, इसलिए ज़ालिम क़ौमें जिहालत से उसको अपनी कामियाबी समझकर अल्लाह की 'बत्शे शदीद (सख़्त पकड़) से ग़ाफ़िल हो जाती हैं और इसलिए तारीख़ बार-बार अपने सबक़ को दोहराती रहती है।

5. तजुर्बा इस पर गवाह है कि हक़ व सदाक़त की तहरीक और न सिर्फ़ यह, बल्कि हर इंक़िलाबी तहरीक जिस दर्जा क़ौम के नवजवानों पर असरअंदाज़ होती है, बड़ी उम्र के लोग क़ौम पर इस तेज़ी के साथ असरअंदाज़ नहीं होते। साइक्लॉजी के माहिर लोग इसकी यह वजह बयान करते हैं कि बड़ी उम्र वालों के दिल व दिमाग़ चूंकि उम्र के बड़े हिस्से में पुराने रस्म व रिवाज के आदी हो जाते और सोसाइटी के पुराने निज़ाम से अर्से तक मानूस रह चुके होते हैं और उसकी नस-नस में पुरानी बातें बैठ चुकी होती हैं, इसलिए हर वह तहरीक जो पुराने निज़ाम या घिसी-पीटी रस्मों के ख़िलाफ़ ज़ाहिर होती है, उनके दिल व दिमाग़ उसके नये असर से पीड़ा और तक्लीफ़ महसूस करते हैं और पुरानी-नई बातों का टकराव उनके लिए बोझ बन जाता है इसलिए वे नए इंक़िलाब से मानूस होने की बजाए और ज़्यादा दहशत में पड़ जाते हैं, अलबत्ता इनमें से जो दिल व दिमाग़ जज़्बे के मुक़ाबले में अक़्ल को और तास्सुर के मुक़ाबले में दलीलों को रहनुमा बना लेते हैं और हर मामले में नए-पुराने से हट कर मतानत और संजीदगी के साथ उनके फ़ायदे और नुक़्सान पर ग़ौर करने के आदी होते हैं वे इस आम उसूल से अलग हैं और जब भी वे इंक़िलाबी तहरीक के लिए ज़बरदस्त मददगार साबित होते हैं, मगर जमाअ़तों और क़ौमों में आ़मतौर से उनकी तायदाद कम होती है लेकिन, बड़ी उम्रवाले लोगों के ख़िलाफ़ चूंकि नवजवानों के दिल न दिमाग़ बड़ी हद तक ग़ैर जानिबदार (निष्पक्ष) होते और पुराने रस्म व रिवाज़ के लिए अभी तक पके

हुए नहीं होते, उन पर नए नक़्श बहुत जल्द उभर आते हैं और वे किसी तब्दीली और किसी इंक़िलाब को, सिर्फ़ इसलिए कि वे नई बातों की दावत दे रहे हैं, वहशत भरी नज़रों से नहीं देखते, बल्कि दिलचस्पी के साथ उसकी तरफ़ बढ़ते और साफ़ दिल व दिमाग़ से उस पर ग़ौर करते हैं।

अब यह इंक़िलाबी तहरीक की ज़िम्मेदारी है कि अगर उसमें सच्चाई और हक़तलबी काम कर रही है और जमाअतों और क़ौमों को ग़लत रास्ते से निकाल कर सीधे रास्ते की तरफ़ दावत देती है, तो उसकी तरफ़ तेज़ी के साथ भीड़ की भीड़ बढ़ने वालों और पैरवी करने वालों की ज़िंदगी में चार चांद लग जाते है और उनका वजूद इस पूरी दुनिया के लिए रहमत साबित होता है और अगर मामला इसके ख़िलाफ़ है, तो वह इन तर व ताज़ा और साफ़ दिल व दिमाग़ रखनेवाले नवजवानों को तबाही और बर्बादी के रास्ते पर लगा देती है और उनका वजूद पूरी इंसानियत के लिए मुसीबत और अज़ाब बन जाता है।

सबा और सैले इरम

(लगभग 200ई०)

तम्हीद (प्रस्तावना)

क़ौमों की तरक़्क़ी और तनज़्ज़ुली का पस मंज़र (उन्नति-अवनति की पृष्ठभूमि) बख़्त व इत्तिफ़ाक़ (भाग्य और संयोग) पर टिका नहीं होता, बल्कि क़ुदरत के क़ानून के मुक़र्रर किए गए उसूल के मुताबिक़ पेश आता है, अलबत्ता कभी ऊरूज व ज़वाल (उन्नति-अवनति) की वजहें इतनी वाज़ेह और साफ़ होती हैं कि आम तौर से ये देखने में आ जाती हैं और या अक़्ल की सरसरी तवज्जोह से पहचान ली जाती हैं और कभी उनका वजूद ऐसी वज्हों से होता है जिनका ताल्लुक़ आम वज्हों और वसीलो से अलग होता है, अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी और नाफ़रमानी से जुड़ा होता है, यानी देखने में अगरचे एक क़ौम में, मिसाल के तौर पर वे तमाम हालात और वज्हें पाई जाती हों, जिनसे किसी क़ौम को तरक़्क़ी मिलती है, फिर भी वह क़ौम अचानक

हलाकत व बर्बादी की भेंट चढ़ जाती है और इंसानी दुनिया के लिए उसकी हलाकत हैरत में डाल देने वाली बन जाती है, लेकिन जब अल्लाह की ओर से उनकी सरकशी, बग़ावत और अल्लाह के हुक्मों की बराबर ख़िलाफ़वर्ज़ी का परदा चाक हो जाता है और अल्लाह की वह्य, उनके अ़मल और अ़मल के बदले की तफ़्सील को सबके सामने ले आती है, तब बुद्धि रखने वाले लोग यह यक़ीन कर लेते हैं कि जिस क़ौम की इज्तिमाई ज़िंदगी के ख़ुबसूरत ख़ोल में ऐसी मकरूह और घिनौनी शक्ल मौजूद थी, तो बेशक उसकी हलाकत व तबाही संयोग की वजह से नहीं, बल्कि अल्लाह के क़ानून व अ़मल के बदले के ठीक मुताबिक़ हुई है।

सबा और क़ौमे सबा का वह सबक़ भरा हादसा और उन की तरक़्क़ियों का नसीहत भरा वाक़िया, जो नीचे दिया जा रहा है क़ौमों की तरक़्क़ी-तबाही के उस दूसरे क़ानून की वजह से ही आया था और तारीख़ के पन्ने इस सच्चाई के गवाह हैं कि वह क़ौम ऐश व इशरत की बुलन्दी पर बिना किसी ख़ौफ़ और ख़तरे के ज़िंदगी बसर कर रही थी और एकदम हलाकत व बर्बादी के गहरे खड्ड में सिर्फ़ संयोग से नहीं गिर गई थी बल्कि दूर-दूर तक पहुँचे हुए बुरे आ़माल के बदले में उसको ये बुरे दिन देखने पड़े थे, जो तारीख़ के वाक़ियों में बड़ी अहमयित रखते और क़ौमों के बनने-बिगड़ने की तारीख़ में हज़ारों सबक़ व नसीहत जुटाते हैं।

सबा और क़ौमे सबा

सबा क़हतानी क़बीले की मशहूर शाख़ है, जबकि क़हतान का ताल्लुक़ उम्मे सामिया से है, लेकिन इसमें इख़्तिलाफ़ है कि वह बनू इस्माईल में से है और अदनानी और क़हतानी एक ही सिलसिला है या यह कि अ़दनानी तो बनी इस्माईल हैं और क़हतानी उनसे अलग एक पुराना सिलसिला है। अरब के तारीख़दां कहते हैं कि सबा लक़ब है और नाम अम्र या अ़ब्द शम्स है। आज के दौर के तारीख़ वाले इसी को सही समझते हैं और यह भी कहते हैं कि 'सबा' के मतलब में 'तिजारत' के मानी दाख़िल हैं और 'सबा की क़ौम' (क़ौमे सबा), चूंकि तिजारत पेशा क़ौम थी, इसलिए 'सबा' के नाम से मशहूर हुई।

सबा और हुकूमत के तबक़े

तारीख़दानों के हिसाब से सबा की हुकूमत दो तबक़ों में बंटी रही है और फिर हर दो तबक़ों की हुकूमत का ज़माना अलग-अलग दो दौरों में बंटा हुआ है। पहले तबक़े का पहला दौर लगभग 11 सौ ईसा पूर्व से शुरू हो कर 550 ईसा पूर्व पर ख़त्म होता है। यह इसकी तरक़्क़ी का ज़माना है और हज़रत सुलैमान (अलै॰) के ज़माने की मलिका सबा (बिलक़ीस) इसी दौर से ताल्लुक़ रखती है। पहले तबक़े का दूसरा दौर 550 ईसा पूर्व से शुरू होकर 115 ईसा पूर्व पर ख़त्म होता है। सैले इरम और सबा का बिखराव इसी दौर से मुताल्लिक़ है। कुरआन में सूरः दुख़ान और सूरः क़ाफ़ में जिन 'तुब्बअ' वालों का ज़िक्र किया गया है उनका ताल्लुक़ दूसरे तबक़े के इस दौर से है। मुख़्तसर यह कि लगभग आठवीं सदी ईसा पूर्व में 'सबा' की हुकूमत अरब की शानदार तरक़्क़ीयाफ़्ता हुकूमत थी।

सबा की इमारतें और उनका रहन-सहन

सबा की शानदार इमारतों के तज़्किरे पुराने और नए तारिख़दानों के यहां बहुत ज़्यादा मिलते हैं। कहते हैं कि उनका महल ग़मदान कारीगरी का बेहतरीन नमूना था। (इसके मुताल्लिक़ बयान अगले पन्नों पर देखें।) यह क़स्र बीस मंज़िलें रखता था और ऊपर की मंज़िल बहुत ही ज़्यादा क़ीमती आबगीनों (हीरे-जवाहरात) से बनाई गई थी। इसका ज़िक्र हज़रत सुलैमान (अलै॰) के क़िस्से में हो चुका है। इसी तरह और भी बेनज़ीर इमारतें थीं। सबा की हुकूमत की सीमाओं के अन्दर सोने और जवाहरात की खाने थीं, हज़र मौत और यमन का इलाक़ा ख़ुशबूदार चीज़ों के लिए मशहूर था, जबकि अमान और बहरैन के मोती दुनिया में बेमिसाल समझे जाते थे। इसी तरह यमन का साहिल पूरे इलाक़े की (पैदावार के लिए) मंडी था और शाम, मिस्र, यूरोप और हिन्दुस्तान व हब्श के दर्मियान तिजारत के अकेले ठेकेदार 'सबा' ही थे। तौरात में सबा की दौलत व सरवत और उनके तमद्दुन (संस्कृति) की महानता के बहुत ज़्यादा तज़्करे मिलते हैं।

सद्दे मआरिब (मआरिब का बांध)

अरब में मुस्तक़िल नदियां नहीं हैं। अक्सर वर्षा के पानी पर गुज़र है और कहीं-कहीं पहाड़ी चश्मे भी हैं। वर्षा का पानी हो या पहाड़ी चश्मों का, तमाम पानी बहकर वादी के रेगिस्तान में सूख कर बर्बाद हो जाता है। क़ौम सबा ने इस पानी को काम में लाने और बाग़ों और खेतों को हरा-भरा बनाने के लिए यमन के दूर-दूर तक के इलाक़ों में एक सौ से ज़्यादा बांध बांधे थे और उनकी वजह से पूरा मुल्क सरसब्ज़ व शादाब बना हुआ था। इन्हीं बांधों में से सबसे बड़ा और शानदार बांध 'सद्दे मआरिब' था, जो राजधानी मआरिब में बनाया गया था।

इस सद्द के बारे में पुराने-नये तारीख़दानों और सैर-सपाटा करनेवालों ने जो हालात लिखे हैं, वे यह साबित करते हैं कि सबा को इंजिनियरिंग के फ़न और मैथमेटिक्स में बड़ा कमाल हासिल था।

मआरिब के दक्खिन में दाएं-बाएं दो पहाड़ हैं जो अबलक़ पहाड़ के नाम से मशहूर हैं और उनके दर्मियान बड़ी लम्बी-चौड़ी घाटी है जिसको उज़्निय की घाटी कहते हैं। जब पानी बरसता या पहाड़ी चश्मों से बह निकलता, तो घाटी नदी बन जाती। सबा ने यह देख कर 800 ई०पूर्व में इन दोनों पहाड़ों के दर्मियान बांध का बांधना शुरू कर दिया और अर्से तक उसके बनाने का सिलसिला जारी रहा।

अरब के कुछ तारीख़दां कहते हैं कि यह बांध दो वर्ग मील में था और अर्ज़ुल क़ुरआन के लेखक एक यूरोपीय पर्यटक (सय्याह) अज़्माऊ के मज़्मून (लेख) के हवाले से बयान करते हैं कि यह एक सौ फिट लम्बी और पचास फिट चौड़ी दीवार है, जिसका बहुत बड़ा हिस्सा टूट चुका है और तिहाई अब भी बाक़ी है और वे यह भी तहरीर फ़रमाते हैं कि इस सय्याह (पर्यटक) ने उसका बहुत अच्छा-सा नक़्शा तैयार करके अपने मज़्मून के साथ छापा है जो फ्रेंच एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में छपा है और जिसको उन्होंने अरज़ुल क़ुरआन में भी नक़ल किया है।

अरब के तारीख़दां यह भी कहते हैं सबा ने उसको इस तरह तामी

किया था कि पानी को रोकने के बाद मौसमों के इख़्तिलाफ़ के पेशे नज़र सिंचाई के लिए पानी के ऊपर-नीचे तीन दर्जे क़ायम कर दिए थे और हर दर्जे में तीस-तीस खिड़कियां रखी थीं, जिनके ज़रिए पानी को खोला और बंद किया जाता था और फिर उनके नीचे एक बहुत बड़ा हौज़ बनाया था। उसके दाएं-बाएं लोहे के दो बड़े-बड़े फाटक थे। हौज़ का पानी जिनके ज़रिए तक़्सीम होकर मआरिब के दोनों तरफ़ नहरों, गोलों और जबहों के ज़रिए ज़रूरत के मुताबिक़ काम में आता था। इस शानदार बांध की वजह से लगभग 300 वर्ग मील तक दाएं-बाएं छुहारों के बाग़, मेवों और फलों के बहुत सुन्दर बाग़ और मुर्ग़ज़ार, 'दार चीनी', औफ़ और हर तरह के ख़ुश्बूदार पेड़ों के घने बाग़ इतने ज़्यादा हो गए थे कि तमाम इलाक़ा चमनिस्तान और फ़िरदौस बना हुआ था।

यमन की फ़ितरी ख़ुसूसियतों के लिहाज़ से ख़ुश्बुओं, फलों और फूलों के पेड़ों की ज़्यादती मआरिब के बांध की वजह से इसमें शानदार बढ़ौत्तरी और तरक़्क़ी, तिजारती कारोबार और खनिज पदार्थों (मादनियात) की ज़्यादती की वजह से सोना, चांदी और जवाहरात की बहुतायत ने क़ौमे सबा में इस दर्जा, ऐश्परस्ती, ख़ुशहाली, और इत्मीनान पैदा कर दिया था कि वे हर वक़्त ख़ुशी-ख़ुशी अल्लाह की नेमतों का फ़ायदा उठाते और रात व दिन सुख-वैभव का जीवन जी रहे थे।

और देश के बहारस्तानों और चमनिस्तानों की वजह से जलवायु में इतना ठहराव था कि सबा के लोग मच्छरों, मक्खियों और पिस्सुओं जैसे तक्लीफ़ पहुंचाने वाले कीड़ों से पाक और हिफ़ाज़त में थे। 'जन्नतानि अंय्यमीनिंव-व शिमाल०'

(34 : 15)

ग़रज़ हर क़िस्म की राहत और ऐश की ज़िंदगी पर यह और ज़्यादा था कि यमन से शाम तक जिस मशहूर शाहराह (Main Road) पर सबा वालों के तिजारती क़ाफ़िलों का आना-जाना था, उसके भी दोनों तरफ़ ख़ुबसूरत बलसान और दारचीनी के ख़ुश्बूदार पेड़ों का साया था और क़रीब-क़रीब फ़ासले से सफ़र को आरामदेह बनाने के लिए कारवां सराएं बनाई गई थीं जो शाम के इलाक़े तक उनको इस आराम के साथ पहुंचाती थीं कि ठंडे पानी, मेवों और फूलों की ज़्यादती यह भी महसूस नहीं होने देती थी कि वे अपने

वतन में हैं या कठिनाई भरे सफ़र में। यहां तक कि जब ख़ुशबूदार साया और सुकून देने वाली हवा में उनका कारवां इन कारवांसरायों में ठहरता, मेवे और ताज़ा फल खाता और ठंडा-मीठा पानी पीता हुआ हिजाज़ और शाम तक आना-जाना रखता, तो पड़ौसी क़ौमें रश्क व हसद से उन पर निगाहें उठातीं और हैरत व ताज्जुब के साथ उनके इस ऐश व इश्रत पर दांतों तले उंगलियां दबा लेती थीं, जैसा कि आप उनके ज़माने के तारीख़दानों की ज़ुबान से सुन चुके हैं कि वे किन लफ़्ज़ों में उनकी ख़ुशहाली का तज़्करा कर रहे हैं और जिसको अल्लाह ने बेहद (उनके लिए) सस्ता कर दिया था।

इन तारीख़ी तफ़्सील के बाद अब हमको क़ुरआन की इन आयतों को पढ़ना चाहिए जो सबा की इन ख़ुशहालियों का ज़िक्र करते हुए उसको अह्लेसबा पर अल्लाह तआला का शानदार इनाम व इकराम ज़ाहिर करती हैं—

तर्जुमा—*बेशक अह्लेसबा के लिए उनके वतन में अल्लाह की क़ुदरत की अजीब व ग़रीब निशानी थी। दो बाग़ों का (सिलसिला) दाएं-बाएं और अल्लाह ने उनको यह फ़रमा दिया था, ऐ सबा वालो! अपने परवरदिगार की तरफ़ से बख़्शी हुई रोज़ी खाओ और उसका शुक्र करो, शहर है पाकीज़ा और परवरदिगार है बख़्शने वाला* (34 : 12)

क़ुरआन मजीद की ऊपर की लाइनों को पढ़िए, क़ुरआन कहता है कि सबा के अपने घर में अल्लाह तआला की बेनज़ीर और अजीब व ग़रीब निशानी मौजूद थी, वह यह कि सैंकड़ों मील तक उनके शहर के दाएं-बाएं मेवों, फलों और ख़ुश्बूदार चीज़ों के पेड़ों का घना सिलसिला बाग़ों की शक्ल में मौजूद था। यह अल्लाह तआला के दिए हुए रिज़्क़ की क़ुदरती ख़ासियतों के ज़रिए, जो अल्लाह की 'फ़ितरत' के हाथों एतदाल पर रहा, सर्द व ख़ुश्क तबई नश्व व नुमा की शक्ल में ज़ाहिर हुआ और दूसरा पानी पहुंचाने के बेहतर तरीक़े की शक्ल में, जो असल में कायनात के पैदा करने वाले की दी हुई अक़्ल और सूझ-बूझ और समझ का नतीजा था, पस अह्ले सबा का फ़र्ज़ है कि वे इस ख़ुशऐशी और अम्न व सुकून पर जो उनके वतन ही में बे-मेहनत हासिल है, उसके शुक्र गुज़ार बन्दे बनें, अगर वे इन नेमतों का शुक्र अदा करेंगे और ख़ुदा के रिश्ते को मज़बूत करने के लिए उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते

रहेंगे, तो बेशक उन्हें यह समझना चाहिए कि एक ओर उनकी दुनिया की ज़िंदगी के लिए उनको ऐसा उम्दा और पाक-साफ़ वतन हासिल है और दूसरी ओर उनकी हमेशा की ज़िंदगी और आख़िरत की निजात के लिए उनका परवरदिगार बहुत बख़्शने वाला है।

अहले सबा और अल्लाह की नाफ़रमानी

अहले सबा एक मुद्दत तक तो इस दुनिया की जन्नत को अल्लाह की शानदार अमानत और नेमत ही समझते और इस्लाम का दामन थामे हुए अल्लाह के अह्काम का पूरा करना अपना फ़र्ज़ समझते रहे, लेकिन ख़ुशहाली, इंतिहाई ऐशपरस्ती और हर क़िस्म की नेमतों के मिल जाने से धीरे-धीरे उनमें भी वही रद्दी अख़्लाक़ पैदा हो गए, जो उनके पहले की पिछली घमंड में चूर और तकब्बुर वाली क़ौमों में मौजूद थे और यह यहां तक तरक़्क़ी करते रहे कि उन्होंने दीने हक़ को भी छोड़-छाड़ दिया और कुफ़्र व शिर्क की पिछली ज़िंदगी को दोबारा अपना लिया। फिर भी रब्बे ग़फ़ूर (बख़्शने वाले पालनहार) ने फ़ौरन पकड़ नहीं की, बल्कि उसकी भारी रहमत ने मोहलत देने के क़ानून से काम लिया और नबियों ने उनको हक़ के रास्ते पर चलने की हिदयत दी और बताया कि इन नेमतों का मतलब यह नहीं है कि तुम दौलत, सरवत, जाह व हश्मत के नशे में चूर होकर मस्त हो जाओ और न यह कि अच्छे अख़्लाक़ को छोड़ बैठो और कुफ़्र व शिर्क अख़्तियार करके ख़ुदा के साथ बग़ावत का एलान कर दो, सोचो, और ग़ौर करो कि यह राह बुरी है और उसका अंजाम बुरा अंजाम है।

मुहम्मद बिन इसहाक़ इब्ने मुनब्बह की रिवायत के ज़रिए कहते हैं कि इस दौरान उनके पास अल्लाह के तेरह नबी रिसालत का हक़ अदा करने के लिए आए, मगर उन्होंने तनिक भी तवज्जोह न दी और अपनी मौजूदा ऐशपरस्ती को हमेशा की विरासत समझ कर शिर्क और कुफ़्र की बद मस्तियों में मुब्तला रहे।

आख़िर तारीख़ ने ख़ुद को दोहराया और उनका अंजाम भी वही हुआ जो पिछले ज़माने में अल्लाह की नाफ़रमान क़ौमों का हो चुका है।

सैले इरम

चुनांचे अल्लाह तआला ने उन पर दो क़िस्म का अज़ाब मुसल्लत कर दिया, जिसकी वजह से उनके जन्नत जैसे बाग़ बर्बाद हो गए और उनकी जगह जंगली बेरियों, कांटेदार पेड़ और पीलू के पेड़ उगकर यह गवाही देने और इबरत की कहानी सुनाने लगे कि अल्लाह की लगातार नाफ़रमानी और सरकशी करने वाली क़ौमों का यह अंजाम होता है।

पहली सज़ा

हुआ यह कि जिसकी तामीर पर इनको बहुत नाज़ था और जिसकी बदौलत उनकी राजधानी के दोनों तरफ़ तीन सौ वर्ग मील तक ख़ूबसूरत और हसीन बाग़ और सरसब्ज़ व शादाब खेतों और फ़स्लों से चमन गुलज़ार बना हुआ था, वह खुदा के हुक्म से टूट गया और अचानक उसका पानी सैलाब बना हुआ वादी में फैल गया और मआरिब और ज़मीन के उन तमाम हिस्सों पर जिनमें फ़रहत पहुंचाने वाले बाग़ थे, छा गया और उन सबको डुबा करके बर्बाद कर डाला और जब पानी धीरे-धीरे सूख गया तो उस पूरे इलाक़े में बाग़ों की जन्नत की जगह पहाड़ों के दोनों किनारों से वादी के दोनों तरफ़ झाऊ के पेड़ों के झुंड और जंगली बेरों के झुंड और उन पीलू के पेड़ों ने ले ली, जिन का फल बद मज़ा, और कसेलापन लिए हुए होता है।

और ख़ुदा के इस अज़ाब को अह्ले मआरिब और क़ौमे सबा की कोई ताक़त न रोक सकी और बांध बांधने में इंजिनियरिंग और मैथेमेटिक्स के फ़न की जिस महारत का जो सबूत उन्होंने दिया था वह उसके टूटने के वक़्त सब बेकार होकर रह गया और अह्ले सबाके लिए इसके अलावा कोई रास्ता बाक़ी न रहा कि अपने प्यारे वतन और बड़े शहर मआरिब और उसके पड़ोस को छोड़कर बिखर जाएं।

कुरआन ने इसी सबक़ भरे वाक़िए को बयान करके खुली निगाह वाले और जागते दिल रखने वाले इंसान को नसीहत का यह सबक़ सुनाया है—

तर्जुमा—*'फिर उन्होंने (क़ौमे सबा ने) उन पैग़म्बरों की नसीहतों से मुंह*

फेर लिया, पस हमने उन पर बांध तोड़ने का सैलाब भेज दिया और उनके दो (उम्दा) बाग़ों के बदले दो ऐसे बाग़ उगा दिए, जो बद मज़ा फलों, झाऊ और कुछ बेरी के पेड़ों के झुंड थे, यह हमने उनकी नाशुक्रगुज़ारी की सज़ा दी और हम नाशुक्र क़ौम ही को सज़ा दिया करते हैं। (34 : 16 - 17)

ग़ौर कीजिए यह सैलाब ज़ाहिरी अस्बाब से किस तरह आया? क्या इसलिए कि 'मआरिब का बांध' पुराना टूट-फूट का शिकार हो गया था? नहीं, क्योंकि अगर ऐसा होता तो जिस क़िस्म के इंजिनियरिंग के माहिरों ने उसको बनवाया था, सबा में उसकी उस वक़्त भी कमी न थी और वे इसके अलावा देश के अलग-अलग हिस्सों में सैंकड़ों बांध बनाते रहते थे, फिर क्या वे उसकी टूट फूट और पुरानेपन का इतना इंतिज़ाम भी नहीं कर सकते थे कि अगर उसको अपनी तबई उम्र पर टूटना ही है तो पानी के ज़ोर को इस तरह कम कर दिया जाए या इसके लिए तामीर में ऐसे इज़ाफ़े कर दिए जाएं कि जिससे यह अचानक टूटकर इस भारी मुसीबत की वजह न बन सकता। फिर यह सैलाब क्यों आया? क्या इसलिए कि इस हक़ीक़त के जान लेने के बावजूद कि यह बांध बहुत जल्द टूट-फूट कर इस भारी तबाही की वजह बनने वाला है, उन्होंने काहिली और सुस्ती से इसकी परवाह नहीं की, तो तारीख़ की रोशनी में यह भी ग़लत है, इसलिए कि सबा हुकूमत के बारे में जो वक़्त की तारीख़ी गवाहियां मिली हैं, वे यह ज़ाहिर करती हैं कि वे इस बांध की मज़बूती, और हर क़िस्म के हिफ़ाज़ती मामलों के बारे में बहुत मुतमइन थे और बराबर उससे सिंचाई का काम ले रहे थे।

सच तो यह है कि पुरानी और नई तारीख़ें इस हौलनाक तारीख़ी वाक़िए की वजहों के बारे में बिल्कुल ही ख़ामोश हैं और इसलिए ख़ामोश हैं कि सबा पर यह अज़ाब, शक नहीं कि अचानक और उम्मीद के बिल्कुल ख़िलाफ़ आया, जिससे वे ख़ुद भी हैरान व सरासीमा हो कर रह गए और वे इसके सिवा और कुछ न समझ सके कि यह जो कुछ हुआ, अचानक ग़ैबी हाथ से हुआ, क्योंकि बांध की मज़बूती और इंतिज़ाम में देखने में कोई ख़राबी नहीं थी, फिर यकायक बांध का टूट जाना और पानी का भारी बाढ़ की शक्ल में फैल कर, तमाम जन्नतनिशां इलाक़े को तबाह व बर्बाद न कर देना अल्लाह के अज़ाब

के अलावा और क्या हो सकता है। उन्होंने जब जायज़ और पाक खुशऐशी को अय्याशी और बद-अतवारी में बदल दिया, अल्लाह की दी हुई नेमतों का शुक्र अदा करने के बजाए घमंड और गुरूर के साथ नेमतों की नाक़द्री की, नबियों और पैग़म्बरों के बार-बार रुश्द व हिदायत पहुंचाने के बावजूद शिर्क और कुफ़्र पर इसरार किया तो अचानक अल्लाह का अज़ाब उनको आकर तबाह व बर्बाद न करता तो और क्या होता, जैसा कि ऊपर की आयतों में अल्लाह का इर्शाद है।

दूसरी सज़ा

मआरिब के 'पानी के बांध' के टूट जाने पर इन बस्तियों के बाशिंदे बिखर कर दूसरे इलाक़ों में चले गए और कुछ यमन के ही दूसरे इलाक़ों में जा बसे, मगर अल्लाह के अज़ाब की तक्मील अभी बाक़ी थी, इसलिए कि सबा ने सिर्फ़ गुरूर, सरकशी और कुफ़्र और शिर्क ही के ज़रिए अल्लाह की नेमतों को नहीं ठुकराया था, बल्कि उनको यमन से शाम तक राहत पहुंचाने वाली आबादियों और करवांसरायों की वजह से वह सफ़र भी नापसंद था जिसमें उनको यह महसूस नहीं होता था कि सफ़र की परेशानियां क्या होती हैं और पानी की तक्लीफ़ और खाने-पीने की तक्लीफ़ किस चीज़ का नाम है और क़दम-क़दम पर मीलों तक दोनों तरफ़ ख़ुश्बुओं और फलों के बाग़ों की वजह से गर्मी और तपन की पीड़ा को भी नहीं जानते थे।

उन्होंने इन नेमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करने के बजाए बनी इसराईल की तरह नाक-भौं चढ़ाकर यह कहना शुरू कर दिया कि यह भी कोई ज़िंदगी है कि इसांन सफ़र के इरादे से घर से निकले तो यह भी न मालूम हो कि सफ़र की हालत मे है या अपने घर में। वे भी क्या ख़ुशनसीब इंसान हैं जो भारी हिम्मत के साथ सफ़र की हर क़िस्म की तक्लीफ़ उठाते, पानी और खाने-पीने के लिए तक्लीफ़ें सहते और राहत व आराम के सामानों के न मिल पाने की वजह से सफ़र की लज़्ज़त का मज़ा चखते हैं। ऐ काश! हमारा सफ़र भी ऐसा हो जाए कि हम यह महसूस करने लगें कि वतन से किसी दूर की जगह का सफ़र करने निकले हैं और मंज़िल की दूरी की तक्लीफ़ सहते हुए

सफ़र और ग़ैर-सफ़र में फ़र्क़ कर सकें।

बदबख़्त और नाशुके इंसानों की यह नाशुक्री थी, जिसकी तमन्नाओं और आरज़ूओं से बेचैन होकर ख़ुदा के अज़ाब को दावत दे रहे थे और उसके बुरे अंजाम से ग़ाफ़िल हो चुके थे।

सबा ने जब इस तरह नेमत की नाशुक्री को आख़िर तक पहुंचा दिया तो अब अल्लाह तआला ने भी उनको दूसरी सज़ा यह दी कि यमन से शाम तक उनकी तमाम आबादियों को वीरान कर दिया, जो नज़दीक-नज़दीक बराबर छोटे-छोटे कस्बों, गांवों, करवां सरायों और तिजारती मंडियों की शक्ल में आबाद थीं और उनके राहत और आराम में किफ़ालत करती थीं और सफ़र की हर क़िस्म की परेशानियों से उनको बचाए रखती थीं और इस तरह पूरे इलाक़े में ख़ाक उड़ने लगी और यमन से शाम तक नव आबादियों का यह सिलसिला वीराने में तब्दील होकर रह गया।

चुनांचे कुरआन मजीद की ये आयतें इसी सच्चाई का एलान करती हैं—

तर्जुमा— *'हमने उनके (मुल्क) और बरकत वाली आबादियों (शाम) के दर्मियान बहुत सी खुली आबादियां क़ायम कर दी थीं और उनमें सफ़र की मंज़िलें (कारवां सराएं) मुक़र्रर की थीं और कह दिया था, चलो इन आबादियों के दर्मियान दिन-रात बिना किसी डर और ख़तरे के, मगर उन्होंने कहा, ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों (मंज़िलों) के दर्मियान दूरी कर दे और यह कह कर उन्होंने ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। बस हमने उनको कहानी बना दिया और उनको पारा-पारा कर दिया। बेशक इस (वाक़िए) में इबरत (सबक़) की निशानियां हैं सब्र करने वालों और शुक्र गुज़ारों के लिए!'*

(सबा 18 : 19)

तारीख़दां कहते हैं कि सबा के मुक़ाबले में बहुत दिनों से रूमियों की यह ख़्वाहिश थी कि किसी तरह वे भी हिन्दुस्तान और अफ़रीक़ा के साथ अरबों की तरह सीधे-सीधे तिजारत करके ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाएं, मगर अरब किसी तरह इसका मौक़ा नहीं देते थे और तिजारती साहिलों पर क़ब्ज़ा जमाए हुए थे, लेकिन पहली सदी ईसा पूर्व में रूमियों ने एक के बाद एक, मिस्र व शाम पर क़ब्ज़ा कर लिया और अब उनको मौक़ा मिला कि वे

अपने मंसूबे को पूरा करें, लेकिन तिजारती मर्क़ज़ों के लिए जो शाहराह 'इमामे मुबीन' अरबों ने बना रखी थी, वह ख़ुश्की का रास्ता था और गुज़रने वालों के लिए अरबों से वास्ता पड़ना लाज़िमी था और रूमी इन पहाड़ी राहों को पार करने में वैसे भी परेशानी महसूस करते थे, इसलिए उन्होंने अरबों के डर से बचे रहने के लिए यह किया कि हिन्दुस्तान और अफ़रीका की तिजारत के ख़ुश्की के रास्ते को समुद्री रास्ते में तब्दील कर दिया और लाल सागर में नावों के ज़रिए तमाम माल मिस्र और शाम के बन्दरगाह पर उतारने लगे। नतीजा यह निकला कि तिजारत के इस नए तरीक़े ने यमन से शाम तक सबा की तमाम नव-आबादियों को बर्बाद कर दिया और वहां कुछ ही दिनों में ख़ाक उड़ने लगी और सबा का यह ख़ानदान बिखर कर रह गया। किसी ने शाम की राह ली तो किसी ने ओमान की और किसी ने इराक़ का रुख़ किया तो किसी ने हिजाज़ की ओर, कोई नज्द पहुंचा तो किसी ने बहरैन की राह अख़्तियार की और अह्लेसबा की हुकूमत का शीराज़ा इस तरह बिखर गया कि वे सच में एक कहानी बन कर रह गए और 'फ़-जअलना हुम अहादीस' और 'मज़्ज़क़्नाहुम कुल-ल मुमज़्ज़क़' का सही नक़्शा आखों के सामने आ गया, गोया—

देखो मुझे जो दीदा-ए-इबरत निगाह हो
मेरी सुनो जो गोशे नसीहत नयोश है।

सैले इरम का फैलाव

यह बात भी खुल कर बताने की है कि सैले इरम का यह सानहा और हादसा सारे यमन पर पेश नहीं आया, बल्कि यमन की राजधानी मआरिब और उसके आस-पास के इलाक़ों में सैंकड़ों मील तक इसकी तबाही मचाने वाला असर पड़ा और उस वक़्त सिर्फ़ वही क़बीले वतन छोड़ने पर मजबूर हुए जो इन जगहों पर आबाद थे, अलबत्ता जब दूसरा अज़ाब आया तो पूरे यमन पर असर पड़ा और सबा के बाक़ी क़बीले भी बिखर गए और सबा की हुकूमत का ख़ात्मा हो गया।

सबा की मज़हबी हालत

कुरआन ने सूरः सबा में सबा की मज़हबी हालत पर जो रोशनी डाली है, उससे यह मालूम होता है कि सबा के ऊंचे तबक़े का मज़हब सूरज परस्ती (सितारा परस्ती) रहा है या सच्ची यहूदियत (यहूदी धर्म यानी मूसा अलै० का धर्म यानी यहूदी धर्म) जबकि दूसरे तबक़े में सनमपरस्ती क़ौमी मज़हब रहा या ईसाई धर्म, कभी-कभी उनमें नज़र आ जाता है।

कुछ तफ़्सीरी नुक्ते

1. मआरिब और यमन का यह इलाक़ा जिस की तफ़्सील ऊपर गुज़र चुकी है, दुनिया में फ़िरदौस (जन्नत) की नज़ीर (मिसाल) बन गया था और उनके मुल्क की यह सूरते हाल अल्लाह तआला के ख़ास करम पर ही बनी थी इसीलिए कुरआन ने इसको अल्लाह की निशानी कहा है—

तर्जुमा—*बिला शुबहा अहले सबा के लिए उनके वतन में अल्लाह की क़ुदरत की अजीब व ग़रीब निशानी थी, दो बाग़ों का सिलसिला—दाहेने और बाएं'।*

तर्जुमा—*'शहर है पाक और परवरदिगार है बख़्शने वाला',* और उसके बाद है—

तर्जुमा—*'पस उन्होंने अल्लाह से मुंह फेरा'*

इन दोनों जुम्लों से यह मालूम होता है कि सबा पहले मुसलमान थे, मगर धीरे-धीरे उन्होंने कुफ़्र अख़्तियार किया, जैसा कि इस आयत से भी ज़ाहिर होता है। 'ज़ालि-क जज़ैनाहुम' (यह है जिसका बदला हमने उन्हें दिया।) (34 : 19)

हज़रत सुलैमान अलै० के क़िस्से में यह बयान किया जा चुका है कि सबा ने 950 ई० पू० में इस्लाम कुबूल किया। सदियों तक उन्होंने इस अमानत को सीने से लगाए रखा, लेकिन पिछली क़ौमों की तरह उन्होंने मुंह फेरना शुरू कर दिया, तब अल्लाह के पैग़म्बरों ने खुद आकर या अपने नायबों के ज़रिए उनको हिदायत की तरफ़ बुलाया, मगर उन्होंने भी बनी इसराईल की तरह अल्लाह

की नेमतों को ठुकराया, तब हज़रत ईसा (अलै॰) से एक सदी पहले अल्लाह की ओर से सैले इरम की तबाही का अज़ाब आया और उसने सबा के ख़ानदान के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

नतीजे और सबक़

अल्लाह ने क़ुरआन मजीद में वाज़ व नसीहत के चार तरीक़े बयान फ़रमाए हैं—

1. *तज़्कीर बिआलाइल्लाह*- (अल्लाह की नेमतों से याद देहानी) यानी अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर जिन नेमतों की अरज़ानी फ़रमाई है उनको याद करके अल्लाह के हुक्मों की तरफ़ मुतवज्जह करना। सूरः आराफ़ में इर्शाद है—

तर्जुमा—*'पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद करते मत फिरो।'* (9 : 94)

2. *तज़्कीर बिअय्यामिल्लाह*- अल्लाह के दिनों या ज़मानों से याद देहानी, यानी उन पिछली क़ौमों के हालात बयान करके नसीहत व इबरत दिलाना, जिन्होंने अल्लाह की इताअत व फ़रमांबरदारी की वजह से कामियाबी और दोनों दुनिया की फ़लाह हासिल की और या सरकशी और ढिठाई इंतिहा पर पहुंच कर हलाकत व तबाही मोल ली और अल्लाह के अज़ाब को अपने लिए ज़रूरी कर दिया या दूसरे लफ़्ज़ों में क़ौमों की तरक़्क़ी व पस्ती को पेश करके इबरत का सामान मुहय्या करना। सूरः इब्राहीम में है—

तर्जुमा—*'और ऐ पैग़म्बर! इनको नसीहत कीजिए क़ौमों के उरूज व ज़वाल (तरक़्क़ी व पस्ती) को याद दिला कर।'* (15 : 5)

3. *तज़्कीर बिमा बादल मौत*- यानी बरज़ख़ और क़ियामत के हालात सुना कर इबरत दिलाना, सूरः कहफ़ में है—

तर्जुमा— *'पस क़ुरआन के ज़रिए नसीहत करो उस शख़्स को जो अल्लाह की धमकी यानी मौत के बाद के अज़ाब से डरता है'* (50-45)

पस क़ौमे सबा का यह वाक़िया 'तज़्किरा बि अय्यामिल्लाह' से ताल्लुक़ रखता है और हमको यह सबक़ देता है कि जब कोई क़ौम ऐश व राहत और

सरवत व ताक़त के घमंड में आकर नाफ़रमानी और सरकशी पर उतर आती है, तो पहले तो अल्लाह तआला उसको मोहलत देता और उसको सीधे रास्ते पर लाने के लिए अपनी हुज्जत को अख़िरी हद तक पूरा करता है। अगर इस पर भी वह हक़ कुबूल करने की दुश्मन रहती और बग़ावत व सरकशी के उस ऊंची कसौटी पर पहुंच जाती है कि उस को अल्लाह की नेमतें और दी हुई राहतें भी नागवार गुज़रने लगती हैं और वह उनको ठुकराने लगती है तो पकड़ का क़ानून-अपने फौलादी पंजे आगे बढ़ाता और ऐसी बदबख़्त क़ौम को पारा-पारा कर देता और हलाकत और बरबादी को आसमान पर उतार देता है और उनकी सारी शान दुनिया के सामने एक कहानी बन कर रह जाती है—

'कुल सीरू फ़िल अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल मुज्रिमीन

(19 : 69)

तर्जुमा : *'तो कह दे, फिरो मुल्क में, तो देखो कैसा हुआ अंजाम गुनाहगारों का।'*

अस्हाबुल उख़्दूद या क़ौमे तुब्बअ

उख़्दूद

'ख़द्द' या 'उख़्दूद' के मानी गढ़े, खाई और ख़ंदक़ के हैं। यह एक वचन है और इसका बहुवचन 'अख़ादीद' आता है, चुंकि बयान किए गए वाक़िए में काफ़िर बादशाह और उसके अमीरों व सरदारों ने ख़ंदकें और गढ़े खुदवा कर और उनके अन्दर आग धधकवाकर ईसाई मोमिनों को उनमें डाल कर ज़िंदा जला दिया था। इस निस्बत से इन काफ़िरों को 'अस्हाबुल उख़्दूद' कहा जाता है।

क़ुरआन और अस्हाबे उख़्दूद

सूरः बुरूज में अस्हाबुल उख़्दूद का वाक़िया बयान करने के मोजज़े भरे तरीक़े के साथ इस तरह ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा— 'शुरू अल्लाह के नाम से जो बेहद मेहरबान और निहायत रहम वाला है। क़सम है आसमान की जिसमें बुर्ज है और उस दिन की जिसका वायदा है और उस दिन की जो हाज़िर होता है और उस दिन की जिसके पास हाज़िर होते हैं, मारे गए खाइयां खोदने वाले, आग है बहुत ईंधन वाली जब वे उस पर बैठे और जो कुछ वे करते थे मुसलमानों के साथ, अपनी आंखों से देखते थे और उनसे बदला नहीं लेते थे, मगर सिर्फ़ इस बात का कि वे यक़ीन लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ़ों का हक़दार है, जिसका राज है आसमानों में और ज़मीन में और अल्लाह के सामने है हर चीज़, बेशक! जो, ईमान से बिचलाए ईमान वाले मर्दों और औरतों को, फिर तौबा न करे तो उनके लिए अज़ाब है दोज़ख़ का और उनके लिए अज़ाब है आग में जलने का। बेशक जो लोग यक़ीन लाए (अल्लाह पर) और उन्होंने भलाइयाँ कीं, उनके लिए जन्नत है, जिनके नीचे नहरें बहती हैं। यह है बहुत बड़ी कामियाबी।'

(85 : 1-11)

वाक़िए की तफ़्सील

तफ़्सीर लिखने वालों ने इन आयतों की तफ़्सीर में कई वाक़िए नक़ल किए हैं। हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रमान स्योहारवी रह० ने इन तमाम रिवायतों पर तफ़्सील से बहस की है और इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मशहूर ताबई मुक़ातिल की इबारत के मुताबिक़ कुरआन में जिस वाक़िए का ज़िक्र किया गया है, वह नजरान. और ज़ूनवास से ताल्लुक़ रखता है और तहक़ीक़ करने वालों का रुझान भी इसी ओर है।

यह वाक़िया साहबे सीरत मुहम्मद बिन इसहाक़ ने मुहम्मद बिन काब रह० की सनदी सिलसिले में नक़ल किया है, वह फ़रमाते है, कि शाम और हिजाज़ के दर्मियान जो बस्ती नजरान के नाम से मशहूर है, उसके बाशिंदे बुत-परस्त और मुश्रिक थे और उनके क़रीब की आबादी में एक साहिर (जादूगर) रहता और वह नजरान के लड़कों को सहर (जादू) की तालीम दिया करता था। कुछ दिनों के बाद नजरान और जादूगर की बस्ती के दर्मियान एक राहिब (ईसाई सन्यासी) ने आकर अपना ख़ेमा डाल लिया, यानी वहीं ठहर गया।

वह्ब बिन मुनब्बह कहते हैं कि उसका नाम मैमून था। नजरान के जो लड़के जादूगर से जादूगरी की तालीम हासिल करते थे, उन में एक लड़का अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर भी था। एक दिन अ़ब्दुल्लाह राहिब के ख़ेमे में चला गया। राहिब नमाज़ में लगा हुआ था। अ़ब्दुल्लाह को राहिब की नमाज़ और इबादत का तरीक़ा बहुत पसन्द आया और उसके पास आने-जाने लगा और उससे उसके दीन को सीखना शुरू कर दिया और ईमान ले आया और राहिब से सच्चे मसीही धर्म की तालीम हासिल करके धीरे-धीरे उस दीन का आलिम बन गया। अब उसने राहिब से यह इसरार (आग्रह) किया कि मुझको इस्मे आज़म के बारे में कुछ बताइए, मगर राहिब यह कह कर टालता रहा कि भतीजे! मुझे यह डर है कि तू उसको बरदाश्त न कर सकेगा, क्योंकि तुझको कमज़ोर पाता हूं। लड़का ख़ामोश हो गया।

यहां तो यह सिलसिला जारी था और उधर अ़ब्दुल्लाह का बाप तामिर यह समझता रहा कि मेरा लड़का साहिर से डर खा रहा है। कुछ दिन ख़ामोश रह कर लड़के से सब्र न हो सका और उसने यक़ीन कर लिया कि राहिब बुख़्ल कर रहा है और बताना नहीं चाहता। यह सोच कर उसने तीरों का मुट्ठा लिया और हर एक तीर पर ख़ुदा का एक-एक नाम लिखा और फिर आग रोशन की और एक-एक तीर को उसमें डालना शुरू किया, तीर धीरे-धीरे आग की भेंट चढ़ते रहे और जलते रहे, मगर एक तीर जब आग में पहुंचा तो फ़ौरन उछलकर दूर जा गिरा। लड़का समझ गया, इस पर इस्मे ज़ात ख़ुदा हुआ है और यही इस्मे आज़म है और इसके बाद राहिब को सारा क़िस्सा कह सुनाया। राहिब ने सुना तो अ़ब्दुल्लाह को नसीहत की कि इसको हिफ़ाज़त के साथ अपने पास रखना।

अ़ब्दुल्लाह ने उसको दीने हक़ की तब्लीग़ का ज़रिया बना लिया। वह जिस किसी को मरीज़ पाता तो उससे यह कहता कि अगर तू एक अल्लाह पर ईमान ले आए और मोमिन (ईमान वाला) बन जाए तो मैं तेरे लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करूं कि तुझको तन्दुरुस्त कर दे और जब वह शख़्स सच्चेदिल से ईमान ले आता तो यह दुआ़ करता और मरीज़ चंगा होता।

धीरे-धीरे यह बात नजरान के बादशाह तक पहुंची। उसने लड़के को

बुलाया और कहा कि तूने मेरे राज में फ़साद मचाया और मेरे और मेरे बाप-दादा के दीन की मुख़ालफ़त शुरू कर दी, इसलिए अब तेरी सज़ा यह है कि तुझको क़त्ल कर दिया जाए।

लड़का कहने लगा, बादशाह! मेरा क़त्ल तेरी कुदरत से बाहर है।

बादशाह ने ग़ज़बनाक होकर हुक्म दिया कि इसको पहाड़ की चोटी से गिरा दो। सरकारी आदमियों ने उसको पहाड़ की चोटी से गिरा दिया, मगर अल्लाह की कुदरत ने उसको सही सालिम रखा और वह बादशाह के पास वापस आ गया। अब बादशाह ने हुक्म दिया कि इसको नदी में ले जाकर डूबो दो, लेकिन वह दरिया में फेंक दिए जाने के बावजूद न डूबा और उसको ज़रा भी कोई तक्लीफ़ न पहुंची, तब लड़के ने बादशाह से कहा कि अगर तू वाक़ई मुझ को क़त्ल कर देना चाहता है तो उसकी सिर्फ़ एक ही शक्ल है और वह यह कि तू एक अल्लाह का नाम लेकर मुझ पर हमला कर, तो मैं मारा जा सकता हूं। बादशाह ने एक अल्लाह का नाम लेकर लड़के पर हमला किया तो लड़के की जान चली गई, मगर साथ ही अल्लाह के अज़ाब ने बादशाह को भी उसी जगह हलाक कर दिया।

शहर वालों ने जब लड़के और बादशाह के दर्मियान जंग का यह नज़ारा देखा, तो वे सब सच्चे दिल से एक अल्लाह पर ईमान ले आए और मुसलमान हो गए और उन्होंने सच्चाई के साथ हज़रत ईसा अलै॰ और इंजील की पैरवी को अपना दीन बना लिया, चुनांचे नजरान में ईसाई धर्म के हक़ीक़ी और सच्चे दीन की बुनियाद इसी वाक़िए से पड़ी।

नजरान में ईसाई धर्म का फैलाव और लड़के और राहिब के वाक़िए का तज़्करा यहूदी मज़हब के मानने वाले शाह यमन ज़ूनवास तक भी पहुंचा। उसने सुना तो बड़े ग़ुस्से में आ गया और भारी फ़ौज लेकर नजरान पहुंचा और तमाम शहर में मुनादी करा दी कि कोई आदमी ईसाई धर्म पर क़ायम नहीं रह सकता, या तो वह यहूदी धर्म क़ुबूल कर ले, वरना मरने के लिए तैयार हो जाए।

नजरान के लोगों के दिलों में ईसाई धर्म इतना घर कर चुका था कि उन्होंने मर जाना क़ुबूल किया, मगर ईसाई धर्म से मुंह न मोड़ा। ज़ूनवास ने

यह देखा तो सख़्त गुस्से में आ गया और हुक्म दिया कि शहर की गलियों और शाहराहों में ख़ंदकें और खाइयां खोदी जाएं और उनमें आग धधकाई जाए। जब फ़ौजियों ने इसकी तामील कर दी, तो उसने शहरियों को जमा करके हुक्म दिया कि जो आदमी यहूदी धर्म क़ुबूल करने से इंकार करता जाए मर्द हो या औरत या बच्चा, उसको ज़िंदा आग में डाल दो। चुनांचे इस हुक्म के मुताबिक़ बीस हज़ार के क़रीब मज़्लूम इसांनों को शहीद होना पड़ा। यही वह वाक़िया है, जिसका ज़िक्र अल्लाह ने सूरः बुरूज में किया है।

क़ुति-ल अस्हाबुल उख़्दूदि० अन-नारि ज़ातिल वक़ुद

क़ौम तुब्बअ़

तुब्बअ़ की हक़ीक़त

तुब्बअ़ असल में हब्शी लफ़्ज़ है या असल सामी, इसके बारे में अरब तारीख़दानों की राय यह है कि यह अरबी (सामी) लफ़्ज़ है और तुब्बअ़ से मतबूअ (सरदार) के माने समझे जाते हैं और नए तहक़ीक़ वाले यह कहते हैं कि यह लफ़्ज़ असल में हब्शी भाषा का है और इसके मानी है क़ाहिर व ग़ालिब यानी अरबी में 'सुलतान' और हब्शी भाषा में तुब्बअ़ एक ही मानी वाले लफ़्ज़ (पर्यायवाची) हैं।

पिछले पन्नों में बयान किए गए वाक़िए को नक़ल करने के बाद इब्ने इसहाक़ कहता है कि ज़ूनवास यमन का मशहूर बादशाह है। उसका असल नाम ज़रआ था, मगर सिंहासन पर बैठने के बाद यूसुफ़ ज़ूनवास के नाम से मशहूर हुआ। उसके बाप का नाम तुब्बान असद था और अबूकर्ब कुन्नियत रखता था। यमन के इन बादशाहों का लक़ब 'तुब्बअ़' था। इसलिए तारीख़ की किताबों में यह ख़ानदान तबाए यमन कहलाता है। अबू कुरैब वह पहला तुब्बअ़ है, जिसने बुतपरस्ती छोड़कर यहूदी धर्म क़ुबूल कर लिया था। उसने मदीना पर हमला करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया था, मगर बनी क़ुरैज़ा के दो यहूदी उलेमा के कहने पर सच्चे दीन मूसवी को क़ुबूल करके मदीना से वापस

चला आया और फिर मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर काबे पर गि़लाफ़ चढ़ाया और दोनों यहूदी उलेमा को यमन साथ ले आया। उन्होंने यमन में यहूदी धर्म की तब्लीग़ (प्रचार) की और धीरे-धीरे यमन वालों ने यहूदियत (यहूदी धर्म) अपना लिया।

क़ुरआन और क़ौम तुब्बअ्

क़ुरआन ने तुब्बअ् का ज़िक्र दो जगहों पर सूरः क़ाफ़ और सूरः दुख़ान में किया है। सूरः दुख़ान में मुख़्तसर तौर पर उनकी माद्दी ताक़त व क़ूवत का ज़िक्र करके यह बताया गया है कि जब अल्लाह की नाफ़रमानी करके वे हलाकत से न बचे, तो क़ुरैश, जो उनके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं थे, सरकशी करके कैसे बच सकते थे और सूरः क़ाफ़ में सिर्फ़ मुज्रिम क़ौमों की फ़ेहरिस्त में उनका ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा—*ये (क़ुरैश) बेहतर (मज़बूत और ताक़तवर) हैं या तुब्बअ् की क़ौम और जो इनसे पहले गुज़र गई, हमने उनको इसलिए हलाक कर दिया कि वे मुज्रिम थे।* (44 : 37)

तर्जुमा—*'इन (मक्का के मुश्रिकों) से पहले नूह की क़ौम ने, अस्हाबुर्रस्स ने, समूद, आद, फ़िरऔ़न, इख़्वाने लूत, अस्हाबुल ऐका और क़ौमे तुब्बअ् ने (अल्लाह के पैग़म्बरों को) झुठलाया है।'* (50 : 12-14)

इब्ने इसहाक़ के बयान के मुताबिक़ यमन के यहूदी बादशाहों का लक़ब तुब्बअ् वाज़ेह होता है, इस तरह बादशाह ज़ूनवास का लक़ब, जिसका ज़िक्र 'अस्हाबुलउख़दूद' के सिलसिले में आ चुका है 'तुब्बअ्' हुआ। मुख़्तसर यह कि 'अस्हाबुलउख़दूद' का दूसरा नाम क़ौमे तुब्बअ् हुआ, जिसका ज़िक्र ऊपर की आयतों में किया गया है। वल्लाहु आलम।

सबक़ और नसीहत

1. जब इंसान इंफ़िरादी और इज्तिमाई ज़िंदगी में अल्लाह के ख़ौफ़ से बेपरवाह हो जाता है और उसकी दौलत व हुकूमत क नशा किब्र व ग़रूर को उस बुलन्दी पर पहुंचा देता है जिस पर चढ़ कर उसकी निगाह में तमाम

चला आया और फिर मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर काबे पर गिलाफ़ चढ़ाया और दोनों यहूदी उलेमा को यमन साथ ले आया। उन्होंने यमन में यहूदी धर्म की तब्लीग़ (प्रचार) की और धीरे-धीरे यमन वालों ने यहूदियत (यहूदी धर्म) अपना लिया।

क़ुरआन और क़ौम तुब्बअ्

क़ुरआन ने तुब्बअ् का ज़िक्र दो जगहों पर सूरः क़ाफ़ और सूरः दुख़ान में किया है। सूरः दुख़ान में मुख़्तसर तौर पर उनकी माद्दी ताक़त व क़ूवत का ज़िक्र करके यह बताया गया है कि जब अल्लाह की नाफ़रमानी करके वे हलाकत से न बचे, तो क़ुरैश, जो उनके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं थे, सरकशी करके कैसे बच सकते थे और सूरः क़ाफ़ में सिर्फ़ मुज्रिम क़ौमों की फ़ेहरिस्त में उनका ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा—*ये (क़ुरैश) बेहतर (मज़बूत और ताक़तवर) हैं या तुब्बअ् की क़ौम और जो इनसे पहले गुज़र गई, हमने उनको इसलिए हलाक कर दिया कि वे मुज्रिम थे।* (44 : 37)

तर्जुमा—*'इन (मक्का के मुश्रिकों) से पहले नूह की क़ौम ने, अस्हाबुर्रस्स ने, समूद, आद, फ़िरऔन, इख़्वाने लूत, अस्हाबुल ऐका और क़ौमे तुब्बअ् ने (अल्लाह के पैग़म्बरों को) झुठलाया है।'* (50 : 12-14)

इब्ने इसहाक़ के बयान के मुताबिक़ यमन के यहूदी बादशाहों का लक़ब तुब्बअ् वाज़ेह होता है, इस तरह बादशाह ज़ूनवास का लक़ब, जिसका ज़िक्र 'अस्हाबुलउख़दूद' के सिलसिले में आ चुका है 'तुब्बअ्' हुआ। मुख़्तसर यह कि 'अस्हाबुलउख़दूद' का दूसरा नाम क़ौमे तुब्बअ् हुआ, जिसका ज़िक्र ऊपर की आयतों में किया गया है। वल्लाहु आलम।

सबक़ और नसीहत

1. जब इंसान इंफ़िरादी और इज्तिमाई ज़िंदगी में अल्लाह के ख़ौफ़ से बेपरवाह हो जाता है और उसकी दौलत व हुकूमत क नशा किब्र व ग़ुरूर को उस बुलन्दी पर पहुंचा देता है जिस पर चढ़ कर उसकी निगाह में तमाम

मख़्लूक़ हेच और हक़ीर नज़र आने लगती है, तो अख़्लाक़े हसना और बुलन्द जज़्बात उससे किनारा अपना लेते हैं और वह अपनी ज़ात और ज़ाती ग़रज़ों के अलावा और कुछ नहीं देखता। तब यकायक ग़ैरते हक़ को हरकत होती है और वह इस तरह बुलन्दी से पटक देती है कि पस्ती व ज़िल्लत के तारीक ग़ार के अलावा उसके लिए और कोई जगह बाक़ी नहीं रहती। *'अना रब्बुकुमल आला'* (मैं ही तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूं) कहने वाला हक़ीक़ी रब की ऐसी कड़ी पकड़ में आ जाता है कि कायनात की भरपूर ताक़त न उसके काम आती है, न दुनिया की दौलत व हश्मत और उसके आगे सर झुका कर यह इक़रार करना पड़ता है कि 'इन-न बत-श रब्बि-क ल-शदीद०' (बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बहुत सख़्त है।) (85 : 12)

2. इंसान इंसानियत की ख़ास ख़ूबियों और निशानियों से बनता है, वरना हैवान से भी बदतर है और इंसानियत का तक़ाज़ा यह है कि जब इंसान को हर क़िस्म की दौलत व हश्मत और सामान मयस्सर हो और सतवत व ताक़त भी बे-अन्दाज़ नसीब हो, तो उस वक़्त भी ख़ुदा और ख़ुदा के डर से हरगिज़ बेगाना न हो।

ज़फ़र मर्हूम ने क्या ख़ूब कहा है—

जफ़र आदमी उसको न जानिएगा वह हो कैसा ही साहिबे फ़हम व ज़का
जिसे ऐश में यादे ख़ुदा न रही, जिसे तैश में ख़ौफ़े ख़ुदा न रहा।

तर्जुमा—*'और ऐ क़ौमे आद! वह वक़्त याद करो, जब तुम को क़ौमे नूह के बाद उनका जानशीं बनाया और तुमको मख़्लूक़ में हर तरह की फ़राख़ी अता की, पस अल्लाह की नेमतों को याद करो।'* (7 : 69)

तर्जुमा—*'और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो।'* (7 : 74)

तर्जुमा—*'और हमने बेशक तुमको ज़मीन में कुदरत व सतवत अता की और तुम्हारे लिए उनमें ज़िंदगी के सामान बख़्शे, फिर तुममें बहुत कम शुक्र गुज़ार हैं'* (7-10)

3. इंसान जब अल्लाह तआला पर मज़बूत यक़ीन कर लेता और ईमान की मिठास से फ़ैज़याब हो जाता है तो फिर कायनात की बड़ी से बड़ी ताक़त और दुनिया का हौलनाक ज़ुल्म भी उसको हक़ व सदाक़त से डगमगा नहीं सकता और वह इस्तिक़ामत का पहाड़ बनकर ईसार व कुरबानी का पैकर

साबित होता है, चुनांचे 'अस्हाबे उख़दूद' का वाक़िया इसकी ज़िन्दा गवाही है।

4. 'जज़ा अज़ जिन्से अमल' अल्लाह तआला का बोलता क़ानून है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि ज़ालिम व मुतकब्बिर को ज़ुल्म व किब्र के वजूद में आते ही फ़ौरन सज़ा मिल जाए, इसलिए कि रहमत की सिफ़त के तक़ाज़े के तौर पर यहां साथ-साथ मोहलत देने का क़ानून भी काम कर रहा है, अलबत्ता जब अचानक पकड़ कर ली जाती है, तो फिर छुटकारा नामुम्किन है।

अस्हाबुल फ़ील (570 ई०)

हब्शा और नजाशी

आज के दौर में कुछ साल पहले तक हब्शा को अबीसीनिया कहा जाता था और आज कल इथोपिया कहा जाता है। अरब, हब्शा के बादशाह को नजाशी का लक़ब देते रहे हैं। अस्हमा बिन अबजर मशहूर नजाशी था, जिसने ख़ुश-क़िस्मती से नबी अकरम के नबी बनाए जाने का ज़माना पाया और उसे इस्लाम की दौलत मिली। हब्शा का मज़हब और उनका रहन-सहन शुरू से ही मिस्र (अरब) के मज़हब व तमद्दुन का असर अपनाता रहा है, जब मिस्र में ईसाई धर्म फैला तो हब्शा भी ईसाई धर्म की ओर चल पड़ा।

नोट : कुछ साल पहले तक अबीसीनिया का हुक्मरां ईसाई था। यह शख़्सी हुकूमत थी। इस हुक्मरां का दावा था कि उसके पास रिसालत के ज़माने के बहुत से तबर्रुक एक लोहे के संदूक़ में हिफ़ाज़त से रखे हैं, जिनको वह दूसरी जंग में अपने मुल्क पर इटली के क़ब्ज़े के वक़्त, हवाई जहाज़ में इंतिहाई अज़ीज़ समझ कर अपने साथ लन्दन ले गया था। (मुरत्तिब)

अबरहा अल अशरम

अबरहा शाही ख़ानदान से था और नाककटा था, इसलिए अरबवाले उसको अबरहा अल-अशरम कहते हैं। अरबी में अशरम नाक कटे को कहते

हैं। उसकी हुकूमत की शुरूआत 525 ई० से होती है। यह ईसाई धर्म में बड़ा जोशीला था, उसने बहुत से गिरजा बनवाए। सबसे बड़ा और मशहूर गिरजा राजधानी सनआ में बनवाया, जिसको अरब 'अल-क़लीस' कहते हैं, जो यूनानी लफ़्ज़ कलीसा का अरबी बनाया हुआ है। यह गिरजा बनावट के एतबार से बेमिसाल है। उसने यह तमन्ना ज़ाहिर की कि अरब वाले जो मक्का में हज करने जमा होते हैं, उन सबका रुख़ इस कलीसा की तरफ़ मोड़ दिया जाए और यही हज की जगह बन जाए। अरबों ने जब यह सुना तो बहुत बिगड़े।

अस्हाबे फ़ील (हाथी वाले)

अरब की तारीख इसकी गवाह है कि तमाम अरब, भले ही उनका ताल्लुक़ किसी भी मज़हब या फ़िरक़े से हो, काबे की बहुत ज़्यादा अज़्मत करते और अपने-अपने अक़ीदे के मुताबिक़ उसका हज करना मुक़द्दस फ़र्ज़ समझते थे और यही वजह थी कि ख़ास काबा के अन्दर अरब के अलग-अलग फ़िरक़ों के बुत (तीन सौ साठ की तायदाद में) नसब (गड़े हुए) थे।

बहरहाल जब सनआ में ठहरे हुए किसी हिजाज़ी ने यह सुना कि अबरहा ने 'अल क़लीस' को इस नीयत से बनाया है, तो उसको गुस्सा आया और उसने रात ही में मौक़ा पाकर उस कलीसा को नजिस कर दिया। अबरहा को जब सुबह को यह मालूम हुआ और तहक़ीक़ के बाद पता चला कि यह काम किसी हिजाज़ी का है, तो गुस्से से बे-क़ाबू हो गया और गिरजा की बेहुर्मती देखकर ग़ैज़ व ग़ज़ब में पेच व ताब खाने लगा और क़सम खायी कि अब काबा इब्राहीमी को बर्बाद किए बग़ैर चैन से न बैठूंगा। यह इरादा करके अबरहा भारी फ़ौज़ और हाथियों की एक तायदाद लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हुआ। यह ख़बर तमाम अरब क़बीलों में हवा पर सवार होकर पहुंच गई और तमाम अरब में इससे बेचैनी पैदा हो गई।

सबसे पहले यमन के ही एक अमीर ज़ूनफ़र ने यमन से निकल कर अरब के अलग-अलग क़बीलों के पास क़ासिद भेजे कि मैं अबरहा का मुक़ाबला करना चाहता हूं। आपको चाहिए कि आप इस नेक मक़्सद में मेरा साथ दें। चुनांचे वह आगे बढ़कर अबरहा के मुक़ाबले में आ गया और उससे लड़ा, मगर

हार का मुंह देखना पड़ा और जूनस गिरफ़्तार कर लिया गया। इसके बाद कुछ और मुख़ालफ़तों का मुक़ाबला करता हुआ मुग़म्मस की घाटी तक पहुंचने मे कामियाब हो गया।

मुग़म्मस पहुंच कर अबरहा ने एक हबशी फ़ौजी अफ़सर को, जिसका नाम अस्वद बिन मक़्सूद था, हुक्म दिया कि वह मक्का जाकर छापा मारे। अस्वद मक्का के क़रीब पहुंचा, तो कुरैश और दूसरे क़बीलों के ऊंटों और भेड़-बकरियों के रेवड़ को जो बड़ी तायदाद में चर रहे थे, पकड़ कर अपनी फ़ौज में ले गया। उनमें अब्दुल मुत्तलिब के भी सौ ऊंट शामिल थे।

उस ज़माने में अब्दुल मुत्तलिब कुरैश के सरदार थे। यह हाल देखकर कुरैश, कनाना, हुज़ैल और दूसरे क़बीलों ने आपस में मश्विरा किया कि अबरहा का मुक़ाबला किस तरह किया जाए? मश्विरे के बाद यह तै पाया कि हममें लड़कर जीतने की ताक़त नहीं है, इसलिए हमको मक्का छोड़कर क़रीब की पहाड़ी पर चले जाना चाहिए। अभी ये लोग मक्का ही में थे कि अबरहा की ओर से ख़ब्बाता अल-हुमैरी पहुंचा और मालूम किया कि मक्का का सरदार कौन है? लोगों ने अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम की तरफ़ इशारा किया। ख़ब्बाता ने कहा कि मैं अबरहा की तरफ़ से आया हूं। हमारे बादशाह का यह हुक्म है कि आप तक यह पैग़ाम पहुंचा दूं कि हमारा इरादा आप लोगों को नुक़्सान पहुंचाने का नहीं है और न हम आपसे लड़ने आए हैं। पस अगर तुम्हारा इरादा मुक़ाबला करने और रोकने का हो तो तुम जानो और अगर तुम हमारे इस इरादे में रोक न बनो, तो हमारा बादशाह आपसे मुलाक़ात की ख़्वाहिश रखता है।

अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, हमारा बिल्कुल इरादा नहीं है कि हम तुम्हारे बादशाह से लड़ें और न हममें यह ताक़त है। यह अल्लाह का घर है और उसके बरगज़ीदा नबी इब्राहीम की यादगार, पस अगर अल्लाह इसकी हिफ़ाज़त करना चाहेगा, तो वह कर सकता है और अगर उसको इसकी हिफ़ाज़त नहीं चाहिए, तो हम मुक़ाबला करने के क़ाबिल बिल्कुल नहीं है।

ग़रज़ इस बातचीत के बाद अब्दुल मुत्तलिब अबरहा की फ़ौज में पहुंचे और एक दरबारी की तरफ़ से सिफ़ारिश और तआरुफ़ (परिचय) कराने पर

उसके सामने पेश हुए। अब्दुल मुत्तलिब बहुत शानदार और बहुत ख़ुबसूरत इंसान थे। अबरहा ने देखा तो उनके साथ इज़्ज़त से पेश आया और अपने बराबर उनको जगह दी।

बातचीत शुरू हुई तो उनकी बातों और ख़िताब के अन्दाज़ से अबरहा बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हुआ। बात-चीत के दौरान जब मामले पर बात आई तो अब्दुल मुत्तलिब ने शिकायत की कि आपके सरदार ने मेरे ऊंट गिरफ़्तार कर लिए हैं, इसलिए आप से दरख़्वास्त है कि उनको मेरे हवाले कर दीजिए।

अबरहा ने यह सुना तो कहा, अब्दुल मुत्तलिब! मैं तो तुमको बहुत अक़्लमंद और समझदार समझता था, लेकिन इस मांगने पर सख़्त ताज्जुब है, तुमको मालूम है कि मै काबा के ढाने के लिए आया हूं, जो तुम्हारी निगाह में सबसे ज़्यादा अज़्मत वाला और मुक़द्दस है, लेकिन तुमने उसके बारे में एक जुम्ला भी नहीं कहा और ऐसी छोटी और हक़ीर बात का ज़िक्र कर रहे हो?

अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, बादशाह! ये ऊंट चूंकि मेरी मिल्कियत हैं, इसलिए मैं ने उनके बारे में दरख़्वास्त पेश की और काबा मेरा घर नहीं, ख़ुदा का मुक़द्दस घर है, वह अपने आप इसकी हिफ़ाज़त करने वाला है। मैं कौन हूं जो उसके लिए सिफ़ारिश करूं?

अबरहा कहने लगा, अब इसको मेरे हाथ से कोई नहीं बचा सकता।

अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, आप जानें, रब्बुल-बैत (घर का रब) जाने।'

यहां पहुंच कर बात-चीत का सिलसिला ख़त्म हो गया और अबरहा ने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि अब्दुल मुत्तलिब के ऊंट वापस कर दिए जाएं।

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि अब्दुल मुत्तलिब के साथ बनी बक्र का सरदार यामर बिन नफ़ासा और बनी हुज़ैल का सरदार ख़ुवैलद बिन ख़ासला भी थे। रवाना होने से पहले उन्होंने अबरहा के सामने यह पेशकश की कि अगर काबा के गिराने से बाज़ आ जाएं, तो हम जिज़्या का एक तिहाई माल आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर देंगे, मगर अबरहा ने अपनी ताक़त के नशे में इस पेशकश को ठुकरा दिया और अपने इरादे पर अड़ा रहा, तब ये लोग नाकाम

वापस आ गए।

अ़ब्दुल मुत्तलिब ने वापस आकर कुरैश और अरब के दूसरे क़बीलों को जमा किया और उनको पूरी बातें सुना कर यह मश्विरा दिया कि अब हम सबको क़रीब ही किसी पहाड़ी पर जमा हो जाना चाहिए, ताकि इस मंज़र को अपनी आंख से न देख सकें। जब अह्ले मक्का पहाड़ पर जाने लगे, तो अ़ब्दुल मुत्तलिब की क़ियादत में काबतुल्लाह में हाज़िर हुए और उसकी ज़ंजीर पकड़ कर दरबारे इलाही में यह दुआ की—

ऐ अल्लाह! हम इस बारे में ग़मगीन नहीं हैं कि जब हम अपनी चीज़ों की हिफ़ाज़त कर सकते हैं तो अपनी चीज़ (काबे) की तुझको ज़रूर हिफ़ाज़त करनी चाहिए और तेरी तदबीर पर न सलीब की ताक़त ग़ालिब आ सकती है और न सलीब वालों की कोई तदबीर। हां, अगर तू ही यह चाहता है कि इनको अपने मुक़द्दस घर को ख़राब करने दे, तो फिर हम कौन? जो तेरा जी चाहे सो कर।'

इसके बाद अ़ब्दुल मुत्तलिब और तमाम कुरैश मक्का को ख़ाली करके क़रीब के पहाड़ों पर चले गए और घाटियों में पनाह ले कर हालात का इन्तिज़ार करने लगे।

अगली सुबह को अबरहा ने अपनी फ़ौज मक्का की ओर बढ़ाई। अगली क़तारों में हाथी थे और उसके पीछे भारी फ़ौज। अभी यह फ़ौज मक्का तक नहीं पहुंची थी कि राह ही में अचानक परिंदों के ग़ोल के ग़ोल नमूदार हुए और फ़ौज के सर पर फ़िज़ा में छा गए, उनकी चोंच और उनके पंजों में कंकड़ियां थीं। परिंदों ने इन कंकड़ियों को फ़ौज पर फेंकना शुरू किया। जिस आदमी को कंकड़ियां लगती थीं बदन फोड़ कर बाहर निकल आती थीं और तुरन्त ही अंग गलने-सड़ने लगते थे। नतीजा यह निकला कि थोड़ी देर में सारी फ़ौज तहस-नहस होकर रह गई।

मुहम्मद बिन इसहाक़ कहते हैं कि कुछ लोग इसी हाल में फ़ौज से भाग कर यमन और हबशा पहुंचे और उन्होंने अबरहा और उसकी फ़ौज की तबाही का हाल सुनाया।

मशहूर मुहद्दिस इब्ने अबी हातिम, उबैद बिन उमैर की रिवायत से नक़ल

करते हैं कि जब अबरहा की फ़ौज मक्का की ओर बढ़ी तो तेज हवा चली और समुन्दर की ओर से परिंदों का ज़बरदस्त लश्कर (फ़ौज) परे के परे बांधे हुए है, उनके मुंह और उनके दोनों पंजों में कंकड़ियों थीं। उन्होंने पहले तो आवाज़ की और फिर फ़ौज पर कंकड़ियां मारने लगे, साथ ही तुंद व तेज़ हवा चलने लगी, जिसने पत्थर की इस वर्षा को फ़ौज के लिए बहुत बड़ी मुसीबत बना दिया। चुनांचे जिस आदमी पर ये कंकड़ियां गिरीं, बदन फोड़ कर बाहर निकल आईं और फिर बदन गलने और सड़ने लगा और इस तरह पत्थर के इन टुकड़ों ने सारी फ़ौज को छलनी कर डाला।

कहते हैं कि अबरहा ने फ़ौज को हुक्म दिया कि वह मक्का की तरफ़ बढ़े, जब वह मक्का के क़रीब पहुंची तो हाथियों की क़तार में सबसे पहले उस हाथी ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया, जिस पर अबरहा सवार था। फ़ीलबान अगरचे उसको आंकस पर आंकस लगा रहा था और ज़ुबानी डांट-डपट रहा था, मगर वह किसी तरह आगे बढ़ने का नाम नहीं लेता था, लेकिन जब उसको यमन की ओर चलाते थे तो वह तेज़ी के साथ चलने लगता था। इस हालत में अचानक परिन्दों के ग़ोल ने आ घेरा।

गोया क़ुदरत की तरफ़ से यह अबरहा के लिए आख़िरी तंबीह थी कि वह अब भी समझ जाए कि उसका यह इरादा बातिल और नापाक है और यह हिम्मत असल में अल्लाह की ताक़त को चैलेंज है, इसलिए उसको इससे बाज़ आ जाना चाहिए, लेकिन उस बदबख़्त ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपने किरदार के नतीजे को पहुंच गया।

कुछ रिवायतों में यह भी है कि जब परिन्दों के पत्थरों की बारिश से अबरहा की फ़ौज बर्बाद हो गई तो उसमें कुछ आदमी जो बदहाली के साथ फ़रार होकर यमन पहुंचे थे, उनमें से ख़ुद अबरहा भी इस हालत में पहुंचा कि उसके तमाम अंग गल सड़कर गिर चुके थे और वह सिर्फ़ एक गोश्त का लोथड़ा नज़र आता था।

यानी क़ुदरत ने जिस तरह फ़िरऔन को ग़र्क़ कर देने के बाद उसकी लाश को इसलिए किनारों पर फेंक दिया था कि वह मिस्र के क़िब्तियों और बनी इसराईल दोनों के लिए सबक़ बने, इसी तरह यमन और हब्श के बाशिंदों

के सबक़ के लिए अबरहा को इस हालत में यमन पहुंचाया कि वे यह ग़ौर करें कि जिस आदमी ने अपनी माद्दी ताक़त के घमंड पर अल्लाह की ताक़त को चैलेंज किया था, आज क़ुदरत के ज़बरदस्त हाथ ने उसका यह हाल कर दिया कि— 'फ़-हल अन्तुम मुन्तहून०'

क़ुरआन और अस्हाबे फ़ील

क़ुरआन ने इस वाक़िया के सूरः फ़ील में बयान को अपने मोजज़ों भरे तरीक़े के साथ इस तरह ज़िक्र किया है, गोया ज़ाते अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर अल्लाह तआ़ला का बहुत बड़ा एहसान और उनके एज़ाज़ व इकराम का शानदार 'निशान' है।

तर्जुमा— *(ऐ मुहम्मद!) क्या तूने नहीं देखा, तुझको मालूम नहीं कि तेरे परवरदिगार ने हाथियों वालों के साथ क्या मामला किया? क्या उनके फ़रेब को नाकारा नहीं बना दिया और भेज दिए उन पर परिंदों के झुंड के झुंड, वे फेंक रहे थे उन पर कंकड़ियां, पस कर दिया उनको खाए हुए भूसे की तरह।*

(105 : 1-5)

अस्हाबे फ़ील का यह अजीब व ग़रीब वाक़िया मुहर्रम के महीने में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाइश से चालीस या पचास दिन पहले पेश आया, अरबों में यह वाक़िया इस दर्जा अहमियत व शोहरत रखता था कि उन्होंने इस साल का नाम 'आमुलफ़ील' (हाथियों वाला साल) रख दिया और उसके बाद तारीख़ी वाक़ियों को उसी के हिसाब से गिनने लगे जो ईस्वी सन् के हिसाब से 591 ई० और रूमी सन् के हिसाब से 886 सिकन्दरी के मुताबिक़ होता है।

वाक़िए की हक़ीक़त

हैरत होती है कि इस वाक़िए से मुताल्लिक़ बहुत से लोग अजीब-अजीब क़िस्म की तावील पेश करते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि अगर इस वाक़िए में अल्लाह ने एक बहुत ही कमज़ोर और छोटे परिंदे और बहुत ही छोटी और हक़ीर चीज़ से ऐसा काम न लिया होता जिसके के लिए एक भारी फ़ौज और

लड़ाई का बेपनाह सामान चाहिए था, तो फिर इसके बयान की ज़रूरत ही क्या थी। अरब की दूसरी रिवायतों में और अरब तारिख़दानों में यह वाक़िया इतना ज़्यादा मशहूर व मारूफ़ था कि जब नबी अकरम सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर मक्के की मुबारक ज़िंदगी में सूरः फ़ील नाज़िल हुई तो मुश्रिकों, यहूदियों और ईसाइयों को इस दुश्मनी के बावजूद जो आपकी मुबारक ज़ात से उनको थी, किसी तरफ़ से भी इस सूरः में बयान किए गए वाक़िए के ख़िलाफ़ कोई आवाज़ न उठी कि यह वाक़िया ग़लत है या इसकी असल हक़ीक़त यह नहीं है, बल्कि दूसरी है।

यह भी नहीं कहा जा सकता कि चूंकि यह वाक़िया सिर्फ़ ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ही नहीं बल्कि तमाम अरब ख़ासतौर से क़ुरैश की अज़्मत व इज़्ज़त बढ़ाता था, इसलिए किसी ने उसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द नहीं की, यह बात इसलिए ग़लत है कि जिस वक़्त यह सूरः नाज़िल हुई है, उस वक़्त अरब में मज़हबी फ़िरक़ाबन्दी के एतबार से अरब के अलग-अलग हिस्सों में आमतौर से और नजरान के मशहूर शहर में ख़ासतौर से ईसाई धर्म, मक्का के मुश्रिकों और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दोनों का हरीफ़ व रक़ीब था, इसलिए वे अरबी नज़ाद होने को नज़रअंदाज कर सकते थे, मगर ईसाई धर्म की इस तौहीन को, जो उनके ख़्याल से मक्का के क़ुरैश की इज़्ज़त बढ़ाती थी या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की अज़्मत को एक लम्हे के लिए भी बरदाश्त नहीं कर सकते थे, बल्कि वे और यहूदी दोनों ऐसे वाक़िए का सुनना भी गवारा न करते, जो उनके क़िबला 'सख़रा बैतुल मक़्दिस' के अलावा ऐसी जगह 'काबा' की हज़ारों गुना अज़्मत ज़ाहिर करता है, जिसके क़िबला बनने को वह नफ़रत की निगाह से देखते और एलानिया उसको झुठलाते थे।

बहरहाल तारीख़ की साफ़ और बे-मिलावट गवाही यह साबित कर रही है कि आज के एक ईसाई ने भी इस वाक़िए के ख़िलाफ़ ज़ुबान खोलने की जुर्रत नहीं की और हिजरत के बाद जब आपकी ख़िदमते अक़्दस में नजरान का वफ़्द आया तो वह अपने ख़्याल में इस्लाम के ख़िलाफ़ जिस क़िस्म की नुक्ताचीनियां कर सकता था और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और

क़ुरआन के झुठलाने में जो दलीलें दे सकता था, वे सब उसने पेश किए, लेकिन इस वाक़िए के खिलाफ़ एक हर्फ़ भी ज़ुबान से नहीं निकाला और अगर ऐसा हुआ होता तो जिस तारीख़ ने साढ़े तेरह सौ वर्ष से इन तमाम एतराज़ों को अपने दामन में महफ़ूज़ रखा है, जो मुख़ालिफ़ों की ओर से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, क़ुरआन और इस्लाम पर किए गए हैं, वह कैसे इस एतराज़ को भुला सकती थी।

नोट : मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब स्योहारवी रह० ने यूरोपीय लिखने वालों के अलावा रोशन ख़्याल मुसलमानों की तावीलों के भरपूर जवाब दिए हैं। शौक़ रखने वाले असल किताब से रुजू कर सकते हैं। (मुरत्तिब)

इसलिए तास्सुब से पाक हक़ीक़त पर नज़र रखने वाली निगाह को यह फ़ैसला करना पड़ेगा कि यह वाक़िया अपनी तफ़्सील के साथ जिस तरह अरब रिवायतों और अरब के तारीख़दानों के यहां महफ़ूज़ और मशहूर है, वह क़तई तौर पर सही है और सही न होने की आख़िर कौन-सी वजह है कि सूरः फ़ील के उतरते वक़्त इस वाक़िए को गुज़रे हुए सिर्फ़ 42-43 साल हुए थे और वतनी रिवायतों से सुनने वाले लाखों की तायदाद में तमाम अरब के इलाक़ों में मौजूद थे और किसी ने भी इसकी तावील में ज़ुबान नहीं खोली।

सबक़ और नसीहत

1. मज़हब की तारीख पढ़ने से यह मालूम होता है कि अल्लाह की 'क़ौमों और उम्मतों में अज़ाब देने वाला क़ानून' हिक्मत के तक़ाज़े के तहत दो दौर में बंटा रहा है—

(क) जब तक दीने हक़ की पैरवी करने वाले और अल्लाह के पैग़म्बरों की इत्तिबा करने वालों की तायदाद दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों के मुक़ाबले में इतनी थोड़ी रही है कि आम हालात में वे दुश्मन के मुक़ाबले से माज़ूर रहे हैं, तो इस पूरे दौर में अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़मीन व आसमान यानी चांद-सितारों और ज़मीन व आसमान की चीज़ों के ज़रिए उनकी मदद और हिमायत का सामान होता रहा है और हक़ और सच्चाई से सरकश क़ौमों पर क़ुदरत, बग़ैर वास्ते के सीधे सीधे ज़मीनी व आसमानी अज़ाब नाज़िल करती

रही है, चुनांचे क़ौमे नूह, आद, अस्हाबे ऐका, फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन वग़ैरह क़ौमें, उम्मतें सब इसी क़िस्म के अज़ाब से हलाक व बर्बाद की गईं। यह दौर हज़रत मूसा अलै॰ पर ख़त्म हो जाता है।

(ख) अब हक़ व सदाक़त के जांनिसारों की तायदाद इस दर्जे पर पहुंच गई कि वे अगरचे दुश्मनों के मुक़ाबले में थोड़े भी रहे हों, तब भी अपनी तायदाद की अक्सरियत के लिहाज़ से दुश्मन के ख़िलाफ़ सीना तान कर खड़े होने के क़ाबिल हैं, तो फिर 'अल्लाह की सुन्नत यह रही है कि ख़ुद हक़ के फ़िदाकारों और मुसलमानों को यह हुक्म दिया गया कि लड़ाई के मैदान में निकल कर अल्लाह के दुश्मनों का मुक़ाबला करें और अपनी जान की बाज़ी लगाकर मिल्लते बैज़ा और दीने हक़ की हिमायत के लिए सीने को ढाल बनाएं और साथ ही सच्चे रसूलों के ज़रिए यह वायदा भी दिया जाता रहा कि नतीजे के तौर पर जीत और मदद तुम्हारा ही हिस्सा है, *'वअन्तुमुल अअ्लौ-न इन कुन्तुम मोमिनीन'* और यह नुसरत और फ़त्ह कभी अल्लाह के फ़रिश्तों को जिहाद में साथ देने से पूरी की जाती है और कभी इसकी ज़रूरत नहीं समझी जाती।

ग़रज़ जिन क़ौमों ने भी हक़ व सदाक़त के ज़ाहिर हो जाने और अल्लाह के सच्चे पैग़म्बरों की सच्चाई को जान लेने के बाद अदावत व ग़रूर के रास्ते से, हक़ की तालीम से न सिर्फ़ मुंह मोड़ा, बल्कि उसको मिटाने की नाकाम कोशिश की, तो अल्लाह तआला ने हमेशा उनको 'अमल के बदले' के आसमान पर खींच कर और अलग-अलग क़िस्म के अज़ाब चखा कर ज़िंदगी की किताब से मिटा दिया और अगरचे उनके अज़ाब देने का क़ानून आमतौर से उन्हीं दो दौरों के अन्दर टिका रहा, फिर भी अल्लाह की हिक्मत किसी ख़ास तरीक़े के दायरे में महदूद नहीं है।

2. अल्लाह के काबे के ख़िलाफ़ अस्हाबे फ़ील की लश्करकशी अगरचे उम्मतों के अज़ाब के क़ानून के दूसरे दौर में पेश आई, लेकिन ऐसे हालात और ऐसे ज़माने में पेश आई, जो पहले दौर से मेल खाते हैं, यानी 'फ़तरते वह्य' (वह्य के कट जाने) का ज़माना जिसमें न कोई रसूल है और न कोई नबी और न वक़्त के सच्चे दीन के हामिल ही नज़र आते हैं, और हैं भी तो बिखरे लोग

हैं न कि असरदार जमाअत कि वह काबतुल्लाह की हिफ़ाज़त के लिए सीना तान ले, बल्कि एक दीन की दावत देने वाले मसीही ही इब्राहीमी काबे और तौहीद के मरक़ज को बर्बाद करने पर उतारू नज़र आता है।

और मक्का के मुश्रिक शिर्क व कुफ़्र के बावजूद अगरचे बैतुल्लाह की अज़मत के क़ायल हैं, मगर ऐसी भारी फ़ौज के मुक़ाबले में ठहरने की ताब नहीं रखते, जिसके साथ भारी भरकम देव जैसे हाथी भी हैं और काबे को रब्बे काबा के भरोसे छोड़कर पहाड़ की घाटियों में पनाह ले लेते हैं, तो ऐसी हालत में दो ही शक्लें हो सकती थीं–

एक यह कि अबरहा और उसकी फ़ौज (हाथी वालों) को उम्मतों के अज़ाब देने के क़ानून के पहले दौर के मुताबिक़ हलाक व बर्बाद कर दे, ताकि यह वाक़िया इंसानी क़ानून के लिए सबक़ हासिल करने की वजह बने। चुनांचे हज़रते हक़ की जानिब से यही दूसरी सूरत सामने आई और क़ुदरत के उसके एजाज़ ने 'अस्हाबे फ़ील' (हाथी वालों) पर जो आसमानी अज़ाब नाज़िल किया था, सूरः फील में उसी को बयान किया गया है– *'ज़ालि-क हुवल हक़्क़'* (यही हक़ है) *'व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बिअज़ीज़०* (और वे अल्लाह पर हावी होने वाले नहीं।)

3. यह वाक़िया हज़रत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ दिन पहले पेश आया। यह वह वक़्त था, जबकि कायनात का गोशा-गोशा ख़ुदा-परस्ती और एक अल्लाह होने (तौहीद) के नग़्मों से महरूम हो चुका था। ख़ुदा की भेजी हुई सच्ची तालीम के दावेदार हर जगह मौजूद थे, मगर सच्ची तालीम गुम हो चुकी थी और दीन और मिल्लतों की असल रूप-रेखा और उनकी हक़ीक़ी शक्ल व सूरत को बिगाड़ने और बदलने के मरज़ ने तबाह कर दिया था। हर जगह शिर्क व कुफ़्र का दौर-दौरा था, कहीं बुत परस्ती हो रही थी, तो किसी जगह तारों की पूजा का शोर था, कहीं आग पूजा इबादत का मक़सद थी, तो किसी जगह अनासिर परस्ती (तत्त्व पूजा) दीन का नस्बुलऐन बन चुकी थी, कहीं तसलीस (ईसाइयत) ने जगह पाकर हज़रत ईसा को 'मसीह इब्नुल्लाह' बनाया था, तो किसी गिरोह ने 'उज़ैरुब्नुल्लाह' कह कर मज़हब के नाम का सहारा लिया था तो ग़रज़ सारी कायनात में या ख़ुदा का

इंकार काम कर रहा था और या फिर अस्नाम परस्ती, अनासिर परस्ती, कवाकब परस्ती, जीव-पूजा ने फ़लसफ़ी वाले विचार की आड़ लेकर शिर्क व कुफ़्र को नुमायां किया, इसलिए यहां खुदा परस्ती के अलावा और सब कुछ मौजूद था। अगर कोई चीज़ गुम थी, तो वह सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश ही थी।

इन हालात को देखते हुए हक़ की ग़ैरत का यह फ़ैसला हुआ कि अब वह हिदायत के नूर को रोशन करे और रिसालत का वह सूरज चमके जो किसी ख़ास दुनिया के एक इलाक़े को ही नहीं, बल्कि तमाम दुनिया और सारी कायनात को सीधा रास्ता दिखाए और कायनात परस्ती से हटाकर ख़ुदा परस्ती सिखाए, वह खोए हुए लोगों को सीधा रास्ता दिखाए और भटके हुए गुलामों को हक़ीक़ी मालिक व आक़ा से मिलाए, टूटे हुओं का रिश्ता जोड़े और जाहिलियत की ज़ंजीरों को तोड़े, वह ख़लील (अलैहि०) की दुआ और मसीह (अलैहि०) के नवेद का हासिल हो और इस तौहीद के मर्कज़ 'काबा' को हक़ीक़ी अज़्मत व हुर्मत की दावत देने वाला, जो ख़ुदा-परस्ती के लिए सबसे पुराना और मुक़द्दस घर है और जिसके बनाने और नया करने का शरफ़ इब्राहीम व इस्माईल (अ़लैहिमस्लाम) जैसे पैग़म्बरों को बख़्शा गया। आज इसराईल के ख़ानदान से दावते हक़ की अमानत वापस ले ली गई, क्योंकि उन्होंने ख़ियानत की और अपने बुज़ुर्गों की नसीहत को भुला दिया। 'नाबुदु इला-ह-क व इला-ह आबाइ-क इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हाक़ (2 : 133) आज इस्माईल का ख़ानदान नवाज़ा गया और ख़ुदा की पाक अमानत 'सलालतु इस्माईली' को अ़ता कर दी गई। वक़्त आ रहा है कि रिसालत व नुबूवत का यह चांद बहुत जल्द हिरा के ग़ार से निकले और हक़ीक़त का सूरज बनकर दुनिया पर चमके, उसकी मिल्लत मिल्लते इब्राहीमी कहलाए और दुनिया में ख़ुदा का सबसे पहला घर 'काबा' फिर दुनिया का क़िबला और कायनात का मरकज़ बने।

4. सूरः फ़ील के पढ़ने से दो बातें साफ़ तौर पर समझ में आ जाती हैं—

एक यह कि इस वाक़िए से अल्लाह की तरफ़ से काबतुल्लाह की हुर्मत व अज़्मत की हिफ़ाज़त का सोचा-समझा नतीजा निकलता है।

अब रहा यह मामला कि इस वाक़िए को बयान करने का जो मक़्सद है वह अपने अन्दर क्या भेद रखा है, तो अगरचे ख़ुदा की हिक्मतों का एहाता

करना, फ़ानी इंसान की सलाहियत से बाहर की चीज़ है, फिर भी अगर ध्यान दिया जाए तो दो हिक्मतें नुमायां नज़र आती हैं—

1. यह वाक़िया आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैदाइश के लिए एक ज़बरदस्त 'निशान' की हैसियत रखता है, इसलिए कि क़ुदरत के निज़ाम के उभरे हुए निशान हमें यह पता देते हैं कि इस दुनिया में जब भी कोई बड़ा इंक़िलाब बरपा होता है, तो उसके आने से पहले ज़रूर ऐसी निशानियां ज़ाहिर होती हैं कि जिनको देखकर हक़ीक़त समझने वाले और सबक़ लेने वाले इंसान की निगाह आने वाले इंक़िलाब का अन्दाज़ा कर लेती है और इंसान ही नहीं बल्कि हज़रते हक़ ने जानदारों तक में छोटी-छोटी बातों के एहसास को भी सलाहियत दी है, वह आंधी-पानी के तूफ़ान और भूंचाल जैसे वाक़ियों का पता सिर्फ़ निशानियों में पा लेते और वक़्त से पहले ही अपनी बेचैनी और तक्लीफ़ के एहसास के ज़रिए दूर तक पहुंच रखने वाले इंसानों को इन हक़ीक़तों का इल्म करा देते हैं।

2. इस वाक़िए का ज़िक्र करके अल्लाह ने क़ुरैश को अपना बहुत बड़ा एहसान याद दिलाया है कि वे यह न भूल जाएं कि जिस वक़्त 'काबा' की अज़्मत के क़ायल होने के बावजूद अबरहा (हाथी वाले) के उस मुक़ाबले से आजिज़ रहे थे, जिसमें उसने 'काबा' की बर्बादी का बेड़ा उठाया था, उस वक़्त हमने अपनी कामिल क़ुदरत के 'एजाज़ वाले निशान' से वह कर दिखाया कि दुश्मन की शरारत भरी तदबीर और उसका बुरा इरादा दोनों ख़ाक में मिल कर रह गए।

क्या तुमने इस सबक़ भरे वाक़िए से यह सबक़ हासिल नहीं किया कि यह सब कुछ तुम्हारी ख़ुशनूदी के लिए नहीं था, जबकि तुम शिर्क की अंधेरियों में डूबे हुए और कुफ़्र की गन्दगियों में लत-पत थे, बल्कि काबे की उस अज़मत को बाक़ी रखने के लिए था, जिसकी तामीर बूढ़े पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम और जवां साल इस्माईल के मुक़द्दस हाथों से हुई और जिसके बारे में उन्होंने यह फ़रमाया—

तर्जुमा—*ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने बसाया है अपनी कुछ औलाद को बिन खेती की सरज़मीन में, तेरे बाइज़्ज़त और बाहुर्मत घर के पास।* (14 : 37)

समझो और मामले की हक़ीक़त पर ग़ौर करो और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुख़ालफ़त से बाज़ आ जाओ।

इस बात की ताईद सूरः फ़ील से मिली हुई सूरः क़ुरैश से भी होती है, इसलिए कि इस सूरः में क़ुरैश को यह तवज्जोह दिलाई गई है या इन पर अपने उस एहसान को ज़ाहिर किया गया है कि अरब क़बीलों की आपसी बात-बात पर लड़ाइयों और मामूली-मामूली मामले पर झगड़ों के बावजूद वे हरमे मक्का में किस तरह मामून व महफ़ूज़ (सुरक्षित) हैं और न सिर्फ़ यह बल्कि उसकी ख़िदमत से मुताल्लिक़ होने की वजह से हरम से बाहर सर्दी और गर्मी, दो मौसमों में अपने महबूब तिजारती सफ़रों में शाम और यमन तक बिना कोई ख़ौफ़ और ख़तरा महसूस किए आते जाते है और कोई आंख उठाकर भी उनकी ओर देखने नहीं पाता।

तो क्या वे इस एहसान के शुक्रगुज़ार नहीं होते और हरम और काबा की सभी अज़मत को सरबुलन्द करने के लिए अल्लाह का आख़िरी पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुमको जिस सच्चाई की ओर बुलाता है, उस पर लपक पड़ने को तैयार नहीं होते, उनको यह बात हरगिज़ ज़ेब (शोभा) नहीं देती।

तर्जुमा—*पस उनको चाहिए कि वे उसके घर के परवरदिगार की सच्ची परस्तिश करें कि जिसने उनकी भूख के लिए रोज़ी का सामान जुटाया और उनको ख़ौफ़ और ख़तरे से मामून व महफ़ूज़ कर दिया।* (106 : 3-4)

5. अबरहा मज़हबी तौर पर ईसाई था और इसलिए वह बैतुल्लाह (काबा) की अज़्मत को किसी तरह बरदाश्त नहीं कर सकता था और उसका वजूद गोया एक ख़ार था जो कांटे की तरह उसके दिल में चुभ रहा था। उसने सोचा हि 'काबा' मामूली पत्थरों की एक सादा इमारत है, अगर इसके मुक़ाबले में एक ऐसी ख़ुबसूरत और बेनज़ीर इमारत कलीसा (गिरजा) की शक्ल में तैयार की जाए जो क़ीमती पत्थरों और मोती-जवाहरात से सजी हो, तो इस तरह मैं सारे अरब की तवज्जोह 'काबा' से हटा सकूंगा और नयी इबादतगाह को पूरी दुनिया की तवज्जोह की जगह बना सकूंगा।

यह सोच कर एक तरफ़ उसने यमन की राजधानी सनआ में एक बेनज़ीर

गिरजा 'अल-क़लीस' बनवाया और दूसरी तरफ़ एक मामूली वाक़िए को हीला बना कर काबा की बरबादी का तहैया किया। नतीजा जो कुछ हुआ, तफ़्सील से ज़िक्र किया गया, लेकिन इस वाक़िए में इस ओर इशारा मालूम होता है कि दुनिया की तमाम क़ौमों में सबसे ज़्यादा ईसाइयों को ही इस बैतुल्लाह 'काबा' के साथ अ़दावत रहेगी और वे अपने सभ्य या असभ्य हर दौर में उसके ख़िलाफ़ अपनी अ़दावत ज़ाहिर करते रहेंगे और हमेशा तौहीद के इस मर्कज़ के पीछे पड़े रहेंगे।

चुनांचे माज़ी (भूतकाल) की तारीख़ इस पर गवाह है कि जब कभी ईसाइयों को इसका मौक़ा मिला उन्होंने अ़मली तौर पर अपनी अ़दावत ज़ाहिर किए बग़ैर न छोड़ा और अगरचे अल्लाह तआ़ला ने इस सिलसिले में हमेशा उनके इरादों को नाकाम रखा, मगर वे बहरहाल अपने दिली बुग़्ज़ व अ़दावत का सबूत दिए बिना न रहे।

6. काबा 'बैतुल्लाह' यानी 'ख़ुदा का घर' कहलाता है, इसका यह मतलब नहीं कि अल-आयाज़ुबिल्लाह' (ख़ुदा की पनाह) अल्लाह किसी घर में रहता है या वह घर का मुहताज है, बल्कि सच तो यह है कि उसने अपनी ख़ालिस इबादत की ग़रज़ से, दूर-दूर के इलाक़े तक के मुसलमानों और सच्चे इबादत गुज़ारों के लिए काबा को मर्कज़ व मेहवर बनाया है और यह इसलिए कि अल्लाह दिशाओं से परे और पाक है और इंसान अपने काम में दिशाओं में से किसी दिशा का मुहताज, तो बहुत ज़रूरी था कि तमाम कायनात के तौहीद की पैरवी करने वाले और इबादत करने वाले रब्बुल आ़लमीन की इबादत और उनकी मिल्ली और दीनी ज़िंदगी के लिए एक मर्कज़ हो, ताकि वे बिखराव और टूट-फूट से बचे रहें और इज्तिमाई एका का सबक़ सीखें।

इसलिए उनके लिए वह मुक़द्दस इमारत 'शआ़इरुल्लाह' क़रार दे दी गई, जिसको बुज़ुर्ग नबी हज़रत इब्राहीम और उनके मुक़द्दस बेटे इस्माईल ने दुनिया में सबसे पहले सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया था और जो तौहीद के एलान की सबसे पुरानी यादगार थी।

पस किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं कि वह काबा की इसलिए अ़ज़्मत करे कि वह 'सनम' (मूर्ति) है या अपने आप में पूजनीय है, इसलिए

कि जो ऐसा समझेगा वह मुसलमान नहीं बल्कि मुश्रिक कहलाएगा बल्कि उसकी ज़ियारत इसलिए है कि वह 'शआइरुल्लाह' (अल्लाह की निशानी) में से है और है तौहीद का मर्कज़।

फ़ातबिरु या उलिल अब्सार

हज़रत ईसा عليه السلام

क़ुरआन और हज़रत ईसा عليه السلام

जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ातमुल अंबिया वर्रुसुल हैं, उसी तरह ईसा अलैहिस्सलाम ख़ातमुल अंबिया बनी इसराईल हैं और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा عليه السلام के दर्मियान कोई दूसरा नबी नहीं भेजा गया। दर्मियान का यह ज़माना वह्य के रुक जाने का ज़माना रहा है। हज़रत ईसा عليه السلام मुजद्दिद अंबिया-ए-बनी इसराईल हैं, क्योंकि क़ानूने रब्बानी (तौरात) के बाद बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत के लिए इंजील से ज़्यादा मर्तबे वाली कोई किताब नाज़िल नहीं हुई जिससे असल में तौरात के क़ानून की तक्मील हुई है। यह भी कि हज़रत ईसा عليه السلام सरवरे कायनात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबसे बड़े मुनाद (पुकारने वाले) और मुबश्शिर (ख़ुशख़बरी देने वाले) हैं।

क़ुरआन ने हज़रत ईसा عليه السلام के हालात को बड़ी तफ़्सील से बयान किया है और उनकी पाक ज़िंदगी को तम्हीद के तौर पर और उनकी मां हज़रत मरयम عليها السلام की ज़िंदगी के वाक़ियों को रोशन किया है ताकि क़ुरआन की याददहानी का मक़्सद 'बिअय्यामिल्लाह' पूरा हो। हज़रत ईसा عليه السلام को क़ुरआन में किसी जगह 'मसीह' और 'अब्दुल्लाह' के लक़ब से और किसी जगह 'कुन्नियत' (उपनाम) 'इब्ने मरयम' के नाम से ज़ाहिर करते हुए याद किया गया है।

इमरान व हन्ना

हज़रत ज़करीया और हज़रत यह्या के हालात में गुज़र चुका है कि बनी इसराईल में इमरान एक इबादतगुज़ार और दीनदार शख़्स थे और अपनी इबादत और दीनदारी की वजह से नमाज़ की इमामत भी उन्हीं के सुपुर्द थी और उनकी बीवी हन्ना भी बहुत पारसा और आबिदा थीं। इमरान औलाद वाले न थे और उनकी बीवी हन्ना औलाद की बहुत ज़्यादा तमन्ना करती थीं।

कहते हैं कि एक बार हन्ना ने देखा कि एक परिन्दा अपने बच्चे को खिला रहा है। यह देख कर औलाद की तमन्ना ने बहुत जोश मारा और बेचैनी की हालत में अल्लाह के दरबार में दुआ के लिए हाथ उठा दिए और अर्ज़ किया, परवरदिगार! इसी तरह मुझको भी औलाद अता कर कि वह हमारी आंखों का नूर और दिल का सुरूर बने। दिल से निकली हुई दुआ मक़्बूल हुई और हन्ना ने कुछ दिनों बाद महसूस किया कि वह हामिला (गर्भवती) हैं। क़ुरआन में यह वाक़िया इस तरह बयान हुआ है—

तर्जुमा— *'जब इमरान की बीवी ने कहा, ऐ अल्लाह! मैंने नज़र मान ली है कि मेरे पेट में जो बच्चा है, वह तेरी राह में आज़ाद है, पस तू उसको मेरी ओर से क़ुबूल फ़रमा, बेशक तू सुनने वाला और जानने वाला है। फिर जब उसने जना तो कहने लगी, परवरदिगार! मेरे लड़की पैदा हुई है और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उसने जना है, लड़का और लड़की बराबर नहीं हैं (यानी हैकल की ख़िदमत लड़की नहीं कर सकती, लड़का कर सकता है) और मैं ने तो उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसको (औलाद को) शैतान रजीम के फ़िल्ने से तेरी पनाह में देती हूं।'* (3 : 36)

हज़रत मरयम जब सूझ-बूझ वाली उम्र को पहुंचीं तो सब की रायों से 'यह सईद अमानत' हज़रत ज़करीया ﷺ के सुपुर्द कर दी गई। तो हज़रत ज़करीया ने हज़रत मरयम के सिनफ़ी (लैंगिक) एहतरामों का लिहाज़ करते हुए हैकल के क़रीब एक हुजरे को उनके लिए ख़ास कर दिया, ताकि वे दिन में वहां रहकर अल्लाह की इबादत करती रहें और जब रात आती तो उनको अपने मकान पर उनकी ख़ाला 'अल यशाअ्' के पास ले जाते और वह वहीं रात गुज़ारतीं।

हज़रत मरयम का ज़ुह्द व तक़्वा (संयम व ईश-भय)

हज़रत मरयम दिन व रात अल्लाह की इबादत में लगी रहतीं और जब हैकल की ख़िदमत के लिए उनकी बारी आती, तो उसको भी अच्छी तरह अंजाम देती थीं, यहां तक उनका ज़ुह्द व तक़्वा बनी इसराईल में एक कहावत बन गया। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के ज़रिए उनको यह ख़ुशख़बरी सुनाई—

तर्जुमा— *'(ऐ पैग़म्बर! वह वक़्त याद कीजिए) जब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तआला ने तुझको बुज़ुर्गी दी और पाक किया और दुनिया की औरतों पर तुझको बरगज़ीदा किया। ऐ मरयम! अपने पालनहार के सामने झुक जा और सज्दा कर और नमाज़ पढ़ने वालों के साथ नमाज़ अदा कर।'* (3 : 42-43)

ऊपर की आयत में हज़रत मरयम ﷺ की फ़ज़ीलत ने उनकी ज़ात से मुतल्लिक़ कई मस्अले बहस में पैदा कर दिए हैं, जैसे—

1. क्या औरत नबी हो सकती है?
2. क्या हज़रत मरयम नबी थीं?
3. अगर नबी नहीं थीं तो फ़ज़ीलत की आयत का क्या मतलब है?

(हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने) इन तीनों सवालों पर तफ़्सीली बहस के बाद इस ख़्याल का इज़्हार किया है कि—

1. औरत नबी हो सकती है और
2. हज़रत मरयम ﷺ का नबी होना क़तई तौर पर सही है,
3. इसलिए फ़ज़ीलत की आयत का मतलब भी साफ़ हो जाता है, वह यह कि हज़रत मरयम ﷺ को कायनात की तमाम औरतों पर फ़ज़ीलत हासिल है। जो औरतें नबी नहीं हैं, उन पर इसलिए कि मरयम नबी हैं और जो औरतें नबी हैं (जैसे हज़रत हव्वा, हज़रत सारा, हज़रत हाजरा वग़ैरह) इन पर इसलिए कि वे इन क़ुरआनी बुनियादों की वजह से, जो उनकी फ़ज़ीलतों और कमालों से ताल्लुक़ रखती हैं, बाक़ी नबी औरतों पर बरतरी रखती हैं।

(तफ़्सील के ख़्वाहिशमंद असल किताब की तरफ़ रुजू करें —मुरत्तिब)

हज़रत मसीह ﷺ के हालात

यहूदी अपनी मज़्हबी रिवायतों की बुनियाद पर जिन उलुलअज़्म पैग़म्बरों के आने के इंतिज़ार में थे, उनमें मसीह ﷺ भी थे और हज़रत यह्या ﷺ ने उनको बताया था कि वह न एलिया हैं, न वह नबी और न मसीह, बल्कि मसीह को भेजे जाने को बताने वाले और मुबश्शिर हैं। कुरआन ने भी हज़रत ज़करीया और हज़रत यह्या के वाक़िए को हज़रत ईसा ﷺ की बशारत देने वाला और पता देने वाला बताया है, जैसा कि सूरः बक़रः 2 : 37 से वाज़ेह है। कुरआन ने हज़रत ईसा की पैदाइश के वाक़िए को इस तरह बयान किया है—

तर्जुमा—'(वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है,) जब फ़रिश्तों ने मरयम से कहा, ऐ मरयम! अल्लाह तुझको अपने कलिमे की बशारत देता है, उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा। वह दुनिया व आख़िरत में वजाहत, रौब व दबदबा वाला और हमारे क़रीबों में से होगा और वह गोद में और दूध पीने के ज़माने में लोगों से कलाम करेगा और वह नेकों में से होगा।'

मरयम ने कहा, 'मेरे लड़का कैसे हो सकता है जबकि मुझको किसी मर्द ने हाथ तक न लगाया?'

फ़रिश्ते ने कहा, अल्लाह तआला जो चाहता है, उसी तरह पैदा कर देता है। वह जब किसी चीज़ के लिए हुक्म करता है तो कह देता है, 'हो जा' और वह हो जाती है और अल्लाह उसको किताब व हिक्मत और तौरात व इंजील का इल्म अता करेगा और वह बनी इसराईल की तरफ़ अल्लाह का रसूल होगा।' (3 : 45-48)

तर्जुमा—*'और ऐ पैग़म्बर! किताब में मरयम का वाक़िया ज़िक्र करो, उस वक़्त का ज़िक्र, जब वह एक जगह पूरब की तरफ़ थी, अपने घर के आदमियों से अलग हुई, फिर उसने उन लोगों की तरफ़ से परदा कर लिया। पस हमने उसकी तरफ़ अपना फ़रिश्ता भेजा और वह भले-चंगे आदमी के रूप में नुमायां हो गया। मरयम उसे देख कर घबरा गई, वह बोली, अगर तू नेक आदमी है, तो मैं रहमान ख़ुदा के नाम पर तुझसे पनाह मांगती हूं।'*

फ़रिश्ते ने कहा, मैं तेरे परवरदिगार का भेजा हुआ हूं और इसलिए

नमूदार हुआ हूं कि तुझे एक पाक फ़रज़ंद (बेटा) दे दूं।'

मरयम बोली, 'यह कैसे हो सकता है कि मेरे लड़का हो, हालांकि किसी मर्द ने मुझे छुआ नहीं और न मैं बद-चलन हूं?'

फ़रिश्ते ने कहा, होगा ऐसा ही। तेरे परवर्दिगार ने फ़रमाया, यह मेरे लिए कुछ मुश्किल नहीं। वह कहता है, यह इसलिए होगा कि उस (मसीह) को लोगों के लिए निशान बना दूं और मेरी रहमत उसमें ज़ाहिर हो और यह ऐसी ही बात है, जिसका होना तै हो चुका है' (19 : 16-21)

जिब्रील अमीन ने मरयम ﷺ को यह ख़ुशख़बरी सुना कर उनके गरेबान में फूंक दिया और इस तरह अल्लाह तआला का कलिमा उन तक पहुंच गया। अल्लाह तआला ने इसकी तफ़्सील को सूरः अंबिया, सूराः तहरीम और सूरः मरयम में ज़िक्र फ़रमाया है।

तर्जुमा—*'और उस औरत (मरयम) का मामला, जिसने अपनी पाकदामनी को क़ायम रखा, फिर हमने उसमें अपनी 'रूह' को फूंक दिया और उसको और उस लड़के को जहानवालों के लिए 'निशान' ठहराया है।'* (21 : 91)

तर्जुमा—*'और इमरान की बेटी मरयम कि जिसने अपनी अस्मत को बरक़रार रखा, पर हमने उसमें अपनी रूह को फूंक दिया।'* (66 : 12)

तर्जुमा—*'फिर उस होने वाले फ़रज़ंद का हमल ठहर गया। (अपनी हालत छुपाने के लिए) लोगों से अलग होकर दूर चली गई, फिर उसे दर्दज़ेह (बच्चा जनने के वक़्त का दर्द) का इज़्तिराब खजूर के एक पेड़ के नीचे ले गया। (वह उसके तने के सहारे बैठ गई) उसने कहा, काश! मैं इससे पहले मर चुकी होती। मेरी हस्ती को लोग भूल गए होते, उस वक़्त (एक पुकारने वाले फ़रिश्ते ने) उसे नीचे से पुकारा, ग़मगीन न हो, तेरे परवरदिगार ने तेरे तले नहर जारी कर दी है और खजूर के पेड़ का तना पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला, ताज़ा और पके हुए फलों के ख़ोशे तुझ पर गिरने लगेंगे, खा पी (और अपने बच्चे के नज़ारे से) आंखें ठंडी कर, फिर अगर कोई आदमी नज़र आए (पूछ-गछ करने लगे) तो (इशारे से) कह दे, मैंने ख़ुदा-ए-रहमान के हुज़ूर रोज़े की मन्नत मान रखी है, मैं आज किसी आदमी से बात-चीत नहीं कर सकती।*

फिर ऐसा हुआ कि वह लड़के को साथ लेकर अपनी क़ौम के पास आई, लड़का उसकी गोद में था। लोग (देखते ही) बोल उठे, 'मरयम! तूने अजीब

ही बात कर दिखाई और इतनी बड़ी तोहमत का काम कर गुज़री। ऐ हारून की बहन! न तो तेरा बाप बुरा आदमी था, न तेरी मां बदचलन थी, (तू यह क्या कर बैठी?) इस पर मरयम ने लड़के की तरफ़ इशारा किया (कि यह तुम्हें बतला देगा कि हक़ीक़त क्या है?) लोगों ने कहा, भला हम इससे क्या बात करें जो अभी गोद में बैठने वाला दूध पीता बच्चा है।'

मगर लड़का बोल उठा, मैं अल्लाह का बन्दा हूं। उसने मुझे किताब दी और नबी बनाया, उसने मुझे बाबरकत किया, भले ही मैं किसी जगह हूं। उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक ज़िंदा रहूं, यही मेरा शिआर हो। उसने मुझे अपनी मां का ख़िदमत गुज़ार बनाया, ऐसा नहीं कि ख़ुदसर और नाफ़रमान होता, मुझ पर उसकी तरफ़ से सलामती का पैग़ाम है। जिस दिन पैदा हुआ, जिस दिन मरूंगा और जिस दिन फिर ज़िंदा उठाया जाऊंगा। (19 : 22-23)

नोट : कहते हैं कि हारून मरयम के ख़ानदान में एक आबिद व ज़ाहिद इंसान और बहुत नेक नफ़स मशहूर था। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

क़ौम ने जब एक दूध पीते बच्चे की ज़ुबान से हिक्मत भरी बातें सुनीं तो हैरत में पड़ गई और उसको यक़ीन हो गया कि मरयम का दामन बिला शुब्हा हर क़िस्म की बुराई और खोट से पाक है और इस बच्चे की पैदाइश का मामला यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ से एक 'निशान' है।

यह ख़बर ऐसी नहीं थी कि छिपी रह जाती, क़रीब और दूर सब जगह इस हैरत में डाल देने वाले वाक़िए और ईसा ﷺ की मोजज़े वाली विलादत के चर्चे होने लगे और इंसानी तबयीतों ने इस मुक़द्दस हस्ती से मुताल्लिक़ शुरू ही से अलग-अलग करवटें बदलनी शुरू कर दीं। अस्हाबे ख़ैर ने इसके वजूद को अगर सआदत व बरकत का चांद समझा तो शरीर लोगों ने उसकी हस्ती को अपने लिए बुरा फ़ाल जाना और बुग़्ज़ व हसद के शोलों ने अन्दर ही अन्दर उनकी फ़ितरी इस्तेदाद को खाना शुरू कर दिया।

ग़रज़ इसी टकराने वाली फ़िज़ा के अन्दर अल्लाह तआला अपनी निगरानी में मुक़द्दस बच्चे की तर्बियत और हिफ़ाज़त करता रहा, ताकि उसके हाथों बनी इसराईल के मुर्दा दिलों को ताज़ा ज़िंदगी बख़्शे और उनकी

रूहानियत के सूखे पेड़ को एक बार फिर फलदार बनाए।

तर्जुमा– *'और हमने ईसा बिन मरयम और उसकी मां (मरयम) को अपनी कुदरत का निशान बना दिया और उन दोनों का एक ऊंचा मुक़ाम (बैतुल्लह्म) पर ठिकाना बनाया, जो ठहरने के क़ाबिल और चश्मे वाला है।'* (23 : 50)

कुरआन मजीद ने हज़रत ईसा ﷺ के बचपन के हालात में से सिर्फ़ इसी अहम वाक़िए का ज़िक्र किया है। बाक़ी बचपन के दूसरे हालात को, जिनका ज़िक्र कुरआन के वाज़ और नसीहत के ख़ास मक्सद से ताल्लुक़ नहीं रखता था, नज़रंदाज़ कर दिया।

मुबारक हुलिया

मेराज की हदीस (बुख़ारी शरीफ़) के मुताबिक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी मुलाक़ात हज़रत ईसा से हुई तो मैंने उनको दर्मियानी क़द वाला सुर्ख़ व सफ़ेद पाया। बदन ऐसा साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ था, मालूम होता था अभी हम्माम से नहा कर आए हैं और कुछ रिवायतों में है कि आपके बाल कंधे तक लटके हुए थे और कुछ हदीसों में है कि रंग खिलता हुआ गेहुवां था।

रसूल बनाए गए

यहूदियों के अक़ीदे का और अमली ज़िंदगी का मुकम्मल नक़्शा तो तौरात में मौजूद है, लेकिन इन हक़ीक़तों और इनके नतीजों को कुरआन में भी इस तरह बयान किया गया है–

तर्जुमा– *'और बेशक हमने मूसा को किताब (तौरात) अता की और उसके बाद हम (तुम में) पैग़म्बर भेजते रहे और हमने ईसा बिन मरयम को वाज़ेह मोजज़े देकर भेजा और हमने उसको रूहे पाक (जिब्रील) के ज़रिए कूवत व ताईद अता की। क्या जब तुम्हारे पास (ख़ुदा का) पैग़म्बर अपने हुक्म लेकर आया, जिन पर अमल करने को तुम्हारा दिल नहीं चाहता था, तो तुमने गुरूर को शेवा (नहीं) बना लिया? पस (पैग़म्बरों की) एक जमाअत को झुठलाते हो*

तो एक जमाअत को क़त्ल कर देते हो और कहते हो कि हमारे दिल (हक़ क़ुबूल करने के लिए) गिलाफ़ में हैं। (यह नहीं) बल्कि इनके कुफ़्र करने पर ख़ुदा ने इनको मलऊन कर दिया है, पस बहुत थोड़े से हैं, जो ईमान ले आए हैं। (2 : 87-88)

तर्जुमा—'और (ऐ ईसा!) जब हमने बनी इसराईल (की पकड़ और क़त्ल के इरादे) को तुझ से बाज़ रखा, उस वक़्त जबकि तू उनके पास खुले मोजज़े लेकर आया, तो कहा बनी इसराईल में से इंकार करनेवालों ने, यह कुछ नहीं है, मगर खुला जादू है।' (5 : 110)

तर्जुमा—'और मैं तस्दीक़ करने वाला हूं तौरात की जो मेरे सामने है और (इसलिए आया हूं) ताकि तुम्हारे लिए कुछ चीज़ें हलाल कर दूं। जो तुम्हारे टेढ़ेपन की वजह से) तुम पर हराम कर दी गई थीं और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की निशानी लेकर आया हूं, पस अल्लाह का ख़ौफ़ करो और मेरी पैरवी करो। बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है। पस उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है। पस जबकि ईसा ने उनसे कुफ़्र महसूस किया, तो फ़रमाया, 'अल्लाह के लिए कौन मेरा मददगार है', तो शागिर्दों ने जवाब दिया, हम हैं अल्लाह के (दीन के) मददगार।' (3 : 50-52)

तर्जुमा—फिर उनके बाद (नूह व इब्राहीम के बाद) हमने अपने रसूल भेजे और उनके बाद ईसा बिन मरयम को रसूल बना कर भेजा और उसको किताब (इंजील) अता की। (57 : 27)

तर्जुमा—(वह वक़्त याद करने के लायक़ है) जब अल्लाह तआला क़ियामत के दिन कहेगा, 'ऐ ईसा बिन मरयम! मेरी उस नेमत को याद कर, जो मेरी ओर से तुझ पर और तेरी मां पर उतरी, जबकि मैंने रूहुल कुद्स (जिब्रील अलै०) के ज़रिए तेरी ताईद की कि तू कलाम करता था मां की गोद में और बुढ़ापे में और जबकि मैंने तुझको सिखाई किताब, हिक्मत, तौरात और इंजील।' (5 : 110)

तर्जुमा—और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ भेजा हुआ अल्लाह का पैग़म्बर हूं, तस्दीक़ करने वाला हूं तौरात की जो मेरे सामने है और बशारत सुनाने वाला हूं एक पैग़म्बर की, जो मेरे बाद आएगा। उसका नाम अहमद है। (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' (61 : 6)

खुली निशानियां

क़ुरआन के क़िस्से

हर मौक़े पर मोजज़ों की बहस में गुज़र चुका है कि हक़ और सच्चाई के मानने और अपनाने में इसांनी फ़ितरत हमेशा दो तरीक़ों से मानूस रही है—

एक यह कि 'हक़ की दावत देने वाले की हक़परस्ती और सच्चाई, दलीलों की ताक़त और उनकी रोशनी के ज़रिए साबित और वाज़ेह हो जाए, और दूसरा तरीक़ा यह कि दलीलों के साथ-साथ अल्लाह की ओर से उसके सच होने की ताईद में, क़ुदरत के आम क़ानून से अलग, अस्बाब व वसाइल के बग़ैर और इल्म व फ़न हासिल किए बग़ैर उसके हाथ पर अजीब मामलों का मुज़ाहरा इस तरह हो कि आम व ख़ास उसके मुक़ाबले में आजिज़ और पिछड़ जाएं और उनके लिए अस्बाब व वसाइल के बग़ैर उन मामलों की ईजाद नामुम्किन हो।

पहले तरीक़े के साथ यह दूसरा तरीक़ा इंसान की अक़्ल व फ़िक्र और उसकी नफ़्सियाती कैफ़ियतों में ऐसा इंक़िलाब पैदा कर देता है कि उनका विजदान यह मानने पर मजबूर हो जाता है कि हक़ की दवत देने वाले (नबी, पैग़म्बर) का यह अमल असल में ख़ुद उसका अमल नहीं है, बल्कि उसके साथ ख़ुदा की ताक़त काम कर रही है और बेशक यह उसके सच्चे होने की एक और दलील है। चुनांचे क़ुरआन मजीद में आयत—

तर्जुमा— *'और न फेंका था तूने जिस वक़्त कि फेंका था, लेकिन अल्लाह ने फेंका था।'* (8 : 17)

में यही हक़ीक़त ज़ाहिर करनी मक़्सूद है, मगर इन हर दो तरीक़ों में से उन सोचने-समझने वालों पर जो सोचने-समझने की ताक़त में ऊंचा मक़ाम रखते है, पहला तरीक़ा ज़्यादा असरदार साबित होता है और वे दूसरे तरीक़े को पहले तरीक़े की ताईद व तक़्वियत की हैसियत से क़ुबूल करते और हक़ीक़ी दावत देने वाले (नबी व पैग़म्बर) की नुबूवत व रिसालत के दावे के सच होने का और ज़्यादा अमली सबूत समझ कर उस पर ईमान ले आते हैं।

और इन सोचने-समझने वालों के ख़िलाफ़ क़ूवत व इक़्तिदार वाले और उनकी ज़ेहनियत से मुतास्सिर आम इंसानी दिल तस्दीक़ के दूसरे तरीक़े से ज़्यादा मुतास्सिर होते और नबी और पैग़म्बर के मोजज़े भरे कामों को कायनात की ताक़त व क़ूवत के दायरे से ऊपर वाली हस्ती का इरादा व क़ूवत यक़ीन करने पर मजबूर हो जाते हैं और उन मामलों को 'ख़ुदाई निशान', समझ कर हक़ व सदाक़त की दावत के सामने सर झुका देते हैं।

मुख़्तसर यह कि अल्लाह की किताब और उसके जुम्लों पर आयत और आयतों के इतलाक़ से तो कुरआन की कोई लम्बी सूरः ही ख़ाली होगी, तमाम कुरआन में जगह-जगह इस ज़्यादती के साथ उसका इस्तेमाल हुआ है कि उसकी सूची मुस्तक़िल मौज़ू बन सकती है।

इसी तरह 'खुली निशानियों' से मुराद अगरचे अल्लाह की किताब (कुरआन, तौरात, ज़बूर, इंजील) और उनकी आयतों को ही समझा गया है, मगर किसी-किसी जगह उसको मोजज़ों के लिए भी इस्तेमाल किया गया है।

तवज्जोह के क़ाबिल बात और मोजज़ों की हक़ीक़त

नबी और रसूल के भेजे जाने का मक़सद कायनात की रुश्द व हिदायत और दीन व दुनिया की फ़लाह व ख़ैर की रहनुमाई है और वह अल्लाह की ओर से आई वह्य की रोशनी में इस मंसबी फ़र्ज़ को अंजाम देता और इल्म व बुरहान और हक़ की हुज्जत के ज़रिए सच्चाई का रास्ता दिखाता है। वह यह दावा नहीं करता कि फ़ितरत (प्रकृति) और फ़ितरत से परे के मामलों में हिस्सा लेना भी उनका मंसबी काम है, बल्कि वह बार-बार यह एलान करता है कि मैं ख़ुदा की ओर से ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला और अल्लाह की ओर बुलाने वाला बनकर आया हूं, मैं इंसान हूं और ख़ुदा का नबी, इससे ज़्यादा और कुछ नही हूं, तो फिर उसके सच्चाई के इस दावे के इम्तिहान और परख के लिए उसकी तालीम, उसकी तर्बियत और उसकी शख़्सियत का बहस में आ जाना यक़ीनी तौर पर माक़ूल, लेकिन उससे फितरत से परे और आदत के ख़िलाफ अजीब व ग़रीब चीज़ों की मांग अक़्ल के खिलाफ़ और बेजोड़ बात मालूम होती है और यह नज़र आता है, जैसे किसी अच्छे तबीब (हकीम,

डाक्टर) की हकीमी के दावे पर उससे यह मांग की जाए कि वह जादुई खटके की एक उम्दा अलमारी या लकड़ी का एक अजीब क़िस्म का खिलौना बना कर दिखाए। तबीब ने यह दावा नहीं किया था कि वह माहिर लोहार या बढ़ई है, बल्कि उसका दावा तो जिस्मानी मरज़ों के इलाज का है। इसी तरह पैग़म्बरे ख़ुदा का यह दावा नहीं होता कि वह ख़ुदा की तरह कायनात पर हर क़िस्म के इस्तेमाल का मालिक व क़ादिर है, बल्कि उसका दावा तो यह है कि वह तमाम रूहानी मरज़ों के लिए कामिल तबीब और माहिर हकीम है।

बहरहाल 'अल्लाह की सुन्नत' यह जारी रही है कि जब किसी क़ौमी हिदायत या तमाम इंसानी कायनात की कामियाबी के लिए नबी और पैग़म्बर भेजा जाता है, तो उसको अल्लाह की तरफ़ से मज़बूत दलीलों और अल्लाह की आयतों (मोजज़ों) से यानी दोनों से नवाज़ा जाता है, वह एक ओर अल्लाह की वह्य के ज़रिए कायनात को मआश व मआद (खाने-पीने) से मुताल्लिक़ करने-न करने के हुक्मों से नवाज़ा जाता है और बेहतरीन दस्तूर व निज़ाम पेश करता है तो दूसरी तरफ़, अल्लाह की मस्लहत के मुताबिक़ 'ख़ुदाई निशानों' का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) करके अपने सच्चे होने और अल्लाह की तरफ़ से होने का सबूत देता है, साथ ही हर एक पैग़म्बर को इसी तरह के मोजज़े और निशानियां दी जाती हैं, जो उस ज़माने की इल्मी तरक़्क़ियों या क़ौमी और मुल्की ख़ुसूसियतों के मुनासिब होने के बावजूद टकराने वालों को मजबूर करें और पछाड़ें और कोई उनके मुक़ाबले में आने कि हिम्मत न कर सके और अगर तास्सुब और ज़िद दर्मियान में रोक न बनें तो अपनी कोशिशों से की गई तरक़्क़ियों और ख़ुसूसियतों के हक़ीक़तों से आगाह होने की वजह से यह मानने पर मजबूर हो जाएं कि यह जो कुछ सामने है, इंसानों की क़ुदरत से ऊपर, उनकी पहुंच से बाहर और सिर्फ़ एक ख़ुदा ही की जानिब से है।

जैसे हज़रत इब्राहीम के ज़माने में ज्योतिष-शास्त्र (इल्मे नुजूम Astronomy) और इल्मे कीमिया (Chemistry) का बहुत ज़ोर था और साथ ही उनकी क़ौम तारों के असरात को उनके निजी असर समझती और उनको सही असरंदाज़ होने वाले यक़ीन करके एक अल्लाह की जगह उनकी परस्तिश करती थी और उनका सबसे बड़ा देवता शम्स (सूरज) था, क्योंकि वह रोशनी

और हरारत (गर्मी) दोनों रखता था और यही दोनों चीज़ें उनकी निगाह में कायनात की बक़ा और फ़लाह के लिए असल बुनियाद थीं और इसी वजह से दुनिया में 'आग' को उसका मज़हर मान कर उसकी भी पूजा की जाती थी। इसके अलावा उनको चीज़ों के ख़्वास व असरात और उनके रद्दे अ़मल (Reaction) पर काफ़ी पकड़ थी, गोया आज की इल्मी दुनिया के लिहाज़ से वे अमल के केमिकल तरीक़े को भी बड़ी हद तक जानते थे।

इसलिए अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम को उनकी क़ौम की हिदायत और ख़ुदा परस्ती की तालीम के लिए एक तरफ़ ऐसी रोशन दलीलें दीं, जिनके ज़रिए वे क़ौम के ग़लत अ़क़ीदों को झुठलाएं और हक़ को हक़ बताने की ख़िदमत अंजाम दें और मज़ाहिर परस्ती (ऊपरी चमक-दमक देख कर उनकी पूजा) की वजह से हक़ीक़त के चेहरे पर अंधेरे का जो परदा पड़ गया था, उसको चाक करके रोशन चेहरे को नुमायां कर सकें।

तर्जुमा—*'और यह हमारी दलील है जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में अ़ता की, हम जिस का दर्जा बुलन्द करना चाहते हैं, कर दिया करते हैं, बेशक तेरा रब हिक्मत वाला और जानने वाला है'* (6 : 83)

और दूसरी तरफ़ जब तारा-परस्त और बुत-परस्त बादशाह से लेकर क़ौम के आम लोगों ने उनकी दलीलों और सबूतों से ला-जवाब होकर अपनी माद्दी ताक़त के घमंड पर उन्हें धधकती आग में झोंक दिया, तो उसी बड़े पैदा करने वाले ने जिसकी दावत व इर्शाद की ख़िदमत हज़रत इब्राहीम ﷺ अंजाम दे रहे थे।

तर्जुमा—*'तू सर्द और सलामती बन जा।'* (21 : 69)

कह कर अपनी क़ुदरत का वह शानदार निशान (मोजज़ा) अ़ता किया, जिस ने बातिल के रोबदार ऐवान में ज़लज़ला पैदा कर दिया और तमाम क़ौम उस ख़ुदाई मुज़ाहरे से हैरान व परेशान और ज़लील व ख़ासिर (घाटे में) होकर रह गई।

तर्जुमा—*'और चाहने लगे उसका बुरा, फिर उन्हीं को डाला हमने नुक़सान में।'* (29 : 70)

'और हज़रत मूसा ﷺ के ज़माने में जादू मिस्री उलूम व फ़ुनून में बहुत

ज़्यादा नुमायां और इम्तियाज़ी शान रखता था और मिस्रियों को जादू के फ़न में कमाल हासिल था, इसलिए हज़रत मूसा को क़ानूने हिदायत (तौरात) के साथ-साथ 'यदे बैज़ा' और 'अ़सा' जैसे मोजज़े दिए गए और हज़रत मूसा ﷺ ने मिस्र के जादूगरों के मुक़ाबले में जब उनका मुज़ाहरा किया तो जादू के तमाम माहिर उसको देख कर एक साथ पुकार उठे कि बेशक यह जादू नहीं, यह तो उससे अलग और इंसानी ताक़त से कहीं ऊंचा मुज़ाहरा है, जो हक़ीक़ी ख़ुदा ने अपने सच्चे पैग़म्बरों की ताईद के लिए उनके हाथ पर कराया है, क्योंकि हम जादू की हक़ीक़त को ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं और यह कह कर उन्होंने फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन के सामने बे-ख़ौफ़ी के साथ एलान कर दिया कि वह आज से मूसा और हारून अ़लैहिमस्सलाम के एक ख़ुदा की परस्तिश करेंगे।

तर्जुमा—*और सब जादूगर सज्दे में गिर पड़े, कहने लगे, हम तो जहानों के परवरदिगार पर ईमान ले आए, जो मूसा और हारून का परवरदिगार है।*

(8 : 120-122)

मगर फ़िरऔन और दरबार के सरदार अपनी बदबख़्ती से यही कहते रहे—

तर्जुमा—*'फ़िरऔन ने दरबारियों से जो आस-पास (बैठे) थे, कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि यह बड़ा जादूगर है।'* (26 : 34)

तर्जुमा—*'ग़रज जब उन लोगों के पास मूसा हमारी ख़ुली दलीलें लेकर आए, तो उन लोगों ने (मोजज़े देख कर) कहा कि यह तो (सिर्फ़) एक जादू है कि (ख़ामख़ाह अल्लाह तआ़ला पर) झूठ गढ़ा जाता है और हमने ऐसी बात कभी नहीं सुनी कि हमारे अगले बाप-दादों के वक़्त में भी हुई हो।'*

(28 : 36)

हज़रत ईसा और मोजज़े

इसी तरह हज़रत ईसा ﷺ के ज़माने में तिब्ब का इल्म (Medical Science) और भौतिक ज्ञान (Physics) की बहुत चर्चा थी और यूनान के कमाल पर बहुत ज़्यादा असर डाल रही थी और मुल्कों में सदियों से बड़े

तबीब और फ़लसफ़ी अपनी हिक्मत व दानिश और तिब्ब के कमालों का मुज़ाहरा कर रह थे, मगर एक ख़ुदा की तौहीद और दीने हक़ की तालीम से आम व ख़ास लोग आमतौर से महरूम थे और खुद बनी इसराईल भी जो कि नबियों की नस्ल में होने पर हमेशा फ़ख़्र करते रहते थे, गुमराहियों में पड़े हुए थे।

पस इन हालात में 'अल्लाह की सुन्नत' ने जब हज़रत ईसा को रुश्द व हिदायत के लिए चुन लिया, तो एक तरफ़ उनको हुज्जत व बुरहान (इंजील) और हिक्मत से नवाज़ा तो दूसरी तरफ़ ज़माने के ख़ास हालात के मुनासिब कुछ ऐसे निशान (मोजज़े) भी अ़ता फ़रमाए, जो उस ज़माने के कमाल वालों और उनके पीछे चलने वालों पर इस तरह असर डालने वाले हों कि हक़ तलाश करने वाले को यह मानने में कोई शक बाक़ी न रहे कि बेशक ये अ़मल हासिल किए गए इल्मों से जुदा, सिर्फ़ अल्लाह की ओर से रसूले बरहक़ की ताईद में ज़ाहिर हुए हैं और तास्सुब रखने वाले और सरकश के पास इसके अलावा और कोई रास्ता न रहे कि उनको 'खुला जादू' कह कर अपने बुग्ज़ व हसद की आग को और बढ़ा दे।

ईसा ﷺ के उन मोजज़ों में से जिनका मुज़ाहरा उन्होंने क़ौम के सामने किया, कुरआन ने चार मोजज़ों का खुल कर ज़िक्र किया है—

1. वह ख़ुदा के हुक्म से मुर्दे को ज़िंदा कर दिया करते थे।

2. और पैदाइशी अंधे को आंख वाला और कोढ़ को चंगा कर दिया करते थे।

3. वह मिट्टी से परिंदा बनाकर उसमें फूंक देते थे और अल्लाह के हुक्म से उसमें रूह पड़ जाती थी।

4. वह यह भी बता दिया करते थे कि किसने क्या खाना खाया और क्या खर्च किया और क्या घर में भंडारा जमा कर रखा है।

क़ौमों में ऐसे मसीहा मौजूद थे जिनके इलाज व मुआ़लजे और अपनी तदबीरों से, मायूस मरीज़ शिफ़ा पाते थे, उनमें भौतिक-ज्ञान के माहिर ऐसे फ़लसफ़सी भी कम न थे जो रूह व माद्दा (आत्मा व भूत द्रव्य) की हक़ीक़तों और आसमानी और ज़मीनी चीज़ों पर बेमिसाल नज़रियों और तजुर्बों के

मालिक समझे जाते थे और चीज़ों की हक़ीक़त पर उनकी गहरी नज़र और महारत कमाल वालों के लिए फ़ख़्र की चीज़ थी, लेकिन अब उनके सामने ईसा ﷺ ने सामान और वसीला अपनाए बग़ैर इन मामलों का मुज़हारा किया, तो उन पर भी हिदायत और गुमराही की कुदरती तक़्सीम के मुताबिक़ यही असर पड़ा कि जिस आदमी के दिल में हक़ की तलब पाई जाती थी, उसने मान लिया कि बेशक इस क़िस्म का मुज़ाहरा इंसानी पहुंच से बाहर और सच्चे नबी की ताईद व तस्दीक़ के लिए अल्लाह की तरफ़ से है और जिन दिलों में घमंड, हसद, और जलन और दुश्मनी थी, उनके तास्सुब ने वही कहने पर मजबूर किया, जो उनके पहले के नबी और रसूल कहते आए थे--

'यह कुछ नहीं मगर खुला जादू है।' (37 : 15)

चौथे मोजज़े के बारे में तफ़्सीर लिखने वाले कहते हैं कि इसके मुज़ाहरे की वजह यह पेश आई कि मुख़ालिफ़ जब रुश्द व हिदायत की उनकी दावत से नफ़रत करके उनको झुठलाते और उनकी पेश की हुई खुली निशानियों (मोजज़ों) को सेहर और जादू कहते तो साथी मज़ाक़ के तौर पर यह भी कह दिया करते थे कि अगर तुम अल्लाह तआला के ऐसे मक़्बूल बन्दे हो तो बताओ आज हमने क्या खाया है और क्या बचा रखा है? तब ईसा ﷺ उनके मज़ाक़ को संजीदगी में बदल देते और अल्लाह की वह्य की मदद से उनके सवाल का जवाब दे दिया करते थे।

मगर कुरआन हकीम ने इस मोजज़े को जिस अन्दाज़ में बयान किया है उसको ध्यान देकर पढ़ने-समझने से मालूम होता है कि इस 'निशान' के मुज़ाहरे की वजह तफ़्सीर लिखने वालों की बयान की हुई तौजीह से ज़्यादा बारीक़ और फैली हुई मालूम होती है और वह यह कि ईसा पैग़ामे हिदायत और तब्लीग़े हक़ की ख़िदमत अंजाम देते हुए ज़्यादातर लोगों को दुनिया में फंसे हुए होने, हिदायत व दौलत का लालच देने और ऐश-पसन्द ज़िंदगी की रग़बत से बाज़ रखने पर बयान के अलग-अलग तरीक़ों के ज़रिए तवज्जोह दिलाया करते थे, तो जिस तरह कुछ सईद रूहें इस कलिमा-ए-हक़ के सामने सर झुका दिया करती थीं, इसके ख़िलाफ़ घटिया और दुष्ट इंसान उनके बेहतर वाज़ों से दिली नफ़रत और दूरी रखने के बावजूद मुत्तास्सिर करने वाली

हस्तियों से ज़्यादा उनको यह बतातीं कि हम तो हर वक़्त आपके इस इर्शाद को पूरा करने में लगे रहते हैं, इसलिए कि क़ुदरते हक़ ने यह फ़ैसला किया कि इन मुनाफ़िक़ों की मुनाफ़क़त के नुक़सान को ख़त्म करने के बजाए हज़रत ईसा ﷺ को ऐसा 'निशान' दिया जाए कि इस ज़रिए से हक़ व बातिल खुल कर सामने आ जाए और अल्लाह के हुक़ूक़ और इंसान के हुक़ूक़ के मारे जाने पर ज़ख़ीरा करने का जो सामना किया जा रहा है, उसका परदा चाक कर दिया जाए।

इन चार क़िस्म के ख़ुदाई निशान (मोजज़ों) के अलावा ख़ुद हज़रत ईसा की बग़ैर बाप की पैदाइश भी एक शानदार 'ख़ुदाई निशान' था, जिसके बारे में अभी तफ़्सील से बातें बयान की गईं।

हज़रत मसीह ﷺ के हाथ पर जो मोजज़े ज़ाहिर किए गए या उनकी पैदाइश जिस मोजज़ाना तरीक़े से हुई, यहूदियों ने हसद की वजह से उसका इंकार किया, तो किया लेकिन कुछ फ़ितरतपरस्त इस्लाम के दावेदार हज़रात ने भी उनके इंकार के लिए राह पैदा करने की नाकाम कोशिश फ़रमाई है, इनमें से कुछ लोग वे हैं जिन्होंने इस इंकार को ज़ाती फ़ायदे के लिए नहीं, बल्कि फ़ितरतपरस्त और ख़ुदा के इंकारी नए यूरोपीय उलेमा से मरऊब होने की वजह से यह रवैया अपनाया है, ताकि उनकी मज़हबियत पर अजाइब-परस्ती का इलज़ाम न लग सके।

इसी तरह एह्या-ए-मौता (मुर्दा को ज़िंदा कर देना) के मोजज़े का भी इंकार करते हुए यह दावा किया है कि अल्लाह तआला मौत के बाद किसी को इस दुनिया में क़ियामत से पहले ज़िंदगी नहीं बख़्शेगा, लेकिन इस दावे के ख़िलाफ़ कई जगहों पर ऐसा साबित किया हुआ मौजूद है कि अल्लाह तआला ने इस दुनिया में मौत देने के बाद ताज़ा ज़िंदगी बख़्शी है। (देखिए आयतें 2: 73, 259, 260) इन तमाम वाक़ियों में मुर्दा के ज़िंदा किए जाने के खुले और साफ़ मानी साबित हैं (इसी तरह हज़रत मसीह ﷺ की बिन बाप पैदाइश का भी इंकार किया गया है और क़लम का ग़ैर-ज़रूरी ज़ोर लगाया गया है। लेकिन इस मस्अले की मुवाफ़िक़ और मुख़ालिफ़ रायों से हटकर एक ग़ैर जानिबदार मुसन्निफ़ (लेखक) जब हज़रत मसीह की पैदाइश के मुताल्लिक़

कुरआन की तमाम आयतों को पढ़ेगा, तो उस पर यह हक़ीक़त आसानी से वाज़ेह हो जाएगी कि कुरआन हज़रत मसीह अलै० से मुताल्लिक़ यहूदियों का घटना और ईसाइयों का बढ़ना, दोनों के ख़िलाफ़ अपना वह मंसबी फ़र्ज़ अदा करना चाहता है, जिसके लिए कुरआन की हक़ की दावत सामने आई है।

यहूदी और ईसाई इस बारे में दो क़तई मुख़ालिफ़ और आपस में टकराने वाली दिशाओं में चले गए हैं। यहूदी कहते हैं कि हज़रत मसीह झूठे और शोबदे (जादू) दिखाने वाले थे और ईसाई कहते हैं कि वह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे या तीन के तीसरे थे। इन हालात में कुरआन ने उन आयतों और वह्यों के ख़िलाफ़ इल्म व यक़ीन की राह दिखाते हुए दोनों के ख़िलाफ़ यह फ़ैसला किया कि हक़ का रास्ता इफ़रात व तफ़रीत के दर्मियान है और सीधे रास्ते की यही सबसे बड़ी पहचान है।

वह कहता है कि वाज़ेह रहे कि हज़रत ईसा अलै० झूठे नहीं थे, बल्कि अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर और राहे हक़ की सच्ची दावत देने वाले थे। उन्होंने दावते हक़ की तस्दीक़ के लिए जो कुछ अजीब बातें कर दिखाई, वे नबियों के मोजज़ो की लिस्ट में शामिल हैं, न कि जादूगरों और तमाशा दिखाने वालों की और यह भी सही है कि उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के हुई, मगर इससे यह कैसे इलज़ाम आ सकता है कि वह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे हो गए? क्या जो शख़्स इंसानी ज़रूरतों यानी खाने-पीने का मुहताज हो वह अब्द और इंसान के अलावा ख़ुदा या माबूद हो सकता है? नहीं, हरगिज़ नहीं।

तो जबकि कुरआन ने यहूदियों और ईसाइयों के उन तमाम बातिल अक़ीदों को खुले लफ़्ज़ों में रद्द करके, जो उन्होंने हज़रत मसीह अलै० के बारे में क़ायम कर लिए थे, इस्लाह का अपना फ़रीज़ा अंजाम दिया। यह कैसे मुम्किन था कि अगर बिन बाप की पैदाइश का वाक़िया बातिल और ग़ैर-वाक़ई था और जो सहारा बन रहा था उलूहियते मसीह के बारे में खुलकर, कुरआन रद्द न करता, बल्कि इसके ख़िलाफ़ वह जगह-जगह इस वाक़िए को ठीक उस तरह बयान करता जाता जैसा कि इंजील में बयान किया गया है, उसका फ़र्ज था कि सबसे पहले उसी पर कड़ी चोट लगाता और सिर्फ़ इतना कह कर कि हज़रत मसीह का बाप फ़्लां आदमी था, उस सारी इमारत

को जड़ से उखाड़ फेंकता, जिस पर मसीह के इलाह होने की बुनियाद रखी गई। मगर उसने यह तरीक़ा अख़्तियार न किया, बल्कि यह कहा कि यह बात किसी तरह भी मसीह के अल्लाह होने की दलील नहीं बन सकती? इसलिए कि—

तर्जुमा—'ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक जैसे मिसाल आदम की, बनाया उसको मिट्टी से फिर कहा कि हो जा, वह हो गया।' (3 : 59)

पस अगर बिन बाप की पैदाइश मसीह को अल्लाह का दर्जा दे सकती है, तो आदम को उससे ज़्यादा अल्लाह बनाए जाने का हक़ हासिल है कि वह बिना मां-बाप के पैदा हुए।

बहरहाल जिन तावील-परस्तों ने हज़रत मसीह ﷺ की बिन बाप की पैदाइश से मुताल्लिक़ आयतों के जुम्लों को जुदा-जुदा करके ग़लत बातें पैदा की हैं, वे इसलिए बातिल हैं कि जब इस वाक़िए से मुताल्लिक़ आयतों को इकट्ठा करके पढ़ा जाए तो एक लम्हे के लिए भी आयतों के मानी में बिन बाप पैदाइश के मानी के सिवा दूसरे किसी भी मानी की गुंजाइश नहीं रहती।

इसके अलावा जहां तक इस मसले का अक़्ली पहलू है, सो अक़्ल भी इसके मुम्किन होने को मुहाल क़रार नहीं देती, यहां तक कि आजकल तो यहां तक हो चुका है कि इंसानी पैदाइश आंखों देखे पैदा होने के आम तरीक़े के अलावा कुछ दूसरे तरीक़ों से भी होने लगी है और इन तरीक़ों को क़ुदरत के क़ानून के ख़िलाफ़ इसलिए कहा नहीं जा सकता कि हमने क़ुदरत के तमाम क़ानूनों का एहाता नहीं कर लिया है, बल्कि इंसान जितना ही इल्म और समझ की ओर बढ़ता जाता है, उसके सामने क़ुदरत के क़ानून के नये-नये गोशे खुलने लगते हैं।

पस अगर यह सही है कि जो बात कल नामुम्किन नज़र आती थी, आज यह मुम्किन कही जा रही है और जल्द या देर, उसके वाक़े होने पर यक़ीन किया जा रहा है, तो फिर नहीं मालूम क़ुदरत के इस क़ानून से इंकार कर देने के क्या मानी हैं? जिसका इल्म अभी तक अगरचे हमको हासिल नहीं है, मगर नबियों और रसूलों जैसी क़ुद्सी सिफ़ात हस्तियों पर इस इल्म की हक़ीक़त खुली हुई है तो क्या इल्मी दलील का यह भी कोई पहलू है कि जिस बात

का हमको इल्म न हो और अक़्ल उसको नामुम्किन और मुहाल न साबित करती हो, उसका इंकार सिर्फ़ इल्म न होने की वजह से कर दिया जाए।

अब इन खुली निशानियों को कुरआन मजीद से सुनिए और नसीहत और सबक़ हासिल कीजिए कि इन पुराने वाक़ियों को याद दिलाने का कुरआन का यही बड़ा मक्सद है।

तर्जुमा— *'और अल्लाह सिखाता है उस (ईसा ﷺ) को किताबे हिक्मत तौरात और इंजील और वह रसूल है बनी इसराईल की तरफ़, (वह कहता है) कि बेशक मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से 'निशान' लेकर आया हूं। वह यह कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे की शक्ल बनाता, फिर उसमें रूह फूंक देता हूं और वह अल्लाह के हुक्म से ज़िंदा परिंदा बन जाता है और पैदाइशी अंधे को आंख वाला कर देता हूं और सफ़ेद दाग़ के कोढ़ को अच्छा कर देता हूं और अल्लाह के हुक्म से मुर्दा को ज़िंदा कर देता हूं और तुमको बता देता हूं जो तुम खाकर आते हो और जो तुम घर में ज़ख़ीरा रख आते हो, सो अगर तुम हक़ीक़ी ईमान रखते हो तो बेशक इन मामलों में (मेरी सच्चाई और अल्लाह की ओर से होने के लिए) 'निशान' है और मैं तौरात की तस्दीक़ करने वाला हूं जो मेरे सामने है और (इसलिए भेजा गया हूं) ताकि कुछ चीज़ों को जो तुम पर हराम हो गई हैं, तुम्हारे लिए हलाल कर दूं, तुम्हारे लिए परवरदिगार ही के पास से 'निशान' लाया हूं, पस तुम अल्लाह से डरो और (उसके दिए हुए हुक्मों में) मेरी इताअ़त करो, बेशक अल्लाह तआ़ला ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, सो उसकी इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।'*

(3 : 48-51)

तर्जुमा— *'ऐ ईसा बिन मरयम! तू मेरी इस नेमत को याद कर, जबकि तू मेरे हुक्म से गारे से परिंदा बना देता और फिर उसमें फूंक देता था और वह मेरे हुक्म से ज़िंदा परिंदा बन जाता था और जब कि तू मेरे हुक्म से पैदाइशी अंधे को आंख वाला और सफ़ेद दाग़ के कोढ़ को अच्छा कर देता था और जबकि तू मेरे हुक्म से मुर्दा को ज़िंदा करके क़ब्र से निकालता था।'*

(5 : 110)

तर्जुमा— *'फिर जब वह (ईसा) उनके पास खुले निशान लेकर आया तो उन्होंने (यानी बनी इसराईल) ने कहा, यह तो खुला जादू है।'* (61 : 6)

नबियों ने जब कभी भी क़ौमों के सामने अल्लाह की आयतों का मुज़ाहरा किया है, तो इंकार करने वालों ने हमेशा उनके मुताल्लिक़ एक बात ज़रूर कही है, 'यह खुला हुआ जादू है।' पस क्या एक हक़ को तलाश करने वाला और ग़ैर-मुतास्सिब इंसान के लिए यह जवाब इस ओर रहनुमाई नहीं करता कि नबियों के इस क़िस्म के मुज़ाहरे ज़रूर क़ुदरत के आम क़ानूनों से जुदा ऐसे इल्म के ज़रिए ज़ाहिर होते थे, जो सिर्फ़ उन क़ुद्सी सिफ़ारत हस्तियों के लिए ही ख़ास रहा है और इनके अलावा इंसानी दुनिया उसकी हक़ीक़त के बारे में इंकार पर तुली हुई थी, उसके इंकार के लिए इससे बेहतर दूसरी ताबीर नहीं थी कि वे इन मामलों को 'जादू' कह दें। इसलिए इन मामलों को जादू कहना भी उनके 'मोजज़ा' और 'अल्लाह का निशान' होने की ज़बरदस्त दलील है।

हज़रत ईसा और उनकी तालीम का ख़ुलासा

बहरहाल हज़रत ईसा ﷺ बनी इसराईल को हुज्जत और बुरहान और अल्लाह की आयतों के ज़रिए दीने हक़ की तालीम देते रहते और उनके भूले हुए सबक़ को याद दिला कर मुर्दा दिलों में नई ज़िंदगी बख़्शते रहते थे।

अल्लाह और अल्लाह की तौहीद पर ईमान, नबियों और रसूलों की तस्दीक़, आख़िरत पर ईमान, अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान, क़ज़ा व क़द्र पर ईमान, अल्लाह के रसूलों और किताबों पर ईमान, भले अख़्लाक़ के अपनाने, बुरे अमलों से बचने, अल्लाह की इबादत से चाव, दुनिया में लगे रहने से नफ़रत और अल्लाह के कुंबे (अल्लाह की मख़्लूक़) से मुहब्बत, यही वह तालीम और उस पर ज़ोर था जो उनकी ज़िंदगी का मश्ग़ला और मंसबी फ़र्ज़ बना हुआ था, वे बनी इसराईल को तौरात, इंजील और हिक्मत भरी नसीहतों के ज़रिए इन मामलों की तरफ़ दावत देते, मगर बदबख़्त यहूदी अपनी टेढ़ी फ़ितरत, सदियों से आ रही सरकशी और अल्लाह की तालीम से बग़ावत की बदौलत इस दर्जा शिद्दत पसंद बन गए थे और नबियों और रसूलों के क़त्ल ने उनके दिलों को हक़ व सदाक़त के क़ुबूल करने में इस दर्जा सख़्त बना दिया था कि एक छोटी-सी जमाअत के अलावा उनकी जमाअत की भारी अक्सरीयत ने उनकी मुख़ालफ़त और उनके साथ हसद व बुग़्ज़ को अपना शिआर और

अपनी जमाअ़ती ज़िंदगी का शिआर बना लिया और इसलिए नबियों की बेहतरीन सुन्नत के मुताबिक़ रुश्द व हिदायत के हलक़ों में दुन्यवी जाह व जलाल के लिहाज़ से कमज़ोर व नातवां और निचले पेशेवर तबक़े की अक्सरीयत नज़र आती थी। कमज़ोरों का यह तबक़ा अगर इख़्लास व दयानतदारी के साथ हक़ की आवाज़ को अपनाता तो बनी इसराईल का वह सरकश और मग़रूर हलक़ा उन पर और अल्लाह के पैग़म्बर पर फ़ब्तियां कसता, तौहीन व तज़लील का मुज़ाहरा करता और अपनी अ़मली जद्दो जुहद का बड़ा हिस्सा मुख़ालफ़त में लगाता रहता था।

तर्जुमा—*'और जब ईसा ज़ाहिर दलीलें लेकर आए तो कहा, बेशक तुम्हारे पास 'हिक्मत' लेकर आया हूं और इसलिए आया हूं ताकि उन कुछ बातों को साफ़ कर दूं जिनके बारे में तुम आपस में झगड़ रहे हो, पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, सो उसकी परस्तिश करो यही सीधी राह है।' फिर वे आपस में गिरोहबन्दी करने लगे, सो उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब के ज़रिए हलाकत और ख़राबी है।'* (43 : 63-65)

तर्जुमा—*और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का पैग़म्बर हूं, तस्दीक़ करने वाला हूं तौरात की, जो मेरे सामने है और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की, जो मेरे बाद आएगा नाम उसका अहमद है। पस जब (ईसा) आया उनके पास मोजज़े लेकर तो वे (बनी इसराईल) कहने लगे, यह तो खुला जादू है।* (61 : 6)

तर्जुमा— *'फिर जब ईसा ने इन (बनी इसराईल) से कुफ़्र महसूस किया तो कहा, 'अल्लाह की तरफ़ मेरा कौन मददगार है?'*

हवारियों ने जवाब दिया, 'हम हैं अल्लाह के (दीन के) मददगार। हम अल्लाह पर ईमान ले आए और तुम गवाह रहना कि हम मुसलमान हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! जो तूने उतारा है, हम उस पर ईमान ले आए 'और हमने रसूल की पैरवी अख़्तियार कर ली, पस तू हमको (दीने हक़ की) गवाही देने वालों में से लिख ले।' (3 : 52-53)

हवारी ईसा अलै॰

मगर ईसा अलै॰ दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों की शरारतों और बेहूदगियों के बावजूद अपने मंसबी फ़र्ज़ 'दावत इलल हक़' (हक़ की तरफ़ दावत देने) में हमेशा सरगर्म रहते और रात व दिन बनी इसराईल की आबादियों और बस्तियों में हक़ का पैग़ाम सुनाते और रोशन दलीलों और अल्लाह की वाज़ेह आयतों के ज़रिए लोगों को हक़ व सदाक़त क़ुबूल करने पर तैयार करते रहते थे। अल्लाह और अल्लाह के हुक्म से सरकश और बाग़ी इंसानों की इस भीड़ में ऐसी सईद रूहें भी निकल आती थीं जो ईसा अलै॰ की हक़ की दावत की ओर लपकतीं और सच्चाई के साथ दीने हक़ को अपनाती थीं जो हज़रत ईसा अलै॰ की सोहबत में रहकर और फ़ायदा उठा कर, न सिर्फ़ ईमान ही ले आती थीं, बल्कि दीने हक़ की सरबुलंदी और कामियाबी के लिए उन्होंने जान व माल की बाज़ी लगा कर दीन की ख़िदमत के लिए ख़ुद को वक़्फ़ कर दिया था और अक्सर व बेशतर हज़रत मसीह अलै॰ के साथ रह कर तब्लीग़ व दावत का काम सरअंजाम देती थीं। इसी ख़ुसूसियत की वजह से वे 'हवारी' (रफ़ीक़) और अन्सारुल्लाह (अल्लाह के दीन के मददगार) के मुक़द्दस अलक़ाब से मुअज़्ज़ज़ व मुम्ताज़ की गईं।

चुनांचे इन बुज़ुर्ग हस्तियों ने अल्लाह के पैग़म्बर की पाक ज़िंदगी को अपना आदर्श बनाया और सख़्त-से-सख़्त और नाज़ुक से नाज़ुक हालात में भी उनका साथ नहीं छोड़ा और हर तरह मददगार साबित हुईं।

तर्जुमा—*और (ऐ ईसा! वह वक़्त याद करो) जब कि मैंने हवारियों की ओर (तेरी मारफ़त) यह वह्य की कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ, तो उन्होंने जवाब दिया 'हम ईमान लाए और ऐ ख़ुदा! तू गवाह रहना कि हम बिला शुब्हा मुसलमान हैं।'* (5 : 111)

तर्जुमा—*ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के (दीन के) मददगार हो जाओ जैसा कि ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम ने जब हवारियों से कहा, अल्लाह के रास्ते में कौन मेरा मददगार है तो हवारियों ने जवाब दिया, 'हम हैं अल्लाह (की राह) के मददगार।' पस बनी ईसराइल की एक जमाअत ईमान ले आई, एक गिरोह ने कुफ़्र अख़्तियार किया, सो हमने मोमिनों की उनके दुश्मनों के*

मुक़ाबले में ताईद की, पस वे (मोमिन) ग़ालिब रहे। (61 : 14)

पिछले पन्नों में यह वाज़ेह हो चुका है कि ईसा के ये हवारी ज़्यादातर ग़रीब और मज़दूर तबक़े में से थे, क्योंकि नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) की दावत व तब्लीग़ के साथ 'अल्लाह की सुन्नत' यही जारी रही है कि उनके हक़ की आवाज़ को लपकने और दीने हक़ पर जान निछावर करने का मुज़ाहरा करने के लिए पहले ग़रीब और कमज़ोर तबक़ा ही आगे बढ़ता है और नीचे के लोग ही फ़िदाकारी का सबूत देते हैं और वक़्त के इक़्तिदार में बैठी और ज़बरदस्त हस्तियां अपने ग़ुरूर और घमंड के साथ मुक़ाबले के लिए सामने आती और मुख़ालिफ़ सरगर्मियों के साथ अल्लाह का कलिमा सरबुलन्द करने के रास्ते में भारी पत्थर बन जाती हैं, लेकिन जब अल्लाह का 'अ़मल के बदले' का क़ानून अपना काम करता है, तो नतीजे में फ़लाह और कामियाबी उन कमज़ोर हक़ के फ़िदाकारों का हिस्सा हो जाता है और घमंड में चूर हस्तियां या: हलाकत के गहरे गढ़े में जा गिरती हैं और या मक़्हूर व मग़्लूब होकर झुक जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं रखतीं।

ईसा अलै॰ के हवारी और कुरआन व इंजील का मवाज़ना

कुरआन ने ईसा अलै॰ के हवारियों की हक़ीक़त बयान की है। सूरः आले इमरान की आयतें तुम्हारे सामने हैं। हज़रत मसीह अलै॰ जब दीने हक़ की मदद के लिए पुकारते हैं तो सबसे पहले जिन्होंने 'नह्नु अन्सारुल्लाह' (हम हैं अल्लाह के मददगार) का नारा बुलन्द किया, वे यही पाक हस्तियां थीं। सूरः सफ़्फ़ में अल्लाह रब्बुल-आलमीन ने जब मुसलमानों को मुख़ातब करके 'कूनू अंसारल्लाह' (हो जाओ तुम मदद देने वाले अल्लाह के) की तर्ग़ीब दी, तो 'तज़्कीर बिअय्यामिल्लाह' (अल्लाह के वाक़ियों की तज़्कीर) के पेशे नज़र इन्हीं हस्तियों का ज़िक्र किया और इन्हीं की मिसाल और नज़ीर देकर हक़ की मदद के लिए उभारा और सूरः माइदा में उनके ईमान के क़ुबूल करने और हक़ की दावत के सामने सर झुका देने का जो नक़्शा खींचा है, वह भी उनके ख़ुलूस, हक़तलबी और हक़-कोशी की हमेशा ज़िंदा रहने वाली तस्वीर है।

यह सब कुछ तो उस वक़्त का हाल है, जब तक हज़रत ईसा ﷺ उनके दर्मियान मौजूद हैं, लेकिन आपके 'आसमान पर उठा लिए जाने' के बाद भी उनकी इस्तिक़ामत से भरी (जमाव वाली) और पुराने दीन की फ़िदाकाराना ख़िदमत के बारे में सूरः सफ़्फ़ की आयत *'फ़-अय्यदनल्लज़ी-न आमनू अला अदूव्विहिम फ़ अस्बहू ज़ाहिरीन०'* (61 : 14) में काफ़ी इशारा मौजूद है और शाह अब्दुल क़ादिर नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने इसी बुनियाद पर इस आयत की तफ़्सीर करते हुए तारीख़ी गवाही का इस तरह ज़िक्र फ़रमाया है—

'हज़रत ईसा ﷺ के बाद उनके चारों (हवारियों) ने बड़ी मेहनतें की हैं, तब उनका दीन फैला। हज़रत यसूअ़ के उन तमाम हवारियों में से जिनकी तारीफ़ में जगह-जगह बाइबिल बखान करता है, एक दो या दस पांच नहीं, सबके सब निहायत बुज़दिली और ग़द्दारी के साथ उस वक़्त हज़रत मसीह ﷺ से अलग हो गए, जब दीने हक़ की मदद और हिमायत के लिए सबसे ज़्यादा उनको ज़रूरत थी और जबकि अल्लाह के पैग़म्बर (अ़लैहिस्सलाम) दुश्मनों के नरग़े में फंसे हुए थे।

मगर इंजील की इस गवाही के ख़िलाफ़ सूरः आले इमरान में क़ुरआन मजीद ने यह गवाही दी है कि उस नाज़ुक वक़्त में जब हज़रत ईसा ने अपने हवारियों को दीने हक़ की मदद और यारी के लिए पुकारा, तो सबने पूरे अज़्म, हौसला और फ़िदा हो जाने वाले जज़्बे के साथ यह जवाब दिया, *'नहनु अन्सारुल्लाह'* (3 : 52) फिर हज़रत मसीह के सामने दीन पर अपने जमे रहने और अपने ख़ुलूस भरे ईमान के बारे में गवाही देकर मदद का पूरा-पूरा यक़ीन दिलाया और फिर सूरः सफ़्फ़ में क़ुरआन मजीद ने यह भी ज़ाहिर किया कि इन हवारियों ने हज़रत ईसा से जो कुछ कहा था, उनकी मौजूदगी में और उनके बाद भी, सच्ची वफ़ादारी के साथ उसे निबाहा और इसमें शक नहीं, वे सच्चे मोमिन साबित हुए और इसलिए अल्लाह ने भी उनकी मदद फ़रमाई और उनको हक़ के दुश्मनों के मुक़ाबले में कामियाब किया।

इंजील और क़ुरआन के इस मवाज़ने को देख कर एक इंसाफ़ पसन्द यह कहे बग़ैर नहीं रह सकता कि इस मामले में 'हक़' क़ुरआन के साथ है और ईसाई उलेमा ने इंजील में घट-बढ़ करके इस क़िस्म के गढ़े हुए वाक़ियों का

इज़ाफ़ा इसलिए किया है, ताकि सदियों बाद के ख़ुद के गढ़े हुए अक़ीदे 'मसीह के सलीब (फांसी) का अक़ीदा' से मुताल्लिक़ दास्तान सही तर्तीब पर क़ायम हो सके कि जब मसीह को सलीब पर लटकाया गया, तो उन्होंने यह कहते-कहते जान दे दी, *'ऐली! ऐली! लिमा सबक़तनी'* (ऐ ख़ुदा! ऐ ख़ुदा! तूने मुझे क्यों अकेला-तंहा छोड़ दिया।' और किसी एक आदमी ने भी मसीह ﷺ का साथ न दिया। बहरहाल हवारियों से मुताल्लिक़ बाइबिल की ये बातें घट-बढ़ वाली गढ़ी हुई दास्तान से ज़्यादा कोई हैसियत नहीं रखतीं।

माइदा का उतरना

कुरआन मजीद ने माइदा के उतरने के वाक़िए को मोजज़े भरे बयान के तरीक़े के साथ ज़िक्र किया है—

तर्जुमा—*'और (देखो) जब ऐसा हुआ था कि हवारियों ने कहा था, ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुम्हारा परवरदिगार ऐसा कर सकता है कि आसमान से हम पर एक ख़्वान उतार दे? (यानी हमारे खाने के लिए आसमान से ग़ैबी सामान कर दे।) ईसा ﷺ ने कहा, ख़ुदा से डरो (और ऐसी फ़रमाइशें न करो) अगर तुम ईमान रखते हो।'*

उन्होंने कहा, (मक़्सद इससे अल्लाह की क़ुदरत का इम्तिहान नहीं है, बल्कि) हम चाहते हैं कि (हमें खाना मिले तो) उसमें से खाएं और हमारे दिल आराम पाएं और हम जान लें कि तूने हमें सच बताया था और इस पर हम गवाह हो जाएं।

इस पर ईसा बिन मरयम ने दुआ की, ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर आसमान से एक ख़्वान भेज दे कि उसका आना हमारे लिए और हमारे अगलों-पिछलों सब के लिए ईद क़रार पाए और तेरी तरफ़ से (फ़ज़्ल व करम) एक निशानी हो, हमें रोज़ी दे, तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।'

अल्लाह ने फ़रमाया, मैं तुम्हारे लिए ख़्वान भेजूंगा, लेकिन जो शख़्स इसके बाद भी (हक़ के रास्ते से) इंकार करेगा तो मैं उसे (अमल के बदले में) अज़ाब दूंगा, ऐसा अज़ाब कि तमाम दुनिया में किसी आदमी को भी वैसा अज़ाब नहीं दिया जाएगा।

(5 : 112-115)

यह माइदा नाज़िल हुआ या नहीं, कुरआन ने इसके बारे में कोई तफ़सील बयान नहीं की और न किसी हदीस में इसका कोई तज़्किरा पाया जाता है, अलबत्ता सहाबा और ताबिईन की रिवायतों में इसका तफ़सील से ज़िक्र किया गया है—

मुजाहिद और हसन बसरी (रह०) फ़रमाते हैं कि माइदा नाज़िल नहीं हुआ, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उसके नाज़िल होने को जिस शर्त से जोड़ दिया, तलब करने वालों ने यह महसूस करते हुए कि इंसान कमज़ोरियों का मज्मूआ है, कहीं ऐसा न हो कि किसी लग़्ज़िश या मामूली खिलाफ़वर्ज़ी की बदौलत उस दर्दनाक अज़ाब के हक़दार ठहरें, अपने सवाल को वापस ले लिया। इसके अलावा अगर माइदे का नुज़ूल हुआ होता, तो वह ऐसा अल्लाह का निशान (मोजज़ा) था कि ईसाई उन पर जितना भी फ़ख़्र करते, वह कम था और उनके यहां इसकी जितनी भी शोहरत होती, वह बेजा नहीं होती, फिर भी उनके यहां माइदा के इस नुज़ूल का कोई तज़्किरा नहीं पाया जाता।

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० से नक़ल किया गया है कि यह वाक़िया पेश आया और माइदे का नुज़ूल हुआ। ज़्यादा-तर लोगों का रुझान इसी तरफ़ है। अलबत्ता इसके नाज़िल होने की तफ़्सील में अलग-अलग क़ौल पाए जाते है।

इस मसले में शाह अब्दुल क़ादिर (नव्वरल्लाहु मरक़दहू) मुजाहिद और हसन बसरी के हमनवा मालूम होते हैं और माइदा के नाज़िल होने के मुताल्लिक़ इन दोनों जमाअतों से अलग एक और लतीफ़ बात इर्शाद फ़रमाते हैं। मूज़िहुल कुरआन में है—

(हल यस्ततीऊ 5 : 112) (हो सके), यह मानी कि हमारे वास्ते तुम्हारी दुआ से इतना आदत के ख़िलाफ़ करे या न करे, फ़रमाया कि *'इत्तक़ुल्लाह'* *(डरो अल्लाह से)* यानी बन्दे को चाहिए कि अल्लाह को न आज़माए कि मेरा कहा मानता है या नहीं, अगरचे ख़ुदावन्द (आक़ा व मालिक) बहुतेरी मेहरबानी करे *'व नकूनु अलैहा मिनश्शाहिदीन'* (5 : 113) यानी बरकत उम्मीद पर मांगते हैं और (ताकि) मोजज़ा हमेशा मशहूर रहे, आज़माने को नहीं कहते हैं। वह ख़्वान उतरा इकशंबा (इतवार) को, वह नसारा (ईसाई) की ईद है। जैसे हमारे

लिए जुमा का दिन। कुछ कहते हैं, यह ख़्वान उतरा चालीस दिन तक और फिर कुछ ने नाशुक्री की यानी हुक्म हुआ था कि फ़क़ीरों और मरीज़ों को खिला दें, न कि महफ़ूज़ (तवंगर) और चंगे को, फिर क़रीब अस्सी आदमी सुअर और बन्दर हो गए। (मगर) यह अज़ाब पहले यहूदियों में हुआ था, पीछे किसी को नहीं हुआ।

और कुछ कहते हैं (माइदा) न उतरा, डरावा सुन कर मांगने वाले डर गए। न मांगा, लेकिन पैग़म्बर की दुआ बेकार नहीं जाती और इस कलाम (क़ुरआन) में नक़्ल बे-हिक्मत नहीं, शायद इस दुआ का यह असर है कि हज़रत ईसा की उम्मत (नसारा-ईसाई) में माल के पहलू से आसूदगी हमेशा रही और जो कोई उनमें नाशुक्री करे, तो शायद आख़िरत में सबसे ज़्यादा अज़ाब पावे। इसमें मुसलमान को इबरत है कि अपनी मुद्दआ ख़िलाफ़े आदत के रास्ते से न चाहे, फिर उसकी शुक्रगुज़ारी बहुत मुश्किल है। ज़ाहिरी अस्बाब पर क़नाअत करे, तो बेहतर है। इस क़िस्से से भी साबित हुआ कि अल्लाह तआला के आगे हिमायत नहीं पेश की जाती।

इस सिलसिले में हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० ने बाज़ नसीहत से मुताल्लिक़ बहुत ख़ूब बात इर्शाद फ़रमाई है—

ईसा से उनकी क़ौम ने माइदा के नाज़िल होने की दरख़्वास्त की तो अल्लाह की जानिब से जवाब मिला, 'तुम्हारी दरख़्वास्त इस शर्त के साथ मंज़ूर की जाती है कि न उसमें ख़ियानत करना, न उसको छुपाए रखना और न उसको ज़ख़ीरा करना, वरना यह बन्द कर दिया जाएगा और तुमको ऐसा सबक़ भरा अज़ाब दूंगा जो किसी को न दिया जाएगा।'

'ऐ अरब के लोगो! तुम अपनी हालत पर ग़ौर करो कि तुम ऊंटों और बकरियों की दुम पकड़ कर जंगलों में चराते फिरते थे, फिर अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से तुम्हारे दर्मियान ही से एक बर्गज़ीदा रसूल भेजा, जिसके हसब व नसब को तुम अच्छी तरह जानते हो। उसने तुम को यह ख़बर दी कि तुम बहुत जल्द अजम पर ग़ालिब आ जाओगे और उस पर छा जाओगे और उसने तुमको सख़्ती के साथ मना फ़रमाया कि माल व दौलत की फ़रावानी देख कर हरगिज़ तुम चांदी और सोने के ख़ज़ाने न जमा करना, मगर

ख़ुदा की क़सम! कि ज़्यादा दिन व रात न गुज़रेंगे कि तुम ज़रूर सोने-चांदी के ख़ज़ाने जमा करोगे और इस तरह ख़ुदा-ए-बरतर के दर्दनाक अज़ाब के हक़दार बनोगे।'

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, सूरः माइदा

'रफ़अ़ इलस्समाइ' यानी ज़िंदा आसमान पर उठा लिया जाना

हज़रत ईसा (अलैहि०) ने न शादी की और न रहने-सहने के लिए घर बनाया। वह शहर-शहर और गांव-गांव अल्लाह का पैग़ाम सुनाते और दीने हक़ की दावत व तब्लीग़ का फ़र्ज़ अंजाम देते और जहां भी रात आ पहुंचती, वहीं राहत के किसी सर व सामान के बग़ैर रात गुज़ार देते थे। चूंकि उनकी ज़ाते अक़्दस से मख़्लूक़े ख़ुदा जिस्मानी व रूहानी दोनों तरह की शिफ़ा और तस्कीन पाती थी, इसलिए जिस तरफ़ भी उनका गुज़र हो जाता, इंसानों की भीड़ अच्छी अक़ीदत के साथ जमा हो जाती और वालिहाना मुहब्बत के साथ उन पर निसार हो जाने को तैयार रहती थी।

यहूदियों ने इस बढ़ती हुई मक़्बूलियत को इंतिहाई हसद और सख़्त ख़तरे की निगाह से देखा और जब उनके बिगड़े हुए दिन किसी तरह उसको सह न सके, बल्कि यहूदी बनी इसराईल जो अपनी मज़हबी किताबों की पेशीनगोइयों के मुताबिक़ दो शख़्सियतों 'मसीह हिदायत' और 'मसीह ज़लालत' के इंतिज़ार में थे लेकिन बदक़िस्मती कि जब 'मसीह हिदायत' ज़ाहिर हुए तो उन्होंने उसको 'मसीह ज़लालत' समझा और उनके सरदारों फ़क़ीहों, फ़रीसियों (Pharisee) और सदूक़ियों (Sadducee) (यहूदियों के दो फ़िरक़े) ने ज़ाते अक़्दस के ख़िलाफ़ साज़िश शुरू की और तै यह पाया कि इस हस्ती के ख़िलाफ़ कामियाबी हासिल करने के अलावा इसकी कोई शक्ल नज़र नहीं आती कि वक़्त के बादशाह को भड़का कर उसको दीवार पर चढ़ा दिया जाए।

पिछली कुछ सदियों से यहूदियों के बयान न करने के क़ाबिल हालात की वजह से उस ज़माने में यहूदिया के बादशाह हीरोवेस की हुकूमत अपने बाप-दादा के इलाक़ों में से मुश्किल से चौथाई पर क़ायम थी और वह भी नाम के लिए और असल हुकूमत व इक़्तिदार, वक़्त के बुतपरस्त शहंशाह क़ैसरे

रूम को हासिल था और उसकी मातहती में प्लातीस यहूदिया के अक्सर इलाक़े का गवर्नर या बादशाह था।

यहूदी अगरचे इस बुतपरस्त बादशाह के इक्तिदार को अपनी बदबख़्ती समझकर उससे नफ़रत करते थे, मगर हज़रत मसीह के ख़िलाफ़ दिलों में भड़की हसद की आग ने और सदियों की ग़ुलामी से पैदा हुई पस्त ज़ेहनियत ने ऐसा अंधा कर दिया कि अंजाम और नतीजे की फ़िक्र से बेपरवाह हो कर प्लातीस के दरबार में जा पहुंचे और अर्ज़ किया 'आली जाह' यह आदमी न सिर्फ़ हमारे लिए, बल्कि हुकूमत के लिए ख़तरा बनता जा रहा है, अगर फ़ौरन ही इसकी जड़ न काट दी गई तो न हमारा दीन ही सही हालत में बाक़ी रह सकेगा और डर है कि कहीं आपके हाथ से हुकूमत का इक्तिदार भी न चला जाए, इसलिए कि इस आदमी ने अजीब व ग़रीब शोबदे (करतब) दिखा कर दुनिया को अपना चाहने वाला बना लिया है और हर वक़्त इस घात में लगा है कि आप लोगों की इस ताक़त के बल पर क़ैसर और आप को हरा कर ख़ुद बनीइसराईल का बादशाह बन जाए। इस आदमी ने लोगों को सिर्फ़ दुनिया को रास्ते से ही गुमराह नहीं किया, बल्कि इसने हमारे दीन तक को भी बदल डाला और लोगों को बद-दीन बनाने में लगा हुआ है। पस इस फ़िल्ने की रोक-थाम बहुत ज़रूरी है ताकि बढ़ता हुआ यह फ़िल्ना शुरू ही में कुचल डाला जाए।'

ग़रज़ काफ़ी बात-चीत और सोच-विचार के बाद पिलातीस ने उनको इजाज़त दे दी कि वे हज़रत मसीह को गिरफ़्तार कर लें और शाही दरबार में मुज्रिम की हैसियत से पेश करें। बनी इसराईल के सरदार, फ़क़ीह और काहिन यह फ़रमान हासिल करके बेहद ख़ुश हुए और पूरे घमंड में आकर एक दूसरे को मुबारकबाद देने लगे कि आख़िर हमारी साज़िश कामियाब हुई और हमारी तदबीर का तीर ठीक निशाने पर बैठ गया और कहने लगे कि अब ज़रूरत इस बात की है कि ख़ास मौक़े के इंतिज़ार में रहा जाए और किसी अकेलेपन या तंहाई के मौक़े पर इस तरह उसको गिरफ़्तार किया जाए कि जनता में बेचैनी न पैदा न होने पाए।

—इंजिल यूहन्ना, अध्याय 11, आयत 49-51 व इंजील मरक़ुस अध्याय 26, आयत 2-1

दूसरी तरफ़ हज़रत ईसा और उनके हवारियों की बात-चीत को सूरः आले इमरान और सूरः सफ़्फ़ के हवाले से नक़ल किया जा चुका है कि हज़रत ईसा ने जब यहूदियों की कुफ़्र और इंकार और दुश्मनी भरी चालों को महसूस किया तो एक जगह अपने हवारियों को जमा किया और उनसे फ़रमाया कि बनी इसराईल के सरदारों और काहिनों की मुख़ालिफ़ाना सरगर्मियां तुमसे छिपी नहीं हैं। अब वक़्त की नज़ाकत और कड़ी आज़माइश व इम्तिहान की घड़ी का क़रीब होना तक़ाज़ा करता है कि मैं तुमसे सवाल करूं कि तुममें कौन वे लोग हैं जो कुफ़्र के इंकार के सैलाब के सामने सीना तान कर खड़े हों और अल्लाह के दीन के मददगार बनें।

हज़रत ईसा का यह इर्शाद मुबारक सुनकर सब ने बड़े जोश व ख़रोश और सच्चे ईमान के साथ जवाब दिया, हम हैं अल्लाह के मददगार, एक अल्लाह के परस्तार, आप गवाह रहें कि हम मुस्लिम वफ़ा शिआर हैं और अल्लाह के दरबार में हम अपनी इस इताअत केशी और फ़रमांबरदारी पर जमे रहने के लिए यों दुआ के लिए हाथ उठाए हैं, ऐ परवरदिगार! हम तेरी उतारी हुई किताब पर ईमान ले आए और सच्चे दिल से तेरे पैग़म्बर की पैरवी करने वाले हैं। ऐ अल्लाह! तू हमको सच्चाई और हक़ के फ़िदाकरों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

हज़रत ईसा ﷺ और उनके दावत व तबलीग़ के फ़रीज़े के ख़िलाफ़ बनी इसराईल के यहूदियों में मुख़ालिफ़ सरगर्मियों के मुताल्लिक़ हालात का यह हिस्सा तो ज़्यादातर ऐसा है कि क़ुरआन व इंजील के दर्मियान उसूली तौर पर कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, लेकिन इसके बाद के बयान के पूरे हिस्से में दोनों की क़तई तौर पर अलग-अलग राहें हैं और उनके बीच इस हद तक टकराव है कि किसी तरह भी एक दूसरे के क़रीब नहीं लाया जा सकता। अलबत्ता इस जगह पहुंच कर दोनों यानी यहूदियों और ईसाइयों का आपसी मेल हो जाता है और दोनों के बयान वाक़िए से मुताल्लिक़ एक ही अक़ीदा पेश करते हैं। फ़र्क़ है तो यह कि यहूदी इस वाक़िए को अपना कारनामा और अपने लिए फ़ख़्र की चीज़ समझते हैं और ईसाई इससे बनी इसराईल के यहूदियों की एक लानत के क़ाबिल जद्दोजेहद यक़ीन करते हैं।

दूसरी तरफ़ हज़रत ईसा और उनके हवारियों की बात-चीत को सूरः आले इमरान और सूरः सफ़्फ़ के हवाले से नक़ल किया जा चुका है कि हज़रत ईसा ने जब यहूदियों की कुफ्र और इंकार और दुश्मनी भरी चालों को महसूस किया तो एक जगह अपने हवारियों को जमा किया और उनसे फ़रमाया कि बनी इसराईल के सरदारों और काहिनों की मुख़ालिफ़ाना सरगर्मियां तुमसे छिपी नहीं हैं। अब वक़्त की नज़ाकत और कड़ी आज़माइश व इम्तिहान की घड़ी का क़रीब होना तक़ाज़ा करता है कि मैं तुमसे सवाल करूं कि तुममें कौन वे लोग हैं जो कुफ्र के इंकार के सैलाब के सामने सीना तान कर खड़े हों और अल्लाह के दीन के मददगार बनें।

हज़रत ईसा का यह इर्शाद मुबारक सुनकर सब ने बड़े जोश व ख़रोश और सच्चे ईमान के साथ जवाब दिया, हम हैं अल्लाह के मददगार, एक अल्लाह के परस्तार, आप गवाह रहें कि हम मुस्लिम वफ़ा शिआर हैं और अल्लाह के दरबार में हम अपनी इस इताअत केशी और फ़रमांबरदारी पर जमे रहने के लिए यों दुआ के लिए हाथ उठाए हैं, ऐ परवरदिगार! हम तेरी उतारी हुई किताब पर ईमान ले आए और सच्चे दिल से तेरे पैग़म्बर की पैरवी करने वाले हैं। ऐ अल्लाह! तू हमको सच्चाई और हक़ के फ़िदाकरों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

हज़रत ईसा عليه السلام और उनके दावत व तबलीग़ के फ़रीज़े के ख़िलाफ़ बनी इसराईल के यहूदियों में मुख़ालिफ़ सरगर्मियों के मुताल्लिक़ हालात का यह हिस्सा तो ज़्यादातर ऐसा है कि क़ुरआन व इंजील के दर्मियान उसूली तौर पर कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, लेकिन इसके बाद के बयान के पूरे हिस्से में दोनों की क़तई तौर पर अलग-अलग राहें हैं और उनके बीच इस हद तक टकराव है कि किसी तरह भी एक दूसरे के क़रीब नहीं लाया जा सकता। अलबत्ता इस जगह पहुंच कर दोनों यानी यहूदियों और ईसाइयों का आपसी मेल हो जाता है और दोनों के बयान वाक़िए से मुताल्लिक़ एक ही अक़ीदा पेश करते है। फ़र्क़ है तो यह कि यहूदी इस वाक़िए को अपना कारनामा और अपने लिए फ़ख़्र की चीज़ समझते हैं और ईसाई इससे बनी इसराईल के यहूदियों की एक लानत के क़ाबिल जद्दोजेहद यक़ीन करते हैं।

यहूदी और ईसाई दोनों का मिला-जुला बयान है कि यहूदी सरदारों और काहिनों को यह पता चला कि इस वक़्त यसूअ् लोगों की भीड़ से अलग अपने शागिर्दों के साथ एक बन्द मकान में मौजूद हैं। यह मौक़ा बेहतरीन है, उसको हाथ से जाने न दीजिए। तुरन्त ही ये लोग मौक़े पर पहुंच गए और चारों तरफ़ से यसूअ् का घेराव करके यसूअ् को गिरफ़्तार कर लिया और तौहीन व तज़लील करते हुए प्लातीस के दरबार में ले गए, ताकि वह उनको सूली पर लटकाए और अगरचे प्लातीस ने यसूअ् को बेक़सूर समझकर छोड़ देना चाहा, मगर बनी इसराईल के जोश दिलाने पर मजबूर होकर सिपाहियों के हवाले कर दिया। सिपाहियों ने उनको कांटों का ताज पहनाया, मुंह पर थूक, कोड़े लगाए और हर तरह की तौहीन व तज़लील करने के बाद मुज्रिमों की तरह सूली पर लटका दिया और दोनों हाथों में मीख़ें ठोंक दीं। सीने को बरछी की अनी से छेद दिया और इस बेबसी की हालत में उन्होंने यह कहते हुए जान दे दी, *'ऐली, ऐली लिमा सबक़तनी'* (ऐ मेरे ख़ुदा! ऐ मेरे ख़ुदा! तूने मुझ को क्यों छोड़ दिया?)

तफ़्सील में थोड़े बहुत फ़र्क़ के साथ यही फ़र्ज़ की हुई दास्तान बाक़ी तीनों इंजीलों में भी ज़िक्र की गई है। चारों इंजीलों की इस मुत्तफ़क़ा मगर फ़र्ज़ी दास्तान के पढ़ने के बाद तबियत पर क़ुदरती असर यह पड़ता है कि हज़रत मसीह की मौत इंतिहाई बेकसी और बे-बसी की हालत में दर्दनाक तरीक़े से हुई, अगरचे अल्लाह के पाक और मुक़द्दस बन्दों के लिए यह कोई ताज्जुब की बात न थी, बल्कि अल्लाह के दरबार में पहुंच रखने वालों के लिए इस क़िस्म की कड़ी आज़माइशों का मुज़ाहरा अक्सर होता रहा है, लेकिन इस वाक़िए का यह पहलू उसके फ़र्ज़ किए हुए और गढ़े हुए होने पर खुले दिन की तरह गवाह है कि हज़रत यसूअ् ने एक अ़ज़्म वाले पैग़म्बर बल्कि भले मानस की तरह इस वाक़िए को सब्र और अल्लाह की रिज़ा के साथ अंगेज़ नहीं किया, बल्कि एक इंतिहाई मायूस इंसान की तरह शिक्वा करते-करते जान दे दी। 'ऐली ऐली लिमा सबक़तनी' कहते हुए जान दे देना मायूसी और शिकवे की वह सूरतेहाल है जो किसी भी तरह हज़रत मसीह ﷺ के शायाने शान नहीं कही जा सकती।

फिर इस वाक़िए का यह पहलू भी कम हैरत में डालने वाला नहीं है कि इंजील के क़ौल के मुताबिक़ यसूअ् मसीह ने इस हादसे से पहले तीन बार अल्लाह तआला से दरख़्वास्त की, ऐ मेरे बाप! अगर हो सके तो यह (मौत का) प्याला मुझ से टल जाए।' और जब यह दरख़्वास्त किसी तरह क़ुबूल न हुई तो मायूस होकर यह कहना पड़ा, 'अगर यह मेरे पिए बग़ैर नहीं टल सकती तो तेरी मर्ज़ी पूरी हो।'

हैरत में डालने वाली तो यह बात है कि जब अक़ीदा 'कफ़्फ़ारा' के मुताबिक़ हज़रत मसीह का यह मामला अल्लाह और उसके बेटे (अल अयाज़ु बिल्लाह) के दर्मियान तै शुदा था तो फिर इस दरख़्वास्त का क्या मतलब और अगर बशरी तक़ाज़े के तौर पर था तो अल्लाह की मर्ज़ी मालूम हो जाने और इस पर क़नाअ़त कर लेने के बाद फिर यह बेसब्र और मायूस इंसानों की तरह जान देने की क्या वजह?

यहूदियों की गढ़ी हुई इस दास्तान को चूंकि ईसाइयों ने क़ुबूल कर लिया, तो यहूदी फ़ख़्र व ग़ुरूर करते हुए इस पर बहुत ख़ुश हैं और कहते हैं कि मसीह नासरी अगर 'मसीह मौऊद' होता हो अल्लाह तआला इस बेबसी और बेकसी के साथ उसको हमारे हाथ में न देता कि वह मरते वक़्त तक अल्लाह से शिकवा करता रहा कि उसको बचाए, मगर अल्लाह ने उसकी कोई मदद न की, हलांकि हमारे बाप-दादा उस वक़्त भी काफ़ी भड़काते रहे कि अगर तू हक़ीक़त में अल्लाह का बेटा और मसीह मौऊद है तो क्यों तुझ को अल्लाह ने हमारे हाथों इस ज़िल्लत से न बचा लिया।

वाकिया यह है कि ईसाइयों के पास, जबकि इस चुभते हुए इलज़ाम का कोई जवाब न था और वाक़िए की इन तफ़्सीली बातों को मान लेने के बाद 'कफ़्फ़ारा अक़ीदे' की कोई क़ीमत बाक़ी नहीं रह जाती थी, तब उन्होंने वाक़िए की इन तफ़्सीलों के बाद एक पारा बयान का और इज़ाफ़ा किया।

यूहन्ना की इंजील में है—

'लेकिन जब उन्होंने यसूअ् के पास आकर कर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें न तोड़ दीं, मगर उनमें से एक सिपाही ने भाले से उसकी पसली छेदी और फ़ौरी तौर पर उससे ख़ून और पानी बह निकला....

इन बातों के बाद अरमतीया के रहने वाले यूसुफ़ ने जो यसूअ़ का शागिर्द था, यहूदियों के डर से ख़ुफ़िया तौर पर प्लातीस से इजाज़त चाही कि यसूअ् की लाश ले जाए। प्लातीस ने इजाज़त दे दी पस वह आकर उसकी लाश ले गया और नेकदेमस भी आया, जो पहले यसूअ़ के पास रात को गया था और पचास सेर के क़रीब मरावर रऊद मिला हुआ लाया। पस उन्होंने यसूअ़ की लाश को लेकर उसे सूती कपड़े में ख़ुश्बूदार चीज़ों के साथ कफ़नाया जिस तरह कि यहूदियों में कफ़न-दफ़न करने का दस्तूर है और जिस जगह उसे सलीब दी गई, वहां एक बाग़ था और उस बाग़ में एक नई क़ब्र थी, जिसमें अभी कोई रखा न गया था, पस उन्होंने यहूदियों की तैयारी के दिन की वजह से यसूअ् को वहीं रख दिया।

हफ़्ते के पहले दिन मरयम मगदलेनी ऐसे तड़के, कि अभी अंधेरा ही था, क़ब्र पर आई और पत्थर को क़ब्र से हटा हुआ देखा, पस वह शमऊन पितरस और उसके दूसरे शागिर्द के पास जिसे यसूअ् अज़ीज़ रखता था, दौड़ी हुई गई और उनसे कहा कि ख़ुदावन्द को क़ब्र से निकाल ले गए और हमें मालूम नहीं कि उसे कहां रख दिया ....लेकिन मरयम बाहर क़ब्र के पास खड़ी रोती रही और जब रोते-रोते क़ब्र की तरफ़ झुक के अन्दर नज़र की तो दो फ़रिश्तों को सफ़ेद पोशाक पहने हुए एक को सरहाने और दूसरे को पांयती बैठे देखा, यहां यसूअ् की लाश पड़ी थी। उन्होंने उससे कहा, ऐ औरत! तू क्यों रोती है?

उसने उनसे कहा, इसलिए कि मेरे ख़ुदावन्द को उठा ले गए और मालूम नहीं कि उसे कहां रखा। यह कहकर वह पीछे फिरी और यसूअ़ को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यसूअ् है। यसूअ़ ने उससे कहा, मरयम! वह फिर कर उससे इबरानी ज़ुबान में बोली 'रब्बूनी' यानी ऐ उस्ताद! यसूअ़ ने उसे कहा, मुझे न छू, क्योंकि मैं अब तक बाप के पास ऊपर नहीं गया, लेकिन मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कहो कि मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के और अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास ऊपर जाता हूं। मरयम मगदलेनी ने आकर शागिर्दों को ख़बर दी कि मैंने ख़ुदावन्द को देखा और उसने मुझसे ये बातें कहीं।

फिर उसी दिन, जो हफ़्ते का पहला दिन था, शाम के वक़्त जब वहां

के दरवाज़े, जहां शागिर्द थे, यहूदियों के डर से बन्द थे, यसूअ़ आ कर बीच में खड़ा हुआ और उसने कहा कि तुम्हारी सलामती हो और यह कर उसने अपने हाथ और पसली उन्हें दिखाई, पस शार्गिद ख़ुदावन्द को देखकर ख़ुश हुए।

यसूअ़ ने फिर उनसे कहा कि तुम्हारी सलामती हो, जिस तरह बाप ने मुझे भेजा है, उसी तरह मैं भी तुझे भेजता हूं और यह कह उनको फूंका और उनसे कहा, 'रुहुल कुदूस', 'लो....' (इंजील यूहन्ना, बाब 18 आयतें 33, 34, 38 से 44 तक और बाब 2, आयत 1 से 22 तक)

हर एक आदमी मामूली ग़ौर व फ़िक्र के बाद आसानी से समझ सकता है कि बयान का यह पारा बयान के पहले हिस्से के साथ बे-रब्त और क़तई तौर पर बेजोड़ है, बल्कि यह अन्दाज़ा लगाना ही मुश्किल हो जाता है कि ये दोनों तफ़्सीलें एक ही शख़्स से मुताल्लिक़ हैं, क्योंकि बयान का पहला पारा एक ऐसी शख़्सियत का नक़्शा है जो बेबस व बेकस, मायूस और अल्लाह से शिकायत करने वाली नज़र आती है और बयान का दूसरा हिस्सा ऐसी हस्ती का रोशन चेहरा पेश करती है जो ख़ुदाई सिफ़तों से मुत्तसिफ़ ज़ाते बारी की मुक़र्रब और पेश आने वाले वाक़ियों से मुतमइन और मसरूर है, बल्कि उनके वाक़े होने की तमन्ना करने वाली और उनको अपने फ़र्ज़ की अदायगी का अहम हिस्सा समझती है

बबीं तफ़ावुत रह अज़ कुजास्त ता बकुजा

बहरहाल हक़ीक़त चूंकि दूसरी थी और बड़े अर्से के बाद 'कफ़्फ़ारे' के अक़ीदे' की बिदअ़त ने ईसाइयों को उसके ख़िलाफ़ इस गढ़े हुए अफ़साने के लिखने पर मजबूर कर दिया, इसलिए क़ुरआन ने हज़रत मरयम और हज़रत ईसा के मुताल्लिक़ दूसरे गोशों की तरह इस गोशे से भी जिहालत व तारीकी का परदा हटाकर हक़ीक़त हाल के रोशन चेहरे को जलवा-आरा करना ज़रूरी समझा और उसने अपना वह फ़र्ज़ अंजाम दिया, जिसको दुनिया के मज़हबों की तारीख़ में क़ुरआन की दावते तज्दीद व इस्लाह कहा जाता है।

उसने बताया कि जिस ज़माने में बनी इसराईल, पैग़म्बरे हक़ और रसूले ख़ुदा (ईसा बिन मरयम) के ख़िलाफ़ ख़ुफ़िया तदबीरों और साज़िशों में मसरूफ़

और उन पर नाज़ां थे, उसी ज़माने में खुदा-ए-बरतर के क़ानूने क़ज़ा व क़ ने यह फ़ैसला लागू कर दिया कि कोई ताक़त और मुखालिफ़ क़ूवत ईसा बि मरयम पर क़ाबू नहीं पा सकती और हमारी मुहकम तदबीर उसके दुश्मनों हर 'मक्र' (चाल) से बचाए रखेगी और नतीजा यह निकला कि जब बन इसराईल ने उनपर नरग़ा किया तो उनको ख़ुदा के पैग़म्बर पर किसी तर दस्तरस हासिल न हो सकी और उनको तमाम हिफ़ाज़त के साथ उठा लिय गया और जब बनी इसराईल मकान में घुसे तो सूरतेहाल उन पर मुश्तबह हो गई और वे ज़िल्लत व रुसवाई के साथ अपने मक़्सद में नाकाम रहे और इस तरह ख़ुदा ने अपना वायदा पूरा कर दिया जो ईसा बिन मरयम की हिफ़ाज़त के लिए किया गया था।

इसकी तफ़्सील यह है कि जब ईसा ने यह महसूस फ़रमाया कि अब बनी इसराईल के कुफ़्र व इंकार की सरगर्मियां इस दर्जा बढ़ गईं कि वे मेरी तौहीन, तज़लील, बल्कि क़त्ल के लिए साज़िशें कर रहे हैं, तो उन्होंने ख़ासतौर से एक मकान में अपने हवारियों को जमा किया और उनके सामने सूरतेहाल का नक़्शा पेश फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, इम्तिहान की घड़ी सर पर है, कड़ी आज़माइश का वक़्त है, हक़ को मिटाने की साज़िशें पूरे ज़ोरों पर हैं, अब मैं तुम्हारें दर्मियान ज़्यादा नहीं रहूंगा, इसलिए मेरे बाद दीने हक़ पर जमाव उसके फैलाव और बढ़ोत्तरी और यारी मदद का मामला सिर्फ़ तुम्हारे साथ जुड़ने वाला है, इसलिए मुझे बताओ कि ख़ुदा के रास्ते में सच्चा मददगार कौन-कौन है?

हवारियों ने यह हक़ कलाम सुन कर कहा, हम सभी ख़ुदा के दीन के मददगार हैं, हम सच्चे दिल से ख़ुदा पर ईमान लाए हैं और अपनी ईमानी सच्चाई का आप ही को गवाह बनाते हैं और यह कहने के बाद इंसानी कमज़ोरियों के पेशे नज़र अपने दावे पर ही बात ख़त्म नहीं कर दी, बल्कि अल्लाह तआला के दरबार में हाथ उठा कर दुआ करने लगे कि जो कुछ हम कह रहे हैं, तू उस पर हमको जमा और हमको अपने दीन के मददगारों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

इस तरफ़ से मुतमइन होकर अब हज़रत ईसा (अलै॰) दावत व इर्शाद के अपने फ़रीज़े (कर्त्तव्य) के साथ-साथ इस इंतिज़ार में रहे कि देखिए दुश्मनों की

सरगर्मियां क्या रुख़ अख़्तियार करती है और अल्लाह का फ़ैसला क्या होता है? अल्लाह ने इस सिलसिले में क़ुरआन के ज़रिए यहूदियों और ईसाइयों के ग़लत ज़न्न व गुमान के ख़िलाफ़ 'इल्म व यक़ीन की रोशनी' बख़्शते हुए यह भी बताया कि जिस वक़्त दुश्मन अपनी ख़ुफ़िया चालों में लगे हुए थे, उसी वक़्त हमने भी अपनी कामिल क़ुदरत की ख़ुफ़िया चाल के ज़रिए यह फ़ैसला कर लिया कि ईसा बिन मरयम के बारे में हक़ के दुश्मनों की चाल का कोई पेंच भी कामियाब नहीं होने दिया जाएगा और बेशक अल्लाह तआला की कामिल क़ुदरत की छिपी तदबीरों के मुक़ाबले में किसी को पेश नहीं किया जा सकेगा, इसलिए कि उसकी तदबीर से बेहतर कोई तद्बीर हो ही नहीं सकती।

तर्जुमा—'और उन्होंने (यहूदियों ने ईसा के ख़िलाफ़) ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह ने (यहूदियों की धोखेबाज़ियों के ख़िलाफ़) ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह सबसे बेहतर ख़ुफ़िया तदबीर का मालिक है।' (3 : 54)

अरबी डिक्शनरी में 'मक्र' के मानी ख़ुफ़िया तद्बीर (चाल) और धोखा करने के हैं, और क़ायदा 'मुशाकला' के मुताबिक़ जब कोई आदमी किसी के जवाब या दिफ़ाअ़ (Defence) में ख़ुफ़िया तद्बीर करता है तो वह अख़्लाक़ और मज़हब की निगाह में कितनी ही अच्छी तदबीर क्यों न हो, उसको भी 'मक्र' ही कहा जाएगा जैसा कि हर भाषा के मुहावरे में बोला जाता है 'बुराई का बदला बुराई है' हालांकि हर आदमी यह यक़ीन रखता है कि बुराई करने वाले के जवाब मे उतने ही मुक़ाबले का जवाब देना अख़्लाक़ और मज़हब दोनों की निगाह में 'बुराई' नहीं है, फिर भी दोनों को हमशक्ल दिखा दिया जाता है। इसी को 'मुशाकला' कहते हैं और यह अच्छे कलाम का एक हिस्सा समझा जाता है।

ग़रज़ ख़ुफ़िया तदबीर दोनों तरफ़ से थी, एक तरफ़ बुरी, दूसरी तरफ़ बेहतर तदबीर, साथ ही एक तरफ़ अल्लाह की कामिल तदबीर थी, जिसमें कमी और कमज़ोरी का इम्कान नहीं और दूसरी तरफ़ धोखे और फ़रेब की ख़ामियां थीं जो मकड़ी के जाल की तरह बिखर कर रह गईं।

आख़िर वह वक़्त आ पहुंचा कि बनी इसराईल के सरदारों, काहिनों और

फ़क़ीहों ने हज़रत ईसा ﷺ का एक बन्द मकान में घेराव कर लिया। आप और हवारी एक मकान में बन्द हैं और दुश्मन चारों तरफ़ से घेराव किए हुए हैं, इसलिए कुदरती तौर पर अब यह सवाल पैदा हुआ कि वह क्या शक्ल हो जिससे दुश्मन नाकाम रहे और हज़रत ईसा ﷺ को किसी तरह की तक्लीफ़ भी न पहुंचे, ताकि अल्लाह कि हिफ़ाज़त का वायदा और उसकी भली तदबीर पूरी हो, तो उसके बारे में कुरआन ने बताया कि बेशक ख़ुदा का वायदा पूरा हुआ और उसकी मज़बूत तदबीर ने ईसा को दुश्मनों के हाथों से हर तरह महफ़ूज़ रखा और सूरत यह पेश आई कि उस नाज़ुक घड़ी में हज़रत ईसा को अल्लाह की वह्य ने यह ख़ुशख़बरी सुनाई, 'ईसा ख़ौफ न कर, तेरी मुद्दत पूरी की जाएगी (यानी तुमको दुश्मन क़त्ल नहीं कर सकेंगे और न तुम इस वक़्त मौत से दो चार होगे) और होगा यह कि मैं तुझको अपनी तरफ़ (मला-ए-अ़ला की तरफ़) उठा लूंगा और उन काफ़िरों से हर तरह तुझको पाक रखूंगा, (यानी ये तुझ पर किसी क़िस्म का क़ाबू न पा सकेंगे) और तेरे मानने वालों को इन काफ़िरों पर हमेशा ग़ालिब रखूंगा,(यानी बनी इसराईल के मुक़ाबले में क़ियामत तक ईसाई और मुसलमान ग़ालिब रहेंगे और उनको कभी इन दोनों पर हाकिमाना इक़्तिदार नसीब नहीं होगा, फिर अंजामे कार मेरी तरफ़ (मौत के बाद) लौट आना है। पस मैं इन बातों पर हक़ का फैसला दूंगा, जिनके बारे में तुम आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे हो।

तर्जुमा– *'(वह वक़्त ज़िक्र के लायक़ है) जब अल्लाह तआ़ला ने ईसा से कहा, ऐ ईसा! बेशक मैं तेरी मुद्दत को पूरा करूंगा और तुझको अपनी तरफ़ उठा लेने वाला हूं और तुझको काफ़िरों (बनी इसराईल) से पाक रखने वाला हूं और जो तेरी पैरवी करेंगे उनको तेरे इंकार करने वालों पर क़ियामत तक के लिए ग़ालिब रखने वाला हूं, फिर मेरी तरफ़ ही लौटना है, फिर मैं उन बातों का फ़ैसला करूंगा जिनके बारे में (आज) तुम झगड़ रहे हो।'* (3 : 55)

तर्जुमा– *(क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला हज़रत ईसा को अपने एहसानों को गिनाते हुए फ़रमाएगा) और वह वक़्त याद करो जब मैंने बनी इसराईल को तुझ से रोक दिया (यानी वे किसी तरह तुझ पर क़ाबू न पा सके) जबकि तू उनके पास मोजज़े लेकर आया और उनमें से काफ़िरों ने कह दिया*

'यह तो जादू के सिवा और कुछ नहीं है।' (5 : 110)

तो अब जबकि हज़रत ईसा को यह इत्मीनान दिला दिया गया कि इस ज़बरदस्त घेराव के बावजूद दुश्मन तुमको क़त्ल न कर सकेंगे और तुमको ग़ैबी हाथ मला-ए-आला की ओर उठा लेगा और इस तरह दीन के दुश्मनों के नापाक हाथों से आप हर तरह महफ़ूज़ कर दिए जाएंगे, तो इस जगह पहुंच कर एक दूसरा सवाल पैदा हुआ कि यह किस तरह हुआ और वाक़िए ने क्या शक्ल अख़्तियार कर ली? क्योंकि यहूदी और ईसाई कहते हैं कि मसीह को सूली पर लटकाया और मार भी डाला। तब कुरआन ने बताया कि मसीह बिन मरयम के क़त्ल और फांसी की पूरी दास्तान बिल्कुल ग़लत और झूठ है, बल्कि असल मामला यह है कि जब मसीह को ज़िंदा ही मला-ए-आला की ओर उठा लिया गया और उसके बाद दुश्मन मकान के अन्दर घुस पड़े, तो उन पर सूरते हाल मुश्तबह कर दी गई और वे किसी तरह न जान सके कि आख़िर इस मकान में से मसीह कहाँ चला गया'?

तर्जुमा—*'और (यहूदी मलऊन क़रार दिए गए) अपने इस क़ौल पर कि हमने मसीह ईसा बिन मरयम पैग़म्बरे ख़ुदा को क़त्ल कर दिया। हालांकि उन्होंने न उसको क़त्ल किया और न सूली पर चढ़ाया, बल्कि (ख़ुदा की ख़ुफ़िया तदबीर के बदौलत) असल मामला उन पर शक के घेरे में आ गया और जो लोग उसके क़त्ल के बारे में झगड़ रहे हैं, बेशक वे उस (ईसा) की ओर से शक में पड़े हुए हैं। उनके पास हक़ीक़ते हाल के बारे में ज़न्न (अटकल) की पैरवी के सिवा इल्म की रोशनी नहीं है। उन्होंने ईसा को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी जानिब (मला-ए-आला की जानिब) उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।* (4 : 157-158)

कुरआन का वह बयान है जो यहूदियों और ईसाइयों के गढ़े हुए फ़साने (कहानी) के ख़िलाफ़ उसने हज़रत ईसा बिन मरयम के मुताल्लिक़ दिया है। अब दोनों बयान आपके सामने हैं और अद्ल व इंसाफ़ का तराज़ू आपके हाथ में। पहले हज़रत मसीह की शख़्सियत और उनकी दावत व इर्शाद के मिशन को तारीख़ी हक़ीक़तों की रोशनी में मालूम कीजिए और उसके बाद एक बार फिर उन तफ़्सीली वाक़ियों पर नज़र डालिए जो एक अज़्म वाले पैग़म्बर,

अल्लाह के दरबार का क़रीबी और ईसाइयों के बातिल अक़ीदे के मुताबिक़ ख़ुदा के बेटे को ख़ुदा के फ़ैसले के सामने मायूस, बेचैन, बेयार व मददगार और ख़ुदा की शिकायत करने वाले ज़ाहिर करते हैं और साथ ही बयान के इस टकराव पर भी ग़ौर फ़रमाइए कि एक ओर कफ़्फ़ारा अक़ीदे की बुनियाद सिर्फ़ इस पर क़ायम है कि हज़रत मसीह ख़ुदा का बेटा बनकर आया ही इस ग़रज़ से कि सूली पर चढ़ कर दुनिया के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गए और दूसरी तरफ़ फांसी और मसीह को क़त्ल की दास्तान इस बुनियाद पर खड़ी की गई है कि जब वायदा किया गया वह वक़्त आ पहुंचा है तो ख़ुदा का यह फ़र्ज़ी बेटा अपनी हक़ीक़त और दुनिया में वजूद पाने को यकायक भुला करके *'ऐली-ऐली लिमा सबक़तनी'* का हसरत भरा जुम्ला ज़ुबान से कहता है और अल्लाह की मर्ज़ी पर अपनी नाख़ुशी ज़ाहिर करता हुआ नज़र आता है। क्या किसी आदमी को यह सवाल करने का हक़ नहीं है कि अगर ईसाइयों के बयान किए गए वाक़ियों के दोनों हिस्से सही और दुरुस्त हैं तो इन दोनों में आपस में यह टकराव कैसा और एक दूसरे के मुताबिक़ न होने के क्या मानी?

पस अगर एक हक़ीक़त देखनेवाली और दूर तक पहुंच रखने वाली निगाह इन तमाम पहलुओं को सामने रखकर और वाक़िए और हालात की इन तमाम कड़ियों को आपस में जोड़ कर इस मसले को समझे तो वह हक़ की तस्दीक़ को सामने रखकर बे-झिझक यह फ़ैसला करेगा कि बाइबिल की यह दास्तान टकराव वाली और गढ़ी हुई दास्तान है और क़ुरआन ने इस सिलसिले में जो फ़ैसला दिया है वही सही और सच्चा फ़ैसला है।

तारीख़ गवाह है कि हज़रत मसीह के बाद से सेंट-पाल के पहले तक ईसाई 'यहूदियों' की इस बकवास भरी दास्तान से बिल्कुल बे-ताल्लुक़ थे, लेकिन जब सेंट-पाल (पोला स रसूल) ने तसलीस (तीन ख़ुदा को मानना) और कफ़्फ़ारे पर नए ईसाई धर्म की बुनियाद रखी तो कफ़्फ़ारे के अक़ीदे को मज़बूत बनाने के लिए यहूदियों की इस बकवास भरी दास्तान को भी मज़हब का हिस्सा बना दिया।

हज़रत ईसा ﷺ से मुताल्लिक़ कुछ तफ़्सीरी और दूसरे अहम मस्अले क़ुरआन के वाज़ेह बयान व मा क़-त-लूहु व मास-ल-बूहु के बाद 'वलाकिन शुब्बि-ह लहुम' की तफ़्सीर

अब एक बात बाक़ी रह जाती है कि सूरः निसा की आयत 4 : 157 में *'व मा क़-त लूहु व मा स-ल-बूहु'*, के बाद *'वलाकिन शुब्बिहा लहुम'* की तफ़्सीर क्या है? यानी वह क्या चीज़ थी जो यहूदियों पर छा गई, तो क़ुरआन इसका जवाब इस जगह पर भी और आले इमरान में भी एक ही देता है और वह 'र फ़-अ इलस्समाइ' है। आले इमरान में इसको वायदे की शक्ल में ज़ाहिर किया 'व राफ़िउ-क इलैय' (3-55) और निसा में वायदा पूरा करने की सूरत में यानी 'बल र-फ़-अ-ल्लाहु इलैहि' (4 : 158) जिसका ख़ुलासा यह निकलता है कि घेराव के वक़्त जब हक़ का इन्कार करने वाले गिरफ़्तारी के लिए अन्दर घुसे तो वहां ईसा को न पाया। यह देखा तो सख़्त हैरान हुए और किसी तरह अन्दाज़ा न लगा सके कि सूरतेहाल क्या पेश आई और इस तरह 'वला किन शुब्बि-ह लहुम' जैसे बनकर रह गए। इसके बाद क़ुरआन कहता है—

'इन्नल्लज़ी-नख़्तलफ़ू फ़ीहि लफ़ी शक्किम मिन्हु मालहुम बिही मिन इलिमन इल्लत्तिबाइज़्ज़न्नि व मा क़-त-लूहु यक़ीना (4 : 157) इसमें एक जैसी हालत जो पेश आई उसका नक़्शा बयान किया गया है और इससे दो बातें खुलकर सामने आती हैं—

एक यह कि यहूदी इस सिलसिले में इस तरह शक में पड़ गए थे कि गुमान और अटकल के सिवा उनके पास इल्म व यक़ीन की कोई शक्ल बाक़ी नहीं रह गई थी और—दूसरी बात यह कि उन्होंने किसी को क़त्ल करके यह मशहूर किया कि उन्होंने 'मसीह' को क़त्ल कर दिया या फिर आयत मुहम्मद सल्ल० के ज़माने के यहूदियों का हाल बयान कर रही है।

पस क़ुरआन के इन वाज़ेह एलानों के बाद जो हज़रत मसीह की हिफ़ाज़त के सिलसिले में किए गए हैं और जिनको तफ़्सील के साथ ऊपर की

सतरों में बयान कर दिया गया है, इन दोनों छोटी-छोटी चीज़ों की तफ़्सील का तअल्लुक़ सहाबा के आसार और तारीख़ी रिवायतों पर रह जाता है और इस सिलसिले में सिर्फ़ उन्हीं रिवायतों और आसार को माना जाएगा जो अपनी सेहत और रिवायत के साथ-साथ इन बुनियादी तफ़्सीलों से न टकराती हों, जिनका ज़िक्र क़ुरआन मजीद ने अलग-अलग जगहों पर खुल कर किया है और 'क़ुरआन का बाज़ बाज़ की तफ़्सीर कर देता है' के उसूल पर, जिनसे यह साबित होता है कि हज़रत ईसा को दुश्मन हाथ तक न लगा सके और वह महफ़ूज़ मला-ए-आला की तरफ़ उठा लिए गए और जैसा कि हयाते ईसा की बहस में अभी क़ुरआनी नस्स (आयतों) से साबित होगा कि वह क़ियामत वाक़े होने के लिए 'निशान' हैं और इसलिए दो बार इस दुनिया में वापस आकर और ज़िम्मेदारी की ख़िदमत अंजाम देकर फिर मौत से दो चार होंगे।

क़त्ल किए गए और फांसी पर चढ़ाए गए शख़्स से मुताल्लिक़ आसार व तारीख़ की जो मिली-जुली रिवायतें हैं, उनका हासिल यह है कि सनीचर की रात में हज़रत ईसा अलैहि० बैतुल मक़्दिस के एक बन्द मकान में अपने हवारियों के साथ मौजूद थे कि बनी इसराईल की साज़िश से दमिश्क़ के बुतपरस्त बादशाह ने हज़रत ईसा अलैहि० की गिरफ़्तारी के लिए एक दस्ता भेजा। उसने आकर घेराव कर लिया। इसी बीच अल्लाह तआला ने ईसा को मला-ए-आला की जानिब उठा लिया। जब सिपाही अन्दर दाख़िल हुए तो उन्होंने हवारियों में एक ही शख़्स को हज़रत ईसा अलैहि० की जैसी शक्ल का पाया और उसको गिरफ़्तार करके ले गए और फिर उसके साथ वह सब कुछ हुआ, जिसका ज़िक्र पिछले पन्नों में हो चुका है।

इन्हीं रिवायतों में कुछ उसका नाम यूदस बिन करियायूता बयान करते हैं और कुछ जरजस और दूसरे दाऊद बिन लोज़ा कहते हैं। ये और दूसरी तफ़्सील न क़ुरआन में ज़िक्र की गई है और न मर्फ़ूअ़ हदीसों में, इसलिए ज़ौक़ वालों को अख़्तियार है कि वे सिर्फ़ क़ुरआन ही की इन थोड़ी-सी बातों पर भरोसा करें कि हज़रत का आसमान पर उठाया जाना और हर तरह दुश्मनों से हिफ़ाज़त, के साथ ही साथ यहूदियों पर मामला मुश्तबह होकर किसी दूसरे को क़त्ल करना, यहूदियों और ईसाइयों के पास इस सिलसिले में इल्म व

यक़ीन से महरूम होकर गुमान और शक व शुबहा में मुब्तला हो जाना और क़ुरआन का हक़ीक़ते वाक़िया को इल्म व यक़ीन की रोशनी में ज़ाहिर कर देना, ये सभी साबित की हुई हक़ीक़तें हैं। *'वलाकिन शुब्बि-हलहुम'* और *'इन्नल्लज़ी-नख़्तलफ़ू- फ़ीहि लफ़ी शक्किम मिन्हु* (आयत) की तफ़्सीर में इन रिवायतों की तफ़्सील को मान लें और यह समझ कर मानें कि इन आयतों की तफ़्सीर उन तफ़्सीलों पर टिकी हुई नहीं है बल्कि यह बात ज़्यादा है जो आयतों की सही तफ़्सीर की ताईद में है—

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी

सूरः आले इमरान, माइदा और निसा की इन आयतों से यह साबित हो चुका है कि हज़रत ईसा से मुताल्लिक़ अल्लाह की हिक्मत का यह फ़ैसला हुआ कि उनको जिन्दा हालत में ही मला-ए आला की ओर उठा लिया जाए और वह दुश्मनों और काफ़िरों से महफ़ूज़ उठा लिए गए, लेकिन क़ुरआन ने इस मसले में सिर्फ़ इसी को काफ़ी नहीं समझा, बल्कि मौक़े-मौक़े से उनकी ज़िंदगी पर आयतों के ज़रिए कई जगह रोशनी डाली है और उन जगहों में इस ओर भी इशारे किए हैं कि हज़रत मसीह की लम्बी ज़िंदगी और आसमान की तरफ़ उठाए जाने में क्या हिक्मत काम कर रही थी, ताकि हक़ वालों के दिल ईमान की ताज़गी से खिल जाएं और बातिल वाले अपनी दिल की तंगी पर शरमाए।

ल यूमिनन्–न बिही क़ब–ल मौतिही

तर्जुमा— *'और कोई अह्ले किताब में से बाक़ी न रहेगा, मगर यह कि वह ज़रूर ईमान लाएगा ईसा पर और उस (ईसा) की मौत से पहले और वह (ईसा) क़ियामत के दिन उन पर (अह्ले किताब पर) गवाह बनेगा।'* (4 : 159)

इस आयत से पहले की आयतों में वही ज़िक्र किया गया वाक़िया आया है—जो ऊपर आया है कि ईसा को न सूली पर चढ़ाया गया और न क़त्ल किया गया बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी ओर उठा लिया, यह यहूदियों और ईसाइयों के उस अक़ीदे के रद्द में है जो उन्होंने झूठे तरीक़े से और अटकल

से क़ायम कर लिया था, उनसे कहा जा रहा है कि हज़रत मसीह के मुताल्लिक़ फांसी पर चढ़ाए जाने और क़त्ल किए जाने का दावा लानत के क़ाबिल है, क्योंकि बुहतान और लानत जुड़वां हैं। इसके बाद इस आयत में पहली बात की तस्दीक़ में इस जानिब तवज्जोह दिलाई जा रही है कि आज अगर इस मलऊन अक़ीदे पर फ़ख़्र कर रहे हो, तो वह वक़्त भी आने वाला है जब ईसा बिन मरयम अल्लाह तआला की हिक्मत व मस्लहत को पूरा करने के लिए ज़मीनी कायनात पर वापस तश्रीफ़ लाएंगे और उसे आंखों से देखने के वक़्त अह्ले किताब (यहूदी-ईसाई) में से हर एक मौजूद हस्ती को क़ुरआन के फ़ैसले के मुताबिक़ ईसा ﷺ पर ईमान लाने के सिवा कोई चारा-ए-कार बाक़ी न रहेगा और फिर जब वे अपनी ज़िंदगी की मुद्दत ख़त्म करके मौत की गोद में चले जाएंगे, तो क़ियामत के दिन अपनी उम्मत (अह्ले किताब) पर उसी तरह गवाह होंगे, जिस तरह तमाम नबी और रसूल अपनी-अपनी उम्मतों पर गवाह बनेंगे।

यह हक़ीक़त कुछ छिपी हुई नहीं है कि हज़रत ईसा के बारे में अगरचे यहूदी व ईसाई दोनों फ़ांसी और क़त्ल के वाक़िए से इत्तिफ़ाक़ करते हैं, लेकिन इस सिलसिले में दोनों के अक़ीदे की बुनियाद क़तई तौर पर आपस में टकराने वाले उसूल पर क़ायम है। यहूदी हज़रत मसीह को गढ़ कर बातें बनाने वाले और झूठा कहते और दज्जाल समझते हैं और इसलिए फ़ख़्र करते हैं कि उन्होंने यसूअ मसीह को फांसी पर भी चढ़ाया और फिर इस हालत में मार भी डाला।

इसके ख़िलाफ़ ईसाइयों का अक़ीदा यह है कि दुनिया का पहला इंसान आदम गुनाहगार था और सारी दुनिया गुनाहगार थी, इसलिए ख़ुदा की सिफ़त 'रहमत' ने इब्नियत (बेटा होने) की शक्ल अख़्तियार की और उसको दुनिया में भेजा, ताकि वह यहूदियों के हाथों सूली पर चढ़े और मारा जाए और इस तरह कायनात माज़ी (भूतकाल) और मुस्तक़्बिल (भविष्य) के गुनाहों का 'कफ़्फ़ारा' बनकर दुनिया की नजात की वजह बने।'

सूरः निसा की आयतों में क़ुरआन ने साफ़-साफ़ कह दिया कि हज़रत मसीह ﷺ के क़त्ल के दावे की बुनियाद किसी भी अक़ीदे की बुनियाद पर

हो, लानत के क़ाबिल और ज़िल्लत और घाटे की वजह है। ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बर को झूठा समझकर यह अ़क़ीदा रखना भी लानत की वजह और ख़ुदा के बन्दे और मरयम के पेट से पैदा इंसान को ख़ुदा का बेटा बना कर और 'कफ़्फ़ारे' का झूठा अ़क़ीदा गढ़ कर मसीह को फांसी पाया हुआ और क़त्ल किया हुआ मान लेना भी गुमराही और इल्म व हक़ीक़त के ख़िलाफ़ अटकल का तीर है और इस सिलसिले में सही और हक़ीक़त पर मब्नी फ़ैसला वही है, जो क़ुरआन ने किया है और जिसकी बुनियाद 'इल्म व यक़ीन और वह्य इलाही' पर क़ायम है।

हज़रत ईसा की ज़िंदगी और उनका उतरना और सहीह हदीसें

क़ुरआन ने जिन मोजज़ों भरे इख़्तिसार के साथ हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने, आज की ज़िंदगी और क़ियामत की अ़लामतें बन कर आसमान से उतरने के बारे में साफ़ किया है, हदीसों के सही ज़ख़ीरे में इन आयतों की ही तफ़्सील बयान करके इन हक़ीक़तों को रोशन किया गया है। चुनांचे इमामे हदीस बुख़ारी व मुस्लिम, दोनों ही ने (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम) हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यह रिवायत सनद के कई तरीक़ों से नक़ल की है—

"अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया— 'उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, ज़रूर वह वक़्त आने वाला है कि तुम में ईसा बिन मरयम, हाकिम व आ़दिल बन कर उतरेंगे, वह सलीब को तोड़ेंगे और ख़िंज़ीर (सूअर) को क़त्ल करेंगे (यानी मौजूदा ईसाई धर्म को मिटाएंगे और जिज़या उठा देंगे (यानी अल्लाह के निशान को देख लेने के बाद इस्लाम के सिवा कुछ भी क़ुबूल नहीं होगा और इस्लामी अहकाम में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जिज़या का हुक्म उसी वक़्त तक के लिए है) और माल इतना ज़्यादा होगा कि कोई उसके क़ुबूल करने वाला नहीं मिलेगा और ख़ुदा के सामने एक सज्दा दुनिया और उसमें जो कुछ है, उससे ज़्यादा क़ीमत रखेगा (यानी माल की ज़्यादती की वजह से ख़ैरात व सदक़ात के मुक़ाबले में नफ़्ल इबादतों की अहमियत बढ़ जाएगी)

हो, लानत के क़ाबिल और ज़िल्लत और घाटे की वजह है। ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बर को झूठा समझकर यह अक़ीदा रखना भी लानत की वजह और ख़ुदा के बन्दे और मरयम के पेट से पैदा इंसान को ख़ुदा का बेटा बना कर और 'कफ़्फ़ारे' का झूठा अक़ीदा गढ़ कर मसीह को फांसी पाया हुआ और क़त्ल किया हुआ मान लेना भी गुमराही और इल्म व हक़ीक़त के ख़िलाफ़ अटकल का तीर है और इस सिलसिले में सही और हक़ीक़त पर मब्नी फ़ैसला वही है, जो क़ुरआन ने किया है और जिसकी बुनियाद 'इल्म व यक़ीन और वह्य इलाही' पर क़ायम है।

हज़रत ईसा की ज़िंदगी और उनका उतरना और सहीह हदीसें

क़ुरआन ने जिन मोजज़ों भरे इख़्तिसार के साथ हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने, आज की ज़िंदगी और क़ियामत की अलामतें बन कर आसमान से उतरने के बारे में साफ़ किया है, हदीसों के सही ज़ख़ीरे में इन आयतों की ही तफ़्सील बयान करके इन हक़ीक़तों को रोशन किया गया है। चुनांचे इमामे हदीस बुख़ारी व मुस्लिम, दोनों ही ने (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम) हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यह रिवायत सनद के कई तरीक़ों से नक़ल की है—

"अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया— 'उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, ज़रूर वह वक़्त आने वाला है कि तुम में ईसा बिन मरयम, हाकिम व आदिल बन कर उतरेंगे, वह सलीब को तोड़ेंगे और ख़िंज़ीर (सूअर) को क़त्ल करेंगे (यानी मौजूदा ईसाई धर्म को मिटाएंगे और जिज़या उठा देंगे (यानी अल्लाह के निशान को देख लेने के बाद इस्लाम के सिवा कुछ भी क़ुबूल नहीं होगा और इस्लामी अहकाम में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिज़या का हुक्म उसी वक़्त तक के लिए है) और माल इतना ज़्यादा होगा कि कोई उसके क़ुबूल करने वाला नहीं मिलेगा और ख़ुदा के सामने एक सज्दा दुनिया और उसमें जो कुछ है, उससे ज़्यादा क़ीमत रखेगा (यानी माल की ज़्यादती की वजह से ख़ैरात व सदक़ात के मुक़ाबले में नफ़्ल इबादतों की अहमियत बढ़ जाएगी)

फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम (क़ुरआन से इसकी गवाही) चाहो तो यह आयत पढ़ो *(व इम-मिन अहलिल किताब—आयत)* और कोई अहले किताब में से न होगा, मगर (ईसा की) मौत से पहले उस पर (ईसा पर) ज़रूर ईमान ले आएगा और वह (ईसा ﷺ) क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगा।' (किताबुल अंबिया)

बुख़ारी और मुस्लिम में नाफ़ेअ मौला अबू क़तादा अंसारी रज़ि० की सनद से हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की यह रिवायत नक़ल की गई है—

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुममें इब्ने मरयम उतरेंगे और इस हालत में उतरेंगे कि तुम्हीं में से एक आदमी तुम्हारी इमामत कर रहा होगा। (किताबुल अंबिया)

यह और इसी क़िस्म की हदीस का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा है जो हज़रत ईसा बिन मरयम ﷺ, पैग़म्बर बनी इसराईल से मुताल्लिक़ हदीस और तफ़्सील की किताबों में नक़ल की गई है और सनद की ताक़त के लिहाज़ से सहीह और हसन से कम दर्जा नहीं रखतीं और शोहरत और तवातुर के एतबार से जिनका यह हाल है कि इमाम तिर्मिज़ी के मुताबिक़ हदीस के हाफ़िज़ इमादुद्दीन बिन कसीर, हदीस के हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी और दूसरे हदीस के इमाम, सोलह जलीलुल क़द्र सहाबा रज़ि० ने इनको रिवायत किया है जिनमें से कुछ सहाबा का यह दावा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये बातें सैकड़ों सहाबा के मज्मा में ख़ुत्बा देकर फ़रमाईं और ये सहाबा किराम बिना किसी इंकार और बेगानेपन के इन रिवायतों को ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की ख़िलाफ़त के दौर में एलानिया सुनाते थे। चुनांचे इन जलीलुल क़द्र सहाबा से जिन हज़ारों सहाबा ने सुना, उनमें से ये ऊंचे दर्जे की हस्तियां ज़िक्र के क़ाबिल हैं जिनमें का हर आदमी हदीस की रिवायत में ज़ब्त व हिफ़्ज़, सक़ाहत और इल्मी बड़प्पन को सामने रखकर इमामत व क़ियामत का दर्जा रखता है। जैसे सईद बिन मुसय्यिब, नाफ़ेअ मौला अबू क़तादा, हंज़ला बिन अली अल-अस्लमी, अब्दुर्रहमान बिन आदम, अबू सलमा अबू अम्र, अता बिन बश्शार, अबू सुहैल, मूसिर बिन ग़िफ़ारा, यह्या बिन अबी

अम्र, जुबैर बिन नुजै़र, उर्वः बिन मसऊद सक़फ़ी, अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अंसारी, अबू ज़रआ, याक़ूब बिन आमिर, अबू नसरा, अबुत्तुफ़ैल रहमतुल्लाहि अलैहिम०

फिर इन बड़े उलेमा और नामी मुहद्दिसीन (यानी हदीस के नामी माहिर) से जिन अनगिनत शागिर्दों ने सुना, उनमें से हदीस-रिवायतों के तबक़े में, जिनको हदीस और कुरआन के इल्मों की जानकारी का बुलन्द रुतबा हासिल है और अपन-अपने वक़्त के 'इमामुल हदीस' और 'अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस' मान लिए गए हैं, कुछ के नाम नीचे दिए जाते हैं—

इब्ने शहाब ज़ोहरी, सुफ़ियान बिन ऐनीया, लैस, इब्ने अबी ज़ेब, औज़ाई, क़तादा, अब्दुर्रहमान बिन अबी उम्र, सुहैल, जबला बिन सुहैल, अ़ली बिन ज़ैद, अबू राफ़ेज़, अब्दुर्रहमान बिन जुबैर, नोमान बिन सालिम, मामर, अब्दुल्लाह बिन उबैदुल्लाह (रहमहुमुल्लाह)

ग़रज़ इन रिवायतों और सही हदीसों को सहाबा, ताबिईन, तबा ताबिईन, यानी वक़्त के बेहतरीन तबक़े में इस दर्जा जगह मिल चुकी थी और वह बग़ैर किसी इंकार के इस दर्जा कुबूल करने के लायक़ हो चुकी थी कि हदीस के इमामों के नज़दीक हज़रत ईसा अलै॰ की ज़िंदगी और उतरने से मुताल्लिक़ इन हदीसों के मानी व मतलब के लिहाज़ से तवातुर का दर्जा हासिल था और इसीलिए वे बे-झिझक इस मसले को 'अहादीसे मुतवातिरा' से साबित और मुसल्लम कहते थे और हक़ीक़त भी यह है कि रिवायते हदीस के तमाम तबक़ों और दर्जों में इन रिवायतों को 'तलक़्क़ा बिल क़ुबूल' का यह दर्जा हासिल रहा है कि हर दौर में उसके रावियों में 'हदीस के इमाम' और रिवायते हदीस के 'मदार' (आधार) नज़र आते हैं। यही वजह है कि सहाबा पर मौक़ूफ़ मरफ़ूअ़ हदीसों और रिवायतों के नक़ल करने वालों में इमाम अहमद, इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा जैसे हदीस के इमामों के नाम शामिल हैं और वे सब इन रिवायतों के सहीह और हसन होने पर एक राय रखते हैं और यही वजह है कि हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने और ज़िंदगी और आसमान से उतरने पर उम्मत मुत्तफ़िक़ हो चुकी है, चुनांचे अक़ाइद व कलाम के इल्म की मशहूर किताब 'अ़क़ीदा सफ़ारीनी' में उम्मत के इस इत्तिफ़ाक़ को खोलकर बयान किया गया है।

'और क़ियामत की निशानी में से तीसरी निशानी यह है कि हज़रत (मसीह) ईसा बिन मरयम आसमान से उतरेंगे और उनका आसमान से उतरना किताब (क़ुरआन) सुन्नत (हदीस) और इज्मा-ए-उम्मत से क़तई तौर पर साबित है। (क़ुरआन व हदीस से उतरना साबित करने के बाद फ़रमाते हैं) जहां तक उम्मत के इज्माअ् का ताल्लुक़ है, तो इसमें ज़रा शुबहा नहीं कि हज़रत ईसा ﷺ के आसमान से उतरने पर उम्मत का इज्माअ है और इस बारे में इस्लामी शरीअत के मानने वालों में से किसी एक का भी इख़्तिलाफ़ मौजूद नहीं, अलबत्ता फ़लसफ़ियों और मुलहिदों (अल्लाह के न मानने वालों) ने ईसा ﷺ के उतरने का इंकार किया है और इस्लाम में उनका इंकार बिल्कुल बे-मानी है।

उतरने के वाक़िए सहीह हदीसों की रोशनी में

हज़रत ईसा के उतरने से मुताल्लिक़ सहीह हदीसों से जो तफ़्सील सामने आती है, उनको तर्तीब के साथ यों बयान किया जा सकता है—

क़ियामत का दिन अगरचे तै है, मगर अल्लाह के अलावा किसी को इसका इल्म नहीं है और यह अचानक वाक़े होगा। 'और उनके पास क़ियामत का इल्म है।' (31 : 34) 'और क़ियामत का इल्म ख़ुदा ही को है।' *'हत्ता इज़ा जाअत हुमुस्साअतु बग़ततन'* (6 : 31) (यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत की घड़ी आ जाएगी) *'ला तातीकुम इल्ला बग़ततन'* (7 : 187) 'क़ियामत तुम पर नहीं आएगी, मगर अचानक।' और जिब्रील ﷺ की हदीस में है, *'मल मसऊलु अन्हा बि आलम मिन साइल'* (जिब्रील से फ़रमाया) क़ियामत के बारे में आपसे ज़्यादा मुझे भी इल्म नहीं। जो थोड़ा बहुत इल्म आपको है, उसी क़दर मुझको भी इल्म है। और एक हदीस में है, तुम मुझसे क़ियामत के बारे में सवाल करते हो, तो इसका इल्म तो अल्लाह को ही है।' अलबत्ता क़ुरआन ने और सहीह हदीसों ने कुछ ऐसी निशानियां बयान की हैं जो क़ियामत के क़रीब पेश आएंगी और उनसे सिर्फ़ उसके नज़दीक हो जाने का पता चल सकता है। 'क़ियामत की शर्तों में एक बड़ी निशानी हज़रत ईसा

का मला-ए-आला से उतरना है, जिसकी तफ़्सील यह है—

'मुसलमानों और ईसाइयों के दर्मियान ज़बरदस्त लड़ाई चल रही होगी मुसलमानों की क़ियादत व इमामत रसूलुल्लाह ﷺ में से एक ऐसे आदमी के हाथ में होगी जिसका लक़ब मेंहदी होगा। इस लड़ाई के दर्मियान ही में मसीह ज़लालत दज्जाल का ख़ुरूज होगा, यह यहूदी नस्ल का और काना होगा। क़ुदरत के करिश्मे ने उसकी पेशानी पर 'का-फ़ि-र' (काफ़िर) लिख दिया होगा जिसको ईमान वाले ईमानी फ़रासत (बुद्धि मत्ता) से पढ़ सकेंगे और उसके झूठ-फ़रेब से जुदा रहेंगे। यह पहले तो ख़ुदाई का दावा करेगा और शोबदे बाज़ों की तरह शोबदे दिखाकर लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करेगा, मगर इस सिलसिले को कामियाब न देखकर कुछ दिनों के बाद 'मसीहे हिदायत' होने का दावा करेगा। यह देख कर यहूदी बड़ी तायदाद में, बल्कि क़ौमी हैसियत से उसकी पैरवी करने वाले बन जाएंगे और यह इसलिए होगा कि यहूदी 'मसीहे हिदायत' का इन्कार करके उनके क़त्ल का दावा कर चुके हैं और मसीहे हिदायत के आने के आज तक इंतिज़ार में है। इसी हालत में एक दिन दमिश्क़ (सीरिया) की जामा मस्जिद में मुसलमान मुंह अंधेरे नमाज़ के लिए जमा होंगे, नमाज़ के लिए इक़ामत हो रही होगी और मेहदी मौऊद इक़ामत के मुसल्ले पर पहुंच चुके होंगे कि अचानक एक आवाज़ सबको अपनी ओर मुतवज्जह कर लेगी। मुसलमान आंख उठाकर देखेंगे तो सफ़ेद बादल छाया हुआ नज़र आएगा और थोड़ी-सी देर में यह दिखाई देगा के ईसा दो पीली ख़ूबसूरत चादरों में लिपटे हुए और फ़रिश्तों के बाज़ुओं पर सहारा दिए हुए मला-ए-आला से उतर रहे हैं। फ़रिश्ते उनको मस्जिद के मीनारे पर उतार देंगे और वापस चले जाएंगे।

अब हज़रत ईसा का ताल्लुक़ ज़मीनी कायनात के साथ दोबारा जुड़ जाएगा और वह फ़ितरत के आम क़ानून के मुताबिक़ मस्जिद के सेहन में उतरने के लिए सीढ़ी तलब कर रहे होंगे, फ़ौरन तामील होगी और वह मुसलमानों के साथ नमाज़ की सफ़ों में आ खड़े होंगे। मुसलमानों का इमाम (मेंहदी मौऊद) ताज़ीम के तौर पर पीछे हटकर हज़रत ईसा से इमामत की दरख़्वास्त करेगा। आप फ़रमाएंगे कि यह इक़ामत तुम्हारे लिए कही गई है,

इसलिए तुम ही नमाज़ पढ़ाओ।

नमाज़ से फ़रागत के बाद जब मुसलमानों की इमामत हज़रत ईसा के हाथों में आ जाएगी और वे हथियार लेकर मसीहे ज़लालत (दज्जाल) के क़त्ल के लिए रवाना हो जाएंगे और शहर पनाह के बाहर उसको बाब लुद्द पर सामने पाएंगे। दज्जाल समझ जाएगा कि उसके फ़रेब और ज़िंदगी के ख़ात्मे का वक़्त आ पहुंचा, इसलिए डर की वजह से रांग की तरह पिघलने लगेगा और हज़रत ईसा आगे बढ़कर उसको क़त्ल कर देंगे और फिर जो यहूदी दज्जाल के साथ रहने से क़त्ल से बच जाएंगे वे और ईसाई सब इस्लाम कुबूल कर लेंगे और मसीहे हिदायत की सच्ची पैरवी के लिए मुसलमानों के कंधे से कंधा मिला कर खड़े नज़र आएंगे, उसका असर मुश्रिक जमाअतों पर भी पड़ेगा और इस तरह उस ज़माने में इस्लाम के अलावा कोई मज़हब बाक़ी नहीं रहेगा।

इन वाक़ियों के कुछ दिनों के बाद याजूज-माजूज निकलेंगे और अल्लाह की हिदायत के मुताबिक़ हज़रत ईसा. ﷺ मुसलमानों को उस फ़ित्ने से बचाए रखेंगे। हज़रत ईसा ﷺ की हुकूमत का ज़माना चालीस साल रहेगा और इस बीच वह इज़दवाजी ज़िंदगी (दाम्पत्य जीवन) बसर करेंगे और उनकी हुकूमत के दौर में अद्ल व इंसाफ़ और ख़ैर व बरकत का यह हाल होगा कि बकरी और शेर एक घाट में पानी पिएंगे और बदी और शरारत के अनासिर (तत्व) दब कर रह जाएंगे। (इब्ने असाकिर)

नोट— और मुस्लिम में है कि हुकूमत का दौर सात साल रहेगा।

मसीह ﷺ की वफ़ात

हुकूमत के चालीस साल के दौर के बाद ईसा ﷺ का इंतिक़ाल हो जाएगा और नबी अकरम ﷺ के पहलू में दफ़न होंगे, हज़रत अबू हुरैरह ﷺ की लम्बी हदीस में है कि—

'फिर वह दुनिया की कायनात पर उतर कर चालीस साल क़ियाम करेंगे और इसके बाद वफ़ात पा जाएंगे और मुसलमान उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे और उनको दफ़न करेंगे।

—इब्ने हिब्बान

और तिर्मिज़ी ने मुहम्मद बिन यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम व

सनदे हसन के सिलसिले से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० से यह रिवायत नक़ल की है—

'अब्दुल्लाह बिन सलाम ने फ़रमाया, तौरात में मुहम्मद ﷺ की सिफ़त (हुलिया व सीरत) का ज़िक्र किया गया है और यह भी लिखा है कि ईसा बिन मरयम उनके साथ (पहलू में) दफ़न होंगे।

हज़रत ईसा और आख़िरत का दिन

सूरः माइदा में हज़रत ईसा के अलग-अलग हालात का ज़िक्र किया गया है। फिर सूरः का आख़िर भी उन्हीं के तज़्किरे पर ख़त्म होता है। इस जगह अल्लाह तआला ने एक तो क़ियामत के उस वाक़िए का नक़्शा खींचा है, जब नबियों से उनकी उम्मतों के बारे में सवाल होगा और वे बड़े अदब से अपनी लाइल्मी ज़ाहिर करेंगे और अर्ज़ करेंगे, 'ऐ ख़ुदा! आज का दिन तूने इसलिए मुक़र्रर फ़रमाया है कि हर मामले में हक़ीक़तों को सामने रखकर फ़ैसला सुनाए और हम चूंकि सिर्फ़ ज़ाहिरी चीज़ों ही पर हुक्म लगा सकते हैं और दिलों और हक़ीक़तों को देखने वाला तेरे सिवा कोई नहीं, इसलिए आज हम क्या गवाही दे सकते है, सिर्फ़ यही कह सकते हैं कि हमें कुछ मालूम नहीं, तू ग़ैब का जानने वाला हैं, इसलिए तू ही सब कुछ जानता है।

तर्जुमा—*वह दिन (ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकि अल्लाह तआला पैग़म्बरों को जमा करेगा, फिर कहेगा (अपनी-अपनी उम्मतों की जानिब से) क्या जवाब दिए गए? वे (पैग़म्बर) कहेंगे, (तेरे इल्म के सामने) हम कुछ नहीं जानते।*

(5 : 109)

अगली आयतों में हज़रत ईसा के जवाब का ज़िक्र किया गया है। उसके बयान का तरीक़ा नबियों के जवाब के साथ मेल खाता है—

तर्जुमा—*और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जब अल्लाह तआला ईसा बिन मरयम से कहेगा, क्या तूने लोगों (बनी इसराईल) से कह दिया था कि मुझको और मेरी मां को अल्लाह के अलावा ख़ुदा बना लेना। ईसा कहेंगे, 'पाकी तुझको ही शोभा देती है, मेरे लिए कैसे मुम्किन था कि मैं वह बात कहता जो कहने के लायक़ नहीं।' अगर यह बात मैंने उनसे कही होती तो*

यक़ीनन तेरे इल्म में होगी, (इसलिए कि) तू वह सब कुछ जानता है, जो मेरे जी में है और मैं तेरा भेद नहीं पा सकता। बेशक तू ग़ैब की बातों का ख़ूब जानने वाला है। मैंने उस बात के अलावा कि जिसका तू ने मुझे हुक्म दिया, उनसे और कुछ नहीं कहा, वह यह कि सिर्फ़ अल्लाह ही की पूजा करो जो मेरा और तुम्हारा सब का रब है।' और मैं उन पर उस वक़्त तक का गवाह हूं जब तक मैं उनके दर्मियान रहा। फिर जब तूने मुझको क़ब्ज़ कर लिया, तब तू ही उन पर निगहबान था और तू हर चीज़ पर गवाह है। अगर तू इन सबको अज़ाब चखाए तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर इनको बख़्श दे, पस तू ही बेशक ग़ालिब हिक्मत वाला है (5 : 116-118)

हज़रत ईसा जब अपना जवाब दे चुकेंगे, तब अल्लाह तआला यह इर्शाद फ़रमाएगा—

तर्जुमा—*अल्लाह तआला फ़रमाएगा, यह ऐसा दिन है कि जिसमें सच्चों की सच्चाई ही काम आ सकती है। उन्हीं के लिए जन्नत है जिनके नीचे नहरें बहती हैं और जिनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे और वे अल्लाह से राज़ी और अल्लाह उनसे राज़ी (का ऊंचा मुक़ाम पाएंगे) यह बहुत ही बड़ी कामियाबी है।* (5 : 119)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का जवाब एक जलीलुल क़द्र पैग़म्बर की शान की अज़मत के ठीक मुताबिक़ है। वह पहले अल्लाह के दरबार में उज़्र रखेंगे कि यह कैसे मुम्किन था कि मैं ऐसी नामुनासिब बात कहता जो क़तई तौर पर हक़ के ख़िलाफ़ है 'सुब-हा-न-क मा यकूनु ली अन अक़ू-ल मा लै-स ली बिहक़्क़' फिर अदब के लिहाज़ के तौर पर अल्लाह के हक़ीक़ी इल्म के सामने अपने इल्म को हेच बे-इल्मी जैसा ज़ाहिर करेंगे इन कुन्तु कुलतुहू फ-क़द अलिम-तहू मा फ़ी नफ़्सी वाला आलमुमा फ़ी नफ़्सि-क इन्न-क अन-त अल्लामुल गुयूब० और इसके बाद अपने फ़र्ज़ की अंजामदेही का हाल गुज़ारिश करेंगे, *'मा क़ुल्तु लहुम इल्ला मा अमरतनी बिही अनिअ़ बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम'* और फिर उम्मत ने हक़ की इस दावत का क्या जवाब दिया, उसके मुताल्लिक़ ज़ाहिर बातों की गवाही का भी इस ढंग से ज़िक्र करेंगे जिसमें उनकी गवाही अल्लाह की गवाही के मुक़ाबले में बे कीमत नज़र आए। 'व कुन्त अलैहिम शहीदम-मा दुमतु फ़ीहिम फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन-त अन्तर्रक़ी-ब

अ़लैहीम व अन-त अ़ला कुल्लि शैइन शहीद' और इसके बाद यह जानते हुए कि उम्मत में मोमिनीन क़ानितीन भी हैं और मुन्किरीन ज़ाहिदीन भी— अज़ाब के वाक़े होने और मग़्फ़िरत तलब करने का इस अंदाज से ज़िक्र करेंगे जिससे एक तरफ़ अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए अ़मल के बदले के क़ानून की ख़िलाफ़वर्ज़ी भी न मालूम हो और दूसरी ओर उम्मत के साथ रहमत व शफ़क़त के जज़्बे का जो तक़ाज़ा है वह पूरा हो जाए'। *इन तुअ़ज़्ज़िब हुम फ़-इन्नहुम इबादुक व इन तग़्फ़िर लहुम, फ़-इन्न-क अन्तल अ़ज़ीज़ुल हकीम०*

जब हज़रत ईसा अ़र्ज़दाश्त या जवाब के मज़्मून को ख़त्म कर चुके तो रब्बुल आ़लमीन ने अपने अ़दल के क़ानून का यह फ़ैसला सुना दिया, ताकि रहमत व मग़्फ़िरत के हक़दार को मायूसी न पैदा हो, बल्कि मुसर्रत व शादमानी से, उनके दिल रोशन हो जाएं और अज़ाब के हक़दार ग़लत उम्मीदें न क़ायम कर सकें। 'क़ालल्लाहु हाज़ा यौमुन यनफ़उस्सादिक़ी-न सिदक़ुहुम' (आयत) (5 : 119)

इन तमाम तफ़्सीलों का हासिल यह है कि इन आयतों का आगा-पीछा साफ़-साफ़ बता देता है कि यह वाक़िया क़ियामत के दिन पेश आएगा और हज़रत ईसा के मला-ए-आला पर उठाए जाने के वक़्त नहीं पेश हुआ।

हज़रत ईसा की इस्लाह की दावत और बनी इसराईल के फ़िरक़े

पीछे यह बताया जा चुका है कि अल्लाह ने हज़रत ईसा अलै॰ को इंजील अ़ता की थी और यह इलहामी किताब असल में तौरात का तक्मिला (Supplement) थी। यानी हज़रत ईसा की तालीमी बुनियाद अगरचे तौरात पर ही क़ायम थी, मगर यहूद की गुमराहियों, मज़हबी बग़ावतों और सरकशियों की वजह से, जिन सुधारों की ज़रूरत थी, अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मसीह की मारफ़त इंजील की शक्ल में उनके सामने पेश कर दिया था। हज़रत मसीह को नबी बनाए जाने से पहले यहूदियों की एतक़ादी और अ़मली गुमराहियां अगरचे बहुत ज़्यादा हो गई थीं और हज़रत मसीह अलै॰ ने नबी बनाए जाने के बाद इन सबके सुधार के लिए क़दम उठाया भी, फिर कुछ अहम बुनियादी बातें ख़ास तौर पर इस्लाह के क़ाबिल थीं, जिन्हें सुधारने के लिए हज़रत

मसीह बहुत ज़्यादा सरगर्म अ़मल रहे।

1. यहूदियों की एक जमाअ़त कहती थी कि नेक-बद की जज़ा-सज़ा इस दुनिया में मिल जाती है, बाक़ी क़ियामत, आख़िरत, आख़िरत में जज़ा व सज़ा, हश्र व नश्र ये सब बातें ग़लत हैं। ये 'सदूक़ी' थे।

2. दूसरी जमाअ़त अगरचे इन तमाम चीज़ों को हक़ समझती थी, मगर साथ ही यह यक़ीन रखती थी कि अल्लाह से मिलने के लिए यह बिल्कुल ज़रूरी है कि दुनिया की लज़्ज़तों और दुनिया वालों से किनाराकश होकर सन्यासी का जीवन अपनाया जाए, चुनांचे वे बस्तियों से अलग ख़ानक़ाहों और झोपड़ियों में रहना पसन्द करते थे, मगर यह जमाअ़त हज़रत मसीह के नबी बनाए जाने से कुछ पहले अपनी यह हैसियत भी खो चुकी थी और अब 'दुनिया त्याग देने' के परदे में दुनिया की हर क़िस्म की गन्दगी में लथ-पत नज़र आती थी। ज़ाहिरी तौर पर रस्म व रिवाज ज़ाहिदों का-सा होता, मगर ये तंहाइयों में वह सब कुछ नज़र आता जिनसे खुले गुनाहगार भी एक बार शर्म से आंखें बंद कर लें, ये 'फ़रीसी' कहलाते थे।

तीसरी जमाअ़त मज़हबी रस्मों और हैकल की ख़िदमत से मुताल्लिक़ थी, लेकिन उनका भी यह हाल था कि जिन रास्तों और ख़िदमतों को 'अल्लाह के लिए' करना चाहिए था और जिन आमाल के नेक नतीजे ख़ुलूस पर टिके हुए थे, उनको तिजारती करोबार बना लिया था और जब तक हर एक रस्म और हैकल की ख़िदमत पर भेंट और नज़्र न ले लें, क़दम न उठाएं, यहां तक कि इस मुक़द्दस कारोबार के लिए उन्होंने तौरात के हुक्मों में भी घट-बढ़ कर दी थी, ये 'काहिन' थे।

4. चौथी जमाअ़त इन सब पर हावी और मज़हब की ठेकेदार थी। इस जमाअ़त ने जनता में धीरे-धीरे यह अ़क़ीदा पैदा कर दिया था कि मज़हब और दीन के उसूल व एतक़ाद कुछ नहीं हैं, मगर 'वह' जिनको वे सही कह दें, उनको यह अख़्तियार हासिल है कि वे हलाल को हराम और हराम को हलाल बना दें, दीन के हुक्मों में इज़ाफ़ा या कमी कर दें, जिसको चाहें जन्नत का परवाना लिख दें और जिसको चाहें जहन्नम की तहरीर दे दें। अल्लाह के यहां उनका फ़ैसला अटल और अनमिट है। ग़रज़ बनी इसराईल के 'अरबाबम मिन

दूनिल्लाह' बने हुए थे और तौरात के लफ़्ज़ी और मानवी हर क़िस्म की घट-बढ़ में इस दर्जा बहादुर थे कि उसको दुनियातलबी का मुस्तक़िल सरमाया बना लिया था और आम व ख़ास की ख़ुश्नूदी के लिए ठहराई हुई क़ीमत पर दीन के हुक्मों को बदल डालना उनका दीनी काम था, ये 'अहबार' या 'फ़क़ीह' थे।

ये थीं वे जमाअतें और ये थे उनके अक़ीदे और अमल जिनके दर्मियान हज़रत मसीह भेजे गए ताकि वह उन की इस्लाह करें। उन्होंने हर एक जमाअत के ग़लत अक़ीदों और अमलों का जायज़ा लिया, रहम व मुहब्बत के साथ उनके ऐबों और ख़राबियों पर उंगली उठाई, उनको सुधरने पर उभारा और उनके ख़्यालों, अक़ीदों और उनके अमलों और किरदारों की गन्दागियों को ढेर करके उनका रिश्ता कायनात के पैदा करने वाले अल्लाह के साथ दोबारा क़ायम करने की कोशिश की, मगर इन बदबख़्तों ने अपनी काली करतूतों में सुधार लाने से साफ़ इंकार कर दिया और न सिर्फ़ यह बल्कि उनको 'मसीह ज़लालत' कह कर उनकी हक़-व इर्शाद की दावत के दुश्मन और उनके ख़िलाफ़ साज़िशें करके उनकी जान को लग गए।

चारों इंजीलें

हज़रत मसीह पर जो इंजील नाज़िल हुई थी, उसके बारे में तमाम इल्म वालों का, जिनमें ख़ुद नसारा भी शामिल हैं, इत्तिफ़ाक़ है कि उनमें से कोई एक भी हज़रत मसीह पर उतरी हुई इंजील नहीं है, बल्कि यूनानी और उनसे नक़ल किए गए दूसरी ज़ुबानों के तर्जुमे हैं जो तब्दीली और घट-बढ़ का बराबर शिकार होते रहे हैं और सिर्फ़ यही नहीं कि ये चारों इंजीलें, इंजीले मसीह नहीं हैं, बल्कि किसी इल्मी, तारीख़ी और मज़हबी सनद से उनका मसीह के शागिर्दों का लिखा होना भी साबित नहीं है, बल्कि बाद के लिखने वालों की लिखी हुई हैं, अलबत्ता इन तर्जुमों में बाज़ नसीहतों और हिक्मत के मुक़ामों के सिलसिले में एक हिस्सा ऐसा ज़रूर है जो हज़रत मसीह (अलै॰) के इर्शाद से लिया गया है, इसलिए नक़ल में कहीं-कहीं असल की झलक नज़र आ जाती है।

(मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी ने मौजूदा इंजील के बारे में बहुत ज़ोरदार तहक़ीक़ पेश की है, जिसका यह हासिल है। मोरस बकाई ने 'इंजील, सांइस और क़ुरआन' में भी इंजील से मुताल्लिक़ तहक़ीक़ी बातें की हैं, जिस पर तवज्जोह दी जानी चाहिए)

क़ुरआन और इंजील

क़ुरआन मजीद की बुनियादी तालिम यह है कि जिस तरह अल्लाह एक है, उसी तरह उसकी सच्चाई भी एक ही है और वह कभी किसी ख़ास क़ौम, ख़ास जमाअ़त और ख़ास गिरोह की विरासत नहीं रही, बल्कि हर क़ौम और हर मुल्क में अल्लाह की रुश्द व हिदायत का पैग़ाम, एक ही बुनियाद पर क़ायम रहते हुए उसके सच्चे पैग़म्बरों या उसके नायबों के ज़रिए हमेशा दुनिया के लिए सीधे रास्ते की दावत देने वाला और उस तरफ़ बुलाने वाला रहा है और उसी का नाम 'सीधा रास्ता' और 'इस्लाम' है और क़ुरआन इसी भूले हुए सबक़ को याद दिलाने आया है और यही वह आख़िरी पैग़ाम है जिसने तमाम पुराने मज़हब की सच्चाइयों को अपने अन्दर समो कर पूरी ज़मीनी कायनात की हिदायत का बेड़ा उठाया है और अब इसलिए उसका इंकार गोया अल्लाह की तमाम सच्चाइयों का इंकार है। इसी बुनियादी तालीम के पेशेनज़र उसने हज़रत मसीह की शान की बड़ाई को सराहा, और यह माना कि बेशक इंजील इलहामी किताब और अल्लाह की किताब है, लेकिन साथ ही जगह-जगह दलीलों के साथ यह भी बतलाया कि अह्ले किताब उलेमा ने इसकी सच्ची तालीम को मिटा डाला, बदल डाला और हर क़िस्म की तब्दीली करके इसकी तालीम को शिर्क व कुफ़्र की तालीम बना दिया। लेकिन किसी किसी जगह पर अह्ले किताब को तौरात और इंजील के ख़िलाफ़ अमल पर मुलज़िम बनाते हुए मौजूदा तौरात व इंज़ील के हवाले भी देता है जिससे मालूम होता है कि क़ुरआन नाज़िल होते वक़्त असल नुस्ख़े भी, अगरचे बिगड़ी हुई शक्ल में ही क्यों न हो, पाए जाते थे, बहरहाल उस वक़्त भी ये दोनों किताबें लफ़्ज़ी और मानवी दोनों क़िस्म की तहरीफ़ात से इतनी बिगड़ चुकी थीं कि वे मूसा की तौरात और ईसा की इंज़ील कहलाने की हक़दार नहीं रही

थीं। चुनांचे क़ुरआन ने असल किताबों की अज़्मत और अह्ले किताब के हाथों उनकी तहरीफ़ और उनका बिगाड़ा जाना दोनों को खोल कर बयान किया है।

तर्जुमा—*(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) अल्लाह ने तुझपर किताब को उतारा हक़ के साथ, जो तस्दीक़ करने वाली है उन किताबों की जो उनके सामने हैं। और उतारा उसने तौरात और इंजील को (क़ुरआन से) पहले, जो हिदायत हैं लोगों के लिए और उतारा फ़ुरक़ान (हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाली)'* (3-3, 4)

तर्जुमा—*'और सिखाता है वह किताब को, हिक्मत को, तौरात को, इंजील को।'* (3 : 48)

तर्जुमा—*ऐ अह्ले किताब! तुम किस लिए इब्राहीम के बारे में झगड़ते हो और हाल यह है कि तौरात और इंजील का नुज़ूल नहीं हुआ, मगर इब्राहीम के बाद, पस क्या तुम इतना भी नहीं समझते?* (3 : 65)

तर्जुमा—*और पीछे भेजा हमने ईसा बिन मरयम को, जो तस्दीक़ करनेवाला है उस किताब की जो सामने है तौरात और दी हमने उसको इंजील जिसमें हिदायत और नूर है और अपने से पहली किताब की तस्दीक़ करती है और पूरी तरह हिदायत और नसीहत है परहेज़गारों के लिए और चाहिए कि अह्ले इंजील उसके मुताबिक़ फ़ैसले दें जो हमने इंजील में उतार दिया और जो अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के मुवाफ़िक़ फ़ैसला नहीं देता, पस यही लोग फ़ासिक़ हैं।'* (5 : 46-47)

तर्जुमा—*और अगर वे तौरात व इंजील को क़ायम रखते, (घटा-बढ़ा कर उनको बिगाड़ न डालते) और उसको क़ायम रखते, जो उसकी जानिब उनके परवरदिगार की जानिब से उतारा हुआ है तो अलबत्ता वे (फ़ारिग़ुल बाली के साथ) खाते अपने ऊपर से और अपने नीचे से, कुछ उनमें बीच का रास्ता अपनाने वाले अच्छे लोग हैं और अक्सर उनके बद-अमल हैं।'* (5-66)

तर्जुमा—*(ऐ मुहम्मद ﷺ!) कह दीजिए, ऐ अह्ले किताब! तुम्हारे लिए टिकने की कोई जगह नहीं है, जब तक तौरात और इंजील और उस चीज़ से जिसको तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर नाज़िल किया, क़ायम न करो (ताकि उसका नतीजा क़ुरआन की तस्दीक़ निकले)*

तर्जुमा—*'और जब मैंने तुझको (ऐ ईसा!) सिखाई किताबे हिक्मत तौरात और इंजील।'* (5-110)

तर्जुमा—*(भले लोग) वे शख़्स हैं जो पैरवी करते हैं रसूल की जो नबी उम्मी है और जिसका ज़िक्र अपने पास तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं।* (7 : 157)

तर्जुमा—*बेशक अल्लाह ने ख़रीद लिया है मोमिनों से उनकी जानें और उनके मालों को इस बात पर कि उनके लिए जन्नत है, वे अल्लाह के रास्ते में जंग करते हैं, पस क़त्ल करते हैं और क़त्ल होते हैं, उनके लिए अल्लाह का वायदा सच्चा है जो तौरात और इंजील में किया गया है।* (9 : 111)

ग़रज़ यह तारीफ़ व तौसीफ़ है उस तौरात और इंजील की जो तौराते मूसा' और 'इंजीले ईसा' कहलाने की हक़दार और हक़ीक़त में अल्लाह की किताब थीं, लेकिन यहूदियों और ईसाइयों ने इन इलहामी (आसमानी) किताबों के साथ क्या मामला किया, इसका हाल भी क़ुरआन ही की ज़ुबान से सुनिए।

तर्जुमा—*क्या तुम उम्मीद रखते हो कि वे तुम्हारी बात मान लेंगे, हालांकि उनमें एक गिरोह ऐसा था, जो अल्लाह का कलाम सुनता था, फिर उसको बदल डालता था बावजूद इस बात के कि वह उसके मतलब को समझता था और जान-बूझ कर घट-बढ़ करते थे।* (2 : 75)

तर्जुमा—*पस अफ़सोस उन (इल्म के दावेदारों) पर जिनका शेवा यह है कि ख़ुद अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर लोगों से कहते हैं, यह अल्लाह की तरफ़ से है और यह सब कुछ इसलिए करते हैं ताकि उसके मुआवज़े में एक हक़ीर-सी क़ीमत दुन्यवी फ़ायदे की हासिल करें। पस अफ़सोस उस पर जो कुछ वे लिखते हैं और अफ़सोस इस पर जो कुछ वे इसके ज़रिए से कमाते हैं।* (2 : 78)

तर्जुमा—*वे अह्ले किताब अल्लाह की किताब (तौरात और इंजील) के वाक़ियों को उनकी सही जगह से बदल डालते हैं, यानी लफ़्ज़ों में और उनके मानी में दोनों में तहरीफ़ यानी बिगाड़ पैदा करते हैं।* (5 : 13)

इनके अलावा 'समने क़लील' (मामूली पूंजी) के बदले अल्लाह को बेच देने से मुताल्लिक़ तो बक़रः, आले इमरान, निसा और तौबा में कई आयतें मौजूद हैं जिनका हासिल यह है कि यहूदी-ईसाई तौरात-इंजील को दोनों तरह बेचा करते थे, लफ़्ज़ों में बदलाव के ज़रिए भी और मानी में बदलाव के सिलसिले से भी, गोया सोने-चांदी के लालच मे आम व ख़ास की ख़्वाहिशों

के मुताबिक़ अल्लाह की किताब की आयतों में लफ़्ज़ और मानी दोनों पहलुओं से बदलाव उनके बेच देने की हैसियत रखती है, जिससे बढ़कर शक़ावत और बदबख़्ती का दूसरा कोई अमल नहीं और जो हर हाल में लानत के लायक़ है।

क़ुरआन और तस्लीस का अक़ीदा

कुरआन नाज़िल होने के वक़्त तमाम मसीही जिन बड़े फ़िरक़ों में तक़सीम थे सालूस के मुताल्लिक़ उनका अक़ीदा तीन अलग-अलग उसूलों पर टिका हुआ था, एक फ़िरक़ा कहता था कि मसीह ही ख़ुदा है और ख़ुदा ही मसीह की शक्ल में दुनिया में उतर आया है और दूसरा फ़िरक़ा कहता था कि मसीह इब्नुल्लाह (ख़ुदा का बेटा) है और तीसरा कहता था कि एक का भेद तीन में छिपा हुआ है— बाप, बेटा, मरयम और इस जमाअत में भी दो गिरोह थे और दूसरा गिरोह हज़रत मरयम की जगह 'रूहुल-कुद्दुस' को 'अक़्नूमे सालिस' कहता था, ग़रज़ वे हज़रत मसीह को 'सालिसे सलासा' (तीन का तीसरा) तस्लीम करते थे। इसलिए कुरआन की हक़ की सदा ने तीनों जमाअतों को अलग-अलग भी मुख़ातब किया है और एक साथ भी और दलीलों की रोशनी में मसीही दुनिया पर यह वाज़ेह किया है कि इस बारे में हक़ का रास्ता एक और सिर्फ़ एक है और वह यह कि मसीह मररयम के पेट से पैदा हुए हैं और इंसान और ख़ुदा के सच्चा पैग़म्बर और रसूल हैं। बाक़ी जो कुछ भी कहा जाता है, महज़ बातिल है, चाहे इसमें घटाया गया हो, जैसा कि यहूदियों 'का अक़ीदा है कि अल अयाज़ बिल्लाह (अल्लाह की पनाह) वह शोबदे बाज़ और झूठे थे या बढ़ाया गया हो जैसा कि ईसाइयों का अक़ीदा है कि वह ख़ुदा है और खुदा के बेटे हैं या तीन में तीसरे हैं।

कुरआन ने सिर्फ़ यही नहीं कहा कि ईसाइयों के रद्द करने वाले पहलू को ही इस सिलसिले में वाज़ेह क़िया हो, बल्कि इसके अलावा हज़रत मसीह की बुलन्द शान की असल हक़ीक़त क्या है और अल्लाह के नज़दीक उनको क्या क़ुर्बत हासिल है, इस पर भी नुमायां रोशनी डाली है, ताकि इस तरह यहूदियों के अक़ीदे का भी खंडन हो जाए और इफ़रात व तफ़रीत से जुदा राहे हक़ सामने नज़र आने लगे।

हज़रत मसीह अल्लाह के क़रीबी और बरगज़ीदा रसूल हैं

तर्जुमा—*मसीह ने कहा बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूं और उसने मुझको नबी बनाया और मुझको मुबारक ठहराया, जहां भी मैं रहूं और उसने मुझको नमाज़ की और ज़कात की वसीयत फ़रमाई, जब तक भी ज़िंदा रहूं और उसने मुझे मेरी मां के लिए नेक और भला बनाया और मुझको सख़्तगीर और बदबख़्त नहीं बनाया, मुझ पर सलामती हो, जब मैं पैदा हुआ, जब मैं मर जाऊं और जब हश्र के लिए ज़िंदा उठाया जाऊं।* (18 : 30 : 32)

तर्जुमा—*'वह (मसीह) नहीं है, मगर ऐसा बन्दा, जिस पर हमने इनाम किया और हमने उसको मिसाल बनाया है बनी इसराईल के लिए और अगर हम चाहते तो कर देते हम तुम में से फ़रिश्ते ज़मीन में चलने-फिरने वाले और बेशक वह (मसीह) निशान है क़ियामत के लिए, पस इस बात पर तुम शक न करो और मेरी पैरवी करो, यही सीधा रास्ता है।* (43 : 58-61)

तर्जुमा—*'और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं, तस्दीक़ करने वाला हूं जो मेरे सामने है तौरात और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की, जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद है।'* (61 : 6)

हज़रत मसीह न ख़ुदा हैं, न ख़ुदा के बेटे

तर्जुमा—*'बेशक उन लोगों ने कुफ़्र अख़्तियार किया जिन्होंने यह कहा, बेशक अल्लाह वही मसीह इब्ने मरयम है। कह दीजिए कि अगर अल्लाह यह इरादा कर ले कि मसीह बिन मरयम, मरयम और ज़मीनी कायनात पर जो कुछ भी है, सबको हलाक कर डाले, तो कौन आदमी है जो अल्लाह से (उसके ख़िलाफ़) किसी चीज़ के मालिक होने का दावा कर सके और अल्लाह के लिए ही बादशाही है आसमानों की और ज़मीन की, वह जो चाहता है, उसको पैदा कर सकता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।* (5 :17)

तर्जुमा—*बेशक उन लोगों ने कुफ़्र किया, जिन्होंने कहा, बेशक अल्लाह वही मसीह बिन मरयम है, हालांकि मसीह ने यह कहा, ऐ बनी इसराईल! अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, बेशक जो अल्लाह के साथ शरीक ठहराता है, पस यक़ीनन अल्लाह ने उस पर जन्नत*

को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है। (5 : 72)

तर्जुमा—'और उन्होंने कहा, अल्लाह ने 'बेटा' बना लिया है, वह तो इन बातों से पाक है, बल्कि (उसके ख़िलाफ़) अल्लाह के लिए ही है जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है, हर चीज़ अल्लाह के लिए ताबेदार है।'

(2 : 116)

तर्जुमा—'बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम की-सी है कि उसको मिट्टी से पैदा किया, फिर उसको कहा, हो जा, तो वह हो गया।'

(3 : 59)

तर्जुमा—ऐ अह्ले किताब! अपने दीनी मस्अले में हद से न गुज़रो और अल्लाह के बारे में हक़ के अलावा कुछ न कहो, बेशक मसीह बिन मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उसका कलिमा हैं जिसको उसने मरयम पर डाला (यानी बग़ैर बाप के उसके हुक्म से मरयम के पेट में वजूद मिला) और उसकी रूह हैं, पस अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीनों (अक़ानीम) ने कहा, इससे बाज़ आ जाओ, तुम्हारे लिए बेहतर होगा। बेशक अल्लाह एक है पाक है इससे कि उसका बेटा हो। उसी के लिए है (बिला ग़ैर की शिर्कत के) जो कुछ भी है आसमानों और ज़मीन में और काफ़ी है 'अल्लाह वकील' हो कर। (4 :171)

तर्जुमा—'वह (ख़ुदा) मूजिद (नए सिरे से बनाने वाला) है आसमानों और ज़मीन का, उसके लिए बेटा कैसे हो सकता है और न उसके बीवी है और उसने कायनात की हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ को जानने वाला है'। (6 : 102)

तर्जुमा—'मसीह बिन मरयम नहीं हैं मगर ख़ुदा के रसूल, बेशक उनसे पहले रसूल गुज़र चुके हैं और उनकी वालिदा सिद्दीक़ा हैं। ये दोनों खाना खाते थे। (यानी दूसरे इंसानों की तरह खाने-पीने वग़ैरह मामलों में भी वे मुहताज थे।) (5 : 75)

तर्जुमा—'हरगिज़ मसीह इससे नागवारी नहीं अख़्तियार करेगा, कि वह अल्लाह का बन्दा कहलाए और न क़रीबी फ़रिश्ते, यहां तक कि रूहुल क़ुद्स

(जिब्रील) नाक भौं चढ़ाएंगे और जो इबादत से नागवारी ज़ाहिर करे और घमंड करे, तो क़रीब है कि अल्लाह तआला उन सबको अपनी तरफ़ इकट्ठा करेगा यानी जज़ा व सज़ा के दिन सब हक़ीक़ते हाल खुल जाएगी।' (4 : 172)

तर्जुमा—*'और यहूदी कहते हैं कि उज़ैर ख़ुदा का बेटा है और ईसाई कहते हैं कि मसीह ख़ुदा का बेटा है। ये उनके मुंह की बातें हैं, रेस करने लगे अगले काफ़िरों की बात की, अल्लाह उनको हलाक करे, कहां से फिरे जाते है।'* (9 : 30)

तर्जुमा—*(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) कह दीजिए, अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज़ हस्ती है, न किसी का बाप है और न किसी का बेटा और कायनात में कोई उस जैसा नहीं है।* (112 : 1-3)

कुरआन ने इस सिलसिले में अपनी सच्चाई और अक़ीदे और अमल की इस्लाह का जो दलीलों के साथ वाज़ेह एलान किया, उसके पढ़ने के साथ-साथ यह बात भी तवज्जोह के क़ाबिल है कि मौजूदा किताब मुक़द्दस इंजील में मिलावट पैदा करने और बिगाड़ने के बावजूद जिस शक्ल व सूरत में आज मौजूद है, वह किसी एक जगह पर भी सालूस (Trinity) के इस अक़ीदे का पता नहीं देती, इसलिए तसलीस के अक़ीदे में ईसाइयों के लिए मौजूदा किताबे मुक़द्दस से भी कोई हुज्जत व दलील नहीं मिलती और इसलिए बग़ैर किसी शक व शुबहे के यह कहना हक़ है कि तसलीस का यह अक़ीदा बुतपरस्ती वाले अक़ीदों की मिलावट का नतीजा है।

कफ़्फ़ारा

मौजूदा मसीहियत (ईसाई धर्म) का दूसरा अक़ीदा, जिसने मसीही दीन की हक़ीक़त को बर्बाद कर डाला, 'कफ़्फ़ारे' का अक़ीदा है। इसकी बुनियाद इस कल्पना पर रखी गई है कि तमाम कायनात (जिसमें नेक लोग और नबी और रसूल सभी शामिल हैं) शुरू ही से गुनाहगार है। आख़िर अल्लाह की रहमत को जोश आया और उसकी मशीयत ने इरादा किया कि बेटे को दुनिया की कायनात में भेजे और वह सूली पर चढ़ा हुआ होकर पहले और आख़िरी तमाम कायनात के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाए और इस तरह दुनिया को

नजात और मुक्ति हासिल हो सके लेकिन इस अक़ीदे को ज़ोरदार बनाने के लिए कुछ ज़रूरी हिस्सों की ज़रूरत थी, जिनके बग़ैर यह इमारत नहीं खड़ी की जा सकती थी, इसलिए रसूल के ज़माने में सबसे पहले मसीही दीन ने यहूदी दीन के इस अक़ीदे को मान लिया कि उनको फांसी के तख़्ते पर भी चढ़ाया गया और मार भी डाला गया और इसको मान लेने के बाद दूसरा क़दम यह उठाया कि 'अल्लाह की सिफ़त रखने के बावजूद' मसीह का फांसी पाना और क़त्ल होना अपने लिए नहीं, बल्कि कायनात की निजात के लिए था। चुनांचे जब उस पर यह हादसा गुज़र गया तो उसने फिर 'अल्लाह होने' की चादर ओढ़ ली और आलमे लाहूत में बाप और बेटे के दर्मियान दोबारा लाहूती रिश्ता क़ायम हो गया।

पस जब मज़हब में एक अल्लाह के साथ सही अक़ीदा और नेक अमली गुम हो जाए और निजात का दारोमदार अमल व किरदार के बजाए 'कफ़्फ़ारे' पर क़ायम हो जाए, उसका नतीजा मालूम?

क़ुरआन ने इसी तरह जगह-जगह यह वाज़ेह किया है कि नजात के लिए अक़ीदे का सही होना यानी सही ख़ुदापरस्ती और नेक अमली के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है और जो आदमी भी इस 'सीधे रास्ते' को तर्क करके 'ख़ुशगुमानी' और वहम व गुमान को आदर्श बनाएगा और नेक अमली और सही ख़ुदा परस्ती पर न चलेगा, बिला शुबहा गुमराह है और सीधे रास्ते से पूरी तरह महरूम।

तर्जुमा—*जो लोग अपने को मोमिन कहते हैं और जो यहूदी हैं और जो ईसाई हैं और जो साबी हैं, उनमें से जो भी अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आया और उसने नेक अमल किए, तो यही वे लोग हैं, जिनका बदला उनके परवरदिगार के पास है, न उन पर डर छायेगा और न वे ग़मगीन होंगे।* (2 : 62)

यानी क़ुरआन की धर्मों और मिल्लतों में सुधार लाने की दावत का मक़्सद यह नहीं है कि यहूदी, ईसाई और साबी गिरोहों की तरह एक नया गिरोह 'मोमिन' के नाम से इस तरह इज़ाफ़ा कर दे कि गोया वह भी एक क़ौमी, नस्ली या मुल्की गिरोहबन्दी है, चाहे उसकी ख़ुदापरस्ती की ज़िंदगी

और अ़मल की ज़िंदगी कितनी ही ग़लत और बर्बाद हो या सिरे से ग़ायब हो, मगर उस गिरोहबन्दी का आदमी होने की वजह से ज़रूर कामियाब और ख़ुदा की जन्नत व रिज़ा का हक़दार है, क़ुरआन का मक़्सद हरगिज़ यह नहीं है, बल्कि वह यह ऐलान करने आया है कि उसकी सच्ची दावत से पहले कोई आदमी किसी भी गिरोह और मज़हबी जमाअ़त से ताल्लुक़ रखता हो, अगर उसने (क़ुरआन की सच्ची तालीम) के मुताबिक़ ख़ुदापरस्ती और नेक अ़मली को अख़्तियार कर लिया है, तो बेशक वह नजात पाया हुआ और कामियाब है, वरना तो वह ग़ैर मुसलमान घर में पैदा हुआ, पला और बढ़ा और उसी सोसाइटी में ज़िंदगी गुज़ार कर मर गया, मगर क़ुरआन की सच्ची दावत के मुताबिक़ ख़ुदापरस्ती और नेक अ़मली दोनों से महरूम रहा या मुख़ालिफ़ (विरोधी), तो उसको न कामियाबी है, न फ़लाह, बाक़ी रहा मसीही धर्म के कफ़्फ़ारे का ख़ास मस्अला, तो क़ुरआन ने उसे ग़लत क़रार देने के लिए यह रास्ता अपनाया कि जिन बुनियादों पर उसको क़ायम किया गया था, उसकी जड़ ही काट दी।

तवज्जोह करने की बात

यह बात कभी नहीं भूली जानी चाहिए कि पिछले धर्मों और क़ौमों के बिगड़ने और घटने-बढ़ने से घट-बढ़ करने वालों को बहुत ज़्यादा मदद मिली कि बुनियादी अ़क़ीदों में खुले लफ़्ज़ों के इस्तेमाल के बजाए वक़्त के ताबीर करने वालों, तफ़्सीर लिखने वालों और तर्जुमानी करने वालों ने इशारों, इस्तिआ़रों और तश्बीहों से बहुत ज़्यादा काम लिया। इन ताबीरों का नतीजा यह निकला कि जब हक़ मज़हबों का मूर्ति पूजकों और फ़लसफ़ियों से वास्ता पड़ा और उन्होंने किसी न किसी तरह इस दीने हक़ को क़ुबूल कर लिया, तो अपने फ़लसफ़ियाना और मुश्रिकाना अफ़्कार व ख़्यालात के लिए उन्हीं इस्तिआ़रों और तश्बीहों को सहारा बनाया और धीरे-धीरे मिल्लते हक़ीक़ी की सूरत बदल कर उसको माजूने मुरक्कब बना डाला। इसी हक़ीक़त को देखते हुए क़ुरआन ने वजूद बारी, तौहीद, रिसालत, इलहामी किताबें, अल्लाह के फ़रिश्ते, ग़रज़ बुनियादी अ़क़ीदों में दोहरे लफ़्ज़, पेचदार तश्बीह और तौहीद

में ख़लल डालने वाले इशारों-कनायों के बजाए खुले-साफ़ लफ़्ज़ों को अपनाया है, ताकि किसी ख़ुदा के न मानने वाले और मुश्रिक फ़लसफ़ी को ख़ालिस तौहीद में शिर्क और अटकलों की नई-नई बातों का मौक़ा हाथ न आने पाए और अगर कोई आदमी इसके बाद भी बेजा हिम्मत करे तो ख़ुद क़ुरआन की खुली आयतें ही उनके इलहाद के टुकड़े-टुकड़े कर दें।

नोट : मुरत्तिब की तरफ़ से हज़रत मरयम, हज़रत ईसा की पैदाइश, ज़िंदगी और मोजज़े वग़ैरह से मुताल्लिक़ कई मसले बहस में आ गए हैं। हज़रत मौलाना स्योहारवी ने तमाम मसलों पर खुलकर बातें की हैं, लेकिन इन बहसों का ख़ुलासा मुम्किन नहीं है, इसलिए मजबूरी में उन्हें छोड़ा जा रहा है, जो पाठक ख़्याल महसूस करें उनसे दरख़्वास्त है कि वे असल किताब से रुजू फ़रमावें।

हज़रत मुहम्मद ﷺ

हज़रत मुहम्मद और क़ुरआन मजीद

क़ुरआन कलामे इलाही है और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतरा है। क़ुरआन इल्म व यक़ीन की रोशनी है और ज़ाते अक़दस उनका अमली नमूना, आदर्श और नक़्शा हैं—

'ल-क़द का-न लकुम फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन ह-स-ना'

क़ुरआन रुश्द व हिदायत और मुहम्मद ﷺ राशिद व हादी, क़ुरआन हक़ व सदाक़त के लिए दावत व पैग़ाम है और नबी अकरम उसकी दावत देने वाले और पैग़म्बर हैं, इसलिए क़ुरआन का हर एक जुम्ला और उसकी एक-एक आयत किसी-न-किसी हैसियत में ज़ाते क़ुदसी सिफ़ात (अल्लाह) से ताल्लुक़ रखती है, तो अब किस तरह यह कहा जाए कि क़ुरआन में इतनी जगह उसकी मुक़द्दस हस्ती का ज़िक्र है।

एक बार हज़रत आइशा रज़ि० से कुछ सहाबा ने अर्ज़ किया कि आप नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के कुछ हालात हमें

सुनाएं। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने ताज्जुब के साथ मालूम किया, क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते जो मुझसे नबी ﷺ के अख़्लाक़ के बारे में सवाल करते हो? बेशक उनका अख़्लाक़ तो क़ुरआन ही था। आपकी तमाम अख़्लाक़ी ज़िंदगी क़ुरआन के सांचे में ढली हुई थी। क़ुरआन जो कुछ कहता है, मुहम्मद ﷺ ने उसी को कर दिखाया। पस क़ुरआन के किसी हिस्से को सामने लाना गोया हयाते तैयबा को सामने लाना है।

अलबत्ता क़ुरआन ने जिन आयतों में आप के मुबारक नाम या बुलन्द औसाफ़ का ख़ास तौर पर ज़िक्र किया, 'ऐ नबी' या 'ऐ रसूल' कह कर मुख़ातब किया, उसकी तफ़्सील नीचे के नक़्शे से ज़ाहिर होती है। इस नक़्शे में जो जम्हूर के नज़दीक मानी हुई बातें हैं, (नबी और रसूल के अलावा जिन नामों और सिफ़तों की तफ़्सील चाहिए थीं) वे यह हैं–

1. मुहम्मद, 2. अहमद, 3. अब्दुल्लाह, 4. शाहिद, 5. बशीर, 6. नज़ीर, 7. मुबश्शिर, 8. मुज़क्किर, 9. अज़ीज़, 10. रऊफ़, 11. रहीम, 12. अमीन, 13. मुज़्ज़म्मिल, 14. मुद्दस्सिर, 15. मुन्ज़िर, 16. हादी, 17. यासीन, 18. रहमत, 19. नेमत, 20. ता-हा, 21. नूर, 22. हक़, 23. सिराजे मुनीर, 24. शहीद, 25. दाई इलल्लाहि (अल्लाह की तरफ़ दावत देने वाला), 26. ख़ातमुन्नबीयीन, 27. नबी, 28. रसूल, 29. अब्दुहू

क़ुरआन और सहीह हदीसों में नबी अकरम ﷺ के नामों और सिफ़तों का ज़िक्र है, इस्लामी उलेमा ने उस पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं। मशहूर मुहद्दिस अबूबक्र बिन अरबी ने शरहे तिर्मिज़ी में उनकी गिनती चौंसठ बताई है, कुछ ने निन्नानवे और कुछ इल्म वालों ने उसको एक हज़ार तक पहुंचाया है।

(फ़त्हुलबारी)

बुख़ारी शरीफ़ की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि आपने इर्शाद फ़रमाया, मेरे पांच नाम हैं–

1. मुहम्मद हूं, 2. अहमद हूं, 3. माही यानी कुफ़्र व शिर्क को मिटाने वाला हूं, 4. हाशिर हूं, इसलिए कि क़ियामत के दिन तमाम कायनात से पहले अल्लाह के दरबार में हाज़िर हूंगा, और 5. आक़िब हूं (इमाम ज़ोहरी के क़ौल

के मुताबिक़ आख़िरी पैग़म्बर हूं।)

हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रह० के मुताबिक़ इस्लाम के उलेमा का जिन पर इत्तिफ़ाक़ है यानी क़ुरआन में आपके जिन नामों और सिफ़तों का ज़िक्र किया गया है, वे यह हैं—

1. अश-शाहिद, 2. अल-बशीर, 3. अन-नज़ीर, 4. अल-मुबीन, 5. अद्दाई इलल्लाहि, 6. अस्सिराजुल मुनीर, 7. अल मुज़क्किर, 8. अर-रहमत, 9. अन-नेमत, 10. अल-हादी, 11. अश-शहीद, 12. अल-अमीन, 13. अल-मुज़्ज़म्मिल, 14. अल मुद्दस्सिर और हदीसों में ज़िक्र किए गए आपके नामों और सिफ़तों में नीचे लिखी सिफ़तें ज़्यादा मशहूर हैं—

1. अल-मुतवक्किल, 2.अल-मुख़्तार, 3. अल-मुस्तफ़ा, 4, अश-शफ़ीउल मुशफ़्फ़िआ 5. अस्सादिक़ुल मस्दूक़।

बहरहाल मुहम्मद और अहमद दो अस्मा (नाम) हैं और बाक़ी अस्मा-सिफ़ात व अलक़ाब और क़ुरआन में आपके पाक नाम से जुड़े हुए एक सूरः का नाम सूरः मुहम्मद है, जिसके शुरू ही में आपके इस्मे गिरामी का ज़िक्र है—

व आमिनू बिमा नुज़्ज़ि-ल अला मुहम्मदिं-वहुवल हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम, और सिर्फ़ एक जगह सूरः सफ़्फ़ में अहमद नक़ल किया गया है। यानी हज़रत मसीह ﷺ की इस बशारत के तज़्करे में यह नाम आया है जो आपके आने से मुताल्लिक़ उन्होंने बनी इसराईल को सुनाई थी—

'व मुबश्शिरम बिरसूलिंय्याती मिम-बादी' इस्मुहू अहमद'

यह हक़ीक़त भुलाने लायक़ नहीं है कि आपके नाम और सिफ़तें सिर्फ़ रस्मी नहीं हैं, कि मां-बाप ने जो चाहा, नाम रख दिया, दोस्तों और साथियों ने जिस सिफ़त व लक़ब से चाहा, पुकार लिया, बल्कि उन नामों और सिफ़तों का आपकी ज़िंदगी और आपके अख़्लाक़ व आमाल के साथ बहुत गहरा ताल्लुक़ है, जैसा कि अभी माही, हाशिर और आक़िब के बारे में ख़ुद तर्जुमाने वह्य की ज़ुबान से सुन चुके हो या जैसे मुहम्मद उस हस्ती को कहते हैं जिसके तज़्किरे हमेशा ख़ूबी और नेकी के साथ होते हों, ये पिछले नबियों की बशारतें और मुस्तक़्बिल में ज़िंदगी के तज़्किरों की तरफ़ इशारा है और अहमद

उसे कहते हैं जो सबसे ज़्यादा अल्लाह की हम्द (गुण-गान) करता हो। यह मुबारक ज़ात की कामिल बन्दगी और कामिल इंसान होने को ज़ाहिर करता हैं। बेशक आप ख़ुदापरस्त इंसानों के लिए ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले, और फ़ित्ना पैदा करने वाले फ़सादियों, काफ़िरों और मुश्रिकों के लिए मुंज़िर व नज़ीर (सज़ा से डराने वाले) हैं। क़ियामत के दिन, सच्चे और झूठे दोनों पर शाहिद हैं, हक़ के लिए खुली आंख वाले और हक़ के लिए कान खुले रखने वालों के लिए याददेहानी कराने वाले हैं। राहे हक़ से हटे हुए के लिए हादी (हिदायत का रास्ता बताने वाले) और ख़ुदा से भागे हुओं के लिए पुकारने वाले हैं। उनका वजूद रहमत है कायनाते आलम के लिए और उनकी हस्ती कायनात के निज़ाम के लिए नग़्मा है। जेहल व शिर्क के लिए नूर हैं और अल्लाह के पैग़ाम के लिए नबी व रसूल, मुसीबतों और परेशानियों में अज़ीज़ हैं और इंसानों की ज़िंदगी के हर हिस्से के लिए रऊफ़ व रहीम, उनकी आवाज़ हक़ की आवाज़ है और उनकी ज़ात सच्ची और अमानतदार, क़ुरआन ख़ुदा का आख़िरी पैग़ाम है, इसलिए वह आख़िरी नबी हैं, उनका भेजा जाना पूरी दुनिया के लिए है, इसलिए ताहा व यासीन हैं और नुबूवत के आसमान के चमकते सूरज हैं और रिसालत की कायनात के बशीर (बशारत देने वाले) व नज़ीर (डराने वाले), दीन व मिल्लत की सुलतानी के बावजूद गदाए कमलीपोश हैं, इसलिए मुज़्ज़म्मिल हैं और मुद्दस्सिर, फिर कमाल यह कहना कि 'मैं तो इंसान हूं, अल्लाहुम-म सल्ले व सल्लिम व बारिक अलैहि, ख़ुदा पर तवक्कुल उसकी बहुत बड़ी सिफ़त और वह ख़ुदा का बरगज़ीदा और मुख़्तार है, अल्लाह के दरबार में अबरार व मुक़र्रिबों से भी ज़्यादा मुस्तफ़ा, मुज्तबा, नेकी करने वालों और सालेहीन के लिए अश-शफ़ीअ् व मुशफ़्फ़अ और ज़िंदगी के हर शोबे में अस्सादिक़ व मस्दूक़ है। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बशारतें (ख़ुशख़बरियां)

मौलाना ख़्वाजा अलताफ़ हुसैन हालीने 'मुसद्दस मद्द व जज़्रे इस्लाम' में एक जामे (काव्य) बन्द में तमाम बशारतों की तरफ़ जवज्जोह दिलाई है—

यकायक हुई ग़ैरते हक़ को हरकत
बढ़ा जानिबे बूक़बीस अब्रे रहमत
अदा ख़ाके बत्हा ने की वह वदीअ़त
चले आते थे जिसकी देने शहादत,
हुई पहलू-ए-आमना से हुवैदा
दुआ़-ए-ख़लील और नवेदे मसीहा।

'चले आते थे जिसकी देने 'शहादत' की मुम्मल तफ़्सील के लिए हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने तौरात व इंजील से लम्बे टुकड़े और क़ुरआन पाक से उसका खुले तौर पर मिलना पेश किया है, जिसका ख़ुलासा करना मुश्किल है, इसलिए इस बन्द के सिर्फ़ आख़िरी शेर की तफ़्सील पेश की जाती है।' (मुरत्तिब)

एक बार ख़ुद नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन्हीं बशारतों की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया—

(यानी) मैं अपने बाप इब्राहीम की दुआ़ हूं और ईसा मसीह की बशारत हूं (यानी) ख़लील की दुआ़ और मसीह का नवेद।'

क़ुरआन मजीद ने इब्राहीम की दुआ़ का ज़िक्र इस तरह किया है—

तर्जुमा— *'ऐ हमारे परवरदिगार! इन (अरबों) ही में एक रसूल भेज जो इन पर तेरी आयतें पढ़े और इनको किताब व हिक्मत सिखाए और इनको (हर क़िस्म की बुराइयों से) पाक करे। बेशक तू ग़ालिब और हिक्मत वाला है।'* (2 : 129)

और मसीह की बशारत का ज़िक्र सूरः सफ़्फ़ में इस तरह नक़्ल किया गया है—

तर्जुमा– 'और (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, 'ऐ बनी इसराईल! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं। तस्दीक़ करने वाला हूं तौरेत की, जो मेरे सामने मौजूद है और बशारत देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा और उसका नाम अहमद (फ़ारक़लीत) होगा, पस जब उनके पास वह (ख़ुदा का पैग़म्बर) दलीलें लेकर आया, तो वे कहने लगे, यह तो खुला जादू है।' (61 : 6)

इन दुआओं के नतीजे में सआदत की जो सुबह आई, उसके लिए मुरत्तिब (संग्रहकर्त्ता) की ओर से ज़ौक़ वालों के लिए सीरतुन्नबी भाग-1 से एक ईमान बढ़ाने वाले हिस्से को बढ़ाकर पेश किया जाता है।

ज़ुहूरे क़ुद्सी

दुनिया के चमन में रूह परवर बहारें आ चुकी हैं। चर्ख़े नादराकारने कभी-कभी बज़्मे आलम को इस सर व सामान से सजाया कि निगाहें ख़ीरा होकर रह गईं।

लेकिन आज की तारीख़ वह तारीख़ है, जिसके इन्तिज़ार में पीरे कुहन साल दह्र ने करोड़ों वर्ष लगा दिए। सय्यारगाने फ़लक इसी दिन के शौक़ में अज़ल से चश्म बराह थे, चर्ख़े कुहन मुद्दत हाए दराज़ से उसी सुबहे जाँ-नवाज़ के लिए लैल व नहार की करवटें बदल रहा था। कारकुनाने क़ज़ा व क़द्र की बज़्म आराइयां, अनासिर की जिद्दत तराज़ियां, माह व ख़ुर्शीद की फ़रोग अंगेज़ियां, अब्र व बाद की तरदस्तियां, आलमे क़ुदसी के अनफ़ासे पाक, तौहीदे इब्राहीम, जमाले यूसुफ़ मोजज़ तराज़ी मूसा, जाँनवाज़ी मसीह, सब इसी लिए था कि यह क़ीमती मनाए शंहशाहे क़ौनैन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दरबार में काम आएंगे।

आज की सुबह वही सुबहे जांनवाज़, वही साअ़ते हुमायूं, वही दौरे फ़र्रुख़ फ़ाल है।

अरबाबे सियर अपने महदूद पैराए बयान में लिखते हैं कि, 'आज की रात ऐवाने किसरा के चौदह कंगूरे गिर गए, आतशकदा फ़ारस बुझ गया, दरिया-ए-सादा ख़ुश्क हो गया,' लेकिन सच यह है कि ऐवाने किसरा नहीं,

बल्कि शाने अजम, शौकते रूम, औजे चीन के क़स्र हाए फ़लक बोस गिर पड़े, आतशे फ़ारस नहीं, बल्कि जहीमे शर, आतशक्दा-ए कुफ़्र, आज़र कदा-ए-गुमराही सर्द होकर रह गए, सनम ख़ानों में ख़ाक उड़ने लगी, बुतकदे ख़ाक में मिल गए, मजूसियत का शीराज़ा बिखर गया, नसरानियत के औराक़े ख़ज़ांदीदा एक-एक करके झड़ गए।

तौहीद का ग़लग़ला उठा, चमनिस्ताने सआदत में बहार आ गई, आफ़ताबे हिदायत की शुआएं हर-हर तरफ़ फैल गईं। अख़्लाके इंसानी का आईना परतवे क़ुदस से चमक उठा–

यानी अब्दुल्लाह का यतीम, आमना का जिगर गोशा, शाहे हरम, हुक्मराने अरब, फ़रमांरवाए आलम, शाहंशाहे कौनैन–

शम्सा न मस्नदे हफ़्त अख़्तरां
ख़त्मे रुसुल ख़ातमे पैग़म्बरां,
अहमदे मुरसल कि ख़िरद ख़ाक ओस्त
हर दो जहां बस्ता-ए-फ़तराक ओस्त
उम्मी व गोया बज़ुबाने फ़सीह
अज़ अलिफ़ आदम व मीमे मसीह,
रस्मे तुरंज अस्त कि दर रोज़गार
पेश व हद मेवा पस आरद बहार

आलमे क़ुद्स से आलमे इम्कान में तशरीफ़ फ़रमा-ए-इज़्ज़त व इज्लाल हुआ।

मुबारक सुबह

दीनों और मिल्लतों की तारीख़ गवाह है कि हज़रत ईसा अलैहि० के ज़ाहिर होने पर लगभग छह सदियां बीत चुकी हैं और दुनिया ख़ुदा के पैग़म्बरों की मारफ़त हासिल की हुई हक़ की सच्चाई को भुला चुकी है, तमाम इंसानी दुनिया ख़ुदापरस्ती के बजाए मज़ाहिर परस्ती में पड़ी हुई है और हर मुल्क में इंसान से लेकर पेड़-पौधों तक की परस्तिश फ़ख़्र करने की चीज़ बनी हुई है। कोई इंसान को अवतार (ख़ुदा) कह रहा है, तो कोई ख़ुदा का बेटा। एक

माद्दापरस्त है तो दूसरा ख़ुद अपनी आत्मा को ही ख़ुदा समझ रहा है। सूरज की पूजा है, चांद और तारों की पूजा है, जानवरों, पेड़ों और पत्थरों की इबादत है, आग, पानी, हवा, मिट्टी के सामने खड़े होकर मांगा जा रहा है। ग़रज़ कायनात की हर चीज़ पूजा के लायक़ है और नहीं है तो ज़ाते वाहिद पूजा के क़ाबिल नहीं है और न उसके एक होने का ख़्याल ही ख़ालिस है और न उसके हर चीज़ से बेनियाज़ होने का। उसको अगर माना जाना भी है तो दूसरों की इबादत और परस्तिश के ज़रिए। वह अगर पैदा करने वाला है तो दूसरों के वास्ते और ज़रूरत के साथ माद्दा, रूह और तर्कीब, सब ही बातों का मुहताज है। वह अगर तमाम चीज़ों का मालिक है भी तो इंसान, जानवर, पेड़, पत्थर के बलबूते पर, ग़रज़ सारी दुनिया में असल कारफ़रमाई मज़ाहिर (ज़ाहिरी चीज़ों) की थी और 'हक़ की ज़ात' सिर्फ़ नाम के लिए। हक़ीक़त से आंखें चुराई जा रही थीं, मगर मजाज़ के साथ। इश्क़ का ज़ौक़ ज़ाते हक़ से बाद में था, मगर मज़ाहिर से क़ुरबत हक़ की सआदत का सरमाए से बेगानापन था, मगर मख़्लूक़ की इबादत का आम चलन था और हर तरफ़, 'हम उनको नहीं पूजते, मगर इसलिए ताकि वे ख़ुदा की तरफ़ हमारी क़ुर्बत का ज़रिया बन जाएं' (38 : 3) का मज़ाहरा नज़र आता था।

यही वह तारीक दौर था, जिसमें 'अल्लाह की सुन्नत' यानी ख़ुदा की हिदायत व ज़लालत के क़ानून ने माज़ी की तारीख़ को फिर दोहराया और हक़ की ग़ैरत ने फ़ितरत के रद्दे अमल (Reaction) के क़ानून को हरकत दी, यानी हिदायत का सूरज सआदत वाले बुर्ज से निकला और चारों तरफ़ छाई हुई शिर्क व जिहालत और रस्म व रिवाज की अंधेरियों को फ़ना करके दुनिया को इल्म व यक़ीन की रोशनी से जगमगा दिया।

रबीउलअव्वल, मुताबिक़ 20 अप्रैल 571 ई० सुबह, वह सुबहे सआदत थी जब तहज़ीब व तमद्दुन से महरूम बिन खेती की सरज़मीन मक्का के एक मुअज़्ज़ज़ क़बीले ने क़ुरैश (बनी हाशिम) में अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब के यहां यानी आमना बिन्त वहब के यहां आफ़ताब रिसालत मुहम्मद (ﷺ) पैदा हुए।

ऐ अल्लाह! वह सुबह कितनी सआदतों वाली थी जिसने कायनात को

रुश्द व हिदायत के निकलने की जानदार ख़बर सुनाई और वह घड़ी कितनी मुबारक थी जो दुनिया के लिए ख़ुशख़बरी का पैग़ाम लाई। दुनिया का ज़र्रा-ज़र्रा ज़ुबाने हाल से ये नग़्मे गा रहा था कि वक़्त आ पहुंचा कि अब दुनिया से बदबख़्ती दूर हो और ख़ुशबख़्ती से दुनिया भर जाए, शिर्क व कुफ़्र का परदा चाक हो और हिदायत का सूरज रोशन हो और चमके, मज़ाहिर परस्ती बातिल ठहरे और एक ख़ुदा की तौहीद ज़िंदगी का मक़्सद क़रार पाए।

दुनिया तो क्या, मुल्क, क़बीला और ख़ानदान को भी यह इल्म न था कि दुनिया के तमाम धर्म, जिस सूरज के निकलने के इंतिज़ार में हैं, वे इस ग़ैर मुहज़्ज़ब सरज़मीन और अब्दुल मुत्तलिब के घराने से निकलेगा कि उसकी पैदाइश को ख़ास अहमियत देते और विलादत की तारीख़ को अपने सीने में महफ़ूज़ रखते, मगर जिस पैदा करने वाले ने उसको मुक़द्दस हस्ती बनाने का फ़ैसला किया, उसी ने इसे एक मोजज़ा और तारीख़ी निशान भी ज़ाहिर कर दिया और वह हाथी वालों का वाक़िया था।

एतबार करने लायक़ और मुस्तनद रिवायतें गवाह हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत इस वाक़िए के कुछ महीने बाद हुई।

इस वाक़िए में जो ख़ास बातें पाई जाती हैं, उन्हें देखते हुए यह अरब के लिए आमतौर से और हिजाज़ियों के लिए ख़ासतौर से बड़ा अजीब और हैरत में डालने वाला वाक़िया था और इसलिए वे कभी उसको भुला नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने उनका नाम ही आमुलफ़ील (हाथियों वाला साल) रख दिया। मगर वे यह न समझ सके थे कि असल में यह वाक़िया एक (निशान) है उस जलीलुल क़द्र हस्ती के ज़ाहिर होने का जो एक दिन तमाम दुनिया को तौहीद के मर्कज़ और इब्राहीमी क़िब्ले पर जमा कर देगी और इसको ग़ैरुल्लाह (बुतों) की गन्दगियों से पाक करके तौहीद के नग़्मों के लिए ख़ास कराएगी, क्योंकि यही वह पहली जगह है जो सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया गया। यह मन्दिर नहीं था कि मूर्ति की पूजा की जाए, यह गिरजा और कलीसा भी न था कि यसूअ् मसीह और कुंवारी मरयम की मूर्तियों के सामने सर झुकाया जाए न यह आग का भंडारा था कि आग के नूर का मज़्हर क़रार देकर उसकी पूजा की जाए और न यहूदियों का वज़ीफ़ा था कि हज़रत उज़ैर

रुश्द व हिदायत के निकलने की शानदार ख़बर सुनाई और वह घड़ी कितनी मुबारक थी जो दुनिया के लिए ख़ुशख़बरी का पैग़ाम लाई। दुनिया का ज़र्रा-ज़र्रा ज़ुबाने हाल से ये नग़्मे गा रहा था कि वक़्त आ पहुंचा कि अब दुनिया से बदबख़्ती दूर हो और ख़ुशबख़्ती से दुनिया भर जाए, शिर्क व कुफ़्र का परदा चाक हो और हिदायत का सूरज रोशन हो और चमके, मज़ाहिर परस्ती बातिल ठहरे और एक ख़ुदा की तौहीद ज़िंदगी का मक़्सद क़रार पाए।

दुनिया तो क्या, मुल्क, क़बीला और ख़ानदान को भी यह इल्म न था कि दुनिया के तमाम धर्म, जिस सूरज के निकलने के इंतिजार में हैं, वे इस ग़ैर मुहज़्ज़ब सरज़मीन और अब्दुल मुत्तलिब के घराने से निकलेगा कि उसकी पैदाइश को ख़ास अहमियत देते और विलादत की तारीख़ को अपने सीने में महफ़ूज़ रखते, मगर जिस पैदा करने वाले ने उसको मुक़द्दस हस्ती बनाने का फ़ैसला किया, उसी ने इसे एक मोजज़ा और तारीख़ी निशान भी ज़ाहिर कर दिया और वह हाथी वालों का वाक़िया था।

एतबार करने लायक़ और मुस्तनद रिवायतें गवाह हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत इस वाक़िए के कुछ महीने बाद हुई।

इस वाक़िए में जो ख़ास बातें पाई जाती हैं, उन्हें देखते हुए यह अरब के लिए आमतौर से और हिजाज़ियों के लिए ख़ासतौर से बड़ा अजीब और हैरत में डालने वाला वाक़िया था और इसलिए वे कभी उसको भुला नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने उनका नाम ही आ़मुलफ़ील (हाथियों वाला साल) रख दिया। मगर वे यह न समझ सके थे कि असल में यह वाक़िया एक (निशान) है उस जलीलुल क़द्र हस्ती के ज़ाहिर होने का जो एक दिन तमाम दुनिया को तौहीद के मर्कज़ और इब्राहीमी क़िब्ले पर जमा कर देगी और इसको ग़ैरल्लाह (बुतों) की गन्दगियों से पाक करके तौहीद के नग़्मों के लिए ख़ास कराएगी, क्योंकि यही वह पहली जगह है जो सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया गया। यह मन्दिर नहीं था कि मूर्ति की पूजा की जाए, यह गिरजा और कलीसा भी न था कि यसूअ् मसीह और कुंवारी मरयम की मूर्तियों के सामने सर झुकाया जाए न यह आग का भंडारा था कि आग के नूर का मज़्हर क़रार देकर उसकी पूजा की जाए और न यहूदियों का वज़ीफ़ा था कि हज़रत उज़ैर

ईसा को ख़ुदा का बेटा बनाकर उसकी पाकी के नग़्मे गाए जाएं, बल्कि यह तो ख़ुदा और सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत के लिए बनाया गया था।

तर्जुमा—*'बेशक सबसे पहला घर जो बरक़रार हुआ लोगों के वास्ते यही है जो मक्का में है।'* (3 : 96)

ग़रज़ रसूल बनाए जाने के बाद जब क़ुदरत ने मोजज़ाना शान से 'आमुलफ़ील' (हाथियों के साल) में आपकी विलादत का छिपा राज़ खोल दिया तब दुनिया ने यह समझा कि अबरहा और उसकी फ़ौज से अल्लाह के काबे की यह हिफ़ाज़त इसलिए थी कि वह वक़्त क़रीब आ पहुंचा, जब दोबारा यह मुक़द्दस जगह एक अल्लाह की इबादत और ख़ालिस तौहीद का मर्कज़ बनने का शरफ़ हासिल करनेवाला है। पस जो ताक़त भी इस बड़े मक़्सद से टकराएगी, ख़ुद ही टुकड़े-टुकड़े होकर रह जाएगी।

अबरहा ईसाई था और अरब के लोग (क़ुरैश) मुश्रिक, फिर कौन कह सकता है कि अबरहा और उसकी फ़ौज की बर्बादी क़ुरैश की मदद और हिमायत के लिए थी। नहीं, बल्कि इसलिए सब कुछ हुआ कि अल्लाह की मशीयत के ख़िलाफ़ अबरहा की ख़्वाहिश थी कि यमन (सनआ) में जो ख़ूबसूरत गिरजा (अल-क़लीस) बाप-बेटा-रूहुल क़ुद्स (तसलीस-Trinity) के फ़रोग़ देने को बनाया गया था तौहीद के मर्कज़ 'काबतुल्लाह' की जगह वह सबकी जवज्जोह का मर्कज़ बने और इस मक़्सद के लिए उसने काबा ढाने के लिए फ़ौजी चढ़ाई की, इधर क़ुरैश यानी सारा अरब उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता था। अबरहा वक़्त के तमाम जंगी हथियारों और साज़ व सामान का मालिक और क़ुरैश इन सबसे बिल्कुल महरूम, तब ग़ैरते हक़ हरकत में आई और दुनिया ने देख लिया कि दुनिया की ताक़त के घमंड पर अल्लाह की मशीयत से टकराने वाला ख़ुद ही फ़ना के घाट उतर गया और तौहीद का मर्कज़ 'काबा' ख़ुदाई हिफ़ाज़त के साए में उसी तरह क़ायम रहा—

तर्जुमा—*'बेशक इस बात में बड़ा ही सबक़ है, उस आदमी के लिए जो अल्लाह से ख़ौफ़ रखता है।'* (79 : 26)

क़ुरआन ने सूरः फ़ील में इसी हक़ीक़त को मोज ज़ाना ढंग से नक़्ल किया है—

तर्जुमा–*(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुझे नहीं मालूम कि तेरे पालनहार ने हाथियों के साथ क्या मामला किया? क्या उनके फ़रेब को नाकाम नहीं बना दिया? और उन पर फ़ौज दर फ़ौज परिंदे नहीं भेज दिए। वे परिंद उन पर कंकड़िया फेंकते थे, फिर (ख़ुदा ने) इन हाथियों वालों को खाए हुए भुस की तरह कर दिया।* (105 : 1-5)

बहरहाल आमुल फ़ील नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत बा सआदत का साल है और यह वाक़िया आपके ज़ुहूरे कुद्सी का सबसे बड़ा क़रीबी निशान है और यह हक़ीक़त उस आदमी पर अच्छी तरह साफ़ है–

तर्जुमा–*'जिसके पास हक़ कुबूल करने वाला दिल है या वह हाज़िर दिमाग़ी के साथ हक़ बात की ओर कान लगाए हुए है।'*

विलादत की तारीख़ की तहक़ीक़

तारीख़ व सीरत लिखने वाले तमाम बड़े लोगों का तीन बातों पर इत्तिफ़ाक़ है– एक यह कि विलादत का साल आमुल फ़ील (हाथियों वाला साल) था, लेकिन सीरत और तारीख़ के माहिर इस बारे में अलग-अलग राय रखते हैं कि रबीउल-अव्वल की कौन सी तारीख थी। आम लोगों में तो मशहूर क़ौल है यह कि 12 रबीउल अव्वल थी और कुछ कमज़ोर रिवायतें इसके पीछे हैं और अक्सर उलेमा 8 रबीउल अव्वल कहते हैं लेकिन सही और मुस्तनद क़ौल यह है कि 9 रबीउल अव्वल पैदाइश की तारीख़ है और तारीख व हदीस के बड़े उलेमा और दीन के जलीलुल क़द्र इमाम इस तारीख़ को सही और 'असबत' मानते है, चुनांचे हमीदी, अक़ील, यूनुस बिन यज़ीद, इब्ने अब्दुल्लाह, इब्ने हज़म, मुहम्मद बिन मूसा ख़्वारज़मी, अबुल ख़त्ताब बिन वहय, इब्ने तैमिया, इब्ने क़ैयिम, इब्ने कसीर, इब्ने हजर अस्क़लानी, शैख़ बदरुद्दीन ऐनी जैसे बड़े उलेमा की यही राय है।

महमूद पाशा फ़लकी ने (जो क़ुस्तुन्तुन्या का मशहूर भूगोल शास्त्री गुज़रा है, सितारों के मुताबिक़ जो ज़ायचा इस ग़रज़ से तैयार किया था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़माने से अपने ज़माने तक के सूरज ग्रहन

और चांद ग्रहण न का सही हिसाब मालूम करके पूरी खोज के साथ यह साबित करे कि आपकी ख़िलाफ़त में किसी हिसाब से भी दोशंबा का दिन 12 रबीउल अव्वल सन् को नहीं आता है, इसलिए रिवायतों की ताक़त और उनके सही वग़ैरह होने कि हिसाब से और सूरज और तारों के हिसाब से मुस्तनद तारीख़ 8 रबीउल अव्वल है, असहाबे फ़ील के वाक़िए के कितने अर्से बाद पैदाइश हुई कई क़ौलों में मशहूर क़ौल यह है कि पचास दिन बाद आपकी पैदाइश हुई।

मुबारक नसब

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अरबी नस्ल के हैं और अरब के इ़ज़्ज़तदार क़बीला क़ुरैश की सबसे ज़्यादा मुक़्तदिर शाख़ बनी हाशिम से हैं। क़ुरआन ने अह्ले अरब को ख़िताब करते हुए कई जगहों पर आपके अरबी नस्ल होने का ज़िक्र किया है।

तर्जुमा—*(ख़ुदा) वह ज़ात है जिसने उम्मीयीन (अनपढ़ लोगों) में से ही एक रसूल भेज दिया जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता और उनका तज़्किया करता और उनको अल-किताब (क़ुरआन) और हिक्मत सिखाता है।'*

(9 : 128)

तर्जुमा—*'बेशक तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल (मुहम्मद सल्ल०) आया।'* (9 : 128)

तर्जुमा—*'जबकि भेज दिया अल्लाह ने उनमें से एक रसूल जो नसब के लिहाज़ से उन्हीं में से है।'* (3 : 164)

तर्जुमा—*'इसी तरह हमने आप पर क़ुरआन को अरबी ज़ुबान में उतारा है, (ऐ मुहम्मद ﷺ!) तुम मक्का वालों और उनके आस-पास के बसने वालों को (बुराइयों से) डराओ।'* (42 : 7)

अरब के नसबों और ख़ानदानों के माहिर इस पर एक राय हैं कि आप सल्ल० हज़रत इस्माईल बिन इब्राहीम ؑ की नस्ल में है, इसलिए कि क़ुरैश किसी राय के इख़्तिलाफ़ के बग़ैर अ़दनानी हैं और अ़दनान के इस्माईली होने में दो राय की गुंजाइश नहीं है।

नसब आदि के उलेमा ने नसबनामे की तफ़्सील इस तरह बयान की है—

मुहम्मद ﷺ बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दमनाफ़ बिन कुसई बिन किलाब बिन मुर्रा बिन काब बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फ़ह बिन मालिक बिन नज़्र बिन कनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुदरका बिन इलयास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन माद बिन अदनान'

और वालिदा की जानिब से आपका नसबनामा किलाब पर जाकर बाप के नसब-नामे के साथ मिल जाता है यानी आमना बिन्त वहब बिन अब्देमनाफ़ बिन ज़ुहरा बिन किलाब। किलाब को 'हकीम' भी कहते हैं।

अलबत्ता अदनान और हज़रत इस्माईल के दर्मियान सिलसिले के नामों से मुताल्लिक़ सनद के माहिरों की रायें अलग-अलग हैं इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके बारे में इर्शाद फ़रमा कर 'क-ज़-बन्नस्साबून' (नसब बयान करने वालों ने ग़लत बयानी की है) कहा और किसी राय की तौसीक़ नहीं फ़रमाई और अपने सनद के सिलसिले से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इस क़दर इर्शाद फ़रमाया है—

'अल्लाह तआला ने इस्माईल की नस्ल में से कनाना को नुमायां किया और कनाना में से कुरैश को इज़्ज़त व अज़्मत बख़्शी और कुरैश में बनी हाशिम को इम्तियाज़ अता फ़रमाया और बनी हाशिम में से मुझको चुन लिया।'

(मुस्लिम)

गोया इस तरह सनद के सिलसिले के उन हिस्सों की तस्दीक़ फ़रमाई जो नसब के माहिरों के दर्मियान बिना इख़्तिलाफ़ माने जाते थे।

इस्लाम ने नसबी तफ़ाख़ुर और उस पर बने हुए समाजी रस्म व रिवाज को बहुत बड़ा गुनाह और जुर्म क़रार दिया है। वह कहता है ख़ुदा के यहां फ़ज़ीलत का मेयार 'ईमान और भले अमल' हैं और वहां हसब-नसब का कोई पूछने वाला नहीं है, साथ ही 'नसबी तफ़ाख़ुर (बड़प्पन, भेद-भाव) इस्लाम के बुनियादी क़ानून 'इस्लामी भाईचारा' के बिल्कुल ख़िलाफ़ है, इसलिए इस्लाम के इज्तिमाई दस्तूर में उसके लिए कोई जगह नहीं है, फिर भी वाक़िए के तौर पर तारीख़ यह पता देती है कि हमेशा नबी और रसूल ﷺ अपनी क़ौम और अपने मुल्क के इज़्ज़तदार ख़ानदानों में से होते रहे हैं। अल्लाह की हिक्मत का

यह फ़ैसला शायद इसलिए हुआ कि क़ौमों और मुल्कों के रस्म व रिवाज और नसबी फ़ख़्र व ग़ुरूर, उनके ख़िलाफ़ उनकी दावते हक़ और उनकी सदाक़त का पैग़ाम कहीं निजी स्वार्थ के लिए न समझ लिया जाए और इस तरह उसका अख़्लाक़ी पहलू कहीं कमज़ोर न हो जाए, जैसे किसी समाजी ज़िंदगी में ज़ात-पात की तक़्सीम और कास्ट-सिस्टम इस तरह मौजूद है कि उसकी वजह से कुछ इंसान कुछ को हक़ीर व ज़लील समझने लगे हैं, तो अगर उस क़ौम या मुल्क में कोई पैग़म्बर उस ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता हो जिसको क़ौमी और मुल्की रिवाज ने नीच और पस्त क़ौमों का लक़ब दे रखा है, ऐसी हालत में उस खुले ज़ुल्म और बातिल के ख़िलाफ़ उस पैग़म्बर की हक़ की आवाज़ इतनी तेज़ी के साथ कामियाब न होती जितनी उस हालत में हो सकती है, जबकि वह ख़ुद उस क़ौम व मुल्क के ऊंचे ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता हो और सिर्फ़ इसीलिए ख़ास मसले में नहीं, बल्कि उसके पैग़ामे हक़ की तमाम इस्लाहों में यह फ़र्क़ ज़रूर नज़र आएगा!

बहरहाल यह हिक्मत हर मक़ाम और हर मौक़े पर फ़ायदेमंद हो या न हो, अरब के हालात व वाक़िआत के लिए निहायत मुनासिब और फ़ायदेमन्द साबित हुई। चुनांचे इस्लाम की आवाज़ ने जब अपनी इंक़िलाबी और इस्लाही ग़रज़ से रूहानियत की छिपी कायनात में तहलका पैदा कर दिया तो एक तरफ़ नबी अकरम ﷺ ने अरबों को यह सुनाया कि जहां तक ख़ानदानी इम्तियाज़ का ताल्लुक़ है, तो मैं क़ुरैश भी हूं और हाशमी भी और यह फ़र्क़ तुम्हारे हिसाब से बहुत बुलन्द हो, मगर मेरी निगाह में इसकी हैसियत सिर्फ़ यह है। यह फ़ख़्र करने की कोई चीज़ नहीं है, और 'दूसरी जानिब नसबी फ़ख़्र की बुनियादों के गिर जाने और इंसानी बराबरी की आम दावत के लिए इस ख़ुदाई फ़रमान का एलान करके इंसानी कायनात की तमाम तारीक ज़ेहनियत के ख़िलाफ़ एक बड़ा इंक़िलाब पैदा कर दिया।

तर्जुमा—*लोगो! मैंने तुम सबको एक मर्द और औरत से पैदा किया है। (यानी इंसानी पैदाइश की शुरूआत आदम और उसकी बीवी हव्वा अलै० से हुई है) तुमको ख़ानदानों और क़बीलों में सिर्फ़ इसलिए बांट दिया है कि आपस*

में (सिलारहमी यानी रिश्तेदारियों के लिए) पहचान और मारफ़त का तरीक़ा क़ायम कर लो।') —अल-हुजुरात

तर्जुमा— *(और असल यह है कि) बेशक अल्लाह के नज़दीक वही इज़्ज़त वाला है, जो तुममें से परहेज़गारी की ज़िंदगी बसर करने वाला है।'* (48 : 13)

और हज्जतुल विदाअ् के मौक़े पर जब आप हज़ारों सहाबा की मौजूदगी में विदाई पैग़ाम सुना रहे थे और इस्लाम के बुनियादी उसूल की मज़बूती के लिए अहम वसीयतें पेश फ़रमा रहे थे, उस हुक्मे ख़ुदावन्दी की ताईद में यह इंक़िलाबी पैग़ाम भी इर्शाद फ़रमाया—

'अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है, ऐ इंसानी नस्ल के लोगो! हमने तुमको एक औरत और मर्द से पैदा किया है और हमने तुम्हारे दर्मियान ख़ानदान और क़बीले बना दिए हैं, ताकि (रिश्तेदारी के लिए) तआरुफ़ पैदा करो। बिला शुबहा तुममें अल्लाह के नज़दीक वही बरगुज़ीदा है, जो ज़्यादा मुत्तक़ी (नेक किरदार) है। पस (ख़ूब याद रखो कि) न अरबी को अ़जमी पर कोई फ़ज़ीलत है और न अज़मी को अरबी पर कोई बरतरी हासिल है, न काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत है और न गोरे को काले पर कोई बुज़ुर्गी, बल्कि इन सब के लिए फ़ज़ीलत का मेयार सिर्फ़ तक़्वा (नेक अ़मली) है। ऐ क़ुरैश के लोगो! ऐसा न हो कि तुम (ख़ानदानी फ़ख़्र के) झूठे घमंड की वजह से क़ियामत में दुनिया को कंधे पर लाद लाओ और दूसरे लोग (नेक अ़मली की बदौलत) आख़िरत का सामान लेकर आएं, वाज़ेह रहे कि तुम्हारे सिर्फ़ क़ुरैशी होने की वजह से मैं तुमको ख़ुदा के फ़ैसले से क़तई तौर पर बेपरवाह नहीं बना सकता। (ख़ुदा के यहां तो सिर्फ़ अ़मल ही काम आएगा) (मज्मउल फ़वाइद, भाग 1, मोजम तबरानी कबीर से)

और एक बार नसबी फ़ख़्र के ख़िलाफ़ तब्लीग़े हक़ करते हुए उसको 'जाहिली तास्सुब' फ़रमाया और मुसलमानों को उससे बचने की सख़्त ताकीद फ़रमाई, इर्शाद फ़रमाया—

अल्लाह तआ़ला ने (इस्लाम की दावत के ज़रिए तुम्हारे दर्मियान से जाहिलियत के तास्सुब और नसबी फ़ख़्र (गर्व) को मिटा दिया है और अब नेक मोमिन है या बदकार पापी, सब इंसान आदम की औलाद हैं और आदम की

पैदाइश मिट्टी से हुई है, (फिर फ़ख्र करने का क्या मौक़ा है?)

(अबूदाऊद व तिर्मिज़ी)

सरवरे दो आलम ﷺ ने यह फ़रमाया 'इन्नमा हु-व मोमिनुन तक़ि-य औ फ़ाजिरुन शक़ि-य' इस मसले को इस दर्जा साफ़ कर दिया था कि मुसलमान की ज़िंदगी में कभी इसके ख़िलाफ़ ज़िंदगी का कोई असर पड़ना ही नहीं चाहिए था। ज़ात-पात तो सिर्फ़ इसलिए थी कि छोटे-छोटे हलक़ों में आपसी तआरुफ़, सिलारहमी (रिश्तेदारियों का ख़्याल) और हुस्ने सुलूक (सदव्यवहार का मामला) एक दूसरे के साथ आसानी से हो सके, वरना कैसी ज़ात? कहां का ख़ानदान? कौन बिरादरी? यहां तो सिर्फ़ दो ही फ़ितरी और नेचुरल तक़सीमें हैं नेक या बद? किसी क़ौम, किसी ख़ानदान और किसी मुल्क का इंसान हो अगर 'सच्ची ख़ुदापरस्ती' और नेकी रखता है तो वे सब एक बिरादरी और एक क़ौम हैं और अगर 'मुश्रिक व काफ़िर और बदकार पापी' तो ये सब एक गिरोह और एक टोला है।

यतीमी

ख़ातमुल अंबिया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद का नाम अब्दुल्लाह और वालिदा का नाम आमिना था। अभी हिदायत का सूरज इस दुनिया में निकला नहीं था और हज़रत आमना के मुबारक पेट में अमानत के तौर पर मौजूद था कि वालिद का इंतिक़ाल हो गया और सीरत लिखने वाले कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह तिजारत के एक क़ाफ़िले के साथ शाम तशरीफ़ ले गए थे वापसी में जब क़ाफ़िला मदीना (यसरिब) पहुंचा तो यह बीमार हो गए और इसीलिए अपने ननिहाल में बनी नज्जार में क़ियाम किए रहे— क़ाफ़िला जब मक्का पहुंचा तो अब्दुल मुत्तलिब ने बेटे के बारे में मालूम किया। क़ाफ़िले ने उनकी बीमारी और मदीना में क़ियाम का वाक़िया कह सुनाया तब अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बड़े लड़के हारिस को हालात मालूम करने के लिए मदीना भेजा। हारिस जब मदीना पहुंचे तो मालूम हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह एक महीने कुछ दिन बीमार रहकर इस दुनिया से चल बसे।

वापस आकर जब हारिस ने बाप को इत्तिला दी तो अब्दुल मुत्तलिब और तमाम ख़ानदान को इस बड़े सदमे ने बेहाल कर दिया, क्योंकि अब्दुल्लाह अपने बाप और भाइयों के बड़े चहेते थे।

ग़रज़ जब आपकी मुबारक पैदाइश हुई तो इससे क़ब्ल ही आपको यतीमी का शरफ़ हासिल हो चुका था। चुनांचे क़ुरआन में आपकी यतीमी और दुनिया के साधनों से महरूमी के बावजूद अल्लाह की रहमत की गोद में परवरिश पाकर दुनिया को हिदायत पर लाने वाला बनने का ज़िक्र थोड़े में सूरः वज़्ज़ुहा में हो चुका है–

तर्जुमा–*'(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुझको ख़ुदा ने यतीम नहीं पाया, फिर अपनी (रहमत की) गोद में जगह दी और क्या तुझको नावाक़िफ़ नहीं पाया फिर तुझको (कायनात की हिदायत के लिए) हिदायत वाला बनाया और क्या तुझको (हर क़िस्म के वसीलों से महरूम) मुहताज नहीं पाया, फिर तुझको (हर क़िस्म की सरवरी देकर) ग़नी बना दिया।'* (93 : 6-8)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० के क़ौल के मुताबिक़ इन आयतों में अजीब व ग़रीब एजाज़ और बयान करने का ढंग है। साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी के दर्जों का ज़िक्र है। तुम समझते हो कि 'फ़आवा' के मानी यह है कि परवरदिगार ने आपको रहने-सहने की शक्ल पैदा कर दी या आपको बेयार व मददगार नहीं रहने दिया। यह भी सही है मगर इस कलामे रब्बानी की असल रूह यह हैं कि उसने ज़ाते अक़दस सल्ल० को हर क़िस्म के माद्दी (भौतिक) असबाब व वसाइल (साधनों) से बेपरवाह रख कर अपनी रहमत के आग़ोश में ले लिया और आपकी तरक़्क़ी व बढ़ौत्तरी को ख़ालिस अपनी तर्बियत में कामिल व मुकम्मल किया। (तफ़्सीर इब्न कसीर) और 'व-व-ज-द-क ज़ाल्लन फ़-हदा०' की तफ़्सीर को ख़ुद क़ुरआन ही ने दूसरी जगह रोशन कर दिया। जैसे सूरः शूरा में है–

तर्जुमा–*'और इसी तरह हमने तेरी तरफ़ अपने 'अम्र' की रूह व तरक़्क़ी की (हालांकि इससे पहले) न तू किताब (क़ुरआन) को जानता था और न ईमान की हक़ीक़त को, लेकिन हमने उसको 'नूर' (रोशनी) बना दिया, ह*

अपने बन्दो में से जिसको चाहते हैं (उसकी सलाहियत व इस्तेदाद को सामने रखकर) उसके ज़रिए हिदायत देते हैं।' (42 : 25)

और आयत 'आइलन फ़अग़्ना' में दुनिया की ज़रूरत और ग़नी का ज़िक्र कलाम की रूह नहीं है बल्कि इस ओर इशारा है कि अल्लाह तआ़ला ने आपके क़रीब होने का वह बड़ा रुत्बा अ़ता फ़रमाया है कि माद्दी और रूहानी हर क़िस्म की ज़रूरत से ऊपर उठकर अच्छी सिफ़त और बेहतरीन अख़्लाक़ की ऊंची मिसाल 'ग़नी' बना दिया, यही वह ग़नी है जिसका ख़ुद ज़ाते अक़दस ने इस तरह ज़िक्र फ़रमाया है—

'ग़नी मालदारी की बहुतायत का नाम नहीं है, हक़ीक़ी ग़नी नफ़्स का अल्लाह के अलावा हर चीज़ से बेनियाज़ हो जाना है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

मुबारक उम्र अभी छः साल की ही थी कि आपकी वालिदा बीबी आमिना का भी इंतिक़ाल हो गया। बीबी अमिना आपको आपके ननिहाल (मदीना) में लेकर गई थीं, वापसी में मुक़ाम अबवा में बीमार हो गई और कुछ दिन बीमार रहकर वहीं इंतिक़ाल फ़रमाया और उम्र की अभी आठ मंज़िलें ही तै हो पाई थीं कि दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब ने भी मुंह मोड़ लिया और इस तरह बचपन ही में तर्बियत के वसीले और दुनिया की किफ़ालत के सामान से महरूमी ने गोया अल्लाह की मशीयत की ओर से यह एलान कर दिया कि ज़ाते क़ुदसी सिफ़ात को एक ख़ुदा ने ख़ालिस अपनी तर्बियत के लिए चुन लिया है फिर यह कैसे मुम्किन है कि उसको तर्बियत के दुनियावी अस्बाब व वसाइल का मुहताज बनाए।

अल्लाह तआ़ला ने एक यतीम व यसीर और माद्दी वसीलों से महरूम हस्ती को अपने लिए चुनकर किस तरह अपने कामिल रब का मज़्हर बनाया। सूरः इन्शिराह में इस हक़ीक़त को अछूते अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है—

तर्जुमा— *'क्या हमने (हक़ और सच्चाई क़ुबूल करने के लिए) तेरा सीना नहीं खोल दिया और (मारफ़ते इलाही की हक़ीक़ी तलब और क़ौम और इंसानी कायनात की बेराहरवी पर उनकी हिदायत की तड़प का) वह बोझ हमने तुझसे दूर कर दिया जिसने तेरी कमर तोड़ रखी थी और हमने तेरे ज़िक्र को*

कायनात में बुलन्द कर दिया।' (14 : 1-3)

'शरहे सद्र', (सीना खोल देना) यह कि अब सीखने-सिखाने के साधनों के ज़रिए हासिल होने वाले तमाम उलूम व मआरिफ़ अल्लाह की उस अ़ता और देन के सामने नाचीज़ होकर रह गए हैं, जिसकी समाई के लिए हमने तेरे सीने को खोल दिया है, अब उलूम व मआरिफ़ के अपार समुन्दर भी हों, तो सीने के फैले हुए दामन के लिए काफ़ी है और इसी 'शरहेसद्र' ने अल्लाह की मारफ़त के तमाम छिपे ख़ज़ाने तुझ पर खोल दिए और सारा बोझ तेरे सीने पर से हट गया, जिसने तेरी कमर को इसलिए तोड़ रखा था कि दिल से तलाश और दिली तड़प के बावजूद तू इससे पहले नहीं जानता था कि अल्लाह की मारफ़त का सीधा रास्ता कौन-सा है और जिनकी राहें गुम हो चुकी हैं, उनकी रहनुमाई का रास्ता क्या है? मगर अब यह सब कुछ रोशन हो जाने के बाद हमने दुनिया में तेरे ज़िक्र को वह बुलन्दी और ऊंचाई अ़ता फ़रमाई कि तेरा मक़ाम—

'ख़ुदा के बाद, मुख़्तसर यह कि तू ही बुज़ुर्ग है।'

चुनांचे नाम 'अहमद' व 'मुहम्मद' है और मक़ाम 'मुक़ामे महमूद', सूरः हम्द ज़िंदगी का वज़ीफा है और क़ियामत में हम्द का झंडा ही नुमायां—

हुस्ने यूसुफ़, दमे ईसा, यदे बैज़ादारी
आंचे ख़ूबां हमा दारंद तू तंहा दारी।

यही नहीं, बल्कि क़ुरआनी दावत के नए सिरे से बुलंद करने वाली तेरी हक़ की सदा ने एतक़ाद व अ़मल और ईमान व किरदार की राह से तमाम दुनिया के इज्तिमाई व समाजी निज़ामों में जो शानदार इंक़िलाब पैदा कर दिया और सोसाइटी के हर शोबे की पुरानी और फटी चादर बिछा दी, उसने तेरे ज़िक्र को वह बुलन्दी दी कि कोई क़ौम, कोई मज़हब और कोई जमाअ़त किसी-न-किसी शक्ल में उससे मुतास्सिर हुए बग़ैर न रह सके।

बुत-परस्ती से नफ़रत, तंहाईपसन्दी और अल्लाह की इबादत का ज़ौक़

बचपन से इज़्दिवाजी ज़िंदगी (गार्हस्थ्य जीवन) के शुरू के मरहलों तक के हालात व वाक़ियात तफ़्सील के साथ सीरत और हदीस की किताबों में नक़ल किए गए हैं, इसलिए वहीं उनसे रुजू किया जा सकता है।

मुख़्तसर यह कि दादा अब्दुल मुत्तलिब के इंतिक़ाल के बाद आपके चाचा अबू तालिब आपके साथ बड़ा उन्स और अपनापन रखते थे और ज़िंदगी भर आपका साथ देने का हक़ अदा करते रहे। नबियों और रसूलों की सुन्नत के मुताबिक़ आपने अपनी रोज़ी का भार किसी पर नहीं डाला और दुनिया के कामों में आपने बक़रियां भी चराईं और तिजारत भी की। शाम (सीरिया) के मशहूर तिजारती शहर बसरा में भी इस ग़रज़ से तशरीफ़ ले गए और पचीस साल की उम्र में यही सफ़र हज़रत ख़दीजतुल कुबरा से निकाह की वजह बना। आप ख़दीजा का माल साझे की तिजारत की बुनियाद पर बसरा की मंडी में ले गए। ख़दीजा का ग़ुलाम मैसरा भी सफ़र का साथी था। इस दर्मियान आपकी सदाक़त व अमानत, एक यहूदी राहिब की बशारत और तिजारत के क़ीमती मुनाफ़ा का जो तजुर्बा किया था और जो कुछ देखा था, मैसरा ने वह सब हज़रत ख़दीजा से कह सुनाया। चुनांचे यह तास्सुर मियां-बीवी के रिश्ते की वजह बना।

अब ज़िंदगी में एक और इंक़िलाब हुआ कि आप तंहाई में रहना पसन्द करने लगे और हिरा नामी गुफ़ा में दिन व रात गुज़ारने लगे। बुतपरस्ती से शुरू ही से नफ़रत थी, इसलिए भी न किसी मूर्ति के आगे सर झुकाया और न किसी ऐसी मज्लिस में शिर्कत फ़रमाई जो बुत-परस्ती के मेले कहलाते थे। अब अकेलेपन में सलीम फ़ितरत जिस तरह रहनुमाई करती, एक अल्लाह की इबादत करते, मगर एक चुभन सीने में ऐसी थी जो इस हालत में भी बेचैन ही रखती। अक्सर यह सोच कर तड़प जाते थे कि मेरी क़ौम ख़ास तौर से और इंसानी दुनिया आम तौर से किस तरह एक अल्लाह को छोड़कर मूर्तिपूजा और प्रकृति-पूजा (मज़ाहिर परस्ती) में पड़ी हुई है और यह कि अख़्लाक़ की

दुनिया किस तरह उलट गई है। आख़िर वह कौन-सा कामियाब नुस्ख़ा है जो इस हालत में इंक़िलाब पैदा कर दे और सच्ची ख़ुदापरस्ती और नेक अ़मली फिर एक बार अपनी शक्ल दिखला दे।

यही जज़्बात व तास्सुरात थे जो बेचैन दिल में करवटें ले रहे थे और हिरा की तंहाई में इन्हीं कैफ़ियतों के साथ ज़ाते अक़दस, अल्लाह की याद में लगी रहती और जब कई-कई दिन इस तरह गुज़र जाते तो कभी हज़रत ख़दीजा हाज़िर होकर खाने-पीने का सामान दे जातीं और कभी ख़ुद अपने आप जाकर कुछ दिनों का खाने-पीने का सामान ले आते और हिरा में फिर इबादत में लग जाते। चुनांचे चौदह सदियां गुज़रने के बाद आज भी हिरा, ज़ुबान से ख़ास मंज़र की गवाही दे रही है जिसका लुत्फ़ उसने वर्षों उठाया है और यही इबादत के लिए वह तंहाई की जगह थी जहां ज़ाते अक़्दस पर सबसे पहले अल्लाह की वह्य आई और तर्तीब के साथ सूरः इक़्रा और सूरः मुद्दस्सिर की कुछ आयतें सुनाने के लिए बशीर (बशारत देने वाला) व नज़ीर (डराने वाला) बना दिया।

पैग़म्बर बनाए गए

ग़रज़ ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी के इंफ़िरादी और इज्तिमाई दोनों पहलुओं का यह हाल था कि एक तरफ़ तंहाइयों में अल्लाह की मारफ़त हासिल करने में लगे हुए सीधे रास्ते की तालाश, इंसानों के सुधार के लिए तड़प और तलब थी और दूसरी तरफ़ क़ौम व मुल्क के लोगों के साथ, सच अपनाने, सच बोलने, सच का जामा अ़मली ज़िंदगी में पहनने, सही मामले और सच्ची सोच जैसे बेहतरीन अख़्लाक़ और पाक-साफ़ ख़ूबियों के साथ समाजी ज़िंदगी को सामने लाना था और इन फ़र्क़ों की वजह से हर आदमी की निगाह में आपकी वह क़द्र और इज़्ज़त थी कि आप सबकी मुत्तफ़क़ा राय से 'अस-सादिक़ वल अमीन' के लक़ब से याद किए जाते थे और कल जो दुश्मनी उनको मुहम्मद-अल्लाह के रसूल से नुबूवत के दावे पर हुई, वह आज मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह के साथ क़तई तौर पर नहीं थी और सब ही उनकी इज़्ज़त व एहतराम के क़ायल थे।

यही हालात व वाक़िआत थे, जबकि मुबारक उम्र चालीस मंज़िलें तै कर चुकी थी, रमज़ान का महीना था और आप हिरा ग़ार में इबादत में लगे हुए थे कि अचानक आपके सामने जिब्रील फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ और उसने बशारत दी कि अल्लाह ने आपको लोगों की रुश्द व हिदायत के लिए चुन लिया और रिसालत व पैग़म्बरी के ऊंचे मंसब पर बिठाया।

यह वाक़िया चूंकि मानव-जाति की तारीख़ में हैरत और इंक़िलाब की वजह साबित हुआ और उसने ज़ाते अक़्दस को बुलन्दी की इस हद पर पहुंचा दिया, जहां मज़हबों और मिल्लतों में सुधार व इंक़िलाब उस हस्ती की रहमत का फ़ैज नज़र आते हैं, इसलिए तारीख़ व हदीस के रोशन सफ़हों ने इस वाक़िए को तमाम तफ़्सील से सही सनद के साथ अपने सीने में हिफ़ाज़त से रखा है, चुनांचे हदीस-फ़न और इस्लामी तारीख़ के इमाम बुख़ारी रह० ने अपनी मशहूर व मक़बूल 'अल-जामेअ़-अस्सहीह' में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० की सनद से इस वाक़िए को जिन लफ़्ज़ों में नक़ल किया है, उसका तर्जुमा नीचे दिया जाता है। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं—

नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर शुरू में सच्चे ख़्वाबों का सिलसिला जारी रहा। कोई ख़्वाब आप नहीं देखते थे, मगर अपनी ताबीर (स्वप्नफल) में इतना रोशन और सही साबित होता था, जैसे कि सुबह की सफ़ेदी नमूदार होती है। फिर आपको अकेले रहना महबूब हो गया और हिरा में इबादत में मश्ग़ूल रहने लगे। कभी-कभी आप घर वालों के पास भी तश्रीफ़ ले जाते। हज़रत ख़दीजा रज़ि० आपके खाने का कुछ सामान तैयार करतीं और आप उसको लेकर फिर ग़ार में वापस तश्रीफ़ ले जाते, इसी तरह हिरा में इबादत में मश्ग़ूल रहते कि अचानक एक दिन आप पर ख़ुदा का फ़रिश्ता नमूदार हुआ और कहने लगा, 'इक़रा' (पढ़िए)। नबी उम्मी ने कहा, 'मैं पढ़ना नहीं जानता'

पैग़म्बर इर्शाद फ़रमाते थे कि जब मैंने फरिश्ते से यह कहा तो उसने मुझको पकड़ में ले लिया, जिसकी शिद्दत से मुझको तक्लीफ़ होने लगी और फिर छोड़कर मुझसे दोबारा कहा, 'पढ़िए' मैंने वही जवाब फिर दिया, 'मैं पढ़ना नहीं जानता।' तब उसने फिर वही अमल किया और गिरफ़्त छोड़कर तीसरी

बार फिर जुम्ला दोहरा दिया और मैंने भी वही पिछला जवाब दिया। ग़रज़ तीन बार यही बात-चीत और यही अमल होते रहने के बाद चौथी बार फ़रिश्ते ने (सूरः इक़रा) की ये कुछ आयतें तिलावत कीं—

तर्जुमा—'*अपने उस परवदिगार के नाम से पढ़ जिसने पैदा किया, उसने इंसान को जमे ख़ून से पैदा किया, पढ़ और तेरा परवरदिगार बहुत करम करने वाला है, जिसने क़लम (लेख) के ज़रिए (इंसान को) इल्म सिखाया, इंसान को वह सब कुछ सिखाया, जिसे वह नहीं जानता था।*'

ग़रज़ नबी अकरम ﷺ ने इन आयतों को दोहराया और ये आपके ज़ेहन में बैठ गईं। इसके बाद जब हिरा मे फ़ारिग़ हुए तो यह हालत थी कि दिल (वह्य की शिद्दत से) कांप रहा था। आपने मकान में दाख़िल होते ही फ़रमाया, 'मुझको कपड़ा ओढ़ाओ।' हज़रत ख़दीजा ने फ़ौरन कपड़ा ओढ़ा दिया। जब आपको सुकून हुआ तो ख़दीजा को तमाम वाक़िए कह सुनाए और फिर फ़रमाया, 'मुझे जान का डर है' (यानी मुझे यह ख़ौफ़ है कि शायद मैं वह्य के बोझ को बरदाश्त न कर सकूं।) हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने सुनकर अर्ज़ किया, ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा आपको हरगिज़ रुसवा नहीं करेगा, क्योंकि आप रिश्तों को जोड़ते हैं, मेहमानों की मेहमानदारी, बेचारों की चारागरी फ़रमाते और ग़रीब के लिए मआश का ज़रिया मुहैया करते हैं और हक़ पहुंचाने की कड़ी-से-कड़ी मुसीबत में मददगार बनते हैं।

इस बात-चीत के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि० नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहिम व सल्लम को अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं। वरक़ा बिन नौफ़ल जाहिलियत के ज़माने में उन लोगों में से थे जिन्होंने सच्चे ईसाई धर्म को क़ुबूल कर लिया था, इबरानी ज़ुबान से वाक़िफ़ और इंजील की किताबत किया करते थे और बहुत बूढ़े और आंख के अंधे भी थे। हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने वरक़ा से कहा, 'मेरे भाई! आप अपने भतीजे का वाक़िया तो सुनिए।' वरक़ा ने हालात मालूम किए तब नबी अकरम सल्ल० ने गुज़रा हुआ वाक़िया सुनाया। वरक़ा ने सुना तो कहा, 'यह वह फ़रिश्ता (जिब्रील ؑ) है जो हज़रत मूसा ؑ पर अल्लाह की वह्य ले आया करता था, काश! कि मैं उस वक़्त तक ज़िंदा रहूं। जब तेरी क़ौम तुझको तेरे वतन

(मक्का) से निकालेगी।' आपने मालूम किया, क्या मेरी क़ौम मुझको वतन से बेवतन कर देगी? वरक़ा ने कहा, बेशक ऐसा होगा और जिस पैग़ाम के लिए ख़ुदा ने आपको पैग़म्बर बनाया है, उस ख़िदमत पर जो भी लगाया गया, उसके साथ यही शक्ल पेश आई है। पस अगर वह वक़्त मेरी ज़िंदगी में आया, तो मैं पूरी ताक़त के साथ तेरी हिमायत करूंगा।' मगर वरक़ा को यह वक़्त नहीं मिला, उससे पहले उनका इंतिक़ाल हो गया।

वह्य आने का पहला दौर

नबी अकरम सल्ल० पर सबसे पहले सूरः अलक़ की ये आयतें उतरीं—

तर्जुमा—*'पढ़ो, अपने परवरदिगार के नाम से, जिसने पैदा किया इंसान को जमे ख़ून से, पढ़ो, और तेरा परवरदिगार जो सबसे ज़्यादा बरगज़ीदा है, वह हस्ती है जिसने सिखाया लिखना सिखाया इंसान को वह सब कुछ जो वह नहीं जानता था।* (86 : 1-5)

इन आयतों में यह बताया गया है कि हज़रत इंसान जो ख़ुदा की सबसे बेहतर और कायनात के सिलसिले की सबसे ज़्यादा तरक़्क़ी पाई मख़्लूक़ है और इसी वजह से वह कायनात में 'अल्लाह के ख़लीफ़ा' के मंसब पर बिठाया गया है, उसकी पैदाइशी कमज़ोरियों का यह हाल है कि उसकी पैदाइश गंदे पानी और जमे ख़ून से हुई है। लेकिन अल्लाह ने जब उसको ऊंची जगह बख़्शने का इरादा किया और 'अस्फ़लुस्साफ़िलीन' (नीचों में नीच) के लायक़ मख़्लूक़ को ऊंचे दर्जों पर बिठाना चाहा तो उसको वह सिफ़ते आला अता फ़रमाई जो अल्लाह की सिफ़तों में बहुत ऊंची है यानी उसके 'सिफ़ते इल्म का मज़्हर' बनाया, उसको 'क़लम के ज़रिए' लिखना सिखाया और इल्म व इरफ़ान की धुरी बनाया, फिर इस तरफ़ भी इशारा किया कि इल्म हासिल करने के तीन ही तरीक़े हैं—

1. ज़ेहनी 2. लिसानी (भाषायी) 3. रस्मी

इल्म ज़ेहनी लफ़्ज़ों और रस्मों का मुहताज नहीं होता और लिसानी इल्म ज़ेहनी इल्म का मुहताज है मगर रस्म व नक़्श लिखने से बे-नियाज़ है और रस्मी इल्म रस्मुलख़त (लिपि) और नक़्शों का भी मुहताज है। पस अगर 'रस्मी

इल्म' का किसी जगह ज़िक्र हो तो लिसानी और ज़ेहनी इल्मों का ज़िक्र अपने आप ही जाता है क्योंकि यह अपने से बुलन्द हर दो इल्मों के लिए बेहतरीन ताबीर करने वाला है और ज़ाहिर है कि इल्म रस्मी इल्म 'क़लम' का मुहताज है, इसलिए क़ुरआन ने 'अल्ल-म बिल क़लम' कह कर बड़े अच्छे ढंग से इस पूरी हक़ीक़त को वाज़ेह कर दिया। इसकी और तशरीह 'अल्ल-मल इंसा न मा लम यालम' से कर दी और इस बयान का मक़्सद यह है कि एक तरफ़ इल्म और नुबूवत का क्या ताल्लुक़ है, वह ज़ाहिर हो जाए दूसरी ओर इंसान को अपनी ज़िंदगी के सही मक़्सद का इल्म हो जाए।

वह्य उतरने का दूसरा दौर

हिरा ग़ार में नुबूवत के मंसब से सरफ़राज़ किए जाने के वक़्त सूरः अलक़ की ये कुछ आयतें उतर कर अल्लाह की वह्य का सिलसिला कट गया। अल्लाह की हिक्मत का तक़ाज़ा यह हुआ कि हिरा में फ़रिश्ते के ज़ाहिर होने और वह्य के नाज़िल होने से फ़ौरी तौर पर नुबूवत व रिसालत की ख़ुसूसियतें और असरात ज़ाते अक़्दस पर हुए हैं, वे अच्छी तरह पक जाएं और नुबूवत व रिसालत की सलाहियत व इस्तेदाद की तक्मील हो जाए, ताकि आगे वह्य के सिलसिले के मज़बूत मुहर्रिकात और मुअस्सिरात पैग़म्बर ﷺ की बशरी ख़ासियतों के लिए अजनबी न रहें, इसलिए कुछ दिनों के लिए वह्य के नाज़िल होने का सिलसिला बन्द रहा। इसी को मज़हब के लफ़्ज़ों में 'फ़तरते वह्य' (वह्य का बन्द होना) कहते हैं।

लेकिन ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हिरा में पेश आने वाली कैफ़ियत और सूरतेहाल से जो फ़ितरी तश्वीश (स्वाभाविक चिन्ता) पैदा होती थी, जब उसने सुकून और इत्मीनान की शक्ल अख़्तियार कर ली तो वह्य के नाज़िल होने की रूहानी कैफ़ियतों ने इस दर्जा लुत्फ़ पैदा किया कि आप उस 'फ़तरत' को बर्दाश्त न कर सके और लुत्फ़ वाले और गहरे जज़्बों ने इस हद तक बेचैनी की शक्ल अख़्तियार कर ली कि कभी-कभी नामूसे अकबर (जिब्रील अमीन) ज़ाहिर होकर आपको सब्र व तस्कीन की दावत देते और यक़ीन दिलाते थे कि अपनी तमाम नज़ाकतों, ख़ूबियों और हुस्न व कमाल

के साथ नुबूवत व रिसालत का यह सिलसिला आपकी ज़ाते अक़्दस के साथ जुड़ चुका है और 'फ़तरत' का यह दौर बस थोड़े दिनों का है, इसलिए आप परेशान न हों। तब आप तस्कीन पाते और वायदे वाले वक़्त के इन्तिज़ार में रहते कि कुछ दिनों बाद वह्य के आने का सिलसिला दोबारा शुरू हुआ और सबसे पहले सूरः मुद्दस्सिर की ये आयतें उतरीं—

तर्जुमा—*'ऐ कमली पोश उठ, (और लोगों को गुमराही के अंजाम से) डरा और अपने पालनहार की अज़्मत व जलाल को बयान कर और लिबास को पाक कर और बुतों से जुदा रह और ज़्यादा हासिल करने की नीयत से अच्छा व्यवहार न कर और अपने पालनहार के मामले में (अज़ीयत व मुसीबत पर) सब्र अख़्तियार कर।'* (74 : 1-7)

इन आयतों ने गोया ज़िंदगी के इंसानी मक़्सद की तक्मील कर दी, क्योंकि सूरः अलक़ में कहा गया था कि इंसानियते कुबरा के लिए 'सही इल्म' शर्त है। यह नहीं तो कुछ भी नहीं। अब यह बताया जा रहा है कि सही इल्म की ऊंचाई और बड़ाई के मान लेने के बाद भी इंसानियत की तक्मील उस वक़्त तक नामुम्किन है कि सही इल्म के साथ 'सही अ़मल' भी मौजूद हो, इसलिए कि अगर इल्म सही है और अ़मल सही मफ़क़ूद हो, तो उसका फ़ायदा मुअ़त्तल और बेकार है और अगर अ़मल है और सही इल्म नदारद, तो वह अ़मल नुक़्सान की वजह है। रुश्द व हिदायत और सीधे रास्ते के लिए दोनों ही का वुजूद ज़रूरी है और तभी 'इंसान' 'इंसानियते कुबरा' हासिल कर सकता है।

ग़रज़ जिस तरह सूरः अ़लक़ की आयतों से 'इल्मे नाफ़ेअ़' (लाभप्रद ज्ञान) की ओर इशारे किए, उसी तरह सूरः मुद्दस्सिर ने 'अ़मले नाफ़ेअ़' की बुनियादी तफ़्सीलें ज़ाहिर की हैं। ख़ुदा की हस्ती और उसका कामिल रब होना दोनों का अ़मली एतराफ़, बातिनी तहारत व पाकीज़गी का कमाल, ज़ाहिरी तहारत व पाकीज़गी का लाज़िम होना, बेग़रज़ और बेलौस अख़्लाक़े हमीदा की बुनियाद, 'एहसान' पर जमाव और क़ुबूले हक़ और नेक अ़मली के नतीजों पर 'सब्र' इन आयतों का हासिल हैं और यही वे बुनियादी बातें है, जिनमें इल्मे हक़ और अ़मले सही की तमाम कायनात समा दी गई है।

साथ ही हज़रत मुहम्मद ﷺ के लिए सूरः अलक़ और सूरः मुदस्सिर का यह ख़िताब और पैग़ामे हक़ इशारा है इस तरफ़ कि अ़मल का यह निज़ाम मंसबे रिसालत के लिए 'नफ़्स की तक्मील' और रुश्द व हिदयत की दावत के लिए 'पहले दर्जे' की हैसियत रखता है और यही क़रीबी मुस्तक़्बिल में 'आम बेसत' की वजह साबित होगा।

दावत व इर्शाद के एलान की पहली मंज़ील

कुरआन के इस हुक्म के बाद जो कि तब्लीग़ और हक़ की दावत का पहला पैग़ाम था, दावत व इर्शाद ने एक क़दम और आगे बढ़ाया और अब ज़ाते हक़ ने सूरः शोअ़रा की आयतें नाज़िल फ़रमा कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह फ़ैसला सुनाया कि सबसे पहले रिश्तेदारों और क़रीब के लोगों को हक़ की दावत दीजिए, ताकि दूसरों पर भी उसका असर पड़े और यों भी कुरैश और बनी हाशिम के वह्य कुबूल करने का असर तमाम अरब क़बीलों पर पड़ना लाज़िमी है, इसलिए वे सब क़बीलों के सरख़ेल और सर गिरोह हैं और हरम के रहने वालें होने की वजह से तमाम अरब पर उनका दीनी और दुन्यवी असर है। सूरः शोअ़रा में है—

तर्जुमा— *'और (ऐ पैग़म्बर!) अपने क़रीबी नातेदारों को (गुमराही से) डरा और जो मुसलमान तेरी पैरवी करने वाले हैं, उनके लिए अपने बाज़ुओं को पस्त रख (यानी नर्मी और तवाज़ो से पेश आ) अगर वे नाफ़रमानी करें तब तो उनसे कह दे मैं, तुम्हारे इन (बुरे) कामों से बरी हूं और ग़ालिब रहम करने वाली ज़ात पर भरोसा कर जो तुझको उस वक़्त भी देखती है, जब तू उसके दरबार में खड़ा होता है और उस वक़्त भी, जबकि तू सज्दा करने वालों में मिलकर उसके सामने सज्दा रेज़ होता है। बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है।'*

(26 : 214-220)

गोया यह इल्म व अ़मल की तक्मील और रुश्द व हिदायत के 'मंसबे फ़ैज़ान' के बाद दूसरा दर्जा था, जिसमें हक़ का एलान और इस्लाम की दावत की अ़मली सूरत अख़्तियार करने के लिए तहरीक की गई। चुनांचे सही रिवायतें गवाह हैं कि आपने सफ़ा की चोटी पर खड़े होकर उस ज़माने में राइज

एलान के तरीक़े के मुताबिक़ 'या सबाहा' कहकर क़ुरैश के ख़ानदानों को पुकारा और जब सब जमा हो गए तो एक मिसाल देकर समझाया कि बेशक मैं ख़ुदा को पैग़म्बर, रसूल और सीधे रास्ते के लिए सच्चा हिदायत करने वाला हूं। इर्शाद फ़रमाया—

'लोगो! अगर मैं तुमसे यह कहूं कि इस पहाड़ के पीछे एक भारी फ़ौज जमा है और तुम पर हमले के लिए तैयार, तो क्या तुम मुझको सच्चा समझोगे? 'ओ मुसद्दिक़ी! लोगों ने कहा हमने तुझको 'अस्सादिक़ुल अमीन' पाया है तू जो कुछ कहेगा हक़ और सदाक़त पर टिका होगा, तब आपने फ़रमाया, तो लोगो! मैं तुमको एक अल्लाह की ओर बुलाता हूं और मूर्ति-पूजा की गन्दगी से बचाना चाहता हूं। तुम उस दिन से डरो, जब ख़ुदा के सामने हाज़िर होकर अपने आमाल व किरदार का हिसाब देना है।' (तारीख़े इब्ने कसीर)

यह सच्ची आवाज़ जब क़ुरैश के कानों में पहुंची, तो वे हैरान रह गए और बाप-दादा के दीन 'बुतपरस्ती' के ख़िलाफ़ आवाज़ सुनकर ख़फ़ा होने लगे गोया सब में एक आग दौड़ गई और सबसे ज़्यादा आपके हक़ीक़ी चचा अबूलहब को तैश आया और ग़ज़बनाक होकर कहने लगा, 'तू हमेशा हलाकत और रुसवाई का मुंह देखे, क्या तूने इस ग़रज़ से हमको बुलाया था?'

अजब मंज़र है कि कुछ घड़ियां पहले जिस मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की सदाक़त व अमानत और अच्छी आदतों से सारी क़ौम मुतास्सिर रहकर उसकी अज़्मत न इज़्ज़त करती और उसके साथ वालिहाना मुहब्बत ज़ाहिर करती थी, वही आज इस एलान पर कि 'मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह हूं एक साथ पराएपन और नफ़रत रखने वाली और ख़ून की प्यासी बन गई।

दावत व इर्शाद की दूसरी मंज़िल

सीरत की किताबों में पढ़ आए हो कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ख़ानदान और बिरादरी के लोगों को राहे हक़ दिखाने और उनकी ईमानी और अख़्लाक़ी हालत ठीक करने की ख़ातिर क्या कुछ नहीं किया, मगर क़ुरैश के कुछ लोगों के सिवा किसी ने आपकी दावत पर लब्बैक न कहा और अदावत व बुग़्ज़ को अपना शेवा बनाए रखा। तब दावत व इर्शाद ने तरक़्क़ी

के तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा और अल्लाह की तरफ़ से हुक्म हुआ, ऐ हक़ की दावत देने वाले! ख़ानदान और बिरादरी के इंकार और सरकशी से बद-दिल और ग़मगीन न हो और अपनी ज़िम्मेदारी पर जमकर डटे रहो, क्योंकि सआदत (सौभाग्य) और शक़ावत (दुर्भाग्य) तुम्हारे क़ब्ज़े में नहीं हैं, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ इब्लाग़ (पहुंचाना) है अलबत्ता अब ख़ानदान के दायरे से आगे बढ़कर मक्का और उसके चारों तरफ़ के क़बीलों और क़ौमों को भी हक़ का यह पैग़ाम सुनाओ और दावत व इर्शाद का यह तोहफ़ा उनके सामने भी रखो, ताकि जो सईद रूहें 'पैग़ामे हक़' के लिए बेचैन और परेशान हैं, वे इस पर लब्बैक कह कर तस्कीन पाएं और प्यासी रूह को ज़िंदगी के पानी से सींचें।

तर्जुमा—*और (देखो) यह किताब (क़ुरआन) है जिसे हमने (तौरात की तरह) नाज़िल किया, बरकत वाली और जो किताब इससे पहले नाज़िल हो चुकी है, इसकी तस्दीक़ करने वाली और इसलिए नाज़िल की, ताकि तुम उम्मुल क़ुरा (यानी शहर मक्का) के बाशिंदों को और उसको जो उसके चारों तरफ़ हैं (गुमराहियों के नतीजों से) डराओ।* (6 : 92)

तर्जुमा—*और इसी तरह हमने तुम पर क़ुरआन नाज़िल किया अरबी ज़ुबान में, ताकि (गुमराहियों के नतीजों से) डराओ मक्का शहर के बाशिंदों को और उनको जो उसके आस-पास हैं।* (42 : 7)

चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हक़ की तब्लीग़ को मक्का की हदबन्दियों से आज़ाद करके मक्का के आस-पास के लोगों के लिए आम कर दिया और ताइफ़, हुनैन और यसरिब (मदीना) तक हक़ की अपनी आवाज़ को पहुंचाया, बल्कि मुहाजिरों के ज़रिए हब्शा के ईसाई बादशाह असहमा तक हक़ के कलिमे को पहुंचाया।

आम बेसत

इसके बाद दावत व इर्शाद की वह तीसरी मंज़िल पेश आई जो मुहम्मद सल्ल० के नबी बनाए जाने का नस्बुलऐन और एक ही मक़्सद था और तमाम नबियों और रसूलों के मुक़ाबले में ज़ाते अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम के नबी बनाए जाने में ख़ास बात थी, यानी अल्लाह ने आपके नबी बनाए जाने को 'आम बेसत' क़रार दिया और हुक्म हुआ कि आप न सिर्फ़ कुरैश के लिए, न सिर्फ़ उम्मुलक़ुरा (मक्का) और मक्का के पास-पड़ोस के लिए, न सिर्फ़ अरब के लिए नबी व रसूल बनाकर भेजे गए हैं, बल्कि आपकी बेसत (नबी बनाया जाना) तमाम इंसानी कायनात के लिए हुई है और आप अरब व अजम और काले-गोरे सब के लिए पैग़म्बर और ख़ुदा के एलची हैं। इर्शाद होता है—

तर्जुमा—*और हमने तुमको इंसानी कायनात के लिए पैग़ाम देकर भेजा है, (नेक अ़मल पर) ख़ुशख़बरी सुनाने और (बुरे आमाल पर) लोगों को डराने के लिए, अक्सर (जाहिल) लोग इस हक़ीक़त को नहीं समझते।* (34 : 28)

तर्जुमा—*पाक और बरतर है वह ज़ात, जिसने हक़ व बातिल के दर्मियान तमीज़ देने वाली किताब नाज़िल फ़रमाई अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर ताकि वह तमाम जहान वालों को (बुरे अंजाम से) डराए।* (25 : 9)

इस्लाम की दावत का मुज्मल ख़ाका और हज़रत जाफ़र रज़ि० की तक़रीर

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अरब की धरती पर नबी बना कर भेजे गए। इस फ़ितरी काम के तरीक़े को सामने रखकर सबसे पहले क़ौम अरब ही उनकी दावत व इर्शाद का मुख़ातब क़रार पाई, ताकि जो क़ौम कल चौपायों का गल्लाबान थी, नुबूवत के नूर से रोशन होकर इंसानी कायनात की गल्लाबान बन जाए और अल्लाह के सबसे बुज़ुर्ग पैग़म्बर व रसूल की रहमत के साए में तर्बियत पाकर पूरी कायनात के लिए 'ख़ैरे उम्मत' का लक़ब पाए, तो अब देखना यह है कि अरब जैसी, सरकश, जाहिल और तहज़ीब से कोरी क़ौम और अख़्लाक़ी व फ़िक्री जज़्बात व एहसासात से बिल्कुल ही हटी हुई क़ौम पर 'इस्लाम की दावत' ने फ़ौरी तौर पर क्या असर किया, ताकि हम आसानी से यह अन्दाज़ा कर सकें कि जिस मज़हब के बुनियादी उसूल और अक़ीदे और सोच-ख़्याल ने ऐसी क़ौम की ज़िंदगी के शोबों में हैरत में डालने

वाला और शानदार इंक़िलाब पैदा करके उससे रूहानी दुनिया का इंसान बना दिया, उस मज़हब के सच्चे होने के लिए अकेले यह एक कारनामा ही रोशन दलील बन सकता है।

मक्का के मुश्रिकों की लगातार मुख़ालफ़त, ईज़ा पहुंचाने और अज़ाब देने के हौलनाक तरीक़ों ने जब मुसलमानों की एक मुख़्तसर जमाअत को अफ़्रीक़ा के मशहूर मुल्क हब्शा की जानिब हिजरत करने पर मजबूर कर दिया और वे ईसाई हुकूमत असहमा की हुकूमत में शरणार्थी हो गए तो क़ुरैश इसको भी सहन न कर सके और असहमा के दरबार में बड़ों का एक वफ़्द भेजकर यह मांग की कि वह मुसलमानों को इसलिए उनके हवाले कर दे कि यह बद-दीन होकर और बाप-दादा के दीन को छोड़कर क़ौम में तफ़रक़ा पैदा करने की वजह बने और यहां रहकर भी हुक्मरां के दीन के मुख़ालिफ़ हैं।

असहमा के वफ़्द की मांग सुनकर मुसलमानों को जवाबदेही के लिए दरबार में तलब किया और इस्लाम के बारे में पूरी बात मालूम की, तब हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के बारे में तक़रीर फ़रमाई और उसकी मुक़द्दस तालीम का मुख़्तसर और जामे नक़्शा खींचकर असहमा को सही सूरतेहाल से आगाह किया। यही वह तक़रीर है जो असल में अरब-जाहलियत के दौर और इस्लाम क़ुबूल करने के दौर की इंक़िलाबी कैफ़ीयत का मुख़्तसर मगर बेहतरीन ख़ाका है।

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने बादशाह और दरबारियों को मुख़ातब करके इर्शाद फ़रमाया।

'बादशाह! हम पर एक लम्बा अंधा ज़माना गुज़रा है, उस वक़्त हमारी जिहालत का यह हाल था कि एक ख़ुदा को छोड़कर बुतों की परस्तिश करते थे और ख़ुद के गढ़े पत्थरों की पूजा हमारा शेवा था। मुरदार खाना, ज़िनाकारी, लूटमार, रिश्तों का तोड़ना सुबह व शाम का हमारा मश्ग़ला था, पड़ोसियों के हक़ों से बेगाना, रहम व इंसाफ़ से नावाक़िफ़ और हक़ व बातिल के इम्तयाज़ से नावाक़िफ़, ग़रज़ हमारी ज़िंदगी पूरी की पूरी दरिंदों की तरह थी। मज़बूत कमज़ोर को कुचलने और मज़बूत कमज़ोर को हज़्म कर लेने को अपने लिए फ़ख़्र और इम्तियाज़ी बात समझता था।

अल्लाह की रहमत का करिश्मा देखिए कि उसने हमारे अन्दर एक बुज़ुर्ग भेजा, जिसके नसब को हम जानते थे, जिसकी सच्चाई, अमानतदारी पर दोस्त-दुश्मन दोनों गवाह, जिसकी क़ौम ने उसको 'मुहम्मद अल-अमीन' का लक़ब दिया, वह आया और उसने बतलाया कि ख़ुदा का कोई शरीक नहीं, वह शिर्क से पाक है, बुतपरस्ती जिहालत का शेवा है, इसलिए छोड़ देने के क़ाबिल है और सिर्फ़ एक ख़ुदा ही की इबादत बन्दे का हक़ है। उसने हमको हक़ कहने, सच बोलने की हिदायत की और रिश्तों को जोड़ने का हुक्म दिया। पड़ोसियों और कमज़ोरों के साथ अच्छा व्यवहार करना सिखाया, क़त्ल व ग़ारत की बुरी रस्म को मिटाया। ज़िनाकारी को हराम और फ़हश कह कर उस गन्दे इंसानी काम से हमको नजात दिलाई, निकाह में महरम-ग़ैर महरम का फ़र्क़ बताया। झूठ बोलने, नाहक़ यतीम के माल खाने को हराम फ़रमाया। नमाज़ और ख़ैरात व सदक़ात की तालीम दी और हर हैसियत में हमको हैवानियत (पशुता) के गहरे गढ़े से निकाल कर इंसानियत के बड़े दर्जे तक पहुंचाया।

बादशाह! हमने उस मुक़द्दस तालीम को क़ुबूल किया और उस पर सच्चे दिल से ईमान लाए। यह है हमारा वह क़ुसूर जिसकी वजह से मुश्रिकों का वफ़्द (प्रतिनिधि-मंडल) तुझसे मांग करता है कि तू हमको उनके हवाले कर दे।' (सीरत इब्ने हिशाम)

हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के साफ़ और सादा, मगर रोशन उसूल को जब असहमा के सामने सच्ची हिम्मत के साथ पेश किया तो हब्शा के हुक्मरां ने मुसलमानों को अपनी पनाह से निकाल कर कुफ़्र के हवाले करने से इंकार कर दिया और फिर हज़रत जाफ़र रज़ि० ने बड़ी अच्छी आवाज़ में सूरः मरयम की कुछ आयतें तिलावत कीं तो हब्शा का नजाशी बेहद मुतास्सिर हुआ और आंखों में आंसू लाकर इस्लाम की सच्चाई पर ईमान लाया और हज़रत जाफ़र के हाथ पर मुसलमान हो गया।

यह है इस्लाम की दावत का मुख़्तसर ख़ाका जिसने दुनिया के सबसे तारीक इंसानी ख़ित्ते को एक बड़ी ही थोड़ी मुद्दत में सूरज की तरह रोशन और ताबनाक बना दिया। इस ख़ाके में एतक़ादात, अख़्लाक़ और भले आमाल का वह तमाम इल्म मौजूद है, जिससे क़ुरआन ने अलग-अलग सूरतों में हस्बे हाल

और मुनासिब मुक़ाम पर ज़्यादा-से-ज़्यादा बयान किया है, बल्कि पूरा क़ुरआन इन्हीं रोशन हक़ीक़तों का रास्ता दिखाने वाला, और रहनुमाई करने वाला है।

मेराज

'इसरा' (मेराज) के मानी रात में ले जाने के है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वह बेमिसाल और हैरत में डालने वाला वाक़िया, जिसमें अल्लाह ने अपने रसूल को मस्जिदे हराम (मक्का) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) और वहां से मला-ए-आला तक जिस्म के साथ (सशरीर) अपनी निशानियां दिखाने के लिए सैर कराई, चूंकि रात के एक हिस्से में पेश आया था, इसलिए 'इसरा' कहलाता है।

'मे राज' उरूज से निकला है, जिसके मानी चढ़ने और बुलन्द होने के हैं और इसीलिए मे राज ज़ीना को भी कहते हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चूंकि इस रात में मला-ए-आला की बढ़ती मंज़िलें तै फ़रमाते हुए सातों आसमान, सिदरतुल-मुंतहा और उससे भी बुलन्द होकर अल्लाह की निशानियां अपनी आंखों देखीं और इन वाक़ियों के ज़िक्र में वह्य के तर्जुमान ने 'अ-र-ज बी' का जुम्ला इस्तेमाल फ़रमाया, इसलिए इस अज़ीम वाक़िए को मेराज के नाम से याद किया जाता है।

वाक़िया सिर्फ़ एक ही बार हुआ

इसलिए दो अलग-अलग ताबीरों और वाक़ियों की तफ़्सील में थोड़े-थोड़े इख़्तिलाफ़ को सामने रखते हुए रिवायतों में मेल पैदा करने की ग़रज़ से इस वाक़िए की ज़्यादा तायदाद का क़ायल होना तारीख़ी और तहक़ीक़ी निगाह से हरगिज़ सहीह नहीं है। मशहूर मुहक़्क़िक़, जलीलुल क़द्र मुहद्दिस, मुफ़स्सिर और तारीख़दां हाफ़िज़ इमादुद्दीन इब्ने कसीर का यह फ़रमाना कि 'इन तमाम रिवायतों को जमा करने से यह बात अच्छी तरह साफ़ हो गई कि मेराज का वाक़िया सिर्फ़ एक ही बार पेश आया, हक़ीक़त खोल देती है।

तारीख़ व सन् की तारीख़

यह वाक़िया कब पेश आया, इस बारे में बहुत-से क़ौल हैं, लेकिन इन दो बातों पर सब मुत्तफ़िक़ हैं–

एक यह कि मेराज का वाक़िया हिजरत से पहले पेश आया। दूसरी बात यह कि हज़रत ख़दीजा के इंतिक़ाल के बाद वाक़े हुआ और जबकि हिजरत के वाक़िए पर सब मुत्तफ़िक़ हैं कि 13 नबवी को पेश आया और जैसा कि बुख़ारी में ज़िक्र है हज़रत आइशा रज़ि० की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत ख़दीजा का इंतिक़ाल हिजरत से तीन साल पहले और एक दूसरी रिवायत के पेशेनज़र पांच वक़्त की नमाज़ के फ़र्ज़ होने से पहले हो चुका था तो अब मेराज के वाक़िए को हिजरत से पहले के इन तीन वर्षों के अन्दर ही होना चाहिए।

तो अब यह कहना आसान है कि मेराज का वाक़िया हिजरत से एक साल या डेढ़ साल पहले पेश आया। क़ौल यह है कि महीना रजब का था और तारीख़ 29 थी। चुनांचे इब्ने अ़ब्दुल बर्र, इमाम नववी और अ़ब्दुल ग़नी मुक़द्दसी रह० जैसे मशहूर हदीस के माहिरों व रुझान इसी तरफ़ है कि रजब था और बाद के तो फ़रमाते हैं कि 27 थी और दावा करते हैं कि उम्मत में हमेशा से इसी पर इत्तिफ़ाक़ रहा है।

क़ुरआन और मेराज का वाक़िया

क़ुरआन में इसरा या मेराज का वाक़िया दो सूरतों—बनी इसराईल और अन-नज्म—में ज़िक्र किया गया है। सूरः बनी इसराईल में मक्का (मस्जिदे हराम) से बैतुल मक़्दिस (मस्जिदे अक़्सा) तक सैर का ज़िक्र है और सूरः नज्म में मला-ए-आला के सैर व उरूज का भी ज़िक्र मौजूद है। अगरचे आमतौर पर यह समझा जाता है कि बनी इसराईल की सिर्फ़ शुरू ही की आयतों में इस वाक़िए का ज़िक्र है, मगर हक़ीक़त यह है कि पूरी सूरः इसी शानदार वाक़िए से मुताल्लिक़ है और सूरः की तमाम आयतें इसी को पूरा करती हैं। और इस

दावे के लिए एक साफ़ और खुली दलील ख़ुद इसी सूरः में यह मौजूद है कि बीच सूरः में आयत 'व मा ज-अलनर्रोया अल्लती अरै ना-क इल्ला फ़ित-न-तल्लिन्नास' में मेराज के इसी वाक़िए का तज़्किरा हो रहा है। इससे पहले हज़रत मूसा और हज़रत नूह के दावत व तब्लीग़ के वाक़िए इसी सिलसिले में गवाह और नज़ीर के तौर पर पेश किए गए हैं कि इंकार करने वालों ने हमेशा इसी तरह ख़ुदा की सच्चाइयों को झुठलाया है, जिस तरह आज मेराज के वाक़िए को झुठला रहे हैं।

हदीसें और मेराज के वाक़िए का सबूत

मशहूर मुहद्दिस ज़रक़ानी रह० कहते हैं कि मेराज का वाक़िया 45 सहाबा से नक़ल किया गया है और फिर उनके नाम गिनाए हैं। इन सहाबा में मुहाजिरीन भी हैं और अंसार भी और यह हरगिज़ नहीं समझना चाहिए कि चूंकि अंसार सहाबा मक्का में मौजूद नहीं थे, इसलिए उनकी रिवायतें सिर्फ़ सुनी हुई हैं। इसलिए कि ऐसे अहम वाक़िए को जिसका इस्लाम की तरक़्क़ी के साथ बहुत गहरा ताल्लुक़ और हिजरत के वाक़िए के साथ ख़ास ताल्लुक़ है, सहाबा ने सीधे-सीधे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया होगा और अगर मुहाजिरों से भी सुना होगा तो फिर ज़ाते अक़्दस से तस्दीक़ ज़रूर ही की होगी। चुनांचे शद्दाद बिन औस रज़ि० की रिवायत में ये लफ़्ज़ मौजूद हैं—

हमने (सहाबा ने) अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेराज किस तरह हुई? (तिर्मिज़ी)

अरबी लफ़्ज़ 'क़ुलना' यह साबित कर रहा है कि बेशक मेराज से मुताल्लिक़ सहाबा रज़ि० के आम मज्मे में नबी अकरम सल्ल० से पूछा जाता था, जिनमें मुहाजिरीन व अंसार सब ही शरीक होते थे और मालिक बिन सअसआ रज़ि० अंसारी सहाबी हैं। उनकी रिवायतें मेराज में है—

नबी अकरम ﷺ ने उनसे (सहाबा से) यह वाक़िया बयान किया।

(बुख़ारी, किताबुल मेराज)

वाक़िए की शक्ल

चूंकि यह वाक़िया अपनी अहमियत के साथ-साथ लम्बा भी था, इसलिए बशर होने की वजह से वाक़िए के असल तफ़्सीली हालात में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ और तवातुर की हद तक रिवायतों के नक़ल किए जाने के बावजूद कई रिवायतों में कुछ जगहों पर पाये जाने वाले इख़्तिलाफ़ से असल वाक़िए की हक़ीक़त पर बिल्कुल कोई असर नहीं पड़ता, ख़ासतौर से जबकि क़ुरआन ने इन अजीब और हैरत में डालने वाले वाक़ियों को क़तई नस्स से वाज़ेह पर दिया है, जिनके बारे में मुलहिद अपने हलहाद के ज़रिए बातिल तावील गढ़ करके इस वाक़िए की मोज़ाना हैसियत का इंकार करते हैं।

मेराज का वाक़िया और क़ुरआन

सूरः बनी इसराईल में वाकिया इसरा बैतुल मक़्दिस तक की सैर से मुताल्लिक़ है—

तर्जुमा—*पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने अपने बन्दे को (यानी पैग़म्बरे इस्लाम) को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक कि उसके आस-पास को हमने बड़ी ही बरकत दी है, सैर कराई और इसलिए सैर कराई कि अपनी निशानियां उसे दिखाएं। बेशक वही ज़ात है जो सुनने वाली, देखने वाली है'* (17 : 1)

तर्जुमा—*'और वह दिखलावा जो तुझको हमने दिखाया, सो लोगों की आज़माइश के लिए (दिखलाया)* (19 : 59)

और सूरः नज्म में मला-ए-आला तक उरूज का ज़िक्र भी मौजूद है—

तर्जुमा—*'गवाह है सितारा जबकि डूबे, तुम्हारा साथी न गुमराह हुआ और न भटका और नहीं बोलता अपने नफ़्स की ख़्वाहिश से, यह नहीं है मगर हुक्म जो उसको भेजा गया है उसको बतलाया है सख़्त ताक़तों वाले ज़ोरावर (फ़रिश्ते) ने (कि यह ख़ुदा की वह्य है) जो सीधा बैठा और था वह आसमान के ऊंचे किनारे पर, फिर वह क़रीब हुआ, पस झुक आया, फिर रह गया (दोनों के दर्मियान) दो कमान बल्कि, उससे भी नज़दीक का फ़र्क़, पस ख़ुदा ने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर वह्य नाज़िल फ़रमाई, जो भी*

वह्य भेजी, उस (बन्दे) ने जो देखा उसके दिल ने झूठ नहीं कहा, (यानी आंख की देखी, बात को झुठलाया नहीं, बल्कि तस्दीक़ की) तो क्या तुम उससे इस पर झगड़ते हो जो उसने ख़ुद देखा है (यानी वाक़िए पर झगड़ते हो) और उस (बन्दे) ने ख़ुदा को देखा एक (ख़ास) नुज़ूल के साथ, जबकि वह बन्दा सिदरतुल मुन्तहा के नज़दीक मौजूद था, जिसके पास आराम से रहने की बहिश्त (जन्नतुल मावा) है, उस वक़्त सिदरा (बेरी का पेड़) पर छा रहा था, जो कुछ छा रहा था। उसके देखने के वक़्त निगाह न बहकी और न हद से आगे बढ़ी, बेशक उस (बन्दे) ने (इस हालत में) अपने परवरदिगार के बड़े-बड़े निशान देखे।' (53 : 1-18)

सूरः बनी इसराईल और वाक़िया मेराज

यहां बनी इसराईल और सूरः नज्म की तफ़्सीर का मौक़ा नहीं, सिर्फ़ इशारे ही काफ़ी मालूम होते हैं, क्योंकि अगर एक तरफ़ ये आयतें अपने मुकम्मल तफ़्सीरी हक़ की मांग करती हैं तो दूसरी ओर अपने-अपने आगे-पीछे की बातों को देखते हुए थोड़े ही में सब कुछ चाहती हैं। बहरहाल ज़रूरत के मुताबिक़ दोनों का ख़्याल करते हुए इतनी गुज़ारिश है कि बनी इसराईल की शुरू की आयत में मेराज के वाक़िए से मुताल्लिक़ जो कुछ कहा गया उसे अगर परखा जाए तो आसानी से यह फ़ैसला किया जा सकता है कि जहां तक क़ुरआन का ताल्लुक़ है, उसका फ़ैसला यही है कि मेराज का वाक़िया, जागते में पूरे जिस्म के साथ पेश आया है और इस मतलब से हट कर जब इसको सोते का ख़्वाब या रूहानी ख़्वाब कहा जाता है तो मज़बूत तावीलों के बग़ैर दावे पर दलील क़ायम नहीं हो सकती, क्योंकि क़ुरआन या सहीह हदीसें किसी की वज़ाहत के साथ यह ज़ाहिर करती हैं कि इसरा-मेराज का वाक़िया जिस्म के साथ जागते में पेश आया है और इन दलीलों की फ़ेहरिस्त के तौर पर इस तरह गिनाया जा सकता है—

1. सूरः बनी इसराईल की आयत 'असरा बिअब्दिही' में असरा के मानी वही है जो हज़रत मूसा और हज़रत लूत عليهما السلام से मुताल्लिक आयतों में हैं यानी बेदारी की हालत में और जिस्म के साथ रात में ले चलना।

2. 'वमाजअ़लना-क रोयल्लती अरैना-क' में रोया आंखों से देखना है न कि ख़्वाब, या रूहानी तौर पर देखना और अरब भाषा में यह यानी मजाज़ नहीं, बल्कि हक़ीक़त है।

3. आयत 'इल्ला फ़ित-न-तल्लिन्नास' में क़ुरआन ने इस वाक़िए को इक़रार व इंकार की शक्ल में ईमान व कुफ़्र के लिए मेयार क़रार दिया है और अगरचे नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) के रूहानी मुशाहदे या ख़्वाब पर भी मुश्रिकों और मुन्किरों का साफ़ इंकार मुम्किन और साबित है, लेकिन इस जगह कलाम यही ज़ाहिर करता है कि वाक़िए की अ़ज़्मत को सामने रखकर इंकार करने वालों का इन्कार इसलिए तेज़ से तेज़तर हुआ कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस वाक़िए को आंखों देखे की तरह बयान किया है।

4. सूरः नज्म की आयत 'मा ज़ाग़ल ब-सरु व मा तग़ा' में जिब्रील का देखना नहीं, बल्कि इसरा के वाक़िए का आंखों देखा होना मुराद है और सूरः की आयत 'माज़ाग़ल बसरु व मा तग़ा' में यह बतलाना मक़्सूद है कि आंख ने जो कुछ देखा, दिल ने हू-ब-हू उसकी तस्दीक़ की और वाक़िए से मुताल्लिक़ आंखों के देखने ने टेढ़ अख़्तियार की और न दिल के देखने ने इस हक़ीक़त का इंकार किया, बल्कि दोनों के मेल ने इसकी सच्चाई पर तस्दीक़ की मुहर लगा दी।

5. सहीह हदीस में है कि जब मुश्रिकों ने इस वाक़िए के इंकार पर यह हुज्जत क़ायम की कि अगर यह सही है तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैतुल मक़्दिस की मौजूदा छोटी-छोटी तफ़्सील बताएं, क्योंकि हमको यक़ीन है कि न उन्होंने बैतुल मक़्दिस को कभी देखा है, और न बिन देखे छोटी-छोटी तफ़्सीलें बताई जा सकती हैं। तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने से बैतुल मक़्दिस के बीच के परदे अल्लाह की ओर से उठा दिए गए और आपने एक-एक चीज़ को देखते हुए मुश्रिकों के सवालों के सही जवाब दिए, जिनमें मस्जिद की तामीरी तफ़्सील भी आ गई। यह दलील है इस बात की कि मुश्रिक यह समझ रहे थे कि आप इसरा को बेदारी की हालत में और जिस्म के साथ होना बयान फ़रमा रहे हैं और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके ख़्याल को रद्द नहीं किया है, बल्कि

उसकी ताईद के लिए मोजज़ों वाली तस्दीक़ का मुज़ाहरा फ़रमा कर उनको ला जवाब बना दिया।

6. तर्जुमानुल क़ुरआन हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से सही सनद के साथ नक़ल किया गया है कि क़ुरआन में ज़िक्र किए गए रोया से मुराद 'ऐन रोया' (आंखों देखा) है न कि ख़्वाब या रूहानी मुशाहदा।

7. आयत 'व मा जअ़लनर रो यल्लती अरैना-क इल्ला फ़ित-न-तल-लिन्नासि, वश-श-ज-र-तु ल-मल ऊनतुन फ़िल क़ुरआन' में इसका ज़िक्र है कि इसरा का वाक़िया और जहन्नम के अन्दर सेंढ के पेड़ का मौजूद होना और आग में न जलना ये दोनों वाक़िए इक़रार व इंकार की शक्ल में ईमान व कुफ़्र के लिए आज़माइश हैं। पस जबकि महीनों की ग़िज़ा के लिए एक माद्दी कांटेदार पेड़ का मौजूद होना, हरा-भरा रहना और आग से न जलना मुश्रिकों के इंकार की वजह बनी, बेशक इसरा के वाक़िए में भी आज़माइश का पहलू यही है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिस ज़मान का मकान की क़ैदों को तोड़कर जिस्म के साथ और बेदारी की हालत में वह सैर कर ली, जिसका ज़िक्र सूरः बनी इसराईल और वन्नज्म में है और सही हदीसों में है और यक़ीनन मुश्रिकों ने उसका इंकार किया, जिसके रद्द में क़ुरआन ने उसको 'इल्ला फ़ित-न-तल-लिन्नास' कह कर इतनी अहमियत दी, वरना तो नबियों के रूहानी मुशाहदों और ख़्वाब के वाक़िआत का इंकार तो उनके लिए एक आम बात थी।

8. इसरा का जब वाक़िया पेश आया तो सुबह को नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिन सहाबा रज़ि० की महफ़िल में इस वाक़िया का ज़िक्र किया, उन सबकी यही राय है कि वह वाक़िया जिस्म के साथ हुआ और बेदारी की हालत में हुआ। जैसे, हज़रत अनस रज़ि० हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० वग़ैरह और इसके ख़िलाफ़ नीचे लिखे लोगों में हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० और हज़रत आ़इशा रज़ि० के नाम हैं जिनका इस्लाम या हरमे नबवी से ताल्लुक़ इस वाक़िए से वर्षों बाद मदीने की पाक ज़िंदगी से जुड़ा हुआ है, इसलिए वाक़िए के दिनों में मौजूद सहाबियों के क़ौल को तर्जीह दी जाएगी। मेराज के वाक़िए की तफ़्सील अगरचे मुस्तनद और मक़्बूल

रिवायतों और हदीसों से साबित है, लेकिन ख़ुद क़ुरआन में (सूरः नज्म) में उन तफ़्सीलों का खोलकर ज़िक्र हुआ है जिनको सूरः बनी इसराईल के इज्माल की तफ़्सीर कहना चाहिए।

मेराज शरीफ़ से मुताल्लिक़ तफ़्सील

बुख़ारी व मुस्लिम में नक़ल कि गई मशहूर और मक़्बूल रिवायतों का मजमूई बयान

नबी अरकम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सुबह इर्शाद फ़रमाया –

'पिछली रात मेरे ख़ुदा ने मुझको अपने ख़ास मज्द व शरफ़ से नवाज़ा, जिसकी तफ़्सील यह है कि पिछली रात जबकि मैं सो रहा था, रात के एक हिस्से में जिब्रील आए और मुझको जगाया। अभी पूरी तरह जाग भी न पाया था कि हरमे काबा में उठा लाए और थोड़ी देर लेटा था कि पूरी तरह बेदार करके पहले तो मेरा सीना चाक किया और (मला-ए-आला के साथ) पूरी मुनासबत पैदा करने लिए दुनिया की कदूरतों को) धोया और ईमान व हिक्मत से भर दिया।

इसके बाद हरम के दरवाज़े पर लाया गया और वहां जिब्रील ने मेरी सवारी के लिए ख़च्चर से कुछ छोटा जानवर बुराक़ पेश किया जो सफ़ेद रंग का था। जब मैं उस पर सवार होकर रवाना हुआ तो उसकी हल्की चाल का हाल था कि निगाह की हद और रफ़्तार की हद बराबर नज़र आती थी कि अचानक बैतुल-मक़्दिस जा पहुंचे, यहां जिब्रील के इशारे पर बुराक़ को मस्जिद के दरवाज़े के उस हिस्से से बांध दिया जिससे बनी-इसराईल के नबी मस्जिदे अक़्सा की हाज़िरी पर अपनी सवारियां बांधा करते थे (और जो उस वक़्त यादगार के तौर पर क़ायम था) फिर मैं मस्जिदे अक़्सा में दाख़िल हुआ और दो रकअत नमाज़ पढ़ी।

अब यहां से मला-ए-आला की तैयारी शुरू हुई तो पहले तो जिब्रील ने

मेरे सामने दो प्याले पेश किए, उनमें एक शराब (ख़म्र) से लबालब भरा हुआ था और दूसरा दूध से। मैंने दूध का प्याला क़ुबूल किया और शराब का प्याला रद्द कर दिया।

जिब्रील ने यह देखकर कहा, आपने दूध का प्याला क़ुबूल करके फ़ितरत के दीन को क़ुबूल किया, यानी अल्लाह की ओर से आपको जो मैंने ये दो प्याले पेश किए, तो दरअसल यह तम्सील (मिसाल की शक्ल में) थी दीने फ़ितरत (प्राकृतिक दीन) और दीने ज़ैग़ (टेढ़ वाला दीन) की, मगर आपने इस हक़ीक़त को पहचान लिया और दूध के प्याले को क़ुबूल फ़रमाया, जो दीन फ़ितरत की मिसाल की शक्ल थी, दीने फ़ितरत को क़ुबूल फ़रमा लिया]

इसके बाद मला-ए-आला का सफ़र शुरू हुआ और जिब्रील के साथ बुर्राक़ ने आसमान की ओर उड़ान भरी। जब हम पहले आसमान तक पहुंच गए तो जिब्रील ने निगहबान फ़रिश्तों से दरवाज़ा खोलने को कहा। निगहबान फ़रिश्तों ने मालूम किया, कौन है? जिब्रील ﷺ ने कहा, मैं जिब्रील हूं। फ़रिश्ते ने मालूम किया, तुम्हारे साथ कौन है? जिब्रील ने जवाब दिया, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। फ़रिश्ते ने कहा, क्या ये बुलाने पर आए हैं? जिब्रील अलैहि० ने कहा, बेशक, फ़रिश्ते ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा, ऐसी हस्ती का आना मुबारक हो।

जब हम अन्दर दाख़िल हुए तो हज़रत आदम से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने मेरी ओर मुख़ातब होकर कहा, यह आपके वालिद (और इंसानी नस्ल के मूरिसे आला) आदम ﷺ हैं। आप इनको सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया 'मरहबा सालेह बेटे और सालेह नबी को'।

इसके बाद दूसरे आसमान तक पहुंचे और पहले आसमान की तरह सवाल व जवाब होकर दरवाज़े में दाख़िल हुए तो वहां यह्या व ईसा ﷺ से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने उनका तआरुफ़ (परिचय) कराया और कहा कि आप सलाम में पहल कीजिए। मैंने सलाम किया और उन दोनों ने जवाब देते हुए फ़रमया, ख़ुशआमदीद ऐ बरग़ज़ीदा भाई और बरगज़ीदा नबी।'

फिर तीसरे आसमान पर पहुंच कर यही मरहला पेश आया और जब मैं

तीसरे आसमान में दाख़िल हुआ तो हज़रत यूसुफ़ अलै॰ से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने सलाम में पहल करने के लिए कहा और मेरे सलाम करने पर यूसुफ़ अलै॰ ने भी सलाम के जवाब के बाद यही कहा, 'ख़ुशआमदीद ऐ बरगज़ीदा भाई और बरगज़ीदा नबी।'

इसके बाद चौथे आसमान पर इस सवाल के साथ हज़रत इदरीस अलै॰ से मुलाक़ात हुई और पांचवें आसमान पर हज़रत हारून से और छठे आसमान पर हज़रत मूसा अलै॰ से इसी तरह मुलाक़ात हुई, लेकिन जब मैं वहां से रवाना होने लगा तो हज़रत मूसा अलै॰ पर रिक़्क़त तारी हो गई (रुहांसे हो गए) जब मैंने वजह मालूम की तो फ़रमाया, मुझे यह रश्क हुआ कि अल्लाह की ज़ोरदार हिक्मत ने ऐसी हस्ती को जो मेरे बाद भेजी गई यह शरफ़ दे दिया कि उसकी उम्मत मेरी उम्मत के मुक़ाबले में कई गुना जन्नत का फ़ैज़ हासिल करेगी। इसके बाद पिछले सवालों-जवाबों का मरहला तै होकर जब मैं सातवें आसमान पर पहुंचा तो हज़रत इब्राहीम अलै॰ से मुलाक़ात हुई जो बैतुल मामूर से पीठ लगाए बैठे थे और जिसमें हर दिन सत्तर हज़ार नए फ़रिश्ते (इबादत के लिए) दाख़िल होते हैं।

उन्होंने मेरे सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया, मुबारक, ऐ मेरे बरगज़ीदा बेटे और बरगज़ीदा नबी! यहां से फिर मुझे सिदरतुल मुंतहा तक पहुंचाया गया। (तुम्हारी बोल-चाल में यह एक इंतिहा की बेरी का पेड़ है), जिसका फल (बेर) हिज्र की ठेलिया के बराबर है और जिसके पत्ते हाथी के कान की तरह चौड़े हैं। इस पर अल्लाह के फ़रिश्ते जुग्नू की तरह बेतायदाद चमक रहे थे और ख़ुदा की ख़ास तजल्ली ने उसको हैरतनाक तौर पर रोशन और कैफ़ वाला बना दिया था।

इसी सफ़र में मैंने चार नहरों का भी मुआयना किया। इनमें से दो ज़ाहिर नज़र आती थीं और दो बातिन में बह रही थीं, यानी दो नहरें जिनका नाम नील और फ़रात है दुनिया के आसमान पर नज़र पड़ीं और दो नहरें जन्नत के अन्दर मौजूद पाईं और इन सब चीज़ों के देखने के बाद मुहम्मद सल्ल॰ को शराब (ख़म्र), दूध और शहद के प्याले पेश किए गए और मैंने दूध को क़ुबूल कर लिया। इस पर जिब्रील ने मुझे बशारत सुनाई कि आपने 'दीने' फ़ितरत को

क़बूल कर लिया (यानी जो हर क़िस्म की कदूरतों से पाक और शफ़्फ़ाफ़ है, अमल में मीठा, और ख़ुशगवार और नतीजे में हद दर्जा मुफ़ीद और अहसन है।

फिर अल्लाह तआला का ख़िताब हुआ कि तुम पर रात व दिन में पचास नमाज़ें फ़र्ज़ क़रार दी गईं। जब मैं इन असरारे इलाही (ईश्वरीय मर्म) के देखने से फ़ारिग़ होकर नीचे उतरने लगा तो बीच में (हज़रत) मूसा अलै॰ से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने मालूम किया, मेराज का क्या तोहफ़ा लाए हो? मैंने कहा, पचास नमाज़ें। उन्होंने फ़रमाया, तुम्हारी उम्मत इस भारी बोझ को सह न सकेगी। इसलिए वापस जाइए और कम करने की दरख़्वास्त कीजिए, क्योंकि मैं तुमसे पहले अपनी उम्मत को आज़मा चुका हूं।

चुनांचे अल्लाह के दरबार में हाज़िर हुआ और अल्लाह की ओर से पांच नमाज़ों की कमी हो गई। मूसा तक लौट कर आया और उन्होंने फिर इसरार किया कि अब भी ज़्यादा है और कम कराओ और मैं इसी तरह कई बार आता जाता रहा, यहां तक कि सिर्फ़ पांच नमाज़ें रह गईं, मगर मूसा मुतमइन न हुए और फ़रमाया कि मैं बनी इसराईल का काफ़ी तजुर्बा और उनकी इस्लाह कर चुका हूं, इसलिए मुझे अन्दाज़ा है कि आपकी उम्मत यह भी न बरदाश्त कर सकेगी, इसलिए कम करने के लिए और कहिए। तब मैंने कहा, अब अर्ज़ करते शर्म आती है। मैं अब राज़ी-ब-रज़ा और फ़ैसले के सामने सरे नियाज़ झुकाता हूं।

जब मैं यह कह कर चलने लगा तो निदा आई, हमने अपना फ़र्ज़ लागू कर दिया और अपने बन्दों के लिए कमी कर दी, यानी अल्लाह की मशीयत पहले ही यह फ़ैसला कर चुकी है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत पर अदा के तौर पर अगरचे पांच नमाज़ें फ़र्ज़ रहेंगी मगर उनका अज्र व सवाब पचास ही के बराबर होगा और यह कमी हमारा फ़ज़्ल व करम है।

इन्हीं रिवायतों में है कि मैंने जन्नत व जहन्नम को भी देखा और फिर देखने की तफ़्सील भी नक़ल की गई है।

मेराज में अल्लाह को देखना

क्या मेराज में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ाते अक़्दस

के जमाले जहां आरा को बे-परदा देखा। सही रिवायतों में इस मसले के बारे में जो ताबीरें बयान की गई हैं उनसे यह मालूम होता है कि ज़रूर, फिर भी नबी अकरम ﷺ इस देखने की कैफ़ियत के हक़ीक़ी इज़्हार से इसलिए मजबूर हैं कि दुनिया की ताबीरों में कोई ऐसी ताबीर मौजूद नहीं कि बुलन्द से बुलन्द मख़्लूक़ उसके जमाले जहांआरा की कैफ़ियत व हक़ीक़त को बयान कर सके। इसलिए आप वाक़िए का इक़रार करते हैं जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास की रिवायत में नक़ल हुआ है। 'मैंने उसको नूर देखा' और देखने के बावजूद जमाले जहान आरा की बयान न कर पाने वाली कैफ़ियत का फिर इन लफ़्ज़ों में भी इज़्हार फ़रमाते जाते हैं 'नूरन इन्नी अराहु' इस नूरे हिक्मत का हक़ीक़ी तौर पर देखना कहां हो सकता था।

इज़ाफ़ा

मेराजे मुबारक से मुताल्लिक़ शेख सादी रह० के नातिया शेरों (पदों) में से जो शेअ्र अह्ले ज़ौक़ के लिए एक सरमाया बना है, वह पेश किया जाता है—

अगर यकसर मूए बर तर परम
फ़रोगे तजल्ली ब सोज़द करम।

इस शेअ्र (पद) में उस वक़्त की कैफ़ियत (स्थिति) बयान की गई है जब आपने हज़रत जिब्रील عليه السلام से फ़रमाया कि ऐ वह्य लानेवाले! आगे बढ़ो, आगे आओ, तो हज़रत जिब्रील عليه السلام ने फ़रमाया—

'अगर अब मैं यहां से बाल बराबर भी आगे बढ़ूंगा तो तजल्ली-ए-इलाही की शिद्दत से मेरे बाल व पर जल जाएंगे।

हिजरत

हिजरत लफ़्ज़ 'हिज्र' से लिया गया है, जिसके मानी छोड़ देने के हैं और इस्लाम के नज़दीक, 'अल्लाह के लिए वतन छोड़ देना' ही हिजरत कहलाता है।

हब्शा की हिजरत

अल्लाह के दीन पर जमाव और कलिमा-ए-हक़ की हिफ़ाज़त के लिए इस्लाम के फ़िदाकारों को वतन छोड़ देने की पहली आज़माइश उस वक़्त पेश आई, जबकि मक्का के कुफ़्फ़ार और क़ुरैशी मुश्रिकों ने हर क़िस्म के ज़ुल्म व सितम का निशाना बना कर मुसलमानों के लिए उनके महबूब वतन (मक्का) में दीने हक़ पर क़ायम रहते हुए ज़िंदगी गुज़ारना नामुम्किन बना दिया और वतन छोड़ देने के अलावा कोई रास्ता बाक़ी न छोड़ा। पस मुट्ठी भर मुसलमानों पर मुश्रिकों के बरदाश्त न करने के क़ाबिल ज़ुल्म और मुसलमानों को हैरत में डाल देने वाले जमाव ने, दुनिया की तारीख़ में एक नया बाब बढ़ा दिया, जो हब्श की हिजरत के नाम से जाना जाता है।

उस वक़्त हब्शा का फ़रमांरवा अस्हमा ईसाई था और ईसाई धर्म का आलिम भी, इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को इजाज़त दे दी कि वे अभी हब्शा को हिजरत कर जाएं, उम्मीद है कि अस्हमा की हुकूमत उनका स्वागत करेगी और वे बिना किसी रुकावट के दीने हक़ पर क़ायम रह सकेंगे और जमे भी रहेंगे।

हिजरत के उस दौर की नुमायां शख़्सियत हज़रत उस्मान रज़ि० और उनकी बीवी, अल्लाह के रसूल सल्ल० की लड़की हज़रत रुक़ैया रज़ि० हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मुक़द्दस जोड़े को विदा करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि लूत और इब्राहीम عليهما السلام के बाद यह पहला जोड़ा है जो अल्लाह के रास्ते में हिजरत कर रहा है। फिर धीरे-धीरे यह तायदाद अस्सी तक पहुंच गई। इन मुहाजिरों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचेरे भाई हज़रत जाफ़र रज़ि० भी थे। यही वह निडर और हक़ बात कहने वाले शख़्स हैं, जिन्होंने क़ुरैश के वफ़्द की मुहाजिरों से मुताल्लिक़ वापसी की मांग के सिलसिले में इस्लाम पर बेमिसाल तक़रीर फ़रमाई और जिसका ज़िक्र पीछे के पन्नों में हो चुका है।

मदीना की हिजरत की वजहें

सन् 11 नबवी हज के मौसम के मौक़े पर अल-हिरा और मिना के दर्मियान अक़बा नामी जगह में यसरिब (मदीना) के कुछ लोगों ने रात की तंहाई में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ का पैग़ाम सुना और इस्लाम कुबूल कर लिया। ये छः या आठ आदमी थे। दूसरे साल कुछ पिछले और कुछ दूसरे लोगों ने जो तायदाद में बारह थे, ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम पर बातें कीं और मुसलमान हो गए। उनके नाम मुहम्मद बिन इसहाक़ की रिवायत के मुताबिक़ ये हैं।

अबू उमामा, औफ़ बिन हारिस, राफ़ेअ् बिन मालिक, कुत्बा बिन आमिर मुआज़ बिन हर्स, ज़क्वान बिन अब्द क़ैस, ख़ालिद बिन मुख़ल्लद, उबादा बिन सामित, अब्बास बिन उबादा, अबुल हैसम, अदीम बिन साइमा।

हज़रत उबादा बिन सामित फ़रमाते हैं कि हमने पहले उक़बा में नीचे लिखी शर्तों के साथ इस्लाम पर बैअ़त की थी—

1. एक अल्लाह के सिवा किसी की परस्तिश नहीं करेंगे।
2. चोरी नहीं करेंगे।
3. ज़िना नहीं करेंगे।
4. अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगे।
5. किसी पर झूठी तोहमतें नहीं लगाएंगे और न किसी की ग़ीबत करेंगे।
6. और किसी भी अच्छी बात में आपकी (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) नाफ़रमानी नहीं करेंगे।

बैअ़त के बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अगर तुमने इन शर्तों को पूरा किया तो तुम्हारे लिए जन्नत की बशारत है और अगर तुम इन बुराइयों में से कोई भी कर बैठे, तो फिर तुम्हारा मामला ख़ुदा के हाथ में है, चाहे बख़्श दे, चाहे जुर्म पर सज़ा दे।

इस वाक़िए ने मदीना के हर घर में इस्लाम की चर्चा शुरू कर दी और धीरे-धीरे हर ख़ानदान में इस्लामी सूरज की किरणें पहुंचने लगीं और नतीजा यह निकला कि औस व ख़ज़रज की तमाम शाख़ों में से 13 नबवी को तिहत्तर

मर्द और दो औरतें इसी अक़बा नामी जगह पर हज के ज़माने में, रात की अँधियारी में नुबूवत के सूरज की रोशनी से फ़ैज़ हासिल करने जा पहुंचे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपने चचा अब्बास को साथ लेकर वहां पहुंच गए और उनके सामने इस्लाम पर एक असरदार वाज़ फ़रमाया, जिससे उनके दिल ईमान की रोशनी से जगमग हो उठे। इसके बाद अंसारी और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान इस मामले पर बातें हुईं कि अगर ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में तशरीफ़ ले आएं तो इस्लाम की इशाअत को भी फ़ायदा पहुंचे और हमको भी फ़ैज़ पाने का अच्छी तरह मौक़ा हाथ आए और इस सिलसिले में दोनों तरफ़ से मुहब्बत और ताल्लुक़ के क़ौल व क़रार भी हुए, जिनकी तफ़्सील सीरत और तारीख़ की किताबों में ज़िक्र हो चुकी है। इन्हीं लोगों में से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बारह लोगों को चुनकर दावत व इस्लाम की तालीम के लिए अपना नक़ीब (प्रतिनिधि) मुक़र्रर फ़रमाया।

यसरिब (मदीना) में इस्लाम की इशाअत ने जब इस तरह भारी तरक़्क़ी कर ली, तो अब अल्लाह की वह्य ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ुबानी इस्लाम के जाँनिसारों को इजाज़त दी कि वे मक्का के मुश्रिक की पहुंचाई हौलनाक तक्लीफ़ों से बच जाने के लिए मदीना हिजरत कर जाएं और ख़ुदा के लिए वतन तर्क कर लें, चुनांचे धीरे-धीरे मुसलमानों ने मदीने की हिजरत शुरू कर दी। मक्का के मुश्रिकों ने यह देखकर मुसलमानों को हिजरत से रोकने के लिए ज़ुल्म व ज़्यादती में और बढ़ोतरी कर दी और हिजरत को रोकने के लिए मुम्किन ज़रियों को अख़्तियार किया, मगर इस्लाम के फ़िदाकारों का हिज़रत का जज़्बा थमा नहीं, बल्कि वे कसरत के साथ माल, जान, आबरू और औलाद की ज़िंदगी को ख़तरे मे डालकर अल्लाह की राह में अज़ीज वतन को ख़ैरबाद करते रहे। अक्सर ऐसा हुआ कि जब मक्का वालों ने उनके माल और बाल बच्चों के साथ ले जाने से रोक दिया तो इन जवानों ने सब्र आज़मा ज़िंदगी के साथ हक़ के लिए हिजरत की ख़ातिर उनको भी वहीं छोड़ा और अकेले अल्लाह के भरोसे पर मदीना रवाना हो गए।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत

अब मक्के के मशहूर मुसलमानों में से सिर्फ़ अबूबक्र रज़ि० और अली रज़ि० ही बाक़ी रह गए थे और बहुत थोड़ी सी तायदाद बाक़ी मुसलमानों की थी, तब क़ुरैश ने सोचा कि मुहम्मद ﷺ को क़त्ल करके इस्लाम को मिटा देने का इससे बेहतर दूसरा कोई मौक़ा नहीं आएगा।

दारुन्नदवा

चुनांचे क़ुरैश के तमाम सरदार क़ुसई बिन किलाब के क़ायम किए हुए 'गवर्नमेंट हाऊस' (दारुन्नदवा) में जमा हुए और सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल से मुताल्लिक़ मश्विरे की साज़िशी मज्लिस क़ायम की। इस मज्लिस में उत्बा, शैबा, अबू सुफ़ियान, तुऐमा बिन अदी, जुबैर बिन मुतअम, हारिस बिन आमिर, नज़्र बिन हारिस, अबुल्तसजज़ी, रफ़आ बिन अस्वद, हकीम बिन हिज़ाम, अबू जहल, मुनब्बह बिन हज्जाज, उमैया बिन ख़ल्फ़ जैसे क़ुरैश-सरदार मश्विरे में शरीक थे। मश्विरा शुरू होने वाला ही था कि एक शैतान शैख़ नज्दी दारुन्नदवा के दरवाज़े पर आ मौजूद हुआ और मज्लिस में शिर्कत की ख़्वाहिश की। मक्का के क़ुरैश ने अपने ख़्याल का पाकर ख़ुशी से इजाज़त दे दी और अब मश्विरा शुरू हुआ। मुख़ालिफ़ राय देने वालों ने अलग-अलग राएं दीं, लेकिन शैख नज्दी ने हर एक राय को ग़लत क़रार दिया, आख़िर में एक आदमी ने कहा, तमाम क़बीलों में से एक-एक जवान लीजिए और उनसे कहिए कि वे एक ही वक़्त में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमला करके क़त्ल कर दें। इससे काम भी बन जाएगा और बनू अब्द मुनाफ़ किसी से बदला लेने की जुर्रात भी न कर सकेंगे और सिर्फ़ ख़ूंबहा पर मामला तै हो जाएगा। शैख नज्दी ने इस राय को बहुत सराहा और यही राय तै पा गई।

इधर जिब्रील ﷺ ने अल्लाह की वह्य के ज़रिए ज़ाते अक़्दस के सामने इस पूरी दास्तान को कह सुनाया और अर्ज़ किया कि ख़ुदा की मर्ज़ी यह है कि आप आज रात अपने बिस्तर पर हज़रत अली रज़ि० को सुलाकर ख़ुद

मदीना को हिजरत कर जाइए। चुनांचे अल्लाह की वह्य के मुताबिक़ आप कुरैश के नवजवानों के घेरे के बावजूद सूरः यासीन की कुछ आयतें 'फ़ अग़्शैनाहुम फ़हुम ला युब्सिरून०' पढ़ते हुए और 'शाहतिल वजूह' फ़रमाकर मुट्ठी भर ख़ाक उन के सरों पर डालते हुए साफ़ बचकर निकल गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के मकान पर जाकर और वह्य इलाही की ख़ुशख़बरी सुनाकर उनको साथ लिए मदीना को रवाना हो गए।

हिजरत का यह वाक़िया रबीउल-अव्वल 13 नबवी दो शंबा के दिन पेश आया। यह वाक़िया अपने ख़ुसूसी हालात और मोजज़ाना असरात के साथ बहुत मशहूर और सहीह हदीसों और रिवायतों में ज़िक्र किया गया है और सिद्दीक़े अकबर की सफ़रे हिजरत में साथ देने की अज़्मत व जलालत के लिए रहती दुनिया तक क़ुरआन इस तरह कहता है—

तर्जुमा— *'दूसरा था दो का, जबकि वे दोनों ग़ार में थे कि यह अपने रफ़ीक़ (हज़रत अबूबक्र) से कह रहा था, अबूबक्र! ग़म न खा, बेशक ख़ुदा हमारे साथ है।'* (9 : 39)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर अबूबक्र रज़ि० के मुख़ातब करते हुए 'ला तहज़न' फ़रमाया, 'ला तख़फ़' नहीं फ़रमाया, यह इसलिए कि 'ख़ौफ़' (भय) और हुज़्न (ग़म) के मानी में एक फ़र्क़ यह भी है कि आमतौर पर ख़ौफ़ अपने नुक़्सान के सिलसिले में हुआ करता है। इससे यह मालूम हुआ कि अबूबक्र रज़ि० को अपनी जान और अपनी ज़ात का ख़ौफ़ नहीं था, बल्कि ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गिरफ़्तारी और मुश्रिकों के हाथों ज़ुल्म पहुंचने का ग़म उन पर सवार था। पस हुज़ूर क़ुदसी सिफ़ात ने अबूबक्र रज़ि० की इस हालत का अन्दाज़ा लगाया तो 'ला तख़फ़' की जगह 'ला तहज़न' इर्शाद फ़रमाया और साथ ही 'इन्नल्ला-ह मअना' फ़रमा कर अबूबक्र की रिफ़ाक़त की मक़्बूलियत पर भी मुहर तस्दीक़ लगा दी। दुनिया अपने बुग़्ज़-दुश्मनी से जो चाहे कहे, लेकिन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ि० का 'सच्चा साथ' के लिए क़ुरआन के जुम्ला (वाक्य) 'इन्नल्ला-ह म-अ-ना' (बेशक अल्लाह हमारे साथ है) की हक़ीक़त को सारी कायनात भी मिल कर मिटाना चाहे, तो मिटा नहीं

सकती।

'ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय-यशाउ वल्लाहु ज़ुल फ़ज़्लिल अज़ीम०
(यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहे दे, अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है)

क़ुरआन मजीद और मदीने की हिजरत

मेराज के वाक़िए में गुज़र चुका है कि हक़ीक़ते इसरा तम्हीद थी हिजरत के शानदार वाक़िए की, यानी वाक़िए इसरा की अजीब बातें इस बात की तम्हीद थीं कि अब आपकी तब्लीग़ी ज़िंदगी का दौर एक दूसरा रुख़ अख़्तियार करने वाला है जो कामरानियों और कामियाबियों से भरपूर है, इसलिए बहुत ज़रूरी है कि पहले आपको क़िबलतैन (दोनों क़िबले—काबा और बैतुलमक़्दिस) के रहस्यों को बता दिया जाए, ताकि मक्की ज़िंदगी जब मदनी ज़िंदगी में बदले तो इससे पहले नुबूवत व रिसालत के कमालात अपनी इंतिहा को पहुंच चुके हों और आपका हिदायत का मंसब उस बुलन्द मुक़ाम तक जा पहुंचा हो, जहां ख़ुदा के सबसे बुलन्द मख़्लूक़ का भी गुज़र न हुआ हो, ताकि आप 'अल-यौ-म अक-मलतु लकुम दीनकुम व अत-ममतु अलैकुम नेमती व रज़ीतु लकुमुल इस्ला-म दीना०' के शरफ़ को हासिल कर सकें।

पस सूरः बनी इसराईल शुरू से लेकर आख़िर तक मदीना की हिजरत के ही राज़ों और भेदों से भरी हुई है। चुनांचे शुरू की आयतों में असरा का बयान है और फिर ज़िक्र आ गया है रुश्द व हिदायत के उसूल का और बीच में पिछली उम्मतों और उनके रहबरों—नबियों और रसूलों के तब्लीग़ी वाक़ियों का तज़्किरा गवाह और नज़ीर बनकर सामने आ जाता है और इस सिलसिले में ये राज़ के हुक्म और असरा का भी ज़िक्र होता जाता है और उसके बाद 'रब्बि अद् ख़िलनी मद-ख़-ल सिदक़िन' से मक्का से निकलने और मदीने की हिजरत का ज़िक्र शुरू हो जाता है और यह ज़िक्र सूरः के आख़िर तक जारी रहता है। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० और हज़रत क़तादा रज़ि० ने लिखी गई हर दो आयत के मज़्मूनों के सिलसिले को मदीना की हिजरत से ही जोड़ दिया है।

तर्जुमा—*और क़रीब था कि वे (मुश्रिक) अलबत्ता तुझको आजिज़ कर*

देते (मक्का) की सरज़मीन से, ताकि तुझको उससे निकाल दें और ऐसी हालत में उनकी हलाकत बहुत थोड़े अर्से में सामने आ जाती।' (17 : 76)

यह मुश्रिकों के हक़ में सख़्त क़िस्म का डरावा और धमकी है कि जब भी तुम्हारे ज़ुल्मों की बदौलत नबी अकरम ﷺ को मदीना की हिजरत पेश आएगी, तुम्हारी इज्तिमाई ज़िंदगी की हलाकत क़रीब से क़रीबतर हो जाएगी, गोया मदीने की हिजरत, इस्लाम की हर दिन बढ़ती तरक़्क़ी और इस्लाम दुश्मनों की मौत व हलाकत के लिए लिखी तक़्दीर है।

तर्जुमा—*'और कहिए, ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको दाख़िल कर (मदीना में) अच्छा दाख़िला और निकाल मुझको (मक्का) से इज़्ज़त के साथ और मेरे लिए अपनी तरफ़ से ज़बरदस्त मदद अता कर।'* (17 : 80)

इसी तरह सूरः अनफ़ाल में कुछ वाक़ियों में मदीना की हिजरत का ज़िक्र मौजूद है।

तर्जुमा—*और (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जब इंकार करने वाले लोग तेरे ख़िलाफ़ साज़िश कर रहे थे, ताकि तुझको क़ैद कर लें या मार डालें या (मक्का से) निकाल दें वे अपनी साज़िशों में लगे हुए थे, ख़ुदा उसके ख़िलाफ़ तदबीर कर चुका था, और अल्लाह तदबीर करने वालों में सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है।* (8 : 30)

और इसी तरह सूरः तौबा में सिद्दीक़े अकबर की अज़्मत व जलालतेक़द्र के तज़्करे के साथ-साथ मदीने की हिजरत का ज़िक्र इस तरह मौजूद है—

तर्जुमा—*'अगर तुम अल्लाह के रसूल की मदद नहीं करोगे तो (न करो) उसकी अल्लाह तआला ने उस वक़्त मदद फ़रमाई, जब उसको इंकार करने वालों ने (मक्का से) निकाला, जबकि वे दोनों (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ि०) ग़ार में (हिरा में छिपे हुए थे) जब (रसूल अपने साथी अबूबक्र से) कह रहा था, तू ग़म न खा, बेशक अल्लाह हमारे साथ है। पस अल्लाह ने उस पर अपना सकीना (तमानियत) उतारी और उससे ऐसी फ़ौज के ज़रिए क़ूवत पहुँचाई कि तुम उसको नहीं देख रहे थे और (इस तरह) ख़ुदा ने काफ़िरों का कलिमा पस्त कर दिया और अल्लाह का कलिमा ही सबसे बुलन्द है और बेशक अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।* (9 : 40)

हिजरत

इस्लाम में हिजरत एक अहम फ़रीज़ा है। कौन नहीं जानता कि इंसान के लिए वतन, माल (बाल-बच्चे कितने प्यारे होते हैं और इन्हीं क़ीमती पूंजी पर) अपनी दुनिया का ऐश, राहत, और ज़िंदगी को बाक़ी रखने का मदार (आधार) समझता है, लेकिन उसकी इंसानियत और इंसानियत की तरक़्क़ी ज़िंदगी के इन तमाम मक़्सदों से भी एक बुलन्द मक़्सद चाहती है और वह है कायनात पैदा करने वाले और रब्बुल-आलमीन की मारफ़त जिसकी शफ़क़त और मुहब्बत ने उसको यह रुख़ दिया। इसी मारफ़त का नाम 'दीन' और 'मिल्लत' है। इंसान जब इस हक़ीक़ी मक़्सद को पा लेता है तो फिर उसकी निगाह में इस दर्जा फैलावं और बुलन्दी पैदा हो जाती है कि दुनिया की उन तमाम रंगीनियों और नैरंगियों का फैला हुआ दामन भी उसको तंग नज़र आता और वह इस तंगदामनी से आजिज़ होकर आख़िरकार 'रूहानी ज़िंदगी' की गोद में ही तस्कीन पाता है और जब इस मरहले पर पहुँच जाता है तो फिर दीने हक़ के लिए वह दुनिया की तमाम क़ीमती पूंजी, तन-मन-धन यहां तक कि बाल-बच्चों को भी तज देता है और उस क़ीमती मोती को आंच नहीं आने देता, जिसका नाम 'ईमान' है। इसी हक़ीक़ते हाल को इस्लाम के मुक़द्दस 'लफ़्ज़ों' में हिजरत कहा जाता है।

इसी वजह से 'हिजरत' एक सच्चे ईमान वाले और मुख़्लिस मुसलमान और मुनाफ़िक़ और काफ़िर हस्ती के दर्मियान फ़र्क़ पैदा करने के लिए बेहतरीन 'कसौटी' और 'मेयार' है, साथ ही रूहानी फ़िज़ा का टेम्प्रेचर मालूम करने के लिए 'जिहाद' और हिजरत' ही दो ऐसे पैमाने हैं जिनसे मोमिनों के ईमान की हरारत का सही अन्दाज़ा हो जाता है।

क़ुरआन ने हिजरत की अहमियत पर जगह-जगह तवज्जोह दिलाई है और उसको ईमान व इस्लाम की कसौटी क़रार दिया है, जिसके लिए ये जगहें ख़ास तौर से पढ़ने लायक़ हैं—

2 : 218, 3 : 194, 8 : 74, 9 : 20, 16 : 111, 23 : 58, 4 : 100, 16 : 41, 4 : 97

इस्लाम के शुरू में मक्का दारुल कुफ़्र और दारूल हर्ब था, इसलिए वहां से मदीने को हिजरत कर जाना इस्लाम के सबसे अहम फ़र्ज़ों में से था, ताकि मुसलमान मदीने में अम्न व आफ़ियत के साथ इस्लाम के हुक्मों की पैरवी कर सकें और न सिर्फ़ इसी क़दर बल्कि इस्लाम के बड़े मक़्सद 'अम्र बिल मारूफ़ (भलाई का हुक्म देना) और नह्यि अनिल मुन्कर (बुराइयों से रोकना) की या दूसरे लफ़्ज़ों में 'ऐ लाए कलि मतुल्लाह' (अल्लाह के कलिमा को बुलन्द करने) की सही ख़िदमत अंजाम दे सकें, मगर जब सन् 08 हिजरी में 'फ़त्हे मुबीन' (खुली जीत) ने मक्का की इस हालत को बदल कर 'दारुल इस्लाम' बना दिया तो अब हिजरत का यह ख़ास फ़र्ज़ ख़त्म हो गया और वह्य की ज़ुबान में 'ला हिज-र-त बादल फ़त्हि' (फ़त्ह के बाद कोई हिजरत नहीं) फ़रमाकर इस हक़ीक़त का एलान कर दिया, अलबत्ता अब भी तौहीद के मर्कज़ से बेपनाह इश्क़ व मुहब्बत के जज़्बे में मक्का और मदीना हिजरत करके जाना अज्र व सवाब का ज़रूरी हक़ पैदा करता है।

और अगर किसी जगह और किसी देश में भी मुसलमानों के लिए ईमानी ज़िंदगी के पेशेनज़र वही सूरते हाल पैदा हो जाए जो इस्लाम के शुरुआती दौर (मक्की दौर) में थी तो उस वक़्त मुसलमानों के लिए वही हुक्म लागू हो जाएंगे जो 'मक्की दौर' के मुताबिक़ क़ुरआन व हदीस और उससे निकले 'इस्लामी फ़िक़्ह' में पाए जाते हैं और उसूली तौर पर उस वक़्त सिर्फ़ दो ही इस्लामी मांगें सामने आएंगी— या 'अल्लाह के रास्ते के जिहाद' के ज़रिए उस हालत में इंक़िलाब या फिर 'हिजरत' और किसी तरह भी यह जायज़ नहीं होगा कि मौजूदा हालत पर क़नाअत करके इत्मीनान की ज़िंदगी गुज़ारी जाए।

मक्का जब दारुल कुफ़्र और दारुल हर्ब था तो उस वक़्त मदीना की हिजरत को इस्लाम ने किस दर्जा अहमियत दी और इस ऊंचे मक़्सद के लिए मुसलमानों से किस दर्जा क़ुरबानी और नफ़्स के ईसार की मांग की, नीचे की आयतों से इस हक़ीक़त का अच्छी तरह अन्दाज़ा हो सकता है—

तर्जुमा— *'जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और मेरी राह में लड़े और मारे गए, मैं ज़रूर उनके गुनाह उनसे दूर कर दूंगा और उनको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करूंगा जिनके*

(पेड़ों के) नीचे नहरे जारी हैं। यह बदला है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह के पास अच्छा बदला है।' (3 : 197)

तर्जुमा—*'जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया, अल्लाह के नज़दीक बहुत बुलन्द रहने वाले हैं और वही कामियाब हैं।'* (9 : 20)

तर्जुमा—*'बेशक जिनको फ़रिश्तों ने ऐसी हालत में मौत से दोचार किया कि वे अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे, उनसे (फ़रिश्तों ने) पूछा कि तुम किस हालत में थे। उन्होंने जवाब दिया कि हम ज़मीन में कमज़ोर थे। फ़रिश्तों ने कहा, क्या अल्लाह की ज़मीन फैली नहीं थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते, सो यही हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है, मगर वे कमज़ोर मर्द और औरतें और बच्चे जो हिजरत के लिए कोई हीला नहीं कर सकते और न (हिजरत के लिए) राह पाते हैं, तो ये वे हैं कि उम्मीद है अल्लाह तआला उनको माफ़ कर दे और अल्लाह बेशक माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।* (4 : 97-99)

लड़ाइयां

ग़ज़वा व सरीया

अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने के सिलसिले में जिस फ़ौज के साथ नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नहीं थे, उसको सरीया और जिसमें आपने ख़ुद शिर्कत फ़रमाई उसको 'गज़वा' कहा गया है।

बद्र की लड़ाई (ग़ज़वा)

'बद्र' एक कुंए का नाम है जिसके ताल्लुक़ से यह घाटी भी बद्र कहलाती है। यह घाटी मक्का और मदीने के बीच मदीने से क़रीब मेन रोड पर वाक़े है। इस जगह वह ग़ज़्वा पेश आया जिसको ग़ज़वा बद्र कहा जाता है। क़ुरआन ने जिन ग़ज़वों का ज़िक्र किया है उनमें इस ग़ज़वे को सबसे ज़्यादा नुमायां हैसियत हासिल है।

वाक़िया

मदीने की हिजरत मुश्रिकों के लिए कुछ इस दर्जा भड़काने की वजह बनी और वह पैग़म्बर ﷺ और मुसलमानों को अपनी बरदाश्त न कर पाने लायक़ तक्लीफ़ पहुंचाने से महफ़ूज़ देखकर कुछ इस दर्जा ख़फ़ा हुए कि अब उन्होंने तै कर लिया कि जिस क़ीमत पर भी हो सके मुसलमानों को मिटा देना चाहिए, चुनांचे इसके लिए उन्होंने हिजरत से फ़ौरन बाद ही लड़ाई और झड़पों की शुरूआत कर दी और बवात और अशीरा जैसी छोटी-छोटी लड़ाइयाँ इसी सिलसिले में पेश आईं, मगर मक्का के मुश्रिकों की नफ़रत की आग के लिए यह काफ़ी न था और वे चाहते थे कि किसी तरह मुसलमानों के साथ एक फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई हो जाए।

इस इरादे को पूरा करने के लिए उन्होंने ज़रूरी समझा कि लड़ाई के सामान ज़्यादा से ज़्यादा मिल जाएं और इसके लिए बेहतरीन तरीक़ा यह सोचा कि अबू सुफ़ियान की सरबराही में तिजारत का एक क़ाफ़िला शाम (सीरिया) की मंडियों में जाए और भारी नफ़ा हासिल करके उससे लड़ाई का सामान जमा किया जाए और इस जज़्बे ने जोश व ख़रोश की यह कैफ़ियत पैदा कर दी कि जब तिजारत के क़ाफ़िले की तैयारी शुरू हुई तो मक्का के हर आदमी ने अपनी पूंजी का हिस्सा इस तिजारत के लिए पेश किया, यहां तक कि एक बुढ़िया ने भी अपनी मेहनत की मामूली पूंजी इस ख़िदमत के लिए पेश कर दी और लगभग सत्तर क़ुरैशियों पर मुश्तमिल यह क़ाफ़िला अबू सुफ़ियान की क़ियादत में शाम के लिए रवाना हो गया।

क़ुरैश का यह तिजारती क़ाफ़िला जब भारी मुनाफ़ा हासिल करके शाम से वापस होकर मक्का जा रहा था और बद्र के क़रीब होकर गुज़रा, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इल्म हुआ। आपने फ़ौरन सहाबा को जमा करके मश्विरा फ़रमाया, तब कुछ लोगों ने ख़ुशी-ख़ुशी उसके मुक़ाबले के लिए आमादगी ज़ाहिर की और कुछ ने यह समझ कर कि यह किसी अहम लड़ाई का मामला नहीं है, उसका पीछा करने पर तैयार होने का सबूत नहीं दिया।

मुसलमानों का यह लश्कर जो क़ाफ़िले का पीछा करने निकला, लड़ाई के सामान से बेपरवा होकर मदीना से निकला। मशहूर रिवायत के मुताबिक़ उनकी तायदाद सिर्फ़ तीन सौ तेरह थी, जबकि अल्लाह का शुक्र है कि मदीना के अन्दर ही मुसलमानों की आबादी हज़ारों बालिग़ लोगों पर मुश्तमिल थी और कुछ तलवारें, दो तीन घोड़े, साठ ज़िरह (कवच) और सिर्फ़ साठ ऊंट उनके जंग का सामान था, जबकि मुसलमानों के पास बल्कि ख़ुद निकलने वाले मुजाहिदों के पास मदीने में लड़ाई के ज़्यादा से ज़्यादा सामान और ऊंट-घोड़े मौजूद थे। ग़रज़ यह फ़ौज लड़ाई की फ़ौज न थी, बल्कि तौहीद के फ़िदाकारों का एक मुख़्तसर-सा क़ाफ़िला था जो कुरैश के लड़ाई के सामान पर क़ब्ज़ा करके दुश्मन को बे-सामान बनाने निकला था।

अबू सुफ़ियान को मुसलमानों के पीछा करने का हाल मालूम हुआ तो घबराया और फ़ौरन ज़मज़म नामी एक आदमी को अजीर बनाकर (मुआवज़ा देकर) मक्का रवाना किया कि वह कुरैश को इस मामले की ख़बर दे और मदद तलब करे। कुरैश ने जब हक़ीक़ते हाल को सुना तो उनमें बहुत ज़्यादा जोश पैदा हो गया और कुरैश के तमाम सरदार लड़ाई पर तैयार होकर अपने-अपने लश्कर को लेकर निकल खड़े हुए और इस शान से निकले कि तायदाद में एक हज़ार थे नेज़े और तलवारें सजे, ढालें और बकतर लगाए, ग़ुरूर के नशे में झूमते हुए बद्र की ओर बढ़े।

इधर मुसलमान आगे बढ़ते हुए जब सफ़रा घाटी के क़रीब पहुंचे तो नबी अकरम ﷺ ने बसबस बिन अम्र और अदी बिन ज़ग़बा को जासूस बनाकर भेजा कि वे क़ाफ़िले का हाल मालूम करके आएं। इस मुद्दत में मुसलमान सफ़रा घाटी से गुज़र कर ज़फ़रान घाटी तक पहुंच चुके थे। यहां उतरे तो एक तरफ़ बसबस और अदी से यह मालूम हुआ कि बहुत जल्द अबूसुफ़ियान का क़ाफ़िला बद्र पहुंचने वाला है। दूसरी ओर यह पता लगा कि मक्का से कुरैश एक हज़ार की फ़ौज लेकर पूरी शान के साथ मुसलमानों से लड़ने की ग़रज़ से बद्र की जानिब बढ़ रहे हैं।

बहरहाल मुसलमानों को जब ज़फ़रान घाटी में ये दोनों ख़बरें मिलीं, तो नबी अकरम ﷺ ने सहाबा से दोबारा मश्विरा ज़रूरी समझा, क्योंकि अब

मामला कठिन था। मुसलमान बेसर व सामान और थोड़ी तायदाद में थे और दुश्मन हर तरह वक़्त के हथियारों से मुसल्लह, लड़ाई के भारी समान के साथ थे और तायदाद में तीन गुने से भी ज़्यादा और सीरते अंसार लिखने वालों के मुताबिक़ अगरचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सफ़र करने पर हज़ार बार फ़ख्र करते। और साथ रहत थे लेकिन दूसरी अक़्बा के वक़्त वे नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ यह समझौता कर चके थे कि जब तक कुरैश या ग़ैर-कुरैश अपनी जानिब से मदीना पर हमलावर न हों, अंसार मदीना से बाहर निकल कर लड़ाई के लिए मजबूर नहीं होंगे।

मश्विरे के लिए ये अहम वज्हें थीं जिनके पेशे नज़र नबी अकरम सल्ल० ने सहाबा से मश्विरा फ़रमाया, आपने इर्शाद फ़रमाया कि दुश्मन सर पर है और क़ाफ़िला क़रीब। अब बताओ क्या चाहते हो? लड़ाई लड़कर हक़ व बातिल का फ़ैसला या बग़ैर कांटा लगे क़ाफ़िले पर क़ब्ज़ा?

मुसलमानों ने जब यह सुना तो कुछ ने फ़ितरी तौर पर लड़ने से मना किया और इस बारे मे बोझ महसूस किया। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम लड़ने के इरादे से नहीं निकले थे, इसलिए बेसर व सामान हैं। हम तो अब भी यही चाहते हैं कि कि क़ाफ़िले पर क़ब्ज़ा करके वापस चले जाएं। नबी अकरम ﷺ ने इस कमज़ोर राय को नापसन्द फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया, क़ाफ़िले को छोड़ दो, अब इस क़ौम के बारे में राय दो, जो तुम्हारे मुक़ाबले के लिए मक्के से निकल आई। कुछ लोगों ने जब दोबारा उज़्र किया, तो आपने फिर पहली बात लौटा दी। तब बड़े सहाबा रज़ि० अबूबक्र, उमर, अ़ली रज़ि० समझ गए कि मुबारक मर्ज़ी हक़ व बातिल की लड़ाई से जुड़ी हुई है, इसलिए उन्होंने वफ़ादारी के जज़्बे को ज़ाहिर करते हुए अर्ज़ किया कि हम हर तरह लड़ाई के लिए तैयार हैं और इस्लाम के लिए आपके पसीने की जगह ख़ून बहाने को हाज़िर हैं और हज़रत मिक़दाद रज़ि० ने तो इस तेज़ी से फ़िदाकाराना जज़्बे का इज़्हार किया कि सहाबा को उनकी तक़रीर पर रश्क होने लगा, मगर आप अब भी अपनी मुबारक निगाह से किसी बात के तालिब नज़र आ रह थे।

यह देखकर अंसार में से हज़रत साद बिन मुआज रज़ि० खड़े हुए और

अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! क्या हम अंसार की तरफ़ इशारा है कि वे कुछ अर्ज़ करें और फिर अंसार की ओर से पूरी वफ़ादारी का यक़ीन दिलाते हुए बड़ी असरदार तक़रीर फ़रमाई।

मुहाजिरों और अंसार की ये तक़रीरें सुनकर सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक चेहरा ख़ुशी से तमतमा उठा और आपने इर्शाद फ़रमाया—

अब अल्लाह के नाम पर आगे बढ़ो और बशारत हासिल करो, क्योंकि अल्लाह ने मुझसे वायदा फ़रमाया है कि दो गिरोह (क़ाफ़िला और मक्का के मुश्रिकों का लश्कर) में से एक को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दूंगा और क़ाफ़िला नहीं, बल्कि मुश्रिकों का लश्कर तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दिया जाएगा और अल्लाह का वायदा बेशक सच्चा है और ख़ुदा की क़सम! मैं लड़ाई से पहले अभी से क़ौम के सरदारों की क़त्लगाह को देख रहा हूं और सहीह मुस्लिम में है कि आपने बद्र पहुंच कर ज़मीन पर हाथ रखकर बताया 'कि इस जगह फ़्लां क़ुरैशी मारा जाएगा और यहां फ़्लां क़त्ल होगा।'

पहले और आज के तमाम तफ़्सीर लिखने वाले, हदीस के माहिर और सीरत व तारीख़ के जानकार इस पर एक राय हैं कि यही वह मश्विरा है जिसके बारे में सूरः अंफ़ाल की ये आयतें उतरी हैं—

तर्जुमा—*('अनफ़ाल' अल्लाह और रसूल के लिए हैं) इसलिए कि तेरे परवरदिगार ने तुझको हक़ के लिए तेरे घर में निकाला और हालत यह हो गई कि मुसलमानों का एक फ़रीक़ इस निकलने पर बोझ महसूस कर रहा था और वे तुझसे हक़ के बारे में हक़ के ज़ाहिर हो जाने के बाद झगड़ा कर रहे थे, गोया वे आंखों देखे मौत के मुंह में हंकाए जा रहे हैं और (यह वाक़िया उस वक़्त पेश आया) जबकि अल्लाह तुमको वायदा दे रहा था कि दोनों फ़रीक़ (क़ाफ़िला और मक्का के मुश्रिकों की फ़ौज) में से एक फ़रीक़ को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे देगा और तुम यह शुबहा करते थे कि तुमको वह गिरोह मिले, जिसके मुक़ाबले में कांटा भी न लगे और अल्लाह का इरादा यह था कि वह अपने वायदों के कलिमों से हक़ को साबित कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे और इस तरह हक़को हक़ कर दे और बातिल को बातिल, अगरचे मुज्रिमों*

को यह बात पसन्द न आए।' (8 : 5-8)

अब मुसलमान आगे बढ़े और बद्र के क़रीब पहुंच कर मदीना की तरफ़ वाले रुख़ 'उदवतुद्दुनया' पर ख़ेमे गाड़ कर ठहर गए और मक्का के मुश्रिक आगे बढ़े तो बद्र पहुंच कर मदीने से दूर मक्का की तरफ़ वाले रुख़ 'उदवतुल क़स्वा' पर उतरे और लड़ाई के मोर्चे का नक़्शा इस तरह बना कि मुसलमान और मुश्रिक आमने-सामने थे और अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला उस वक़्त साहिल की तरफ़ नीचे-नीचे मक्का के मुश्रिकों के लश्कर की पीठ पर से गुज़र रहा था कि जब वे चाहें तो मक्का के मुश्रिकों की नुसरत व मदद के लिए बे-रोक-टोक आ सकते और कुमक का काम दे सकते हैं।

और फिर यह अजीब सूरतेहाल थी कि मुसलमानों का मोर्चा इतना ज़्यादा रेतीला था कि इंसानों और चौपायों दोनों के क़दम रेत में धंसे जा रहे थे और चलना मुश्किल हो रहा था, मगर मुश्रिकों का मोर्चा हमवार और पक्के फ़र्श की तरह था। ग़रज़ मुकम्मल दुश्मन तायदाद में तीन गुने से ज़्यादा, लड़ाई के सामान में पूरी तरह मुकम्मल, आने जाने के साधनों पर पूरा इत्मीनान, रुकने की जगह बहुत उम्दा और इन तमाम बातों के साथ क़ाफ़िले को कुमक की आशा भी थी और ख़ुद अपनी हालत यह कि तायदाद में बहुत कम, लड़ाई के हथियार नाम भर के लिए, न होने के बराबर, सवारियों की गिनती नाम के लिए, ठहरने की जगह इस दर्जा ख़राब और उन तमाम नासाज़गार हालात के साथ कुमक क़तई तौर पर जिसकी उम्मीद नहीं और हद यह कि दुश्मन पानी पर क़ाबिज़ और मुसलमान उससे महरूम।

ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में अगर मुसलमानों को उनकी ज़ाती राय पर छोड़ दिया जाता तो उनकी अक़्ल, ज़ाहिर को देखकर इसके अलावा और फ़ैसला कर सकती थी कि वे इस वक़्त को टाल दें और दुश्मन से किसी ऐसे दूसरे वक़्त के लिए जंग का क़ौल व क़रार करें कि वह दुश्मन की तरह हर हैसियत से जंग के लिए तैयार हों, चुनांचे इसी बुनियाद पर मुसलमानों ने ज़फ़रान घाटी में मश्विरा करते वक़्त शुरू में यही कहा था, मगर अल्लाह की वह्य के ज़रिए चूंकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह मालूम हो चुका था कि ख़ुदा का यह वायदा कि तुमको 'ईर और नफ़ीर' दोनों में

से एक पर मुसल्लत कर दिया जाएगा, सिर्फ़ इस शक्ल में पूरा होने वाला था कि मुसलमान मुश्रिकों के लश्कर (नफ़ीर) का मुक़ाबला करें और हक़ व बातिल की इस लड़ाई में मुसलमान कामियाब हों और मुश्रिक नाकाम व नामुराद, इसलिए मुसलमानों ने पैग़म्बर ﷺ की मर्ज़ी पाकर हर क़िस्म की बे-सर व सामानी के बावजूद ख़ुद को पूरे शौक़ के साथ फ़िदाकारी के जज़्बे के साथ पेश कर दिया।

ऐसी सूरतेहाल का कुरआन ने इस असर भरे ढंग के साथ बयान किया है—

तर्जुमा—*अगर तुम अल्लाह पर और उस (ग़ैबी मदद) पर यक़ीन रखते हो, जो हमने फ़ैसले कर देने वाले दिन अपने बन्दे पर नाज़िल की थी, जबकि फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबले में आ खड़ी हुई थीं तो चाहिए कि इस तक़्सीम पर (यानी माले ग़नीमत की तै की हुई तक़्सीम पर) कारबंद हो और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। यह वह (बद्र का) दिन था कि तुम उधर क़रीब के नाके पर थे, इधर दुश्मन दूर के नाके पर और क़ाफ़िला तुमसे निचले हिस्से में था (यानी समुन्दर के किनारे-किनारे गुज़र रहा था) और अगर तुम आपस में लड़ाई की बात ठहराते तो ज़रूर लड़ाई के वक़्त के बारे में तुम इख़्तिलाफ़ करते, क्योंकि तुम चाहते हो कि किसी हालत में लड़ाई न हो और दुश्मन चाहता है कि ज़रूर लड़ाई हो। (यानी तुम्हें दुश्मनों की भारी तायदाद और अपनी बेसर व सामानी का अन्देशा था और क़ाफ़िले पर क़ब्ज़ा आसान नज़र आ रहा था और दुश्मन अपनी भारी तायदाद और साज़ व सामान के बल पर घमंड किए हुए था, अल्लाह ने दोनों फ़ौजों को भिड़ा दिया ताकि जो बात होने वाली थी, उसे कर दिखाए साथ ही इसलिए कि जिसे हलाक होना है, हुज्जत पूरी होने पर हलाक हो और जो ज़िंदा रहने वाला है, हुज्जत के बाद ज़िंदा रहे और बेशक अल्लाह सबकी सुनता और सब कुछ जानता है।'* (8 : 41-42)

तर्जुमा—*'और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है बद्र की लड़ाई में और तुम कमज़ोर हालत में थे। पस अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (यह जब हुआ) कि तुम मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुमको काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारी मदद को आसमान से उतरने वाले तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजे। हां, बिला शुबहा अगर तुम सब्र करो और तक़्वा का*

रास्ता अख़्तियार करो और फिर ऐसा हो कि दुश्मन उसी वक़्त तुम पर चढ़ आए, तो तुम्हारा परवरदिगार (भी) पांच हज़ार निशान रखने वाले फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। अल्लाह ने यह सिर्फ़ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो, उसकी वजह से तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाएं और मदद व नुसरत जो कुछ भी है, अल्लाह ही की तरफ़ से है, उसकी ताक़त सब पर ग़ालिब है और वह अपने तमाम कामों में हिक्मत रखने वाला है और साथ ही इसलिए ताकि हक़ के इंकार करने वालों की जमईयत व ताक़त का एक हिस्सा बेकार कर दे, उन्हें इस दर्जा ज़लील व ख़्वार कर दे कि वे नामुराद होकर उलटे पांव फिर जाएं। (3 : 124-127)

मदद की दुआ

ग़रज़ इस हालत में दोनों फ़रीक़ों ने लड़ाई के लिए लाइन बन्दी कर ली। तो पहले आपने मुसलमानों की सफ़ों को दुरुस्त फ़रमाया और फिर उस अरीश (ख़सपोश टूटी झोंपड़ी) के नीचे जाकर जो आपके लिए लड़ाई के मैदान में बना दी गई थी, अल्लाह के दरबार में गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ा कर दुआ शुरू कर दी और अर्ज़ किया—

ऐ अल्लाह! तूने मुझ से जो वायदा (मदद का) फ़रमाया, उसको पूरा कर, ऐ अल्लाह! अगर ये मुट्ठी भर मुसलमान हलाक हो गए, तो फिर इस धरती पर कोई तेरा इबादतगुज़ार बाक़ी नहीं रहेगा।

सिद्दीक़े अकबर रज़ि० ने देखा तो क़रीब आए और अर्ज़ किया, 'ख़ुदा के रसूल! बस कीजिए, अल्लाह तआला अपना वायदा ज़रूर पूरा करेगा।'

ग़ैबी मदद

1. और आख़िर यही हुआ भी कि हर क़िस्म के नासाज़गार हालात और इस दर्जा कमज़ोरी के बावजूद कि किसी मुसलमान का इस लड़ाई से सही व सालिम बच कर निकल जाना ख़ुद एक मोजज़ा होता, मुसलमानों को ग़ैबी नुसरत व इमदाद ने बामुराद व कामियाब किया, फ़त्ह व नुसरत ने क़दम चूमे और दुनिया की तारीख़ का एक बेनज़ीर और हैरत में डाल देने वाला इंक़िलाब

पेश कर दिया और कुरैश के मुश्रिकों के तमाम सरदार और मशहूर योद्धा ही नहीं क़त्ल हुए, बल्कि शिर्क व कुफ़्र की इज्तिमाई ताक़त ही का ख़ात्मा हो गया।

यह ग़ैबी मदद क्या थी? कुरआन इसका जवाब कई आयतों में देता है—

तर्जुमा—*'मुसलमानों की निगाह में दुश्मनों की तायदाद असल तायदाद से कम नज़र आई, ताकि मुसलमान मरऊब न हों और मुश्रिकों की निगाहों में मुसलमान मुट्ठी भर मालूम हुए, ताकि वे लड़ाई से जी न चुराएं और हक़ व बातिल का मारका टल न जाए और एक वक़्त में दोगुने मालूम हुए, ताकि मुसलमानों से मरऊब होकर रह जाएं।* (8 : 43-44)

तर्जुमा—*अभी हो चुका है तुमको एक नमूना, दो फ़ौजों में जो भिड़ी हुई थीं, एक फ़ौज है कि लड़ती है अल्लाह की राह में और दूसरी मुंकर है, ये उनको देखते हैं अपने दो बराबर, खुली आंखों से और अल्लाह ज़ोर देता है अपनी मदद का जिसको चाहे, उसी में ख़बरदार हो जावें जिनको आंख है।'*

(आले इमरान 3 : 13)

2. मुसलमानों की दुआ पर पहले उनकी मदद एक हज़ार फ़रिश्तों से की गई।

तर्जुमा—*जब तुम लगे फ़रियाद करने लगे रब से, तो पहुंचा तुम्हारी पुकार को कि मैं मदद भेजूंगा तुम्हारी हज़ार फ़रिश्ते जंगी पीछे आवें।'*

(8 : 9)

और फिर यह तायदाद बढ़ाकर तीन हज़ार कर दी गई—

तर्जुमा—*'जब तू कहने लगा मुसलमानों को क्या तुमको किफ़ायत नहीं कि तुम्हारी मदद भेजे रब तुम्हारा तीन हज़ार फरिश्ते आसमान से उतरे (हुए)*

(3 : 124)

और अगर दुश्मन तुम पर एक साथ हमला कर दे तो हम तीन हज़ार के बजाए पांच हज़ार फ़रिश्तों से मदद करेंगे।'

तर्जुमा—*'अलबत्ता अगर तुम ठहरे रहो और परहेज़गारी करो और वे आवें तुम पर उसी दम, तो मदद भेजे तुम्हारा रब पांच हज़ार फ़रिश्ते पले हुए घोड़ों पर।'* (3 : 125)

3. मुसलमानों पर ठीक लड़ाई के वक्त ऊंघ तारी कर दी, जिसके कुछ

मिनट बाद उनकी बेदारी ने उनमें एक नई ताज़गी और नई रूह पैदा कर दी।

तर्जुमा—*'जिसने डाल दी तुम पर ऊंघ अपनी तरफ़ से तस्कीन को और उतारा तुम पर आसमान से पानी कि उससे तुमको पाक करे और दूर करे तुमसे शैतान की नजासत और मज़बूत गिरह दे तुम्हारे दिल पर और साबित करे तुम्हारे क़दम।'* (8 : 11)

4. आसमान से पानी बरसा कर मुसलमानों के लिए रेतीली ज़मीन को पक्के फ़र्श की तरह बाना दिया और नीचे होने की वजह से हौज़नुमा गढ़े में पानी इकट्ठा कर दिया और दुश्मनों को ज़मीन की कीचड़ की तरह दलदल बना डाला।

तर्जुमा—*'जब हुक्म भेजा तेरे रब ने फ़रिश्तों को कि मैं साथ हूं तुम्हारे सो तुम दिल साबित करो मुसलमानों के मैं डाल दूंगा दिल में काफ़िरों के दहशत, सो मारो और ऊपर गरदनों के और मारो उनके पोर-पोर।'* (8 : 12)

जंग का नतीजा

बहरहाल जंग का मारका बरपा हुआ और दोनों और से भिड़ गए तो एक दूसरे के मुक़ाबल में आकर 'हल मिम बारिज़' पुकारने और ललकारने लगे और फिर यकायक हुजूमी लड़ाई शुरू हो गई। मुसलमान एक तो जम कर लड़े, मगर दुआ से फ़राग़त के बाद जब लड़ाई के मैदान में आकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'शाहतिल वुजूह' (चेहरे रूस्याह हों) पढ़ते हुए मुट्ठी भर ख़ाक और कंकड़ियां दुश्मनों की तरफ़ फेंकी तो अल्लाह की मोजज़ाना क़ुदरत ने हवा के ज़रिए उसके ज़र्रे तमाम मुश्रिकों की आंखों तक पहुंचा दिए और वे इस यकायक परेशानी से बेचैन होकर आंखें मलने लगे और जंग जीत की शक्ल में बदल गई।

तर्जुमा—*'(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और तूने जब कंकड़ियां फेंकी, तो हक़ीक़त में तूने नहीं फेंकी, बल्कि अल्लाह ने फेंकीं थीं (क्योंकि इंसानी हाथ एक मुट्ठी से इतने बड़े लश्कर के हर आदमी को कंकड़ियां नहीं फेंक सकता था, पर जो कुछ हुआ, नबी के हाथ ख़ुदा का मोजज़ा हुआ)।* (8 : 17)

और देर नहीं लगी कि मुश्रिकों के बड़े-बड़े आदमी मारे गए और दुश्मनों के पैर उखड़ गए। वे भागते थे, मगर भागने का मौक़ा न पाते थे, चुनांचे उनके सत्तर आदमी क़त्ल हुए और सत्तर गिरफ़्तार और बाक़ी ने भागने का रास्ता अख़्तियार किया।

मुसलमान अगरचे ख़ुदा की नुसरत और उसके फ़ज़्ल से कामियाब हुए और फ़त्ह व कामरानी के मालिक बने, फिर भी बाईस मुजाहिदों ने भी जामे शहादत नोश किया।

बद्र की लड़ाई ने दुनिया की तारीख़ का रुख़ बदल दिया

बद्र की लड़ाई तारीख़ और सीरत लिखने वालों से भी अगरचे अपनी तारीख़ी अहमियत का एतराफ़ कराती है और वे यह कहने पर मजबूर हो जाते हैं कि बद्र की लड़ाई एक हंगामी लड़ाई नहीं थी, बल्कि उसने मक्का के क़ुरैश की ताक़त का हमेशा के लिए ख़ात्मा कर दिया और मुसलमानों के लिए अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने की राहें खोल दीं।

उहुद की लड़ाई

उहुद मदीना मुनव्वरा के एक पहाड़ का नाम है। यही वह जगह है जहां शव्वाल 03 हि० 625 ई० में मुसलमानों और मुश्रिकों के दर्मियान हक़ व बातिल की लड़ाई हुई। बद्र में जो घाव क़ुरैश को लग चुका था, उसका इंतिक़ाम लेने के लिए अबू सुफ़ियान की सरबराही में तीन हज़ार सूरमाओं की भारी फ़ौज मक्का से निकली और उहुद के सामने आकर जम गई।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब अबू सुफ़ियान की तैयारियों का हाल मालूम हुआ तो सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाया, उम्र वाले और तजुर्बेकार सहाबा रज़ि० ने यह राय दी कि हमको बाहर निकल कर लड़ाई की ज़रूरत नहीं है, बल्कि फ़ायदेमंद तरीक़ा यह है कि हम मदीना के अन्दर ही रह कर दुश्मन का इन्तिज़ार करें और जब वह मदीने पर हमलावर हो तो उसका ज़ोरदार मुक़ाबला करें। हमारे इस तरीक़े में एक तो दुश्मन को हिम्मत न होगी कि मदीने पर हमलावर हो और अगर उसने क़दम उठाया तो बिला

शुबहा ज़बदस्त हार का सामना करके भागने का रास्ता अख़्तियार करेगा, मगर उन सहाबा रज़ि० ने जो बद्र में शरीक नहीं हुए थे और जो बद्र की फ़ज़ीलत को इस वक़्त हासिल करना चाहते थे, यह राय पसन्द नहीं आई और नवजवानों ने भी उनका साथ दिया और अक्सरीयत की राय यह क़रार पाई कि हमको दुश्मनों का मुक़ाबला मैदान ही में करना चाहिए।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब अक्सरीयत का रुझान यह पाया तो उसका साथ दिया और मुबारक हुजरे में तशरीफ़ ले गए तो तजुर्बेकार और बड़े सहाबा रज़ि० ने अपने छोटों को उनकी राय पर मलामत की, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के रुझान के ख़िलाफ़ क्यों अपनी आज़ाद राय से आपको परेशान किया। चुनांचे जब आप बाहर तशरीफ़ लाए तो उन नवजवानों और इस्लामी शमा के परवानों ने अपनी राय पर नदामत ज़ाहिर की और अ़र्ज़ किया कि आप मदीना ही के अन्दर दुश्मन का मुक़ाबला करें, यही मुनासिब है।

यह सुनकर हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, 'नबी की शान के यह ख़िलाफ़ है कि जब ख़ुदा की राह में हथियार सज कर तैयार हो जाए तो फिर हक़ व बातिल के मारके के बग़ैर ही उनको उतार दे। अब ख़ुदा का नाम लेकर मैदान में निकलो।'

नबी अकरम ﷺ जब मदीने से निकले, तो साथ में एक हज़ार का लश्कर था। इस लश्कर में तीन सौ मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की रहनुमाई में साथ थे। ये मदीना ही में मक्का के मुश्रिकों के साथ साज़िश कर चुके थे कि मुख़्लिस मुसलमानों को बुज़दिल बनाने के लिए यह तरीक़ा अख़्तियार करेंगे कि पहले मुसलमानों के लश्कर के साथ निकलेंगे और राह से ही उनसे कट कर मदीना वापस आ जाएंगे। चुनांचे मुनाफ़िक़ों का सरदार बहाना करके इस्लामी फ़ौज से कटकर जुदा हो गया और मदीना वापस आ गया कि जब नबी अकरम ﷺ ने हम जैसे तजुर्बेकारों की बात न मान कर अल्हड़ नवजवानों की राय को तर्जीह दी तो हमको क्या ज़रूरत है कि ख़ामख़ाह अपनी जानों को हलाकत में डालें।

मगर मुनाफ़िक़ों का मक़्सद पूरा न हुआ और इस्लाम के इन फ़िदाकारों

पर उन के पलट जाने का क़तई तौर पर कोई असर न हुआ और इस्लाम के ऐसे जांबाज़ और निसार होने वालों पर असर ही क्या पड़ता जिनके बच्चों की जांबाज़ी और इस्लाम पर फ़िदाकारी का जज़्बा और वलवला यह हो कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मदीना से बाहर जब इस्लामी फ़ौज का जायज़ा लिया और कमसिन लड़कों को वापसी का हुक्म दिया, तो राफ़ेअ बिन ख़दीज जो, अभी नवउम्र ही थे, यह देखकर पंजों के बल खड़े हो गए कि लम्बे क़द के बनकर जंग के सिपाही रह सकें। चुनांचे उनकी तदबीर कारगर हो गई।

इसी तरह समुरा बिन जुन्दुब छोटी उम्र के समझे गए तो रोने लगे और अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! अगर राफ़ेअ लड़ाई में शरीक हो सकते हैं, तो मैं क्यों ख़ारिज किया जा रहा हूं, जबकि में राफ़ेअ को कुश्ती में पछाड दिया करता हूं।' आख़िर दोनों की कुश्ती कराई गई और समुरा ने राफ़ेअ को पछाड़ दिया और वे मुजाहिदीन में शामिल कर लिए गए, अलबत्ता मुसलमानों के दो क़बीले बनू सलमा, बनू हारिसा में कुछ बद-दिली सी पैदा हो चली थी, मगर फ़िदाकार मुसलमानों के जोश और वलवले को देखकर उनकी हिम्मत भी बुलन्द हो गई।

नबी अकरम ﷺ ने इस्लामी फ़ौज की इस तरह सफ़ें बनाईं कि उहुद को पीछ ले लिया और पचास तीरंदाज़ों को हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की कमान में पहाड़ की एक घाटी पर मुक़र्रर फ़रमा दिया कि हार-जीत किसी हाल में भी अपनी जगह से हरकत न करें, ताकि पीछे की ओर से दुश्मन हमलावर न हो सके।

अब लड़ाई शुरू हो गई और दोनों सफ़ें आमने-सामने खड़े होकर वीरता के जौहर दिखाने लगीं। अभी लड़ाई को कुछ ज़्यादा देर नहीं लगी थी कि मुसलमानों का पलड़ा भारी हो गया और मक्का के मुश्रिकों का लश्कर बिखर कर भागने लगा। लड़नेवाले मुसलमानों ने जब ग़नीमत का माल जमा करने का इरादा किया तो तीरदांज़ों से सब्र न हो सका और वे घाटी छोड़ने पर तैयार हो गए। कमान अफ़सर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने बहुत रोका और फ़रमाया, नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी

न करो, मगर उन्होंने यह कह कर जगह छोड़ दी कि आपका हुक्म लड़ाई तक था, जब लड़ाई ख़त्म हो गई तो ख़िलाफ़वर्ज़ी कैसी?

ग़नीमत के हासिल करने के शौक़ ने उधर मुसलमान तीरंदाज़ों से जगह ख़ाली करा दी, इधर ख़ालिद बिन वलीद (जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे) अपने जंगी दस्ते के साथ मैदान ख़ाली देखकर घाटी की जानिब से मुसलमानों पर टूट पड़े। अब मुसलमान घबराए और इस अचानक हमले से उनके पैर उखड़ गए और इस तरह यकायक जीत हार में बदल गई। अगरचे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के गिर्द व पेश अबूबक्र, उमर, अ़ली, तलहा और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम जैसे फ़िदाकार मौजूद थे, फिर भी मुसलमानों के भागने से दुश्मनों को मौक़ा मिल गया और एक शक़ी अज़ली ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पत्थर खींचकर मारा जिससे आपका मुबारक दांत शहीद हो गया, आप पत्थर के सदमे से क़रीब की एक घाटी में गिर गए। अभी आप संभले भी न थे कि एक मुश्रिक ने पुकारा दिया, 'इन-न मुहम्मदन क़द मा-त' (मुहम्मद सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया) इस आवाज़ ने मुसलमानों में और ज़्यादा इंतिशार और सख़्त बेचैनी पैदा कर दी, मगर मुसलमान फ़ौरन संभले और साबित क़दम सहाबा ने ललकारा कि अगर यह ख़बर सही है, तो अब हम ज़िंदा रहकर क्या करेंगे, आओ और जंग का फ़ैसला करके दम लो। इस हक़ की सदा ने मुसलमानों के दिल में ग़ैरत का जज़्बा पैदा किया। वे सब पलट पड़े और हमलावर होने की ग़रज़ से सिमट कर इकट्ठा हो गए, मगर जंग का नक़्शा बदल चुका था और क़ुरैश अपनी कामियाबी पर नाज़ां होकर मैदान से अलग हो चुके थे। मुसलमानों ने आंख उठाकर देखा तो आप पर नज़र पड़ते ही उनके दिल में भी सुकून पैदा हो गया और परवानावार आपके गिर्द जमा हो गए। ग़ार में गिर जाने से ख़ूद सर में घुस गया और ज़िरह की कड़ियों की ज़द में चेहरा मुबारक और बाज़ुओं पर भी हल्के घाव आ गए थे। हज़रत अ़ली और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने ख़ूद को सर से निकाला और घावों को धोया और बोरिया जलाकर राख को घाव के भीतर भर दिया, जिससे ख़ून बंद हो गया।

हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत

इस ग़ज़्वे में सत्तर मुसलमान शहीद और बहुत से ज़ख़्मी हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सगे चचा, दूध शरीक भाई, बे-तकल्लुफ़ दोस्त और जॉनिसार सहाबी हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत इस वाक़िया का ज़बरदस्त सानहा है, वह्य की ज़ुबान में उन्हें 'सैयदुश-शुहदा' का लक़ब अ़ता फ़रमाया।

मक्का के मुश्रिकों ने इस लड़ाई में परिंदों और ख़ूंख़्वार हैवानों की तरह मुरदा लाशों तक के नाक-कान काट डाले और पेट चाक करके दिल व जिगर को नेज़ों की अनी में छेद-छेद कर दिल का बुख़ार निकाला। अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्दा ने तो सैयदुश शुहदा का जिगर चाक करके दांतों से चबा डाला। हज़रत हमज़ा रज़ि० को हब्शी ग़ुलाम वह्शी ने शहीद किया था, जिसकी ख़ुशी में हिन्दा ने उसको अपना सोने का हार अ़ता किया।

अबू सुफ़ियान अपनी कामियाबी की मसर्रत में कह रहा था 'आला हुबलुन आला हुबलुन' (हुबल की जय हो, हुबल की जय हो) नबी अकरम ﷺ ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, तुम इसके जवाब में यह पुकारो, अल्लाह, आला व अजल्ल, अल्लाहु आला व अजल्लु' (अल्लाह ही सबसे बुलंद व आला बुज़ुर्ग है)

अबू सुफ़ियान ने फिर तैश में आकर कहा, 'लनल उज़्ज़ा, वला उज़्ज़ा लकुम' [हमारी मददगार उज़्ज़ा देवी है और तुम्हारे पास उज़्ज़ा का हमसर (बराबर का) कोई नहीं है।]

हुज़ूरे अक़्दस ने इर्शाद फ़रमाया, 'ऐ उमर! तुम यह जवाब दो, 'अल्लाहु मौलाना, व ला मौला लकुम' (हमारा वाली व मददगार अल्लाह तआ़ला है और तुम्हारा कोई भी मददगार नहीं है)

बहरहाल अबू सुफ़ियान यह कह कर कि अगले साल फिर बद्र में मारका होगा, अपनी फ़ौज लेकर वापस चला गया।

कुरआन और ग़ज़्वा-ए-उहुद

मुसलमानों का ग़ज़्वा उहुद (उहुद की लड़ाई) के लिए तैयार होना, मुनाफ़िक़ों का इस्लामी फ़ौज से जुदा होकर मुसलमानों में बिखराव पैदा करने की कोशिश करना, मुसलमानों की एक बात यह कि अल्लाह की मदद से कामियाब होना और फिर अपनी ग़लतकारी और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी के बदले में हार खा जाना और जीत का हार में बदल जाना, अल्लाह तआ़ला का मुसलमानों की तसल्ली करना, इन तमाम बातों को क़ुरआन ने आले इमरान में थोड़ी तफ़्सील के साथ बयान किया है, चुनांचे मुहम्मद बिन इसहाक़ से नक़ल किया गया है—

अल्लाह तआ़ला ने उहुद की लड़ाई की शान में आले इमरान की साठ आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं।

और इब्ने अबी हातिम ने मिस्वर बिन मख़रमा के वास्ते से रिवायत किया है कि वे कहते थे, मैंने अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० से अ़र्ज़ किया, आप उहुद की लड़ाई का अपना क़िस्सा बयान फ़रमाएं। उन्होंने फ़रमाया, तुम आले इमरान की एक सौ बीस आयतें पढ़ो तो तुमको सारा वाक़िया मालूम हो जाएगा। ये आयतें यहां से शुरू होकर 'इज़् ग़दव-त मिन अह्लिक....' पर ख़त्म होती हैं—

तर्जुमा—*'और (ऐ पैग़म्बर! ज़िक्र के क़ाबिल है वह बात) जबकि तुम सुबह सवेरे अपने घर से निकले थे (और उहुद के मैदान में) लड़ाई के लिए मोर्चों पर मुसलमानों को बिठा रहे थे और अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, जानने वाला है फिर जब ऐसा हुआ था कि तुममें से दो जमाअ़तों ने इरादा किया था कि हिम्मत हार दें (और वापस लौट चलें) हालांकि अल्लाह मददगार था और जो ईमान रखने वाले हैं उनको चाहिए कि हर हाल में अल्लाह ही पर भरोसा रखें।* (3 : 121-122)

तर्जुमा—*'और देखो, न तो हिम्मत हारो, न ग़मगीन हो, तुम ही सबसे बरतर व आला हो, बशर्ते कि तुम सच्चे मोमिन हो। अगर तुमने (उहुद) में ज़ख़्म खाया तो दूसरों को भी वैसे ही ज़ख़्म (बद्र में) लग चुके हैं। असल में ये (हार-जीत) के औक़ात हैं जिन्हें हम इंसानों में इधर-उधर फिराते रहते हैं।*

इसके अलावा यह इसलिए था ताकि इस बात की आज़माइश हो जाए, कौन सच्चा ईमान रखने वाला है, कौन नहीं और इसलिए कि तुममें से एक गिरोह को (इन वाक़ियों और दिनों के नतीजों का) गवाह बना दे और यह ज़ाहिर है कि अल्लाह ज़ुल्म करने वालों को दोस्त नहीं रखता।' (3: 139-140)

अह्ज़ाब की लड़ाई (ख़ंदक़ की लड़ाई)

अह्ज़ाब की लड़ाई तमाम लड़ाइयों में ख़ास अहमियत रखती है और शक्ल के एतबार से निराली है। इसलिए कि इस ग़ज़्वे में मुसलमानों को तमाम काफ़िर जमाअ़तों से एक ही वक़्त में वास्ता पड़ा था और अरब क़बीले यहूदी और उनके मित्र सबके सब जमा होकर मुसलमानों को ख़त्म करने निकले थे और मदीने के अन्दर भी मुनाफ़िक़ों का गिरोह ख़ुफ़िया उनकी मदद कर रहा था। 'हिज़्ब' के मानी चूंकि गिरोह हैं और अह्ज़ाब उसकी जमा (यानी बहुवचन) है, इसलिए यह अह्ज़ाब की लड़ाई कहलाया और जबकि हज़रत सलमान रज़ि० के मश्विरे से मुसलमानों ने पहली बार ख़ंदक़ खोद कर मदीना को दुश्मन से महफ़ूज़ रखने की तदबीर अपनायी, इसलिए इसको ख़ंदक़ का ग़ज़्वा या ख़ंदक़ की लड़ाई भी कहते हैं।

यह ग़ज़्वा शव्वाल 05 हि० मुताबिक़ फ़रवरी 629 ई० में पेश आया, जबकि अबू सुफ़ियान दस हज़ार लोगों पर मुश्तमिल भारी फ़ौज के साथ मदीने पर चढ़ाई के लिए मक्का से निकला। मुख़्तसर तौर पर वाक़िआत की तफ़्सील यह है कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दुश्मनों की चलत-फिरत मालूम हुई, तो दस्तूर के मुताबिक़ आपने सहाबा से मश्विरा फ़रमाया। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ने अर्ज़ किया, हम फ़ारस वालों का यह दस्तूर है कि ऐसे मौक़े पर ख़ंदक़ खोद कर दुश्मन से ख़ुद को महफ़ूज़ कर लेते हैं और उसको मजबूर बना देते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मश्विरे को क़ुबूल फ़रमा कर ख़ंदक़ खोदने का हुक्म दिया और कुदाल लेकर ख़ुद भी शिर्कत फ़रमाई। इंसानी कायनात की तारीख़ में आक़ा और ग़ुलाम, हाकिम और महकूम, अफ़सर और मातहत, मख़्दूम और ख़ादिम के दर्मियान यह पहला मंज़र था

जो आंखों ने देखा और कानों ने सुना कि दो जहां के सरदार हाथ में कुदाल लिए तीन दिन के फ़ाक़े से पेट पर पत्थर बांधे, मुहाजिरीन व अंसार के साथ ख़ंदक़ खोदने में बराबर का शरीक नज़र आता है, बल्कि एक सख़्त पत्थर को रोक बन जाने पर जब सब सहाबा ने ज़ोर लगाया और उसने अपनी जगह से हरकत न की और ख़िदमते अक़्दस में इस वाक़िए को पेश किया गया तो आपने 'बिस्मिल्लाह' कहकर कुदाल की एक चोट से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

आपके साथ सहाबा भी तीन रात-दिन भूख से पेट पर पत्थर बांधे दीने हक़्क़ की हिमायत और अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने लिए लगे हुए थे।

एक तरफ़ अगर 'हमने तीन दिन ऐसे गुज़ारे कि कुछ चखा नहीं था' का मुज़ाहरा था, तो दूसरी तरफ़ ज़ुबान पर दुआ के ये 'कलिमे' जारी थे, 'ऐ ख़ुदा! ऐश तो आख़िरत का ऐश है। पस तू अंसार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़रमा', और जब तौहीद पर निसार होने वाले, शमा नुबूवत के परवाने यह सुनते तो वाक़ई परवानों की तरह पूरे जोश में आकर यह कह-कह कर क़ुरबान होने लगते—

'हम वह हैं जिन्होंने ज़िंदगी भर के लिए मुहम्मद ﷺ के हाथ पर जिहाद की बैअत कर ली है—

'ऐ अल्लाह! ख़ैर व नेकी तो आख़िरत ही की है, पस तू अंसार और मुहाजिरों के दर्मियान अपनी बरकत नाज़िल फ़रमा।'

और बरा बिन आज़िब फ़रमाते हैं, कि ग़ज़वा-ए-ख़ंदक़ में ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हालत यह थी कि ख़ंदक़ से मिट्टी उठाकर इधर-उधर मुंतक़िल कर रहे थे और मुबारक जिस्म गर्द से अट रहा था और यह रजज (वीर-गाथा) पढ़ते जाते थे—

'ख़ुदा की क़सम, अगर ख़ुदा की हिदायत रहनुमाई न करती तो हमको हिदायत नसीब होती और न सदक़ा व नमाज़, पस ऐ ख़ुदा! तू हम पर इत्मीनान उतार और जंग के मैदान में हमको साबित क़दम रख और जिन लोगों ने हम पर सरकशी करते हुए चढ़ाई की है, जब उन्होंने फ़ित्ने का इरादा किया तो हमने इंकार कर दिया (उनको नाकाम कर दिया)। और तेज़ जोश

के साथ 'अबैना' को ऊंची आवाज़ से कहते जाते थे।'

ख़दक़ की ख़ुदाई का काम कुछ दिन जारी रहा और इस तरह दुश्मन से हिफ़ाज़त का पूरी तरह सामान हो गया, लेकिन जब घेराव को बीस दिन हो गए, तो बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों की अह्द शिकनी और लगातार घेराव से कुछ उकताने और बेचैनी महसूस करने लगे। हुआ यह कि काफ़िरों की फ़ौज में एक आदमी नुऐम बिन मसऊद नख़ई था, यह गो अभी तक मुसलमान नहीं हुआ था, लेकिन उसके दिल में इस्लाम की सच्चाई घर कर चुकी थी, इसलिए उसने अपनी होशियारी से मक्का के मुश्रिकों और मदीना के यहूदियों के दर्मियान बे-एतमादी पैदा कर दी और लड़ाई के मामले में दोनों फ़रीक़ में ऐसा इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया कि एक ने दूसरे के साथ मिलकर मुसलमानों के साथ लड़ाई करने से इंकार कर दिया और अभी मक्का के मुश्रिक वापस भी न हुए थे कि क़ुदरत की तरफ़ से तेज़ हवाओं का ऐसा तूफ़ान उठा कि जिसने आन की आन में दुश्मन की तमाम फ़ौज को तहस-नहस कर दिया। ख़ेमे उखड़ कर गिरने लगे, चौपाए भड़क-भड़क कर भागने लगे और सारी फ़ौज में अबतरी फैल गई और दुश्मन के घेराव छोड़कर भागने का रास्ता अख़्तियार किया और इस तरह अल्लाह ने मुसलमानों को उनके फ़िल्ले से नजात दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया—

'अल्लाह तआला की तरफ़ से मुझको पुरवा हवा के ज़रिए जीत अता की गई और आद पछुवा हवा से हलाक किए गए थे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब दुश्मन की ख़बर मालूम करने की ज़रूरत पेश आई थी तो तीन बार आपने मालूम किया कि इस ख़िदमत को कौन अंजाम देगा और तीनों बार हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम नें आगे बढ़ कर अर्ज़ किया, इस ख़िदमत के लिए मैं हाज़िर हूं।

तब आपने ईशाद फ़रमाया— हर एक नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी ज़ुबैर रज़ि० हैं। और इसी मौक़े पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ किताब (क़ुरआन) के नाज़िल करने वाले ख़ुदा! ऐ जल्द हिसाब लेने वाले! तू मुश्रिकों की जमाअत को हरा दे, ऐ अल्लाह! उनको भगादे और उन को डगमगा दे।'

'कोई ख़ुदा नहीं अल्लाह की ज़ात के सिवा, जो यक्ता व बेहमता है, उसने अपने लश्कर (मुसलमानों) को इज़्ज़त बख़्शी और अपने बन्दे की मदद की और यक्ता ज़ात अह्ज़ाब (सब जमाअतों) पर ग़ालिब है और उसके अलावा सब फ़ानी है।'

यही वह लड़ाई है जिसमें जिहाद की मश्ग़ूली की वजह से हुज़ूरे अकरम सल्ल० और सहाबा रज़ि० की अ़स्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई और आपने मग़रिब के वक़्त दोनों नमाज़ों को अदा किया। (बुख़ारी, बाबुल जिहाद)

क़ुरआन और अह्ज़ाब की लड़ाई

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं—

'यह आयत (जिस का तर्जुमा—नीचे दिया जा रहा है) ख़ंदक़ की लड़ाई के बारे में ही नाज़िल हुई—

तर्जुमा— *'और जब चढ़ आए (मुश्रिक) तुम पर ऊपर की जानिब से और नीचे की जानिब से और जब फिर गईं (दहशत की वजह से) आंखें और पहुंच गए दिल गलों तक (यानी कलेजे मुंह को आ गए)* (33 : 10)

क़ुरआन में इसी ग़ज़वे के तअ़ल्लुक़ से इस सूरः का नाम ही 'अह्ज़ाब' हो गया। इस सूरः के दूसरे और तीसरे रुकूअ में इसी वाक़िए का ज़िक्र है—

तर्जुमा— *'ऐ ईमान वालों, अल्लाह की नेमत को याद करो जो तुम पर उस वक़्त की गई जब तुम पर (मुश्रिकों के) लश्कर चढ़े थे। पस हमने उन पर हवा को और ऐसी फ़ौजों को भेज दिया, जिनको तुम नहीं देख रहे थे और जो काम भी तुम करते हो, अल्लाह उन कामों को देखने वाला है—'व कानल्लाहु अला कुल्लि शैइन क़दीर' तक।'* (33 : 9-27)

हुदैबिया का वाक़िया

हुदैबिया मक्का मुकर्रमा से जिद्दा की तरफ़ एक मंज़िल पर वाक़े एक कुएं का नाम है। यही वह जगह है जिसके साथ 'फ़त्हे मुबीन' (खुली जीत) और बैअते रिज़वान की मुक़द्दस तारीख़ जुड़ी हुई है।

6 हिजरी मुताबिक़ फ़रवरी 628 ई० माह ज़ीक़ादा, दिन सोमवार, वह मुबारक वक़्त था कि सरवरे दो आलम ﷺ चौदह सौ सहाबा के साथ उमरा की अदाएगी के इरादे से मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हुए और जब ज़ुल-हुलैफ़ा पहुंचे, तो कुरबानी के जानवरों के क़लादा डाला और एहराम बांधा और बनी ख़ुज़ायाके एक आदमी को जासूस बनाकर भेजा कि वह कुरैश के हालात का अन्दाज़ा लगाकर ख़बर दे।

हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० जब ग़दीर अशतात पंहुचे तो जासूस ने आकर ख़बर दी कि कुरैश को आपकी आमद की इत्तिला हो चुकी है और वे क़बीलों को जमा करके मुक़ाबले की तैयारियों में लगे हैं, उनका इरादा है कि आप को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल न होने दें।

नबी अकरम ﷺ ने सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाया तो सिद्दीक़े अकबर रज़ि० ने अर्ज़ किया—

'ख़ुदा के रसूल ﷺ! हम तो बैतुल्लाह के इरादे से निकले हैं, लड़ाई या क़त्ल व क़िताल हमारा मक़सद नहीं है, इसलिए हम बैतुल्लाह की ज़ियारत को अपना मक़्सद समझते हुए ज़रूर आगे बढ़ते रहेंगे और जो जमाअत ख़ामख़ाही रास्ते की रुकावट बनेगी, उससे मजबूरी में लड़ना पड़ेगा।

मश्विरे के बाद ज़ाते अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया 'अब ख़ुदा का नाम ले कर बढ़े चलो।' (बुख़ारी)

बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वाले ख़ुदा के इश्क़ में चूर और बैतुल्लाह की ज़ियारत में मसरूर मक्का की तरफ़ क़दम बढ़ाए चल रहे थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ालिद बिन वलीद फ़ौज का दस्ता लिए अतीम में घात लगाए तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा है, इसलिए मुनासिब यह है कि इस ओर से कावा काट कर दाहिनी तरफ़ चलें और अचानक बेख़बरी में उनके

सामने पहुंच जाएं।

जब मुसलमान अचानक ख़ालिद बिन वलीद की फ़ौजी टुकड़ी के सामने आ गए तो अपनी घात को नाकाम देखकर ख़ालिद घबरा गए। दस्ते को लेकर तेज़ी के साथ मक्का के मुश्रिकों के पास जा पहुंचे और उनको मुसलमानों के आने की ख़बर दी।

नबी अकरम ﷺ जब उस टीले पर पहुंचे कि उसके बाद घाटी में उतर कर मक्का पहुंच जाना था तो अचानक आपकी ऊंटनी क़सवा बैठ गई। सहाबा ने यह देखकर उसको चौके दिए, भड़काया और कोशिश की किसी तरह उठ खड़ी हो, मगर वह न उठी, लोग जब बार-बार हल-हल (ऊंटनी को बिठाने के लिए बोलते हैं) कहकर थक गए तो कहने लगे, 'क़सवा नाफ़रमान हो गई।'

नबी अकरम ﷺ ने यह सुना तो फ़रमाया, क़सवा हरगिज़ नाफ़रमान नहीं हुई और न यह इसकी आदत है, बल्कि इसको उस ख़ुदा ने रोक दिया था जिसने हाथी वालों को रोक दिया था यानी क़ुरैशे मक्का की बेहूदगी और जंगी ज़ेहनियत की वजह से चूंकि जंग की हालत पैदा हो गई है, इसलिए ख़ुदा की मर्ज़ी यह है कि हम उस वक़्त तक आगे न बढ़ें, जब तक कि काबे की हुर्मत का अह्द न कर लें।'

चुनांचे इस इर्शाद के बाद ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, वे मुझसे जो भी ऐसी बात चाहेंगे कि उसमें अल्लाह की हुर्मतों की अज़्मत उनके पेशेनज़र हो तो ज़रूर उसको पूरा करूंगा।

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ जब यह एलान फ़रमा चुके तो अब जो क़सवा को खड़ी होने के लिए डपटा, वह फ़ौरन खड़ी हो गई और चल पड़ी और हुदैबिया के मैदान में जा पहुंची।

जब बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वालों का मुक़द्दस क़ाफ़िला हुदैबिया में ठहरा तो मश्विरे मे यह तै पाया कि हज़रत उस्मान रज़ि० को मक्का भेजा जाए, ताकि वे मक्का के मुश्रिकों पर यह वाज़ेह करें कि हमारा इरादा, बैतुल्लाह की ज़ियारत के अलावा और कुछ नहीं, इसलिए तुमको रोकना

मुनासिब नहीं है।

हज़रत उस्मान रज़ि० जब मक्का में दाख़िल हुए और अबू सुफ़ियान वग़ैरह ने मिलकर बातचीत की तो उन्होंने एक न सुनी और कहने लगे कि तुम अगर चाहते हो कि अकेले बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लो तो कर लो, वरना हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उनके दूसरे साथियों को हरगिज़ मक्का में दाख़िल नहीं होने देंगे।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, यह तो मैं हरगिज़ नहीं कर सकता कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बग़ैर तवाफ़ और उमरा को अदा कर लूं। क़ुरैश ने हज़रत उस्मान रज़ि० का यह इसरार देखा तो उनको वापस जाने से रोक लिया।

बैअते रिज़्वान

यह ख़बर मुसलमानों तक इस तरह पहुंची कि उस्मान रज़ि० क़त्ल कर दिए गए। मुसलमानों के लिए यह ख़बर एक बहुत बड़ा सानहा था जिससे हर आदमी बेचैन और बेक़ाबू हुआ जा रहा था। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसी वक़्त एक पेड़ के नीचे बैठकर मुसलमानों से इस बात पर बैअ़त ली कि मर जाएंगे, मगर हममें से कोई एक भी फ़रार का रास्ता नहीं अख़्तियार करेगा। नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) जब सब मुसलमानों से बैअ़त ले चुके, तो उनमें हैरत में डालने वाला ज़बरदस्त जोश व ख़रोश पैदा हो गया, जिसकी ख़बर धीरे-धीरे मक्का भी पहुंच गई। मक्का के मुश्रिक बहुत घबराए और ख़ौफ़ खाकर मुसलमानों तक यह ख़बर पहुंचाई कि उस्मान रज़ि० के क़त्ल की ख़बर ग़लत है और हज़रत उस्मान रज़ि० सही व सलामत हुदैबिया वापस तश्रीफ़ ले आए।

चूंकि जिहाद की यह बैअत बहुत ही अहम और नाज़ुक मौक़े पर ली गई थी और मुसलमानों ने पूरे वलवले और जोश के साथ यह बैअ़त की थी, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की इस फ़िदाकारी की क़द्र फ़रमाई और सूरः फ़त्ह में रिज़ा और ख़ुश्नूदी कर परवाना देकर उनके इस कारनामे को हमेशा के लिए ज़िंदा बना दिया और इसी हक़ीक़त के पेशेनज़र इस्लामी

तारीख़ में उसका नाम 'बैअते रिज़वान' क़रार पाया—

तर्जुमा—बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जबकि वह तेरे हाथ पर उस पेड़ के नीचे बैअ़त करने लगे और जान लिया अल्लाह ने जो उनके जी में था, पस उतारा उन पर इत्मीनान व सुकून और इनाम में दिया उनको एक क़रीबी फ़त्ह।' (18 : 48)

मुसलमानों के फ़िदाकाराना जोश और वालिहाना जज़्बे ने मक्का के मुश्रिकों पर ऐसा असर किया कि अब वे ख़ुद सुलह पर तैयार हो गए और आगे बढ़कर सुहैल बिन उमर को सफ़ीर बनाकर भेजा कि वह नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से सुलह की शर्तें तै करें, ताकि यह झगड़ा ख़त्म हो जाए, मगर यह शर्त हर हाल में रहेगी कि मुसलमान इस साल नहीं बल्कि अगले साल उमरा करेंगे।

समझौता

सुहैल बिन उम्र जब मुसलमानों के कैम्प में पहुंचा तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुलह के ख़्याल से पसंदीदगी की नज़र से देखा और लम्बी बात-चीत के बाद नीचे की धाराओं पर दोनों तरफ़ से समझौते कि तस्दीक़ व तौसीक़ अ़मल में आई।

1. इस साल मुसलमान मक्का में दाख़िल हुए बग़ैर ही वापस चले जाएं।

2. अगले साल मक्का में उमरे की ग़रज़ से इस तरह दाख़िल होंगे कि मामूली हिफ़ाज़ती हथियारों के अलावा कोई जंगी हथियार नहीं होगा और तलवारें नियाम के अन्दर ही रहेंगी और सिर्फ़ तीन दिन क़ियाम करेंगे और जब तक वे रहेंगे हम मक्का छोड़कर पहाड़ों पर चले जाएंगे।

3. समझौते की मुद्दत के अन्दर दोनों तरफ़ अम्न व आफ़ियत के साथ आने-जाने का सिलसिला जारी रहेगा।

4. अगर कोई आदमी मक्का से अपने वली की इजाज़त के बग़ैर मुसलमान होकर भी मदीना चला जाएगा तो उसको वापस करना होगा और अगर मदीना से कोई मक्का भाग आएगा तो हम उसे वापस नहीं करेंगे।

5. तमाम क़बीले आज़ाद हैं कि दो फ़रीक़ में से जो जिसका दोस्त बनना

पसन्द करे, उसका दोस्त (हलीफ़) बन जाए।

6. यह समझौता दस साल तक क़ायम रहेगा और कोई फ़रीक़ इस मुद्दत के अन्दर इसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करेगा।

समझौता लिखते वक्त मुबारक नाम के साथ 'रसूलुल्लाह' लिखने पर सुहैल ने एतराज़ किया था।

आपने फ़रमाया कि 'है तो यह वाक़िया और ऐसी हक़ीक़त जिससे इंकार नहीं किया जा सकता, लेकिन हमको चूंकि सुलह चाहिए है, इसलिए तुम अगर यह पसन्द नहीं करते, तो मुझको इसरार नहीं और यह फ़रमा कर आपने समझौता लिखने वाले हज़रत अ़ली रज़ि० को हुक्म दिया कि वह इस जुम्ले को मिटा दें। हज़रत अ़ली से यह कब मुम्किन था कि वह अपने हाथ से इस जुम्ले को मिटाएं, जिससे के ताल्लुक़ ने सारी कायनात में इंक़िलाब पैदा करके अंधेरे को रोशनी से, शिर्क को ईमान से और जह्ल को इल्म (अज्ञानता को ज्ञान) से बदल डाला। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब यह महसूस किया तो लिखे की जगह को मालूम करके अपने मुबारक हाथों से जुम्ले को मह्व कर दिया। (मिटा दिया)

समझौता जब मुकम्मल हो गया तो मुसलमानों ने यह महसूस किया कि इसमें हमारा पहलू कमज़ोर रहा और सूरतेहाल यह हो गई कि गोया हमने दब कर सुलह की है, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० से ज़ब्त न हो सका और अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने और इस्लाम की सरबुलन्दी के जज़्बे ने मजबूर किया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस मे अर्ज़ करें, 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या यह हुदैबिया का वाक़िया 'फ़त्ह' है?

हुज़ूरे अक़्दस सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, हां, ख़ुदा की क़सम! बेशक यह 'फ़त्ह' है। (फ़त्हुलबारी)

यह वाक़िया जो समझौते की धाराओं के एतबार से मुसलमानों के हक़ में देखने में हार और ज़िल्लत की वजह नज़र आता था 'खुली फ़त्ह' कैसे था, तो इसका जवाब बुज़ुर्ग हदीस के माहिरों की ज़ुबानी सुनिए। हदीस व सीरत

के इमाम ज़ुहरी रह० फ़रमाते हैं—

'इस्लाम में जो शानदार फ़त्हें गिनी गई हैं, उनमें सबसे पहली 'बड़ी फ़त्ह' हुदैबिया की सुलह है, इसलिए कि इससे पहले बराबर कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों से जंग व पैकार का सिलसिला जारी था और जब यह 'सुलह' अमल में आ गई, तो इसकी वजह से हर दो फ़रीक़ को अम्न व इत्मीनान के साथ एक दूसरे से मिलने और बातें करने का मौक़ा मयस्सर आया और ख़्यालों के तबादले की आज़ादी नसीब हुई। नतीजा यह निकला कि जो आदमी भी इस्लाम को अपनी सही अक़्ल से जांचता और उसकी हक़ीक़त पर ग़ौर करता, उसके लिए इसके अलावा कोई चारा बाक़ी न रहता था कि वह तुरन्त इस्लाम क़ुबूल कर ले। चुनांचे इन दो सालों में (जब तक समझौते पर अमल रहा और मुश्रिकों ने अपनी तरफ़ से उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं की) लोग इतने ज़्यादा मुसलमान हुए कि इससे पहले की पूरी मुद्दत में उतने ही या उससे कम मुसलमान हुए थे। (फ़त्हुलबारी)

और हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी इर्शाद फ़रमाते हैं—

'इस जगह 'फ़त्हे मुबीन' से मुराद हुदैबिया का वाक़िया है। हुदैबिया के समझौते ने हक़ीक़त में 'फ़त्हे मुबीन' 'फत्ह मक्का' के लिए रास्ता खोल दिया, यह इसलिए कि जब लड़ाई का ख़तरा बीच में जाता रहा और अम्न और इत्मीनान की शक्ल पैदा हुई तो मक्का और मदीना के दर्मियान आने-जाने का सिलसिला बिना किसी ख़ौफ़ और ख़तरे के होने लगा और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० जैसे बहादुर और सूझ-बूझ वाले लोगों का इस्लाम क़ुबूल करना इसी सुलह का कारनामा है और तरक़्क़ी की यही वज्हें धीरे-धीरे 'मक्का की जीत' की वजह बनी। (फ़त्हुलबारी)

और इब्ने हिशाम और इमाम ज़ुहरी तौजीह की ताईद करते हुए लिखते हैं—

'ज़ुहरी के क़ौल के मुताबिक ताईद इस हक़ीक़ते हाल से अच्छी तरह हो जाती है कि हुदैबिया के वाक़िए में जब नबी अकरम ﷺ निकले हैं तो चौदह सौ मुसलमान साथ थे और दो साल बाद जब मक्का जीतने के लिए निकले हैं, तो दस हज़ार की तायदाद थी। (फ़त्हुलबारी)

अल-फ़त्हुल आज़म (महान विजय)

रमज़ानुल मुबारक 08 हिजरी मुताबिक़ जनवरी 630 ई० में 'फ़त्हे मक्का' (मक्का विजय) का शानदार वाक़िया पेश आया।

इस वाक़िए की तारीख़ी हैसियत यह है कि हुदैबिया के समझौते में यह तै पा गया था कि अरब के क़बीले इसके लिए आज़ाद होंगे कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और क़ुरैश में से जिसके भी हलीफ़ (मित्र) बनना चाहे, बन जाएं। जब समझौते पर दोनों तरफ़ से दस्तख़त हो गए तो फ़ौरन अरब के क़बीला ख़ुज़ाआ ने एलान किया कि हम मुसलमानों के हलीफ़ होना पसन्द करते हैं और क़बीला बनूबक्र ने कहा कि हम क़ुरैश के हलीफ़ बनना चाहते हैं और दोनों क़बीले इस तरह अलग-अलग दो जमाअतों के हलीफ़ हो गए।

लगभग डेढ़ साल तो समझौते पर हर दो तरफ़ से पूरी तरह अमल होता रहा, लेकिन डेढ़ साल बाद एक नया वाक़िया पेश आया। वह यह कि बनी ख़ुज़ाआ और बनूबक्र के दर्मियान अर्से से लड़ाई-झगड़े का सिलसिला जारी रह चुका था, जो इस दर्मियानी मुद्दत में अगरचे बन्द रहा, मगर अचानक किसी बात पर फिर लड़ाई छिड़ गई और बनू-बक्र एक रात को ज़नीरा नामी जगह में बनू ख़ुज़ाआ पर जा चढ़े। क़ुरैश को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने आपस में मश्विरा किया और कहने लगे, रात का वक़्त है और मुसलमान यहां से बहुत दूर हैं, आज मौक़ा है कि बनी ख़ुज़ाआ को पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ के हलीफ़ होने का मज़ा चखाया जाए। चुनांचे उन्होंने भी बनी-बक्र का साथ देते हुए बनी ख़ुज़ाआ को तहे तेग़ करना शुरू कर दिया।

अम्र बिन सालिम ने जब यह हाल देखा तो एक वफ़्द लेकर दरबारे क़ुदसी में इस्तिग़ासा किया और बनी ख़ुज़ाआ की दर्दनाक हालत को पेश करते हुए मदद का तालिब हुआ। नबी अकरम सल्लल्लाहु व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया— ख़ुदा की क़सम मैं जिस चीज़ को अपनी ज़ात से रोकूंगा, तुमको भी उससे ज़रूर महफ़ूज़ रखूंगा।'

इधर क़ुरैश को यह इल्म हुआ तो वे दौड़े, अपनी बेजा हरकत पर शर्मिंदा

हुए और उन्होंने अबू सुफ़ियान को इस बात पर लगाया कि वह मदीना जाए और मुसलमानों के भड़कने को दूर करने की यह तदबीर करे कि क़ुरैश चाहते हैं कि पिछले समझौते की मुद्दत में और इज़ाफ़ा हो जाए और नए सिरे से समझोते की तौसीक़ हो जाए।

अबू सुफ़ियान मदीना पहुंच कर सबसे पहले अपनी बेटी उम्मे हबीबा रज़ि० के घर में दाख़िल हुए, जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवन-साथी थीं, अबू सुफ़ियान ने ज्यों ही इरादा किया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिछे हुए बिस्तर पर बैठ जाए, उम्मे हबीबा रज़ि० ने फ़ौरन उसको समेट दिया और कहने लगीं, 'बाप! यह अल्लाह के नबी का बिछौना है।'

अबू सुफ़ियान ने कहा कि 'फिर क्या हुआ, मैं तेरा बाप हूं।'

उम्मे हबीबा ने कहा, यह सही है, मगर तू मुश्रिक है और ख़ुदा के पैग़म्बर का पाक बिस्तर।

अब सुफ़ियान अगरचे वहां से उस वक़्त बड़बड़ाता हुआ चला गया, मगर हैरत में डाल देने वाले इस वाक़िए ने उसकी आंखें खोल दीं और वह समझा कि हक़ीक़ते हाल क्या है?

ग़रज़ वह दरबारे अक़्दस में हाज़िर हुआ और अर्ज़-मारूज़ करने लगा। आपने मालूम किया, यह तज्दीद व तौसीक़ की क्या ज़रूरत है? क्या कोई नया वाक़िया पेश आ गया है? अबू सुफ़ियान ने अर्ज़ किया, नहीं, कोई नई बात नहीं है।

तब आपने इर्शाद फ़रमाया कि तुम मुतमइन रहो कि हम अपने अह्द पर क़ायम हैं।

अबू सुफ़ियान इस जवाब को सुनकर मुतमइन न हुआ। इसलिए कि वह हक़ीक़ते हाल को छिपाकर झूठ बोल चुका था और चाहता था कि इस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धोखा देकर अपना मक़्सद पूरा कर ले। लेकिन इसी साफ़ और सच्चे जवाब ने ओस डाल दी और उसका मक़्सद पूरा न हो सका, तब उसने सिद्दीक़े अकबर रज़ि०, फ़ारूक़े आज़म

रज़ि० अ़ली हैदर रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अलग-अलग बातें कीं और चाहा कि मामला क़ुरैश की ख़्वाहिश के मुताबिक़ तै हो जाए, लेकिन उसकी मुराद पूरी न हो सकी और बिना किसी कामियाबी के नाकाम व नामुराद मक्का वापस गया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिद्दीक़े अकबर रज़ि० को सूरतेहाल की ख़बर दी। हज़रत सिद्दीक़े अकबर अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हमारे और क़ुरैश के दर्मियान तो समझौता है?' आप ने इर्शाद फ़रमाया, 'मगर क़ुरैश ने ख़ुद अह्द तोड़ा है।'

अब जिहाद की तैयारी शुरू हुई मगर आमतौर से किसी को मालूम न हो सका कि किस तरफ़ का इरादा है। आपने मदीना के आसपास आम ऐलान कर दिया कि जो आदमी भी अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखता है, वह रमज़ान तक मदीना पहुंच जाए। आप पूरी कोशिश फ़रमा रहे थे कि किसी तरह हमारी तैयारी का हाल क़ुरैश को न मालूम हो पाए, क्योंकि आपकी दिली ख़्वाहिश यह थी कि मक्के में लड़ाई न छिड़ने पाए और क़ुरैश रौब खाकर हार मान लें कि इसी बीच एक हादसा पेश आ गया।

हातिब बिन अबी बलतआ़ का वाक़िया

हातिब बिन अबी बलतआ़ एक बद्री सहाबी थे, उनके बाल-बच्चे मक्का ही में थे कि यह सूरतेहाल पेश आ गई। उन्होंने यह ख़्याल करते हुए कि इस वाक़िए का हाल बहरहाल मुश्रिकों को मालूम हो ही जाएगा, सो अगर मैं भी मक्का के क़ुरैश को इसकी इत्तिला कर दूं तो हमारा (मुसलमानों का) कोई नुक़सान भी नहीं होगा और मैं उनकी हमदर्दी हासिल करके अपने घर वालों को उनके ख़तरों से भी महफ़ूज़ रख सकूंगा। मक्का के मुश्रिकों के नाम एक ख़त लिख दिया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह की वह्य के ज़रिए यह मालूम हो गया और आपने हज़रत अ़ली रज़ि०, मिक़्दाद रज़ि० और ज़ुबैर रज़ि० को इस पर लगाया कि रौज़ा ख़ाख़ जाओ, वहां ऊंट पर सवार औरत मिलेगी वह जासूस है। उसके पास एक ख़त है, वह उससे

छीन लो। ये लोग रोज़ा ख़ाख़ पहुंचे तो औरत को मौजूद पाया, उन्होंने ख़त की मांग की, औरत ने इन्कार किया कि मेरे पास कोई ख़त नहीं है, मगर जब उन्होंने जामा तलाशी की धमकी दी तो मजबूर होकर उसने सर के बालों में से एक पर्चा निकाल कर दिया।

यह पर्चा जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ तो वह हज़रत हातिब का ख़त था। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी जानिब मुख़ातब होकर इर्शाद फ़रमाया, हातिब! यह क्या? हातिब ने अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल! जल्दी न फ़रमाएं, यह ख़त मैंने इसलिए लिखा कि मैं जानता हूं कि मदीने में मुक़ीम सब मुहाजिरों का मक्का के क़ुरैशियों के साथ किसी न किसी क़िस्म का रिश्ता और ताल्लुक़ है। एक मैं ही ऐसा हूं जिसका उनके साथ कोई रिश्ता नहीं है तो मैंने यह सिर्फ़ इस यक़ीन पर किया है कि मुसलमानों को तो इस बात से कोई नुक़्सान नहीं होगा और मैं इस तरह क़ुरैश की हमदर्दी हासिल करके अपने बाल-बच्चों को महफ़ूज़ कर सकूंगा। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ख़ुदा की क़सम मैंने हरगिज़ यह काम इर्तिदाद और कुफ़्र की नीयत से नहीं किया, मैं अब भी इस्लाम का शैदाई और फ़िदाई हूं।'

नबी अकरम ﷺ ने यह सुनकर इर्शाद फ़रमाया, 'हातिब ने तुम्हारे सामने सच-सच बात कह दी।'

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझको इजाज़त दीजिए कि मैं मुनाफ़िक़ की गरदन उड़ा दूं।

नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, 'हातिब बद्र के मुजाहिद हैं और अल्लाह ने बद्र में शरीक होने वालों के लिए यह इर्शाद फ़रमाया है कि, 'अमिलू माशेतुम फ़क़द ग़फ़रतु लकुम' हातिब के वाक़िए पर ही क़ुरआन की यह आयत उतरी—

तर्जुमा—*ऐ ईमान वालो! न पकड़ो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त, उनको पैग़ाम भेजते हो दोस्ती से और वे इंकारी हुए हैं उससे जो तुमको आया सच्चा दीन, निकालते हैं रसूल को और तुमको इस पर कि तुम मानो अल्लाह अपने रब को, अगर तुम निकले हो लड़ाई को मेरी राह में और चाह कर मेरी*

रज़ामंदी, तुम उनको छिपे पैग़ाम भेजते हो दोस्ती के और मुझको ख़ूब मालूम है जो छुपाया तुमने और जो खोला तुमने और जो कोई तुम में यह काम करे वह भूला सीधी राह।' (60 : 1)

बहरहाल रमज़ान की शुरुआती तारीख़ें थीं कि ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हज़ार जाँनिसारों के साथ मक्का की तरफ़ चले। आप जब क़दीद और अस्फ़ान के दर्मियान क़दीद तक पहुंचे तो देखा कि मुसलमानों पर रोज़े की सख़्ती हद से आगे बढ़ रही है, तब आपने पानी तलब फ़रमाया और मज्मे के सामने पिया (बुख़ारी), ताकि सहाबा देख लें और समझ लें कि सफ़र और फिर जिहाद के मौक़े पर इफ़्तार की इजाज़त है और क़ुरआन की दी हुई रुख़्सत का यही मतलब है।

इसी सफ़र में ज़ाते अक़्दस ﷺ के चचा हज़रत अब्बास रज़ि० मुसलमान होकर ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने हुक्म दिया कि बाल-बच्चों को मदीना भेज दो और तुम हमारे साथ रहो।

इस्लामी लश्कर जब मक्का के क़रीब पहुंचा तो अबू सुफ़ियान छुपकर लश्कर का सही अन्दाज़ा कर रहे थे कि अचानक मुसलमानों ने गिरफ़्तार करके ख़िदमते अक़दस में पेश किया। आपने अबू सुफ़ियान पर करम की निगाह डालते हुए माफ़ कर दिया और क़ैद से आज़ाद कर दिया। अबू सुफ़ियान 'दुनियाओं के लिए रहमत' सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह बर्ताव देखा तो फ़ौरन इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसी तरह अब्दुल्लाह बिन अबी उमैया भी इस्लाम के शैदाई बनकर ख़िदमत में हाज़िर हुए और इर्शाद फ़रमाया—

'तुम पर आज कोई इलज़ाम नहीं। अल्लाह तुम्हारा क़ुसूर माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।' (6 : 92)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ि० से फ़रमाया कि अबू सुफ़ियान को अभी मक्का वापस न जाने दो और सामने की पहाड़ी पर ले जाओ, ताकि वह मुसलमानों की ताक़त व शौकत का अन्दाज़ा कर सके।

अबू सुफ़ियान और हज़रत अब्बास पहाड़ी पर खड़े हुए इस्लामी लश्कर का नज़ारा कर रहे थे और मुहाजिरीन और अंसार क़बीलों के जुदा-जुदा लश्कर

अपने परचम लहराते हुए सामने से गुज़र रहे थे और अबू सुफ़ियान उनको देख-देख कर मुतास्सिर हो रहे थे कि अंसारी क़बीले का एक लश्कर पास से गुज़रा। उस लश्कर का झंडा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के हाथ में था। उन्होंने अबू सुफ़ियान को देखा तो जोश में आकर कहने लगे—

आज का दिन जंग का दिन है, आज काबा में जंग हलाल है। अबू सुफ़ियान की नस्ली अस्बियत फड़क उठी और कहने लगा 'ऐ अब्बास! लड़ाई का दिन मुबारक हो।

जब सब लश्कर इसी तरह गुज़र गए तो आख़िर में एक छोटी-सी जमाअत के साथ सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सामने से गुज़रे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के हाथ में झंडा था और आगे-आगे चल रहे थे। अबू सुफ़ियान की निगाह जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पड़ी तो उसने ख़िदमते अक़्दस में साद और अपने दर्मियान की बात-चीत का हाल सुनाया, यह सुन कर ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

'साद ने झूठ कहा (आज का दिन वह दिन है कि अल्लाह तआला उसमें काबा की अज़्मत को बुलन्द करेगा और काबे पर ग़िलाफ़ चढ़ाया जाएगा।)' और यह फ़रमा कर हज़रत साद को बरतरफ़ करके झंडे और फ़ौज की सरबराही हज़रत साद के बेटे को अता कर दी।

अब नबी अकरम ﷺ ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को हुक्म फ़रमाया कि तुम मक्का के निचले हिस्से की तरफ़ से दाख़िल होना और किसी को क़त्ल न करना, हां अगर कोई ख़ुद आगे बढ़े तो बचाव की इजाज़त है और ख़ुद मक्का के बुलन्द हिस्से से दाख़िल हुए। हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कुछ क़बीले के लोग टकराए, इसलिए उनके हाथों कुछ क़त्ल हो गए, लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिना किसी रुकावट के मक्का में दाख़िल हुए। (बुख़ारी)

जब मुर्रज़्ज़हरान में हज़रत अब्बास रज़ि० ने अबू सुफ़ियान को इस्लाम क़ुबूल करने के लिए ख़िदमते अक़्दस में पेश किया था, तो यह भी अर्ज़ किया था, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! अबू सुफ़ियान में फ़ख़्र का माद्दा है, इसलिए

इसको अगर कोई इम्तियाज़ी हैसियत नसीब हो जाए तो बेहतर हो।

आपने इर्शाद फ़रमाया, जो आदमी अबू सुफ़ियान के मकान में दाख़िल हो जाएगा, उसको अमान है।

ग़रज़ जब आप इज़्ज़त व इजलाल के साथ मक्का में दाख़िल हुए तो उस वक़्त यह एलान करा दिया—

1. जो मकान बन्द करके बैठ जाए, उसको अम्न है,
2. जो अबू सुफ़ियान के मकान में पनाह ले, उसको अमान है,
3. जो मस्जिदे हराम में पनाह ले, उसको अमान है।

अलबत्ता इस आम अमान और ज़बरदस्त माफ़ी के रवैए से कुछ ऐसी हस्तियों को अलग कर दिया जिन्होंने इस्लाम के ख़िलाफ़ बड़ा ज़हर फैलाया था और मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने में बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया था, मगर उनमें से अक्सर उस वक़्त छुप गए या फ़रार हो गए और धीरे-धीरे आम माफ़ी का फ़ायदा उठा कर मुसलमान हो गए।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक्का में इस शान से दाख़िल हुए कि आपका झंडा सफ़ेद रंग का था और उसमें बना उक़ाब काले रंग का था। सर पर मग़्फ़र ओढ़े और उस पर स्याह अ़मामा बांधे हुए थे और सूरः 'इन्ना फ़तहना' पढ़ते हुए आयतों को ऊंची आवाज़ से दोहराते जाते थे और तवाज़ो का यह आ़लम था कि अल्लाह के दरबार में ख़ुशूअ़-ख़ुज़ूअ़ के साथ ऊंटनी पर इस दर्जा झुके हुए थे कि मुबारक चेहरा ऊंटनी की पीठ को मस कर रहा था।

बुत-शिकनी

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए तो सबसे पहले आपने हुक्म फ़रमाया कि काबे से तमाम बुत निकाल कर फेंक दिए जाएं और दीवारों पर जो तस्वीरें नक़्श हैं, वे मिटा दी जाएं। चुनांचे जब तीन सौ साठ बुतों के टूटने का वक़्त आया तो दो मूर्तियां हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ؑ की इस हालत में सामने आईं कि उनके हाथों में बांसो के तीर थे। आपने देखकर फ़रमाया ख़ुदा उन मुश्रिकों को मारे, ये ख़ूब

जानते थे कि ये दोनों मुक़द्दस हस्तियां उस नापाक बात से मुक़द्दस और पाक थीं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काबे का तवाफ़ किया और फिर बुतों के सामने खड़े होकर लकड़ी से उनको चरका देते जाते और पढ़ते जाते थे, 'हक़ आ पहुंचा और बातिल उड़ गया और बातिल न किसी चीज़ को पैदा करे और न फेरकर लाए (यानी बातिल तो ख़ुद फ़ना होने के लिए है)

रहमतुल्लिल आलमीन की शान

काबा जब बुतों की नजासत और नापाकी से पाक कर दिया गया, तो नबी अकरम ﷺ काबे में दाख़िल हुए और उसके कोनों में घूमते हुए ऊंची आवाज़ से तक्बीरें कहते रहे और नमाज़ नफ़्ल अदा की, बाहर तश्रीफ़ लाए तो इब्राहीमी मुसल्ले पर जाकर नमाज़ अदा की। जब आप और सहाबा वुज़ू फ़रमा रहे थे तो मुश्रिक दांतों तले उंगली दबाए हैरान खड़े थे कि इस कामियाबी और कामरानी के बावजूद न फ़त्ह की कामरानी का जुनून है, न किब्र व नख़वत का इज़्हार, बल्कि दरबारे इलाही में बन्दगी के इज़्हार के लिए हर एक मुजाहिद बेताब नज़र आता है। बेशक यह 'बादशाही' नहीं है, बल्कि दूसरी ही कोई दुनिया है।

(तारीख़े इब्ने कसीर 3-256)

आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप हमारे लिए दो ख़िदमतें 'हिजाबा और सक़ाया' जमा फ़रमा दीजिए और काबा की कुंजी हमारे हवाले कर दीजिए, लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० के कई बार अर्ज़ करने का कोई जवाब न दिया और बार-बार यही फ़रमाया, उस्मान बिन तलहा कहां हैं? जब उस्मान हाज़िर हुए तो आपने काबा की कुंजी उनके हवाले करते हुए इर्शाद फ़रमाया, लो यह अपनी कुंजी आज का दिन भलाई और अह्द के वफ़ा का दिन है।'

नोट : यह वही उस्मान बिन तलहा हैं जिन्होंने, काबा की कुंजी तलब करने पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं दी थी, लेकिन

रहमतुल्लिल आलमीन के दरबार में बदला लेना बे-हक़ीक़त चीज़ थी, इसलिए आपने उन्हीं के ख़ानदान में यह सआदत बाक़ी रहने दी। यही ख़ानदान आज तक काबे का मुजाविर और शेबी के लक़ब से मशहूर है, क्योंकि हज़रत उस्मान बिन तलहा रज़ि० बनू शेबा में से थे।

अब लोग इन्तिज़ार में थे कि देखिए जिन मुश्रिकों ने वर्षों तक आपको और मुसलमानों को हर क़िस्म की तक्लीफ़ पहुंचाई, मुसीबतों में डाला, आज उनके साथ क्या मामला होता है?

आपने तमाम कुरैशी क़ैदियों को हाज़िर होने का हुक्म दिया, जब सब ख़िदमते अक़्दस में पेश हुए तो आपने मालूम किया, 'ऐ कुरैशी गिरोह! तुम्हारा क्या ख़्याल है कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह पेश आऊं? उन्होंने जवाब दिया, हम आपसे ख़ैर की उम्मीद रखते हैं।'

आपने यह सुनकर इर्शाद फ़रमाया, 'जाओ तुम सब आज़ाद हो।'

यह सुनना था कि न सिर्फ़ कुरैश बल्कि हर सोचने-समझने वाले के सामने यह हक़ीक़त रोशन हो गई कि बादशाह और पैग़म्बर की ज़िंदगी का इम्तियाज़ी निशान क्या है? पैग़म्बराना ज़िंदगी न ज़ाती अदावत व कदूरत को कोई वक़अत देती है और न उसका ग़ैज़ व ग़ज़ब नफ़्सानी ख़्वाहिश के ताबे होता है। एक नबी को अगर सब्र आज़मा हद तक तक्लीफ़ दी जाए और फिर तक्लीफ़ देने वाला आदमी रहम की तलब करे तो वह बेशक 'माफ़ी और करम' ही पाएगा और अच्छे अख़्लाक़ के हर पहलू का मुज़ाहरा देखेगा, चुनांचे इस दर्मियान में जब एक आदमी लरज़ता, कांपता आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मिठास भरे लेहजे में इर्शाद फ़रमाया, घबराओ नहीं, मैं कोई बादशाह नहीं हूं मैं तो सूखा गोश्त खाने वाली एक कुरैशी औरत ही का बेटा हूं। इसी रहम व माफ़ी का यह नतीजा निकला कि कुरैश के सरदार गिरोह दर गिरोह ख़िदमत में हाज़िर होते और इस्लाम की दौलत से मालामाल होकर सआदत हासिल कर लेते थे। चुनांचे हज़रत मुआविया रज़ि० और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के वालिद अबू क़हाफ़ा जैसे लोग उसी दिन मुसलमान हुए।

ख़ुत्बा

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर एक अहम ख़ुत्बा भी दिया जो इस्लाम के बहुत से हुक्मों की बुनियाद है। इस ख़ुत्बे के कुछ अहम एलान ये हैं–

1. मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम एक दूसरे के वारिस नहीं हो सकते।

2. मामलों और फ़ैसलों में मुद्दई के ज़िम्मे गवाहों का पेश करना और गवाहों के न होने पर मुद्दआ अलैह के ज़िम्मे हलफ़ उठाना है।

3. किसी औरत को तीन दिन का सफ़र बग़ैर महरम के दुरुस्त नहीं है।

4. सुबह और अस्र के बाद कोई नफ़्ल नमाज़ नहीं है और ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा के दिन रोज़ा जायज़ नहीं है।

5. ऐ क़ुरैश के गिरोह! बेशक अल्लाह तआला ने तुमसे जाहिलियत पर और बाप-दादा के नाम व नसब पर फ़ख़्र करने का ख़ात्मा कर दिया है। होशियार रहो कि तमाम इंसानी दुनिया आदम से है और आदमकी तख़्लीक़ मिट्टी से की गई है–

तर्जुमा– *'ऐ आदमियो! हमने तुमको बनाया एक नर और मादा से और रखी तुम्हारी ज़ातें, और गोतें ताकि आपस की पहचान हो, मुक़र्रर इज़्ज़त अल्लाह के यहां उसी की बड़ी जिसका अदब बड़ा। अल्लाह सब जानता है ख़बरदार।* (49 : 13)

फ़त्हे मक्का और क़ुरआन

सूरः 'फ़त्ह', 'हदीद' 'नस्र' इन तीनों सूरतों में अल्लाह तआला ने मक्का के फ़त्ह के बारे में इर्शाद फ़रमाए हैं, जैसे सूरः फ़त्ह में है–

तर्जुमा– *'तुममें बराबर नहीं हैं वे कि जिसने ख़र्च किया फ़त्हे मक्का के पहले और जिहाद किया। इन लोगों का दर्जा बड़ा है उनसे जो कि ख़र्च करें फ़त्हे मक्का के बाद और जिहाद करें और सबसे वायदा किया है अल्लाह ने ख़ूबी का।* (57 : 10)

और सूरः नस्र में है–

तर्जुमा— *'जब आ जाए अल्लाह की मदद और फ़त्हे मक्का और तुम देखो लोगों को कि वे अल्लाह के दीन में फ़ौज-फ़ौज करके दाखिल होने लगें।'*

(110 : 1-2)

यहां पूरी उम्मत एक राय है कि 'फ़त्ह' से मुराद फ़त्हे-मक्का है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० इमाम शाबी रह० से नक़ल फ़रमाते हैं—

'इन्ना फ़तहना ल-क फ़त्हम मुबीना' में 'फ़त्हे मुबीन' हुदैबिया-समझौता की तरफ़ इशारा है और 'फ़-ज-अ-ल मिन दूनि ज़ालि क-फ़त्हन क़रीबा' में 'फ़त्हे क़रीब' में से भी हुदैबिया समझौते के ही फल और नतीजे मुराद हैं और सूरः नस्र की आयत 'इज़ा जा-अ नस-रुल्लाहि वल-फ़त्हु' में नस्र व फ़त्ह से सबके नज़दीक 'फ़त्हे मक्का' मुराद है और इस नक़ल के बाद लिखते हैं—

'इन आयतों के मफ़हूम व मुराद में हुदैबिया-समझौता और मक्का जीत से मुताल्लिक़ जो अलग-अलग क़ौल पाए जाते हैं और मुश्किल पैदा करने की वजह बनते हैं, शाबी की इस तक़रीर से तमाम क़ौलों में मेल भी हो जाता है और इश्काल भी दूर हो जाता है।

सूरः फ़त्ह, नस्र और हदीद की ऊपर की आयतों में मुराद 'मक्का की फ़त्ह', है या हुदैबिया की सुलह इस बारे में अलग-अलग क़ौल और रिवायतें हैं और इमाम शाबी की तौजीह और उस पर हाफ़िज़े हदीस इब्ने हजर की ताईद व तस्दीक़ के पढ़ने के बाद भी हम यह कहने की जुर्रात कर सकते हैं कि सूरः फ़त्ह में 'फ़त्हे मुबीन', 'नसरुन अज़ीज़' और 'फ़त्हुनक़रीब' का ज़िक्र और फिर सूरः हदीद में अल्लाह के रास्ते के जिहाद और ख़र्च को अल-फ़त्ह के पहले और बाद के साथ दर्जों और फ़ज़ीलतों की तक़्सीम का तज़्किरा और फिर सूरः नस्र की एक आयत 'नसरुल्लाह वल फ़त्हु' में अन्नसरु वल फ़त्हु का इज्तिमाई ज़िक्र साफ़-साफ़ इस हक़ीक़त का एलान है कि इन जगहों पर ऐसे वाक़ियों का ज़िक्र है जिसकी शुरुआत जिहाद व क़िताल से होकर एक ऐसी फ़त्ह व नुसरत का नतीजा दे रही, जिसके बाद हिजाज़ की धरती हमेशा के लिए शिर्क व बुतपरस्ती से पाक हो जाए और ज़ाहिर है कि यह शरफ़ बेशक मक्का को ही हासिल है, अलबत्ता इसमें भी शुबहा नहीं कि सुलह हुदैबिया के वक़्त सूरः अल-फ़त्ह का नाज़िल होना और 'इन्ना फ़तहना-ल-क-फ़तहम

मुबीना' को बयान करने का अंदाज़ भी यह वाज़ेह करता है कि सुलह हुदैबिया चूंकि अपनी वज्हों और नतीजों और असरात (भावों के लिहाज़ से फ़त्हे मक्का का पेश-ख़ेमा और उसके लिए तम्हीद साबित हुई, इसलिए वह भी 'फ़त्ह मुबीन' (खुली जीत) कहलाने की हक़दार है, यानी वह वाक़िया 'फ़त्हे क़रीब', 'नस्र अज़ीज़' और 'अल-फत्ह', 'नस्र' की वजह हो वह यक़ीनन 'फ़त्हे मुबीन' कहलाने का हक़ रखता है।

हुनैन की लड़ाई

'फ़त्हे अ़ज़ीम' (भारी जीत) के बाद अरब के मुश्रिकों की शौकत और दबदबा का लगभग ख़ात्मा हो गया और अब अरब क़बीले गिरोह-दर-गिरोह इस्लाम में दाख़िल होने लगे, यह देखकर दो क़बीलों की जाहिलियत-हमीयत भड़क उठी और वे इस्लाम की तरक़्क़ी को बरदाश्त न कर सके—हवाज़िन और सक़ीफ़ इन दोनों क़बीलों के सरदारों की मीटिंग हुई और उन्होंने आपस में मश्विरा किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अपनी क़ौम (क़ुरैश) को मग़्लूब करके मुतमइन हो गए हैं, इसलिए अब हमारी बारी है। पस क्यों न हमीं पेशक़दमी करके मुसलमानों पर हमलावार हो जाएं और उनकी जड़ें उखाड़ दें। दोनों ने यह मंसूबा बांधा और मालिक बिन औफ़ नज़री को अपना बादशाह मान कर के हसद की आग को मुसलमानों के ख़ून से बुझाने की कोशिश की। मालिक ने बहुत से क़बीलों को अपने सांथ मिला कर जंग की तैयारी शुरू कर दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब यह मालूम हुआ तो सहाबा को जमा फ़रमाया और मश्वरों के बाद, बचाव के लिए तैयार होकर हुनैन को रवाना हो गए, उस वक़्त इस्लामी फ़ौज में बारह हज़ार जाँनिसार मौजूद थे। उनमें से दस हज़ार मुहाजिर व अंसार और मदनी जाँनिसार थे और दो हज़ार वे थे जो फ़त्हे मक्का के वक़्त मुसलमान हुए थे और अस्सी वे मुश्रिक (तुलक़ा) थे, जो इस्लाम न क़ुबूल करने के बावजूद रहमतुल-लिल-आलमीन के मुज़ाहरे देखकर ख़ुद अपनी ख़्वाहिश से मुसलमानों के जंग के साथी बन गए थे।

10 शव्वाल, 8 हिजरी मुताबिक़ फ़रवरी 630 ई० के जाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इस्लामी मुजाहिदों की क़ौम हुनैन जा पहुंची, आपने दुश्मन के मुक़ाबले में जब इस्लामी फ़ौज को सफ़ बनाने का हुक्म दिया तो मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अली रज़ि० को दिया और अंसार में से बनी ख़ज़रज का झंडा जनाब बिन मुंज़िर को बख़्शा और औस का उसैद बिन हुज़ैर को इनायत फ़रमाया और इसी तरह अलग-अलग क़बीलों के सरदारों को उनकी फ़ौज का झंडा थमा दिया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद भी हथियार सजे, दो ज़िरह (कब्च) पहने, ख़ूद सर पर रखे अपने मशहूर ख़च्चर पर सवार इस्लामी फ़ौज की कमान कर रहे थे।

अभी लड़ाई ने मरने-मारने की सूरत नहीं देखी थी कि मुसलमानों के दिलों में अपनी फ़ौज की भारी तायदाद और उसकी फ़रावानी इस दर्जा असर कर गई कि कुछ मुसलमानों की ज़ुबान से 'इन्शाअल्लाह' कहे बग़ैर ही अपनी ताक़त के घमंड पर यह निकल गया कि आज हमारी ताक़त को कोई नहीं हरा सकता।

मुसलमान, एक अल्लाह का पुजारी, एक ख़ुदा पर भरोसा करने के बजाए अपनी तायदाद की ज़्यादती पर घमंड करे, यह उसकी भूल है इसलिए ख़ुदा को मुसलमानों का यह घमंड पसन्द न आया और इसलिए उन पर यह सबक़ का कोड़ा लगा कि जब लड़ाई शुरू हुई और मुसलमानों की फ़ौज ने पेशक़दमी की तो अचानक दुश्मन की इन टोलियों ने जो गोरिल्ला जंग लड़ने के लिए पहाड़ की अलग-अलग घाटियों में घात लगाए बैठी थीं, हर तरफ़ से इस्लामी फ़ौज पर बारिश की तरह तीर चलाना शुरू कर दिया।

इस्लामी फ़ौज को इस भारी तीर-वर्षा की उम्मीद न थी, इसलिए उनकी सफ़ें डगमगा गईं और थोड़ी ही देर में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मशहूर मुहाजिर व अंसार सहाबा के अलावा तमाम बदवी क़बीलों और मदनी फ़ौज की अक्सरीयत ने भागने का रास्ता अख़्तियार किया।

नबी अकरम ﷺ इस हालत में भी यह रजज़ (जोश दिलाने वाले जुमले)

पढ़ते और बहादुरी का मुज़ाहरा करते जाते थे—

अनन्नबीयु ला कज़िब अनब्नु अब्दिल मुत्तलिब

(इसमें तनिक भी झूठ नहीं, मैं नबी हूं। मैं हूं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा)

ग़रज़ उसी वक़्त नबी अकरम ﷺ के इशारे पर हज़रत अब्बास रज़ि० ने ऊंची आवाज़ से भागते मुसलमानों को ललकारा, 'ऐ अंसार क़बीले के लोगो!' 'ऐ बैअ़ते रिज़वान के लोगो!'

हज़रत अब्बास रज़ि० की हक़ की आवाज़ गूंजी ही थी कि एक-एक मुसलमान अपनी हालत पर अफ़सोस करता हुआ पलट पड़ा और मिनटों में तमाम जाँनिसार नबी अकरम ﷺ के गिर्द जमा हो गए और बहादुरी से लड़ने लगे, नतीजा यह निकला कि हार जीत में तब्दील हो गई और अल्लाह के फ़ज़्ल व करम ने हार को 'जीत' से बदल दिया।

मुश्रिकों की जमाअ़त में एक मशहूर राय देने वाले दरीद बिन समद नामी शख़्स था। उसने मालिक के इस तरीक़े की ज़बरदस्त मुख़ालफ़त की थी कि मैदान में औरतों, बच्चों और माल व दौलत के ख़ज़ानों को साथ ले जाए, मगर मालिक ने उसकी राय पर अ़मल न किया और सबको साथ लाया था, चुंनाचे यह सब माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ लगा और मुश्रिकों की रही-सही ताक़त का भी ख़ात्मा हो गया।

बहुत से मुश्रिकों और उनके क़बीलों पर अगरचे इस्लाम की सच्चाई रोशन हो चुकी थी, मगर फिर भी वह अपने ख़्याल में माद्दी शौकत को सब कुछ समझते थे, चुनांचे मुसलमानों पर अल्लाह तआ़ला के इस फ़ज़्ल व करम को जब उन्होंने इस तरह देख लिया तो अब वे भी अपनी मर्ज़ी और चाव से इस्लाम की गोद में आ गए।

हुनैन की लड़ाई और क़ुरआन

हुनैन की लड़ाई में मुसलमानों का अपनी भारी तायदाद पर घमंड और उसके नतीजे में शुरू ही में हार और फिर अल्लाह के फ़ज़्ल से फ़त्ह व नुसरत का हाल क़ुरआन ने सूरः तौबा में अपने ख़ास अंदाज़ के साथ इस तरह बयान किया है।

तर्जुमा– 'बेशक अल्लाह बहुत मैदानों में तुम्हारी मदद कर चुका है और हुनैन के दिन (भी) जब तुम अपनी बड़ी तायदाद पर इतरा गए थे तो देखो वह बड़ी तायदाद तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन अपने पूरे फैलाव के बावजूद तुम पर तंग हो गई और आख़िरकार ऐसा हुआ कि तुम मैदान को पीठ दिखाकर भागने लगे, फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी ओर में दिल से सुकून व क़रार नाज़िल फ़रमाया और ऐसी फ़ौज उतार दी, जो तुम्हें नज़र नहीं आई थी और उन लोगों को अज़ाब दिया, जिन्होंने कुफ़्र की राह आख़्तियार की थी और जो कुफ़्र की राह अख़्तियार करते हैं, उनका बदला यही है। इसके बाद अल्लाह जिस पर चाहेगा, अपनी रहमत से लौट आएगा और अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला रहमत वाला है।'

(9 : 25-26-27)

तबूक की लड़ाई और तौबा के क़ुबूल होने का अजीब वाक़िया

तबूक शाम का एक मशहूर शहर है। सन् 9 हि० में सरदारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर मिली कि क़ैसरे रूम हिरक़्ल एक शानदार फ़ौज मुसलमानों पर चढ़ाई के लिए तैयार कर रहा है और कई लाख ज़ोरावर वालँटियर अब तक भर्ती हो चुके थे।

यह कड़ी आज़माइश का वक़्त था। सैकड़ों मील की राह, हवा के गर्म झोंके और तपती हुई रेत से वास्ता, मगर इस्लाम के फ़िदाकार, दुनिया के ऐश और मौसम की मुसीबतों से बेपरवा और बे-ख़ौफ़ होकर परवानावार इस्लाम पर निसार होने के लिए मदीना में जमा हो रहे थे।

नबी अकरम ﷺ का यह दस्तूर था कि जब किसी लड़ाई का इरादा फ़रमाते तो आम तरीक़े से यह ज़ाहिर न होने देते कि कहां का क़स्द है, ताकि दुश्मन सही हालात न पा सके लेकिन तबूक की लड़ाई में चूंकि सख़्त मौसम था, हिजाज़ में अकाल, हालात की नासाज़गारी और दुश्मन की ज़बरदस्त ताक़त का मुक़ाबला करना था, इसलिए इस कड़ी आज़माइश में ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरब के तमाम क़बीलों में असल हक़ीक़त का एलान करा दिया ताकि जो आदमी भी इस कांटे भरी वादी में क़दम रखे, सोच-समझ कर रखे।

माली मदद

ऊपर लिखे नाज़ुक हालात के पेशेनज़र यह पहली लड़ाई है जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुजाहिदों की माली मदद करने पर उभारा और बड़े-बड़े इस्लाम के जां-निसारों को अपनी माली फ़िदाकारी का सबूत देने के लिए मौक़ा दिया, चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० ने दस हज़ार दीनार सुर्ख़, तीन सौ ऊंट और पचास घोड़े पेश किए और ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके इस इख़्लास भरे जज़्बे पर यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ अल्लाह! तू उस्मान रज़ि० से राज़ी हो, इसलिए कि मैं उससे राज़ी हूं।'

हज़रत उमर रज़ि० ने अपना आधा माल पेश कर दिया, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने सौ औक़िया और हज़रत आसिम बिन अदी ने साठ वसक़ खजूरें पेश कीं और हज़रत अ़ब्बास व हज़रत तलहा ने सारी दौलत पेश की और औरतों ने भी अपने हौसले से ज़्यादा ज़ेवर पेश किए, यहां तक कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपना कुल माल ही इस्लाम पर क़ुरबान कर दिया। सिद्दीक़े अकबर रज़ि० जब अपना माल ले कर ख़िदमत में हाज़िर हुए तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मालूम किया, अबूबक्र! तुम अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़कर आए हो? अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, हां, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने घर में अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का नाम छोड़ आया हूं।'

ग़रज़ शानदार तैयारियों के बाद जब मुसलमानों का भारी लश्कर अल्लाह के कलिमे को बुलंद करने के लिए फ़िदाकाराना वलवले और जोश के साथ तबूक की तरफ़ बढ़ा, तो हिरक़्ल को भी जासूसों ने ख़बर कर दी। हिरक़्ल या तो भारी भरकम फ़ौज के साथ लड़ाई की तैयारियों में मश्ग़ूल था या यह ख़बर सुनते ही होश व हवास खो बैठा और 'रूमी' मुसलमानों के बेनज़ीर ईसार व फ़िदाकारी के जज़्बे से मुतास्सिर होकर और डर कर तबूक में मुसलमानों के पहुंचने से पहले ही बिखर गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रास्ते के कुछ ईसाई सरदारों को अम्न का परवाना देते और

समझौता करते हुए कामियाबी के साथ वापस आ गए।

बहाने बनाए

जब आप मदीना तशरीफ़ लाए तो मुनाफ़िक़ों ने इस शानदार आज़माइश में शरीक न होने के झूठे बहाने खोज कर ख़िदमते अक़्दस में रखा और ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम के जमाअती निज़ाम की मस्लहतों के पेशे नज़र उनसे दर-गुज़र फ़रमाया।

मगर उज़्र करने वाले ग्रुपों में तीन इस्लाम के मुख़्लिस लोग भी थे और वे थे काब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मुरारा बिन रुबैअ जैसी हस्तियां थीं।

उन्होंने मुनाफ़िक़ों की तरह हाज़िर होकर झूठ से काम नहीं लिया और साफ़-साफ़ अर्ज़ कर दिया, ऐ दीन व दुनिया के बादशाह! मैं चाहता तो मुनाफ़िक़ों की तरह कोई झूठा उज़्र पेश करके आपकी पकड़ से बच जाता लेकिन अगर किसी दुनियादार से ऐसा मामला पेश आता तो कर भी लेता मगर ख़ुदा के नबी के साथ ऐसा नहीं कर सकता। सच बात यह है कि मैं सिर्फ़ अपनी काहिली की वजह से जिहाद से महरूम रहा। हर दिन यह ख़्याल करता रहा कि आज अपने बाग़ों के लुत्फ़ से और सैर हो लूं, कल ज़रूर रवाना हो जाऊंगा और इस्लाम की फ़ौज को एक दो मंज़िल ही पर जा पकड़ूंगा। आख़िरकार इस काहिली का नतीजा महरूमी की शक्ल में ज़ाहिर हुआ, अब जो हुक्म हो उसके लिए हाज़िर हूं। यही हिलाल और मुरारा ने कहा और इस तरह तीनों मुज्रिमों की तरह अल्लाह के रसूल ﷺ का हुक्म सुनने के लिए कान लगा लिए।

सोशल बाइकाट (Social Boycott)

ये तीनों इस्लाम के फ़िदाई, ख़ुलूस के पैकर और रसूल सल्ल० के आशिक़ थे, इसलिए इसका मामला मुनाफ़िक़ों जैसा नहीं था कि वे जमाअती निज़ाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर गुज़रें और जिहाद जैसे मिल्लत के बहुत बड़े रुक्न को सिर्फ़ काहिली और सुस्ती पर क़ुरबान कर दें और फिर उनको मामूली

माज़रत पर माफ़ कर दिया जाए। इसलिए ज़रूरत थी कि इस मामले में ऐसा फ़ैसला दिया जाए कि आगे किसी मुख़्लिस मुसलमान को ऐसी ग़लतफ़हमी और निज़ाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी की जुर्रात न हो सके। चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया 'तुमने सच-सच बात कह दी, अब जाओ और ख़ुदा के फ़ैसले का इंतिज़ार करो।'

तीनों इस हुक्म के बाद घर वापस आ गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम सहाबा को हुक्म फ़रमा दिया कि इन तीनों से कलाम व सलाम सब तर्क कर दिया जाए। चुनांचे तमाम मुसलमानों ने उनका सोशल बाईकाट कर दिया।

नज़्म व ज़ब्त की ज़ोरदार मिसाल

हज़रत काब ख़ुद फ़रमाते हैं कि इस वाक़िए ने हम तीनों पर जो कुछ असर किया, उसका अंदाज़ा दूसरा कोई नहीं कर सकता, मेरे दोनों साथियों पर तो इस दर्जा असर पड़ा कि उन्होंने बाहर निकलना ही छोड़ दिया, मगर मैं सख़्त जान था, बराबर नमाज़ों के वक़्तों में मस्जिदे नबवी में हाज़िर होता रहा।

जब मैं मस्जिद में हाज़िर होता तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करता और देखता रहता कि मुबारक लब को हरकत हुई या नहीं, मगर बदक़िस्मती और महरूमी के सिवा कुछ न पाता। अलबत्ता यह महसूस करता था कि जब मैं नमाज़ में मश्ग़ूल होता तो आप मेरी जानिब देखते रहते और जब मैं फ़ारिग़ होकर आपकी जानिब मुतवज्जह होता तो मेरी तरफ़ से मुबारक रुख़ फेर लेते।

लेकिन इस पूरे वाक़िए में मुसलमानों की इस्लाम दोस्ती और अल्लाह के रसूल सल्ल० के हुक्म पर ज़बरदस्त जमाव का यह हाल था कि जब मैं लोगों की इस सख़्ती से उकता गया तो एक दिन अपने सबसे महबूब अज़ीम और चचेरे भाई अबूक़तादा के पास गया, उस अबूक़तादा के पास, जो इससे पहले मुझ पर जान छिड़कता था और मेरा आशिक़ व जांनिसार था। मैंने उसको सलाम किया, मगर ख़ुदा की क़सम, उसने कोई जवाब न दिया। मैं इस हालत

को देखकर तड़प गया और अबूक़तादा से कहा, अबूक़तादा! मैं ख़ुदा की क़सम देकर तुझ से मालूम करता हूं, क्या तुझे मालूम नहीं कि मैं अल्लाह और उसके रसूल को दोस्त रखता हूं और मैं अल्लाह और रसूल का आशिक़ हूं? अबूक़तादा फिर भी ख़ामोश रहा और कोई जवाब नहीं दिया। मैंने दो बार फिर इस बात को दोहराया, मगर उसने चुप्पी साध ली और कोई जवाब न दिया। आख़िर जब तीसरी बार कहा, तो सिर्फ़ यह कहकर चुप हो गया, 'ख़ुदा और रसूल ही ख़ूब जानता है।'

यह सुनकर मुझसे ज़ब्त न हो सका और मेरी आंखें डबडबा आईं कि अल्लाहु अकबर यह इंक़िलाब! और यहीं तक मामला ख़त्म नहीं हुआ, बल्कि चालीस दिन गुज़रने पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि इन तीनों की बीवियों को भी चाहिए कि शौहरों का बॉइकाट करके अलग हो जाएं। चुनांचे इन अल्लाह की बंदियों ने हमारे साथ दिली ताल्लुक़ के बावजूद रसूल के हुक्म को मुक़द्दम समझा और अपने मैके चली गईं, अलबत्ता हिलाल बिन उमैया की जीवन-साथी ने दरबारे रिसालत में जाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हिलाल बूढ़े हैं, उनकी ख़िदमतगुज़ार सिर्फ़ मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं अगर वे मेरी ख़िदमत से महरूम हो गए तो उनकी हलाकत का अंदेशा है, अब क्या हुक्म?

तब आपने फ़रमाया, 'ख़िदमत करती रहो, बाक़ी ताल्लुक़ात को अभी रोक दो।' यह सुनकर उसने सर झुका दिया। बात मान ली और इसके बावजूद कि शौहर और बीवी या अज़ीज़ों और रिश्तेदारों के दर्मियान कोई दूसरा मौजूद नहीं होता था, तब भी क्या मजाल कि एक लम्हे के लिए भी किसी ने रसूल के हुक्म से हटने की जुर्रात की हो, अल्लाह! अल्लाह! यह है सच्ची शाने इताअत ख़ुदा और रसूल की!

रसूल के इश्क़ और इस्लाम की सच्चाई का हैरत में डाल देने वाला मेयार

काब बिन मालिक रज़ि० का चालीस दिन से लगातार समाजी बाइकाट है। ग़ैरों का ज़िक्र ही क्या, क़रीबी अज़ीज़ व रिश्तेदार, यहां तक कि

जीवन-साथी भी इस्लाम और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म पर परवानावार निसार होते हुए काब का बाइकाट किए हुए हैं, गोया इस तरह काब पर ख़ुदा की ज़मीन तंग हो गई है। वह इस मायूसी और हैरानी की हालत में मदीना के बाज़ार से गुज़र रहे हैं कि अचानक शाम का एक नबती पुकारता हुआ नज़र आया, मुझको कोई काब बिन मालिक तक पहुंचा दे।'

लोगों ने हाथ के इशारे से बताया कि काब यह जा रहे हैं, नबती आगे बढ़ा और काब की राह रोक कर उनकी खिदमत में एक ख़त पेश किया। काब ने पढ़ा तो शाहे ग़स्सान का ख़त था, उसमें लिखा था—

अम्मा बाद! मुझको मालूम हुआ है कि तुम्हारे साथी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तुम पर बड़ा ज़ुल्म कर रखा है। ख़ुदा ने तुम जैसी हस्ती को इस ज़िल्लत और बरबादी के लिए नहीं बनाया, पस तुम फ़ौरन यहां चले आओ, हम तुम्हारी ख़ातिरख़्वाह इज़्ज़त करेंगे। (फ़त्हुलबारी)

हज़रत काब रज़ि० फ़रमाते हैं, ख़त पढ़ते ही मुझको सख़्त रंज व मलाल हुआ और मैंने दिल में कहा कि यह आज़माइश व बला पहली आज़माइश से भी ज़्यादा कठिन है। मैं और शाहे ग़स्सान को मेरे बारे में यह गुमान कि इस इम्तिहान से घबरा कर उसके पास भाग जाऊं और ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल से मुंह मोड़ लूं। आह, यह बहुत ही तक्लीफ़ देने वाली सूरतेहाल है। बहरहाल शाहे ग़स्सान की इस ज़लील हरकत पर मुझे ऐसा गुस्सा आया कि मैं एक तन्नूर के सामने पहुंचा और उसके ख़त को उसमें झोंक कर नबती से कहा, यह है तेरे बादशाह के ख़त का जवाब और मैं ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर बेचैनी के साथ अर्ज़ करने लगा, शाहे हर दूसरा, आख़िर यह एराज़ (मुंह फेरना) क्यों इस दर्जे को पहुंच गया कि अब मुश्रिक भी मुझे फुसलाने की जुर्रात करने लगे।

ग़रज़ इसी तरह पचास रातें गुज़र गईं और हमारी महरूमी की गिरह न खुली और अल्लाह के इर्शाद के मुताबिक़ ख़ुदा की ज़मीन फैली होने के बावजूद हम पर तंग हो गई और अपनी जान वबाल नज़र आने लगी कि यकायक सुबह की नमाज़ के बाद सलअ् की चोटी पर से एक पुकारने वाले

ने पुकारा, 'ऐ काब! बशारत हो।'

मैं तो हालत में इन्क़िलाब आने के इंतिज़ार में ही था, फ़ौरन समझ गया कि अल्लाह के दरबार में तौबा क़ुबूल हो गई। अब क्या था मारे ख़ुशी के फूला न समाया और वहीं सज्दे में गिर गया।

अब गिरोह-दर-गिरोह लोग आ रहे हैं और तौबा के क़ुबूल होने की ख़ुशख़बरी सुना रहे हैं और जीवन-साथी की तरफ़ से भी मुबारकबाद पेश की जा रही है। सबसे पहले जिस आदमी ने मुझसे तौबा क़ुबूल करने की तफ़्सील से ख़ुशख़बरी सुनाई, वह एक सवार था। मैंने इंतिहाई ख़ुशी में जो कपड़े पहने हुए था, उतार कर उसको दे दिए। ख़ुदा की शान कि मेरे पास और कपड़े भी नहीं थे, इसलिए उधार मांग कर पहने और रसूल सल्ल० के दरबार में हाज़िर हुआ, राह में भी लोगों का तांता बंधा हुआ था और मुझ पर मुबारकबादियों और ख़ुशख़बरियों के फूल बरसाए जा रहे थे। रसूल ﷺ के दरबार में पहुंचा, तो आंहज़रत सल्लम आगे बढ़े और मुझसे मुसाफ़ा किया और मुबारकबाद पेश की। इसी ख़ुशी के साथ मैं ने आपके चेहरे पर नज़र डाली तो देखा कि मुबारक चेहरा मारे ख़ुशी के बिजली की तरह चमक रहा है, मुस्कराते हुए इर्शाद फ़रमाया, इस मुबारक दिन में बशारत हासिल कर, तेरी पैदाइश से आज तक इससे बेहतर कोई दिन नहीं आया।'

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! तौबा का यह क़ुबूल होना आपकी तरफ़ से है या अल्लाह की तरफ़ से?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, 'मेरी तरफ़ से नहीं, ख़ुदा की तरफ़ से है।'

आपने यह जवाब दिया और रुख़े अनवर चांद की तरह रोशन नज़र आने लगा। मैं ने ख़ुश होकर कहा, 'ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! तौबा के मेरे क़ुबूल होने का एक हिस्सा यह भी हो जाए कि मैं अपना कुल माल अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर दूं।'

आपने इर्शाद फ़रमाया, 'बेहतर यह है कि कुछ हिस्सा अपने लिए रख लो।'

मैंने अर्ज़ किया, ख़ैबर का जो हिस्सा मेरे पास है उसे रोके लेता हूं। मैंने यह भी अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! यह सच्चाई का सदक़ा है कि

आज बेपनाह माल से मालामाल हूं इसलिए अह्द करता हूं कि उम्र भर सच कहने के अलावा मेरा शिआर कुछ न होगा।'

हज़रत काब फ़रमाते हैं, मेरे इस मामले में रंज व ग़म के हर दो साथी का भी ख़ुशी में यही हाल हुआ और हमारी तौबा क़ुबूल होने पर जो फ़ज़्ल की आयतें उतरी थीं, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे सामने उनकी तिलावत फ़रमाई।

तौबा का क़ुबूल होना और सूरः तौबा

तर्जुमा—*'बेशक अल्लाह अपनी ख़ुशी से नबी पर मुतवज्जह हो गया और मुहाजिरों और अंसार पर भी, जिन्होंने बड़ी तंगी और बेसर व सामानी की हालत में उसके पीछे क़दम उठाया और उस वक़्त उठाया कि क़रीब था उनमें से एक गिरोह के दिल डगमगा जाएं, फिर वह अपनी रहमत से उन सब पर मुतवज्जह हो गया, बेशक वह मुहब्बत रखने वाला रहमत करने वाला है और उन तीन आदमियों पर भी (अपनी रहमत के साथ रुजू हुआ जो लटकी हालत में छोड़ दिए गए थे, यहां तक कि नौबत यह आई कि) ज़मीन अपने तमाम फैलाव के बावजूद उन पर तंग हो गई थी और वे ख़ुद भी अपनी जान से तंग आ गए थे और उन्होंने जान लिया था कि अल्लाह से भाग कर उन्हें कोई पनाह नहीं मिल सकती, मगर ख़ुद उसी के दामन में, पस अल्लाह उन पर अपनी रहमत के साथ लौट आया, ताकि वह रुजू करें। बेशक अल्लाह ही बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है, बड़ा ही रहमत वाला, ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज़ करो, डरते रहो और सच्चों का साथ अख़्तियार करो।'*

(9 : 117-119)

क़ुरआन और तबूक की लड़ाई

क़ुरआन ने सिर्फ़ इसी वाक़िया का ज़िक्र नहीं किया, बल्कि तबूक की लड़ाई की अहमियत के पेशे नज़र उसकी बहुत-सी तफ़्सील बयान की और इस सिलसिले में पंद और नसीहत के ज़रिए मुसलमानों की रुश्द व हिदायत का सामान जुटाया है। चुनांचे इस सूरः में छठे रुकूअ् से लेकर आख़िर सूरः तक इसी लड़ाई और लड़ाई से मुताल्लिक़ हालात और नसीहतों का ज़िक्र है।

अहम लड़ाइयां और नतीजे और नसीहतें

ग़ज़वा बदरुल-कुबरा

1. जीत-हार की बुनियाद तायदाद की कमी-ज़्यादती नहीं है, बल्कि सिर्फ़ उसके फ़ज़्ल व करम पर है।

2. जो जमाअ़त फ़र्ज़ के एहसास के साथ अ़द्ल व इंसाफ़ के लिए मैदान में निकलती है, वह कभी नाकाम नहीं होती और ख़ुदा की मदद का पैग़ाम उसी को नसीब होता है।

3. बशरी तक़ाज़े के पेशेनज़र अपनी जान से ख़ौफ़ व हरास मलामत के क़ाबिल नहीं है और अल्लाह ज़रूर उससे जमाव देता है।

4. सब्र तल्ख़ अस्त वले बर शीरीं दारद—

आज भी हो जो इब्राहीम का ईमां पैदा
आग कर सकती अंदाज़े गुलिस्तां पैदा

उहुद की लड़ाई

1. जिहाद मुख़्लिस व मुनाफ़िक़ की मारफ़त के लिए बेनज़ीर कसौटी है।

2. अमीर, ख़लीफ़ा और उसके नायबों का फ़र्ज़ है कि अहम मामलों में मुसलमानों से मश्विरा कर लें और सब एक राय होकर या अक्सरीयत से जो फ़ैसला हो, उसी को अपना अ़ज़्म बनाएं।

3. तमाम मामलों में आमतौर से और जिहाद व मैदान में ख़ासतौर से ज़ब्त व नज़्म अहम है। अगर किसी जमाअ़त में यह न हो तो सच्ची जमाअ़त का कामियाब होना मुश्किल है।

4. जिहाद के मैदान में मुनाफ़िक़ और कमज़ोर अंगों का जुदा रहना ही फ़ायदे और कामियाबी के लिए बहुत ज़रूरी है।

अहज़ाब की लड़ाई

1. यह भाईचारा और बराबरी का एक शानदार और बेमिसाल इल्मी व अ़मली नक़्शा है।

2. हर ज़माने में वक़्त की तरक़्क़ी वाले दुनिया के साधनों को हक़ के मामले की हिमायत के लिए अख़्तियार करना और अपनाना इस्लाम से हटना नहीं, बल्कि बेहतरीन इस्लामी ख़िदमत है, बशर्ते कि वे सब साधन इस्लामी उसूल व अहकाम से टकराते न हों।

3. जिहाद इस्लाम का इतना शानदार मेम्बर है और उसके बाक़ी रखने और हिफ़ाज़त के लिए ऐसा अहम फ़रीज़ा है कि फ़र्ज़ के इस अदा करने में लगा रहने में नबी अकरम ﷺ और सहाबा किराम रज़ि० का नमाज़ जैसा फ़रीज़ा क़ज़ा हो गया और आपने और सहाबा ने अस्र की नमाज़ मग़रिब के वक़्त अदा फ़रमाई। अगरचे जिहाद के वक़्त भी अल्लाह की इबादत से ग़ाफ़िल नहीं रखा गया और क़ुरआन ने 'ख़ौफ़ की नमाज़' का रास्ता निकाल कर नमाज़ की अहमियत वाज़ेह कर दी है।

4. लड़ाई में ऐसे तरीक़े अख़्तियार करना सही हैं, जिनमें झूठ और वायदा-ख़िलाफ़ी जैसी नापसन्दीदा बातों का दख़ल न होते हुए दुश्मन को बग़ैर लड़ाई ही के नुक़्सान व हार का मुंह देखना पड़ जाए।

मक्का की फ़त्ह

1. जब किसी ग़ैर-मुस्लिम ताक़त से समझौता कर लिया जाए तो समझौते की मुद्दत को अपनी तरफ़ से पूरा करना इस्लामी ज़िम्मेदारी है। अलबत्ता अगर दूसरी तरफ़ से ख़िलाफ़वर्ज़ी हो, तो मुसलमान ज़िम्मेदारी से अलग हैं।

2. फ़त्हे मक्का की ख़ास बात यह है कि वह ताक़त के ज़ोर पर फ़त्ह होने के बावजूद ख़ूंरेज़ी से बचा रहा।

3. दुनिया के शहंशाह और नबी-ए-रहमत के दर्मियान अगर फ़र्क़ और इम्तियाज़ मालूम करना हो तो फ़त्हे मक्का उसके लिए रोशन दलील है।

4. काफ़िर व मुश्रिक गिरोह अगर इस्लामी ताक़त का हलीफ़ (मित्र) बनना चाहे, तो मुस्लिम मुफ़ाद को सामने रखकर उसको हलीफ़ बनाया जा सकता है, बल्कि कुछ हालात में उसको हलीफ़ बनाना बहुत ही ज़रूरी है।

हुनैन की लड़ाई

1. जीत और हार का मदार हर हालत में तायदाद की ज़्यादती पर नहीं, बल्कि अल्लाह की मदद के साथ जुड़ा रहना चाहिए।

2. अगर इस्लाम और मुसलमान के फ़ायदे का तक़ाज़ा हो तो एक ग़ैर मुस्लिम ताक़त के मुक़ाबले में दूसरी ग़ैर मुस्लिम ताक़त या ग़ैर मुस्लिम जमाअ़त का मेल और मदद हासिल करना बेशक दुरुस्त और सही है।

तबूक

1. इस्लामी मुफ़ाद के पेशेनज़र जब आम जिहाद का एलान हो जाए तो फ़र्ज़ के अदा करने के मुक़ाबले में हर क़िस्म की मुश्किलें ख़त्म हो जानी चाहिए।

2. आम जिहाद के मौक़े पर माली मदद भी जिहाद ही का अहम शोबा है।

3. मुनाफ़िक़ों का जिहाद में शिर्कत न करना ही फ़ायदेमंद है। अलबत्ता अगरचे ख़ुलूस वाले लोग ऐसे मौक़े पर नजरें चुरा जाएं तो माफ़ न करने वाला जुर्म है, जब तक कि वे तौबा न कर लें।

4. इस्लामी हुक्मों की खुली ख़िलाफ़वर्ज़ी पर मुसलमानों के किसी मुस्लिम फ़र्द या मुस्लिम जमाअ़त के ख़िलाफ़ सोशल या समाजी बाइकाट दुरुस्त है, बल्कि कुछ अहम और नाज़ुक हालात के पेशेनज़र कभी भी वाजिब हो जाता है।

हुदैबिया का वाक़िया

1. इस्लामी इज्तिमाई मस्लहतें अगर तक़ाज़ा करें तो ख़लीफ़ा और अमीरुल मोमिनीन को अख़्तियार है कि वह कुफ़्फ़ार व मुश्रिकों से ऐसी सुलह करे जो देखने में हारी हुई नज़र आती हो, मगर गहरी नज़र और सूझ-बूझ का यह फ़त्वा हो कि नतीजे के लिहाज़ से यह मुसलमानों के हक़ में बेहतर साबित होगी।

2. मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के

हुक्मों को हर मामले में नमूना बनाए और अपनी सूझ-बूझ पर भरोसा करके उनके ख़िलाफ़ करने पर तैयार न हो जाए।

3. 'वायदा तोड़ने' को ग़लत समझे और यक़ीन करे कि वायदे की पाबन्दी न करने वाला, न दुनिया में इज़्ज़त का मालिक हो सकता है और न आख़िरत में उसको फ़लाह नसीब हो सकती है।

4. हुदैबिया के समझौते ने यह साफ़ कर दिया कि मुस्लिम क़ौम अख़्लाक़ व आमाल और किरदार व गुफ़्तार, बल्कि ज़िंदगी के हर शोबे में सच्चा, इंसाफ़पसंद, हक़पसंद और हक़-आगाह है और उसकी जमाअ़ती और इंफ़िरादी ज़िंदगी के वक़्त का दर्जा तमाम क़ौमों और मिल्लतों से बुलंदतर है।

गोद लेकर बेटा बनाना

जाहिलियत की रस्मों में से एक रस्म 'तबन्ना' भी है। यह रस्म किसी न किसी शक्ल में हर मुल्क में पाई जाती रही है, बल्कि हिंदुओं में आज भी मौजूद है। यह रस्म हसब-नसब से ताल्लुक़ और समाजी निज़ाम, दोनों लिहाज़ से ख़राब और फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। इस रस्म के ख़त्म करने के लिए अल्लाह तआला ने जिस वाक़िए को चुना, वह इस तरह है—

हज़रत ज़ैद रज़ि०

हज़रत ज़ैद बिन हारिस बिन शुरहबील अरब के इज़्ज़तदार क़बीला बनी कलब के एक आदमी थे और एक हादसे की वजह से बचपन ही में ग़ुलाम बना लिए गए और उकाज़ के बाज़ार में हज़रत ख़दीजा रज़ि० के भतीजे हकीम बिन हिज़ाम ने उनको अपनी फूफी के लिए ख़रीद लिया। ख़दीजा रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जीवन-साथी होने के बाद उनको हुज़ूरे अक़्दस की ख़िदमत में हिबा कर दिया। नबी करीम सल्ल० ने उनको आज़ाद कर के अपना बेटा बना लिया और उसी दिन से लोग बाग ज़ैद को इब्ने मुहम्मद कहने लगे। इत्तिफ़ाक़ की बात कि बनी कलब के कुछ लोग हज की नीयत से मक्का आए तो ज़ैद को पहचान लिया। ज़ैद के बाप हारिसा और उनके भाई काब को जब यह मालूम हुआ तो वह मक्का आए और हुज़ूरे

अक़्दस की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, अब ज़ैद को हमारे हवाले कर दीजिए और फ़िदए की रक़म ले लीजिए।

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, 'इससे बेह्तर यह बात है कि ज़ैद आ जाए और उसके सामने ये दोनों शक्लें रख दी जाएं, वह तुम्हारे साथ जाना क़ुबूल करता है या मेरे साथ रहना चाहता है और जो उसकी मर्ज़ी हो, उस पर हम भी राज़ी हो जाएं।'

हारिसा ख़ुशी-ख़ुशी इस पर राज़ी हो गए, क्योंकि वह यक़ीन रखते थे कि बेटा बहरहाल बाप ही को तर्जीह देगा। चुनांचे ज़ैद बुलाए गए। ज़ाते अक़्दस ﷺ ने मालूम किया, इनको पहचानते हो?

ज़ैद ने कहा, 'क्यों नहीं, यह मेरे वालिद हैं और यह मेरे चचा हैं।'

आपने फ़रमाया, 'ये लेने आए हैं। अब तुम मुख़्तार हो, इनके साथ चले जाओ या मेरे पास रहो।'

ज़ैद ने अर्ज़ किया, 'मैं आप पर किसी को तर्जीह नहीं दे सकता। मेरे बा५-चचा जो कुछ भी हैं, आप ही हैं।'

हारिसा ने यह सुना तो रंज व तक्लीफ़ के साथ कहा, 'ज़ैद! किस क़दर अफ़सोस है तुझ पर कि ग़ुलामी को आज़ादी पर और बाप-दादा और ख़ानदान पर अजनबी को तर्जीह दे रहा है।'

ज़ैद ने कहा, 'इस हस्ती के साथ रह कर मेरी आंखों ने जो कुछ देखा है, उसके बाद मैं दुनिया और उसकी हर चीज़ को उसके सामने हेच समझता हूं।'

तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिसा और हाज़िरीन को बतलाया कि मैं ने ज़ैद को आज़ाद कर दिया है। अब वह मेरा ग़ुलाम नहीं, बल्कि बेटा है। हारिसा ने यह सुना तो बहुत ख़ुशी ज़ाहिर की और बाप और चचा दोनों मुतमइन वापस हो गए और कभी-कभी आकर देख जाते और आंखें ठंडी कर लिया करते थे।

तिर्मिज़ी की एक मुख़्तसर रिवायत में हारिसा की जगह उसके दूसरे बेटे हबला के आने और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ऊपर की बातचीत का ज़िक्र हुआ है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद की मज़ीद क़द्रअफ़ज़ाई के लिए उनका निकाह अपनी दूध पिलाई उम्मे ऐमन के साथ कर दिया, जिसके पेट से हज़रत उसामा पैदा हुए और उसके बाद इरादा किया कि उनकी शादी अपनी फुफेरी बहन ज़ैनब बिन्त जहश के साथ कर दें। यह हाशमी ख़ानदान की बेटी और आपकी फूफी उमैया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब की बेटी थीं, इसलिए ज़ैनब और ज़ैनब के भाई इस निकाह पर राज़ी नहीं थे, तब अल्लाह की वह्य ने नाज़िल होकर यह हुक्म दिया कि जिस बात का हुक्म अल्लाह और उसका रसूल दे, फिर उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी किसी के लिए जायज़ नहीं है।

तर्जुमा—'जब अल्लाह और उसका रसूल ﷺ कोई फ़ैसला कर दे, तो फिर किसी मोमिन मर्द और औरत को उनके मामले में कोई अख़्तियार बाक़ी नहीं रहता और जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे, बेशक वह खुली गुमराही में पड़ गया। (33-36)

वह्य के नाज़िल होने पर हज़रत ज़ैनब और उसके भाइयों ने आपके फ़ैसले के सामने सर झुका दिया और इस तरह आपने ख़ानदान से ही अमली तौर पर नसब पर फ़ख़्र करने की जड़ काट दी, ताकि आपका अमल नमूना बने।

हज़रत ज़ैद रज़ि० का सबसे बड़ा शरफ़ यह है कि क़ुरआन में उनका नाम खुलकर आया है। यह शरफ़ रसूल ﷺ के किसी सहाबी को नसीब नहीं हुआ।

बेटा बनाने की रस्म की रोक-थाम

हज़रत ज़ैद रज़ि० और हज़रत ज़ैनब रज़ि० अगरचे निकाह-बंधन में जकड़े हुए थे, लेकिन हज़रत ज़ैनब रज़ि० का यह फ़ितरी रुझान मिट न सका कि वह क़ुरैशी हाशमी हैं और उनका शौहर आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम। इसी तरह हज़रत ज़ैद को यह फ़ख़्र हासिल था कि वह बहरहाल अरब के मुअज़्ज़ज़ क़बीले के फ़र्द और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह बोले बेटे हैं और ज़ैनब रज़ि० पर उनको क़व्वाम (सरदार) होने का शरफ़ हासिल है।

चुनांचे इन आपसी टकराव वाली ज़ेहनियतों ने उनके आपस में मुहब्बत का रिश्ता क़ायम न होने दिया और आख़िरकार ज़ैद इस पर तैयार हो गए कि हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे दें। हज़रत ज़ैद ने कई बार इस इरादे का ज़िक्र हुज़ूरे अक़्दस से किया, लेकिन आप ने यह समझ कर कि शायद देर या मुद्दत का ज़्यादा हो जाना मुहब्बत के बढ़ने की वजह बने, ज़ैद को तलाक़ देने से रोका।

हज़रत ज़ैद और हज़रत ज़ैनब रज़ि० की नाचाक़ी ने अब सूरतेहाल बदल दी और अल्लाह की वह्य ने यह फ़ैसला कर दिया कि वक़्त आ गया है कि अब बेटा बनाने की बुरी रस्म ख़त्म कर दी जाए और जिस तरह हसब-नसब के फ़ख़्र के पहलू को अपने ख़ानदान ही में सबसे पहले तोड़ा, उसी तरह इसकी शुरूआत भी ख़ुद ज़ाते अक़्दस के ही अ़मल से हो और यह इस तरह कि ज़ैद रज़ि० जब तलाक़ दे दें तो फिर ज़ैनब रज़ि० का निकाह आप से हो जाए, क्योंकि इससे एक तरफ़ ज़ैनब और उनके ख़ानदान को जो सदमा पहुंचे, उसे दूर किया जा सके और दूसरी ओर गोद लिए बेटे की बुरी रस्म की रोक-थाम हो सके।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब वह्य इलाही ने यह नक़्शा बतलाया, तो एक बशर होने के नाते आपके दिल में यह जज़्बा पैदा हुआ कि ज़ैद अगर ज़ैनब को तलाक़ न दें तो अच्छा है ताकि ज़ैनब के ख़ानदान को भी तौहीन महसूस न हो और मैं भी मुनाफ़िक़ों और मुश्रिकों के इस ताने से बचा रहूं कि वे यह कहेंगे, मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने बेटे की बीवी को अपनी बीवी बना लिया, हालांकि दूसरों के लिए बेटे की बीवी को हराम बताते हैं। चुनांचे आप बराबर ज़ैद को तलाक़ से बाज़ रखते रहे, मगर जब किसी तरह आपस में निभ न सकी तब ज़ैद ने तलाक़ दे ही दी और इद्दत गुज़रने पर ख़ुदा का हुक्म हुआ कि अब आप ज़ैनब रज़ि० को अपनी बीवी बनाएं ताकि आगे मुंह बोले बेटे की रस्म का ख़ात्मा हो और मुसलमानों के समाज में यह तंगी न पैदा हो सके कि मुंहबोले बेटे की बीवी के निकाह को सुलबी बेटे की बीवी की तरह हराम समझा जाए और साथ ही अल्लाह तआ़ला की वह्य ने यह भी वाज़ेह कर दिया कि ख़ुदा जो फ़ैसला कर चुका

है वह तो ज़ाहिर होकर ही रहेगा और तुम्हारे बशरी ख़ौफ़ से वह टलने वाला नहीं है और सच भी यह है कि अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में इंसानी समाज का डर बिल्कुल बेकार की बात है।

कुरआन ने मुंह बोले बेटे की रोकथाम के मामले को दो हिस्सों में बांट दिया है कि एक ज़ेहनी व इल्मी इंक़िलाब और दूसरा अ़मली, चुनांचे ज़ेहनी इस्लाह व इंक़िलाब के लिए नीचे लिखी आयतें नाज़िल फ़रमाईं—

तर्जुमा—*'और अल्लाह ने तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारा (हक़ीक़ी बेटा) नहीं बना दिया। यह क़ौल तुम्हारे अपने मुंह की बात है और अल्लाह सच बात कहता है और वही सीधी राह दिखाता है। तुम इन मुंह बोले बेटों को उनके (हक़ीक़ी) बापों की निस्बत से पुकारा करो। यही अल्लाह के नज़दीक इंसाफ़ का तरीक़ा है और अगर तुमको उनके बाप-दादों के नाम मालूम न हों तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं।'* (33 : 3-4)

चुनांचे सहाबा रज़ि० साफ़ करते हैं कि हमने उसी वक़्त से हज़रत ज़ैद को इब्ने मुहम्मद कहना छोड़ दिया और ज़ैद बिन हारिसा कहने लगे।

और बेटा बनाने के अ़मली पहलू की रोकथाम को रोशन करने के लिए ये आयतें उतरीं—

तर्जुमा—*'और (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जब तुम उस आदमी से कहते थे, जिस पर अल्लाह ने और तुमने इनाम किया कि अपनी बीवी को रोके रख (और तलाक़ न दे) और अल्लाह से डर और सूरते हाल यह थी कि तुम अपने जी में इस बात को छिपाए हुए थे जिसको अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था। तुम लोगों के (तान व तंज़) से डरते थे और अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि उससे डरा जाए, सो जब ज़ैद अपनी ज़रूरत पूरी कर चुका (और उसने तलाक़ दे दी) तो हमने उस (ज़ैनब) का निकाह तुझसे कर दिया ताकि (आगे) मुसलमानों पर तंगी न रहे कि वह अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों से निकाह कर सकें। जब उनके मुंह बोले बेटे अपनी हाजत पूरी कर लें (यानी तलाक़ दे दें) और अल्लाह का यह हुक्म अटल है।'* (33-37)

कुरआन की इन आयतों का मतलब अपने मुताल्लिक़ मस्अले के साथ इतना साफ़ और खुला हुआ है कि उसमें किसी दूसरे मतलब की गुंजाइश तक

नहीं और न किसी क़िस्म की कोई पेचेदगी ही है कि जो मामले के रुख़ को किसी दूसरी ओर फेरने की वजह हो (इसलिए मुनासिब समझते हैं कि इस मामले से मुताल्लिक़ ख़ुराफ़ाती दास्तान से बिल्कुल ही आंखें फेर ली जाएं।)

सबक़ और नसीहत

इस बात के बावजूद कि पैग़म्बर व रसूल इस हक़ीक़त से आशना होते और उस पर यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह का फ़ैसला अटल और रद्द करने के क़ाबिल नहीं होता है, फिर भी अगर कोई बात ऐसी हो जिसमें उनकी ज़ात वक़्त के ख़ुद के गढ़े हुए अख़्लाक़ी पहलू की बुनियाद पर तान व तंज़ की वजह बनती हो, तो बशर के तक़ाज़े की बुनियाद पर वे उसकी मार से बचे रहने की कोशिश करते हैं और उम्मीद करते हैं कि अल्लाह तआला जिस भले मक़्सद के लिए ऐसी सूरत पैदा करना चाहता है, काश वह किसी ऐसी शक्ल में ज़ाहिर हो कि उनके इस तान व तंज़ से बच जाए, लेकिन जबकि ख़ुदा की मस्लहत इसी ख़ास सूरत में छिपी होती है तो वक़्त आने पर नबी व रसूल अपनी ज़ाती ख़्वाहिश को पीठ पीछे डाल कर ख़ुदा के फ़ैसले पर सर झुका देता है।

बनू नज़ीर

यह वाक़िया 04 हिजरी में पेश आया। जो यहूदी क़बीले यमन से भागकर हिजाज़ (मदीना) में आ बसे थे, उनमें से यह भी मशहूर क़बीला है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना तशरीफ़ फ़रमा हुए तो आपने मदीना और उसके आस-पास के यहूदियों से अह्द व पैमान करके 'सुलह व अह्द' की बुनियाद डाली।

यहूदियों ने अगरचे ज़ाहिरी तौर पर इस सुलह व अह्द पर रज़ामंदी का इज़्हार कर दिया था, लेकिन उनके रिवायती हसद व बुग़्ज़ और तारीख़ी मुनाफ़क़त (निफ़ाक़) ने इस अह्द पर उनको देर तक क़ायम नहीं रहने दिया और उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ अंदरूनी और बैरूनी साज़िशों का जाल बिछाना शुरू कर दिया। इसी

बीच बनू नज़ीर के ज़िम्मेदार लोगों ने एक दिन यह साज़िश की कि नबी अकरम ﷺ की ख़िदमत में जाकर अ़र्ज़ करें कि हमको एक मामले में आप से मश्विरा करना है और जब आप तश्रीफ़ ले आएं तो दीवार के क़रीब उनको बिठाया जाए और जब वे बातचीत में लग जाएं तो ऊपर से एक भारी पत्थर आप पर गिराकर आपका ख़ात्मा कर दिया जाए।

चुनांचे नबी अकरम ﷺ मदऊ (जिसे बुलाया जाए) होकर तश्रीफ़ लाए, अभी आप दीवार के क़रीब बैठे ही थे कि वह्य इलाही ने हक़ीक़ते हाल की इत्तिला दे दी और आप फ़ौरन ख़ामोशी के साथ वापस तश्रीफ़ ले आए और वहां जाकर मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि० को भेजा कि वह बनू नज़ीर तक यह पैग़ाम पहुंचा दें कि चूंकि तुमने ग़द्दारी की और वायदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी की है, इसलिए तुमको हुक्म दिया जाता है कि मुक़द्दस हिजाज़ की सरज़मीन से जल्द जिला-वतन हो जाओ। मुनाफ़िक़ीन ने यह सुना तो जमा होकर बनू नज़ीर के पास पहुंचे और कहने लगे, तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान हरगिज़ तस्लीम न करो और यहां से हरगिज़ जिला-वतन न हो, हम हर तरह तुम्हारे शरीकेकार हैं।

बनू नज़ीर ने यह पुश्त-पनाही देखी तो हुक्म मानने से इंकार कर दिया और हालात का इंतिज़ार करने लगे, तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिहाद की तैयारी की और अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे कुलसूम को मदीने का अमीर बनाकर बनू नज़ीर की गढ़ी (छोटा क़िला) पर हमलावरी के लिए निकले। हज़रत अ़ली रज़ि० के हाथ में इस्लामी परचम था और सहाबा घेरे हुए थे।

बनू नज़ीर ने यह देखा तो क़िलाबंद हो गए और यक़ीन कर लिया कि अब मुसलमान हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। चुनांचे नबी करीम ﷺ छः दिन (दिन व रात) उनकी घेराबंदी किए रहे और फिर हुक्म दिया कि इनके इन पेड़ों को काट डालो जो इनके लिए फल मुहैय्या करते हैं और इनका वजूद इनके रसद पहुंचाने की ताक़त पहुंचाने की वजह है।

इन हालात को देखकर बनू नज़ीर के दिलों में रौब और ख़ौफ़ तारी हो गया और उनको मुनाफ़िक़ों की ओर से मायूसी और रुसवाई के सिवा और

कुछ हाथ न आया। आख़िर मजबूर होकर उन्होंने दरख़्वास्त की कि इसको देश छोड़ देने का मौक़ा दिया जाए, इसलिए उनको इजाज़त दी गई कि लड़ाई के सामान के अलावा जितना सामान भी वे ऊंटों पर लाद कर ले जाना चाहते हैं, ले जाएं।

इजाज़तनामा हासिल हो जाने के बाद यह मंज़र भी देखने का था कि कल के बाग़ी, सरकश और फ़ितना फैलाने वाले ग़द्दार, आज अपने हाथों से अपने मकानों को बर्बाद करके (ताकि मुसलमान उसमें आबाद न हो सकें) इस वतन को ख़ैरबाद कह रहे थे, जिस जगह हिफ़ाज़त से रहने के लिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद अपने आप एक अह्द नामा के ज़रिए उनको दावत दी थी।

क़ुरआन और बनू नज़ीर

इसी वाक़िए के सिलसिले में सूरः हश्र नाज़िल हुई है और उसमें बनू नज़ीर की ग़द्दारी, मुनाफ़िक़ों का फ़िला, मुसलमानों पर ख़ुदा का एहसान व करम और लड़ाई के मौक़े पर हरे पेड़ों के काटने का हुक्म और ऐसी शक्ल में, जबकि लड़ाई न हो रही हो, ग़नीमत के माल का मसरफ़ और फ़ै का हुक्म, इन तमाम बातों का तफ़्सील के साथ ज़िक्र किया गया है।

नतीजा और नसीहत

1. मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ एक ख़ुशफ़रेबी होती है जो अंजाम के लिहाज़ से न ख़ुद अपने लिए फ़ायदेमंद साबित होता है और न मुनाफ़िक़ों पर एतमाद करने वाला ही उससे कोई फ़ायदा उठा सकता है, बल्कि कभी-कभी वह अपनी और अपने साथियों की ज़िल्लत और रुसवाई और हलाकत व बर्बादी का सामान जुटा देता है और हमेशा के घाटे की वजह बन जाता है।

2. जिस क़ौम में शर व फ़साद और मकर व फ़रेब 'अख़्लाक़' का दर्जा ले लेते हैं, उनके क़ौमी, जिस्मानी और रूहानी सलाह व ख़ैर की तमाम इस्तेदाद फ़ना हो जाती है और न वह दुनिया में किसी इज़्ज़त व शौक़त की मालिक रहती है और न आख़िरत में उसके लिए ख़ैर का कोई हिस्सा बाक़ी

रहता है।

9. आम तरीक़े पर लड़ाई में हरे पेड़ों और हरी खेतियों का काटना और बर्बाद करना लड़ाई की इस्लाहों के मनाफ़ी और मना है, लेकिन जब ये चीज़ें जंग के ज़माने में दुश्मन की ओर से ज़्यादा ताक़त की वजह बन कर फ़साद व शर की बक़ा में मददगार हों तो ऐसी हालत में आम हुक्म से अलग हैं, जैसा कि बनू-नज़ीर के वाक़िए में क़ुरआन ने बताया है।

इफ़्क का वाक़िया

शाबान 05 हिजरी मुताबिक़ दिसम्बर सन् 626 ई० में बनी-मुस्तलक़ के सरदार हारिस बिन ज़रार के फ़ित्नों की वजह से बनू-मुस्तलक़ की लड़ाई पेश आई। मुनाफ़िक़ों का यह दस्तूर बन गया था कि जिस लड़ाई के ज़ाहिरी अस्बाब से गुमान ग़ालिब फ़त्ह का होता उससे माले ग़नीमत की लालच से ज़रूर साथ हो जाते। चुनांचे इस लड़ाई में भी मुनाफ़िक़ों का गिरोह मय अपने सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई के मौजूद था, वापसी पर एक मामूली हादसा पेश आ गया।

बुख़ारी में इस वाक़िए की जिस तफ़्सील का ज़िक्र है, उसका हासिल यह है कि जब नबी अकरम ﷺ कामियाबी के साथ ग़ज़वा बनी मुस्तलक़ से वापस हुए तो मदीना के क़रीब एक मंज़िल पर पड़ाव था कि रात के आख़िरी हिस्से में कूच का एलान हुआ।

हज़रत आइशा रज़ि० एलान सुन कर ज़रूरत पूरी करने के लिए तेज़ी के साथ क़ियामगाह से दूर चली गईं। फ़ारिग़ होने के बाद वापस हुईं तो गले में जो हार पहने हुए थीं, वह सीने पर न पाया, वह यह समझ कर कि टूट कर वहीं गिर गया होगा, जहां ज़रूरत पूरी करने के लिए गई थीं, उसको तलाश करने के लिए वापस गईं। इसी बीच जो जमाअत उनके हौदज को ऊंट पर सवार कराती थी, उसने हौदज उठा कर ऊंट पर कस दिया और चूंकि उस ज़माने में कम खाने की वजह से औरतें आमतौर पर मोटी नहीं होती थीं, और इसलिए वह भी बहुत दुबली थीं, इसलिए हौदज पर लगी टीम ने उनके न होने का मुतलक़ एहसास नहीं किया और ऊंट पर हौदज रख कर रवाना हो गए।

हज़रत आइशा रज़ि० जब हार की तलाश करती हुई वापस हुईं तो क़ाफ़िला जा चुका था और अब हार भी हौदज के क़रीब ही मिल गया। वह बहुत परेशान हुईं फिर सोचा कि ज्योंही मुसलमानों को यह महसूस होगा कि मैं हौदज में नहीं हूं तो फ़ौरन नबी अकरम ﷺ इसी जगह सवारी भेज देंगे, इसलिए मुनासिब यह है कि क़ाफ़िले का पैदल पीछा करने के बजाए उसी जगह इंतिज़ार किया जाए। रात का आख़िरी हिस्सा था, उजाला होने वाला था कि उनकी आंख लग गई।

उधर सफ़वान बिन मुअत्तल सह्मी इस ख़िदमत पर लगे हुए थे कि क़ाफ़िले से बहुत पीछे रह कर निगरानी करते हुए और जो चीज़ भी क़ाफ़िले की रह जाए उसको लेते हुए आएं। वह पीछे से चलते हुए जब उस जगह पहुंचे तो उन्होंने महसूस किया कि यहां कोई इंसान मौजूद है। क़रीब आए तो उनको पहचान लिया, क्योंकि हिजाब की आयत से पहले वह उनको देख चुके थे।

उन्होंने देखते ही फ़ौरन बुलंद आवाज़ से 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा। हज़रत आइशा रज़ि० आवाज़ सुन कर बेदार हो गईं और सिमट कर बैठ गईं। सफ़वान ने एक लफ़्ज़ कहे बग़ैर ऊंट को बिठाया और वह ख़ामोशी के साथ ऊंट पर हौदज में सवार हो गईं और सफ़वान महार पकड़े हुए रवाना हुए और दोपहर के क़रीब लश्कर में जा पहुंचे।

जब यह ख़बर अब्दुल्लाह बिन उबई को मालूम हुई तो उसने और उसकी जमाअत ने मौक़े को ग़नीमत जाना और तेज़ी के साथ इफ़्तिरा और बोहतान को फ़ौज में फैला दिया, मगर मुसलमानों ने किसी तरह उसको बावर नहीं किया, अलबत्ता सिर्फ़ तीन मुसलमान (दो मर्द और एक औरत) हस्सान बिन साबित, मिस्तह बिन असासा और हमना बिन्त जह्श अपनी सादगी से मुनाफ़िक़ों के जाल में फंस गए।

ख़ुदा का करम व फ़ज़्ल देखिए कि ज़्यादा दिन न गुज़रे थे कि अल्लाह तआला ने वह्य (क़ुरआन) के ज़रिए मुनाफ़िक़ों की ख़बासत को आशकारा कर दिया और हज़रत आइशा रज़ि० की पाक दामनी पर मुहर लगा कर बुह्तान लगाने वालों पर कोड़ों की सज़ा जारी करने का हुक्म दिया और इस तरह झूठ

बोलने वाले और बुहतान लगाने वाले अपने नतीजे को पहुंचे।

कुरआन ने इस वाक़िए पर मुसलमानों को साफ़ तौर पर बतला दिया कि झूठ और बुहतान पर गढ़ी यह दास्तान सुन कर तुमने ख़ुद ही क्यों न कह दिया कि यह सिर्फ़ झूठ और बुहतान है।

तर्जुमा— *'जिन लोगों ने बुहतान का यह तूफ़ान उठाया है, वह तुममें से ही एक जमाअत (मुनाफ़िक़ों की जमाअत) है। (ऐ पैग़म्बर!) तुम इसको अपने हक़ में बुरा न समझो, बल्कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (यानी अल्लाह की मस्लहत के राज़ ने इसमें तुम्हारी बेहतरी का अंजाम पोशीदा रखा है) इनमें से हर एक आदमी के लिए वह सब कुछ है, जो उसने गुनाह कमाया है और जिसने इस गुनाह का बड़ा बोझ उठाया है, उसके वास्ते बहुत बड़ा अज़ाब है। जब तुमने इस बुहतान को सुना था, क्यों न ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतों ने अपने लोगों पर नेक ख़्याल क़ायम कर लिया और क्यों यह न कह दिया कि यह खुले बुहतान का तूफ़ान है। वे (तूफ़ान उठाने वाले अपने बुहतान पर) क्यों चार गवाह न लाए, पस जब वे गवाह न पेश कर सके तो यही लोग अल्लाह के यहां बिल्कुल ही झूठे हैं और अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत दुनिया और आख़िरत दोनों में तुम पर न होती तो पड़ जाती इस झूठी चर्चा करने में तुम पर कोई बड़ी आफ़त, जबकि तुम इस (बुहतान) को अपनी ज़ुबानों पर जारी करने लगे और ऐसी बात मुंह से निकालने लगे, जिसकी तुमको ख़बर तक नहीं और तुम इसको हल्की बात समझते हो, हालांकि (बुहतान और इफ़्तिरा) अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ी बात है और जब तुमने उसको सुना था, तो क्यों न कहा कि हमारे लिए मुनासिब नहीं कि ऐसी झूठी बात मुंह से निकालें, 'अल्लाह ही के लिए पाकी है' यह तो बहुत बड़ा बुहतान है। अल्लाह तुमको समझाता है कि ऐसा काम फिर कभी न कर बैठना, अगर तुम वाक़ई सच्चे ईमान वाले हो और अल्लाह तुम्हारे लिए पते की बातें वाज़ेह करता है और अल्लाह ख़ूब जानने वाला, हिक्मत वाला है।*

जो लोग चाहते हैं कि बदकारी की चर्चा हो ईमान वालों में, उन चाहने वालों के लिए दर्दनाक अज़ाब है, दुनिया में भी, आख़िरत में भी। बेशक अल्लाह (हक़ीक़ते हाल का) जानने वाला है और तुम जानने वाले नहीं हो और

अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता और उसकी रहमत न होती तुम पर और यह बात न होती कि वह नर्मी करने वाला है और मेहरबान है तो क्या कुछ न हो जाता।''

(24 : 11-20)

सूरः की इन आयतों ने आइशा की तहारत और पाकदामनी का ही सिर्फ़ एलान नहीं किया, बल्कि मुसलमानों को यह तंबीह भी की कि उनको एक लम्हे का इन्तिज़ार किए बग़ैर इस क़िस्म के झूठ बोलने वालों के झूठ बोलने पर साफ़-साफ़ कह देना चाहिए था कि यह सिर्फ़ झूठ और बोहतान है।

ये आयतें इस वजह से 'आयते बरअत' भी कहलाती हैं कि उनमें हज़रत आइशा रज़ि० की बरअत (छूट जाने) का एलान है और मुनाफ़िक़ों और दुश्मनों की ज़िल्लत व ख़्वारी का इज़्हार।

सबक़ और नसीहत

इस वाक़िए ने कुरआन में जिन सबक़ों और नसीहतों का सामान जुटाया है, उनमें ये ख़ुसूसियत के साथ तवज्जोह के क़ाबिल हैं—

1. फ़ासिक़ व फ़ाजिर या बद बातिन इंसानों की दी हुई ख़बर, ख़ासतौर से जबकि वह इस्मत व इफ़्फ़त और तक़्वा और ख़ैर के ख़िलाफ़ हो, हरगिज़ तवज्जोह के क़ाबिल नहीं और इसके लिए सिर्फ़ इतना कह देना ही काफ़ी है कि सिर्फ़ झूठ है, जब तक कि ख़बर देने वाला उस पर रोशन दलील व हुज्जत क़ायम न कर दे।

2. बेगुनाह पर इलज़ाम और तोहमत लगाना बहुत बड़ा गुनाह है और चूंकि इस गुनाह का करने वाला बन्दों के हक़ों में एक हक़ को निशाने पर रखता है और उसकी तौहीन करता है, इसलिए न सिर्फ़ अख़्लाक़ की निगाह में, बल्कि इज्तिमाई क़ानून की नज़र में भी हद-दर्जा मुज्रिम है। कुरआन की आयतों ने इसके लिए हद्दे क़ज़्फ़ (बे-गुनाह पर तोहमत लगाने की सज़ा) के लिए अस्सी कोड़े तज्वीज़ किए हैं, ताकि आगे किसी को भी जुर्रात न हो सके कि वह एक पाकबाज़ इंमान पर तोहमत लगाए या बग़ैर गवाही के उसका प्रोपगंडा करे।

3. यह वाक़िया जो शुरूआत के एतबार से नबी अकरम सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम के लिए बहुत सख़्त तक्लीफ़ की वजह बना और अह्ले बैत को उसने बेहद परेशान ख़ातिर बनाया, लेकिन अंजाम के पेशेनज़र अह्ले बैत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए यह पूरी तरह ख़ैर साबित हुआ, क्योंकि इससे एक तरफ़ मुनाफ़िक़ों का भेद खुल गया और दूसरी तरफ़ हज़रत सिद्दीक़ा आइशा रज़ि० और अह्ले बैते रसूल की शान की अ़ज़्मत का बेनज़ीर मुज़ाहरा अ़मल में आ गया कि क़ुरआन की दस आयतों ने उनकी बरअत के लिए नाज़िल होकर उनकी इस्मत व अ़ज़्मत दोनों पर बेमिसाल मुहरे तस्दीक़ सब्त कर दी।

4. कभी-कभी गन्दे और शरीर (दुष्ट) इंसानों की गन्दी बातें इस दर्जा आब व रंग रखती हैं कि सादा-लौह मुसलमानों और नेक लोगों को भी ग़लतफ़हमियां और धोखे हो जाते हैं। इसके लिए मुसलमान का फ़र्ज़ है कि सुनी सुनाई बात पर उस वक़्त तक हरगिज़-हरगिज़ यक़ीन न करे जब तक कि इस्लामी शहादत के उसूल के मुताबिक़ सुनी सुनाई ख़बर की तस्दीक़ न हो जाए। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया है कि बदगुमानी से बचो, क्योंकि कुछ बदगुमानियां गुनाह करने वाला बना देती हैं।

5. बन्दों के हक़ में अल्लाह ने जो हदें और क़सास और ताज़ीरात मुक़र्रर फ़रमा दिए हैं, जुर्मों के करने पर उन पर मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का कोई फ़र्क़ नहीं है और इस्लामी क़ानून की निगाह में इस हैसियत से तमाम मुज्रिम एक जैसे पकड़ के क़ाबिल हैं, इसलिए इफ़्क के वाक़िए में मुनाफ़िक़ झूठों के साथ तीन मुसलमान (मर्द व औरत) हज़रत हस्सान, हज़रत मिस्तह और हज़रत हमना बिन्त जह्श को भी झूठी तोहमत लगाने के इलज़ाम में कोड़े खाने पड़े।

फ़ासिक़ की दी हुई ख़बर

5 हिजरी में पेश आने वाले ग़ज़वा बनी मुस्तलिक़ में जब मुसलमान जीत गए और सहाबा के मश्विरे की बुनियाद पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़बीले के सरदार की बेटी हज़रत जुवैरिया से निकाह कर लिया तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ससुराली रिश्ते की वजह से

तमाम सहाबा ने लड़ाई के क़ैदियों को रिहा कर दिया और मुसलमानों के इस अच्छे व्यवहार और ऊंचे अख़्लाक़ और इस्लामी ख़ूबियों की वजह से मुतास्सिर होकर तमाम क़बीला मुसलमान हो गया, तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वलीद बिन उक़्बा को इसलिए उनके पास भेजा कि वे क़बीले के दौलतमंदों से 'ज़कात' वसूल करके उन ही के मुहताजों और ग़रीबों में बांट दें।

क़बीले वालों को जब वलीद के इस आने का इल्म हुआ तो इज़्ज़तदार हस्ती के आने के इस्तिक़बाल की तरह साज़ व सामान के साथ मैदान में निकले।

जाहिलियत के ज़माने में इस क़बीले के और वलीद के दर्मियान पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी, इसलिए इस्तिक़बाल के इस एहतिमाम को वलीद ने दूसरी नज़र से देखा और समझा और अपनी ग़लत राय पर जमे रहे कर क़बीले वालों से मामला किए बग़ैर ही मदीना वापस आ गए और दरबारे क़ुदसी में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि बनी मुस्तलिक़ तो फिर गए और उन्होंने ज़कात देने से भी इंकार कर दिया और वे तो सरकशी पर भी तैयार हैं।

नबी अकरम ﷺ यह सुनकर बनी मुस्तलिक़ के तरीक़े पर बहुत दुखी हुए और मुसलमान तो बिगड़ गए और जिहाद की तैयारियां होने लगीं, ताकि मुर्तद लोगों का मुक़ाबला किया जाए, यहां तक कि वे इस्लाम पर वापस आ जाएं या अपने नतीजे को पहुंचें।

इधर जब बनी मुस्तलिक़ को मालूम हुआ कि वलीद ने किसी बेजा ज़रूरत के साथ उनके बारे में नबी ﷺ के दरबार में ग़लतबयानी की है, तो वे बेहद परेशान हुए, क्योंकि उनके तो वह्म व ख़्याल में भी यह नहीं था कि इन जैसे पुख़्ताकार और साबितक़दम मुसलमानों पर इस क़िस्म की तोहमत भी लगाई जा सकती है। चुनांचे उन्होंने फ़ौरन ख़िदमते अक़्दस में इज़्ज़तदार वफ़्द भेजा, जिसने हाज़िर होकर कुल माजरा कह सुनाया।

एक तरफ़ अपने आमिल (वलीद) का वह बयान और दूसरी तरफ़ 'हदीसुल अह्द' मुस्लिम जमाअत का यह बयान। इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ामोशी अपनाई और अल्लाह की वह्य का

इन्तिज़ार किया।

आख़िर अल्लाह की वह्य ने रहनुमाई की और न सिर्फ़ मामले की हक़ीक़त ही खोल दी, बल्कि इस सिलसिले में एक मुस्तक़िल क़ानून या 'तह्क़ीक़ का मेयार' अ़ता फ़रमा दिया।

तर्जुमा—*'ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई (ग़लतकार) ख़बर लेकर आए तो जांच कर लिया करो, ऐसा न हो कि नादानी की वजह से किसी क़ौम पर (जिहाद के नाम से) हमलावर हो जाओ और फिर कत्ल के (असल हाल मालूम होने के बाद) अपने किए पर पछताने लगो और जानो कि तुममें अल्लाह का रसूल मौजूद है। अगर वह तुम्हारी बात अक्सर मामलों में मान लिया करे तो तुम (अपने ग़लत रवैए की वजह से) मुसीबत में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से तुम्हारे लिए ईमान को महबूब बना दिया है और तुम्हारे दिलों में उसको ज़ीनत बख़्शी है और तुम्हारे दिलों में कुफ़्र और गुनाह और नाफ़रमानी के लिए नफ़रत पैदा कर दी है और (हक़ीक़त में) यही लोग हैं अल्लाह के फ़ज़्ल और एहसान की वजह से रास्ता पाने वाले और अल्लाह जानने वाला है, हिक्मतों वाला है।'* (49 : 6-8)

नतीजा

1. ख़बरों के बयान करने में आम तौर पर सजीदा और मुहज़्ज़ब जमाअ़त भी इसको ऐब नहीं समझती कि जो ख़बर भी उनके कानों तक पहुंचे, वे उसको बे-तकल्लुफ़ नक़ल करते रहें और हक़ीक़ते हाल की खोज की तक्लीफ़ क़तई तौर पर गवारा न करें, चाहे इस ख़बर से किसी न किये गए गुनाह पर झूठ गढ़ा जा रहा हो या किसी शख़्स या जमाअ़त को नुक़सान पहुंच रहा हो, हालांकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़ोरदार लफ़्ज़ों में यह तंबीह फ़रमाई है—

'हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इंसान के लिए यह गुनाह काफ़ी है कि हर सुनी बात को नक़ल करता रहे, यानी यह भी गुनाह की बात है कि सुनी-सुनाई बात का प्रोपगंडा करे।'

2. जब कोई ऐसी ख़बर सुनी जाए जो फ़ायदे या नुक़सान के एतबार से

ख़बर देने वाले पर या दूसरों पर असरंदाज़ होती हो, तो पहले उसकी जांच होनी चाहिए और जब पूरी तरह साबित हो जाए तब उससे मुताल्लिक़ नतीजों की तरफ़ तवज्जोह होनी चाहिए।

मस्जिदे ज़रार (रजब सन् 06 हिजरी)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि तबूक के मैदान में जो कि मदीना से चौदह मंज़िल पर दमिश्क़ के रास्ते पर वाक़े था, हिरक़्ल शाहे रूम ने मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए भारी फ़ौज जमा कर ली है और उसके आगे का हिस्सा आगे बढ़कर बलक़ा तक आ पहुंचा है। आपने अरब में अकाल और गर्मी की तेज़ी के बावजूद जिहाद के लिए मुनादी कर दी और मुसलमान गिरोह-दर-गिरोह जिहाद के शौक़ में मदीना में जमा होने लगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अभी तैयारियों में लगे हुए थे कि मुनाफ़िक़ों ने वक़्त से फ़ायदा उठाकर सोचा कि मस्जिदे क़ुबा के मुक़ाबले में जो हिजरत के बाद सबसे पहली मस्जिद थी, इस बहाने से एक मस्जिद तैयार करें कि जो लोग कमज़ोरी या किसी और मजबूरी की वजह से मस्जिदे नबवी में न जा सकें, तो यहां नमाज़ पढ़ लिया करें, क्योंकि इस तरह मुसलमानों को बहकाने का भी मौक़ा हाथ आजाएगा और एक क़िस्म की फूट भी पैदा हो जाएगी।

यह सोचकर वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और कहने लगे कि हमने बूढ़े-कमज़ोर और मजबूरों के लिए क़रीब ही एक मस्जिद बनाई है। अब हमारी ख़्वाहिश है कि हुज़ूर वहां चलकर एक बार उसमें नमाज़ पढ़ लें, तो वह अल्लाह के नज़दीक मक़्बूल हो जाए। आपने फ़रमाया कि इस वक़्त तो मैं एक अहम ग़ज़वा के लिए जा रहा हूं, वापसी पर देखा जाएगा।

मगर आप जब कामियाब होकर ख़ैरियत से वापस आए तो अल्लाह की वह्य के ज़रिए उस मस्जिद की तामीर की हक़ीक़ी वज्हों को जान चुके थे, चुनांचे वापस तश्रीफ़ लाकर सबसे पहले सहाबा रज़ि० को हुक्म दिया कि वे

जाएं और उस मस्जिद को आग लगाकर ख़ाक स्याह कर दें।

चूंकि हक़ीक़त में उस मस्जिद की बुनियाद 'तक़्वा' और 'अल्लाह की रिज़ा' की जगह 'मुसलमानों में फूट' पर रखी गई थी, इसलिए बेशक वह इसी की हक़दार की और उसको 'मस्जिद' कहना हक़ीक़त के ख़िलाफ़ था, इसलिए क़ुरआन ने इस देखने में 'मस्जिद' और अन्दर से 'बैतुश-शर्र' (शरारतों का अड्डा) की तामीर के बारे में हक़ीक़ते हाल को रोशन करते हुए बतला दिया कि यह मस्जिदे तक़्वा नहीं, बल्कि 'मस्जिदे ज़रार' कहलाने की हक़दार है।

तर्जुमा – *(और मुनाफ़िक़ों में से) वे लोग भी हैं जिन्होंने इस ग़रज़ से एक मस्जिद बना खड़ी की कि नुक़्सान पहुंचाएं, कुफ़्र करें, मोमिनों में फूट डालें और उनके लिए एक पनाहगाह पैदा करें जो अब से पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुके हैं, वे ज़रूर क़स्में खाकर कहेंगे कि हमारा मतलब इसके सिवा कुछ न था कि भलाई हो, लेकिन अल्लाह की गवाही यह है कि वे अपनी क़स्मों में बिल्कुल झूठे हैं। (ऐ पैग़म्बर!) तुम इस मस्जिद में खड़े न होना, इस बात की कि तुम उसमें खड़े हो (और अल्लाह के बन्दे तुम्हारे पीछे नमाज़ पढ़ें) वही मस्जिद हक़दार है जिसकी बुनियाद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गई है (यानी मस्जिदे क़ुबा और मस्जिदे नबवी) इसमें ऐसे लोग आते हैं जो पसन्द करते हैं कि पाक व साफ़ रहें और अल्लाह भी पाक व साफ़ रहने वालों को ही पसन्द करता है।* (9 : 107-108)

सबक़

1. निफ़ाक़ एक ऐसा मरज़ है जो इंसानों की तमाम अच्छी फ़ज़ीलतें और अच्छे अख़्लाक़ को तबाह व बर्बाद करके उसकी इंसानियत को हैवानियत से बदल देता है और उसके फ़िक्र व अ़मल में आपस में मेल न रहने से उसकी ज़िंदगी से असफ़लुस्साफ़िलीन' (सबसे गहरे गढ़े) में गिरा देता है।

2. एक ही 'अ़मल' अ़मल करने वाले की नीयत के फ़र्क़ से 'पाक' भी हो सकता है और नापाक भी, तैयब भी बन सकता है और 'ख़बीस' भी। मस्जिद की तामीर एक भला काम है और अज्र व सवाब की वजह, मगर जबकि अल्लाह की रिज़ा के लिए हो और इबादते इलाही का हक़ीक़ी मक़्सद

पेशेनज़र रहे।

तर्जुमा—*'अल्लाह की मस्जिदों को तो बस वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और नमाज़ अदा की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा।'* (9 : 18)

और यही 'भला काम' 'बुरा काम' और नफ़रत भरा काम बन जाता है, जबकि उसका मक़्सद शैतानी काम हो या मुसलमानों के दर्मियान फूट डालना या नमाज़ की आड़ में इस्लाम के ख़िलाफ़ पनाहगाह और जासूसी का मर्कज़ बनाना हो, इसीलिए यह भला काम जंब काफ़िरों के हाथों अंजाम पाए तो ग़ैर-मक़्बूल और मर्दूद है।

तर्जुमा—*'मुश्रिकों का हक़ नहीं है कि वे अल्लाह की मस्जिद को आबाद करें, हालांकि वे अपनी जानों पर कुफ़्र की गवाही देते हैं।'* (9 : 17)

वफ़ात या वस्ल बिर्रफ़ीक़िल आला

तर्जुमा—*यानी 'मौत' इस हक़ीक़त का नाम है जो नबी मुर्सल बल्कि ख़ातमुल मुरसलीन को भी पेश आकर रहेगी और हक़ीक़ी बक़ा तो ज़ाते अहदियत की ही बिला शिर्कते ग़ैरे ख़ास शान के साथ हासिल है।*(3 : 144)

अल्लाह! अल्लाह! वह कैसा अजीब मंज़र था कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'अल्लाहुम-मर्र-फ़ीक़ुल आला' फ़रमाते हुए इस दुनिया से रुख़्सत हो गए, तो तमाम सहाबा रंज, ग़म-सदमे में इतने डूब गए थे कि उनके होश व हवास तक बजा न थे। इसी हाल में हज़रत उमर रज़ि० ने ग़म के भारी बोझ से दबकर तलवार सौंत कर यह नारा लगाया कि जो कहेगा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया, तो इसी तलवार से उसकी गरदन उड़ा दूंगा।

ऐसी बेचैनी और परेशानी की हालत में ख़ुदा का एक बन्दा सिद्दीक़े अक्बर आता हुआ नज़र आता है। सबसे पहले वह आइशा रज़ि० के हुजरे में पहुंचता और टूटे दिल और भीगी आंखों के साथ सरवरे दो आलम के चमकते माथे को बोसा देता और रसूल के फ़िराक़ से सदमे और बेचैनी का इज़्हार करता है और इश्क़ के इस फ़र्ज़ से फ़ारिग़ होकर जब बाहर आता है तो सहाबा की इस हालत का जायज़ा लेकर कि जिसमें जाहिलियत और इस्लाम

दोनों दौरों की बे-मिसाल शख़्सियत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी शामिल हैं, तो आगे बढ़कर कहता है, ऐ ख़त्ताब के बेटे! बैठ जा। हज़रत उमर वहीं बैठ जाते हैं और बड़े दुख और ग़म के साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मुंह तकने लगते हैं।

सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० अब नबी सल्ल० के मिंबर पर खड़े होकर हक़ की आवाज़ बुलन्द करते हुए सहाबा के मज्मे को यों ख़िताब करते हैं—

'लोगो! जो आदमी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की परस्तिश करता था, उसको मालूम होना चाहिए 'इन-न मुहम्मदन क़द 'मा त' (बेशक मुहम्मद इंतिक़ाल फ़रमा गए) कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मौत का मज़ा चख लिया है और जो एक अल्लाह का परस्तार है, तो बेशक 'इन्नल्ला-ह हय्युन ला यमूतु' (अल्लाह ज़िन्दा जावेद है और मौत से पाक और बरी, उसको मौत नहीं है)

अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की यह हक़ की सदा जब फ़िज़ा में गूंजी तो सबसे पहले हज़रत उमर रज़ि० और उनके बाद तमाम सहाबा पर सुकून का इत्मीनान छा गया और वे समझ गए कि बेशक सरदारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपना फ़र्ज़े रिसालत पूरा करके 'रफ़ीक़े आला' से जा मिले और अब इस्लाम मुकम्मल हो चुका, इसलिए अब हमारा फ़र्ज़ है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुबारक नमूने और ज़िंदा जावेद मोजज़े कलामुल्लाह 'क़ुरआन' को पेशवा बनाकर इस्लाम की ख़िदमत का फ़र्ज़ अंजाम दें।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की कैफ़ियत तो यह हुई कि फ़रमाने लगे, क़सम ख़ुदा की सिद्दीक़े अकबर ने हक़ की यह सदा बुलन्द करते हुए जब यह आयत तिलावत की—'व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूल क़द ख़-लत मिन क़ब्लिहिर्रुसुल' (मुहम्मद तो रसूल थे, इससे पहले भी रसूल हुए जो गुज़र गए) तो मुझे ऐसा मालूम हुआ गोया अभी यह आयत उतर रही है और रसूल की मुहब्बत ने रसूल की जुदाई से मबहूत (सन्न) कर दिया था। क़ुरआन और तालीमे रसूल की रोशनी में जो कुछ मोहतरम साथी ने कहा, वह यकायक सूरज की तरह मेरे सामने आ गया। हदीस और सीरत की तमाम रिवायतें मुत्तफ़िक़ हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात माह

रबीउल-अव्वल दिन दो शंबा (Monday) को हुई, अलबत्ता किस तारीख़ को हुई? इस बारे में बहुत से क़ौल हैं। मशहूर व मारूफ़ क़ौल यही है कि 12 रबीउल-अव्वल को हुई।

सबक़ और नसीहत

1. कुरआन की सूरः फ़ातिहा में है, 'चला हमको राह सीधी, राह उन लोगों की जिन पर तूने फ़ज़्ल किया, और दूसरी जगह सूरः निसा में 'तो ऐसे लोग भी इन हज़रात के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया है यानी नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालेह क़िस्म के लोग, ये लोग बड़े अच्छे साथी हैं, यही वे साथी हैं जिनके बारे में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'अंल्लाहुम-म अर्रफ़ीकुल आला' कहकर आख़िरी वक़्त में इशारा फ़रमाया।

2. 'मौत' अल्लाह का वह अटल फ़ैसला है जिससे नबी व रसूल और ख़ातमुल अंबिया वर्रुसुल भी अलग नहीं है और हमेशा की ज़िंदगी सिर्फ़ ज़ाते हक़ ही के लिए ख़ास है।

3. सिद्दीक़े अक्बर की अज़्मत व जलालते मर्तबा के इस वाक़िए से भी खुला एलान हो जाता है कि नबी सल्ल० की वफ़ात के क़रीबी वक़्त में हालात की नज़ाकत ने सहाबा रज़ि० की अक़्ल व ख़िरद पर जो असर डाला, अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता वह देरपा हो जाता तो इस्लाम अपनी हक़ीक़त से ख़ाली होकर रह जाता। (अयाज़न बिल्लाह) मगर यह सआदत अबूबक्र रज़ि० ही के हिस्से में थी कि मुसलमानों की उस डगमगाती कश्ती को कुरआन की रोशनी में पार लगा दिया और 'इस्लाम' को एक शानदार फ़िल्ने से बचा लिया।

तर्जुमा—*'बड़ाई अल्लाह की है, देता है जिसको चाहे और अल्लाह का फ़ज़्ल बड़ा है।'* (62 : 4)

नुबूवत व रिसालत का ख़ात्मा

नुबूवत व रिसालत का यह सिलसिला जो हज़रत आदम से शुरू होकर हज़रत ईसा ﷺ तक पहुंचा था, रुश्द व हिदायत के उस्लूब व नेहज के लिहाज़ से इस मानी में एक जैसा है कि इस तमाम सिलसिले में नुबूवत व रिसालत जुग़राफ़ियाई हुदूद में महदूद रही है, इसलिए अलग-अलग ज़ुबानों में

एक ही वक़्त में कई नबियों की बेसत रिसालत की ज़िम्मेदारियां अदा करती रही है—यहां तक कि हज़रत ईसा के हक़ के पैग़ाम ने अगरचे कुछ फैलाव अख़्तियार किया और बनी इसराईल की रास्ते में गुम हुई भेड़ों के अलावा भी कुछ इंसानी हल्क़े इस दावत के मुख़ातब बने, फिर भी उन्होंने आलमी दावत व पैग़ाम का दावा नहीं किया और इंजील गवाह है कि ख़ुद ज़ाते क़ुदसी ने खुलकर कह दिया कि उनकी बेसत के जो लोग मुख़ातब हैं, वे महदूद हैं।

लेकिन यह सिलसिला आख़िर कब तक हदों के अन्दर महदूद रह सकता था। दावत व इर्शाद तो धीरे-धीरे तरक़्क़ी कर रहा था और उसमें फैलाव आ रहा था, वह क़ुदरत के क़ानून के आम उसूल के ख़िलाफ़ किस तरह हमेशा के लिए रह सकता था।

अलबत्ता इन्तिज़ार था तो इसका कि वह वक़्त क़रीब आ जाए जबकि इस फैली और लम्बी-चौड़ी दुनिया में ऐसा तालमेल पैदा हो जाए कि न एक के फ़ायदे और नुक़सान दूसरे हिस्सों से ओझल हो सकें और न बेगाना व बेताल्लुक़ रह सकें, बल्कि ख़ुदा की यह फैली हुई कायनात माद्दी (भौतिक) असबाब (साधनों) के बहुत होने के बावजूद एक 'कुंबा' बन जाए और इंसानी दुनिया के तमाम देश एक दूसरे के साथ इस तरह जुड़ जाएं कि एक का नफ़ा व नुक़्सान दूसरे के नफ़ा व नुक़्सान पर असर अंदाज़ होने लगे, बल्कि फ़ितरत का क़ानून अपना मुज़ाहरा करे और माद्दी दुनिया की हमागीर हम आहंगी के ज़ाहिर होने से पहले रूहानी पैग़ामे सआदत को आलमगीर वुसअत और हमागीर अज़्मत अता फ़रमाए। चुनांचे इस दुनिया में फ़ितरत के आम क़ानून की तरह रुश्द व हिदायत की जो शुरूआत पहले इंसान के ज़रिए हुई थी, उसका अंजाम उस मुक़द्दस हस्ती तक पहुंच कर कामिल व मुकम्मल हो गया जिसका नाम 'मुहम्मद' और 'अहमद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है।

तर्जुमा—*'आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मैंने कामिल कर दिया और मैंने तुम पर अपना इनाम पूरा कर दिया और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन बनने के लिए पसन्द कर लिया।'* (5 : 3)